CamScanner

CamScanner

6:28 pm 0 KB/s 47%

**OSHO Hindi Speech**
Aadi Guru · 8h

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=122145480272011873&id=61550356216985&mibextid=Nif5oz

**Aadi Guru**
8h

ओशो ने मंदिर और पूजा पद्धति का विरोध क्या मूर्तियों का विरोध किया उसकी पूजा होने लगी उसकी तस्वीरें की पूजा होने लगी गौतम बुद्ध ने भी उसका विरोध किया बड़े-बड़े गौतम बुद्ध की मूर्तियां बनने लगी कभी ने उसका विरोध किया कबीर का मंदिर बनने लगा उसकी भी मूर्तियां खड़ी हो गई

सनातन धर्म में तुम्हारे मंदिर तुम्हारी मूर्ति पूजा इतनी विशेषता होती है कि उसके जैसा कोई शस्त्र नहीं है जितने भी इसका विरोध किया वह स्वयं कहीं ना कहीं मूर्ति बनाकर तस्वीर बनाकर इस पद्धति का आज हिस्सा बन चुका है इसीलिए तुम कभी भी अपने मंदिर अपनी पूजा पद्धति अपनी मूर्तियों का विरोध ना करो इससे तुम्हारी अज्ञानता ही फैलेगी अपने मंदिर अपनी पूजा पद्धति अपनी संस्कृति अपने योग को समझने का प्रयास करो स्वयं से किसी के भी बहकावे मत आओ किसी की भी बातों में मत आओ इसे सही तरीके से समझने का प्रयास करो

आदि आदि

CamScanner

किसी की उन्नति, वैभव को देखकर ईर्ष्या मत करो क्योंकि आपकी ईर्ष्या से दूसरों पर तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा मगर आपका स्वभाव जरूर विगड़ जाएगा। किसी दूसरे की समृद्धि या उसकी किसी अच्छी वस्तु को देखकर यह भाव आना कि यह इसके पास ना होकर मेरे पास होनी चाहिए थी, बस इसी का नाम ईर्ष्या है।

ईर्ष्या सीने की वो जलन है, जो पानी से नहीं अपितु सावधानी से शांत होती है। ईर्ष्या की आग बुझती अवश्य है किन्तु बल से नहीं, विवेक से। ईर्ष्या वो आग है जो लकड़ियों की नहीं अपितु आपकी खुशियों को जलाती है।

अत: संतोष और ज्ञान रूपी जल से इसे और अधिक भड़कने से रोको ताकि आपके जीवन में खुशियाँ नष्ट होने से बच सकें। जलो मत साथ- साथ चलो। क्योंकि खुशियाँ जलने से नहीं अपितु सदमार्ग पर चलने से मिला करती है।

CS CamScanner

CamScanner

पृथ्वी एक समग्र धर्म की प्रतीक्षा कर रही है। एक ऐसे धर्म की, जिसके मंदिर में सभी द्वार हों। एक ऐसे धर्म की जो मस्जिद भी हो, मंदिर भी हो, गिरजा भी हो, गुरुद्वारा भी हो। ऐसा मंदिर बनना ही चाहिए। बिना ऐसे मंदिर बने आदमी का अब कोई भविष्य नहीं है।

OSHO

CamScanner

**ओ'शो मंडली, दिवाने, मस्ताने, पागल**

2d ·

प्रेम और वासना

प्रेम! प्रतिक्षण बढ़ता है, जो प्रेम घटने लगे वह प्रेम नहीं वासना होगी!

वासना प्रतिक्षण घटती है। वासना का स्वरूप है; जब तक तुम्हें अपना काम-पात्र न मिले, बढ़ती हुई मालूम होती है। तुम एक स्त्री को चाहते हो, वह न मिले तो कामवासना बढ़ती जाती है, उबलने लगती है, सौ डिग्री पर ज्वर चढ़ जाता है, भाप बनने लगते हो, सारा जीवन दांव पर लगा मालूम पड़ता है; और मिल जाए! उसी पल से घटना शुरू हो जाती है। वासना का लक्षण यह है! जब तक न मिले तब तक बढ़ती है; मिल जाए, घटने लगती है।

प्रेम का लक्षण यह है! जब तक न मिले तब तक तुम्हें पता ही नहीं कि प्रेम क्या है; जब मिलता है तब बढ़ता है। प्रेमी पात्र जैसे ही मिलता है वैसे ही बढ़ता जाता है। प्रेम सदा दूज का चांद है, पूर्णिमा का चांद कभी होता ही नहीं; बढ़ता ही रहता है; ऐसी कोई घड़ी नहीं आती जब घटे! प्रेम सतत वर्द्धमान, सतत विकासमान है, सतत गतिमान है! कहीं ठहरता ही नहीं, प्रवाहरूप है। प्रतिक्षण बढ़ता है, विच्छेद-रहित है। विच्छेद कभी होता ही नहीं। मिलन हुआ? सदा को हुआ। मिलन हुआ? शाश्वत हुआ। जब तक मिलन नहीं हुआ! तब तक विच्छेद है, मिलन होते ही फिर कोई विच्छेद नहीं, प्रेम सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, प्रेम से ज्यादा सूक्ष्म और कुछ भी नहीं, प्रेम शून्य का संगीत है..!!

ओशो

CS CamScanner

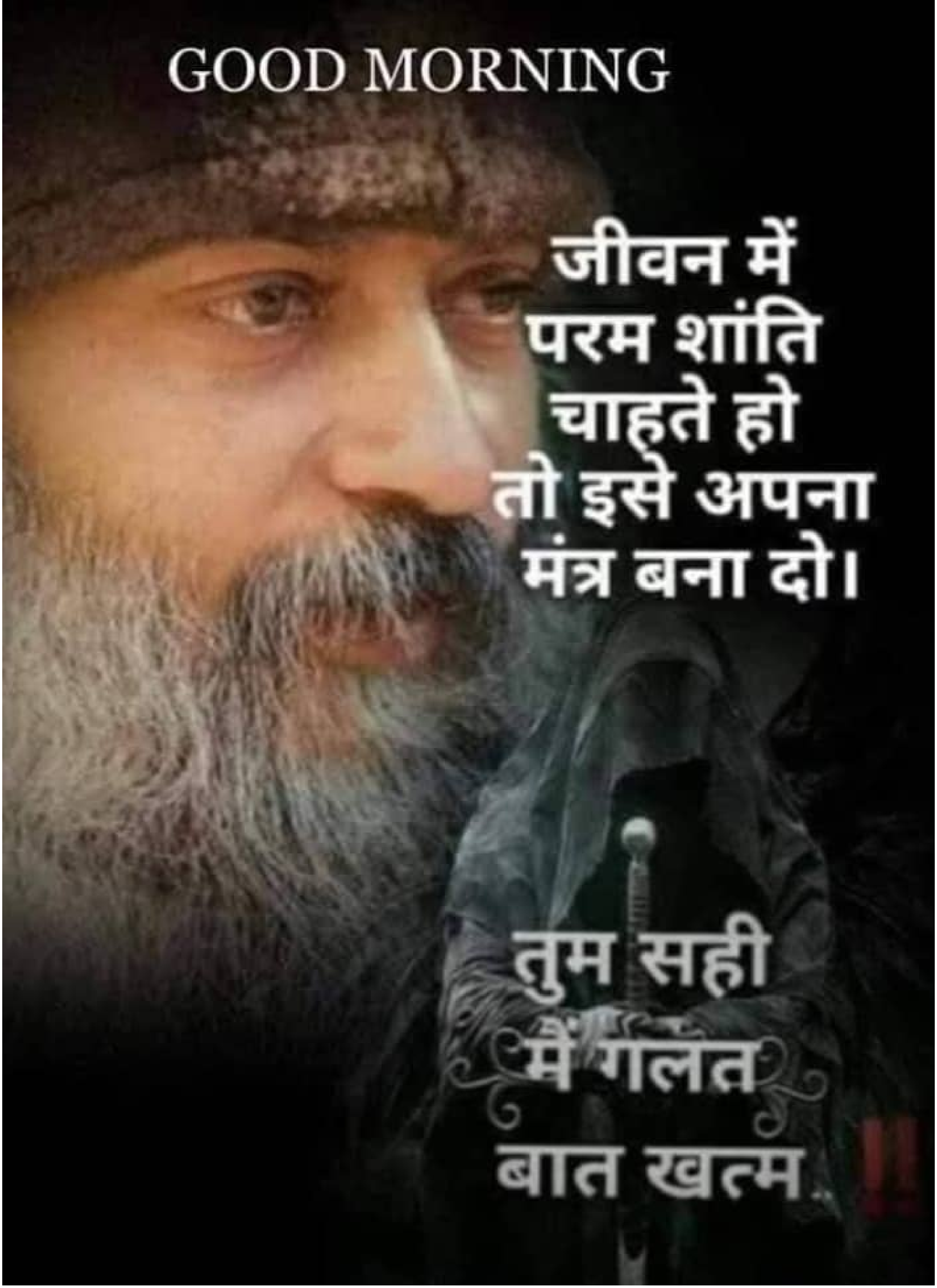


CamScanner

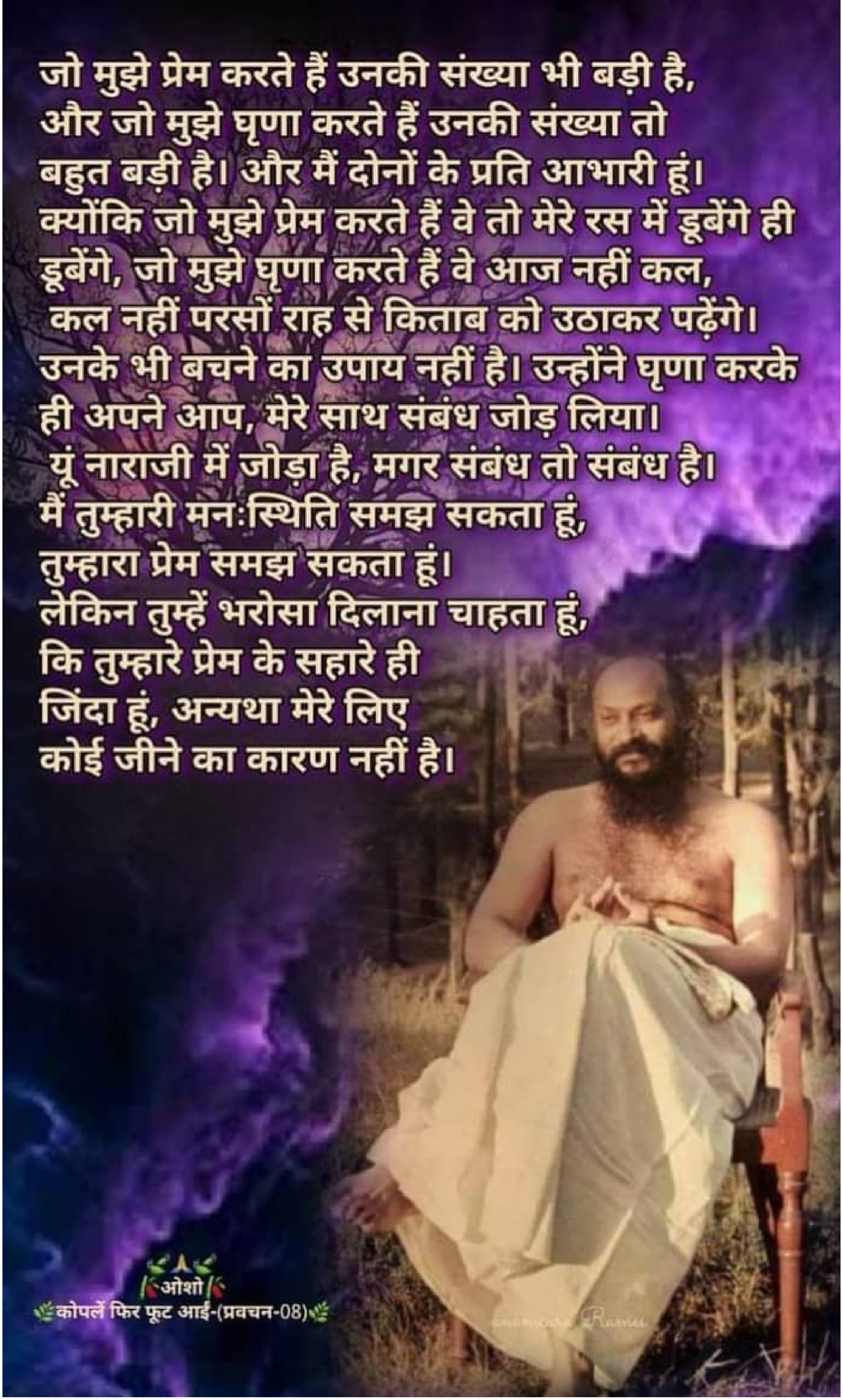
जो मुझे प्रेम करते हैं उनकी संख्या भी बड़ी है,
और जो मुझे घृणा करते हैं उनकी संख्या तो
बहुत बड़ी है। और मैं दोनों के प्रति आभारी हूं।
क्योंकि जो मुझे प्रेम करते हैं वे तो मेरे रस में डूबेंगे ही
डूबेंगे, जो मुझे घृणा करते हैं वे आज नहीं कल,
कल नहीं परसों राह से किताब को उठाकर पढ़ेंगे।
उनके भी बचने का उपाय नहीं है। उन्होंने घृणा करके
ही अपने आप, मेरे साथ संबंध जोड़ लिया।
यूं नाराजी में जोड़ा है, मगर संबंध तो संबंध है।
मैं तुम्हारी मनःस्थिति समझ सकता हूं,
तुम्हारा प्रेम समझ सकता हूं।
लेकिन तुम्हें भरोसा दिलाना चाहता हूं,
कि तुम्हारे प्रेम के सहारे ही
जिंदा हूं, अन्यथा मेरे लिए
कोई जीने का कारण नहीं है।
ओशो
कोपलें फिर फूट आईं-(प्रवचन-08)

CamScanner

CS CamScanner

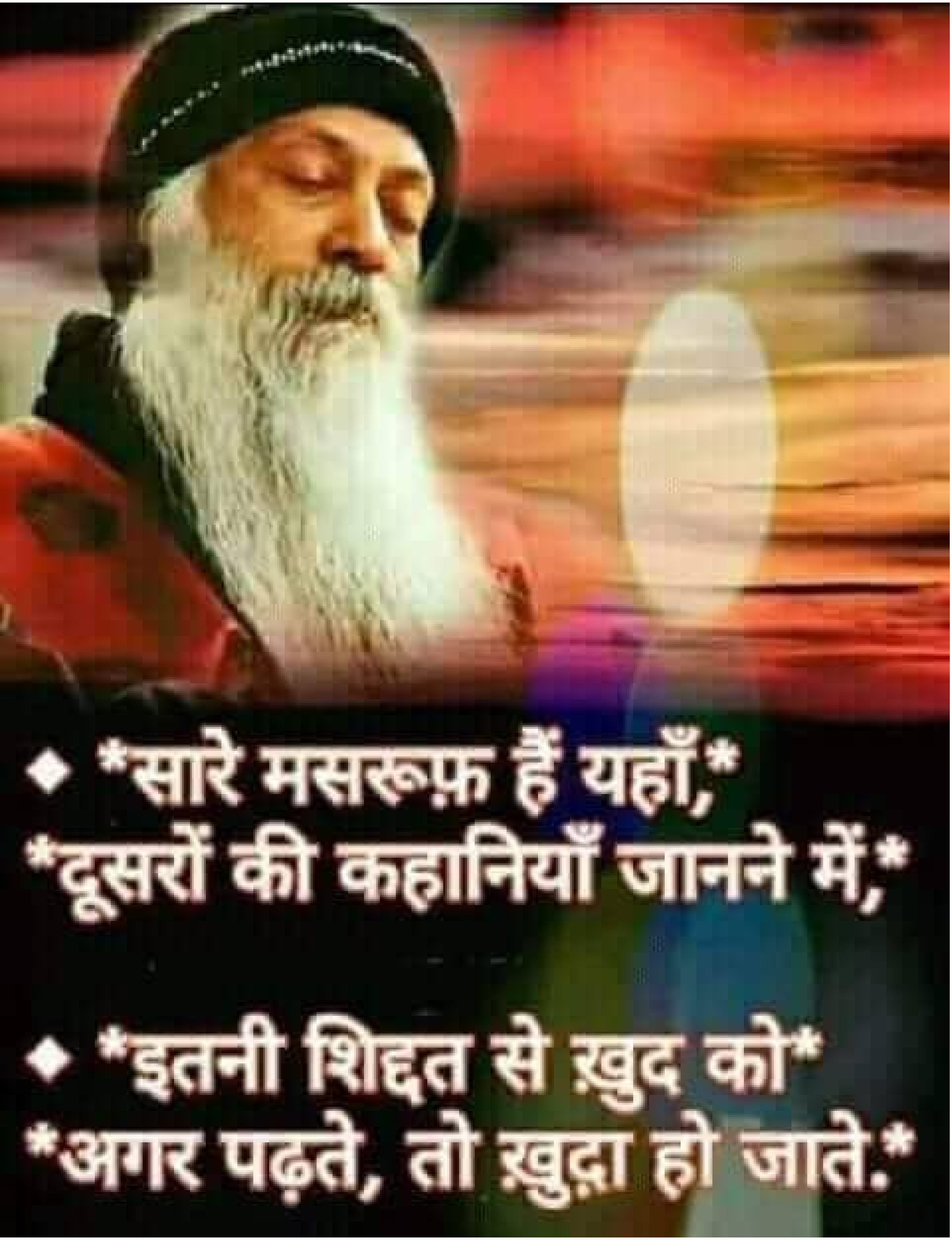


CS CamScanner

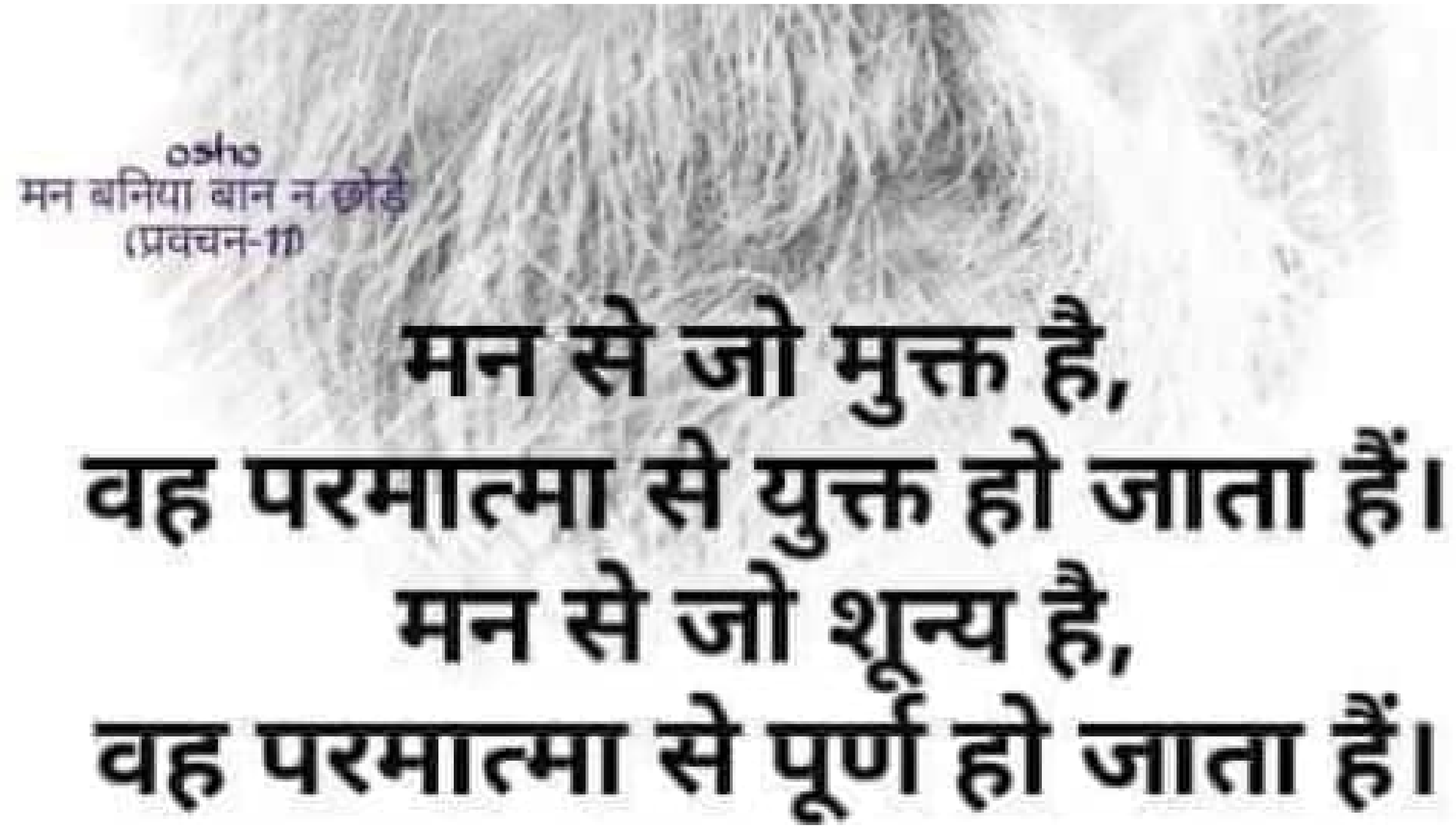
osho
मन बनिया बान न छोड़े
(प्रवचन-11)
मन से जो मुक्त है,
वह परमात्मा से युक्त हो जाता हैं।
मन से जो शून्य है,
वह परमात्मा से पूर्ण हो जाता हैं।

CamScanner

ओ शो वाणी

Manish Agrawal · 1d ·

सूक्ष्म नाक का अर्थ-भारतीय दर्शन में 3 शरीरों की बात कही गई है। स्थूल शरीर,सूक्ष्म शरीर,कारण शरीर। एक संत ध्यान द्वारा उन शरीरों की बनावट देख पाता है और अपनी मौत के बारे में जान पाता है। 💯

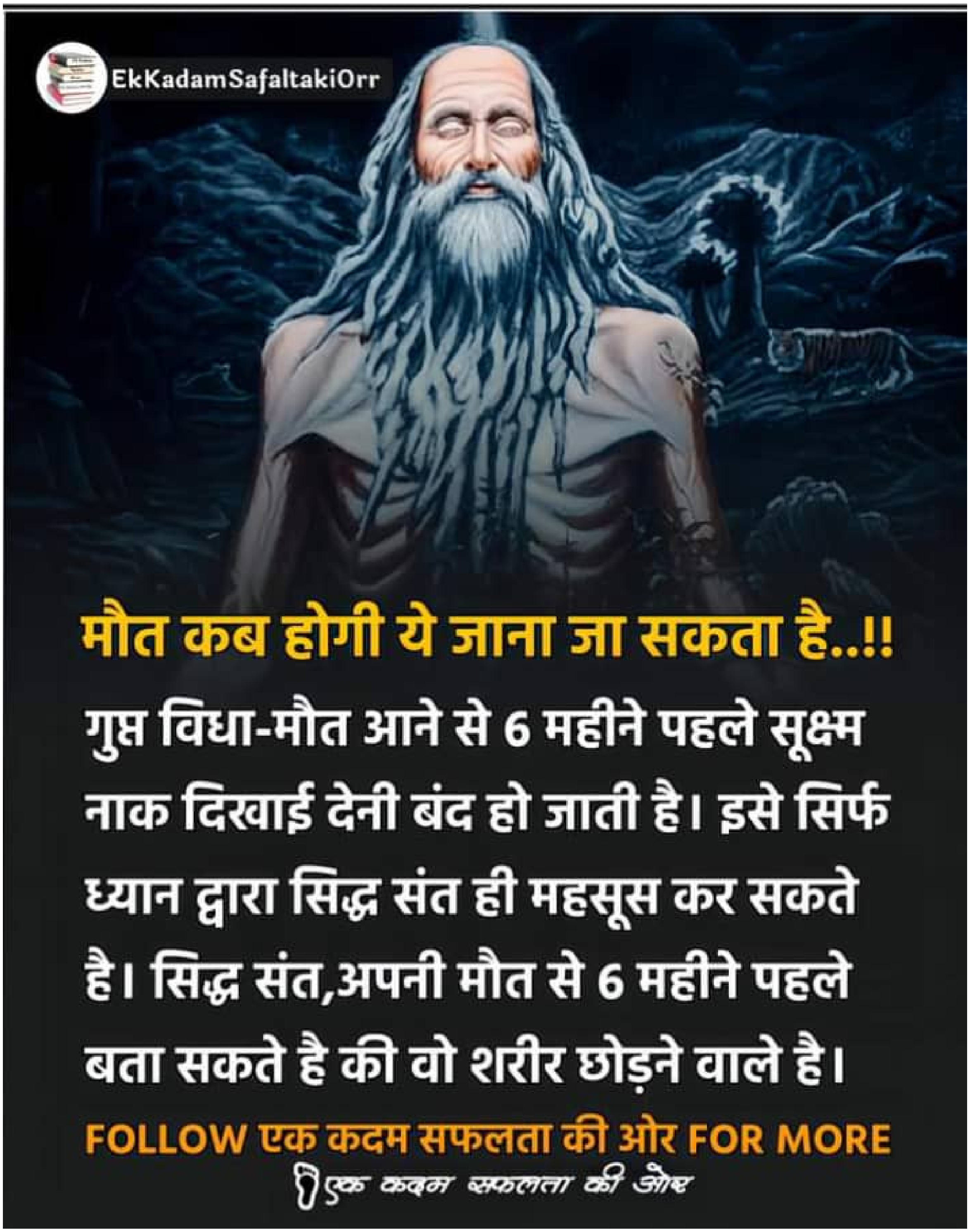


CamScanner

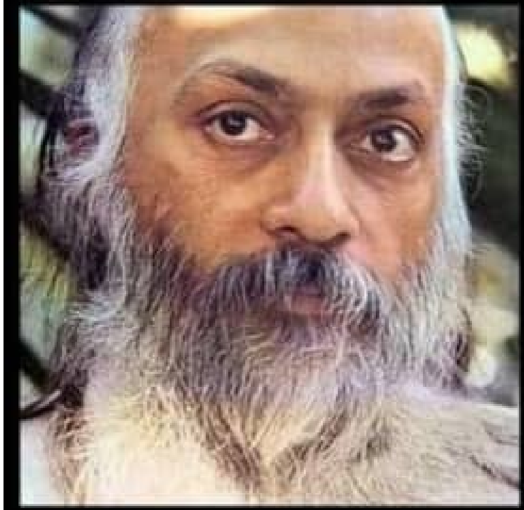

ओशो
जीवन रहस्य

ओशो
निर्वाण
समूह

जिस दिन से यह जिंदगी व्यर्थ दिखाई पड़नी शुरू हो जाए, उस दिन मैं कहूंगा आपकी असली जिंदगी शुरू हुई, आपका असली जन्म शुरू हुआ। और उस तरह के आदमी को ही द्विज, दि ट्वाइस बॉर्न! जनेऊ डालने वाले को नहीं। क्योंकि जनेऊ तो किसी को भी डाला जा सकता है। द्विज हम कहते रहे हैं उस आदमी को जो इस दूसरी जिंदगी में प्रवेश कर जाता है। एक जन्म है जो मां –बाप से मिलता है, वह शरीर का ही हो सकता है। एक और जन्म है जो स्वयं की खोज से मिलता है, वही जीवन की शुरुआत है।

CamScanner

ओशो

ये करो,
ये न करो,
आत्मा क्या है?
परमात्मा क्या है?
ये जंजाल में मत पड़ो,
सिर्फ
ध्यान करो!

CS CamScanner

CamScanner

9:46 pm 6 KB/s VoLTE 4G 31%

काली सुंदर है, सुंदरतम है!
हिंदुओं ने एक बड़ी अनूठी कल्पना की है। हिंदुओं से ज्यादा कल्पनाशील, काव्यात्मक कोई जाति पृथ्वी पर नहीं है। उनके काव्य बड़े गहरे हैं। तुमने कभी देखी #काली की प्रतिमा? वह मां भी है और मौत भी। काल मृत्यु का नाम है, इसलिए काली; और मां भी है, इसलिए नारी। सुंदर है, मां जैसी सुंदर है। मां जैसा सुंदर तो फिर कोई भी नहीं हो सकता। अपनी तो मां कुरूप भी हो तो भी सुंदर मालूम होती है। मां के संबंध में तो कोई #सौंदर्य का विचार ही नहीं करता। #मां तो सुंदर होती ही है। क्योंकि अपनी मां को कुरूप देखने का अर्थ तो अपने को ही कुरूप देखना होगा, क्योंकि तुम उसी के विस्तार हो। तो काली सुंदर है, सुंदरतम है। लेकिन फिर भी गले में नरमुंडों की माला है! सुंदर है, पर काली है--काल, मौत!

पश्चिम के विचारक जब इस प्रतीक पर सोचते हैं, तो वे बड़े चकित होते हैं कि स्त्री को इतना #विकराल क्यों चित्रित किया है! और तुम उसे मां भी कहते हो! और इतना विकराल!

इतना विकराल इसलिए कि जिससे जन्म मिला है, उसी से मृत्यु की शुरुआत भी हुई। विकराल इसलिए कि जन्म के साथ ही मौत भी आ गई है। तो मां ने जन्म ही नहीं दिया, मौत भी दी है। तो एक तरफ वह सुंदर है मां की तरह, स्रोत की तरह। और एक तरफ अंत की तरह, काल की तरह अत्यंत काली है। गले में नरमुंडों की माला है, हाथ में कटा हुआ सिर है, खून टपक रहा है, पैरों के नीचे अपने ही पति को दबाए खड़ी है।

स्त्री के ये दो रूप--कि वह #जीवन भी है और #मृत्यु भी--बड़ा गहरा प्रतीक है। क्योंकि जहां से जीवन आएगा, वहीं से मृत्यु भी आएगी; वे दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। और जैसा हिंदुओं ने इस बात को पहचाना, पृथ्वी पर कोई भी नहीं पहचान सका।

– #ओशो

भजगोविन्दम् मूढ़मते प्रवचन - ०८

CS CamScanner

CS CamScanner

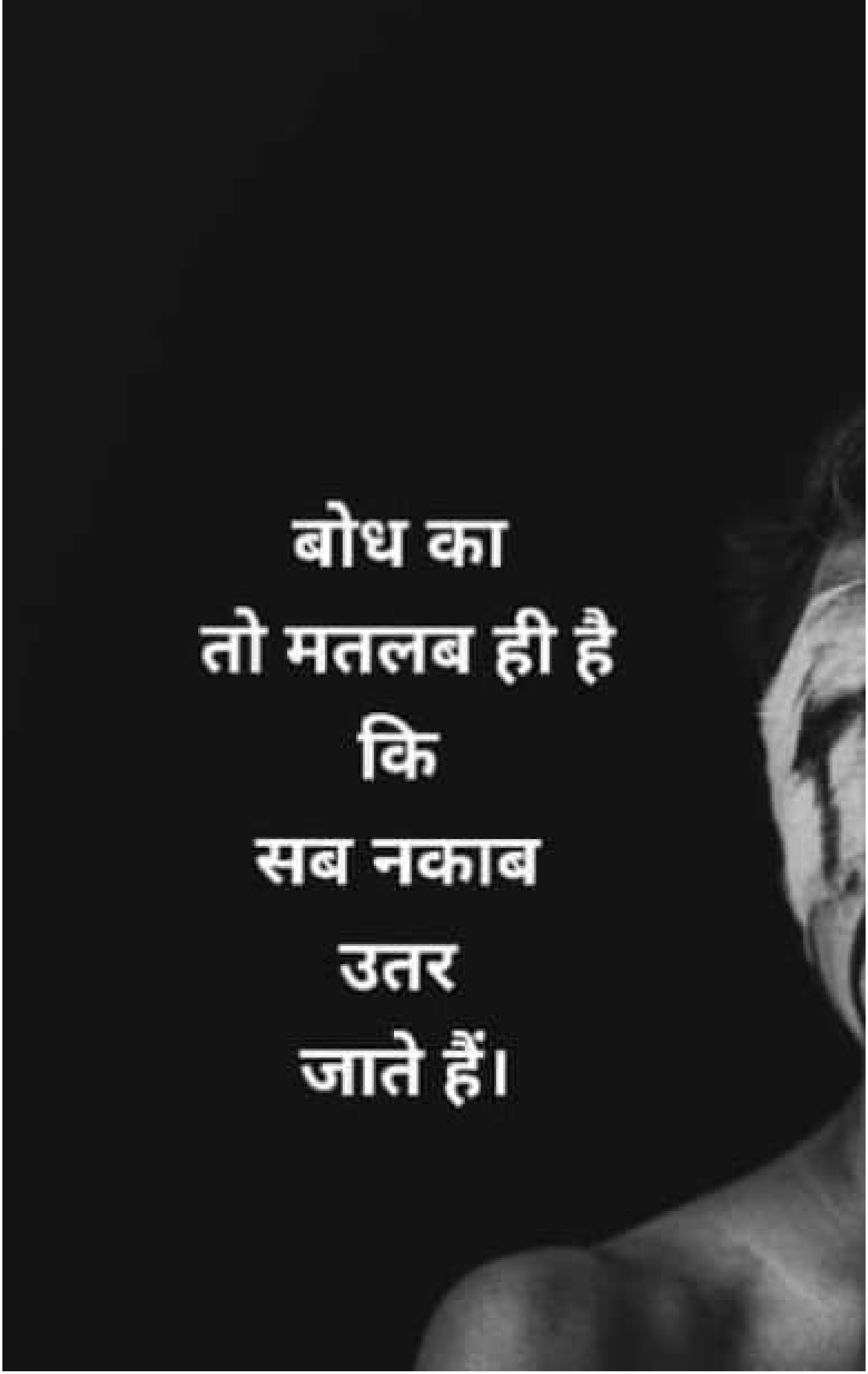


CamScanner

लोग आपकी कदर तभी करेंगे.

जब आप उनको उन्हीं..

की तरह अनदेखा करना सीख जाओगो...!!

CamScanner

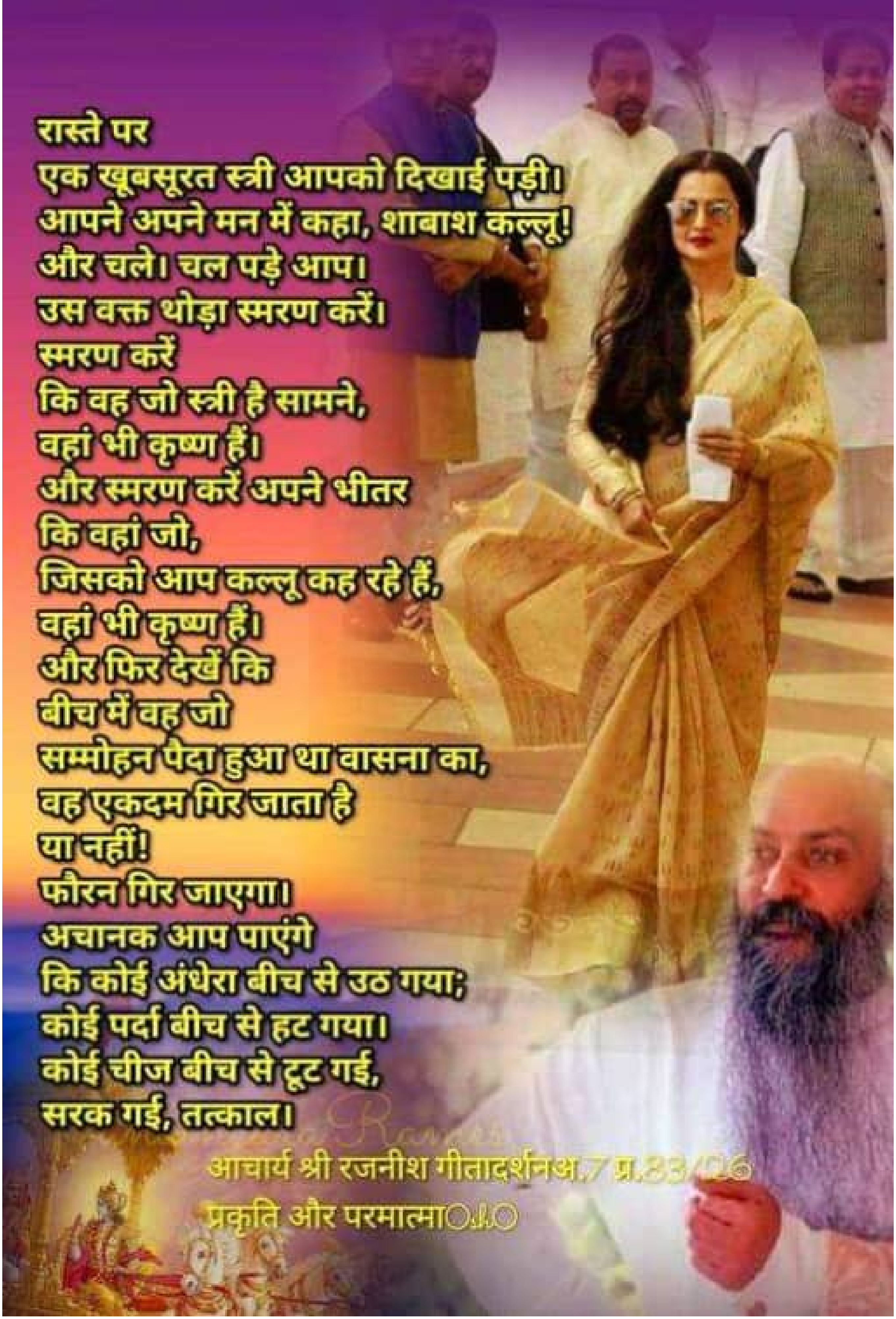
रास्ते पर
एक खूबसूरत स्त्री आपको दिखाई पड़ी।
आपने अपने मन में कहा, शाबाश कल्लू!
और चले। चल पड़े आप।
उस वक्त थोड़ा स्मरण करें।
स्मरण करें
कि वह जो स्त्री है सामने,
वहां भी कृष्ण हैं।
और स्मरण करें अपने भीतर
कि वहां जो,
जिसको आप कल्लू कह रहे हैं,
वहां भी कृष्ण हैं।
और फिर देखें कि
बीच में वह जो
सम्मोहन पैदा हुआ था वासना का,
वह एकदम गिर जाता है
या नहीं!
फौरन गिर जाएगा।
अचानक आप पाएंगे
कि कोई अंधेरा बीच से उठ गया;
कोई पर्दा बीच से हट गया।
कोई चीज बीच से टूट गई,
सरक गई, तत्काल।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शनअ.7 प्र.83/06
प्रकृति और परमात्मा

CamScanner

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 3h ·

लंका में एक मंदिर है, जहां बुद्ध का दांत पूजा जा रहा है। और वैज्ञानिकों ने खोज की है और वे कहते हैं यह बुद्ध का दांत ही नहीं है। बुद्ध की तो बात छोड़ो, यह आदमी का ही दांत नहीं है। वह किसी जानवर का दांत है। मगर बौद्ध मानने को तैयार नहीं हैं। और उनको भी दिखायी पड़ता है कि इतना बड़ा दांत आदमी का होता ही नहीं। इस ढंग का दात आदमी का नहीं होता। वैज्ञानिकों ने सब परीक्षण करके तय कर दिया है कि किस तरह के जानवर का दात है। मगर पूजा जारी है!
वे कहते हैं : सदा से चली आयी है; हम छोड़ कैसे सकते हैं! सदियां मूढ़ थीं? पच्चीस सौ साल से हम इसको पूजते हैं! किसी को पता नहीं चला, आपको पहली दफा पता चला! पूजा जारी रहेगी। अस्थियां पूंजी जाती हैं। राख पूंजी जाती है। लाशें पूजी जाती हैं। और जीवंत का तिरस्कार होता है! आदमी बहुत अदभुत है!
जब बुद्ध जिंदा होते हैं, तब पत्थर मारे जाते हैं। और जब बुद्ध मर जाते हैं, तब पूजा होती है! जब क्राइस्ट जिंदा थे, तो सूली लगायी। और जब अब मर गए हैं, तो कितने चर्च! लाखों चर्च! कितनी चर्चा! जितनी किताबें जीसस पर लिखी जाती हैं, किसी पर नहीं लिखी जातीं। और जितने पंडित—पुरोहित जीसस के पीछे हैं, उतने किसी के पीछे नहीं। और जितने मंदिर जीसस के लिए खड़े हैं, उतने मंदिर किसी के लिए नहीं हैं। आधी पृथ्वी ईसाई है!

ओशो।

CamScanner

औरत की खूबसूरती
मर्द की कामुकता
पर निर्भर करती है !
जितना अधिक
मर्द कामूक होगा
औरत उतनी ही
सुंन्दर लगेगी
@osho deep thought


CamScanner

जिसने भीतर की वासना ओ के
सारे कपडे उतार के फेक दिये हो
वोही तो दिगम्बर हे

CamScanner

CamScanner

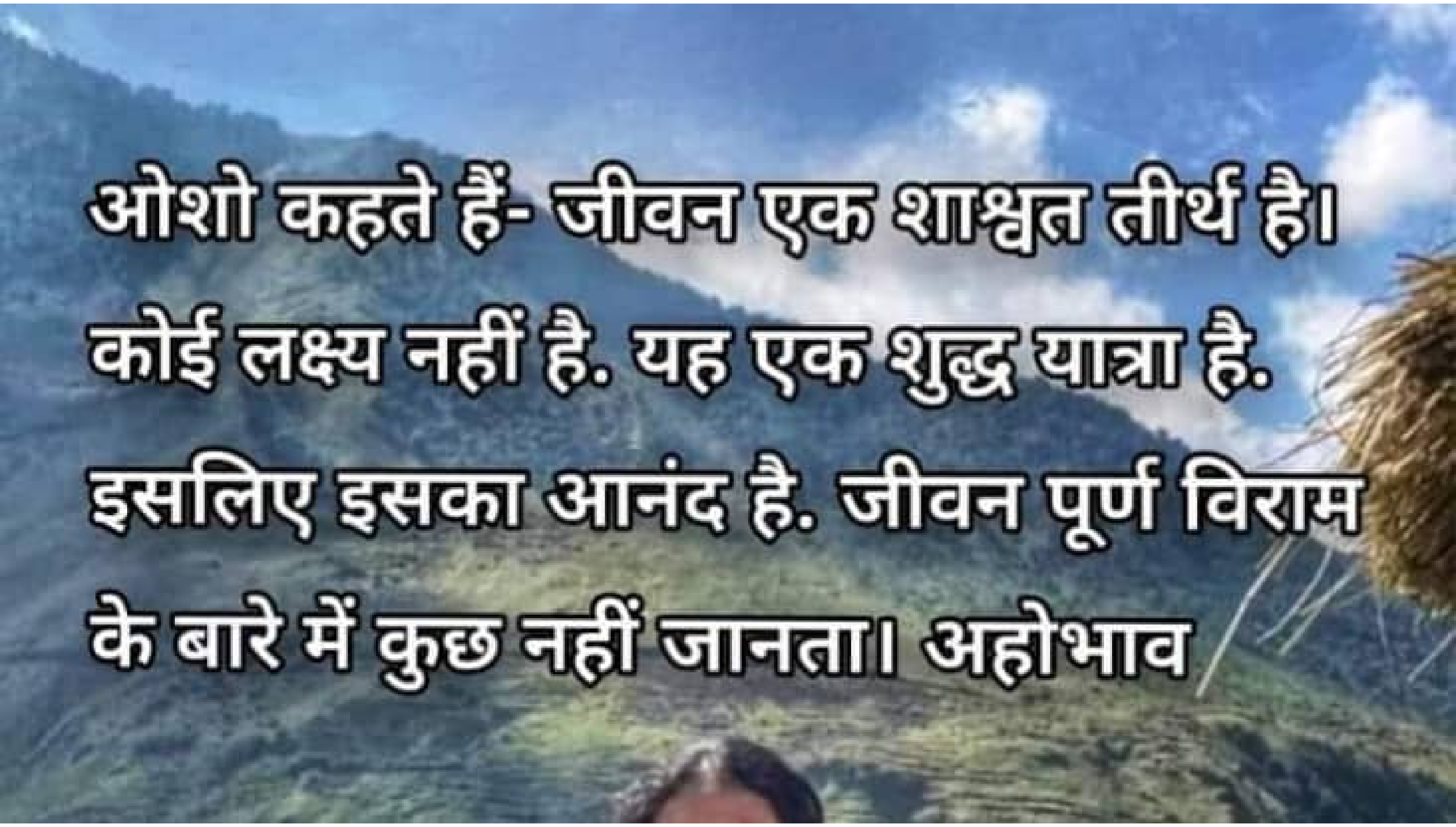
ओशो कहते हैं- जीवन एक शाश्वत तीर्थ है।
कोई लक्ष्य नहीं है. यह एक शुद्ध यात्रा है.
इसलिए इसका आनंद है. जीवन पूर्ण विराम
के बारे में कुछ नहीं जानता। अहोभाव

CamScanner

हम सड़क पर भीख मांगते आदमी को तो कहते हैं, बुरा है। तेरे पास हाथ-पैर मजबूत हैं, क्यों भीख मांगता है? लेकिन कभी हम अपने संबंध में नहीं सोचते कि मेरी चेतना पूरी ठीक है-फिर मैं क्यों भीख मांग रहा हूं? क्यों कृष्ण के, राम के, बुद्ध के दरवाजे पर खड़ा हूं?

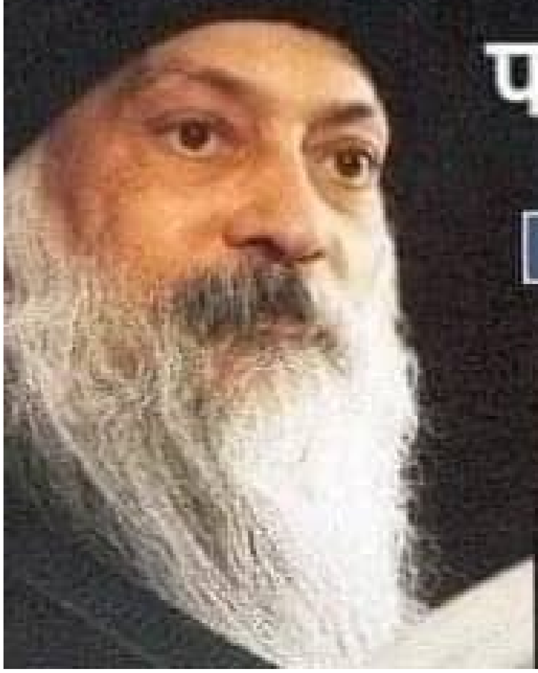

osho universal - dhaval parmar

ओशो

शून्य के पार

CamScanner

**फरीद**

10 Mar 2016 ·

कागा रे कागा रे
कागा सब तन खाइयो, मेरा चुन-चुन खाइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो, मोहि पिया मिलन की आस।।

#फरीद जी भक्ति में तल्लीन अपनी प्रार्थना में कहते हैं:-
हे काग अर्थात कौवे, तू मेरा सारा शरीर चुन-चुन कर खा लेना
किंतु मेरी दो आंखें मत खाना क्योंकि मुझे ईश्वर के दर्शन करने हैं।।

CS CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

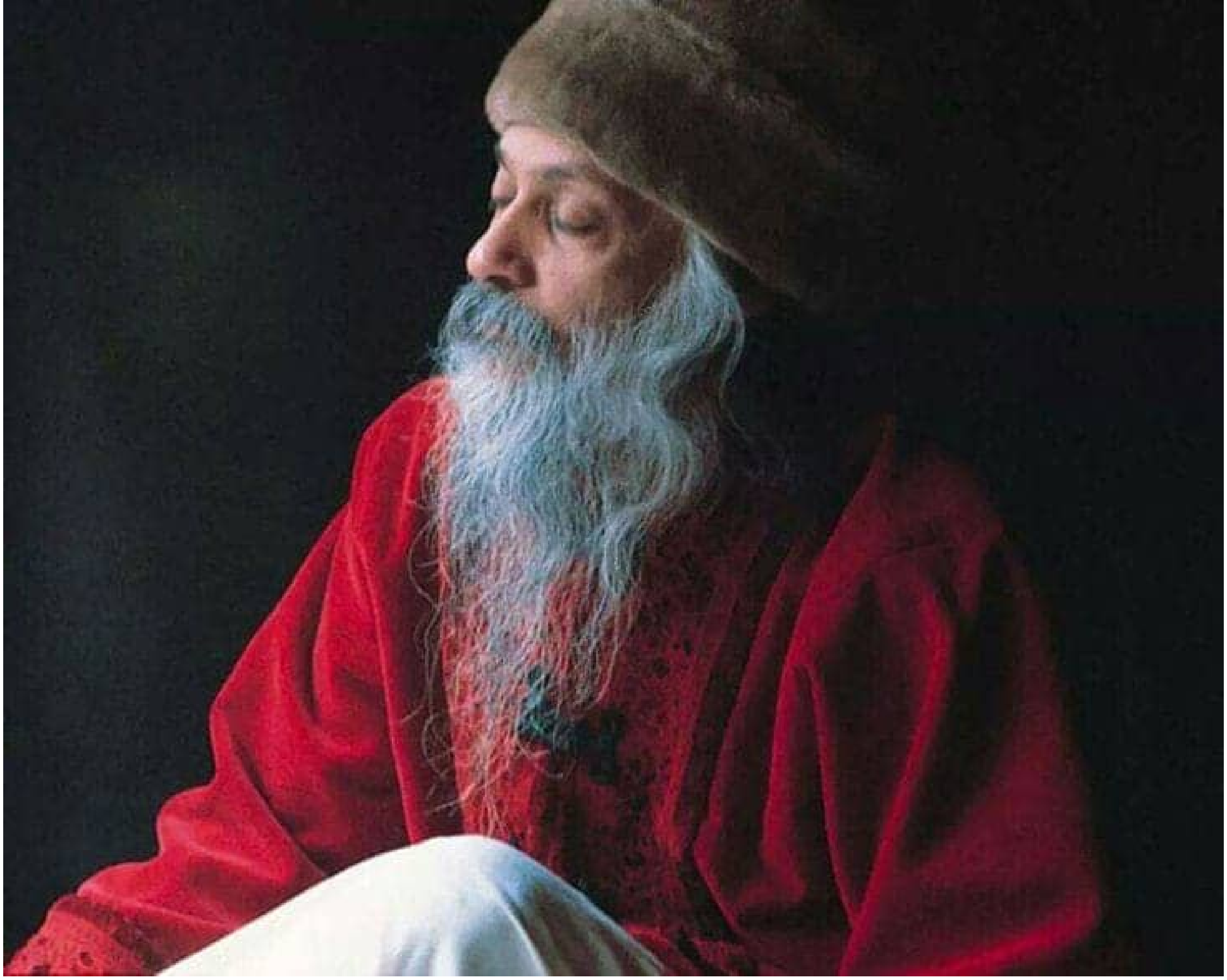

CamScanner

मौत तो नियति है, होकर ही रहेगी, शरीर में छिपी है। ऐसा थोड़े ही है कि तुम सत्तर साल के बाद एक दिन अचानक मर जाते हो। सत्तर साल तक मौत तुम्हारे शरीर के भीतर फैलती है, बड़ी होती है, विकसित होती है, एक दिन तुम्हें पूरा घेर लेती है, ग्रस लेती है। मौत शरीर का हिस्सा है। मौत शरीर का धर्म है, होकर रहेगा। जब जन्म हो गया, तो अब मौत से नहीं बचा जा सकता। जब जन्म हो गया, तो मौत हो गयी। जन्म एक हिस्सा है, मौत दूसरा हिस्सा, एक ही ऊर्जा के।

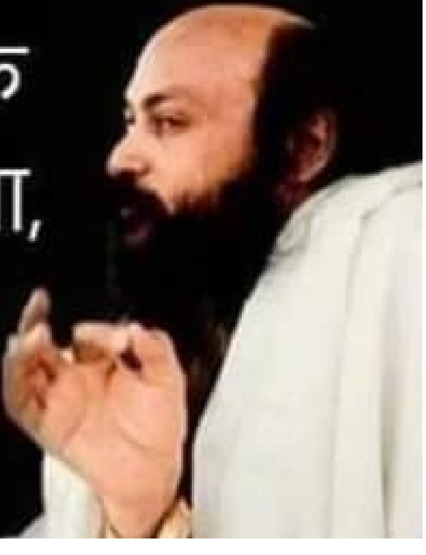

ओशो : अष्टावक्र महागीता

CS CamScanner

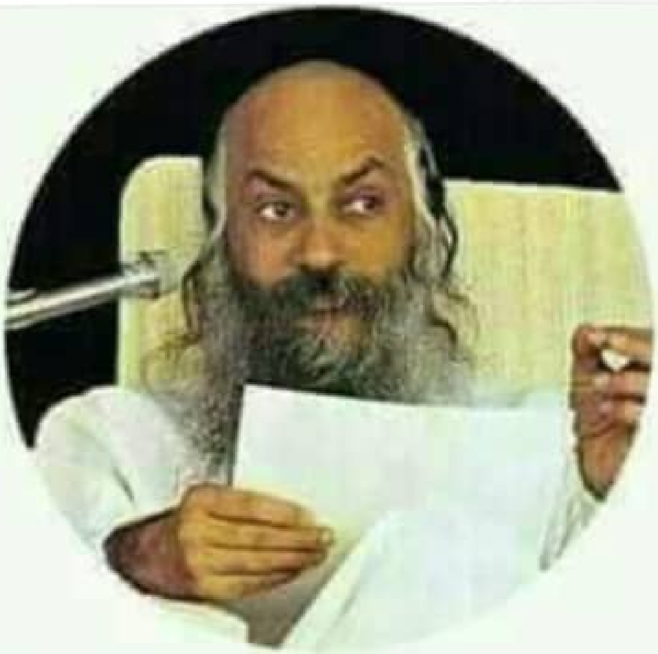

जन्म से कोई धार्मिक नहीं होता;
ईसाई होता है, जैन होता है,
मुसलमान होता है, हिंदू होता है;
धार्मिक नहीं होता।
धर्म की खोज तो व्यक्ति की
निजता की खोज है

Osho

सहज योग--(प्रवचन--02)

CamScanner

🌹The truth of Life 🌹
Raj Malhotra · 13 Oct

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌹🙏

"ओशो" के वचनों से प्रेरित : "उपनिषद" का अर्थ ही है-गुरु के निकट जाकर सुनना। आज भी यह वचन सार्थक है। ज्ञान के ग्राहक बनने से परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग सरल होता है।

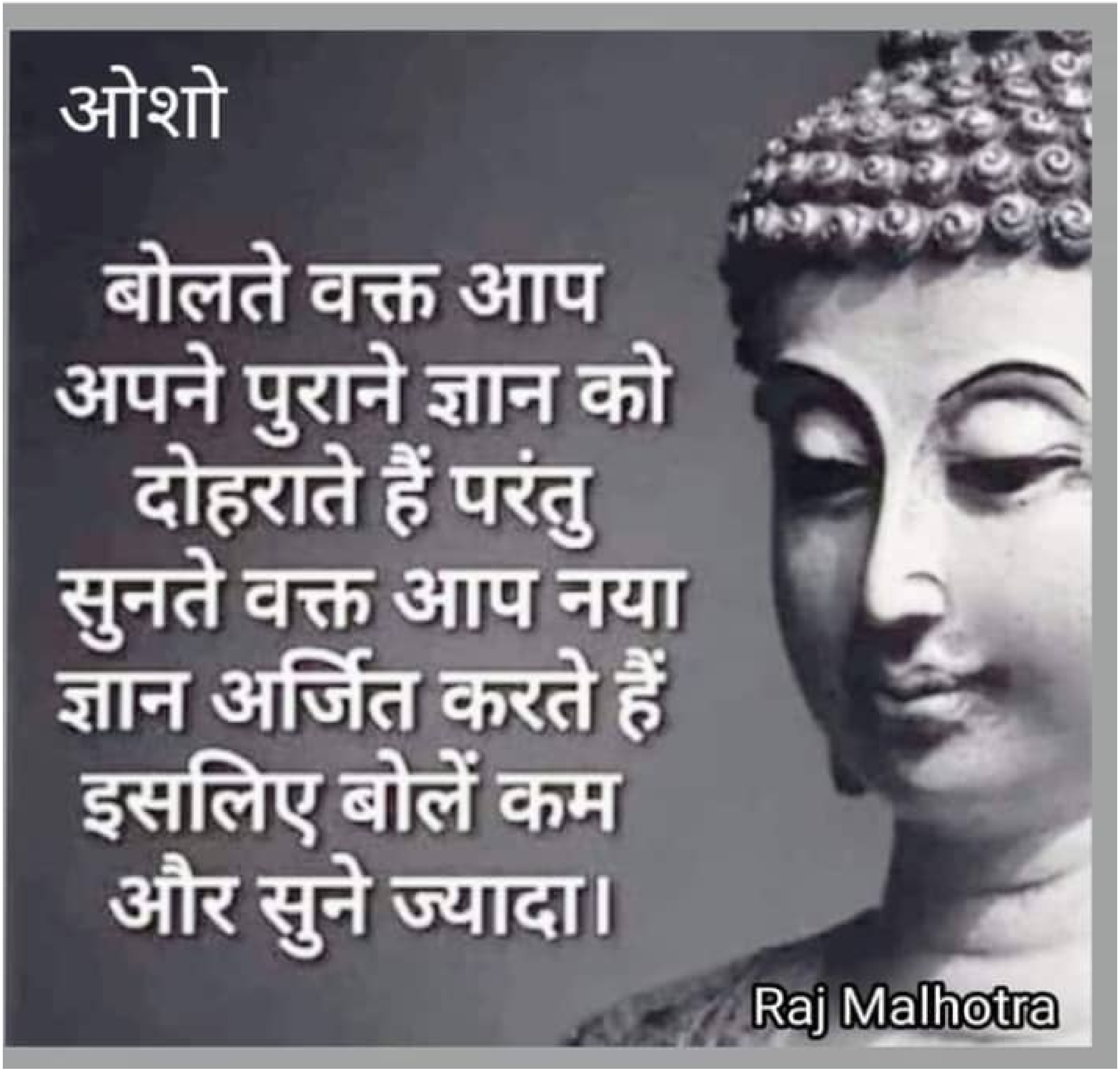


CamScanner

"एक बार भी कोई पूर्ण हृदय से कह पाए- 'जो तेरी मर्जी -उसके जीवन से दुख विदा हो जाता है। 'मेरी मर्जी में चिंता है, भय है। 'उसकी मर्जी में शांति है, आनंद है।"

अहोभाव

ओशो

CamScanner

**सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन**

Reels · 3d ·

सब आया एक ही घाट से, उतरा एक ही बाट।
बीच में दुविधा पड़ गयी, हो गए बारह बाट।।
घाटे पानी सब भरे,औघट भरे न कोय।
अवघट घाट कबीर का,भरे सो निर्मल होय।।
हिन्दू कहूं तो हूँ नहीं,मुसलमान भी नाही।
गैबी दोनों बीच में,खेलूं दोनों माही।।
साहेब बंदगी🙏🙏🙏,साहेब!
#कबीरवाणीअमृत #कबीरवाणीअमृत
#सदगुरु_कबीर_साहेब_वाणी_वचन #कबीरअमृत #माला_फेरत
#कबीरयात्रा #कबीरसागर #कबीरसाखी #कबीरभजन
#Kabir_is_God

CamScanner

11:53 pm 29 KB/s 3%

Like Comment Share

अहोभाव
2d ·

अहोभाव

## जोखिम उठाने की हिम्मत

झूठ तो अपने ऊपर शक्कर चढ़ाकर आएगा। सत्य तो जैसा है वैसा है- नग्न! जो लोग झूठ के आदी हो गए हैं, वे सत्य से तो आंखें चुराएंगे; सत्य उनकी जीभ को जमेगा ही नहीं। सत्य तो उन्हें बहुत तिक्त मालूम होगा, कड़वा मालूम होगा। झूठ तुम्हारे अहंकार को पुष्ट करते है। इसलिए झूठ को स्वीकार कर लेना, आसान है; आसान क्या सुखद है, प्रीतिकर है। सत्य को स्वीकार करने के लिए साहस चाहिए। सत्य को स्वीकार करने के लिए साहस ही नहीं, दुस्साहस चाहिए! सत्य को स्वीकार करने के लिए जोखिम उठाने की हिम्मत चाहिए इसलिए सत्य के सामने कोई झुकता नहीं। झुकना पड़ेगा! झुकना कौन चाहता है? कोई नहीं झुकना चाहता। सत्य के सामने झुकने को जो राजी है, वही धार्मिक व्यक्ति है। मैं उसी को संन्यासी कहता हूं, लेकिन सत्य के सामने वही झुक सकता है, जिसके भीतर ध्यान की किरण उतरी हो और जिसने देखा हो कि मैं तो हूं ही नहीं। बस उस मैं के न होने में ही झुकना है। झुकना कोई कृत्य नहीं है। झुकना तुम्हारा कोई संकल्प नहीं है।
ओशो

CamScanner

मैं तुम्हें समाज-सेवक
नहीं बनाना चाहता।
और न मैं तुम्हें समाज-सुधारक
बनाना चाहता हूं।
और न मैं चाहता हूं कि तुम
कोई दुनिया भर में क्रांति करने के
महान अभियान में लग जाओ।
मैं तुम्हें छोटा सा काम दे रहा हूं --
लेकिन सबसे बड़ा काम है वह --
तुम आत्म-क्रांति में लगो।
आत्म-क्रांति ही एकमात्र
मौलिक क्रांति है और
उसी क्रांति के आधार पर
जगत में कोई दूसरी क्रांति
हो सकती है।
जबतक आत्म-क्रांति नहीं होती,
सभी क्रांतियां असफल हैं।

CamScanner

आचार्य श्री रजनीश

अहोभाव

The Last Testament, भाग-6, प्रवचन-14

**मौन की चरम अवस्था**
**जहां एक विचार भी नही उठता,**
**जहां तुम्हारी चेतना की झील में**
**एक लहर भी नही होती।**

CS CamScanner

तुम चाहे लाख दिये और मोमबत्तिया जलाओ,
इनसे तुम्हारे जीवन में रौशनी होने वाली नहीं है|
असली दीवाली तो उस दिन ही समझना जिस
दिन तुम्हारे भीतर का दिया जले,उससे पहले
तो सब अंधकार ही समझो|और राम के घर
लौटने से तुम्हारा क्या लेना देना,बात तो उस
दिन बनेगी जब तुम अपने घर अपने भीतर
लौटोगे|तो बाहर की रौशनी और त्योहारो में
मत उलझना भीतर की रौशनी को जगाने के
उपाय खोजो|घर के द्वार खोलने से धन नहीं
मिलेगा,मन के दरवाजे खोलो जिनके खुलते
ही खजाने प्रगट हो जाते है|बाहर तो
भटकाव है भीतर है समाधान|बाहर तो
सिर्फ हार है असली त्यौहार तो भीतर है|

CS CamScanner

11:50 pm 17 KB/s 4%

अमावस की रात पूर्णिमा उगे भीतर तो जीवन का जो विरोधाभास है वह साफ हो जाता है। कितना ही अंधेरा हो, घबड़ाना मत, *अमावस की रात भी निर्वाण घटा है।* और कितनी ही गंदी कीचड़ हो, घबराना मत, कमल खिले हैं। और मिट्टी का दीया हो तो चिंता मत करना कि मिट्टी के दीए में क्या होगा? ज्योति जल सकती है। *मिट्टी पृथ्वी का हिस्सा है, ज्योति आकाश का।* इसलिए ज्योति हमेशा ऊपर की तरफ भागती रहती है। ज्योति हमेशा ऊर्ध्वगामी है।" इन पटाखों को सुनते हैं? कभी तुमने सोचा कि पूरी दुनिया में सभी संस्कृतियों में, हर समाज में उत्सव के लिए कुछ दिन क्यों रखे होते हैं? *उत्सव के ये कुछ दिन एक सांत्वना है, एक ** *क्षति पूर्ति है** क्योंकि समाज ने तुम्हारे जीवन से उत्सव छीन लिया है, और उसकी क्षति पूर्ति किसी और चीज से न की जाए तो तुम्हारी जिंदगी संस्कृति के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है। हर संस्कृति तुम्हें उसके बदले में कुछ देती है ताकि तुम दुख और उदासी में पूरी तरह से डूब न जाओ।
ये सांत्वनाएं झूठी हैं। ये पटाखे और ये दीये जो बाहर जल रहे हैं तुम्हें हर्ष और उल्लास से नहीं भर सकते। वे बच्चों के लिए ठीक हैं; लेकिन तुम्हारे लिए वे एक परेशानी हैं। हां, तुम्हारे *अंतर-जगत में अहर्निश दीये* जल सकते हैं, गीत-संगीत बज सकते हैं, आनंद की फूलझड़ियां फूट सकती हैं। सदा ध्यान रखो, समाज जब महसूस करता है कि तुम्हारे भीतर का दमन एक खतरनाक तरीके से फट पड़ सकता है अगर उसकी क्षति पूर्ति न की जाए, तब तुम्हारे अंदर के दमन को बाहर निकालने का कोई न कोई रास्ता निकालता है। यह वास्तविक उत्सव नहीं है, और यह सच्चा नहीं हो सकता। सच्चा उत्सव तुम्हारे जीवन से निकले, तुम्हारे जीवन का अंतरंग हिस्सा हो। और *सच्चा उत्सव कैलेण्डर के अनुसार नहीं हो सकता* कि नवंबर की पहली तारीख पर तुम उत्सव मनाओगे।

आश्चर्य! पूरे साल भर तुम दुखी रहो और पहली नवंबर को तुम अचानक नाचते-गाते हुए अपने दुख से बाहर आ जाओ। या तो वह दुख झूठा था या पहली नवंबर झूठी है; दोनों एक साथ सच नहीं हो सकते। और एक बार यह तारीख निकल जाए तो तुम वापस अपने दुख भरे काले गड्ढे में गिर जाओगे – हर कोई अपनी पीड़ा में डूबा हुआ, हर कोई अपनी चिंता में घिरा हुआ। नहीं, *जीवन एक अनवरत उत्सव होना चाहिए, पूरे वर्ष दीयों का समारोह।* तभी तुम विकसित हो सकते हो, खिल सकते हो।

CamScanner

11:49 pm 27 KB/s 4%

मिट्टी का दीया बनाते हैं दीपावली में और उसमें ज्योति जलाते हैं। वह प्रतीक है इस बात का कि *मिट्टी के दीये में अमृत ज्योति* संभाली जा सकती है। मिट्टी के दीये में अमृत ज्योति जल सकती है। भारत में दीवाली मनाए जाने के दो कारण हैं। एक तो *हिंदुओं* का कारण है और एक *जैनों* का कारण है। हिंदुओं का कारण तो बहुत बहुमूल्य नहीं हैं लेकिन जैनों का कारण जरूर बहुमूल्य है। हिंदू तो मनाते हैं - **दीपावली, लक्ष्मी की पूजा का त्योहार, धन की पूजा का त्योहार। इससे ज्यादा भौतिकवाद और क्या होगा?*

लोग चांदी के सिक्के रखकर इनकी पूजा करते हैं। और ये ही भले लोग दुनिया भर में घोषणा करते हैं कि भारत जैसा धर्मिक देश नहीं है। *दुनिया के किसी भी कोने में धन की पूजा नहीं होती सिवाय भारत को छोड़कर* । लक्ष्मी की पूजा नहीं होती। अमेरिकन जो डॉलर का दीवाना है वह भी डॉलर को रखकर पूजा नहीं करता। वह भी इस बात को मूढ़तापूर्ण समझेगा। लक्ष्मी की पूजा इस पुण्यभूमि में ही होती है, इस धर्म भूमि में ही होती है। *इस देश का सबसे बड़ा त्योहार है दीपावली, और सबसे बड़ा त्योहार समर्पित है चांदी के सिक्कों के लिए!* धन की पूजा और त्याग की बातें! जैनों का कारण ज्यादा सार्थक है।
*जैन दीपावली इसलिए मनाते हैं कि उस रात अमावस की रात महावीर निर्वाण को उपलब्ध हुए।* उस रात मिट्टे के दीये में, *मृण्मय दीये में चिन्मय ज्योति* जगी। इसलिए दीये जलाते हैं। उनकी बात तो सार्थक मालूम पड़ती है। मगर वह भी बात है, जैन भी करते तो हैं पूजा चांदी के ही सिक्कों की। *जैन घरों में भी लक्ष्मी की ही पूजा होती है। औपचारिक रूप से दूसरे दिन* निर्वाण लाडू चढ़ा देते हैं भगवान पर कि लो, तुम्हारा भी निपटारा कर देते हैं। रात को पूजा करते हैं चांदी के सिक्कों की, सुबह भगवान पर निर्वाण लाडू चढ़ा देते हैं तुम से भी छुटकार ले लिया। चलो तुम भी ले लो। मौलिक अर्थ में तो बात महत्त्वपूर्ण थी। इसलिए भी महत्त्वपूर्ण थी, कि *बुद्ध को तो ज्ञान हुआ पूर्णिमा की रात।* समझ में आता है कि पूर्णिमा की रात कोई पूर्णता को उपलब्ध हो जाए। *पूरा चांद आकाश में हो और भीतर भी पूरा चांद आ जाए।* *महावीर का निर्वाण हुआ अमावस की रात।* यह ज्यादा महत्वपूर्ण है, इसमें ज्यादा काव्य है और ज्यादा अर्थवत्ता।

CamScanner

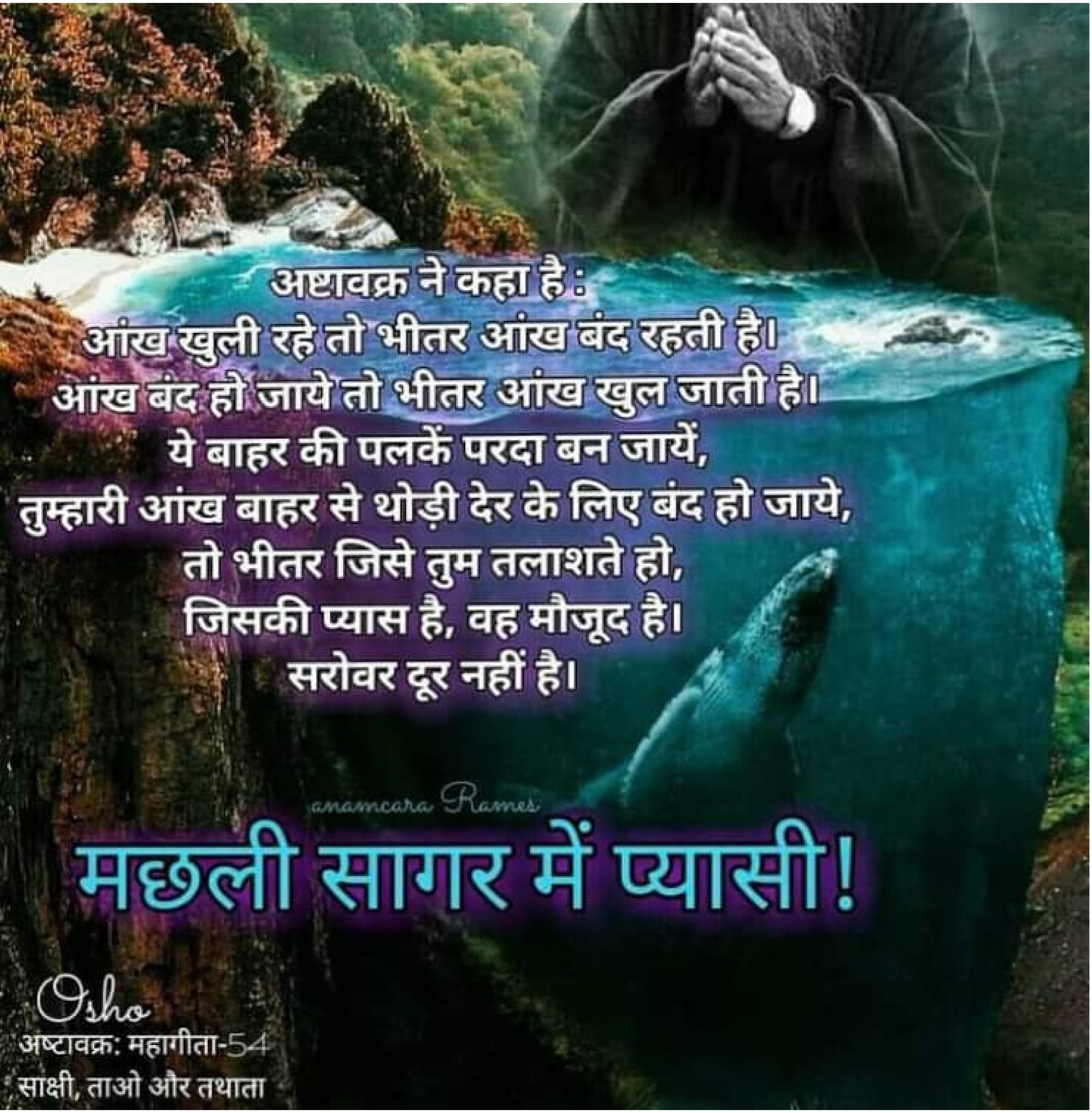
अष्टावक्र ने कहा है :
आंख खुली रहे तो भीतर आंख बंद रहती है।
आंख बंद हो जाये तो भीतर आंख खुल जाती है।
ये बाहर की पलकें परदा बन जायें,
तुम्हारी आंख बाहर से थोड़ी देर के लिए बंद हो जाये,
तो भीतर जिसे तुम तलाशते हो,
जिसकी प्यास है, वह मौजूद है।
सरोवर दूर नहीं है।
anamcara Ramesh
मछली सागर में प्यासी!
Osho
अष्टावक्र: महागीता-54
साक्षी, ताओ और तथाता

CamScanner

CamScanner

जब तक मां कर्तव्य करती है
तभी तक वह
ईश्वर के रूप में रहती है
पर
जब वह अधिकार जताती है
तो फिर वह
इंसान के रूप में आ जाती
है।

CamScanner

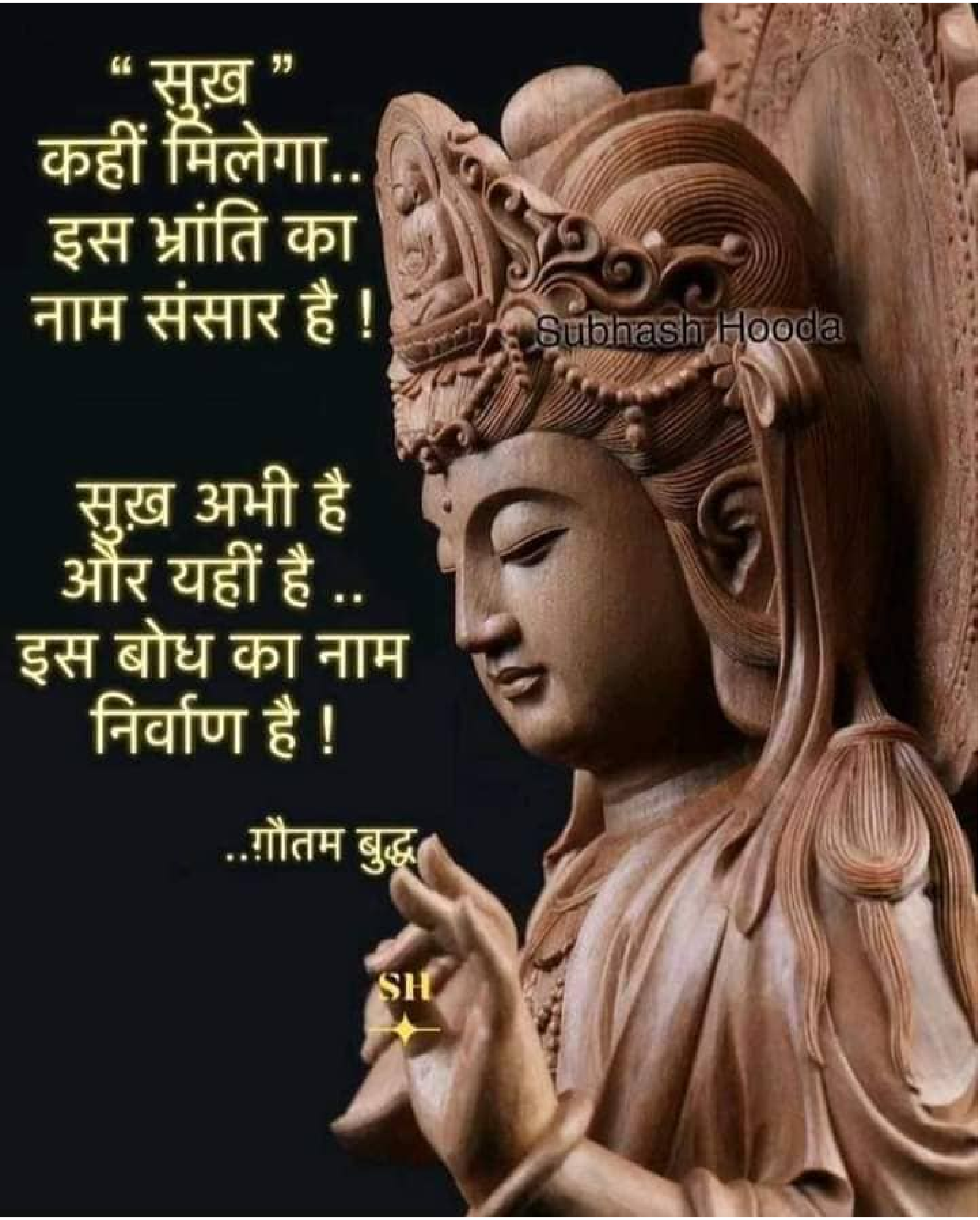
“ सुख़ ”
कहीं मिलेगा..
इस भ्रांति का
नाम संसार है !
Subhash Hooda
सुख़ अभी है
और यहीं है ..
इस बोध का नाम
निर्वाण है !
..गौतम बुद्ध
SH

CamScanner

7:54 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

Swami Lokeshanand · 1m ·

जैसे एक ही बिजली दो प्रकार से मारती है, एक चिपका कर मारती है तो दूसरी झटका देकर फेंक मारती है। ऐसे ही एक ही मोह दो प्रकार से मारता है। मोह राग बन कर चिपका कर मारता है तो विमोह द्वेष बन कर फेंक मारता है।

तुम कहते हो कि मोह से कैसे बचूं? तो यह बताओ कि रेलगाड़ी की खिड़की से जो दृश्य जगत चलता हुआ दिखाई देता है, तुम उस पर विशेष ध्यान न दो, तो तुम्हारी वृत्ति कहीं टिकती है? नहीं टिकती। क्यों? क्योंकि दृश्य आया और गया, तुम में किसी दृश्य का कोई संकल्प ही न उठा। पर तुमने जैसे ही किसी दृश्य पर ध्यान दिया कि संकल्प उठा, वृत्ति उठी, मन दौड़ा और मोहजनित राग या द्वेष हुआ। ऐसे ही संसार के किसी भी दृश्य पर विशेष ध्यान न दें तो संकल्प उठेगा ही नहीं, मोह कैसे होगा?

यदि आप कहें कि ध्यान तो देना ही पड़ता है, ध्यान बिना दिए काम कैसे चलेगा? तो जिस वस्तु पर ध्यान दो, उसे अपना मत समझो। जिसे तुम अपना न समझोगे, उससे भी मोह नहीं होगा। किसी बैंक कर्मचारी को देखो। वह नोट गिनता है, बड़े ध्यान से एक एक नोट गिनता है, रोज लाखों रुपए का लेन-देन करता है, पर न लेते हुए सुख मानता है, न देते हुए दुख पाता है। बस लेता है, देता है। क्यों? क्योंकि अपना नहीं मानता। हम भी ऐसा ही अपने जीवन में करें तो सुख दुख कैसे हो? मोह कैसे हो? राग द्वेष कैसे हों?

यह भी नहीं होता तो दूसरा काम करो। नासिका के अग्रभाग को देखो। नासिका माने नाशिका। नाशवान से आगे देखो। अविनाशी की ओर बढ़ो। तब नाशवान से मोह नहीं होगा। यह भी सरल ही है। बस भगवान का कोई एक नाम राम या ओऽम् जपने लगो। नाम जप से भगवान की कृपा प्राप्त होती है। भगवान कृपा करते हैं तो किन्हीं संत से मिलवा देते हैं। फिर संत के मार्गदर्शन में साधन करने से संत की कृपा मिलती है और संत कृपा करते हैं तो भगवान से मिलवा देते हैं। तो आप नाम जप में लगें।

सुना है कि एक बार रसगुल्ले ने चीनी से कहा- बहन तूं कितनी अभागी है। मैं शीशे की अलमारी में सजा कर रखा रहता हूँ, पर तूं एक गोदाम से दूसरे गोदाम में ही पटकी जाती रहती है। चीनी बोली- भाई तूं फूल मत। तूं जो कुछ भी है मेरे ही कारण है। मैं तुझमें न रहूँ तो तूं गुल्ला ही रह

CS CamScanner

जब मन भटकना छोड़ दे
वोही समाधि अवस्था है,
वही से ध्यान की शुरूआत
यदि मन पे काबू पा लिया
समस्याएँ खत्म और
आनंद ही आनंद शुरू

CamScanner

7:28 am 0 KB/s 100%

छोटी–छोटी चीजें असली कठिनाई की हो जाती हैं। जान देना हो तो क्षण में मामला निपट जाता है,कि कूद गए पानी में पहाड़ी से, कि चले गए समुद्र में एक दफा हिम्मत करके, कि पी गए जहर की पुड़िया–यह क्षण में हो जाता है। इतने तेज जहर हैं कि तीन सैकंड में आदमी मर जाए, बस जीभ पर रखा कि गए, एक क्षण की हिम्मत चाहिए। लेकिन दो साल चुप बैठे रहना बिना जिज्ञासा, बिना प्रश्न,बोलना ही नहीं, शब्द का उपयोग ही नहीं करना–यह ज़रालंबी बात थी मगर फंस गया था। कह चुका था कि सब लगा दूंगा तो अब मुकर नहीं सकता था, भाग नहीं सकता था। स्वीकार कर लिया, दो साल बुद्ध के पास चुप बैठा रहा।

जैसे ही राजी हुआ वैसे ही दूसरे वृक्ष के नीचे बैठा हुआ एक भिक्षु जोर से हंसने लगा। मौलुंकपुत्त ने पूछा : आप क्यों हंसते हैं?

उसने कहा : मैं इसलिए हंसता हूं कि तू भी फंसा, ऐसे ही मैं फंसा था। मैं भी ऐसा ही प्रश्न पूछने आया था कि ईश्वर है और इन सज्जन ने कहा कि दो साल चुप। दो साल चुप रहा,फिर पूछने को कुछ न बचा। तो तुझे पूछना हो तो अभी पूछ ले। देख, तुझे चेतावनी देता हूं, पूछना हो अभी पूछ ले, दो साल बाद नहीं पूछ सकेगा।

बुद्ध ने कहा : मैं अपने वायदे पर तय रहूंगा, पूछेगा तो जवाब दूंगा। अपनी तरफ से भी पूछ लूंगा तुझसे कि बोल पूछना है? तू ही न पूछे, तू ही मुकर जाए अपने प्रश्न से तो मैं उत्तर किसको दूंगा?

दो साल बीते और बुद्ध नहीं भूले। दो साल बीतने पर बुद्ध ने पूछा कि मौलुंकपुत्त अब खड़ा हो जा, पूछ ले।

मौलुंकपुत्त हंसने लगा। उसने कहा : उस भिक्षु ने ठीक ही कहा था। दो साल चुप रहते–रहते चुप्पी में ऐसी गहराई आई; चुप रहते–रहते ऐसा बोध जमा, चुप रहते–रहते ऐसा ध्यान उमगा; चुप रहते–रहते विचार धीरे–धीरे खो गए, खो गए, दूर–दूर की आवाज मालूम होने लगे; फिर सुनाई ही नहीं पड़ते थे, फिर वर्तमान में डुबकी लग गई और जो जाना.....बस आपके चरण धन्यवाद में छूना चाहता हूं। उत्तर मिल गया है, प्रश्न पूछना नहीं है।

CamScanner

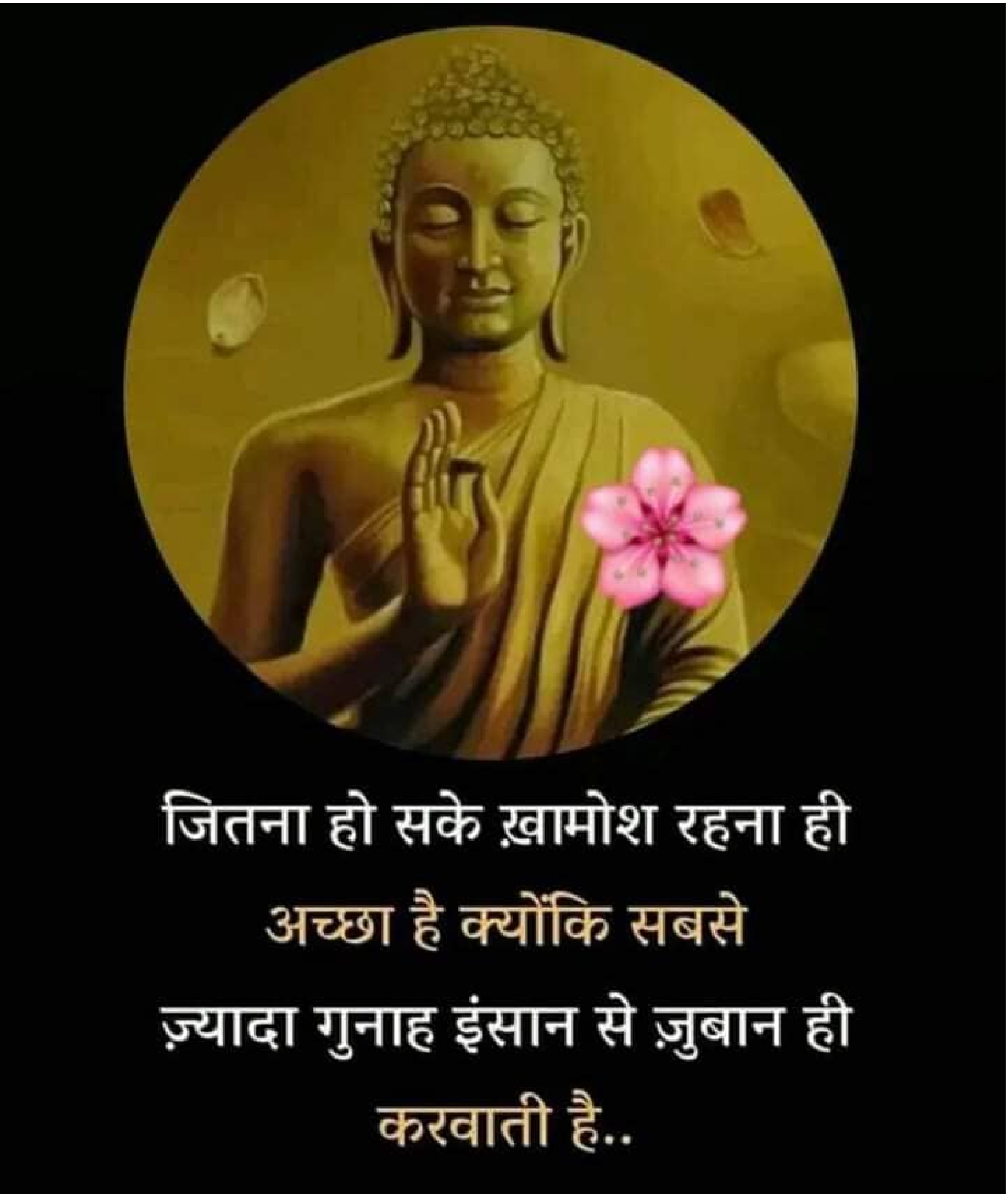


CamScanner

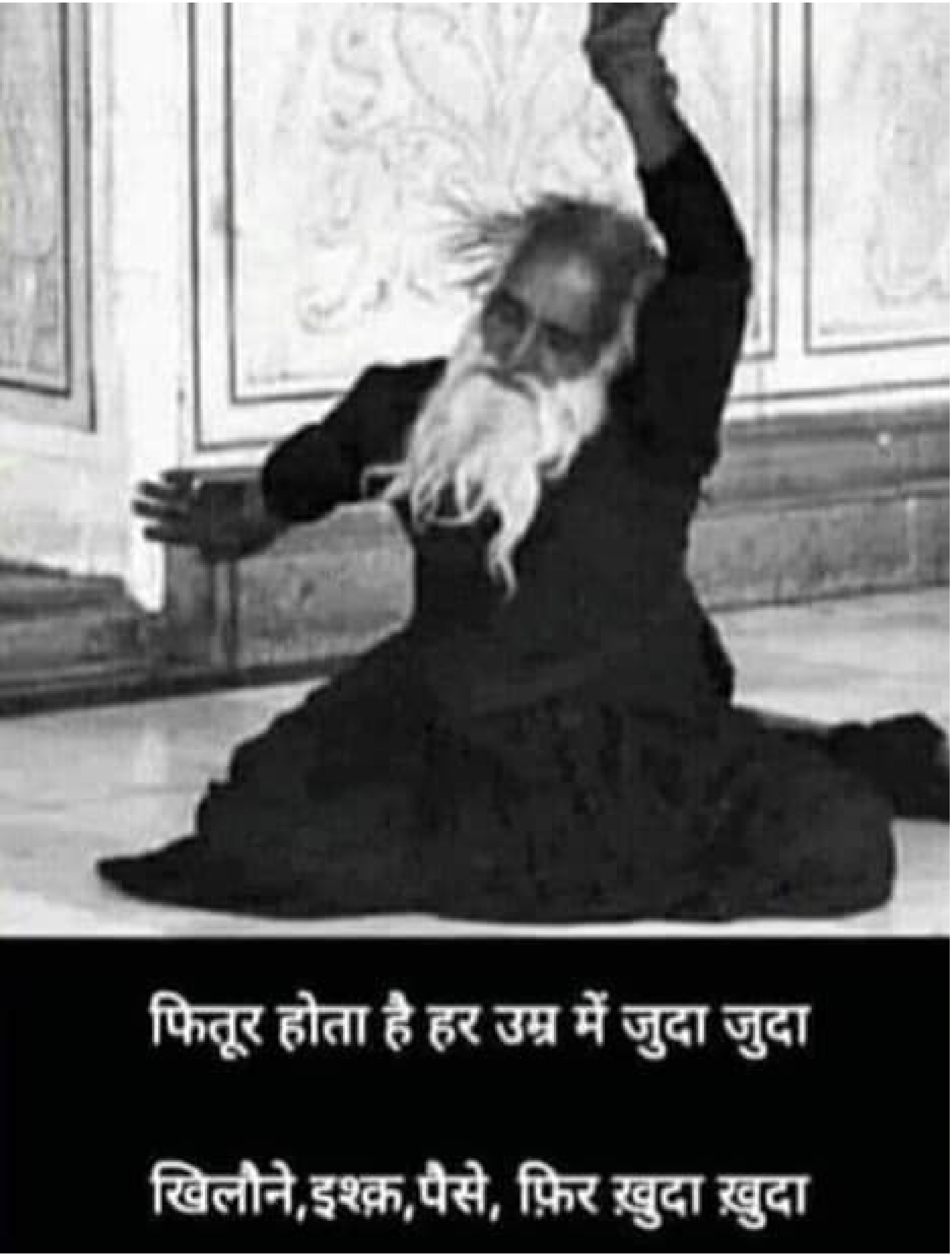


CamScanner

r. Manoj Kumar Singh Assistant Professor Department
eography Udai Pratap Autonomous College Varanasi
॥ રામ ॥
असत्य पर सत्य की, बुराई पर
अच्छाई की जीत हो।
अधर्म पर धर्म की और अन्याय
पर न्याय की विजय हो
यही दशहरा की परिभाषा है।

CamScanner

यह पृथ्वी एक बड़ा पागलखाना है ।

इसमे से जागो, इसमे से अगर नहीं जागे ।

तो बार - बार मोत आएगी,

ओर तुम बार - बार इस पागलखाने में

फेंक दिए जाओगे । Oshoravi

CS CamScanner

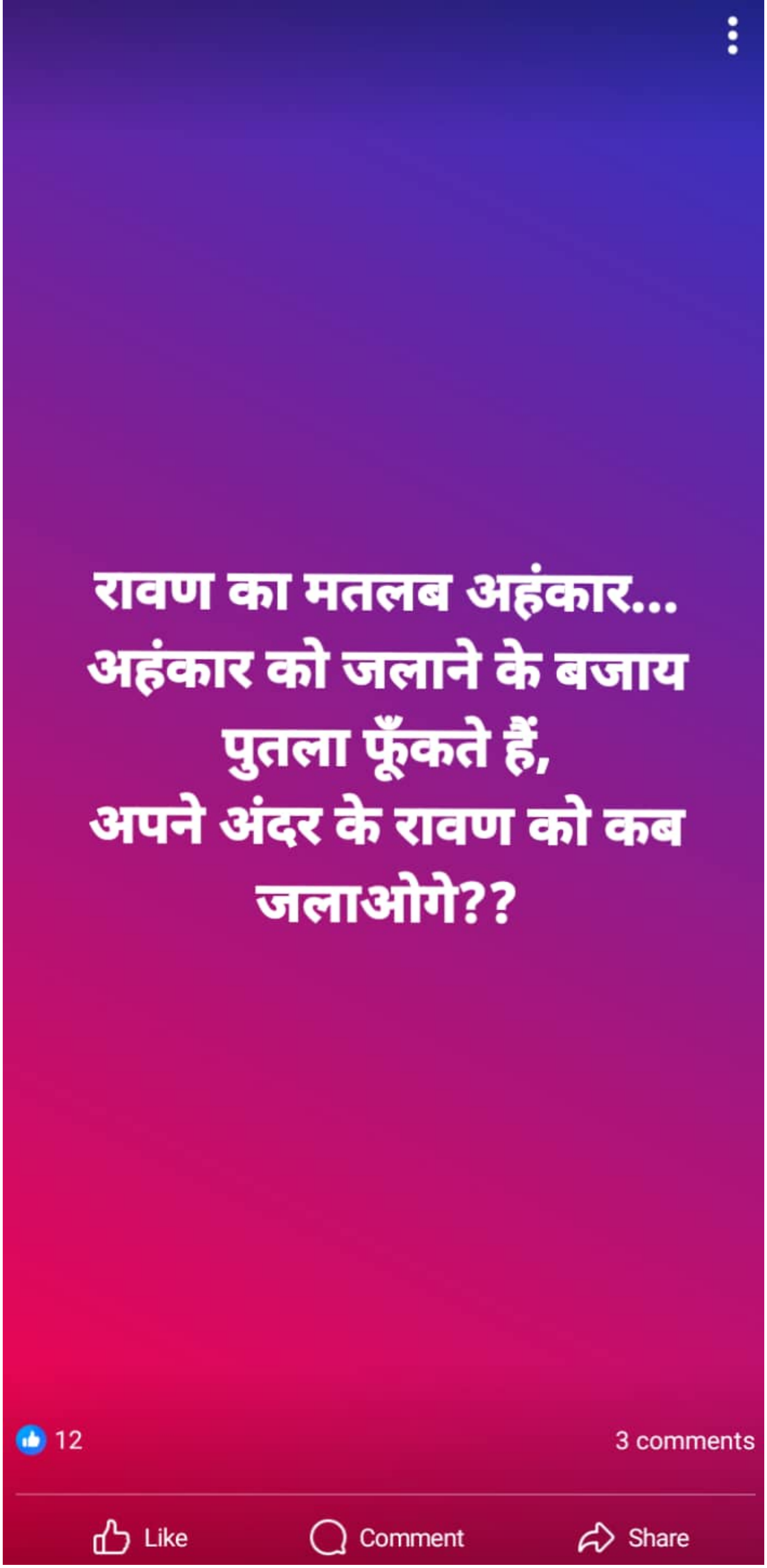
रावण का मतलब अहंकार...
अहंकार को जलाने के बजाय
पुतला फूँकते हैं,
अपने अंदर के रावण को कब
जलाओगे??
12
3 comments
Like
Comment
Share

CamScanner

मस्ती एक फ़क़ीर की,
पढ़ा गयी ये पाठ..
गाँठ में जिसके कुछ नहीं,
उसके है बस ठाठ..
अरमां तमाम उम्र के सीने में दफ़्न किए हुए
हम चलते फिरते लोग मजारों से कम हैं क्या

CamScanner

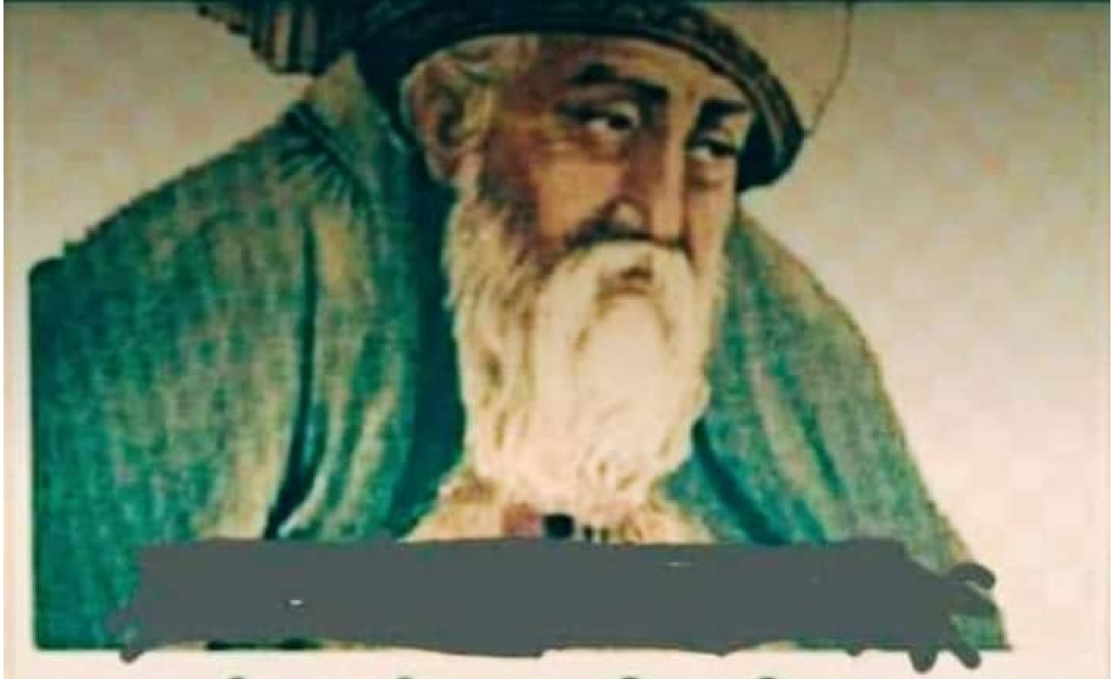

जलालुदीन रूमी एक सूफी फकीर हुए। जब वो जवान थे तो खुदा से कहा मुझे इतनी ताकत दे कि दुनिया को बदल दूँ। खुदा ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर समय बीता। रूमी ने कहा खुदा इतनी ताकत दे कि मैं अपने बच्चों को बदल सकुं। फिर कोई जवाब नहीं मिला। रूमी जब बूढ़ा हो गया उसने कहा कि खुदा इतनी ताकत दे कि मैं खुद को बदल सकुं। तब खुदा ने कहा कि रूमी ये बात तो जवानी में पूछता तो कभी की क्रांति घट जाती। दुनिया में सबसे ज्यादा कलेश यही है, पत्नी अपने पति को बदलना चाहती है, पति अपनी पत्नी को, माँ बाप अपने बच्चों को,, बस इसी जद्दोजहद में जीवन बीत जाता है।पर कोई अपने आप को बदलना नहीं चाहता।

CS CamScanner

lifefacts0.9 • Original audio

# टॉपर बनने का राज।

1. कुर्सी या टेबल पर बैठकर पढ़ें।

2. लेट कर पढ़ाई ना करें।

3. टीवी के सामने पढ़ाई ना करें।

4. पढ़ते समय फोन को दूर रखें दे।

5. टॉपिक को लिखते भी जाएं।

6. टॉपिक को कम से कम 3 बार रिपीट करें।

7. ग्राफ चित्र आदि की मदद से पढ़ें।

8. पढ़ते समय पाठ्य अनुसार विचार करें।

9. टॉपिक को रटने से बचें।

10 पोस्ट अच्छी लगे तो हमें subscribe करें।

CamScanner

CamScanner

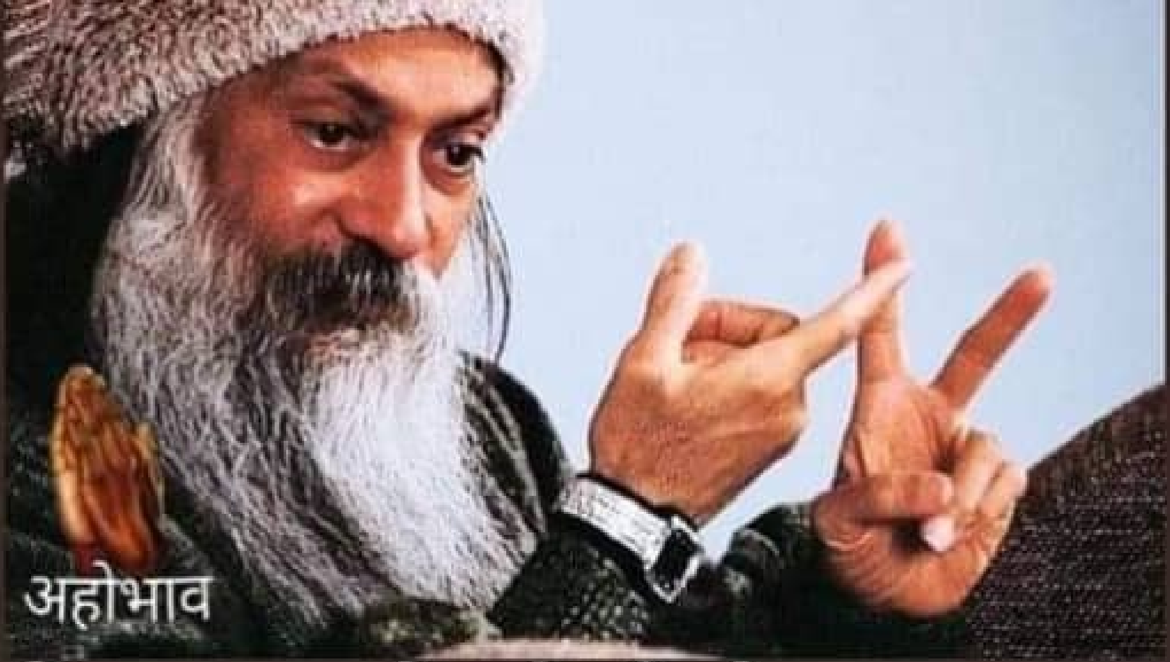


बिस्तर पर पड़े-पड़े भी मोक्ष तक पहुचा जा सकता है। लेकिन तब आलस्य को साधना बना लेना जरूरी है।
और तब आलस्य के प्रति सजग हो जाना जरूरी है। भीतर साक्षी जग जाना चाहिए। साक्षी के लिए न तो कर्म की जरूरत है, न अकर्म की, जो भी हो रहा है, उसके प्रति साक्षी होने की जरूरत है,
विटनेसिंग की जरूरत है।
आप अगर आलसी है, तो आलस्य के प्रति सजग हो, उसे देखो।

ओशो

गीता दर्शन

CamScanner

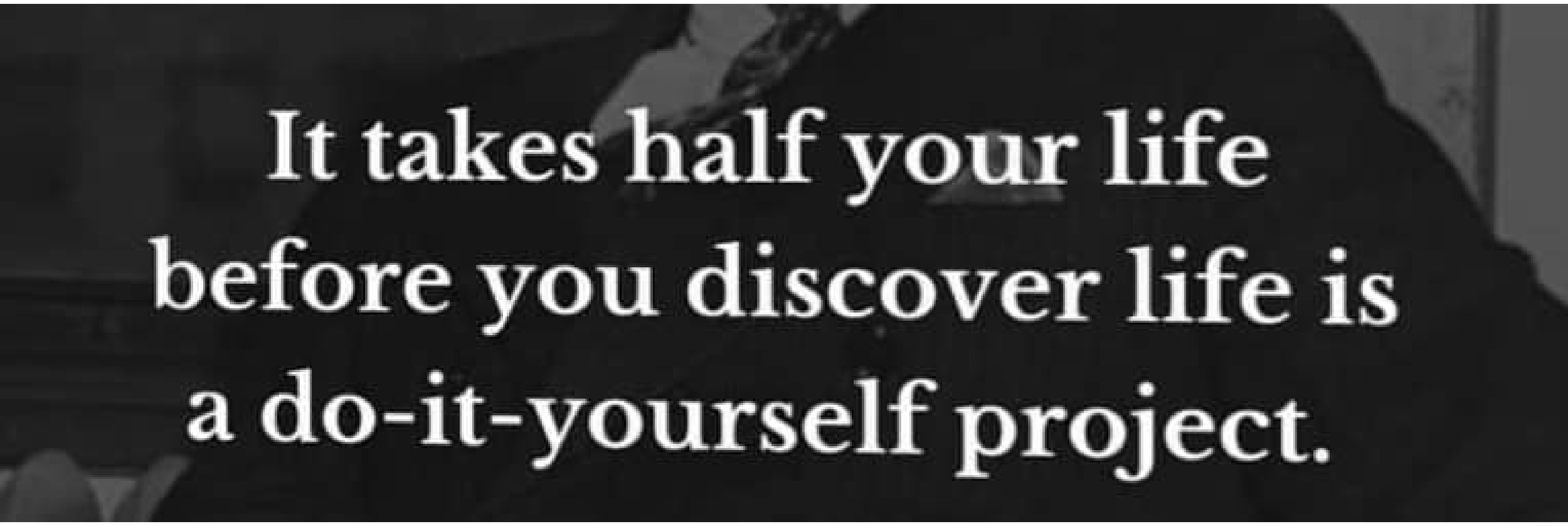
It takes half your life
before you discover life is
a do-it-yourself project.

CamScanner

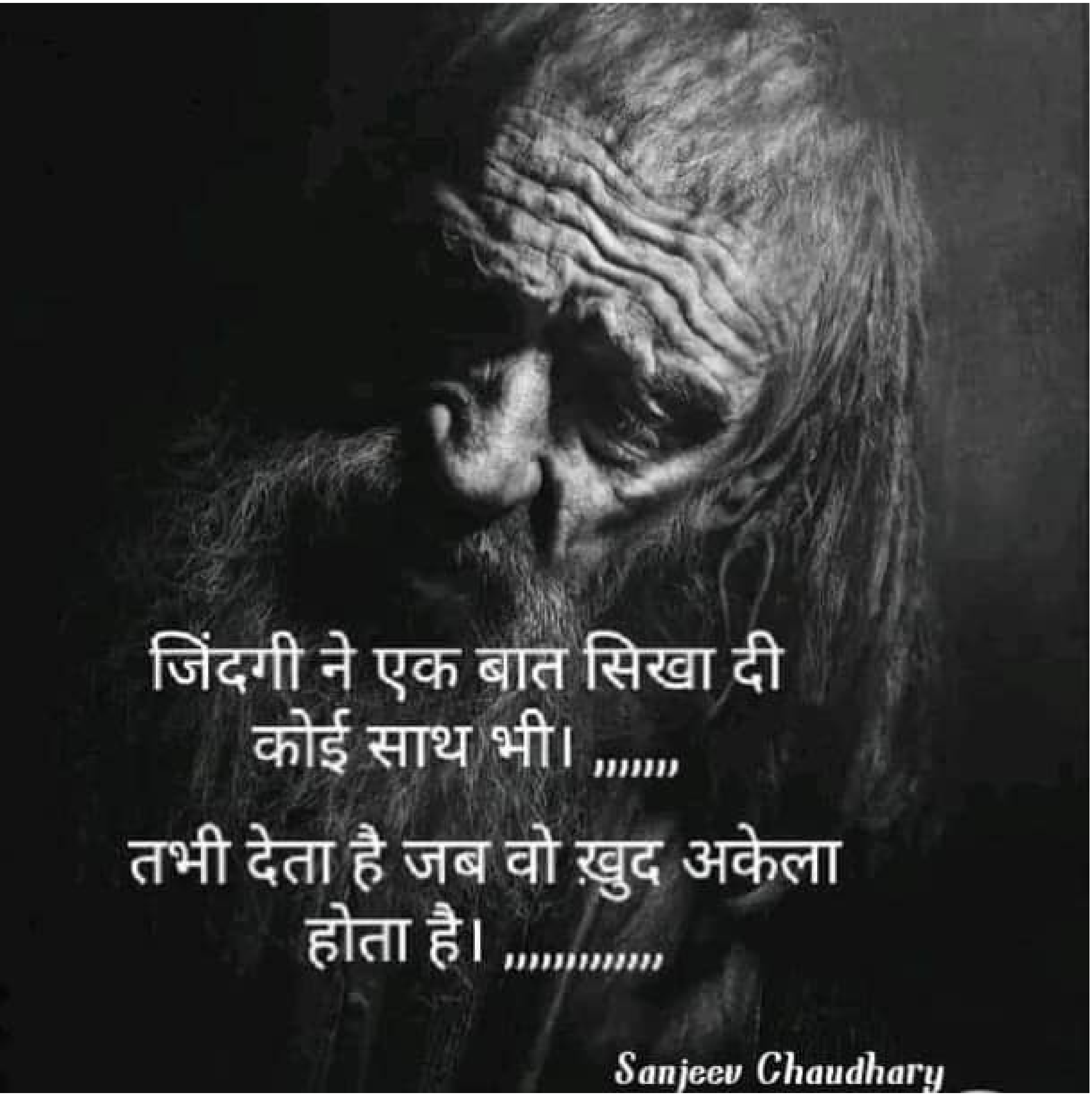


CamScanner

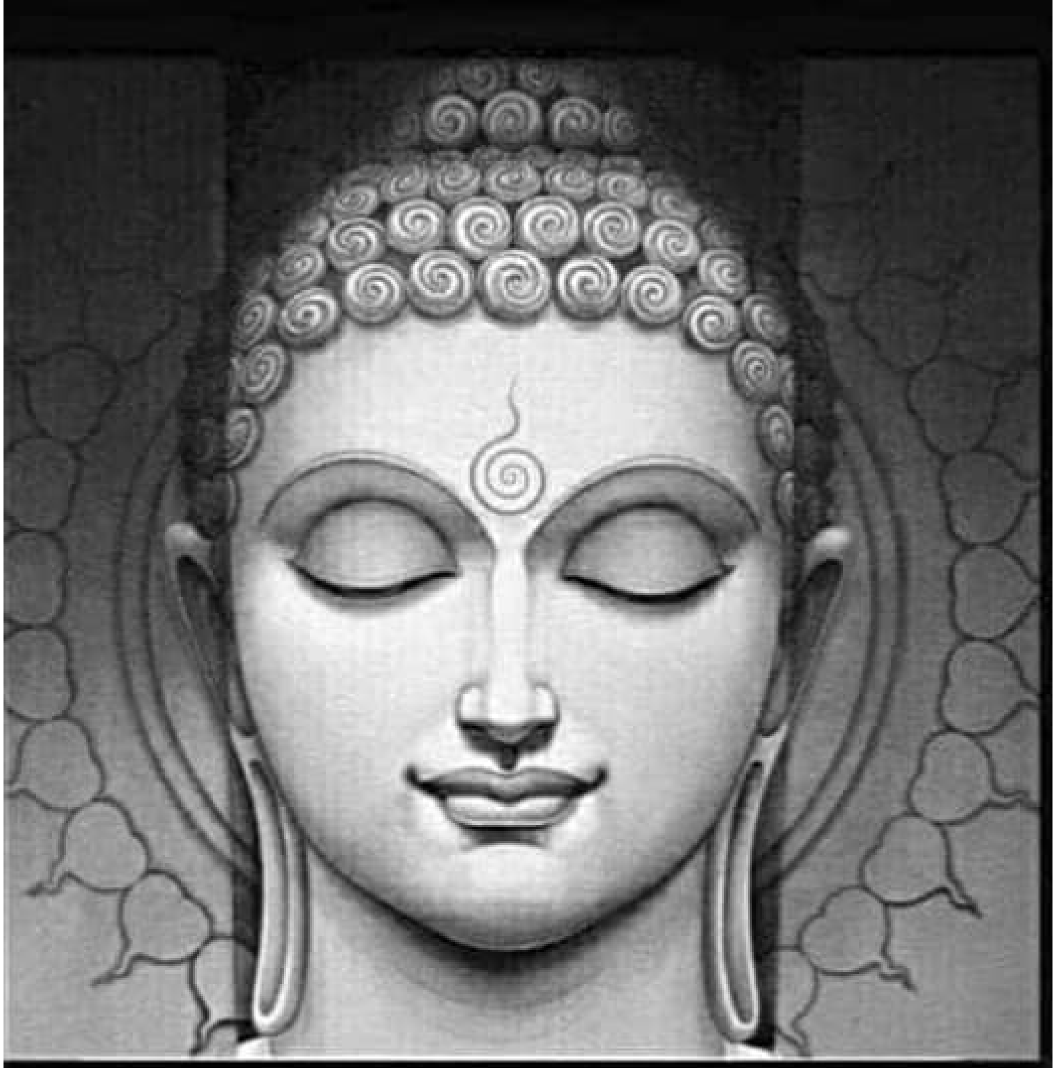

बुद्ध कहते हैं, जीवन का एक ही उपयोग है कि महाजीवन उपलब्ध हो जाये। अगर जीवन उपकरण बन जाता है, साधन बन जाता है महाजीवन को पाने के लिए,परमात्म-जीवन को पाने के लिए, तो ही उसका उपयोग हुआ। उसका और कोई उपयोग नहीं है।

ओशो

CamScanner

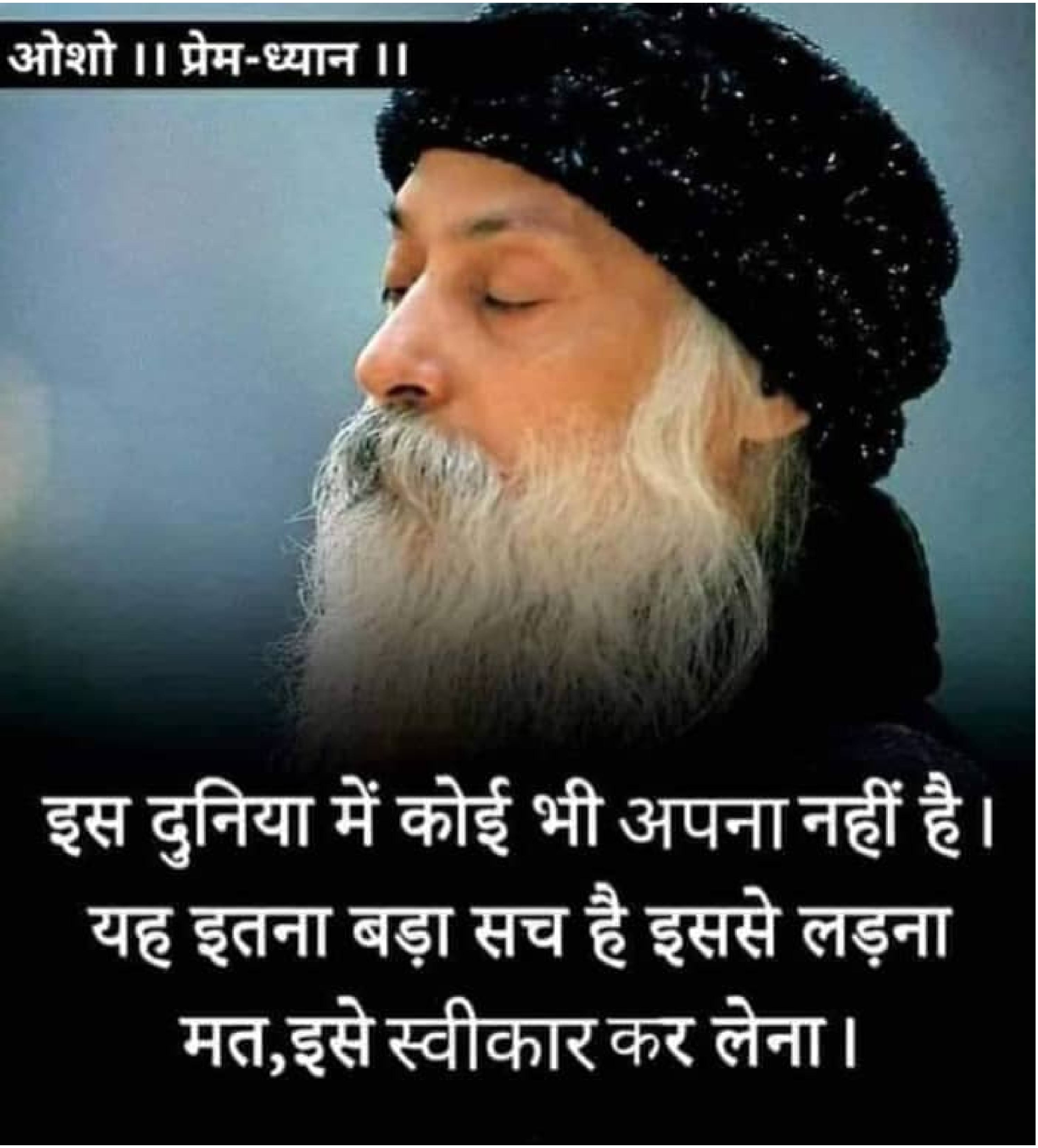


CS CamScanner

@ahobhav_
जब ध्यान सघन होता है तो तुम जागृत होते हो
और जब ध्यान क्षीण होता है तो तुम मूर्छित होते हो।
ओशो अहोभाव

CamScanner

11:58 am 0 KB/s VoLTE 4G 83%

मैं तुमसे यह नहीं कहता हूँ कि तुम जाओ और ध्यान का प्रचार करो, मैं तुमसे कहता हूँ——जाओ और ध्यान को जीओ। जोर जीने पर है। उस जीने में जो तुम्हें मिलेगा, जो गंध तुमसे उठेगी, वही अगर प्रचार बन जाए तो बन जाए, लेकिन चेष्टा से कोई प्रचार नहीं करना है। नहीं तो अक्सर यह हो जाता है कि लोग भूल ही जाते हैं कि ध्यान करना है, ध्यान का प्रचार करने में मजा लेने लगते हैं। असल में प्रचार करना इतना सस्ता और सरल है, ध्यान करना कठिन मालूम होता है। यह भूल ही जाते हैं कि अपना ध्यान हुआ या नहीं हुआ। दूसरे को ज्ञान देने का मजा ऐसा है। क्योंकि ज्ञान देने में तुम्हारे अहंकार की बड़ी तृप्ति होती है कि देखो, मैं ज्ञानी और तुम अज्ञानी। जब भी तुम किसीको ज्ञान देते हो, तुम ज्ञानी और वह अज्ञानी।

कोई आयोजन नहीं करना है? बहुत आयोजन हो चुके मनुष्यजाति के इतिहास में आदमी को अच्छा बनाने के, सब असफल हो गये हैं। अब कोई आयोजन अच्छा बनाने का मत करना। आदमी अच्छा है जैसा है। तुम अगर और इससे बेहतर हो सकते हो तो हो जाओ। बस तुम्हारे बेहतर हो जाने से ही कोई क्रांति की प्रक्रिया शुरू होती है, शृंखला शुरू होती है। एक दीये से दूसरा दीया जल जाता है, दूसरे से तीसरा दीया जल जाता है। और हम आशा कर सकते हैं कि अगर असली दीये जलते रहेंगे तो कभी यह पूरी पृथ्वी दीपमालिका बन सकती है। मगर जोर—जबरदस्ती नहीं।

और प्रचार जोर—जबरदस्ती है। वह बड़ी सूक्ष्म प्रक्रिया है लोगों के ऊपर थोपने की। नहीं, थोपना नहीं—न ध्यान, न संन्यास। आविर्भाव होने दो। अपने—आप आने दो।

सहजस्फूर्त जो है, वही सुंदर है, वही सत्य है, वही शिव है।

आज इतना ही।

ओशो

संतो मगन भया मन मेरा
प्रवचन - १४

CamScanner

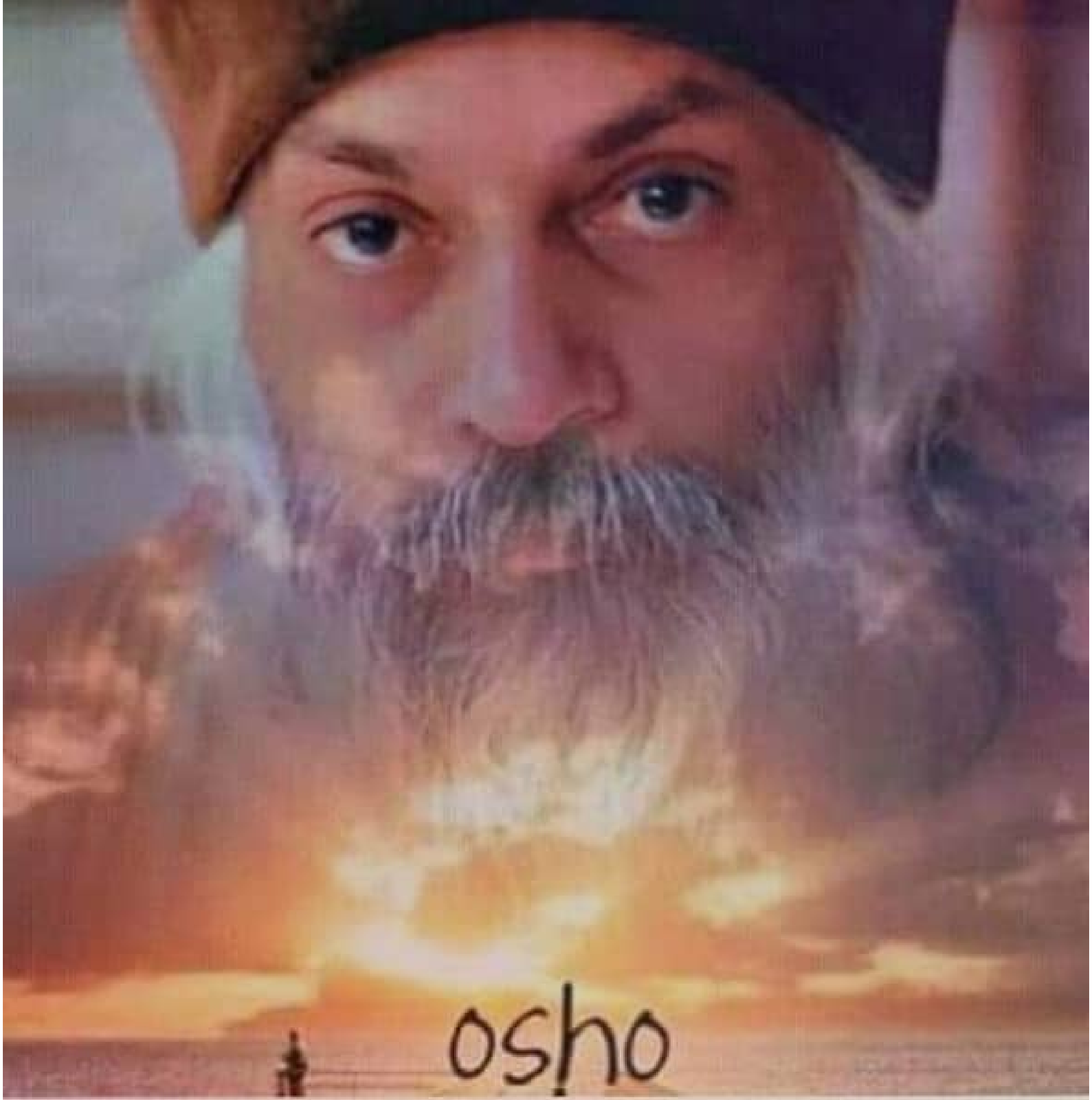


वह जिसको भी आत्यंतिक सत्य की खोज है और जिसको भी जान लेना है कि क्या है गहरे से जीवन का सत्य, जिसको भी पहचान लेना है उसे जिसे परमात्मा कहें,
जिसे भी मुक्त हो जाना है :-- उसे सबसे पहले अपनी झूठी प्रतिमा को तोड़ना पड़ता है। अपने ही हाथों से अपनी ही मूर्ति का भंजन करना होता है। # ओशो #

CS CamScanner

11:51 am 0 KB/s VoLTE 4G 84%

6

Create story
Deepak Dang

**Osho international** is at **OSHO International Meditation Resort**.
34m ·

जिसको तुम प्रेम करते हो, उसको जहर पिला सकते हो। अगर तुम्हारे अहंकार के विपरीत हो जाए उसका व्यवहार। तुम उसे गोली मार दे सकते हो। जिसकी ज़रा ज़रा सी बातों की तुम चिंता करते हो, कि उसके पैर में मोच न आ जाए, इसकी फिक्र लेते हो, उसको तुम पहाड़ से ढकेल दे सकते हो। तो तुम्हारा प्रेम प्रेम नहीं है। जो प्रेम घृणा बन सकता है, वह प्रेम नहीं है। प्रेम और घृणा कैसे बन सकता है!
तुम्हारी घृणा क्या है? तुम्हारे प्रेम का ही शीर्षासन करता हुआ रूप है। जिनके द्वारा तुम्हारे अहंकार में बाधा पड़ती है, उनसे तुम्हें घृणा, जिनसे तुम्हारे अहंकार में सहयोग मिलता है, उनसे तुम्हें प्रेम।
अहंकार के जाते ही न तो तुम्हारी घृणा बचेगी, न तुम्हारा तथाकथित प्रेम बचेगा। दोनों विलीन हो जाएंगे। और तब एक नए, एक बिल्कुल नवीन प्रेम का सूत्रपात होता है। उस प्रेम का जो दिव्य है, उस प्रेम का जो प्रार्थनापूर्ण है, उस प्रेम का जो परमात्मा की ही आभा है।
ईर्ष्या, घृणा, लोभ, मोह, मत्सर, ये सब अहंकार की ही अलग अलग प्रतिछवियां हैं। अहंकार बहुरूपिया है। लोभ का क्या अर्थ होता है? अहंकार खाली है, भरो इसे। बहुत धन होगा तो बहुत अहंकार होगा। उतनी अकड़ होगी। जितना धन कम हो जाएगा, उतना अहंकार होगा। बड़ा पद होगा तो उतना अहंकार होगा। पद गया कि अहंकार गया। अहंकार ही लोभ में ले जाता है। लोभ का मतलब इतना है कि भरो मुझे। मुझे बड़ा करो।

राम दुवारे जो मरे
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CS CamScanner

CamScanner

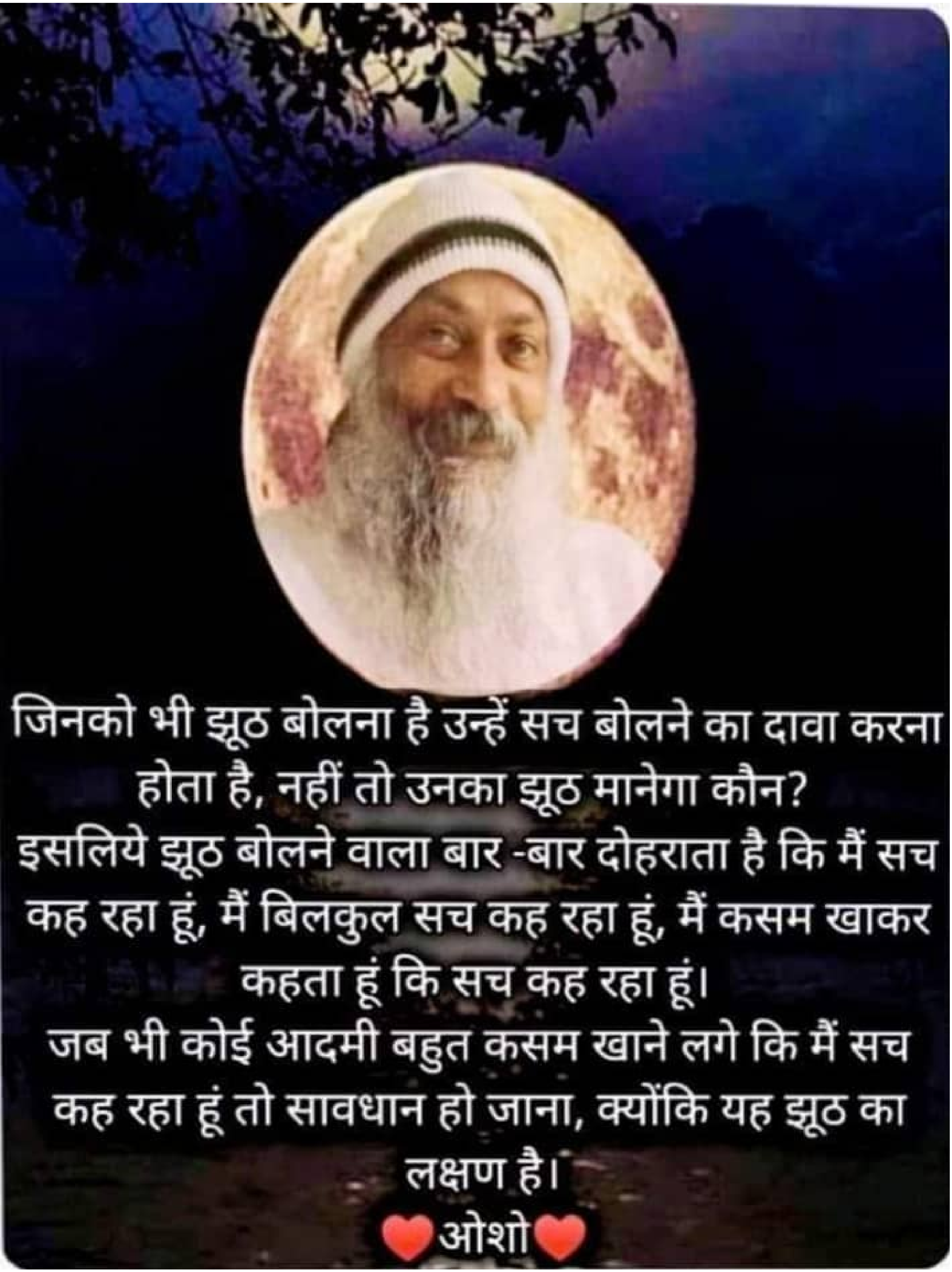
जिनको भी झूठ बोलना है उन्हें सच बोलने का दावा करना होता है, नहीं तो उनका झूठ मानेगा कौन?
इसलिये झूठ बोलने वाला बार -बार दोहराता है कि मैं सच कह रहा हूं, मैं बिलकुल सच कह रहा हूं, मैं कसम खाकर कहता हूं कि सच कह रहा हूं।
जब भी कोई आदमी बहुत कसम खाने लगे कि मैं सच कह रहा हूं तो सावधान हो जाना, क्योंकि यह झूठ का लक्षण है।
ओशो

CamScanner

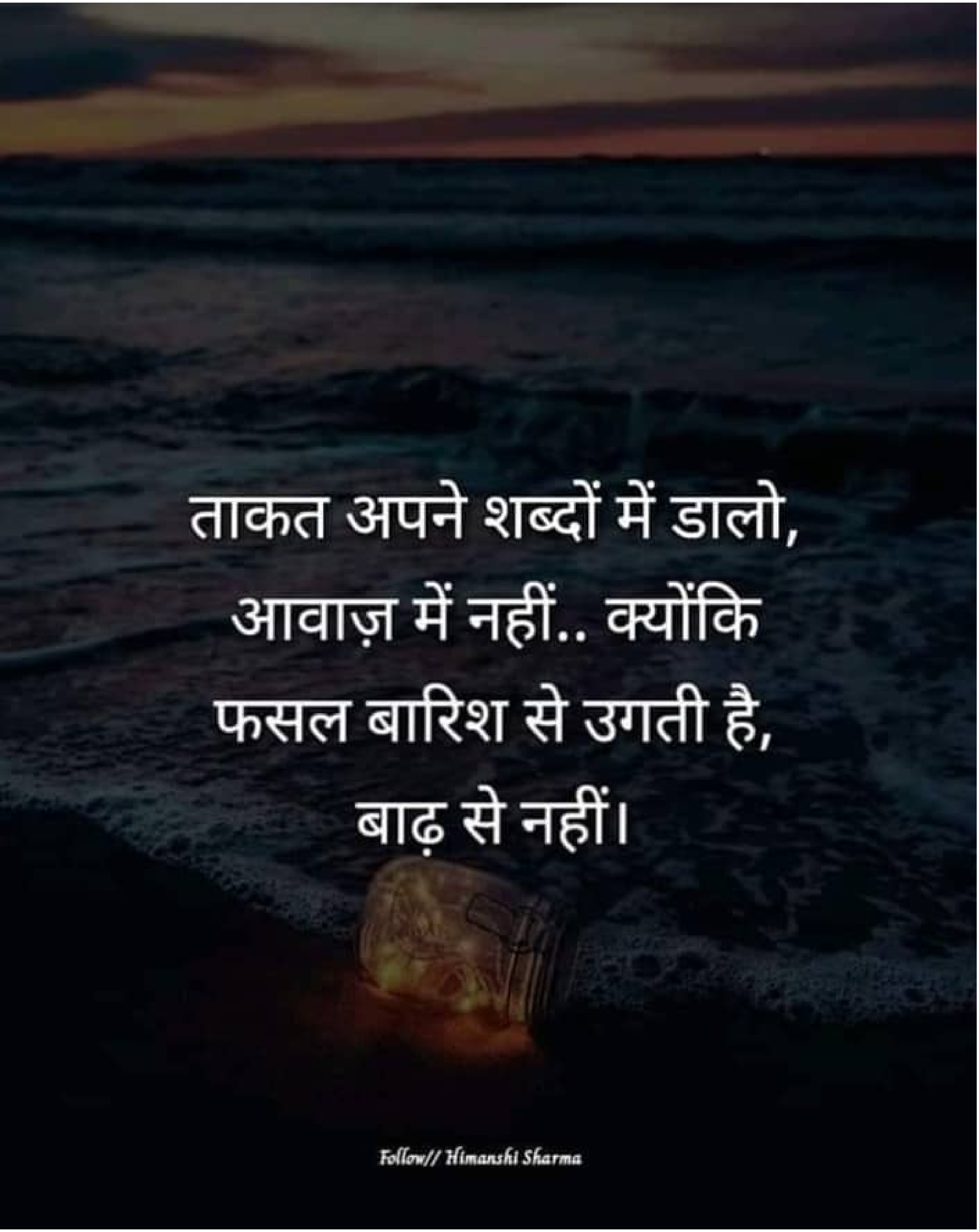
ताकत अपने शब्दों में डालो,
आवाज़ में नहीं.. क्योंकि
फसल बारिश से उगती है,
बाढ़ से नहीं।
Follow// Himanshi Sharma

CamScanner

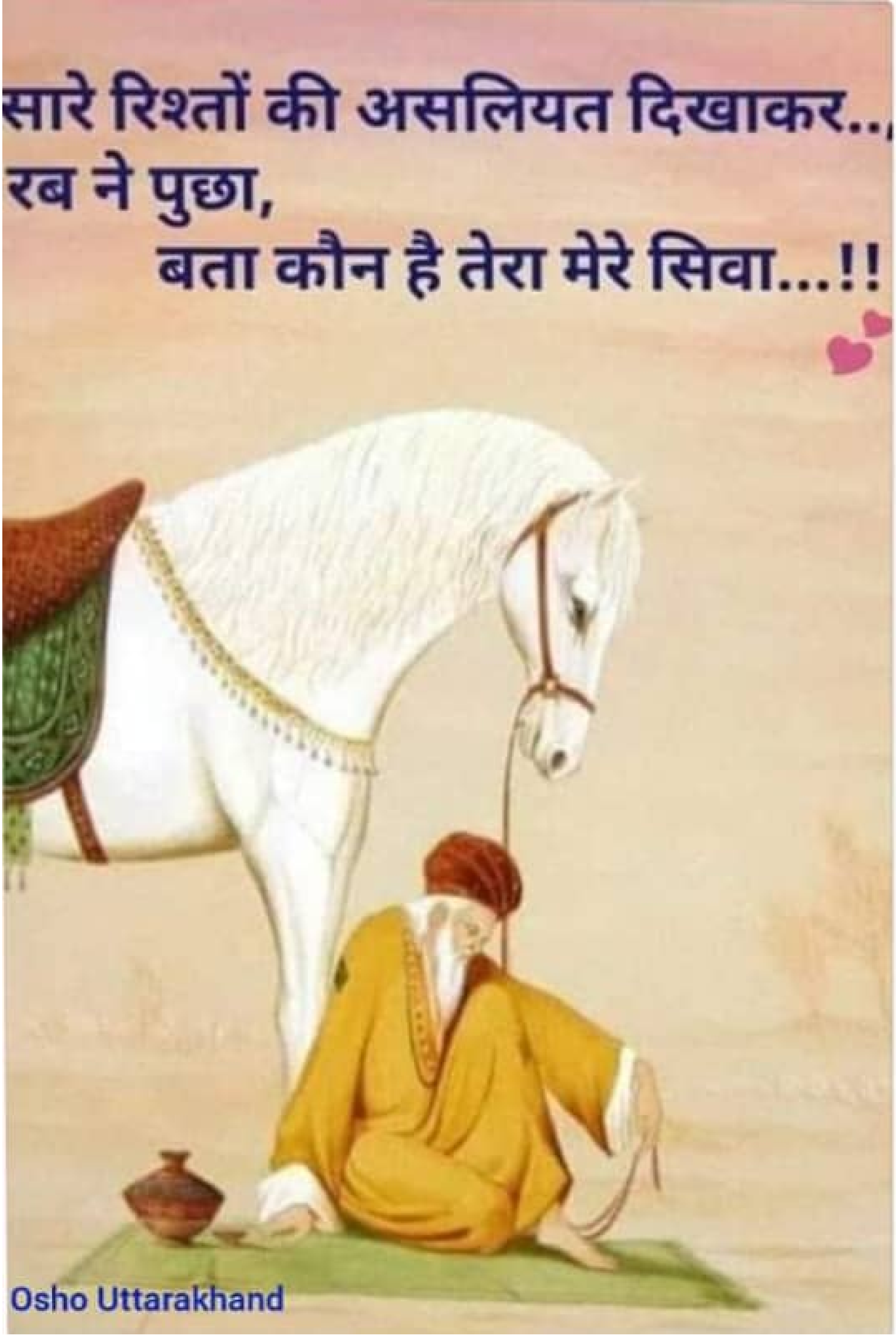


CamScanner

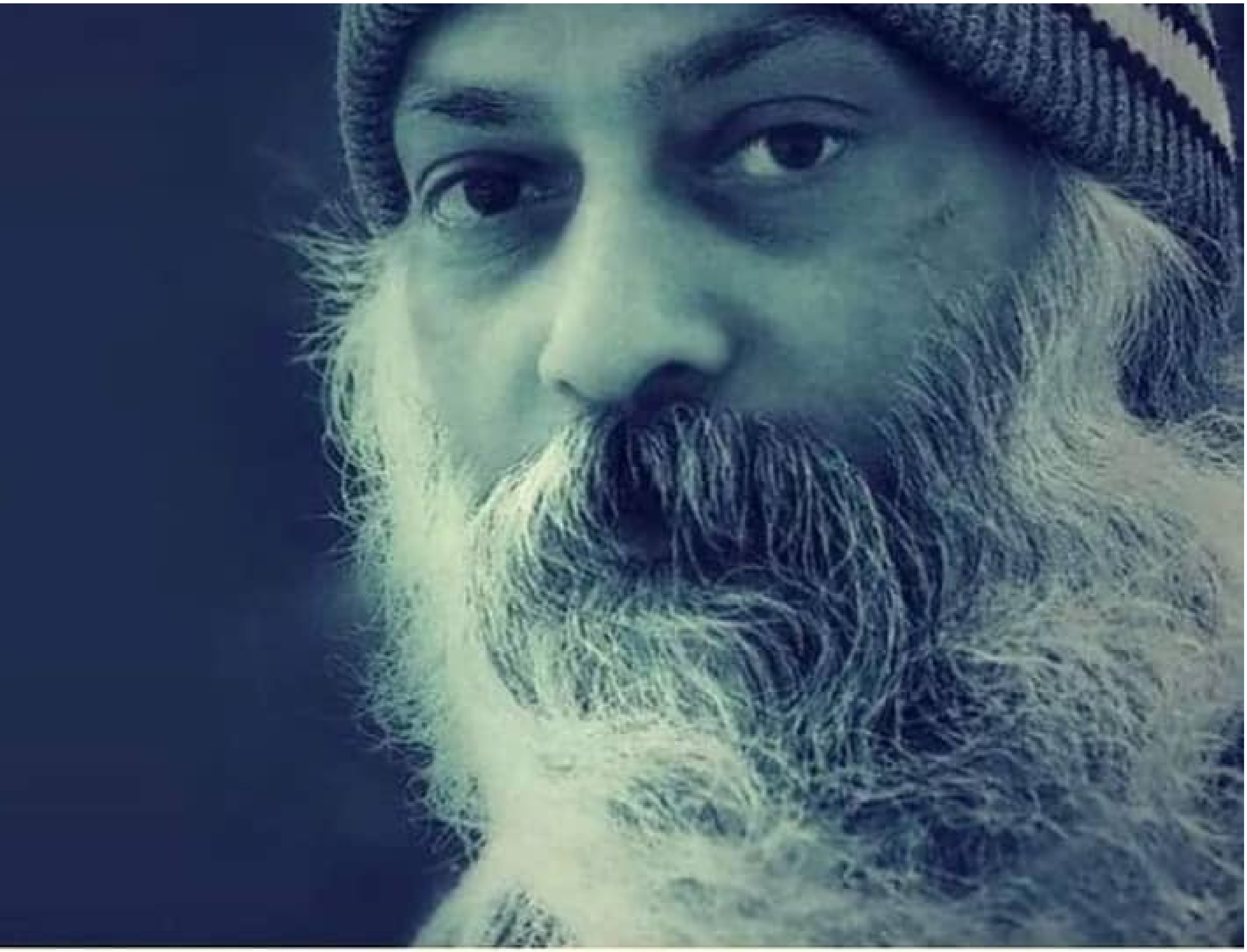

विनम्रता का भी अहंकार होता है,
साधुता का भी अहंकार होता है, निरअहंकारिता का
भी अहंकार होता है ;अहंकार बड़ी सूक्ष्म बात है ।
इसलिए बुद्ध ने ये नही कहा कि अहंकार छोडो।
बुद्ध ने कहा अहंकार समझो ।
ओशो • साहित्य दर्पण

CS CamScanner

प्रेम का रास्ता बड़ा हरा-भरा है। उस पर पक्षी भी गीत गाते हैं, मोर भी नाचते हैं। उस पर नृत्य भी है। उस पर तुम्हें कृष्ण भी मिलेंगे.. बांसुरी बजाते । उस पर तुम्हें चैतन्य भी मिलेंगे.. गीत गाते। उस पर तुम्हें मीरा भी नाचती मिलेगी।

ध्यान का रास्ता बड़ा सूखा है। उस पर तुम्हें महावीर मिलेंगे, लेकिन मरुस्थल जैसा है रास्ता । उस पर तुम्हें बुद्ध बैठे मिलेंगे, लेकिन कोई पक्षी की गूंज तुम्हें सुनाई न पड़ेगी। तुम्हारी मर्जी । जिसको मरुस्थल से लगाव हो...। ऐसे भी लोग हैं जिनको मरुस्थल में सौंदर्य मिलता है।
व्यक्ति-व्यक्ति की बात है।

CamScanner

7:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 49%
facebook

नाटक की कथा तो पहले ही लिखी होती है, फिर कथा को पूरा करते हैं नाटक में। नाटक में कथा पैदा नहीं होती। कथा पहले पैदा होती है, फिर कथा के अनुसार नाटक चलता है। क्या किसको कहना है, सब तय होता है। जीवन का सारा खेल तय है। क्या होना है, तय है। तुम नाहक ही अपना बोझ उठाए चल रहे हो। अगर तुम समझ लो कि सिर्फ नाटक है जीवन, तो तुम्हारा जीवन रामलीला हो गया, तुम पुराण-पुरुष हो गए, फिर तुम्हारा इतिहास से कोई नाता न रहा। फिर तुम इस भ्रांति में नहीं हो कि तुम कर रहे हो। फिर तुम जानते हो कि जो उसने कहा है, हो रहा है। हम उसकी मर्जी पूरी कर रहे हैं। अगर वह रावण बनने को कहे, तो ठीक।

रावण को तुम मार तो नहीं डालते! जो आदमी रावण का पार्ट करता है रामलीला में, उसको तुम मार तो नहीं डालते कि इसने रावण का पार्ट किया है, इसको मार डालो। जैसे ही मंच के बाहर आया, बात खत्म हो गई। अगर उसने पार्ट अच्छा किया, तो उसे भी तगमे देते हो।

असली सवाल पार्ट अच्छा करने का है। राम का हो कि रावण का, यह बात अर्थपूर्ण नहीं है। ढंग से पूरा किया जाए, कुशलता से पूरा किया जाए। अभिनय पूरा-पूरा हो, तो तुम पुराण-पुरुष हो गए। लड़ो बिना वैमनस्य के, संघर्ष करो बिना किसी अपने मन के; जहां जीवन ले जाए बहो। तब तुम्हारे जीवन में लीला आ गई। लीला आते ही निर्भार हो जाता है मन। लीला आते ही चित्त की सब उलझनें कट जाती हैं। जब खेल ही है, तो चिंता क्या रही! फिर एक सपना हो जाता है।

इसी अर्थ में हमने संसार को माया कहा है। माया का अर्थ इतना ही है कि तुम माया की तरह इसे लेना। अगर तुम इसे माया की तरह ले सको, तो भीतर तुम ब्रह्म को खोज लोगे। अगर तुमने इसे सत्य की तरह लिया, तो तुम भीतर के ब्रह्म को गंवा दोगे।

ओशो, गीता दर्शन : भाग-8, प्रवचन- 211/06

11 1 share
CamScanner

पति और पत्नी के बीच जो कलह का मौलिक कारण है वह यह है कि वे एक दूसरे पर अधिकार ज़माने की कोशिश कर रहे है।
और जहां अधिकार
की चेष्टा है
वहां प्रेम की हत्या
हो जाती है।
और तब दुःख
घना हो जाता है।

**ओशो**

CamScanner

पेट को भरना बहुत कठिन नहीं है,
आत्मा को भरना बहुत कठिन है।

ओशो अहोभाव
गीता दर्शन, भाग-4

CamScanner

मैं सर के बल गिरा था गुनाहों के बोझ से,
दुनिया समझ रही थी कि सजदे मे पड़ा है......
सजदे मे जब गया तो लोगों ने ये कहा,
जालिम ने इतनी पी है क़ि मदहोश पड़ा है.....

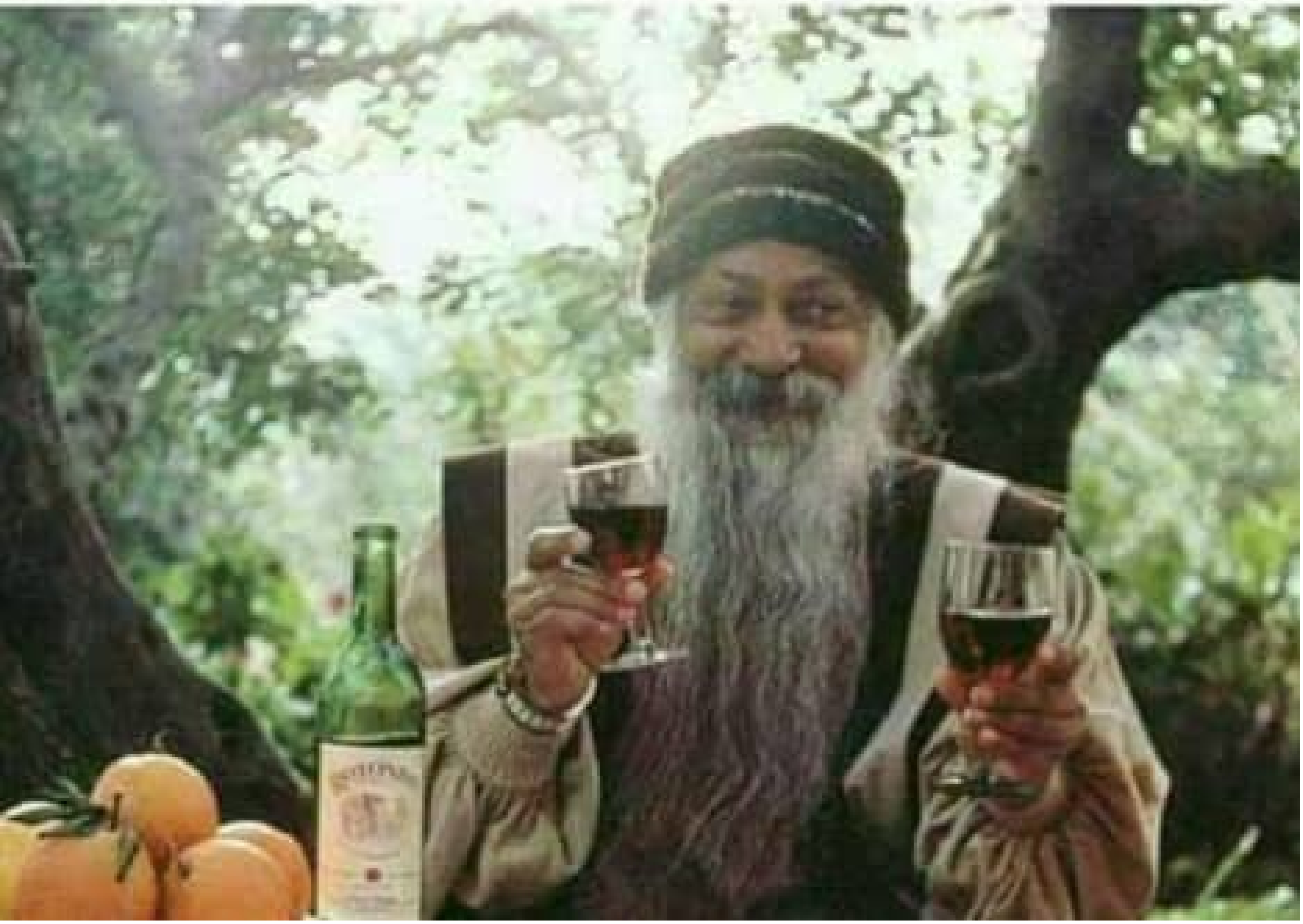

CamScanner

ओशो..
धर्म का रहस्य भी स्त्रैण है।
अगर कोई परमात्मा को पाने जाए, तो कभी न पा सकेगा। और कोई केवल अपने हृदय के द्वार को खोल कर ठहर जाए, तो परमात्मा यहीं और अभी प्रवेश कर जाता है। दूर-दूर खोजे कोई, अनंत की यात्रा करे कोई, भटके जन्मों-जन्मों तक, तो भी परमात्मा को नहीं पा सकेगा। क्योंकि परमात्मा को पाने का राज ही यही है कि हम रिसेप्टिव हो जाएं, एग्रेसिव नहीं। हम अपने को खुला छोड़ दें। हम सिर्फ राजी हो जाएं कि वह आता हो तो हमारे द्वार-दरवाजे बंद न पाए।
#-ताओ उपनिषद-प्र-18, ओशो

CamScanner

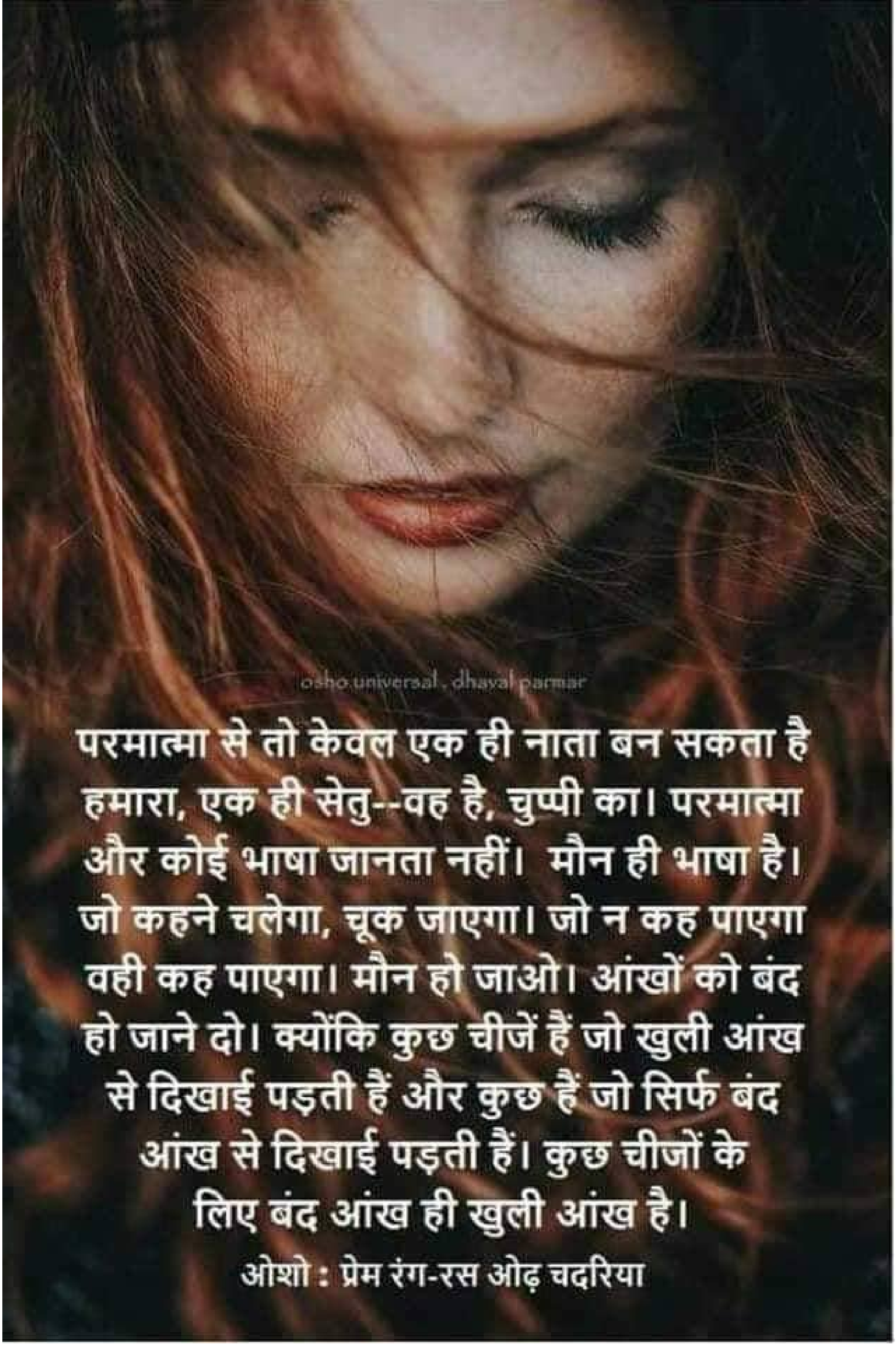
osho universal . dhayal parmar
परमात्मा से तो केवल एक ही नाता बन सकता है हमारा, एक ही सेतु--वह है, चुप्पी का। परमात्मा और कोई भाषा जानता नहीं। मौन ही भाषा है। जो कहने चलेगा, चूक जाएगा। जो न कह पाएगा वही कह पाएगा। मौन हो जाओ। आंखों को बंद हो जाने दो। क्योंकि कुछ चीजें हैं जो खुली आंख से दिखाई पड़ती हैं और कुछ हैं जो सिर्फ बंद आंख से दिखाई पड़ती हैं। कुछ चीजों के लिए बंद आंख ही खुली आंख है।
ओशो : प्रेम रंग-रस ओढ़ चदरिया

CamScanner

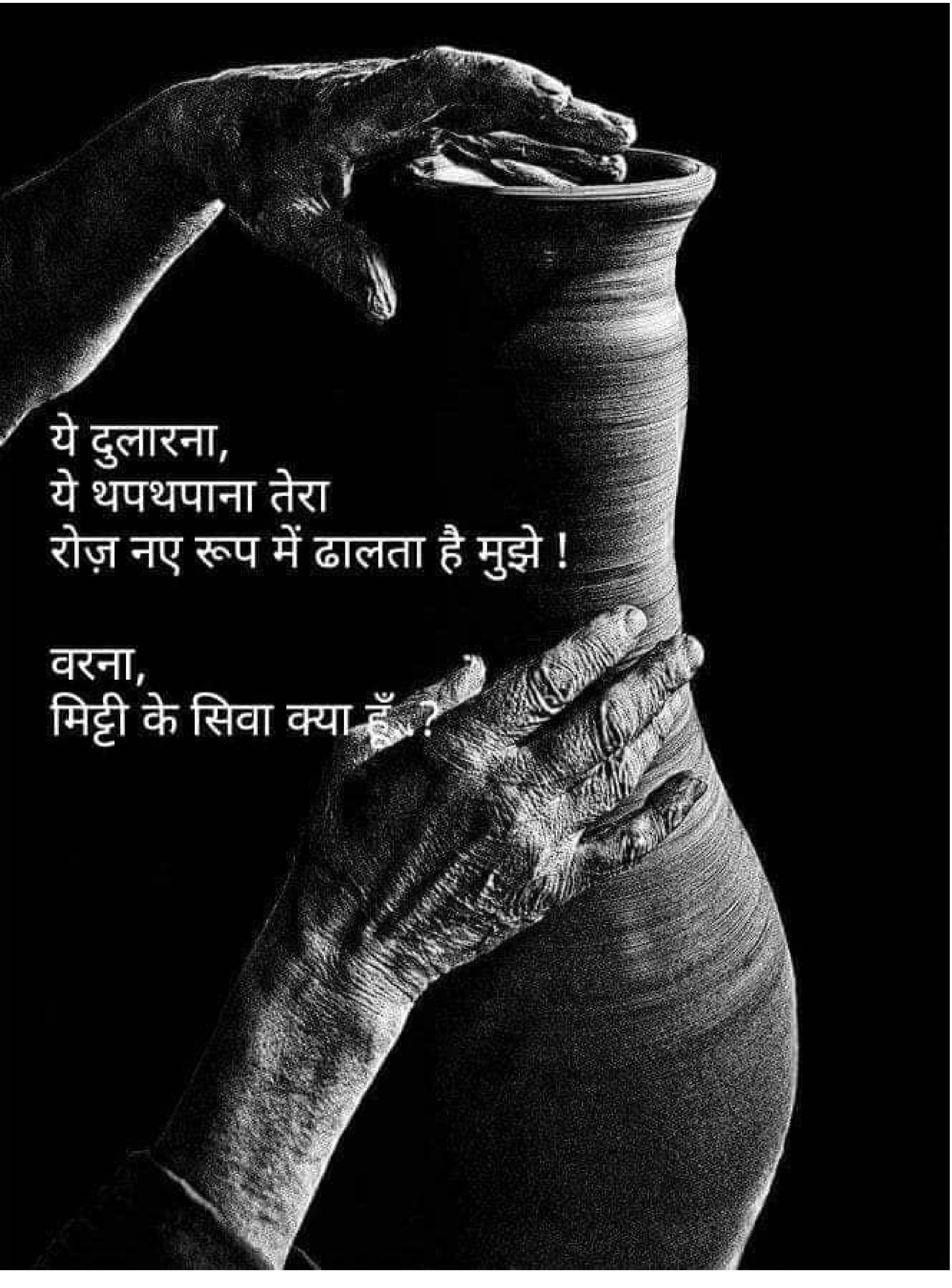


CamScanner

7:35 pm

Prema Agrawal · 53m ·

मन ही रावण मन ही राम

मन ही जीते हर संग्राम ।

🙏

CamScanner

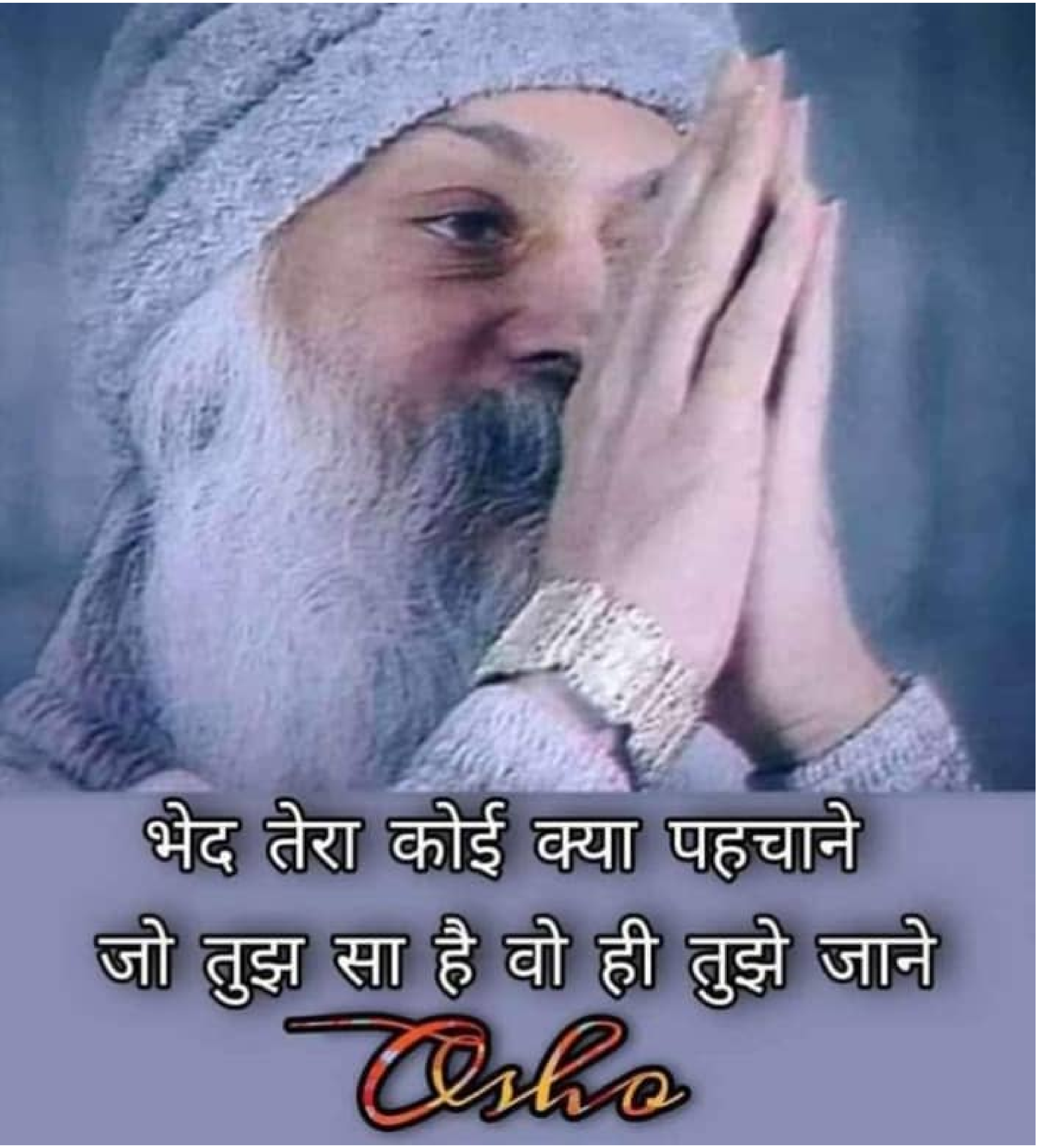


CamScanner

मे कौन हु? ये प्रश्न जहा से उठा हे,चले जाऔ वही,उत्तर मिल जायेगा

3

1 comment

Like Comment Share

CamScanner

इतना ज्ञान हासिल करने के बाद भी आपका दिमाग़
पाखंड,अंधविश्वास, से भरा है तो आपका ज्ञान व्यर्थ है और
आपका ज्ञान गधे पर बोझ लादने के बराबर है !

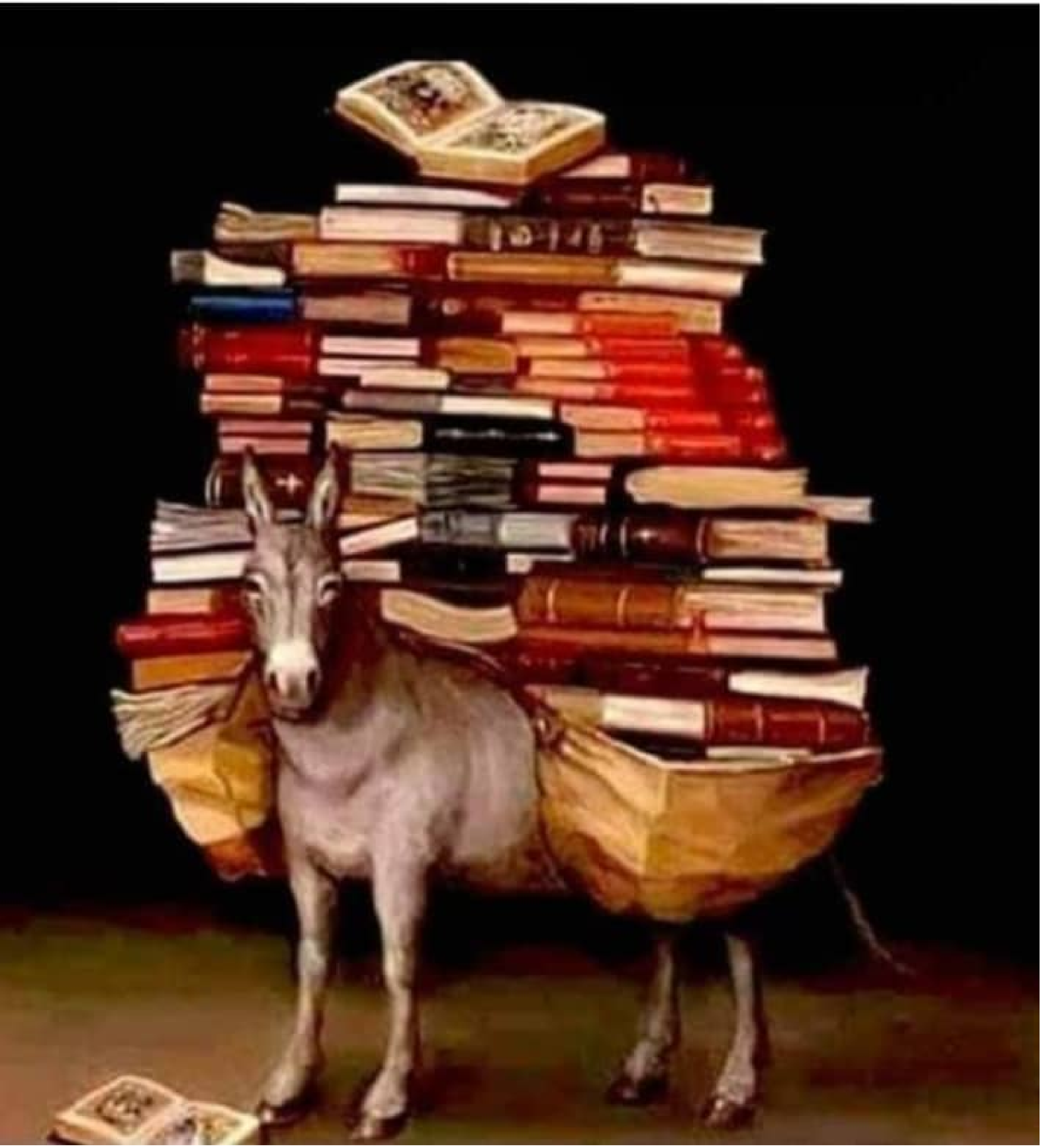

CS CamScanner

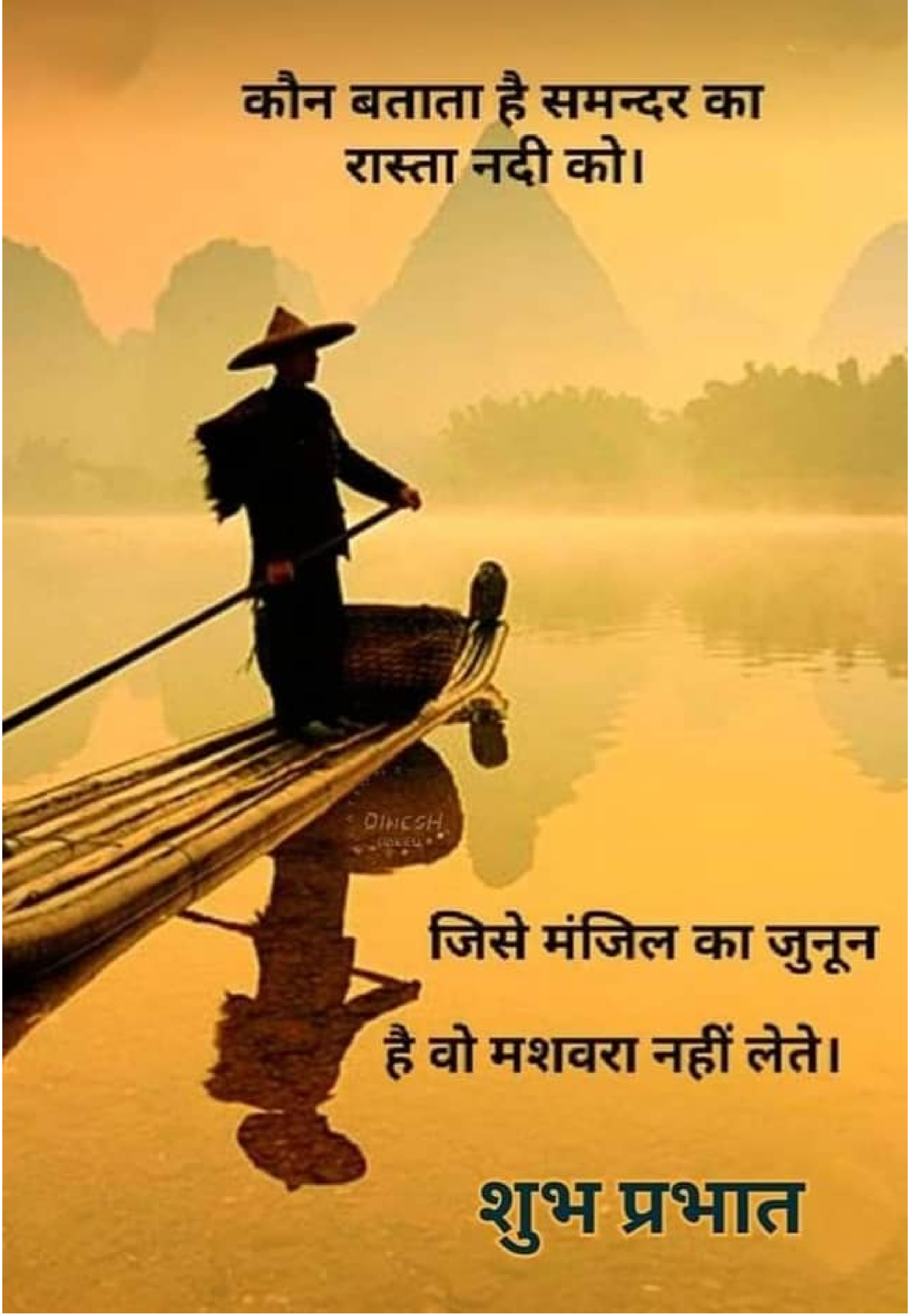


CamScanner

7:32 pm 0 KB/s VoLTE 4G 50%

★सब तरह का पाखंड!

जो आदमी पक्का अहंकारी है, वह हाथ जोड़कर कहता है, मैं तो कुछ भी नहीं हूं, आपके पैर की धूल हूं!
जरा उसकी आंखो में देखें!
वह ऐसा लग रहा है कि अगर मौका मिल जाये तो आपको अभी पैर के नीचे दबा दे! लेकिन वह कह रहा है कि मैं विनम्र हूं, मैं सेवक आदमी हूं, मैं आपके पैर की धूल हूं!

यह हम पाखंड सिखा रहे है! वह आदमी भीतर तिजोरी बड़ी करता जा रहा है और वस्त्र सादे पहने हुए है! वह पैदल चल रहा है और महल बड़ा किये जा रहा है! वह योरोप और अमेरिका के बैंको में धन इकटठा कर रहा है और यहां बैठकर चर्खा काट रहा है! बहुत अजीब मामला है! यह भारत का जलता हुआ प्रशन है, हिपोक्रेसी, पाखंड! हर आदमी पाखंड के साथ खड़ा हो गया है!
तोड़ेंगे कैसे इसे हम? जब तक हम उन नियमो को नहीं बदलते जिनकी वजह से पाखंड होता है, तब तक यह तोडना मुश्किल है!
जीवन सहज स्वीकार करना होगा तो हिपोक्रेसी टूट सकती है! टायनबी ने एक बात लिखी है! उसने लिखा है! कि पश्चिम की संस्कृति सेंसुअस है, ऐंद्रिक है! कोई मुझे वह किताब पढ़कर सुना रहा था! पक्के भारतीय मुझे किताब पढ़कर सुना रहे थे! उन्होंने कहा, देखते है , टायनबी जैसा विचारक कहता है कि पश्चिम की संस्कृति ऐंद्रिक
हतो मैंने कहा, इतनी अकड़ आप किसलिए दिखा रहे है?

अगर पश्चिम की संस्कृति ऐंद्रिक है तो पूरब की संस्कृति हिपोक्रेट है, पाखंडी है

★ओशो
(भारत: समस्याएं व् समाधान )

CS CamScanner

Kumar Manish · 7m ·

जब ईश्वर को प्रेम ही कराना है तब किसी मंदिर मस्जिद गिरजाघर की जरूरत नही है ओर नही किसी भी विशेष साधन या साधाना या विशेष नियम या मार्ग या विशेष गुरु चाहिए! तुम चाहे तो दैनिक कर्म को साधना बना सकते है जैसे भोजन पानी लेना ,नहाना धोना हो ,चलना फिरना हो, या दैनिक बिजनेश हो सभी जगह ईश्वर से प्रेम कर सकते है, और तुम जितने सभ्य बन जाते हो उतने ही तुम्हारे लिए विशेष साधन, साधना, कर्म काण्ड, तीर्थ यात्रा की जरूरत हो जाती है तुम सभ्य होते हि ईश्वर से इतने दूर हों जाते है उतने हि बड़े मार्ग, साधन कर्म काण्ड की जरुरत पड़ जाती है और जो समझते है की हम बड़े दानवीर है, भगवान के मंदिर बना लिए, हीरे जहारत के आभूषण भगवान को भेट कर दिए इसलिए ईश्वर के बड़े प्रेमी हो गए तब समझना की तुम्हारे से बड़ा मूर्ख और ढोंगी प्रेमी कोई नही मिलेगा

CamScanner

*मार्ग क्या है ? जिसे हम जीवन कहते हैं, वही मार्ग है। जीवन के अतिरिक्त कहीं और मार्ग नहीं। जीवन के अनुभव में जो पक गया है, उसने मार्ग पूरा कर लिया है। तुमने अगर जीवन के अतिरिक्त कहीं और मार्ग खोजा तो भटकोगे। कोई और मार्ग नहीं है। यह क्षण–क्षण बहता जीवन, यह पल–पल बहता जीवन, यही मार्ग है। तुम मार्ग पर हो ...ओशो

CamScanner

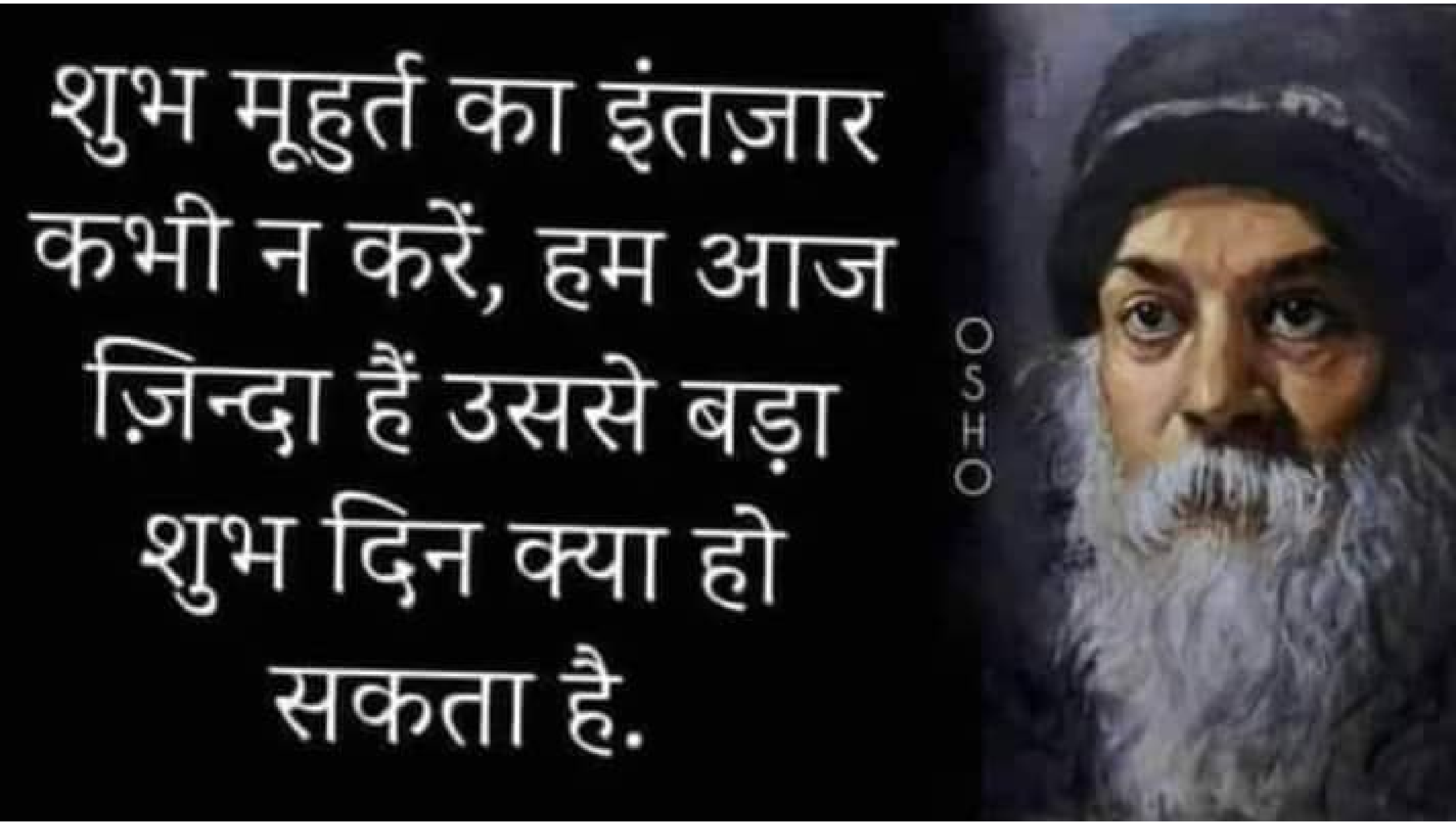


CamScanner

7:24 pm 0 KB/s VoLTE 4G 51%

धारणा राम की बना ली, फिर उसी धारणा में आबद्ध हो गया। वह धारणा उसका कारागृह हो गई, उसकी जंजीर हो गई। पहली बात।

अगर राम को सब जगह देखना हो तो कोई रूप मत देना, रंग मत देना। नहीं तो वृक्ष में कैसे देखोगे? अब वृक्ष बिचारा मजबूर है, धनुषबाण उठा नहीं सकता। मोर नाचेगा, कैसे देखोगे? अब नाचे कि धनुषबाण उठाया! तो तुम मुश्किल में पड़ गए। और जिस राम ने धनुषबाण उठाया था, वह कब के तिरोहित हो चुके। अब तो तुम्हें मंदिर में ही मिलेंगे वह; पत्थर की मूर्ति में मिलेंगे। इसीलिए पत्थर की मूर्ति इतनी महत्वपूर्ण हो जाती है। तुमने रूप तय कर लिया, उस रूप से मिलने वाली चीज तो पत्थर की मूर्ति ही हो सकती है। क्योंकि मूर्ति भी तुम्हारी बनाई हुई है और रूप भी तुम्हारा बनाया हुआ है। तुम झूठे राम की धारणा में बंधे, सब धारणाएं झूठी हैं। निर्धारणा में राम का अनुभव होता है।

तुम्हारा प्रश्न है: 'आंख को निर्मल करने का उपाय बताएं। चारों ओर राम कैसे दिखाई पड़ें?'

तो पहला तो निराकार का भाव करो। निराकार का भाव करते ही चारों ओर है ही राम, दिखाई पड़ने का सवाल नहीं है। वही है। उसके अतिरिक्त कोई और नहीं है। सारे आकार उसके हैं। निराकार का मतलब होता है: सारे आकार उसके हैं। सारी आकृतियां उसकी हैं। तुम भी वही हो। शेष सब भी वही है। मगर यह भी सिद्धांत रहे तो किसी काम का नहीं है, अनुभव बनना चाहिए। और अनुभव के लिए आंख निश्चित साफ करनी जरूरी है।
सरल उपाय है आंख को साफ कर लेने का--प्रेम से भरे हुए आंसू। रोओ। रोने से प्यारी और कोई प्रक्रिया नहीं है। दुख से मत रोना। दुख से जो रोता है उसने तो रोने की महिमा जानी ही नहीं। आनंद से रोना। आनंद-अश्रु! आंख स्वच्छ होने लगती है आनंद के अश्रुओं से। बाहर की ही आंख शुद्ध नहीं होती, भीतर की आंख भी शुद्ध हो जाती है। दृष्टि निर्मल हो जाती है। नहीं तो परमात्मा सामने खड़ा रहता है और हमें दिखाई नहीं पड़ रहा। हमारी आंखों पर इतनी धूल जमी है।

ओशो
संतो मगन भया मन मेरा १४

CamScanner

हिम्मत करो! भयभीत न रहो! जिंदगी चार दिन की है इस चार दिन की जिंदगी में क्या भय करना! किसका भय करना! बहुत से बहुत मौत ही तो हो सकती है न! मौत तो होनी ही है। इसलिए मौत एक ऐसी चीज़ है जिसको कि बिल्कुल एक किनारे रख दो। उसकी तो कोई कीमत ही मत मानो। जो होना ही है वो होना ही है! उसके लिए क्या फिकर करनी? जीने का मज़ा क्यों छोड़ो? जीने की पूर्णता क्यों छोड़ो? जीने का निखार क्यों छोड़ो? हाँ, अगर ऐसा होता कि मौत से सदा के लिए बच सकते! तो बात सोचने की भी थी - विचारने की भी थी। बच तो सकोगे नहीं! ऐसे भी मरोगे - वैसे भी मरोगे। मिट जाना है - मिट्टी में गिर जाना है। इसके पहले कि मिट्टी में गिरो - अपने भीतर अमृत को खोज लेना आवश्यक है.!

❤❤ ओशो ❤❤

CamScanner

ताओ की
साधना का अर्थ हुआ
सोच–विचार छोड़कर
खड़े हो जाना।
जहां कोई विचार न हो,
सिर्फ चेतना रह जाए,
सिर्फ होश रह जाए।
तो वहां से जो ठीक है
वह न केवल दिखाई पड़ेगा
बल्कि होना शुरू
हो जाएगा।
OshO
जिन खोजा तिन पाइयाँ

CamScanner

राजनीति तो उनके लिये है जिनके लिये कुछ और नहीं।जो मूर्ति नहीं बना सकते, जो चित्र नहीं रंग सकते, जो गीत नहीं गा सकते, जो कुछ भी नहीं कर सकते-उन सब अयोग्यों के लिये राजनीति है। आखिर अयोग्यों के लिये भी तो कुछ होना चाहिए। जिनमें और कोई योग्यता नहीं है उनमें राजनीति की योग्यता होती है।राजनीति के लिये बुद्धि नहीं चाहिए। क्योंकि बुद्धिमान आदमी इतनी बेईमानी नहीं कर समता; कुछ तो सोचेगा बुद्धिमान आदमी इतने धोखे नहीं दे सकता। कुछ तो विचारेगा! बुद्धिमान आदमी इतने झूठ नहीं बोल सकता, आखिर खुद की आत्मा कचोटेगी। और राजनीति तो सिर्फ झूठे आश्वासन हैं। सिर्फ झूठ पर झूठ। अत्यंत सोई हुई चेतना चाहिए राजनीति में सफल होने के लिये।

CamScanner

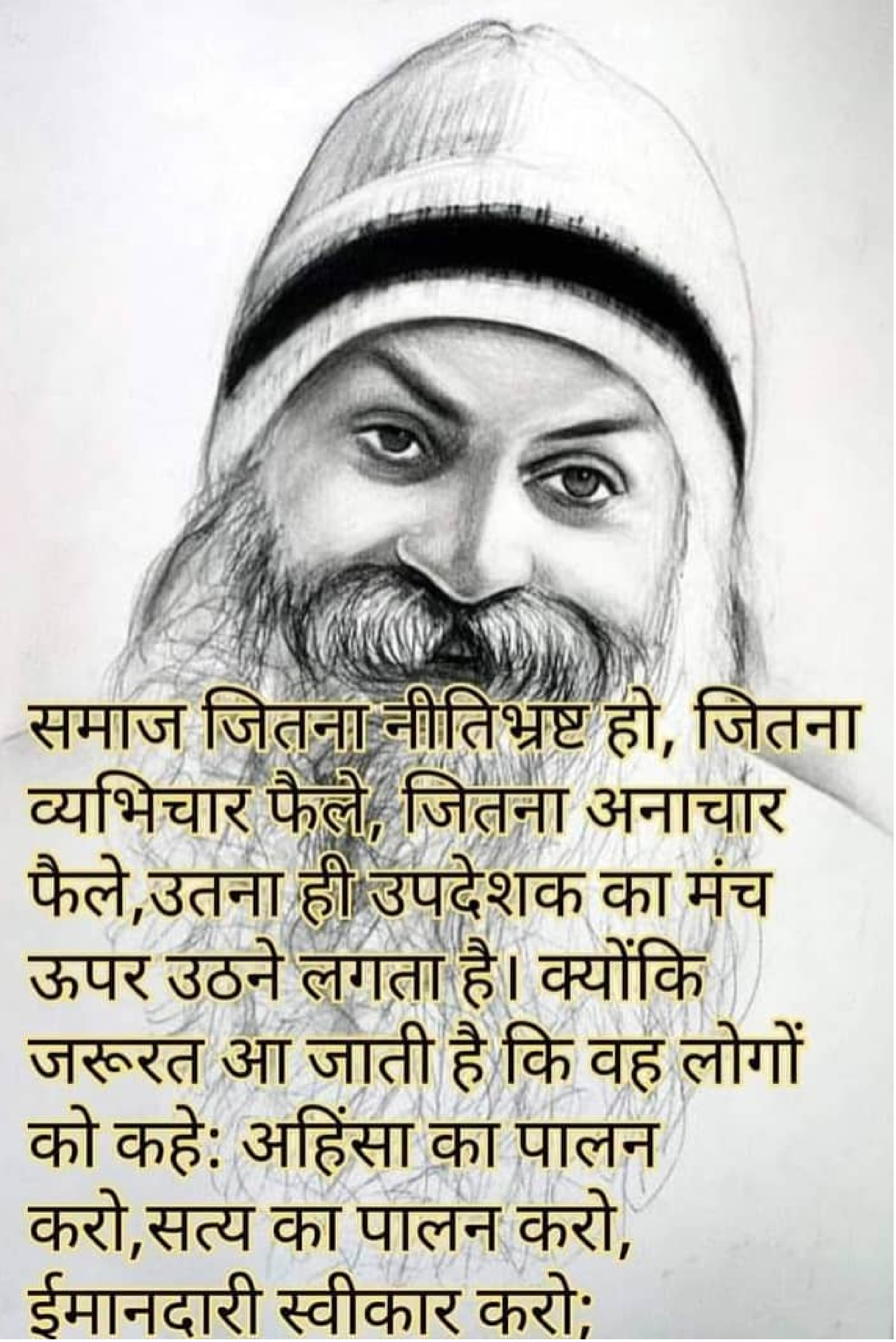
समाज जितना नीतिभ्रष्ट हो, जितना
व्यभिचार फैले, जितना अनाचार
फैले,उतना ही उपदेशक का मंच
ऊपर उठने लगता है। क्योंकि
जरूरत आ जाती है कि वह लोगों
को कहे: अहिंसा का पालन
करो,सत्य का पालन करो,
ईमानदारी स्वीकार करो;

CamScanner

11:07 am 13 KB/s VoLTE 4G 93%

कहते है? जैसे जैसे वह बड़ा हुआ उसने लोगों से सुना कि जब कोई हिलना डुलना देखना बोलना बंद कर दे, निष्प्राण हो जाए, तब समझ लेना चाहिए कि वह मर गया। फिर उसने अपने जीवन में बहुतों को ऐसे ही निष्प्राण हुए देखा और उनका अंतिम संस्कार किया, तो उसकी यह मान्यता दृढ़ हो गई थी।

अब तो वह घबरा गया। उसने हिलने का प्रयास किया, पर उसने देखा कि वह हिल नहीं पा रहा है। इतने में तो कुछ नातेदार बाँस और रस्सी ले आए, लगे अर्थी बनाने।

तब वह जोर जोर से बोला- "अरे मूर्खों! मुझे जिन्दा जला कर मानोगे क्या? मैं मरा नहीं हूँ। बस कुछ गड़बड़ हो रही है जो मैं हिल नहीं पा रहा हूँ।"

पर मानो किसी ने भी उसकी आवाज पर ध्यान नहीं दिया। पत्नी वैसे ही छाती पीटती रही, बच्चे बदहवास रोते रहे और अड़ोसी पड़ोसी खड़े खड़े खुसरफुसर करते रहे।

"ओह! लगता है ये सब बहरे हो गए हैं। ये तो मेरी आवाज ही नहीं सुन पा रहे हैं। आज तो मैं मरा।" ऐसा सोचते हुए वह अपने भगवान को याद करने लगा और अपने जीवन की रक्षा करने की प्रार्थना करने लगा।

पर परिवार में तो अफरातफरी मची थी। "जल्दी करो! जल्दी करो! ए राजू! सब सामान आ गया क्या?" कोई किसी से पूछ रहा था। "हाँ आ गया।" "तो चलो! देर क्यों हो रही है?" और उसके देखते देखते उसे अर्थी पर बाँध कर, एक बड़ा जुलूस उसके पीछे पीछे चलने लगा। पैसे और खील फेंके जा रहे थे और सब एक सुर में बोल रहे थे "राम नाम सत है।"

वह आदमी लाख प्रयास करने पर भी उन्हें समझा नहीं पाया। आखिर थक कर, कि अब कर भी क्या सकते हैं? वह चुप हो गया। और उसे चिता पर चढ़ा कर जला दिया गया।

पर उसे यह देख कर बड़ी हैरानी हुई कि वह जला नहीं। अब उसने जाना कि ओह! शरीर तो जल गया, पर मैं तो नहीं जला। तो मैं शरीर नहीं था? हे भगवान! यही बात तो गुरू जी समझाया करते थे। तब समझ लिया होता तो कल्याण हो गया होता। पर अब समझ आया है जब समझने का कोई लाभ नहीं है।

लोकेशानन्द कहता है कि वह आदमी आज भी उसी शमशान घाट में बैठा एक के बाद एक जन्म मृत्यु रूप स्वप्न देख रहा है। और इस समय वह देख रहा है कि उसका नाम अमुक है, वह अमुक नगर में रहता है और अमुक अमुक अमुक अमुक है।

CamScanner

CamScanner

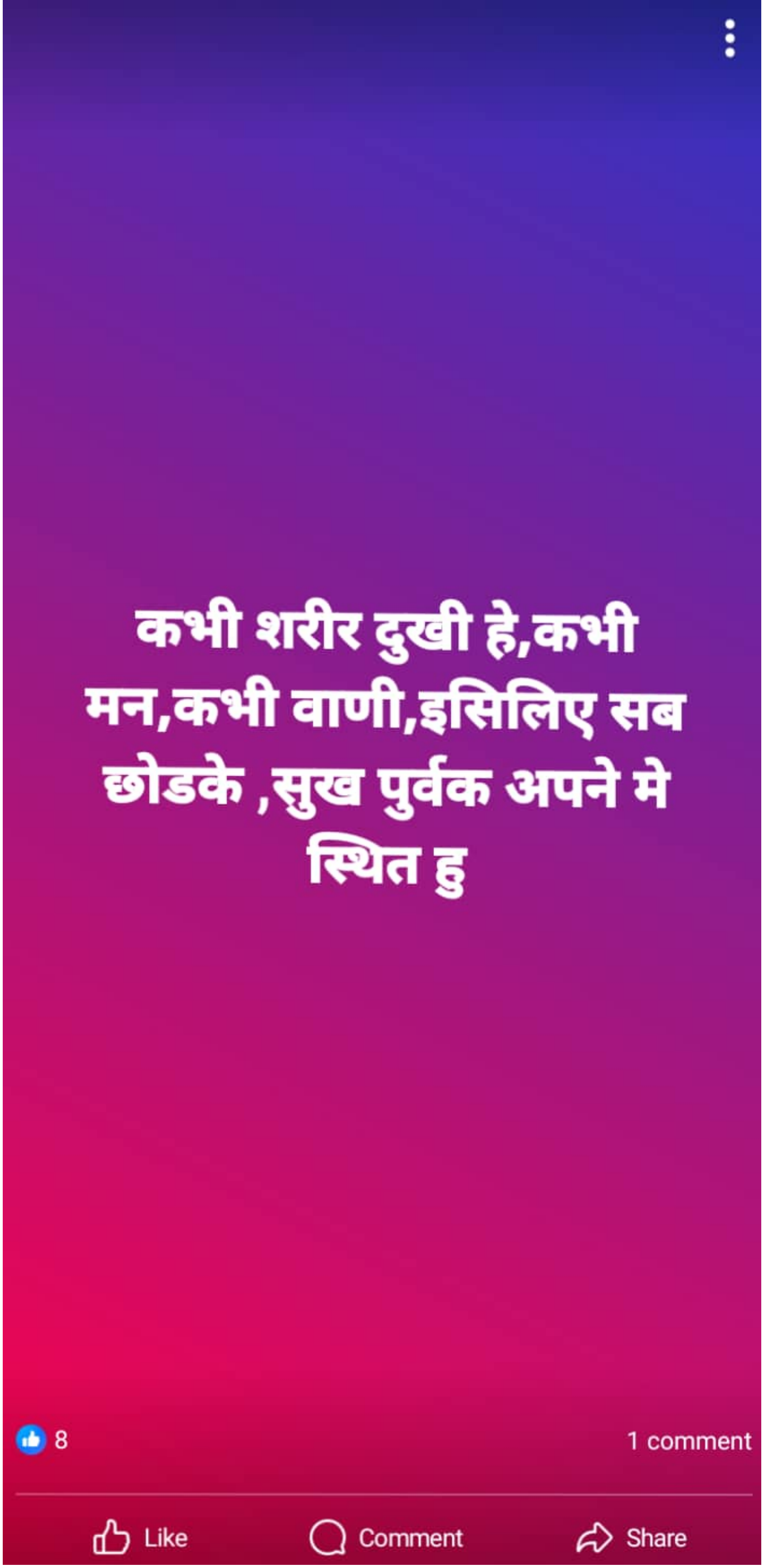
कभी शरीर दुखी हे,कभी
मन,कभी वाणी,इसिलिए सब
छोडके ,सुख पुर्वक अपने मे
स्थित हु
8
1 comment
Like
Comment
Share

CamScanner

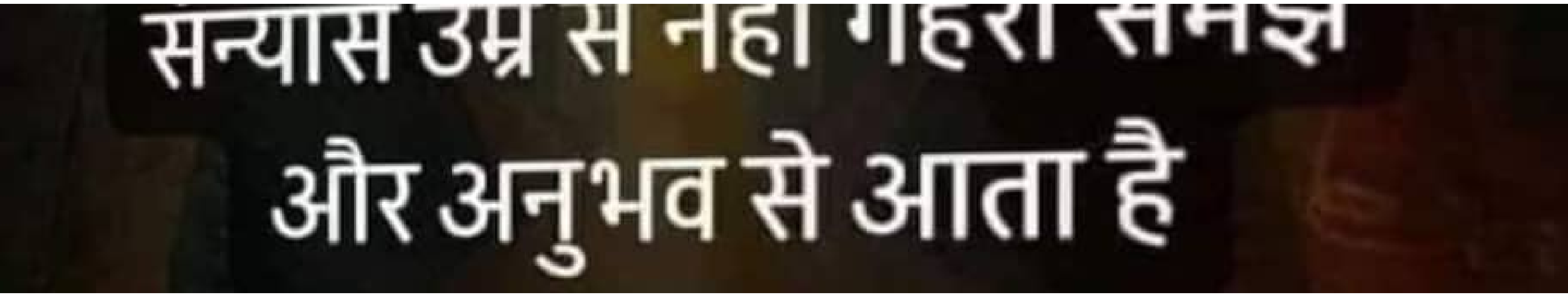


CamScanner

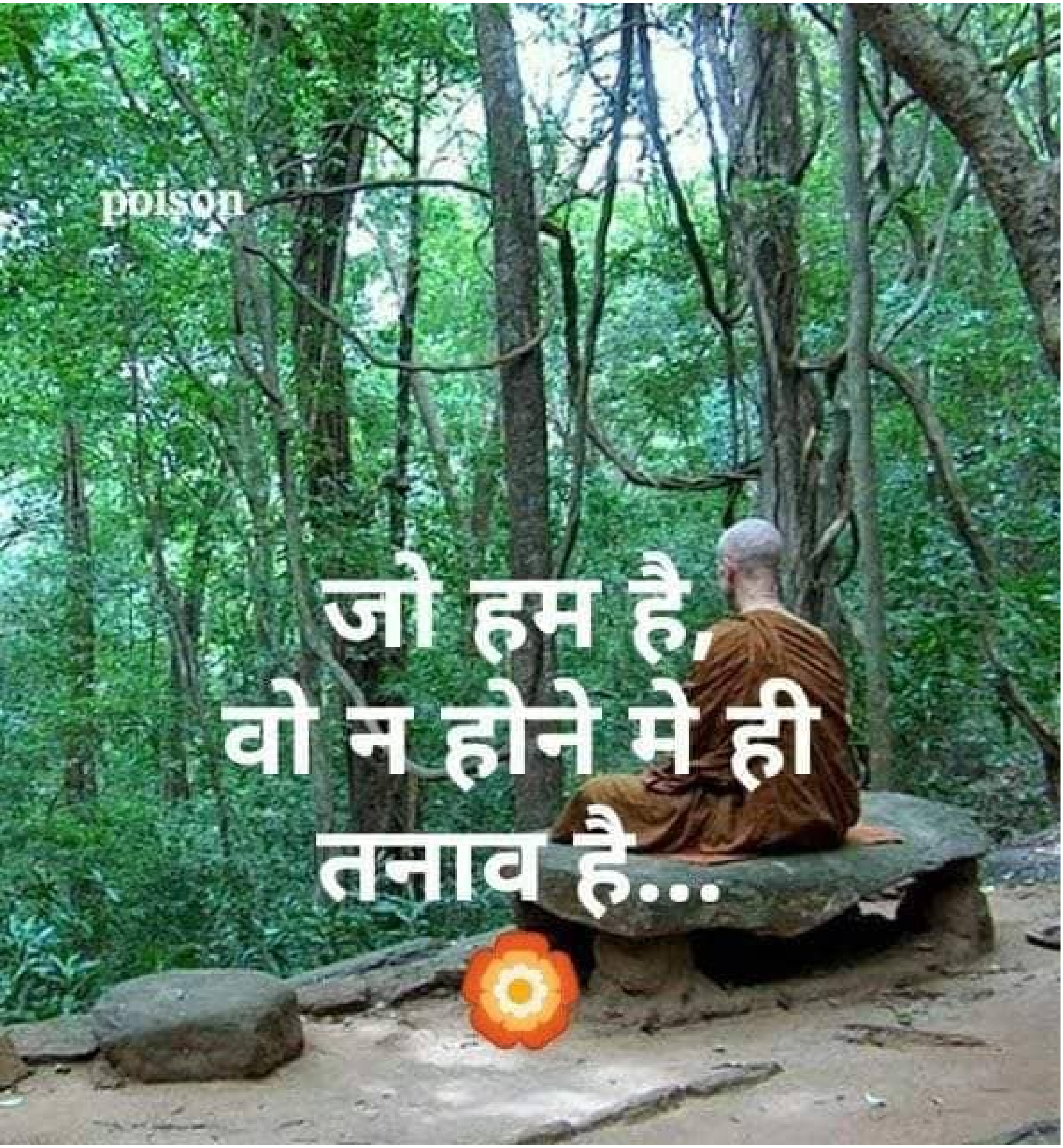


CamScanner

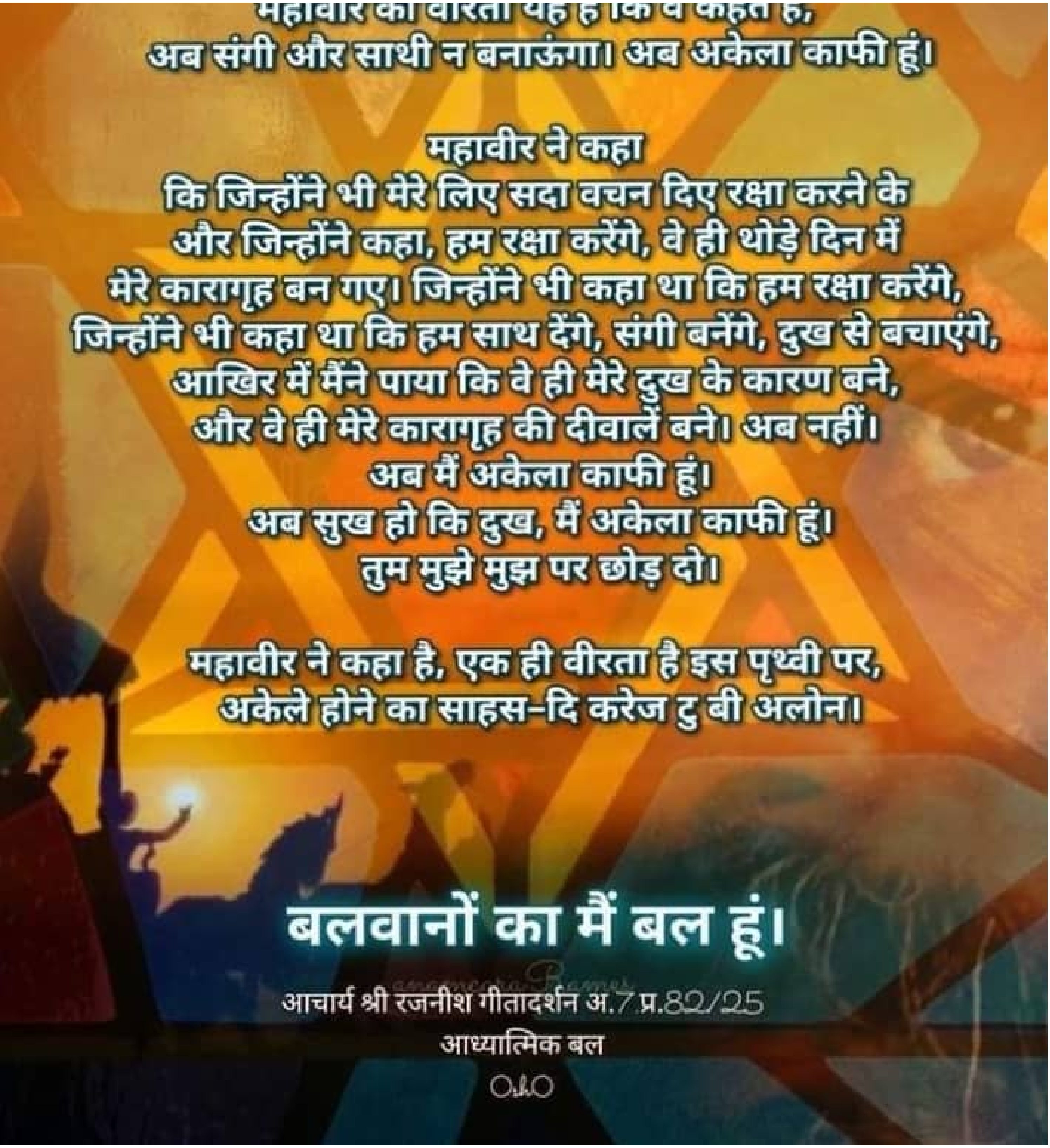
महावीर की वीरता यह है कि वे कहते हैं,
अब संगी और साथी न बनाऊंगा। अब अकेला काफी हूं।
महावीर ने कहा
कि जिन्होंने भी मेरे लिए सदा वचन दिए रक्षा करने के
और जिन्होंने कहा, हम रक्षा करेंगे, वे ही थोड़े दिन में
मेरे कारागृह बन गए। जिन्होंने भी कहा था कि हम रक्षा करेंगे,
जिन्होंने भी कहा था कि हम साथ देंगे, संगी बनेंगे, दुख से बचाएंगे,
आखिर में मैंने पाया कि वे ही मेरे दुख के कारण बने,
और वे ही मेरे कारागृह की दीवालें बने। अब नहीं।
अब मैं अकेला काफी हूं।
अब सुख हो कि दुख, मैं अकेला काफी हूं।
तुम मुझे मुझ पर छोड़ दो।
महावीर ने कहा है, एक ही वीरता है इस पृथ्वी पर,
अकेले होने का साहस–दि करेज टु बी अलोन।
बलवानों का मैं बल हूं।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.82/25
आध्यात्मिक बल
OSHO

CamScanner

संस्कृति के आचार्य जी से उनके शिष्य से पूछा कि महात्मा , संत , ऋषि मुनि या गुरु किसे कहते हैं बहुत सुन्दर परिभाषा बताई आचार्य जी ने।

1. गुरु वो है जो अन्धेरे से प्रकाश की और ले जाये , 2. जिसमें प्राशसां का भाव न हो। 3. जिसमें चेलों की चाहत न हो। 4. गुरु वो है जिस के लिबास में जेब न हो , 5 . गुरु वो है जिसको आश्रम और डेरो की लालसा न हो। आचार्य जी फिर गुरु का गुजर कैसे होगा , यदि गुरु में नरसी भगत का भाव है तो गुजर भी हो जाएगा , शिष्य आचार्य जी कितने गुरु इस भाव के है ? 🙏

CamScanner

10:58 am 55 KB/s VoLTE 4G 95%
google.com/amp/s/m-hi 2

**ओशो संन्यासी** अक्सर 'जिबरिश' ध्यान करते हैं। यह भारतीय योग अनुसार रेचक की एक प्रक्रिया है। ओशो की एक महत्वपूर्ण किताब 'ध्यान योग : प्रथम और अंतिम मुक्ति' में ध्यान की 150 विधियां हैं। दुनियाभर में प्रचलित ध्यान को इसमें संकलित किया गया है और ओशो ने बहुत ही सुंदर ढंग से इन विधियों का वर्णन किया है।

ओशो कहते हैं कि अंग्रेजी का 'जिबरिश' शब्द 'जब्बार' नाम के एक सूफी सन्त से बना है। जब्बार से जब भी कोई कुछ सवाल पूछता था तो वह अक्सर अनर्गल, अनाप-शनाप भाषा में उसका जवाब देता था। वे इस भांति बोलते थे कि कोई समझ नहीं पाता था कि वे क्या बोल रहे हैं। इसलिए लोगों ने उनकी भाषा को 'जिबरिश' नाम दे दिया- जब्बार से जिबरिश (Gibberish)। जिबरिश का अर्थ होता है अस्पष्ट उच्चारण।

**'जिबरिश' का प्रचलित अर्थ बन गया-** अर्थहीन बकवास। यह अर्थहीन बकवास ही आंतरिक बकवास को रोकती है। इससे मन का कूड़ा-करकट बाहर निकाला जा सकता है। ईसाइयों के एक मत में इस तरह के ध्यान को ग्लासोलेलिया कहते हैं; 'टाकिंग इन टंग्स।'

सूफी फकीर जब्बार से लोग तरह-तरह के गंभीर सवाल पूछते और वह उसका जवाब इसी तरह देते थे। अर्थहीन शब्दों में लगातार वे लगभग चिल्लाते हुए जबाब देते थे। दरअसल जब्बार यह बताना चाहते थे कि तुम्हारे सारे सवाल और जवाब बकवास है। इससे सत्य को नहीं

CamScanner

10:58 am 0 KB/s 4G 95%
google.com/amp/s/m-hi 2

किया है।

ओशो कहते हैं कि अंग्रेजी का 'जिबरिश' शब्द 'जब्बार' नाम के एक सूफी सन्त से बना है। जब्बार से जब भी कोई कुछ सवाल पूछता था तो वह अक्सर अनर्गल, अनाप-शनाप भाषा में उसका जवाब देता था। वे इस भांति बोलते थे कि कोई समझ नहीं पाता था कि वे क्या बोल रहे हैं। इसलिए लोगों ने उनकी भाषा को 'जिबरिश' नाम दे दिया- जब्बार से जिबरिश (Gibberish)। जिबरिश का अर्थ होता है अस्पष्ट उच्चारण।

**'जिबरिश' का प्रचलित अर्थ बन गया-** अर्थहीन बकवास। यह अर्थहीन बकवास ही आंतरिक बकवास को रोकती है। इससे मन का कूड़ा-करकट बाहर निकाला जा सकता है। ईसाइयों के एक मत में इस तरह के ध्यान को ग्लासोलेलिया कहते हैं; 'टाकिंग इन टंग्स।'

सूफी फकीर जब्बार से लोग तरह-तरह के गंभीर सवाल पूछते और वह उसका जवाब इसी तरह देते थे। अर्थहीन शब्दों में लगातार वे लगभग चिल्लाते हुए जबाब देते थे। दरअसल जब्बार यह बताना चाहते थे कि तुम्हारे सारे सवाल और जवाब बकवास है। इससे सत्य को नहीं जाना जा सकता। सत्य को जानने के लिए मन और मस्तिष्क का खाली होना जरूरी है।

**नो माइंड :** ओशो ने जब्बार के इस ध्यान को आधुनिक लुक दिया और इस वार्तालाप के साथ चिखना और चिल्लाना भी जोड़ दिया। ओशो ने इस विधि को फिर से अपनाया और उसमें कुछ नए तत्व जोड़कर एक ध्यान

CamScanner

10:53 am 0 KB/s VoLTE 4G 96%

#osholove

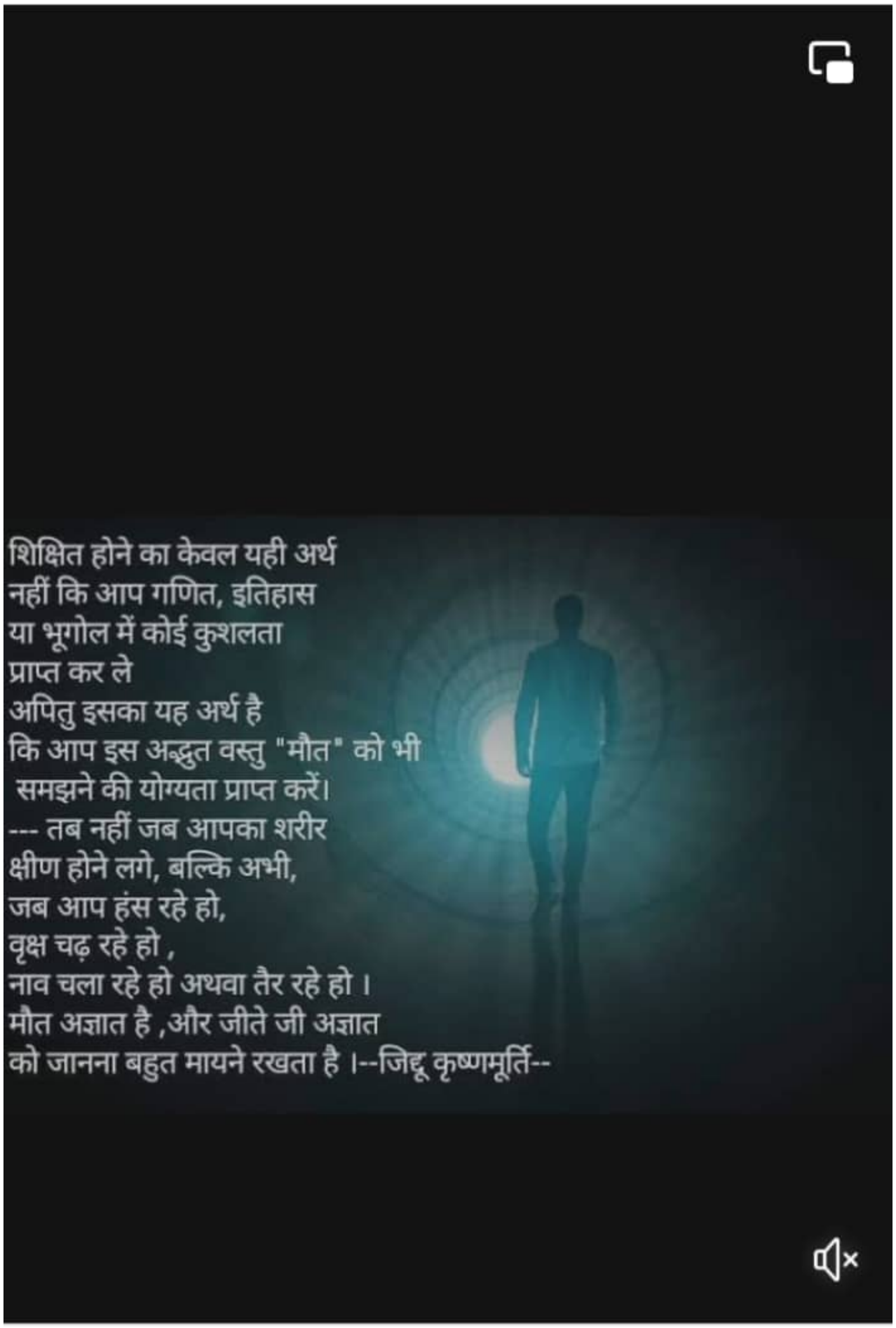


1   1 comment • 10 views

Like Comment Share

**ओ शो वाणी**

Om Prakash · 2h ·

*कृष्ण* कहते हैं, मैं *शस्त्रधारियों में राम हूं।*

CamScanner

जैसे सूरज उगता
और डूबता है, वैसे ही
उदासी आती जाती है,
सुख आता जाता है,
पर तुम उसमें नहीं हो।
दुख सुख अपने आप
आते जाते हैं, चित्त दशाएं
अपने आप आती जाती हैं।
यदि यह प्रतीति हो कि
जीवन एक साइकोड्रामा है
तो व्यक्ति विरक्त और अकेला
अनुभव करने लगता है।'
तो वैसा अनुभव करो!
तंत्र सूत्र
OshO

CamScanner

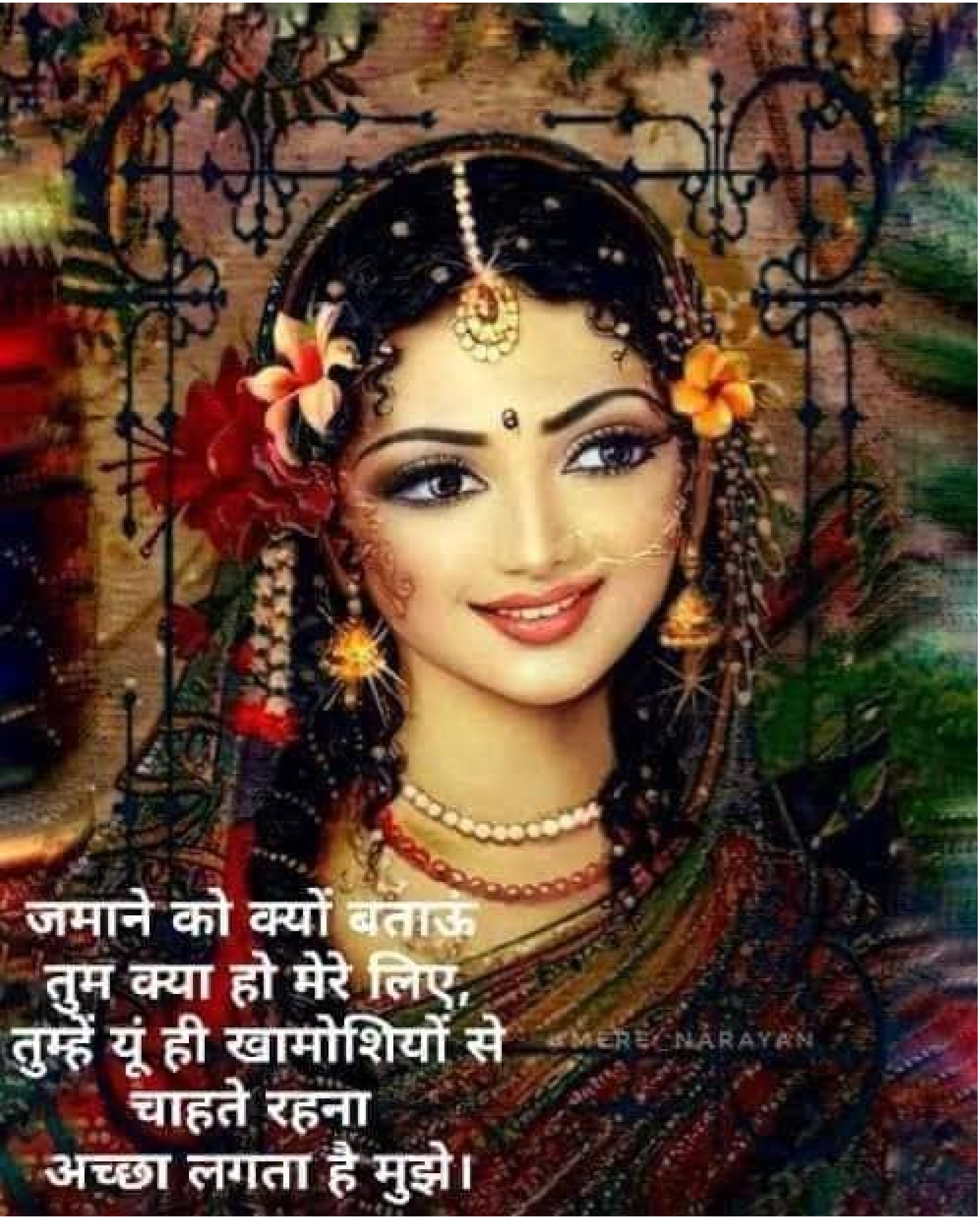
जमाने को क्यों बताऊं
तुम क्या हो मेरे लिए,
तुम्हें यूं ही खामोशियों से
चाहते रहना
अच्छा लगता है मुझे।
@MERE_NARAYAN

CamScanner

CamScanner

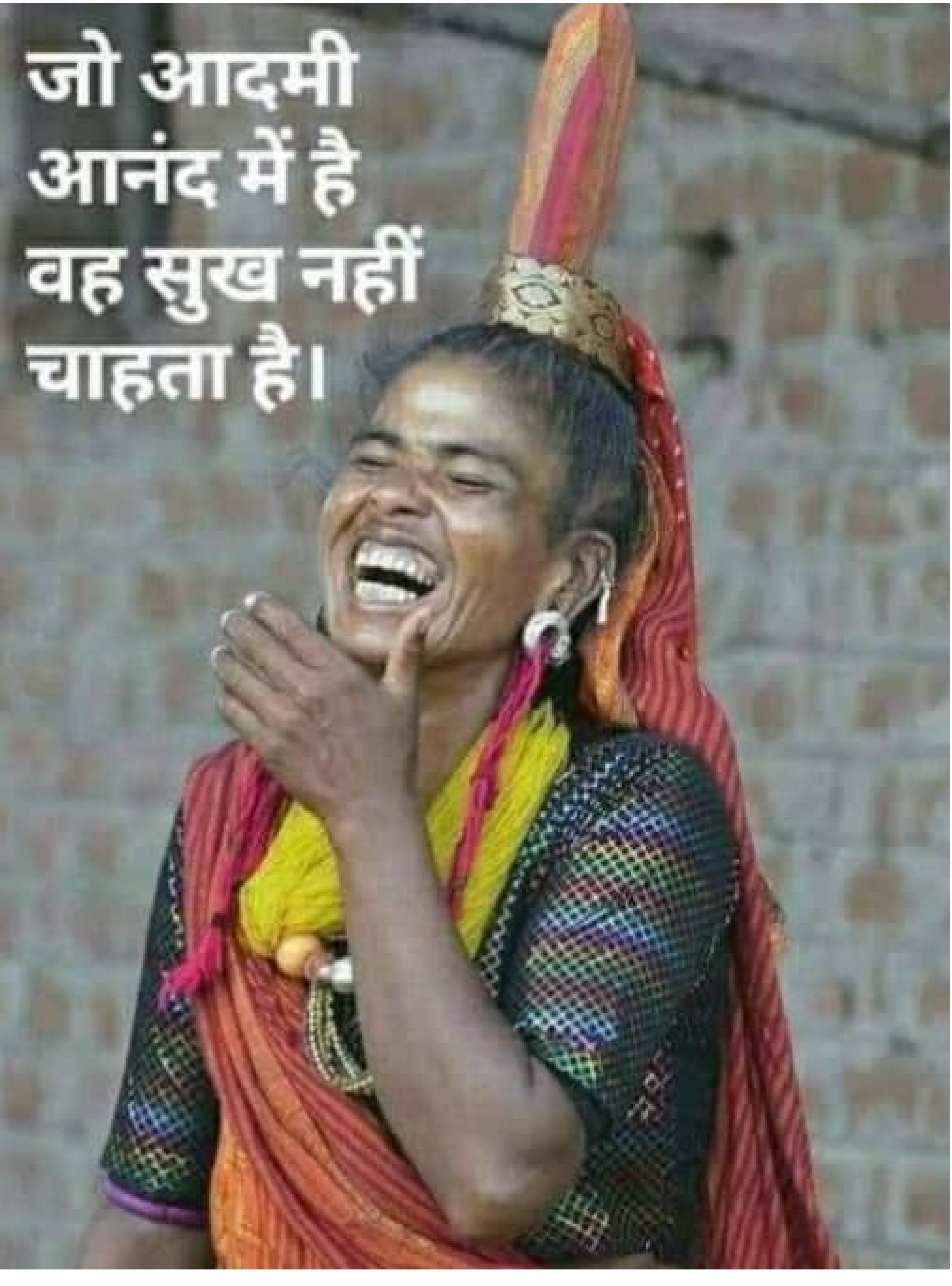


CamScanner

10:30 am 115 KB/s 96%

Like Comment Share

**Murlidhar K. Vyas**

Suggested for you · 13 Oct ·

"ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं. वो हमी हैं जो अपनी आंखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है."

3.1K 16 comments • 315 shares • 40K views

Like Comment Share

CamScanner

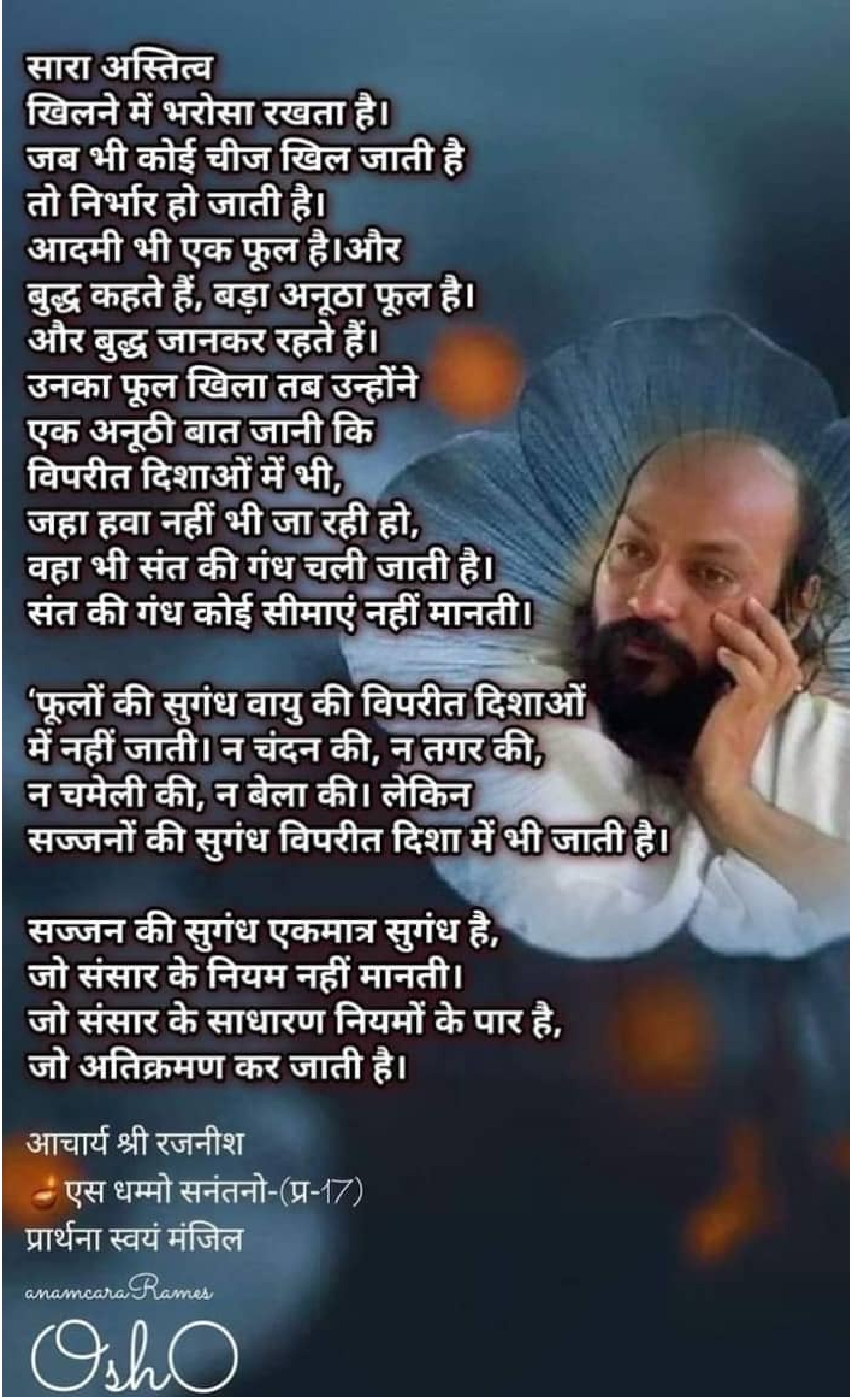
सारा अस्तित्व
खिलने में भरोसा रखता है।
जब भी कोई चीज खिल जाती है
तो निर्भार हो जाती है।
आदमी भी एक फूल है।और
बुद्ध कहते हैं, बड़ा अनूठा फूल है।
और बुद्ध जानकर रहते हैं।
उनका फूल खिला तब उन्होंने
एक अनूठी बात जानी कि
विपरीत दिशाओं में भी,
जहा हवा नहीं भी जा रही हो,
वहा भी संत की गंध चली जाती है।
संत की गंध कोई सीमाएं नहीं मानती।
'फूलों की सुगंध वायु की विपरीत दिशाओं
में नहीं जाती। न चंदन की, न तगर की,
न चमेली की, न बेला की। लेकिन
सज्जनों की सुगंध विपरीत दिशा में भी जाती है।
सज्जन की सुगंध एकमात्र सुगंध है,
जो संसार के नियम नहीं मानती।
जो संसार के साधारण नियमों के पार है,
जो अतिक्रमण कर जाती है।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-17)
प्रार्थना स्वयं मंजिल
anamcaraRames
OshO

CamScanner

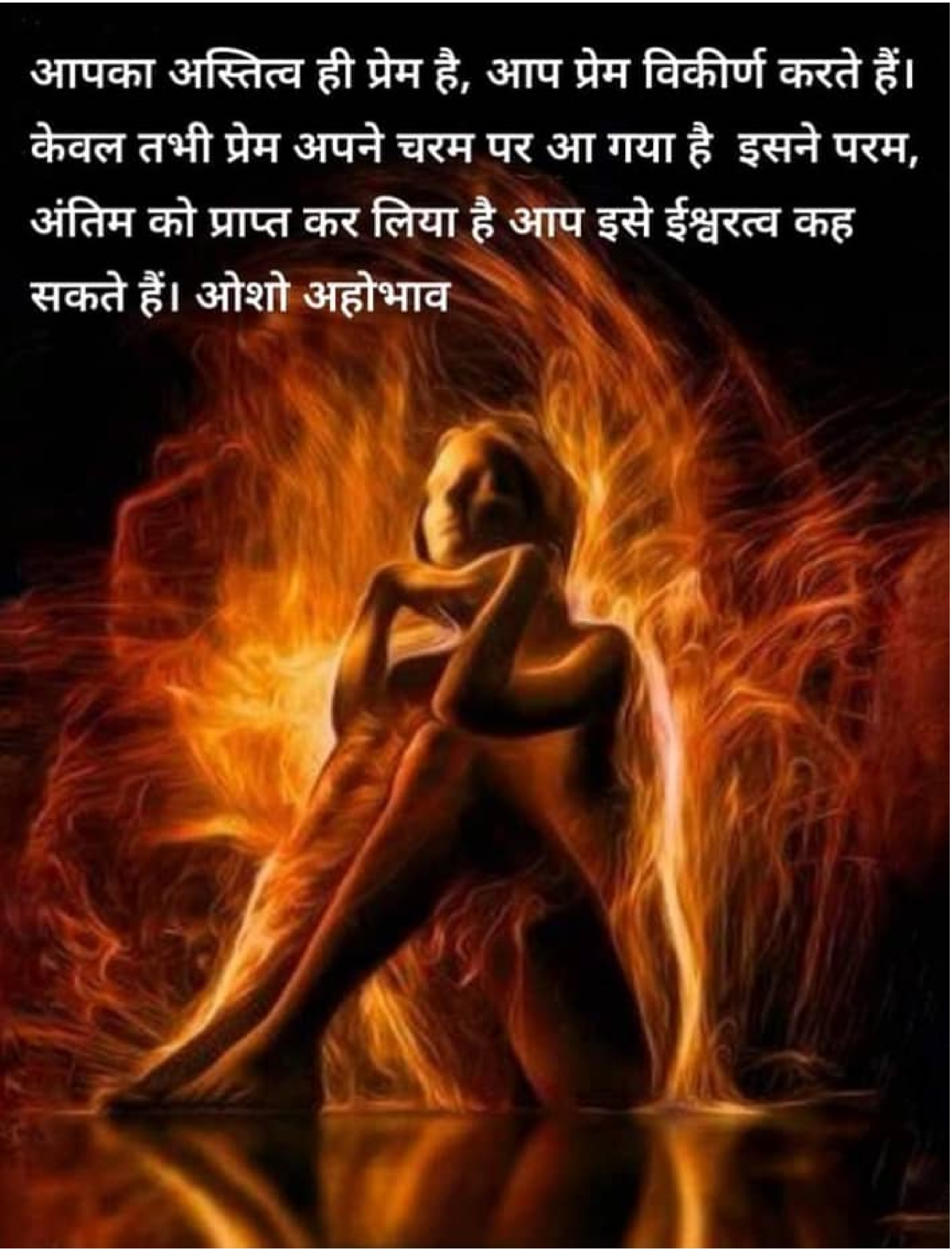
आपका अस्तित्व ही प्रेम है, आप प्रेम विकीर्ण करते हैं।
केवल तभी प्रेम अपने चरम पर आ गया है इसने परम,
अंतिम को प्राप्त कर लिया है आप इसे ईश्वरत्व कह
सकते हैं। ओशो अहोभाव

CamScanner

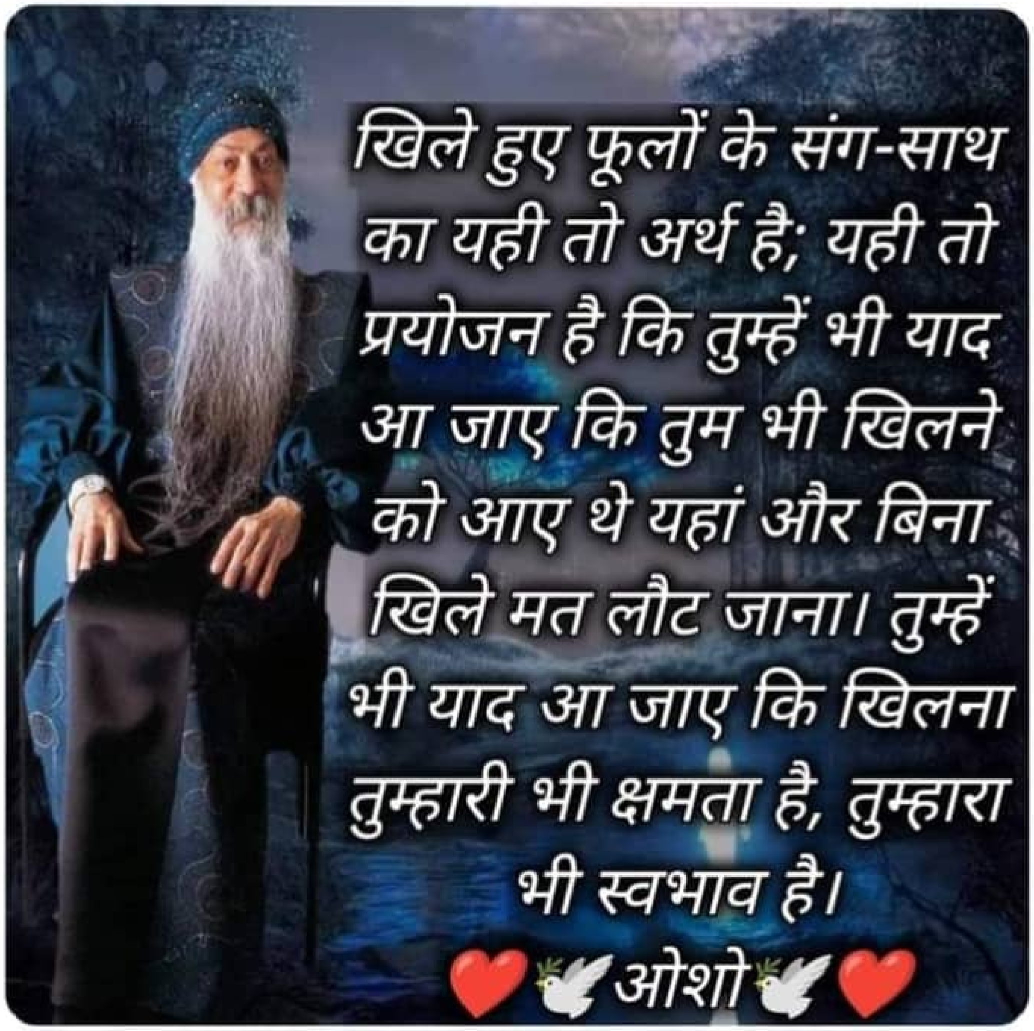
खिले हुए फूलों के संग-साथ का यही तो अर्थ है; यही तो प्रयोजन है कि तुम्हें भी याद आ जाए कि तुम भी खिलने को आए थे यहां और बिना खिले मत लौट जाना। तुम्हें भी याद आ जाए कि खिलना तुम्हारी भी क्षमता है, तुम्हारा भी स्वभाव है।
ओशो

CamScanner

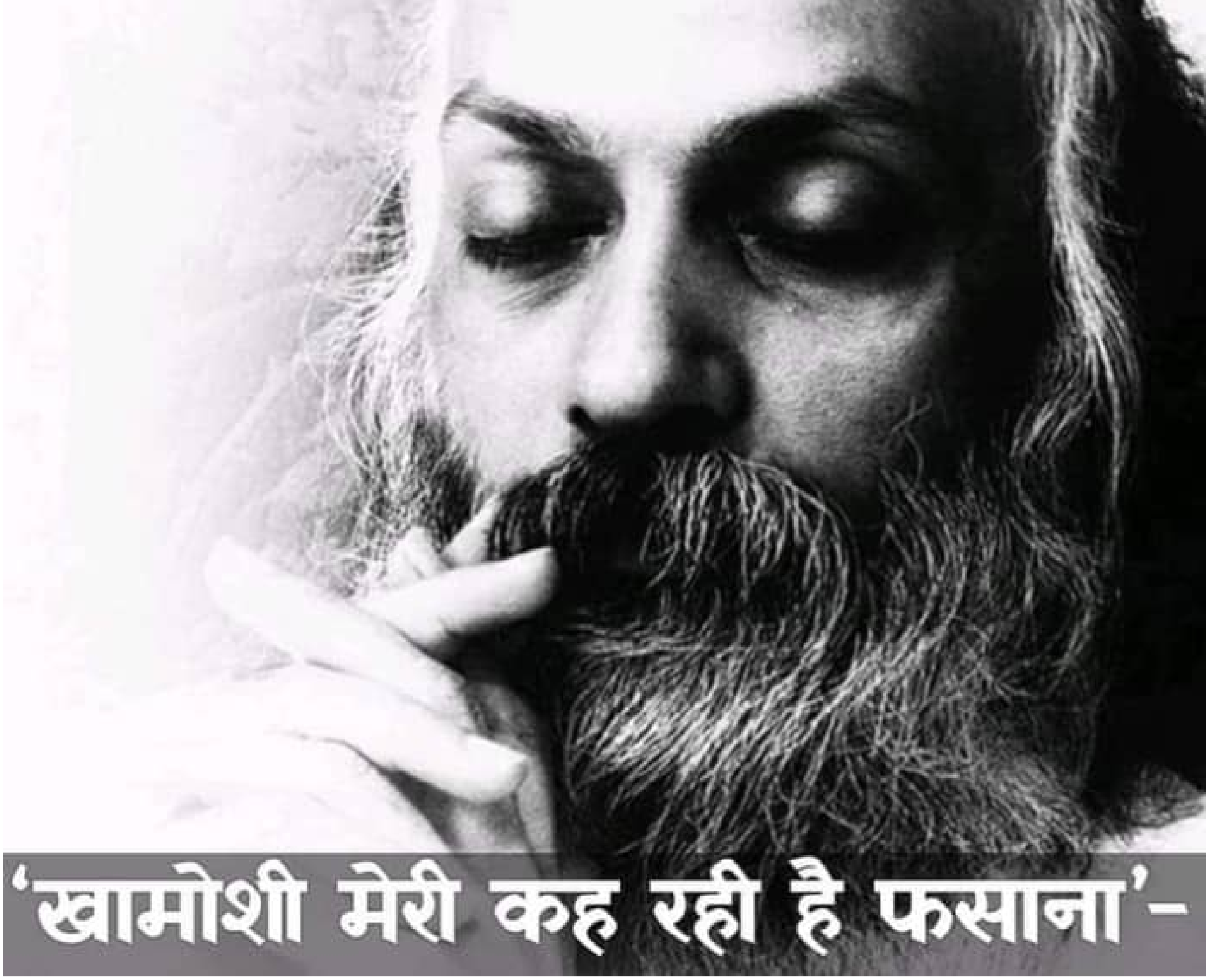


CamScanner

यह अपूर्व सूत्र है...........

कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो, तो छोटा-सा काम है बस; जरा-सी तरकीब है; जरा-सी कला है--और कला यह है: ...........

अपने को हटा लो और परमात्मा को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए तो ठीक।
तुम सारी चिंता उस पर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा हुआ है,
चांदत्तारे चलते हैं, ऋतुएं घूमती हैं, सूरज निकलता है, डूबता है; इतना विराट जीवन का सागर, इतनी लहर जो सम्हालना है, तुम्हारी भी छोटी लहर सम्हाल लेगा।
तुम अपनी लहर को अपना अहंकार मत बनाओ।
तुम अपनी लहर को उसके हाथ में समर्पित कर दो।
ओशो

CamScanner

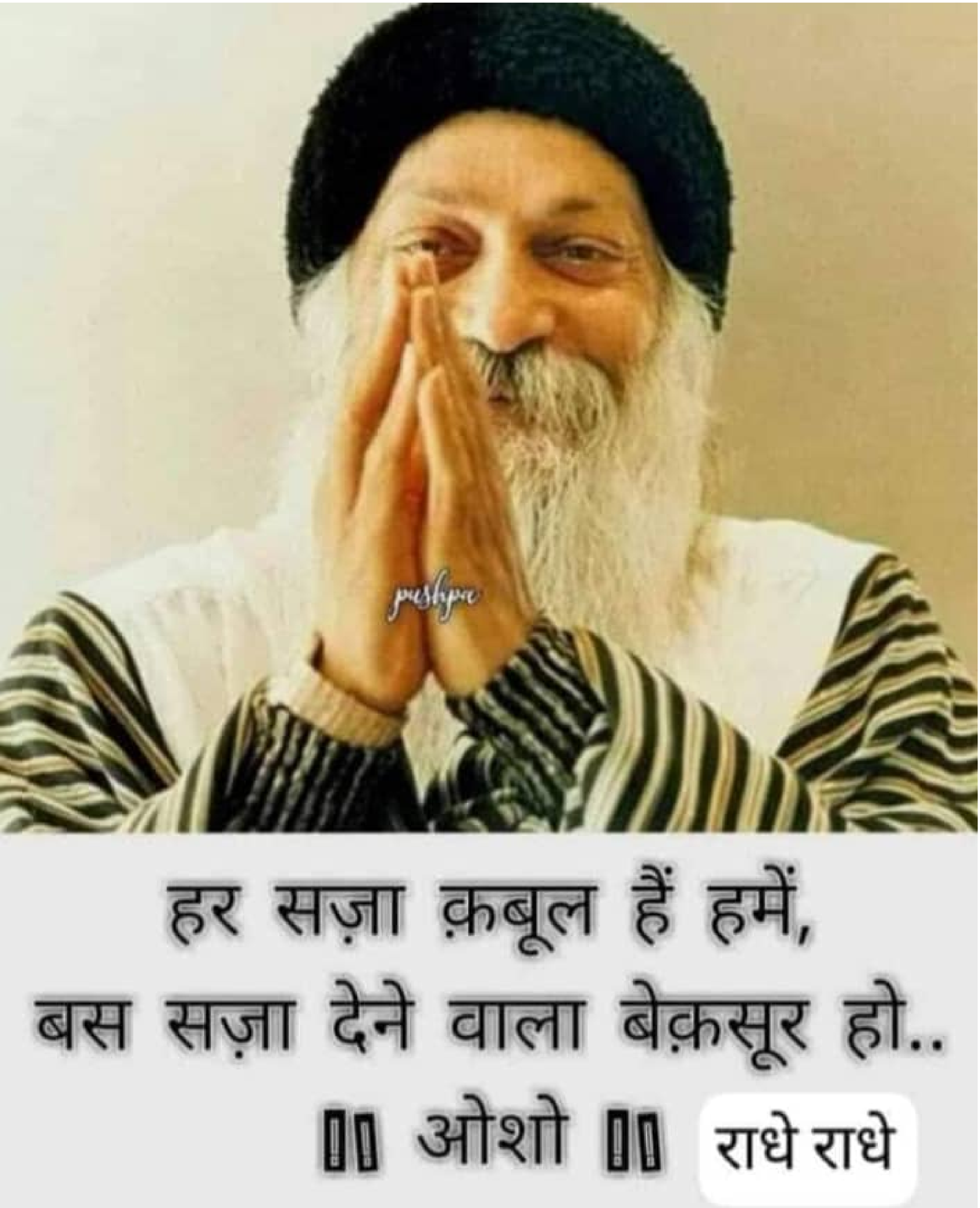


CamScanner

इस जगत् में इतनी मूल्यवान कोई भी चीज नहीं है कि तुम उसके लिए झगड़ो, रोष करो, हिंसा करो। कौड़ियों के लिए लड़ो मत। कौड़ियों के लिए लड़कर आत्मा के बहूमूल्य हीरे न गंवाओ।
* अजहूं चेत गंवार, प्रवचन # १२ *

CamScanner

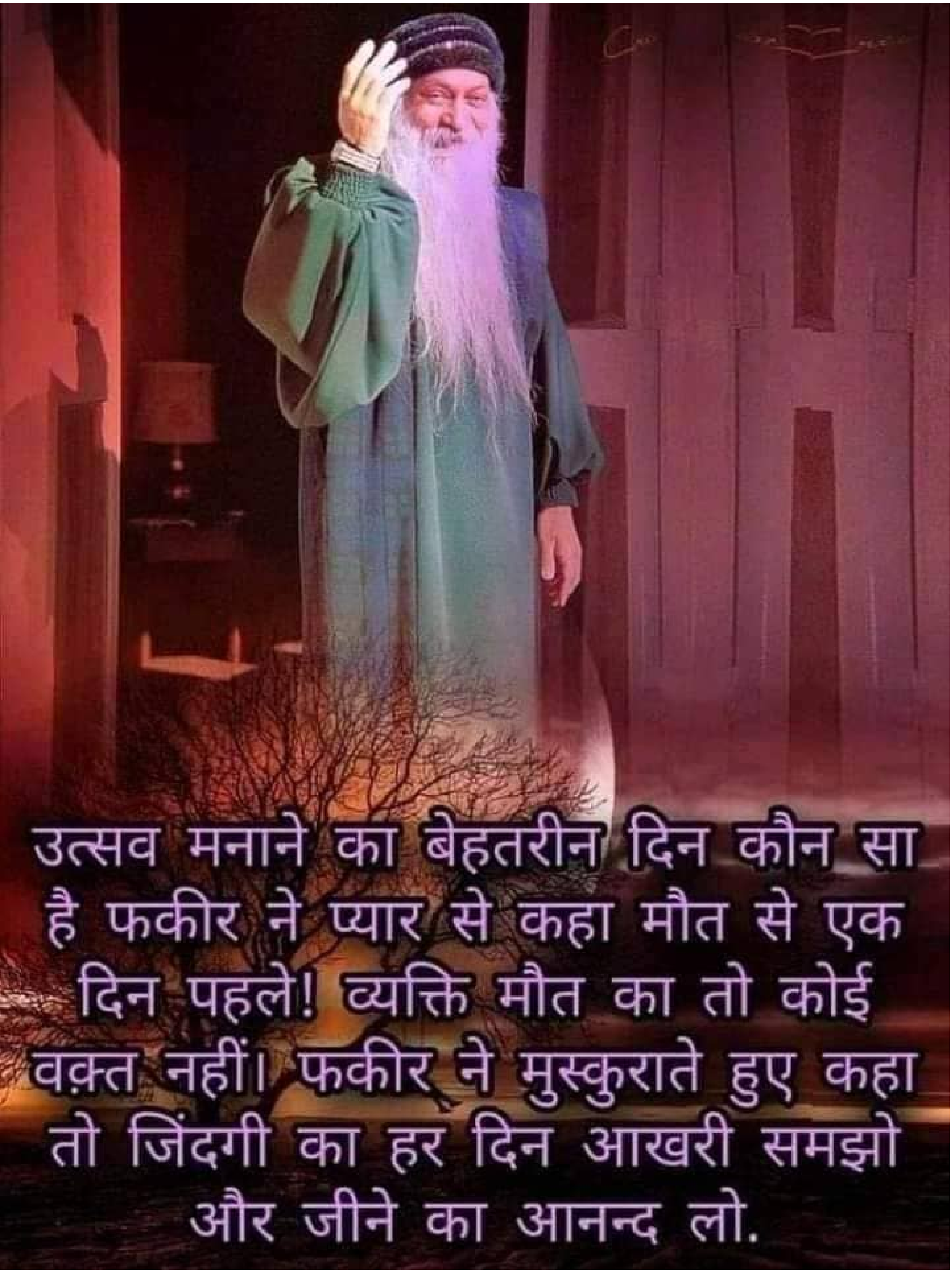
उत्सव मनाने का बेहतरीन दिन कौन सा है फकीर ने प्यार से कहा मौत से एक दिन पहले! व्यक्ति मौत का तो कोई वक़्त नहीं। फकीर ने मुस्कुराते हुए कहा तो जिंदगी का हर दिन आखरी समझो और जीने का आनन्द लो.

CamScanner

CamScanner

अक्सर हमने बहुत बार देखा है कि लोग मन्दिर मे अपनी जेब से 1,2,5 का सिक्का या कितने का भी नोट निकाल कर भगवान के सामने फेंकते है फिर हाथ जोडकर प्रणाम करते है ओर मनोकामना भगवान से माँगते है ।

कैसी मूर्खता है यह लोगो कि :- कोइ आपके सामने पैसे फेंककर चला जाये तो क्या आपको अच्छा लगेगा।

नही लगेगा, आप उस व्यक्ति को बुलाकर कहोगे__""भिखारी समझा है क्या""तो सोचिये भगवान को कैसी फिलिंग आती होगी जब कोइ उनके सामने पैसे फेंकता है ।

अब जो यह कहे कि भैया पत्थर कि मूर्ति मे केसी फिलिंग, तो उनका मन्दिर जाना बेकार है ।

10 रूपये चढाकर 10 करोड कि कामना करते है ।

भगवान के सामने शर्त रखते है कि है भगवान मेरे बेटे कि नोकरी लगने के बाद मंदिर मे भंडारा करवाऊंगा ।

मेरा ये संकट टाल दो__ मे इतने रूपये दान करूंगा ।

पहले कुछ नही करेंगे, काम होने के बाद ही करेंगे ।

हे भगवान, मेरा ये काम हो जाये मै आपको मानना शुरू कर दूँगा ।

क्यो भाई, भगवान को क्या जरूरत पडी है कि वो तुम्हे अपने होने का प्रमाण दें ।

ऐसे लोभी लालची व्यक्तियों को समझना चाहिए कि उसे तुम क्या दे दोगे जो सम्पूर्ण विश्व को पाल रहा है ।

"दाता एक राम, भिखारी सारी दुनिया""भगवान को आपका पैसा नही चाहिये उन्हे सिर्फ आपकी सच्ची भावना ओर प्रेम चाहिये ।

उनके सामने जब भी जाये तो अपने पद,पैसे,ज्ञान, का अहंकार त्याग कर दीन हीन बनकर जाये । क्यो कि आपके पास जो भी है यह सब उन्ही का दिया हुआ है ।

CamScanner

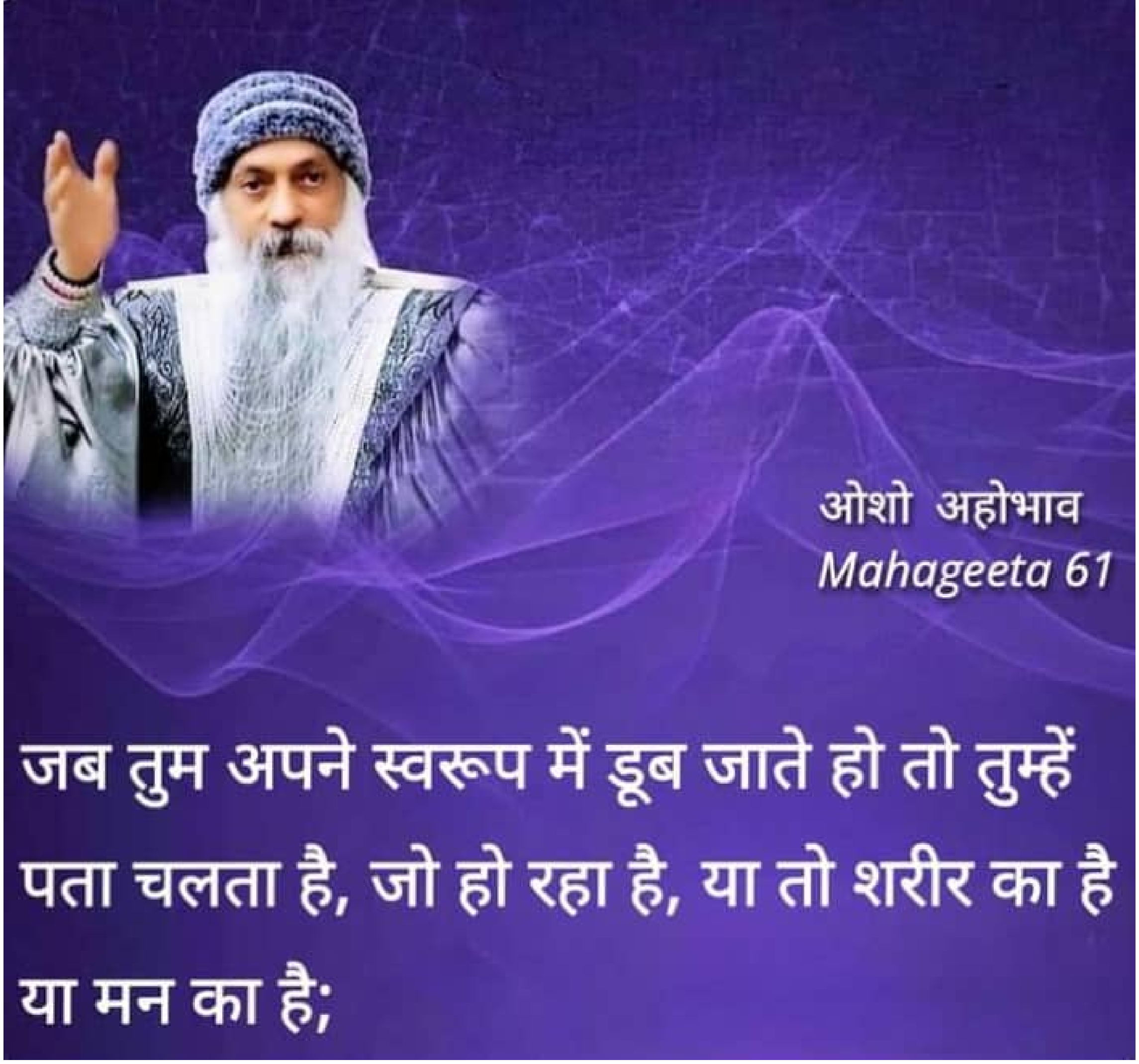
ओशो अहोभाव
Mahageeta 61
जब तुम अपने स्वरूप में डूब जाते हो तो तुम्हें पता चलता है, जो हो रहा है, या तो शरीर का है या मन का है;

CamScanner

10:53 pm 0 KB/s 33%

मैं केवल साक्षी मात्र हूं। ऐसी चिंतना की धारा तुम्हारे भीतर बह जाती। ऐसा सूत्र, ऐसी चिंतामणि तुम्हारे हाथ लग जाती।

जब तुम देखते हो कि भूख लगी तो शरीर में घटना घटती है और तुम देखनेवाले ही बने रहते हो। तुम्हारी सुखधार में जरा भी भेद नहीं पड़ता। इसका यह अर्थ नहीं कि तुम भूखे मरते रहते हो। तुम उठते हो, तुम शरीर को कुछ भोजन का इंतजाम करते हो। प्यास लगती है तो शरीर को पानी देते हो। यह तुम्हारा मंदिर है। इसमें तुम्हारे देवता बसे हैं। तुम इसकी चिंता लेते, फिक्र लेते, लेकिन अब तुम तादात्म्य नहीं करते। अब तुम ऐसा नहीं कहते कि मुझे भूख लगी है। अब तुम कहते हो, शरीर को भूख लगी है। अब तुम चिंता करते हो लेकिन चिंता का रूप बदल गया। अब शरीर तृप्त हो जाता है, तो तुम कहते हो शरीर तृप्त हुआ। शरीर को प्यास लगी, पानी दिया। शरीर को नींद आ गई, शरीर को विश्राम दिया। लेकिन तुम अलिप्त, अलग-अलग, दूर-दूर, पार-पार रहते।

तुम फिक्र कर लेते हो, जैसे कोई अपने घर की फिक्र करता है। जिस घर में तुम रहते हो, स्वच्छ भी करते हो, कभी रंग-रोगन भी करते हो, दीवाली पर सफेदा भी पुतवाते हो, कपड़े भी धुलवाते हो, परदे भी साफ करते हो, फर्नीचर भी बदल लेते हो; यह सब...लेकिन इससे तुम यह भ्रांति नहीं लेते कि मैं मकान हूं। तुम मकान के मालिक ही रहते हो; निवास करते हो। तुम कभी इसके साथ इतने ज्यादा संयुक्त नहीं हो जाते कि मकान गिर जाये तो तुम समझो कि मैं मर गया; कि छप्पर गिर जाये तो तुम समझो कि अपने प्राण गये; कि मकान में आग लग जाये तो तुम चिल्लाओ कि मैं जला।

ऐसी ही घटना घटती है ज्ञानी की। जैसे-जैसे भीतर का रस स्पष्ट होता, भीतर का साक्षी जागता, वैसे देह तुम्हारा गृह रह जाती।

अगर ठीक से समझो तो गृहस्थ का यही अर्थ है: जिसने देह को अपना होना समझ लिया, वह गृहस्थ। और जिसने देह को देह समझा और अपने को पृथक समझा, वही संन्यस्त। - ओशो Mahageeta 61

CamScanner

10:53 pm 109 KB/s 4G 33%

जब कभी एक बार भी बिना निमित्त के तुम अपने से जुड़ जाते हो, तो घटना घट गई। कुंजी मिल गई। अब तुम जानते हो, अब किसी पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। जब चाहो तब ताला खुलेगा। जब चाहो तब भीतर का द्वार उपलब्ध है। बीच बाजार में तुम आंख बंद करके खड़े हो सकते हो और डूब जा सकते हो अपने में।

फिर धीरे-धीरे आंख बंद करने की भी जरूरत नहीं रह जाती, क्योंकि वह भी निमित्त ही है। फिर आंख खुली रखे तुम अपने में डूब जाते हो। फिर तुम काम करते-करते भी डूब जाते हो। फिर ऐसा भी नहीं है कि पद्मासन में ही बैठना पड़े, कि पूजागृह में बैठना पड़े, कि मंदिर-मस्जिद में बैठना पड़े। फिर तुम बाजार में, खेत में, खलिहान में काम करते-करते भी अपने में डूब जाते हो।

धीरे-धीरे यह तुम्हारा इतना सहज भाव हो जाता कि इसमें बाहर आना, भीतर आना जरा भी अड़चन नहीं देता। एक घड़ी ऐसी आती कि तुम अपने भीतर के स्रोत में डूबे ही रहते हो। करते रहते हो काम, चलता रहता है बाजार, दुकान भी चलती है, ग्राहक से बात भी चलती, खेत-खलिहान भी चलता, गड्ढा भी खोदते जमीन में, बीज भी बोते, फसल भी काटते, बात भी करते, चीत भी सुनते, सब चलता रहता है और तुम अपने में डूबे खड़े रहते हो। ऐसे रसलीन जो हो गया वही सिद्ध-पुरुष है।

"स्वाभाविक रूप से जो शून्यचित्त है और सहज रूप से कर्म करता है, उस धीरपुरुष के सामान्य जन की तरह न मान है न अपमान।'
कृतं देहेन कर्मेदं न मया शुद्धरूपिणा।
इति चिंतानुरोधी यः कुर्वन्नपि करोति न।।
"यह कर्म शरीर से किया गया है, मुझ शुद्धस्वरूप द्वारा नहीं, ऐसी चिंतना का जो अनुगमन करता है, वह कर्म करता हुआ भी नहीं करता है।'

और अब तो जब तुम अपने स्वरूप में डूब जाते हो तो तुम्हें पता चलता है, जो हो रहा है, या तो शरीर का है या मन का है; या शरीर और मन के बाहर फैली प्रकृति का है। मेरा किया हुआ कुछ भी नहीं। मैं अकर्ता हूं।

CamScanner

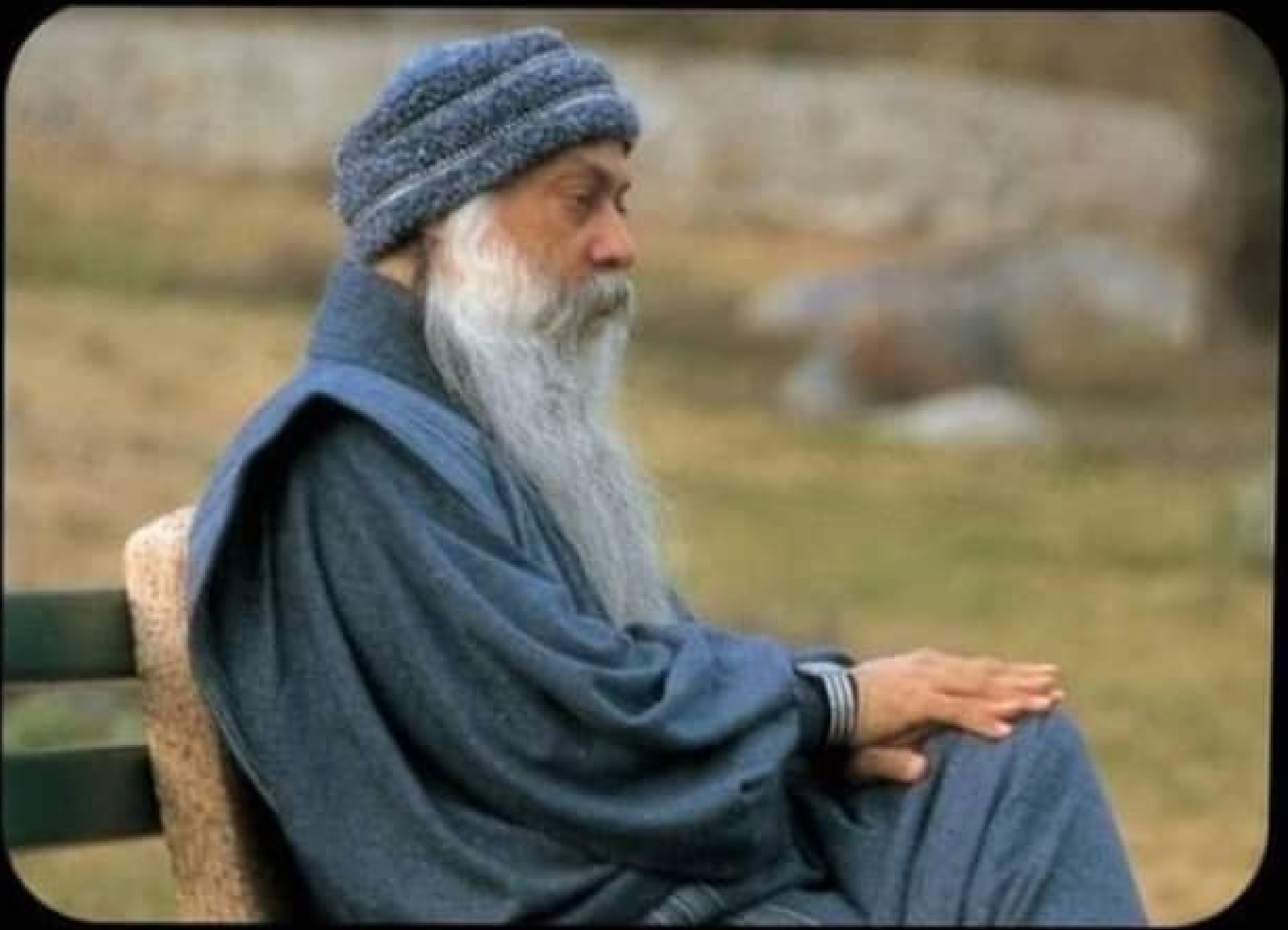

जहां विचार नही वहां मैं भी नही बचता।
क्योकि मैं सभी विचारो के जोड़ का नाम है।
सभी विचारो की इकट्ठी गठरी का नाम मैं।

ओशो अहोभाव

अष्टावक्र गीता (प्रवचन-77)

CamScanner

संभोग से समाधि पसंद करने वाले मित्र
Kumar Manish · 3h ·

मुल्ला नसरुद्दीन एक लिफ्ट में सवार हुआ। एक सुंदर महिला भी लिफ्ट में थी। दोनों ही थे। मुल्ला ने नमस्कार किया और कहा कि अगर दस हजार रुपए दूं तो एक रात मेरे साथ गुजारोगी? वह स्त्री एकदम नाराज हो गयी। उसने कहा, तुमने मुझे समझा क्या है? अभी लिफ्ट रोककर पुलिस को बुलाती हूं।
मुल्ला ने कहा, पुलिस वगैरह बुलाने की कोई जरूरत नहीं, बीस हजार दूंगा। महिला नरम हुई। मुल्ला ने कहा, जो मांगो——तीस, चालीस, पचास। गर्मी मुस्कुराहट में बदल गयी। स्त्री ने कहा: पचास! पचास हजार रुपए एक रात के! राजी हूं।
मुल्ला ने कहा: और अगर पच्चीस रुपए दूं तो? तो स्त्री फिर भन्ना गयी। कहा, जानते हो कि मैं कौन हूं? मुल्ला ने कहा, वह तो हमने तय कर लिया; जब पचास हजार में राजी हो गयी, तो वह तो तय हो गया कि तू कौन है, अब तो दाम तय कर रहे हैं। अब पुलिस—मुलिस को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है। पचास हजार में बिको या पच्चीस रुपए में बिको, क्या फर्क पड़ता है? वह तो तय हो गया कि तू कौन है? अब रह गयी दाम करने की बात, सो सौदा कर लें। सो आपस में निपटारा कर लें। पुलिस को बुलाने की क्या जरूरत है? पुलिस क्या करेगी इसमें?
मुल्ला ठीक कह रहा है। तुम भी सोचना, कितने में बिक जाओगे? कितनी तुम्हारी कीमत है? कितनी ही कीमत हो, जो बिक सकता है उसने अभी आत्मा को नहीं जाना, क्योंकि आत्मा की कोई कीमत ही नहीं है।
सारा संसार भी मिलता हो तो जिसने स्वयं को जाना है, वह बिकने को राजी नहीं हो सकता। यह सारा संसार रख दो तराजू के एक पलड़े पर और आत्मा को रख दो दूसरे पलड़े पर, तो भी आत्मा का तराजू ही भारी होगा।
-ओशो
राम दुवारे जो मरे--(प्रवचन--03)

CamScanner

# ओशो
# सहज-योग

मैं तुम्हें जितना बल दे रहा हूँ,
उतना तो किसी ने कभी नहीं दिया है।
बेशर्त तुमसे कह रहा हूँ कि तुम्हारे जीवन
में कुछ भी नहीं है, जिसके लिये तुम
अपराधी अनुभव करो। तुम्हें नर्क नहीं जाना है।
कहीं कोई नर्क नहीं है। तुम्हें जागना है;
और तुम पाओगे कि तुम स्वर्ग में हो!

CamScanner

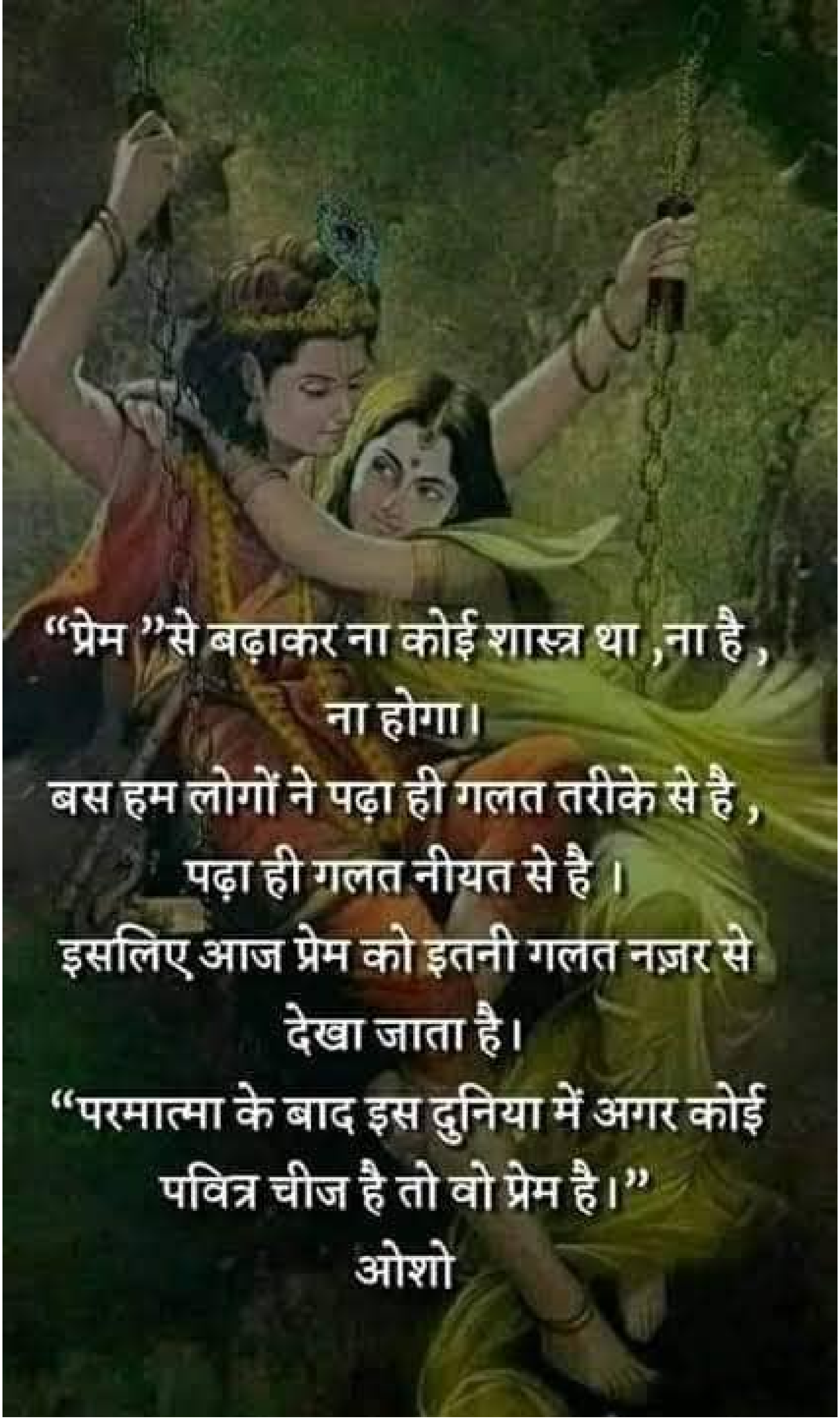
“प्रेम ”से बढ़ाकर ना कोई शास्त्र था ,ना है ,
ना होगा।
बस हम लोगों ने पढ़ा ही गलत तरीके से है ,
पढ़ा ही गलत नीयत से है ।
इसलिए आज प्रेम को इतनी गलत नज़र से
देखा जाता है।
“परमात्मा के बाद इस दुनिया में अगर कोई
पवित्र चीज है तो वो प्रेम है।”
ओशो

CamScanner

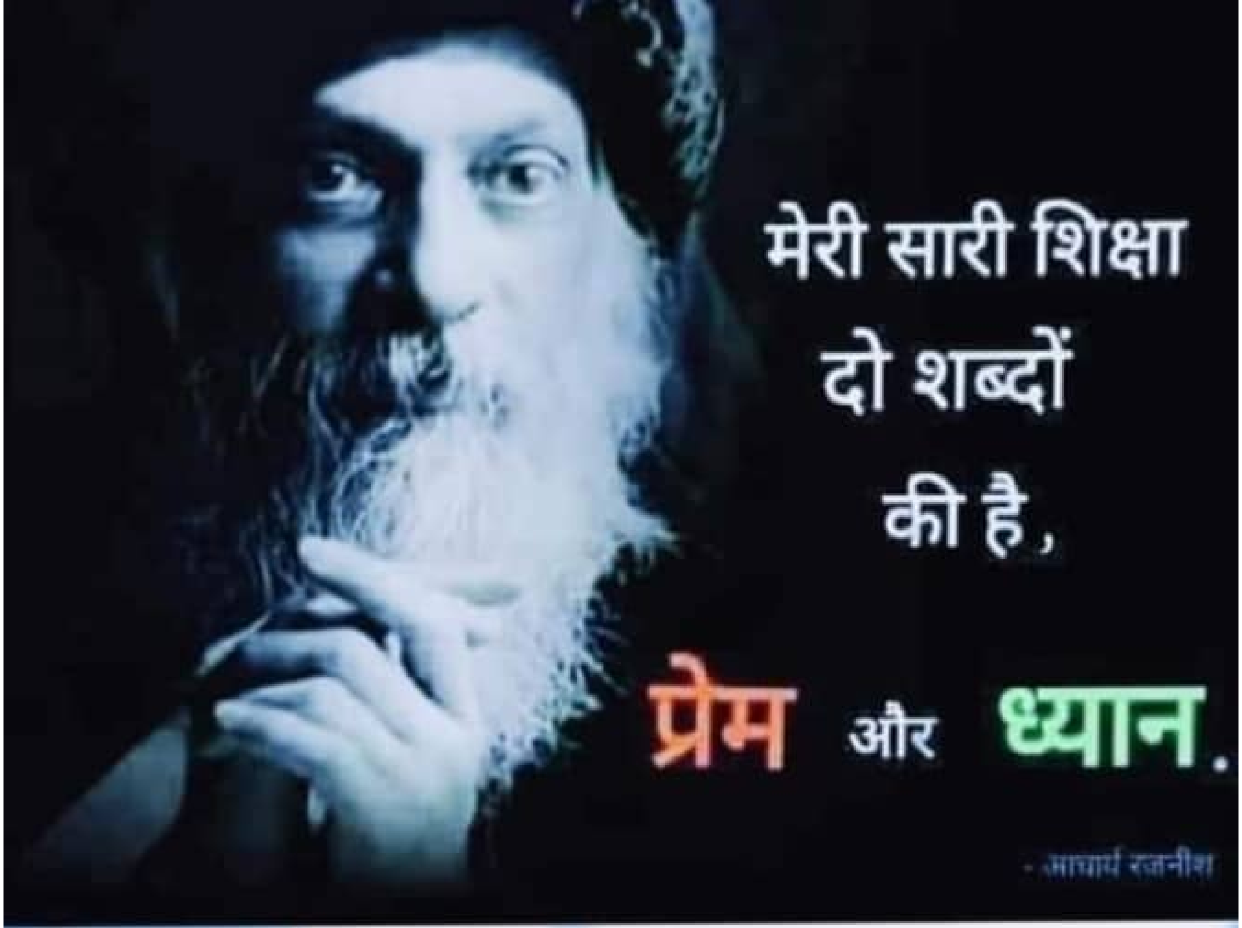
मेरी सारी शिक्षा
दो शब्दों
की है,
प्रेम और ध्यान.
- आचार्य रजनीश

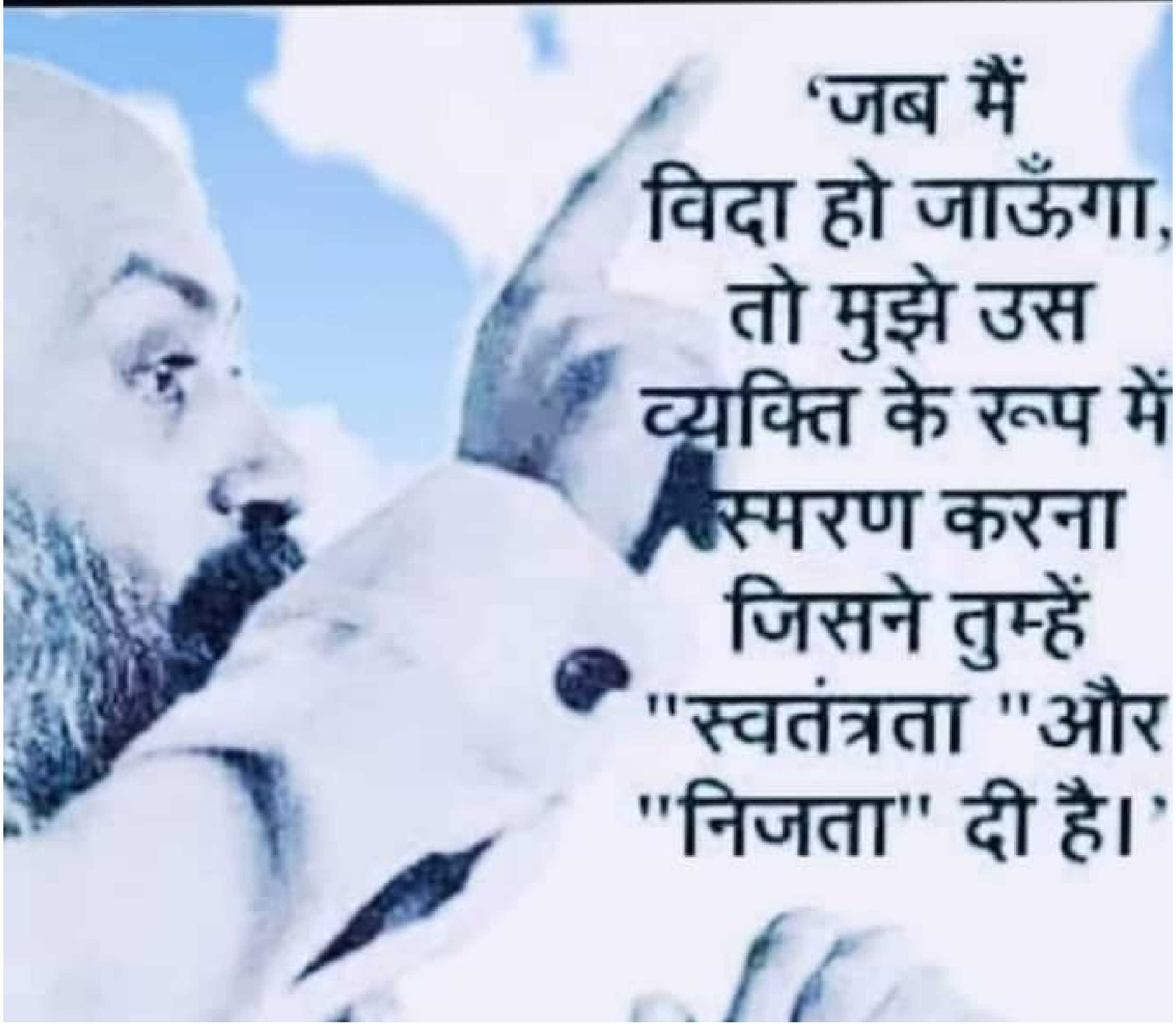
'जब मैं
विदा हो जाऊँगा,
तो मुझे उस
व्यक्ति के रूप में
स्मरण करना
जिसने तुम्हें
"स्वतंत्रता "और
"निजता" दी है।'

CamScanner

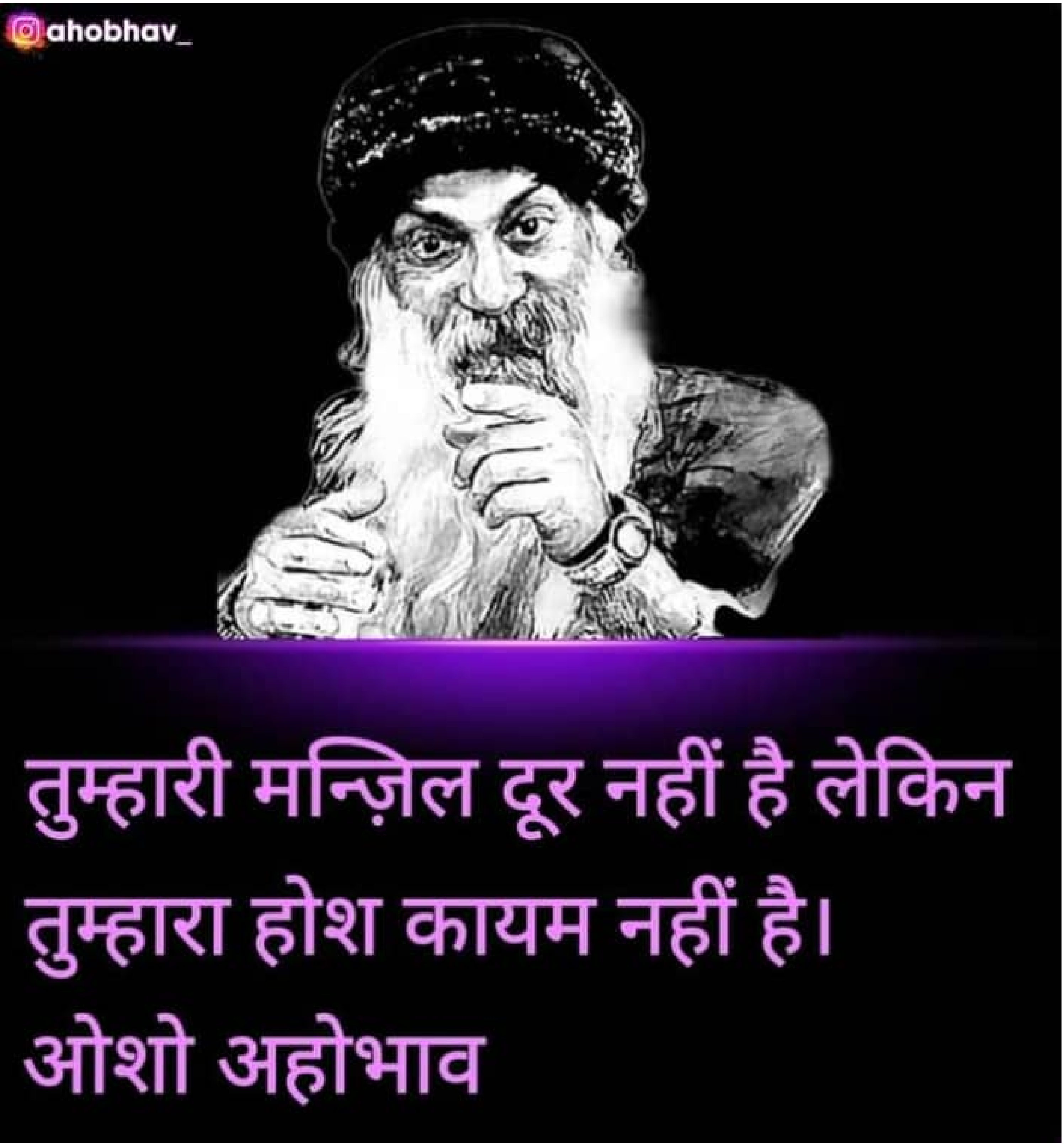


CamScanner

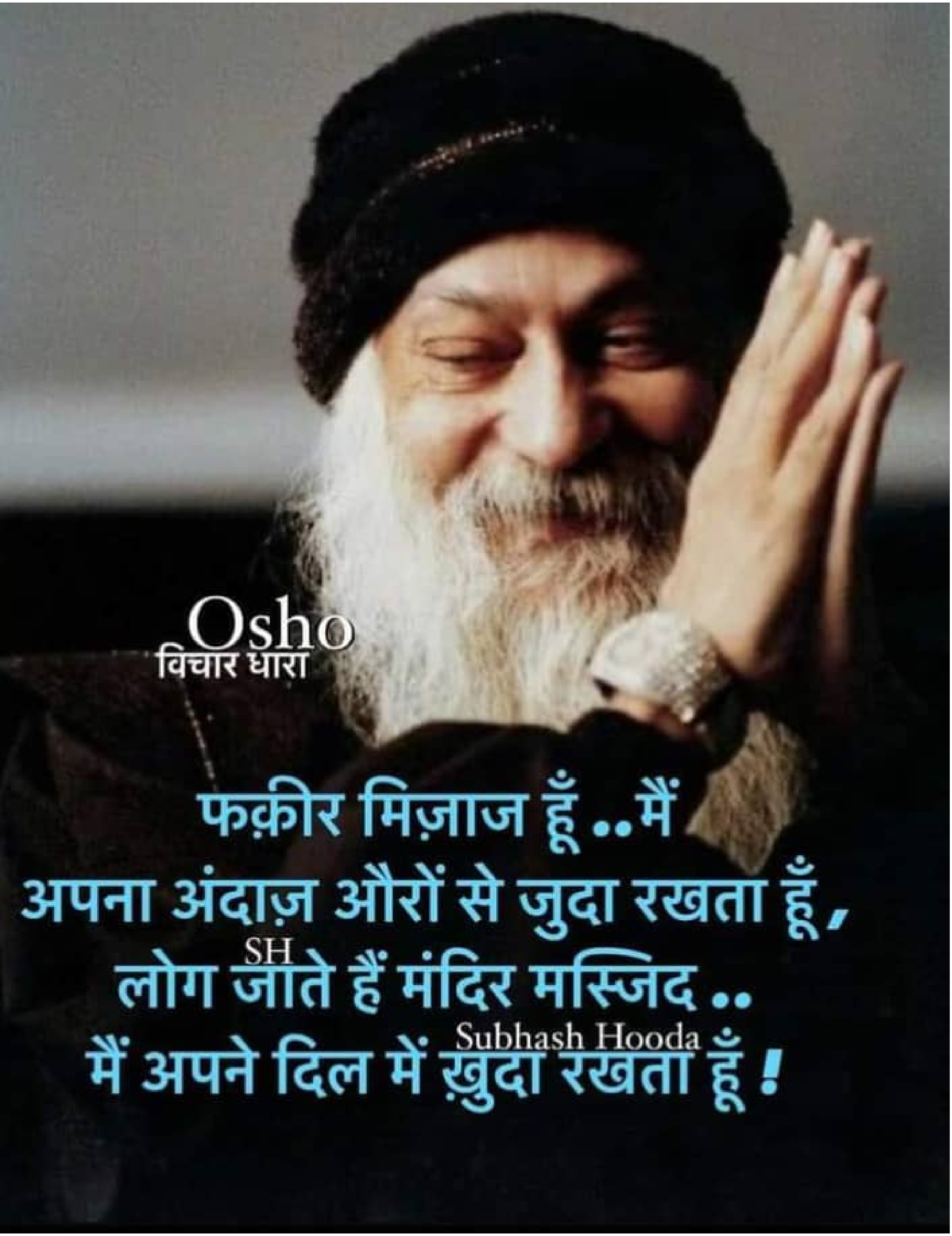
Osho
विचार धारा
फ़क़ीर मिज़ाज हूँ ..मैं
अपना अंदाज़ औरों से जुदा रखता हूँ,
SH
लोग जाते हैं मंदिर मस्जिद ..
Subhash Hooda
मैं अपने दिल में ख़ुदा रखता हूँ !

CamScanner

ओशो
गीता-दर्शन

ओशो
निर्वाण
समूह

अपरिग्रह का अर्थ है, वस्तुओं में रस नहीं है, इनफैचुएशन नहीं है। वस्तुएं हैं, उनका उपयोग ठीक है। हीरे की अंगूठी है, तो पहन लें; और नहीं है, तो नहीं। हीरे की अंगूठी है, तो ठीक; नहीं है, तो न होना ठीक। जिस दिन ये दोनों बातें एक-सी हो जाएं और खिलवाड़ हो जाए कि हीरे की अंगूठी हो, तो खेल है; और न हो, तो घास की अंगूठी भी बनाकर पहनी जा सकती है; और बिलकुल न हो, तो नंगी अंगुली का अपना सौंदर्य है। इतनी सरलता से चित्त चलता हो वस्तुओं के बीच में, तो अपरिग्रही चित्त है। भागा हुआ नहीं, वस्तुओं के बीच जीता हुआ। लेकिन रसमुक्त। उपयोग करता है, लेकिन आसक्त नहीं, विक्षिप्त नहीं, पागल नहीं है।

CamScanner

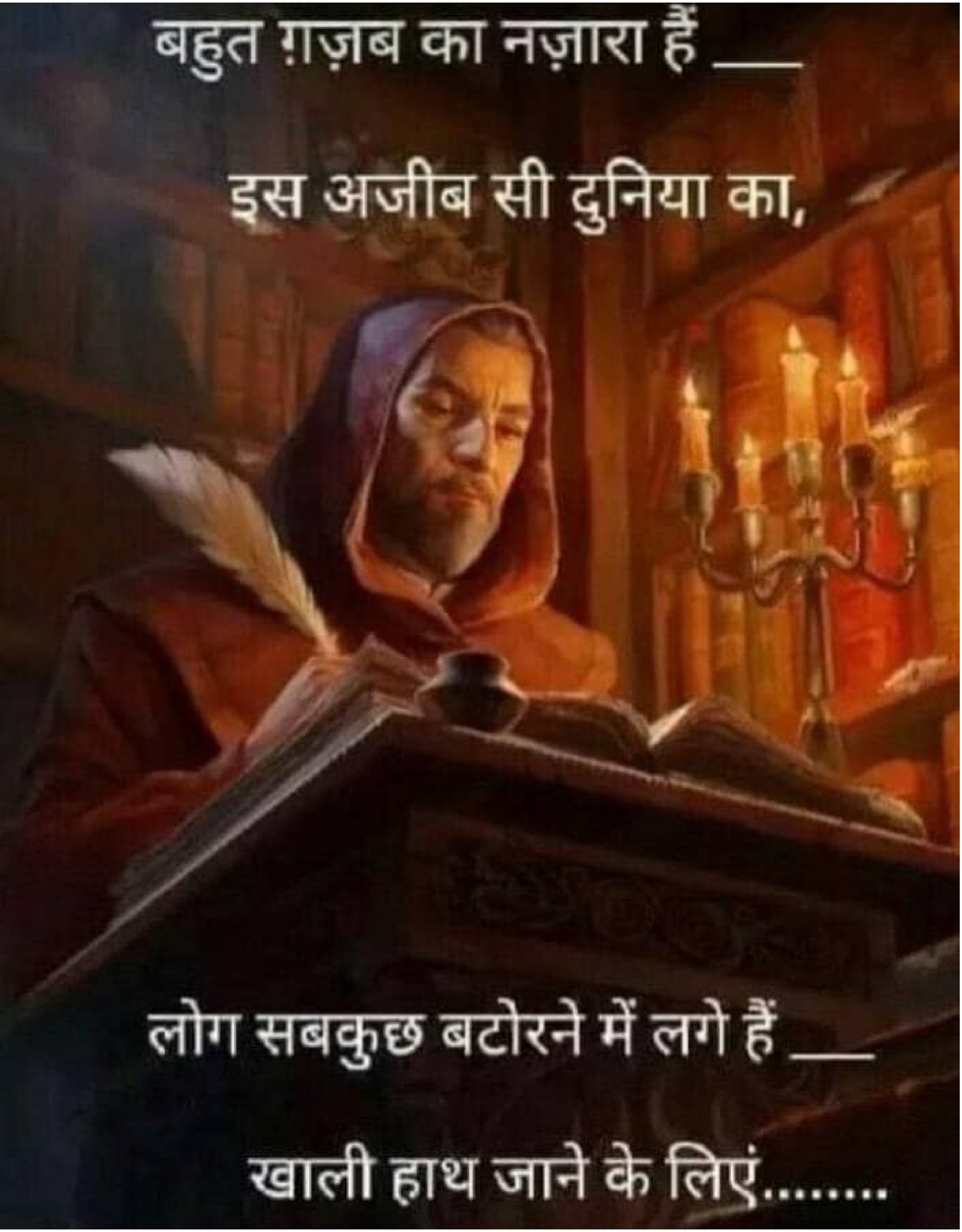


CamScanner

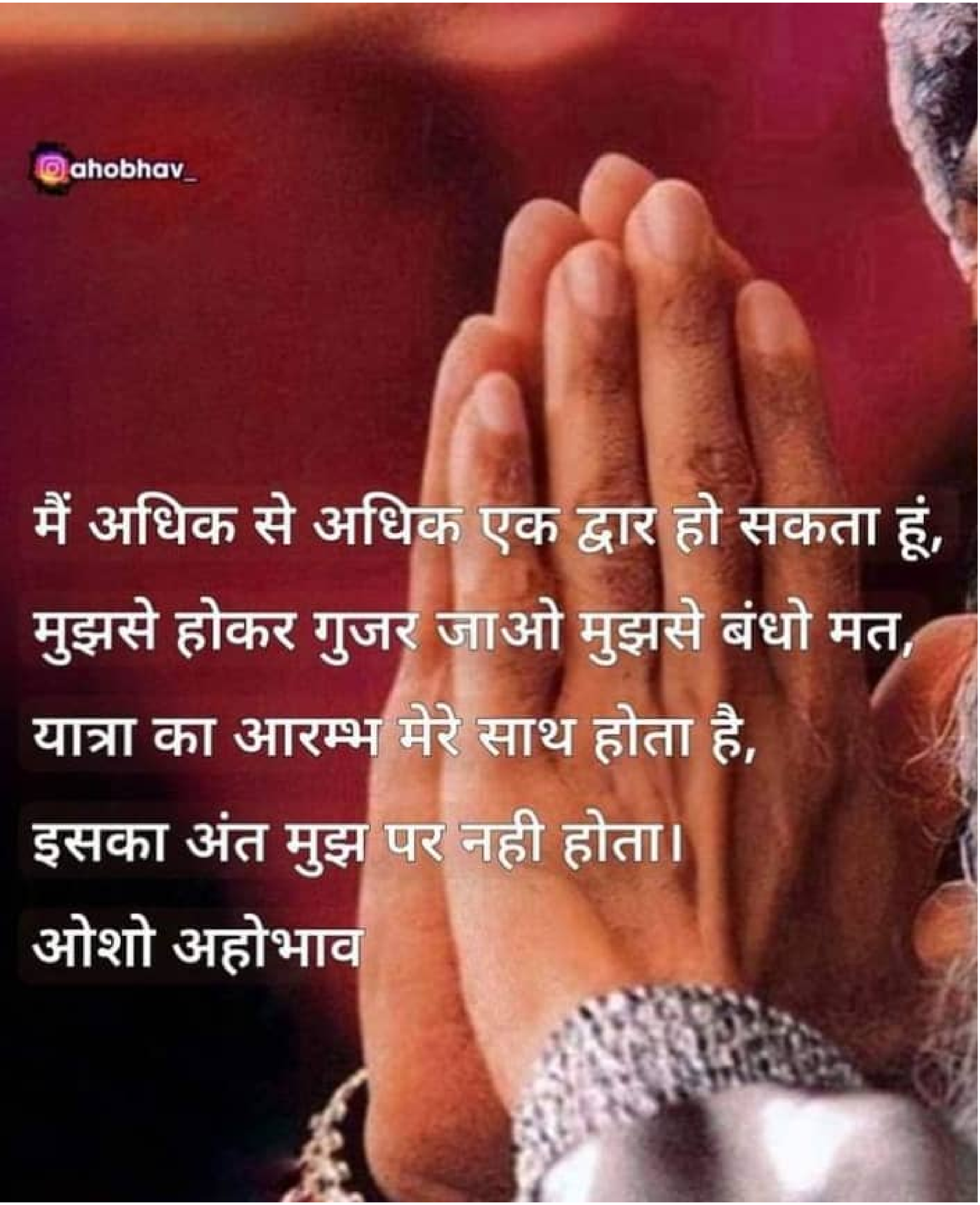
@ahobhav_
मैं अधिक से अधिक एक द्वार हो सकता हूं,
मुझसे होकर गुजर जाओ मुझसे बंधो मत,
यात्रा का आरम्भ मेरे साथ होता है,
इसका अंत मुझ पर नही होता।
ओशो अहोभाव

CamScanner

इस जगत में सदा ऐसे रहो,
जैसे अकेले हो।

ओशो।

CamScanner

4:22 pm 0 KB/s 65%

Sponsored ·

सहज योग ध्यान सीखें ऑनलाइन निशुल्क (Learn Sahaja Yoga Meditation Online No charges)I Whatsapp 7989128851 for more infoI हिन्दी/ English s... See more

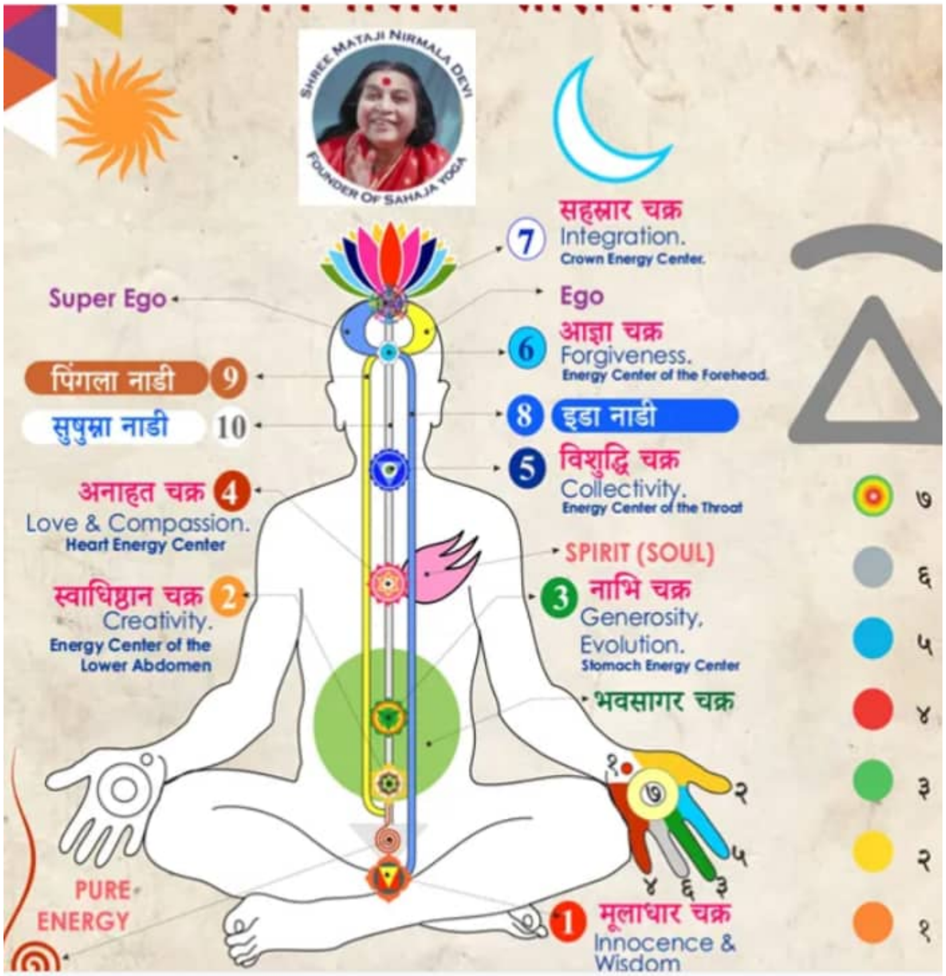


FORM ON FACEBOOK

**सहज योग ध्यान सीखें ऑनलाइन निशुल्क (Learn Sahaja Yoga Meditation Online No charges)I ...**

Sign up

19K 764 comments • 1.7K shares

Like Comment Share

**Reels and short videos** •••

CS CamScanner

4:21 pm 0 KB/s 4G 66%

सिर्फ परमात्मा ऐसी कोई खबर नहीं करता। नास्तिक कहते हैं, वह दिखाई पड़े, तो हम मान लें। नास्तिक कहते हैं कि वह भी हमारी ही तरह सूचना दे अपनी मौजूदगी की, तो हम मान लें।

नास्तिकों को पता नहीं कि परमात्मा के होने का गहरा गुण यही है कि वह न होने जैसा हो, उसका कोई पता न चले। जिस दिन परमात्मा का पता चल जाए, उस दिन वह भी परमात्मा न रहा। जिस दिन वह स्वयं अपनी घोषणा करने लगे, उस दिन वह भो परमात्मा न रहा। जिस दिन वह आकर आपकी गर्दन हिला कर आपको कहने लगे कि मैं यहां हूं, देखो, मैं यहीं हूं, तुम बिना देखे ही चले जा रहे हो,।उस दिन वह परमात्मा न रहा।

परमात्मा का अर्थ है कि जिसकी उपस्थिति-अनुपस्थिति में रंच मात्र का फर्क नहीं है। जिसके लिए एब्सेंस और प्रेजेंस, दोनों शब्द पर्यायवाची हैं, जिसके उपस्थित होने का ढंग ही अनुपस्थिति है।

तो लाओत्से कहता है, श्रेष्ठतम शासक वहीं है, जिसके होने की खबर भी प्रजा को न हो।

ईश्वर के सिवाय ऐसा कोई शासक नहीं है। इसलिए पुराने दिनों में, कम से कम लाओत्से के समय के, कोई दो-ढाई हजार वर्ष पहले, ईश्वर का अवतार सम्राट को मानते थे। अब तो ऐसा लगता है कि वह चालबाजी थी। अब दो-तीन सौ वर्षों में जो चिंतन चला है, उसने समझाया है कि यह सब शरारत थी, यह पुरोहितों और राजाओं का षडयंत्र था। बहुत दूर तक यह सही भी है; लेकिन पूरे रूप से सही नहीं है। कभी-कभी कोई राजा ऐसा भी हुआ है, जिसकी उपस्थिति का प्रजा को न के बराबर पता चला। तब उस राजा को लाओत्से जैसे लोगों ने ईश्वरीय कहा है; जिसके होने का पता ही न चला हो या कम से कम पता चला हो। इतना ही पता चला हो कि वह है, और कोई खबर न मिली हो।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷

🙏❤️🙏

CamScanner

4:20 pm 0 KB/s 66%

आसपेंस्की जाकर खड़ा हो गया। बड़ा अजीब परिचय का क्षण था। यह भी न पूछा--कैसे आए? यह भी न पूछा--कौन हैं? यह भी न कहा--बैठें, कृपा करें। सर्द रात थी। आसपेंस्की ने लिखा है कि माथे पर मेरे एक क्षण में पसीना झलकने लगा। यह मैं कहां आ गया हूं? वहां से वापस लौटने की हिम्मत भी न रही। वहां मैं जड़ की तरह खड़ा रह गया। कोई कहे कि बैठो, तो बैठ भी जाऊं। लेकिन वहां कोई देखता ही नहीं है। मिनट, दो मिनट...! आसपेंस्की ने लिखा कि पहली दफे मुझे समय का बोध हुआ कि समय कितनी भारी चीज है। मेरे सिर पर जैसे पहाड़ गुजरने लगा। क्या होगा अंत? जो आदमी दरवाजे पर छोड़ कर गया था, वह दरवाजा बंद करके लौट गया।क्या रात ऐसे ही बीतेगी? यह तो नरक हो गया। वे लोग इतने चुप और मूर्तिवत बैठे है कि अपनी तरफ से उस मौन को भंग करना भी अशिष्टता मालूम पड़ती है।आसपेंस्की ने लिखा कि मैं बिलकुल नाचीज मालूम पड़ने लगा, जैसे मैं कुछ भी नहीं हूं।

कोई पंद्रह मिनट यह हालत रही। तब गुरजिएफ ने चेहरा ऊपर उठा कर देखा और कहा, पसीना पोंछ लो, रात ऐसे ही बहुत सर्द है; बैठ जाओ। हमने जान कर ही यह किया। हम जानना चाहते थे कि तुम कैसे व्यक्ति हो। क्या तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी उपस्थिति अनुभव करें। क्योंकि हम इसे हिंसा मानते हैं। तुम पंद्रह मिनट भी बर्दाश्त न कर सके। तुम पंद्रह मिनट भी ऐसे न हो सके, जैसे मौजूद ही न हो! अगर तुम ऐसे हो सकते, तो फिर मेरे पास तुम्हें सिखाने को कुछ भी नहीं था। लेकिन तुम ऐसे नहीं हो सके, तो मुझे तुम्हें सिखाने को बहुत कुछ है। तुम हिंसक हो।

हम हिंसा बहुत तरह से करते हैं। प्रकार अनेक हो सकते हैं। एक आदमी ऐसे वस्त्र पहन कर या ऐसी चाल-ढाल से आ जाता है कि आपको देखना ही पड़े। हर आदमी शोरगुल करता आता है, चाहे कितना ही चुप आ रहा हो। हर आदमी धक्का देता आता है, चाहे कितना ही धक्कों से बचता आ रहा हो। हर आदमी खबर लाता है कि मैं आ गया हूं।

सिर्फ परमात्मा ऐसी कोई खबर नहीं करता। नास्तिक कहते हैं, वह

CamScanner

लाओत्से कहता है, सर्वश्रेष्ठ शासक वह है, जिसके होने का पता ही शासितों को न चले।

शायद परमात्मा के अतिरिक्त ऐसा और कोई शासक नहीं है। पर उसका हमें पता नहीं चलता। खोजें, तो भी पता नहीं चलता। अगर पता लगाने जाएं हिमालय में या काशी, मक्का, मदीना भटकें, तो भी पता नहीं चलता।

थोड़ा खयाल करें। आपके मन की एक इच्छा होती है कि आप जहां भी जाएं, वहां लोगों को पता चले कि आप आए हैं। कितना उपाय नहीं करते हैं हम इसका कि लोगों को पता चले कि आप आ गए। आप इस भवन में आएं और किसी को पता न चले, तो आप बड़े पीड़ित हो जाएंगे।

आसपेंस्की पहली दफा जब गुरजिएफ को मिलने गया, तो बीस लोग बैठे थे। आसपेंस्की बड़ा बुद्धिमान, गणितज्ञ और वैज्ञानिक चिंतक था--अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध। गुरजिएफ को कोई जानता भी नहीं था। किसी अचेतन मन में आसपेंस्की ने सोचा होगा: गुरजिएफ उठ कर मिलेगा, तो जो लोग बैठे होंगे, चमत्कृत होंगे कि आसपेंस्की जैसा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का व्यक्ति अनजान गुरजिएफ से मिलने आया है! वहां गुरजिएफ के सिवा बीस लोग और बैठे थे। आसपेंस्की जब भीतर गया, तो हैरान हुआ क्योंकि ऐसा मरा हुआ कमरा उसने कभी देखा ही नहीं था। उन बीस में से कोई भी नहीं हिला, किसी ने आंख भी उसकी तरफ न की। उन बीस ने जैसे जाना ही नहीं कि कोई आया। गुरजिएफ भी वैसा ही बैठा रहा, जैसा बैठा था।

आसपेंस्की जाकर खड़ा हो गया। बड़ा अजीब परिचय का क्षण था। यह भी न पूछा--कैसे आए? यह भी न पूछा--कौन हैं? यह भी न कहा--बैठें, कृपा करें। सर्द रात थी। आसपेंस्की ने लिखा है कि माथे पर मेरे एक क्षण में पसीना झलकने लगा। यह मैं कहां आ गया हूं? वहां से वापस लौटने की हिम्मत भी न रही। वहां मैं जड़ की तरह खड़ा रह गया। कोई कहे कि बैठो, तो बैठ भी जाऊं। लेकिन वहां कोई देखता ही नहीं है। मिनट, दो मिनट...। आसपेंस्की ने लिखा

CamScanner

CamScanner

2:45 pm 0 KB/s 74%

68 6 comments

Like Comment Send

**ओं'शो मित्र मंडली**

Sarika Agarwal · 4d ·

मन के पास ज़बाब नहीं है,
मन केवल सवालों से भरा पड़ा है।
ध्यान सभी सवालों का ज़बाब हैं।
ओशो नमन सभी को 😊🙏🌹

CS CamScanner

एक लाख पुत्र सवा लाख नाती
ता रावण के घर दिया न बाती
दहन पुतलो का ही नहीं,
बुरे विचारो का करना चाहिए।
शुभरात्रि
🙏🙏🌹🌹

8
1 comment
Like Comment Share

CamScanner

अपनी सारी ऊर्जा को ध्यान पर केंद्रित कर दो। मौन हो जाओ,मन के पर्दे पर अपने विचारों को चलते हुए देखो। देखने मात्र से ही एक वे विलीन हो जाएंगे। जल्दी न करो। इन दो महत्वपूर्ण शब्दों को स्मरण रखो : देखना और प्रतीक्षा करना। जब कभी भी समय आएगा, तुम्हारा देखना पूर्ण होगा, विचार विलीन हो जाएंगे। और उनकी विलीनता का अर्थ है संपूर्ण अस्तित्व का खुल जाना।

CamScanner

@oshojokeshindi
इत्र, मित्र, चित्र और चरित्र
किसी की पहचान के मोहताज नहीं।
ये चारों अपना परिचय स्वयं देते है।

CamScanner

2:43 pm 2 KB/s 75%

नहीं हुआ।

हम तो आमतौर से कहेंगे कि अगर कृष्ण शांतिवादी हैं, तो युद्ध में कदम नहीं रखना चाहिए। और अगर युद्धवादी हैं, तो फिर परमात्मा और दिव्यता और ब्रह्म, इनकी बात नहीं करनी चाहिए। दो में से कुछ एक साफ चुन लो।

हम तो कहते हैं, अगर कृष्ण कहते हैं, अनासक्ति ही जीवन का सूत्र है, तो यह गोपियों के बीच नृत्य इनकसिस्टेंट है, असंगत है। यह नहीं चलना चाहिए। यह बंद होना चाहिए। और अगर यह गोपियों के बीच नृत्य ही चलना है और यह बांसुरी ही बजनी है, और यह मोर-मुकुट बांधकर नाचना ही है, तो फिर अनासक्ति और योग और समाधि और ब्रह्म, इसकी चर्चा बंद कर देनी चाहिए। दो में से कुछ साफ चुन लो।

और कृष्ण कहते हैं, हम चुनेंगे ही नहीं। इसलिए कृष्ण बहुत बेबूझ हैं, बहुत रहस्यमय हैं। गणित की तरह साफ-सुथरे नहीं हैं, काव्य की तरह रहस्यमय हैं। तर्क की तरह कटे-बंटे नहीं हैं, प्रेम की तरह बहुत रहस्यपूर्ण हैं। दोनों हैं एक साथ। और दोनों नहीं हैं। योग-युक्त होने का यही अर्थ है।

इसलिए हम कृष्ण को महायोगी कह सके। महायोगी कहने का कारण है, और वह कारण यह है कि कृष्ण शायद पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने दोनों अतियों के बीच में-ठीक बीच में-खड़े होने की व्यवस्था दी है। अगर हम ठीक बीच में भी खड़े हों, तो थोड़ा-सा मन डांवाडोल होता है। अगर हम बीच में भी खड़े हों, तो हम इसीलिए खड़े होना चाहते हैं कि संसार से कैसे मुक्त हो जाएं! अगर संसार से कैसे मुक्त हो जाएं, यही भीतर लगा हुआ है, तो आप थोड़े-से झुके हुए खड़े होंगे, बीच में खड़े नहीं हो सकते हैं।

☘️💞☘️ओशो ☘️💞☘️
गीता-दर्शन – भाग 4
तत्वज्ञ—कर्मकांड के पार—अध्याय—8 – प्रवचन—ग्यारहवां

CS CamScanner

🌹अनासक्ति ही जीवन का सूत्र है🌹

हम सदा ही परमात्मा को संसार के विपरीत रखते हैं। हम सदा ही मोक्ष को संसार के विपरीत रखते हैं। हम सदा यही सोचते हैं कि संसार को छोड़ना है और परमात्मा को पाना है। हमारे मन में परमात्मा भी एक अपोजिट है, एक विपरीतता है, संसार के विपरीत। जो संसार से ऊब गया, वह कहता है, अब तो मुझे परमात्मा को पाना है। संसार के विपरीत हम परमात्मा के वैपरीत्य को खड़ा करते हैं, एक पोलर अपोजिट की तरह। एक आदमी कहता है, अब धन तो बहुत कर लिया, अब धर्म करना है।

लेकिन परमात्मा विपरीत नहीं है। और जिसका परमात्मा संसार के विपरीत है, उसका परमात्मा सांसारिक ही होगा। और जिसका परमात्मा संसार से उलटा है, उसका परमात्मा संसार के बाहर नहीं है, विदिन दि पोलर अपोजिट, वह जो विपरीत है, उसके भीतर ही है। वह भी संसार की एक अति है।

इसलिए कृष्ण का जीवन बहुत अदभुत है। कृष्ण का जीवन उन थोड़े-से जीवन में से एक है, जो संसार के विरोध में नहीं हैं। कृष्ण का जीवन विरागी का जीवन नहीं है, और कृष्ण का जीवन रागी का जीवन भी नहीं है। और कृष्ण वहीं खड़े हैं, जहां सब रागी खडे रहते हैं। और कृष्ण ऐसे खड़े हैं, जैसे विरागी खड़े रहते हैं। कृष्ण का जीवन, दो विपरीत के बीच मध्य की खोज है। इतना मध्यस्थ व्यक्ति पृथ्वी पर शायद ठीक दूसरा नहीं हुआ।

हम तो आमतौर से कहेंगे कि अगर कृष्ण शांतिवादी हैं, तो युद्ध में कदम नहीं रखना चाहिए। और अगर युद्धवादी हैं, तो फिर परमात्मा और दिव्यता और ब्रह्म, इनकी बात नहीं करनी चाहिए। दो में से कुछ एक साफ चुन लो।

हम तो कहते हैं, अगर कृष्ण कहते हैं, अनासक्ति ही जीवन का सूत्र है, तो यह गोपियों के बीच नृत्य इनकसिस्टेंट है, असंगत है। यह नहीं चलना चाहिए। यह बंद होना चाहिए। और अगर यह गोपियों के बीच नृत्य ही चलना है और यह बांसुरी ही बजनी है, और यह मोर-मुकुट बांधकर

CamScanner

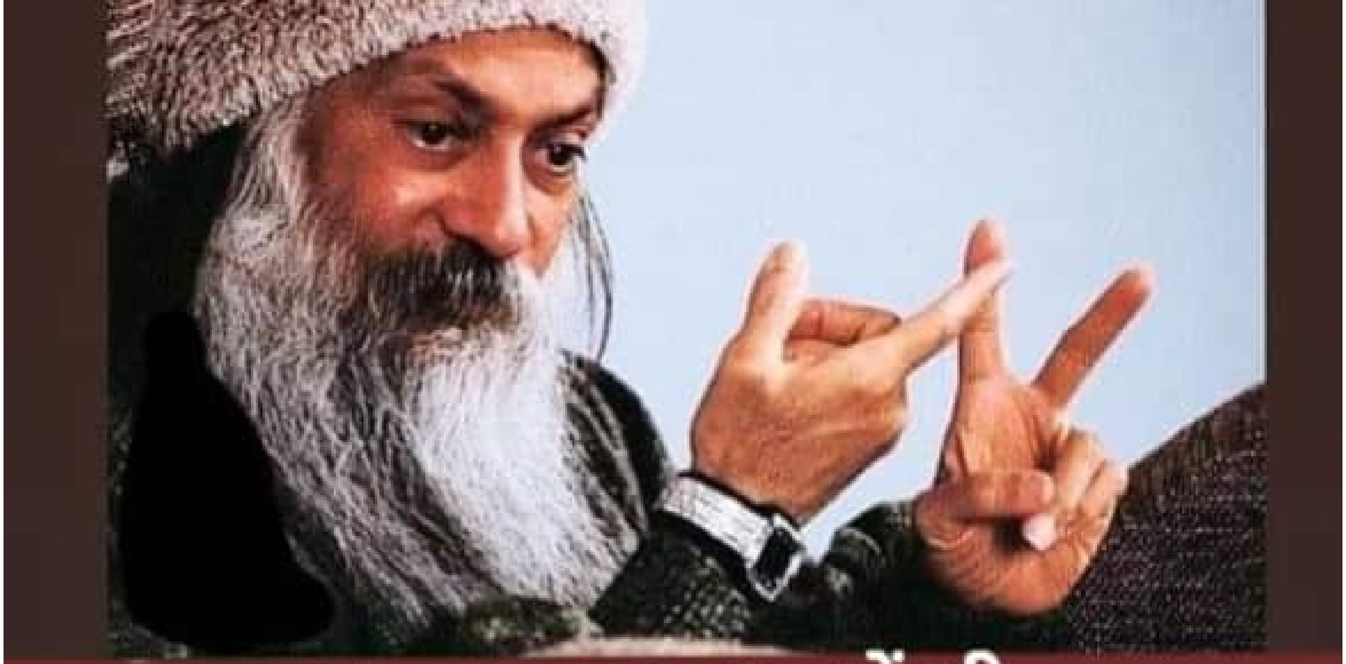

परमात्मा पत्थर में भी
छुपा हुआ है, इसीलिए तो
हमने पत्थर की मूर्तियां
बनायीं..
पत्थर की मूर्तियां बनाने
का राज यही है,,
मगर आदमी! अजीब है.
"पत्थर की मूर्तियां..
बनाकर तो पूज लेता है,
मगर आदमी में ईश्वर हो
सकता है? ये नहीं मान
सकता.!!

ओशो

CS CamScanner

बीस वर्ष की आयु में व्यक्ति का जो चेहरा रहता है, वह प्रकृति की देन है, तीस वर्ष की आयु का चेहरा जिंदगी के उतार-चढ़ाव की देन है लेकिन पचास वर्ष की आयु का चेहरा व्यक्ति की अपनी कमाई है। - अष्टावक्र

CamScanner

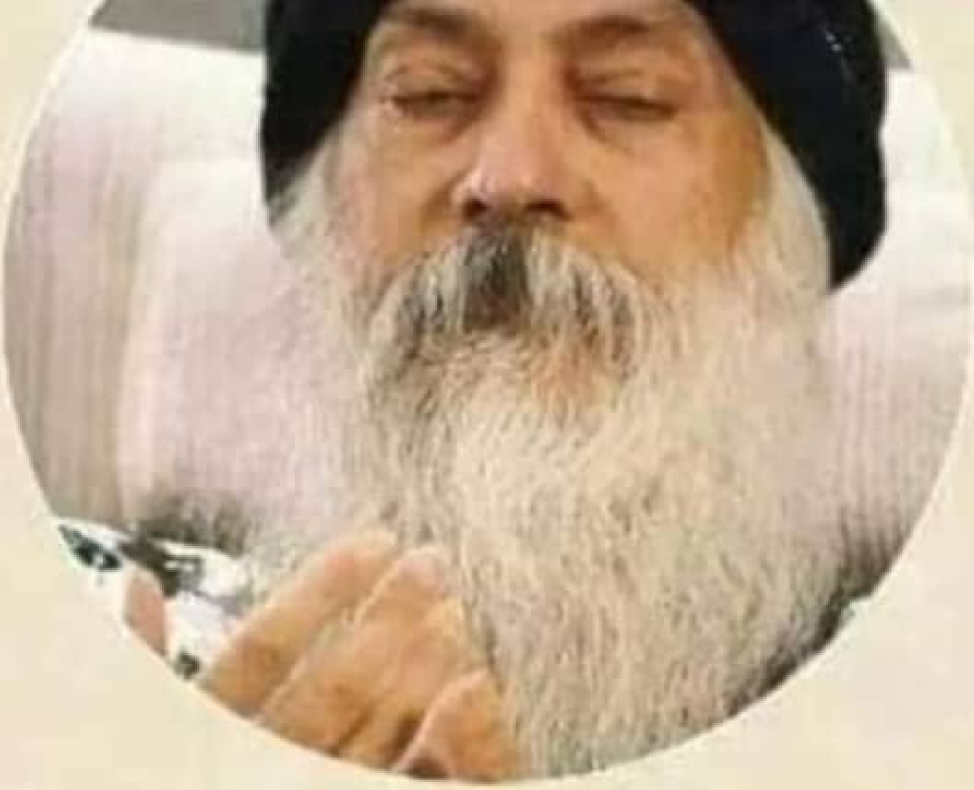

एक बात स्मरण रहे : जब भी तुम्हें लगे कि कोई चीज गलत है तो पहले उसका कारण अपने भीतर खोजो, और कहीं मत जाओ। सौ में निन्यानबे मौकों पर तुम्हें अपने भीतर ही कारण मिल जाएगा। और जब सौ में निन्यानबे कारण तुम्हारे भीतर होंगे तो सौवां कारण अपने आप ही विदा हो जाएगा। तुम्हें जो कुछ होता है उसका कारण तुम स्वयं हो। तुम कारण हो; संसार तो बस दर्पण है।

OSHO SGB

CamScanner

CS CamScanner

(काम)
(क्रोध)
(लोभ)
(मोह)
(अहंकार)
(हठ)
(ईर्ष्या)
(द्वेष)
(आलस्य)
(छल)
अपने अंदर के इन दस रूपी रावण
को हराकर इस पर विजय प्राप्त
कर विजयदशमी पर्व मनाए...

CamScanner

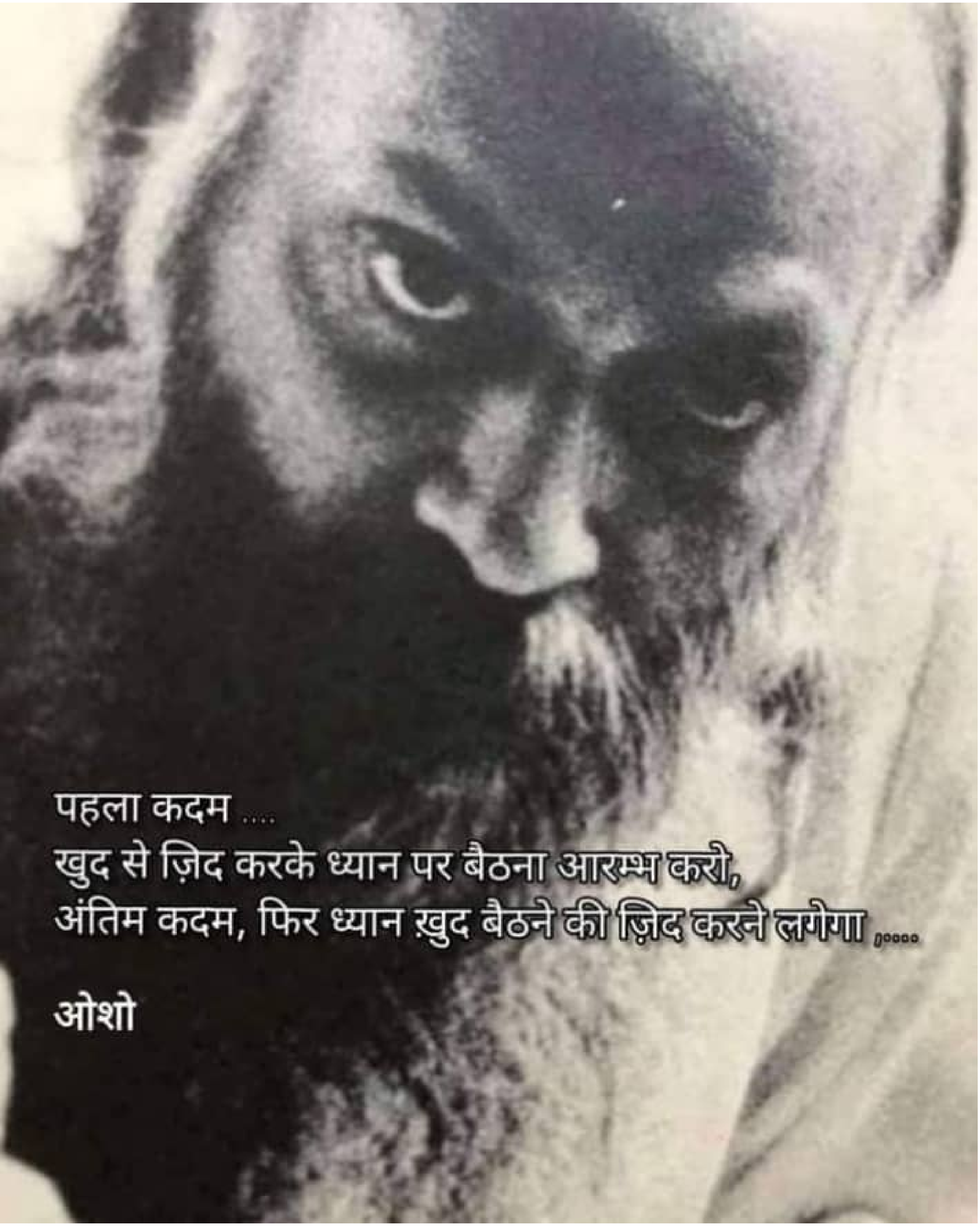
पहला कदम .....
खुद से ज़िद करके ध्यान पर बैठना आरम्भ करो,
अंतिम कदम, फिर ध्यान ख़ुद बैठने की ज़िद करने लगेगा ,....
ओशो

CamScanner

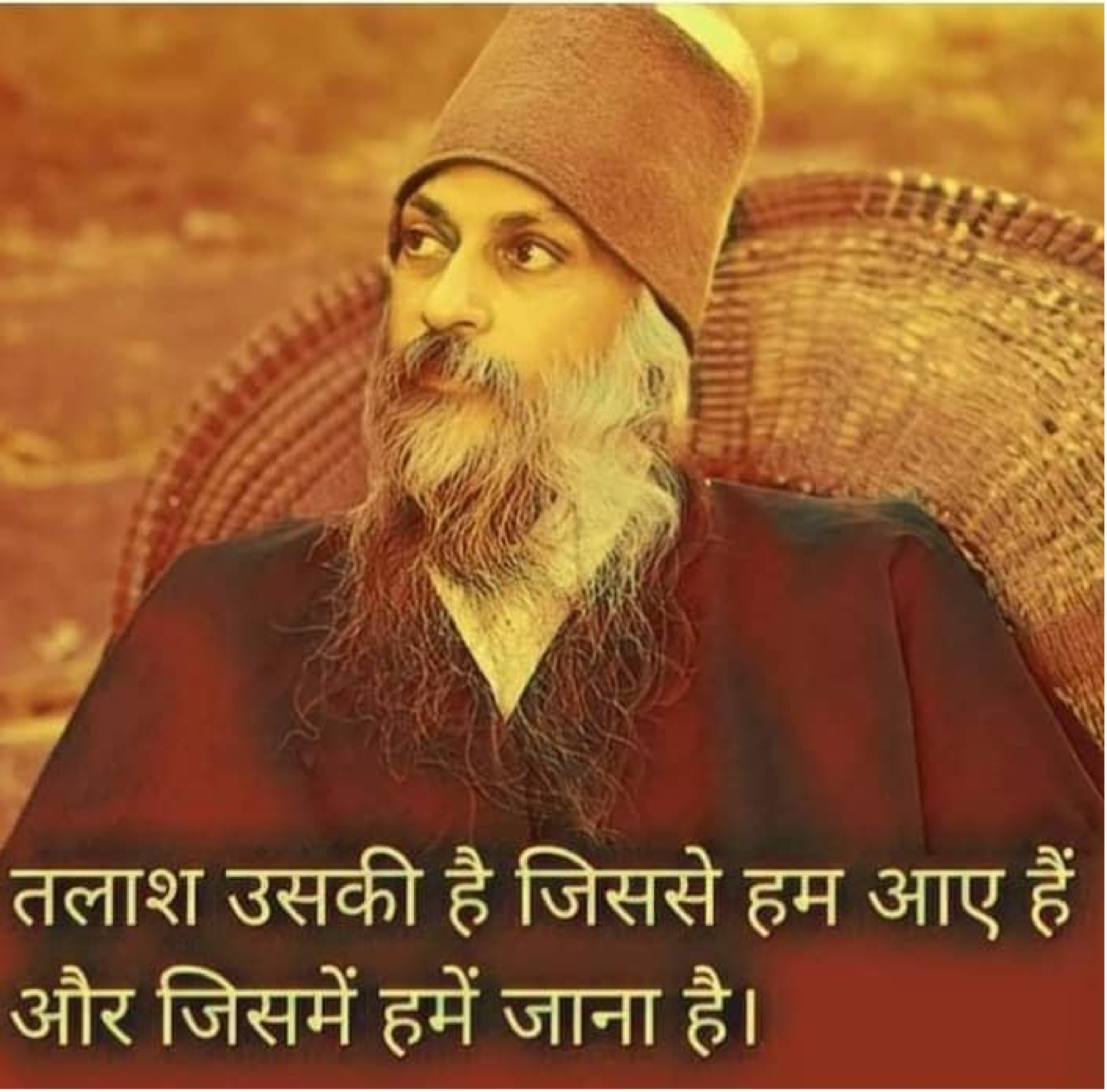


CamScanner

दुख को छोड़ने
को सभी तैयार हैं।
जो ध्यान में
जाना चाहते हैं,
वे भी इसी लिए
जाना चाहते हैं कि

दुख छूट जाए और सुख मिल जाए।

लेकिन आपको
साफ हो जाना चाहिए:
ध्यान में जैसे ही प्रवेश करेंगे,
सुख-दुख दोनों ही छूट जाते हैं।
और जो उपलब्धि होती है
वह सुखकी नहीं है,
परम शांति की है।

ओशो ध्यान के कमल

CamScanner

2:34 pm 0 KB/s 76%

अगर हम एक ऐसे आदमी की कल्पना करें, जिसके पास बड़ा महल है, लेकिन सामान इतना है कि भीतर जाने का उपाय नहीं है, तो बाहर बरामदे में ही निवास करता है। हम सब वैसे ही आदमी हैं। मन तो इतना भरा है कि वहां आत्मा के रहने की जगह नहीं हो सकती, बाहर ही भटकना पड़ता है। जब भी भीतर जाएंगे, तो आत्मा नहीं मिलेगी, मन ही मिलेगा। कोई विचार, कोई वृत्ति, कोई वासना मिलेगी। क्योंकि इतना भरा है सब। घर के भीतर जाते हैं, तो फर्नीचर तो मिलता है, मालिक नहीं मिलता।

लाओत्से कहता है, जो ज्ञानी हैं, वे कहते हैं, शरीर तो भरा-पूरा हो, पुष्ट हो, मन खाली हो। मन ऐसा हो, जैसे है ही नहीं। और लाओत्से कहता है, मन के खाली होने का अर्थ है, अ-मन हो, नो माइंड हो, जैसे है ही नहीं। जैसे मन की कोई बात ही नहीं है भीतर। उस खाली मन में ही जीवन की परम कला का आविर्भाव होता है और जीवन के परम दर्शन होने शुरू होते हैं।

ताओ उपनिषाद-प्रवचन-010

CamScanner

2:34 pm 0 KB/s 76%

लेकिन हम सब मन को बहुत भर लेते हैं। हमारी पूरी जिंदगी मन को भरने की कोशिश है। विचारों से, वासनाओं से, महत्वाकांक्षाओं से मन को हम भरते चले जाते हैं। धीरे-धीरे शरीर तो हमारा बहुत छोटा रह जाता है, मन बहुत बड़ा हो जाता है। शरीर तो सिर्फ घसिटता है मन के पीछे।
लाओत्से कहता है, मन तो हो खाली! लाओत्से ने जगह-जगह जो उदाहरण लिए हैं, वे ऐसे हैं। लाओत्से कहता है कि जैसे बर्तन होता खाली। किस चीज को आप बर्तन कहते हैं? लाओत्से बार-बार पूछता है, किस चीज को बर्तन कहते हैं? बर्तन की दीवार को या उसके भीतर के खालीपन को?

आमतौर से हम बर्तन की दीवार को बर्तन कहते हैं। लाओत्से कहता है, दीवार तो बिलकुल बेकार है। वह जो भीतर खाली जगह है, वही काम में आती है। भरे हुए बर्तन को तो कोई न खरीदेगा।

मकान आप दीवार को कहते हैं कि दीवार के भीतर जो खाली जगह है उसको? हम आमतौर से मकान दीवारों को कहते हैं। और जब हम मकान बनाने की सोचते हैं, तो दीवारें बनाने की सोचते हैं। लाओत्से कहता है, बड़ी उलटी तुम्हारी समझ है। मकान तो वह है, जो दीवारों के भीतर खाली जगह है। क्योंकि कोई आदमी दीवारों में नहीं रहता, खाली जगह में रहता है। और यह खाली जगह अगर भरी हो, तो मकान बेकार है।

तो शरीर तो सिर्फ दीवार है। वह तो मजबूत होनी चाहिए। वह भीतर जो मन है, वही महल है, वह खाली होना चाहिए। और उस महल के भीतर भी जो मनुष्य की चेतना है, आत्मा है, वह निवासी है। अगर मन खाली हो, तो ही वह निवासी ठीक से रह पाए, तो ही स्पेस और जगह होती है। मन अगर बहुत भर जाता है, तो अक्सर हालत ऐसी होती है कि मकान तो आपके पास है, लेकिन इतना कबाड़ से भरा है कि आप मकान के बाहर ही सोते हैं, बाहर ही रहते हैं। क्योंकि भीतर जगह नहीं है।

अगर हम एक ऐसे आदमी की कल्पना करें, जिसके पास बड़ा महल है, लेकिन सामान इतना है कि भीतर जाने का रास्ता नहीं है, तो

CamScanner

2:33 pm 0 KB/s 4G 77%

लाओत्से का एक शिष्य च्वांगत्से मरने के करीब था। अंतिम क्षणों में उसके मित्रों ने पूछा, तुम्हारी कोई इच्छा है? तो उसने कहा, एक ही इच्छा है मेरी कि इस पृथ्वी पर मैं पैरों के बल खड़ा था, उस परलोक में मैं सिर के बल खड़ा होना चाहता हूं। शिष्य बहुत परेशान हुए। और उन्होंने कहा, हमारी कुछ समझ में नहीं आता। क्या आप परलोक में उलटे खड़े होना चाहते हैं? तो च्वांगत्से ने कहा, जिसे तुम सीधा खड़ा होना कहते हो, उसे इतना उलटा पाया कि आने वाले जीवन में उलटा खड़े होकर प्रयोग करना चाहता हूं, शायद वही सीधा हो।

लाओत्से की यह बात कि जो जानते हैं, जो जागे हुए हैं, वे अपनी शासन-व्यवस्था में लोगों के पेटों को तो भरते हैं, उदर को तो भरते हैं, उनकी भूख को तो पूरा करते हैं, लेकिन उनके मन को शून्य करते हैं। उनकी शरीर की तो सारी जरूरतें पूरी हों, इसका ध्यान रखते हैं; लेकिन उनका मन महत्वाकांक्षी न बने, इस दिशा में प्रयास करते हैं।

साधारणतः हम शरीर कितना ही कटे, कट जाए; गले, गल जाए; शरीर को कुर्बान करना पड़े, हो जाए; लेकिन मन की आकांक्षा पूरी हो, मन की वासनाएं पूरी हों। और मन की वासनाओं की वेदी पर हम शरीर को चढ़ाने को सदा तत्पर हैं, चढ़ाते हैं। हमारा पूरा जीवन मन की वासनाओं को पूरा करने में शरीर की हत्या है। और साधारणतः इसे ही हम बुद्धिमानी कहेंगे। लेकिन लाओत्से कहता है कि पेट तो लोगों के भरे हुए हों, लेकिन मन खाली।

मन के खाली होने का क्या अर्थ है? और पेट के भरे होने का क्या अर्थ है? लोग शरीर से तो स्वस्थ हों, शरीर तो उनका भरा-पूरा हो, शरीर तो उनका बलशाली हो, लेकिन मन उनका बिलकुल कोरा, खाली, शून्य, एम्पटी हो। और परम स्वास्थ्य की अवस्था वही है, जब शरीर भरा होता और मन खाली होता।

लेकिन हम सब मन को बहुत भर लेते हैं। हमारी पूरी जिंदगी मन को भरने की कोशिश है। विचारों से, वासनाओं से, महत्वाकांक्षाओं से मन को हम भरते चले जाते हैं। धीरे-धीरे शरीर तो हमारा बहुत

CamScanner

आनंदित होने के तीन सूत्र:-

. आनंद को अभी इसी क्षण खोजो, कल पर मत ढालो !

. आनंद आपके भीतर है, इसे किसी दूसरे में ना खोजो

. जब भी आपको दुख मिले, तो उसे साक्षी बनकर दूर से देखो !

ओशो

CS CamScanner

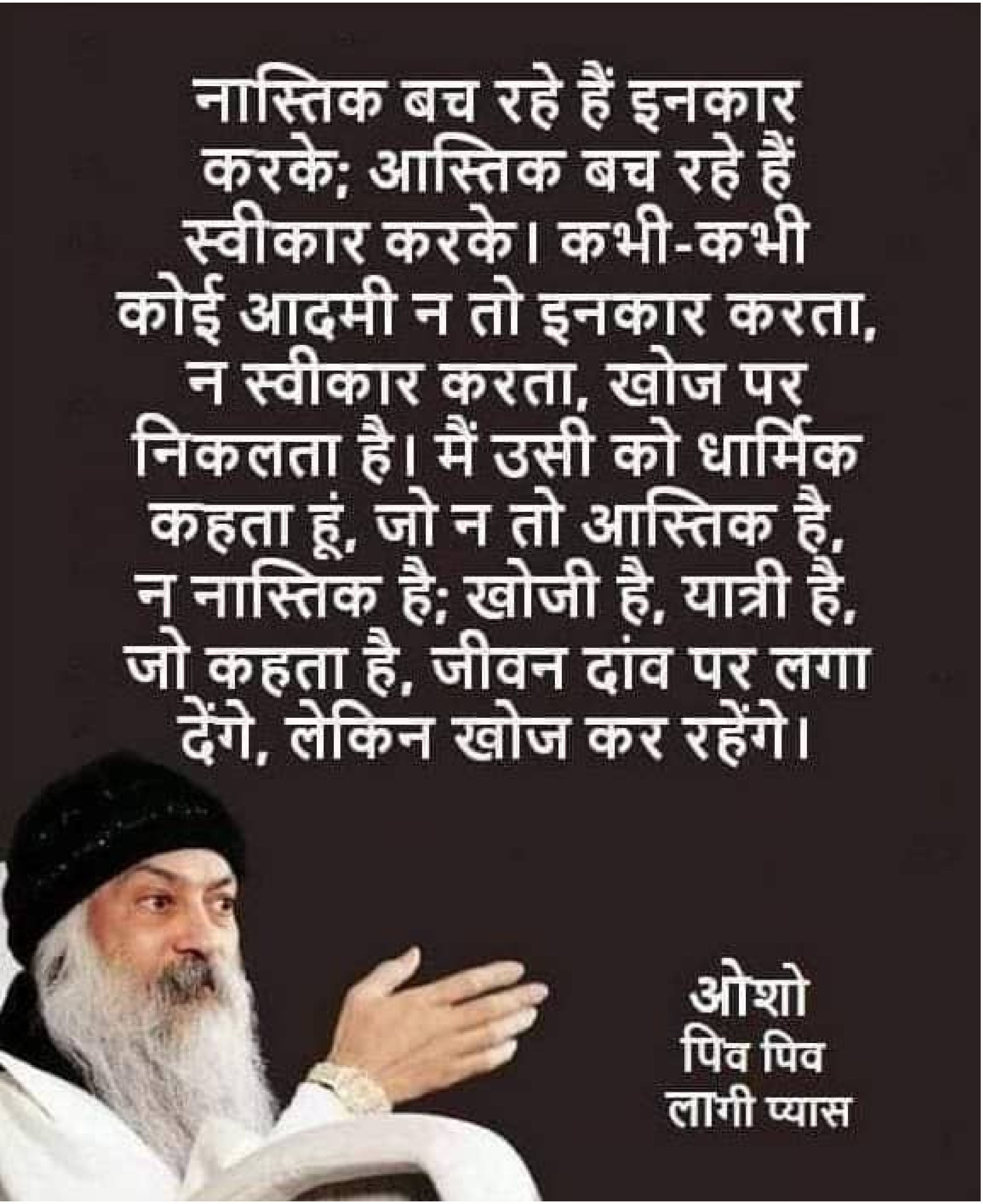
नास्तिक बच रहे हैं इनकार करके; आस्तिक बच रहे हैं स्वीकार करके। कभी-कभी कोई आदमी न तो इनकार करता, न स्वीकार करता, खोज पर निकलता है। मैं उसी को धार्मिक कहता हूं, जो न तो आस्तिक है, न नास्तिक है; खोजी है, यात्री है, जो कहता है, जीवन दांव पर लगा देंगे, लेकिन खोज कर रहेंगे।
ओशो
पिव पिव लागी प्यास

CamScanner

# अंतर्जातीय विवाह क्यों नहीं करना चाहिए..

दो भिन्न जाति वालों का विवाह होने पर उत्पन्न संतान कभी शुद्ध ब्राह्मण या शुद्ध क्षत्रिय या शुद्ध वैश्य या शुद्ध शूद्र नहीं होती..मिश्रित होती है..वर्णसंकर होती है..और वर्णसंकर संतान के द्वारा किया गया श्राद्ध निष्फल होता है..देखिए..

श्राद्ध के अन्न को अपने करोड़ों पूर्वजों तक पहुंचाने की श्राद्ध व्यवस्था(system) का आधार है.."शुद्धब्राह्मणादिवंश(नाम)..गोत्र..मंत्र "

लेकिन जिस "शुद्धब्राह्मणादि वंश परंपरा रूपी पते(address)" के "नाते" से अपने करोड़ों पितरों तक अन्न जल पहुंचाया जाता है..उस अपनी वंश परंपरा के पते(address) को ही.. अंतर्जातीय विवाह करने वाले व्यक्ति ने बदल लिया होता है..

तो ऐसे व्यक्ति द्वारा किया गया श्राद्ध स्वाभाविक ही अपने करोड़ों पूर्वजों तक नहीं पहुंचता..

और इसप्रकार श्राद्ध अन्न के अभाव मे उसके पूर्वज दुखी रहते हैं और ऐसे व्यक्ति को महान् पाप का भागी बनना पड़ता है..जैसा कि भगवद्गीता में कहा गया है..

जायते वर्णसंकर:।।..पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रिया:।।..नरकेऽनियतं वासो..(भगवद्गीता, अध्याय 1, श्लोक 41-44)

वर्णसंकर व्यक्ति के पितर पतित हो जाते हैं..पिण्ड(श्राद्ध) उदक(तर्पण) लुप्त होने के कारण..ऐसा मनुष्य अनिश्चितकाल तक नरक में रहता है..

CamScanner

स्मरण रहे, प्रेम का विपरीत क्रोध या घृणा नहीं है,
उसका असली विपरीत उदासीनता है।यदि कोई
तुमसे उदासीन है तो उसका अर्थ है कि प्रेम खो गया।
अगर कोई व्यक्ति तुम्हारे प्रति
क्रोध करने को भी राजी नहीं
है तो समझो कि सब कुछ
समाप्त हो गया।
-ओशो (आत्म-साधना:तंत्र-सूत्र)
विज्ञान भैरव तंत्र/भाग चार

CamScanner

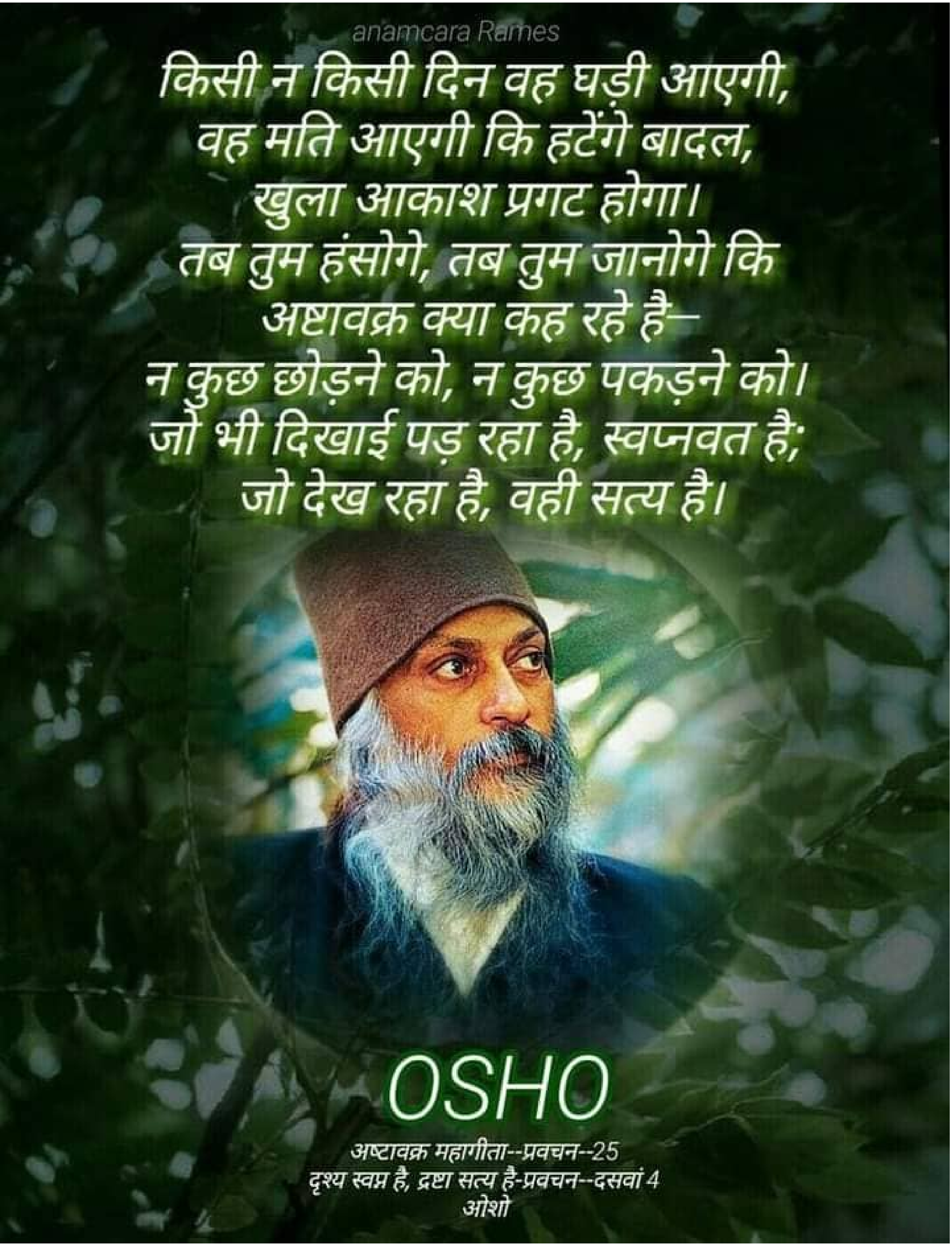
anamcara Rames
किसी न किसी दिन वह घड़ी आएगी,
वह मति आएगी कि हटेंगे बादल,
खुला आकाश प्रगट होगा।
तब तुम हंसोगे, तब तुम जानोगे कि
अष्टावक्र क्या कह रहे है–
न कुछ छोड़ने को, न कुछ पकड़ने को।
जो भी दिखाई पड़ रहा है, स्वप्नवत है;
जो देख रहा है, वही सत्य है।
OSHO
अष्टावक्र महागीता--प्रवचन--25
दृश्य स्वप्न है, द्रष्टा सत्य है-प्रवचन--दसवां 4
ओशो

CamScanner

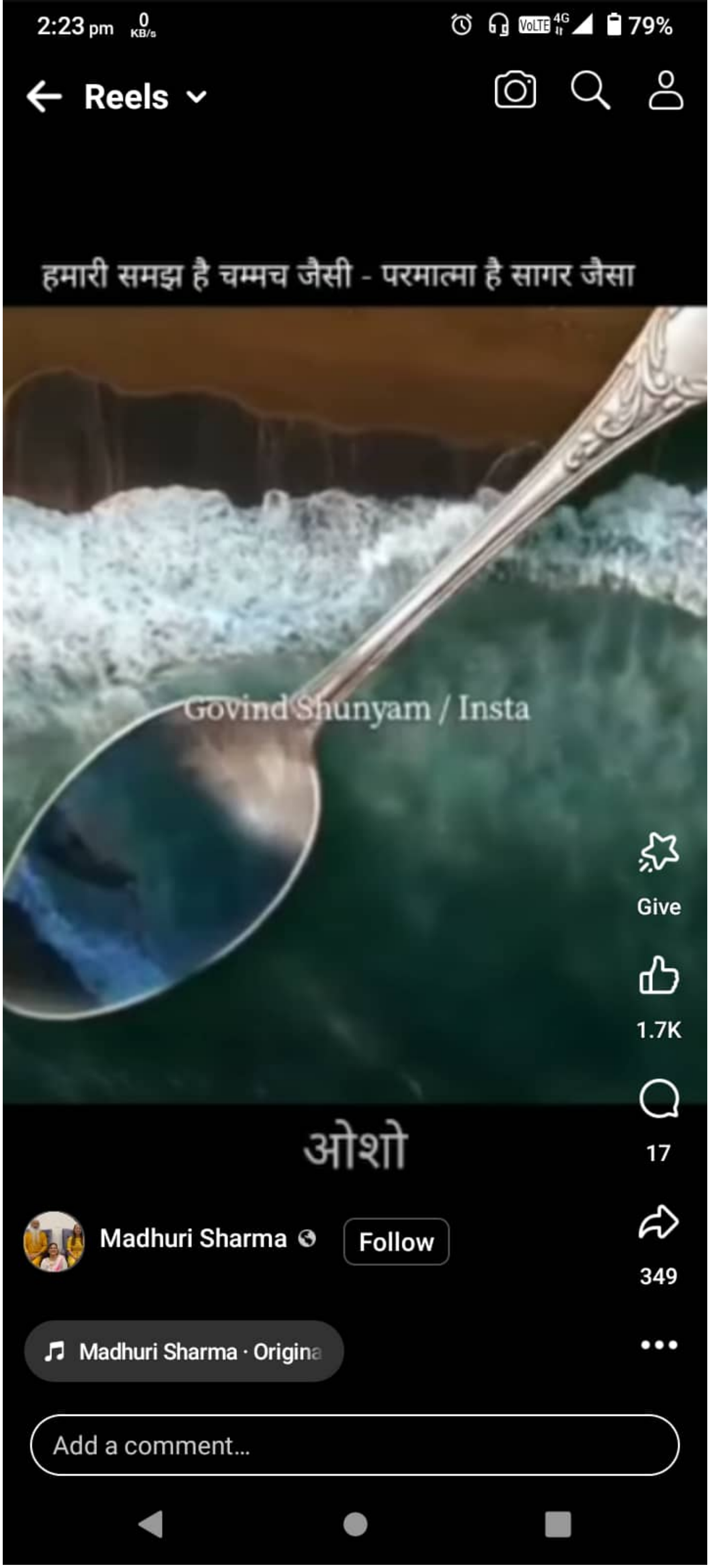
2:23 pm
Reels
हमारी समझ है चम्मच जैसी - परमात्मा है सागर जैसा
Govind Shunyam / Insta
Give
1.7K
17
ओशो
Madhuri Sharma
Follow
349
Madhuri Sharma · Origina
Add a comment...

CamScanner

2:21 pm 0 KB/s VoLTE 4G 79%

####

जंगल में एक गर्भवती हिरनी बच्चे को जन्म देने को थी। वो एकांत जगह की तलाश में घुम रही थी, कि उसे नदी किनारे ऊँची और घनी घास दिखी। उसे वो उपयुक्त स्थान लगा शिशु को जन्म देने के लिये।

.

वहां पहुँचते  ही उसे प्रसव पीडा शुरू हो गयी।
उसी समय आसमान में घनघोर बादल वर्षा को आतुर हो उठे और बिजली कडकने लगी।

उसने दाये देखा, तो एक शिकारी तीर का निशाना, उस की तरफ साध रहा था। घबराकर वह दाहिने मुडी, तो वहां एक भूखा शेर, झपटने को तैयार बैठा था। सामने सूखी घास आग पकड चुकी थी और पीछे मुडी, तो नदी में जल बहुत था।

मादा हिरनी क्या करती ? वह प्रसव पीडा से व्याकुल थी। अब क्या होगा ? क्या हिरनी जीवित बचेगी ? क्या वो अपने शावक को जन्म दे पायेगी ? क्या शावक जीवित रहेगा ?

क्या जंगल की आग सब कुछ जला देगी ? क्या मादा हिरनी शिकारी के तीर से बच पायेगी ?क्या मादा हिरनी भूखे शेर का भोजन बनेगी ?
वो एक तरफ आग से घिरी है और पीछे नदी है। क्या करेगी वो ?

हिरनी अपने आप को शून्य में छोड, अपने बच्चे को जन्म देने में लग गयी। कुदरत का करिश्मा देखिये। बिजली चमकी और तीर छोडते हुए, शिकारी की आँखे चौंधिया गयी। उसका तीर हिरनी के पास से गुजरते, शेर की आँख में जा लगा,शेर दहाडता हुआ इधर उधर भागने लगा।और शिकारी, शेर को घायल ज़ानकर भाग गया। घनघोर बारिश शुरू हो गयी और जंगल की आग बुझ गयी। हिरनी ने शावक को जन्म दिया।

*हमारे जीवन में भी कभी कभी कुछ क्षण ऐसे आते है, जब हम चारो तरफ से समस्याओं से घिरे होते हैं और कोई निर्णय नहीं ले पाते। तब सब कुछ नियति के हाथों सौंपकर अपने उत्तरदायित्व व प्राथमिकता पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

CamScanner

भीतर का दीया जलता रहे तो फिर हम
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
जो भी करते हैं, उसमें प्रकाश पड़ता है।
@LaughWithUniverse
ओशो
अष्टावक्र महागीता
प्रवचन-26
OSHO

CamScanner

CamScanner

5:37 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%

पूछा, तूने वहां क्या सीखा? क्योंकि वह जर्मन था और दो साल वहां रह कर आया था। उसने कहा, कि पहले तो मैं बहुत हैरान था, कि यह क्या पागलपन है! लेकिन मैंने सोचा, कुछ देर करके देख लें।

फिर तो इतना मजा आने लगा। गुरु की आज्ञा थी, कि जहां भी वह मिले उसको झुकूं, फिर धीरे-धीरे जो भी आश्रम में थे, जो भी मिल जाते! साष्टांग दंडवत में इतना मजा आने लगा, कि फिर मैंने फिक्र ही छोड़ दी कि क्या गुरु के लिए झुकना! जो भी मौजूद है।

फिर तो मजा इतना बढ़ गया, कि लेट जाना पृथ्वी पर सब छोड़ कर। ऐसी शांति उतरने लगी, कि कोई भी न होता तो भी मैं लेट जाता। साष्टांग दंडवत करने लगा वृक्षों को, पहाड़ों को। झुकने का रस लग गया।

तब गुरु ने एक दिन बुला कर मुझे कहा, वह युवक मुझसे बोला, अब तुझे मेरी चिंता करने की जरूरत नहीं। अब तो तुझे झुकने में ही रस आने लगा। हम तो बहाना थे, कि तुझे झुकने में रस आ जाए। अब तो तू किसी के भी सामने झुकने लगा है। और अब तो ऐसी भी खबर मिली है, कि तू कभी-कभी कोई भी नहीं होता और तू साष्टांग दंडवत करता है। कोई है ही नहीं और तू दंडवत कर रहा है। उस युवक ने मुझे कहा, कि बस, झुकने में ऐसा मजा आने लगा।

जर्मन अहंकार संसार में प्रगाढ़ से प्रगाढ़ अहंकार है। समस्त जातियों में जर्मन जाति के पास जैसा प्रगाढ़ अहंकार है, वैसा किसी के पास नहीं है। इसलिए दो महायुद्ध वे लड़े हैं। और कोई नहीं जानता, कि कभी भी वे युद्ध के लिए तैयार हो जाएं।

यह जर्मन युवक झुकने को भी तैयार नहीं था। यह बात ही फिजूल लगती थी, लेकिन फंस गया। लेकिन जब झुका, तो रस आ गया।

एक दफा झुकने का रस आ जाए, एक दफा तुम्हें यह मजा आने लगे, कि नाकुछ होने में मजा है, मिटने में मजा है, खोने में मजा है, तो गुरु हट जाता है। गुरु बुला कर तुम्हें कह देता है, बात खतम हो गई। अब तुम मुझे परेशान न करो। क्योंकि तुम्हारे दंडवत करने से

CamScanner

# रावण बनना भी कहां आसान...

रावण में अहंकार था
तो पश्चाताप भी था

रावण में वासना थी
तो संयम भी था

रावण में सीता के अपहरण की ताकत थी
तो बिना सहमति परस्त्री को स्पर्श भी न
करने का संकल्प भी था

सीता जीवित मिली ये राम की ही ताकत थी
पर पवित्र मिली ये रावण की भी मर्यादा थी

राम, तुम्हारे युग का रावण अच्छा था..
दस के दस चेहरे, सब "बाहर" रखता था...!!

महसूस किया है कभी
उस जलते हुए रावण का दुःख
जो सामने खड़ी भीड़ से
बारबार पूछ रहा था.....
**"तुम में से कोई राम है क्या ? "**

CamScanner

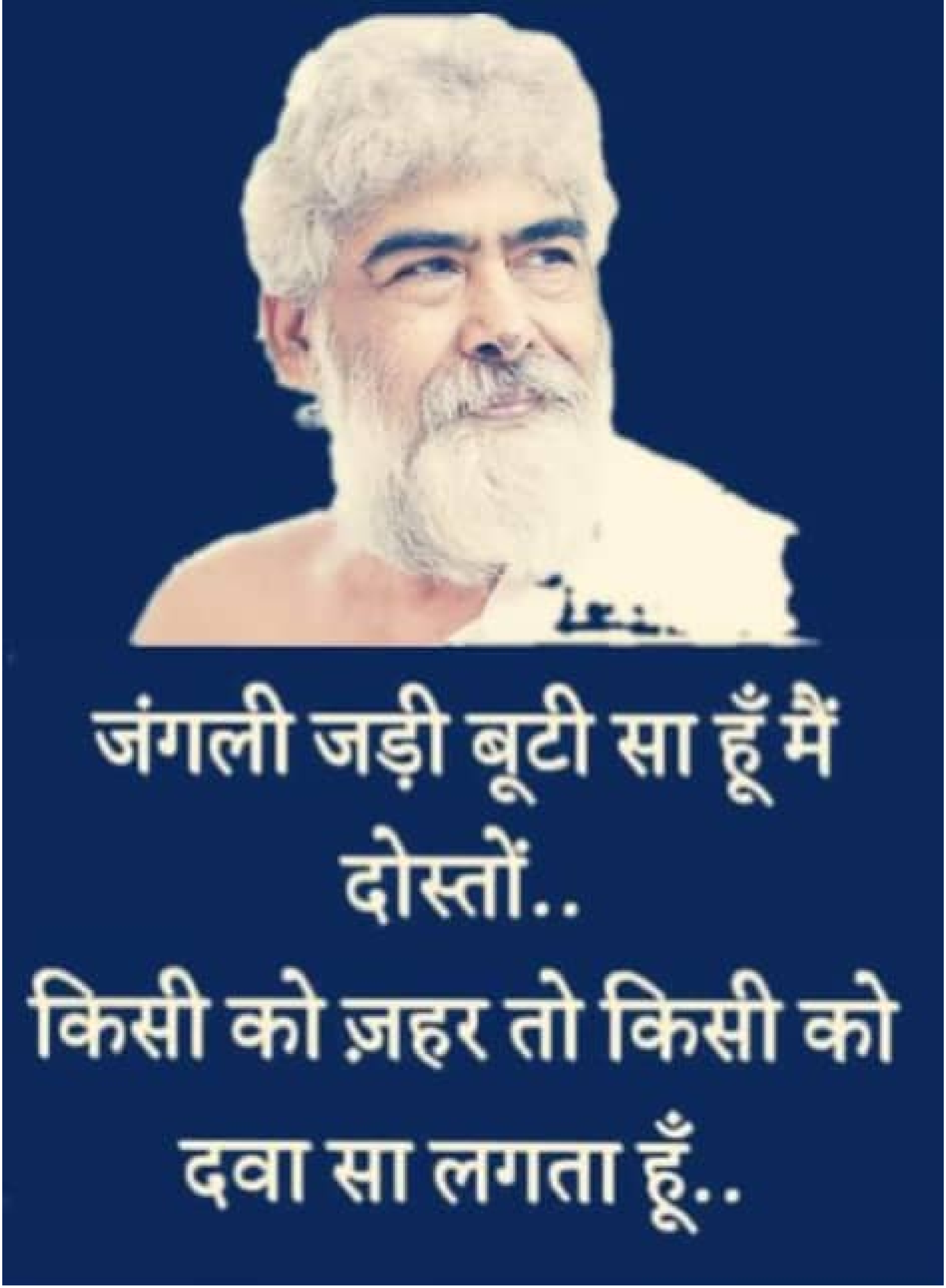


CamScanner

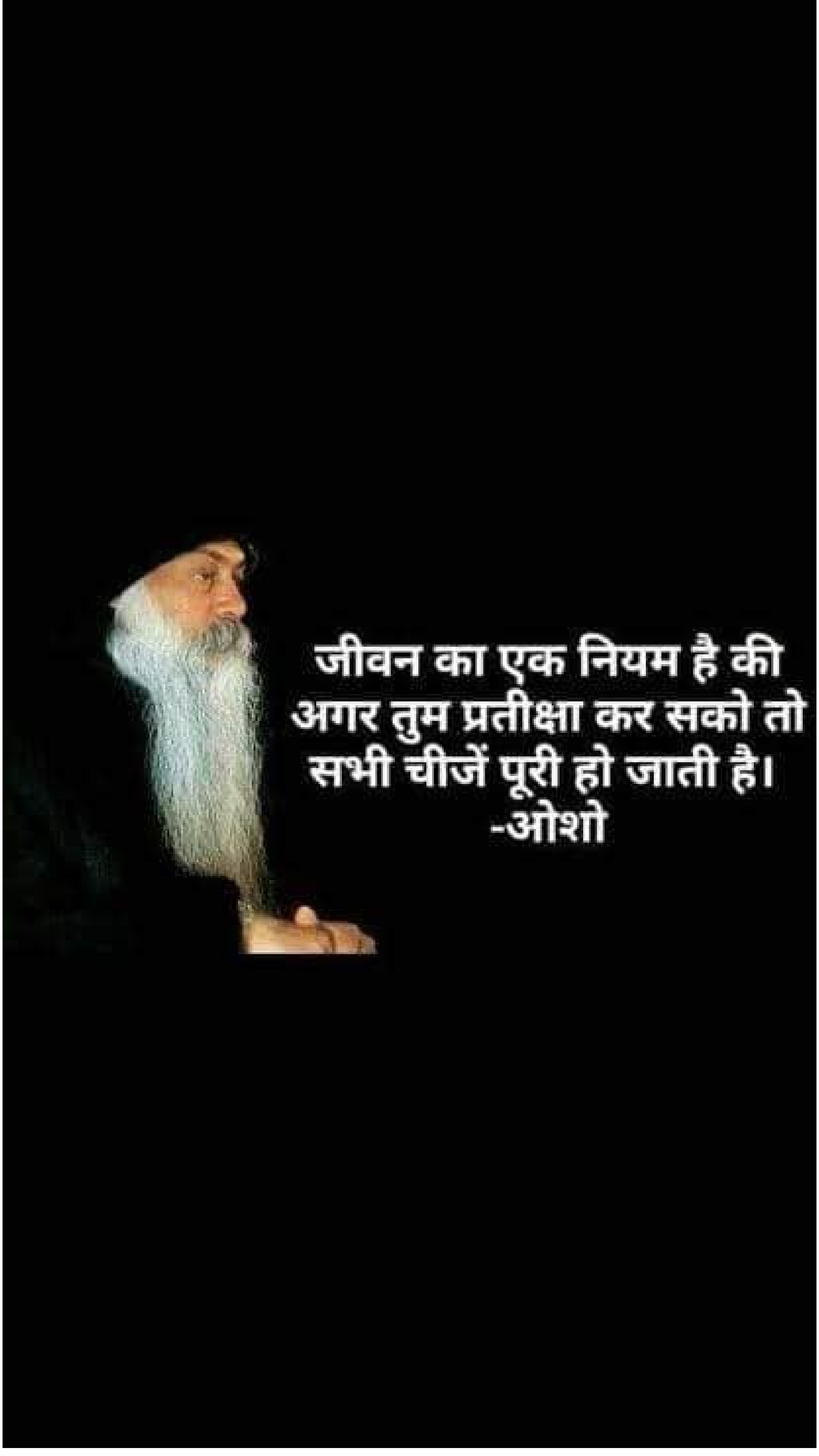


CamScanner

4:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 61%

Swami Lokeshanand
14 Oct ·

कोलकाता के हमारे बड़े भैया श्री विनय तिवारी जी ने बहुत सुंदर विचार किया। आप भी उनके इस विचार पर मनन करें।

एक ही सूर्य ने, एक ही सागर की छाती से, दो बूंदों को भाप में बदल दिया। एक बूंद, जिसने पश्चिम की ओर जाने वाली हवा का संग किया, तप्त रेगिस्तान में बरसी और पुनः पुनः जन्मती मरती, अनन्त काल तक वहीं भटकती रही। तो दूसरी बूंद जिसने उत्तर की ओर जाने वाली हवा का संग किया, वह पहाड़ पर बरस कर किसी धारा में मिल, गंगा में आ पहुँची और पुनः सागर में समा कर विश्राम को प्राप्त हुई।

योंही एक अभागा मनुष्य जो पाश्चात्य अंधानुकरण में पड़ा, वासनापूर्ति ही जिसका एकमात्र लक्ष्य है, देह सुख ही जिसके लिए सर्वोत्तम सुख है, वह दुख के घर इस जगत में ही रोता बिलखता तड़पता भटकता जन्मता मरता रहता है।

जबकी कोई भाग्यवान दूसरा, जो "को अहं? कथम् इदं जगत?" के उत्तर की खोज में लगा, वह सनातन परम्परा की धारा में मिल, किन्हीं सद्गुरू संत की उपदेश गंगा का संग कर, अपने सत्य स्वरूप को प्राप्त कर, दुख से छूट गया, सदा सदा के लिए विश्राम पा गया, मुक्त हो गया।

अब बूंद तो जड़ है। उसके पास अपना कोई संकल्प नहीं है। वह तो संयोग से ही मंजिल तक पहुँचती है। पर मनुष्य जड़ नहीं है। वह भाग्य से ही बंधा नहीं है। नाम जप नामक महान साधन से, वह अपना नया भाग्य स्वयं निर्माण कर सकता है। वह यदि विचार करे तो अपने संकल्प बल से, अपनी यात्रा की दिशा बदल सकता है।

हैरानी तो तब है जब पुण्य जागृत होने पर भी, संत से परिचय होने पर भी, चार पैसे के लिए रोज दुकान खोल रखने वाला, दो कौड़ी की वस्तु के लिए पूरे बाजार की खाक छान लेने वाला, परमात्मा प्राप्ति के निमित्त संत से मिलने तक का समय नहीं निकाल पाता।

लोकेशानन्द कहता है कि येन केन प्रकारेन कोई एक बार किन्हीं आत्मज्ञानी महात्मा का संग कर ले, वह एक दो जन्म के अंतराल में, परमात्मा को प्राप्त करता ही है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

CamScanner

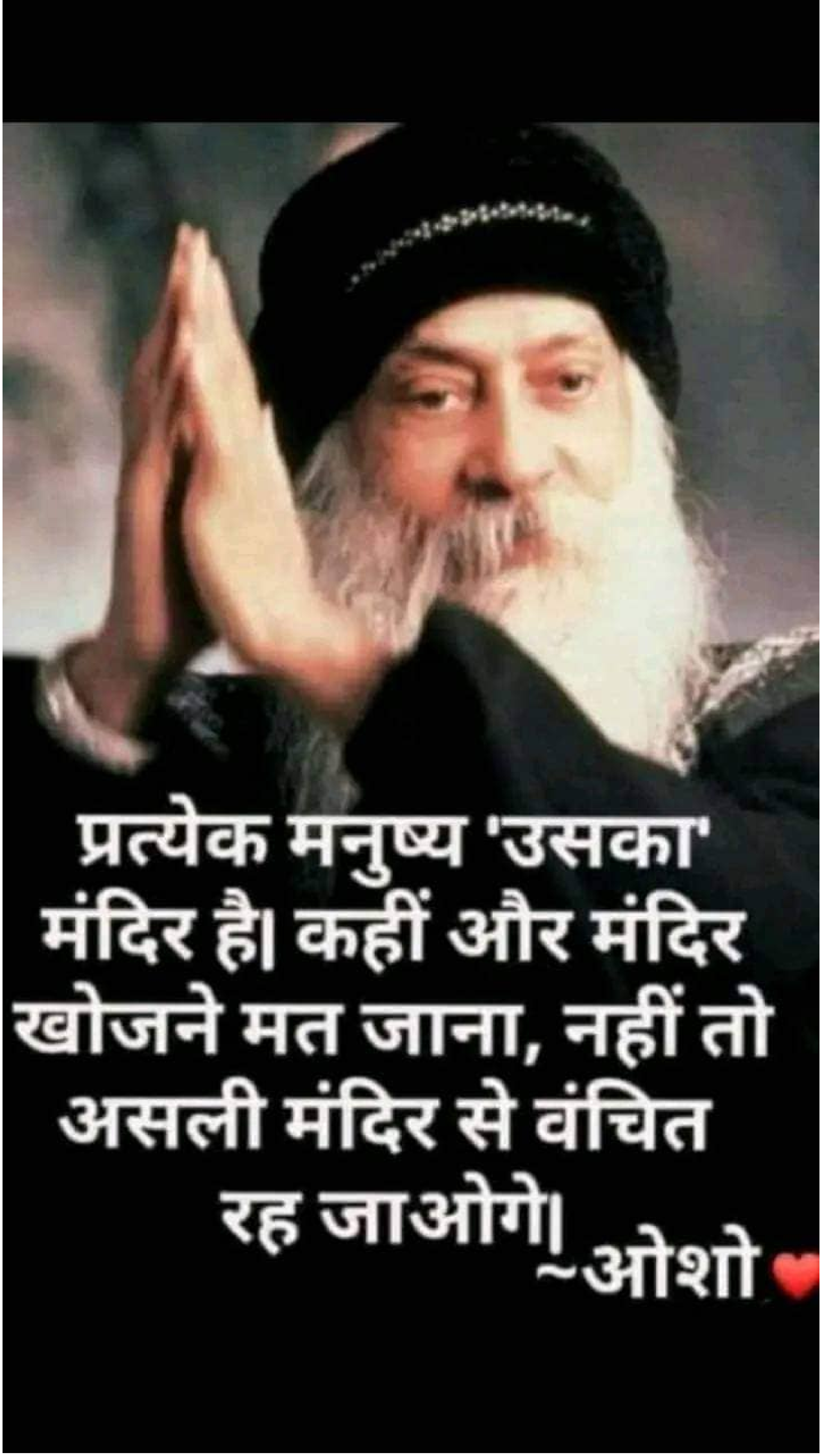
प्रत्येक मनुष्य 'उसका'
मंदिर है। कहीं और मंदिर
खोजने मत जाना, नहीं तो
असली मंदिर से वंचित
रह जाओगे।
~ओशो

CamScanner

CamScanner

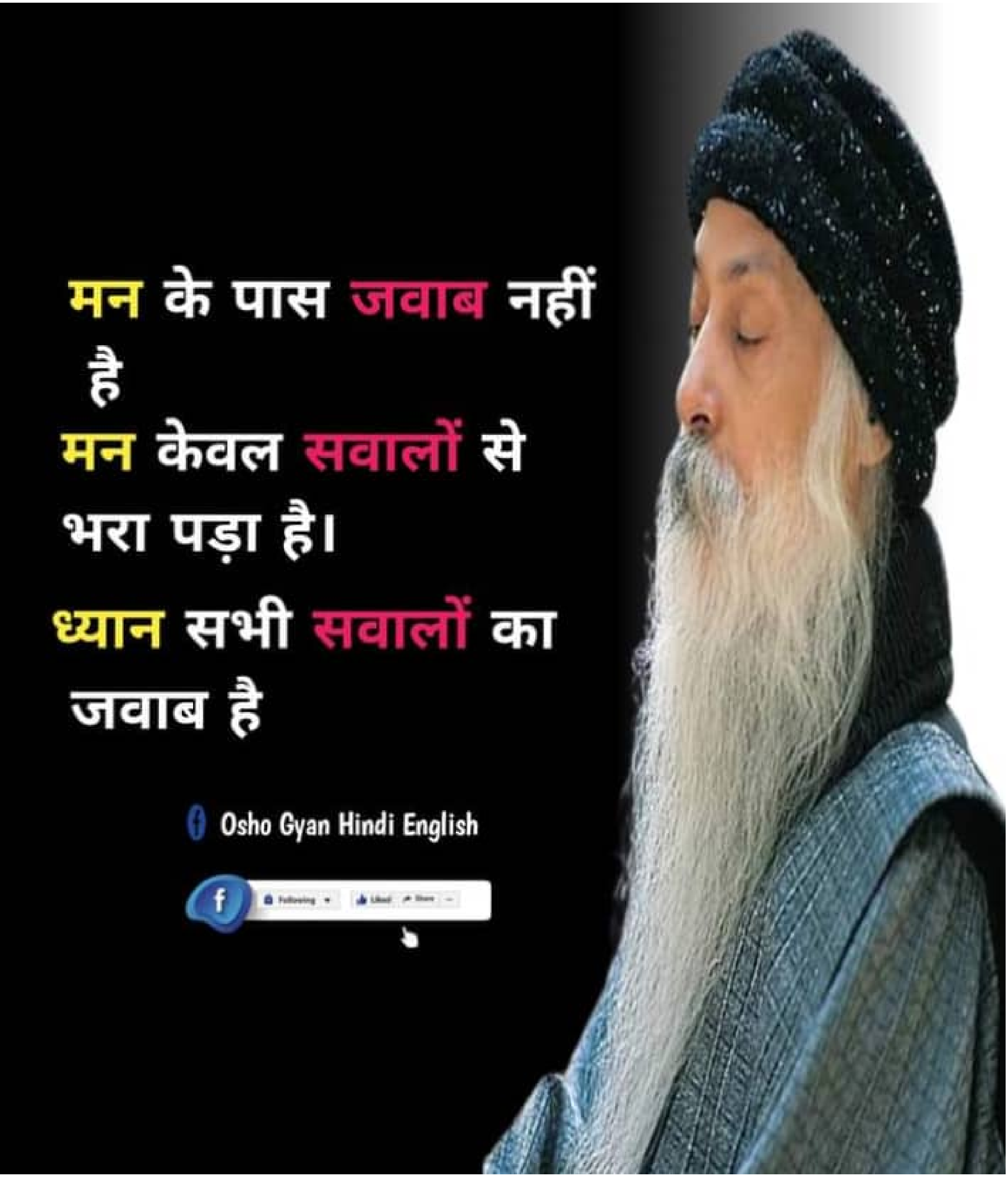
मन के पास जवाब नहीं
है
मन केवल सवालों से
भरा पड़ा है।
ध्यान सभी सवालों का
जवाब है
Osho Gyan Hindi English

CamScanner

8

Top comments

**Ham Hae Pandey Ji**
369 करुणा, आदर्शवाद और रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। 369 नंबर की ऊर्जा भी सहिष्णुता के साथ प्रतिध्वनित होती है और परोपकारी साबित होती है। 369 ऊर्जा दूसरों के लिए एक प्रेरणा है। यह सामाजिक समारोहों में स्वागत करने के लिए जाता है, विशेष रूप से फंड जुटाने, मानवीय या कलात्मक एजेंडों के साथ।

1h Like Reply

**Rinki Dagar**
स्वर्ग नर्क से आगे का भी ज्ञान है। वो कौन बतायेगा

45m Like Reply

**Sohit Kumar Sen**
369 psychological hacking code hai ...but nature and god isse bhi bahut aage hai sab kuch nhi samjha ja sakta ha vigyan ka ek pahlu jarur

31m Like Reply

**DrPrabhat Kumar**
निर्विकार दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है और विकारी दुनिया को नर्क... सतयुग स्वर्ग है जबकि कलयुग नरक।।

2h Like Reply

**DrPrabhat Kumar**
संसार में लोग पूरा जीवन *धन* कमाने में जुटे रहते हैं... यह सोच कर कि इससे हमारा भविष्य *सुरक्षित* होगा, पर वे भूल जाते हैं कि इस संसार में हर चीज परिवर्तनशील है। इसलिये बाहरी *कमाई* के साथ-साथ यदि हम *आंतरिक* कमाई में भी समय लगाएं तो सदा *निश्चिंत*

Write a comment...

CamScanner

तुम जिसको धार्मिक कहते हो,
वह तो हिसाब-किताब लगाता है।
वह देखता है कि इतने उपवास
करूं तो स्वर्ग मिलेगा, इतने व्रत
रखूं तो स्वर्ग मिलेगा, इतना दान
करूं तो स्वर्ग मिलेगा। यह सब
हिसाब-किताब है। इस दान में
भी बाजार है। इस व्रत में भी
व्यवसाय है, सौदा है। इस पुण्य
में भी छिपा हुआ पाप है।

Osho universal _ Dhaval parmar

ओशो
मरौ है जोगी मरौ

CamScanner

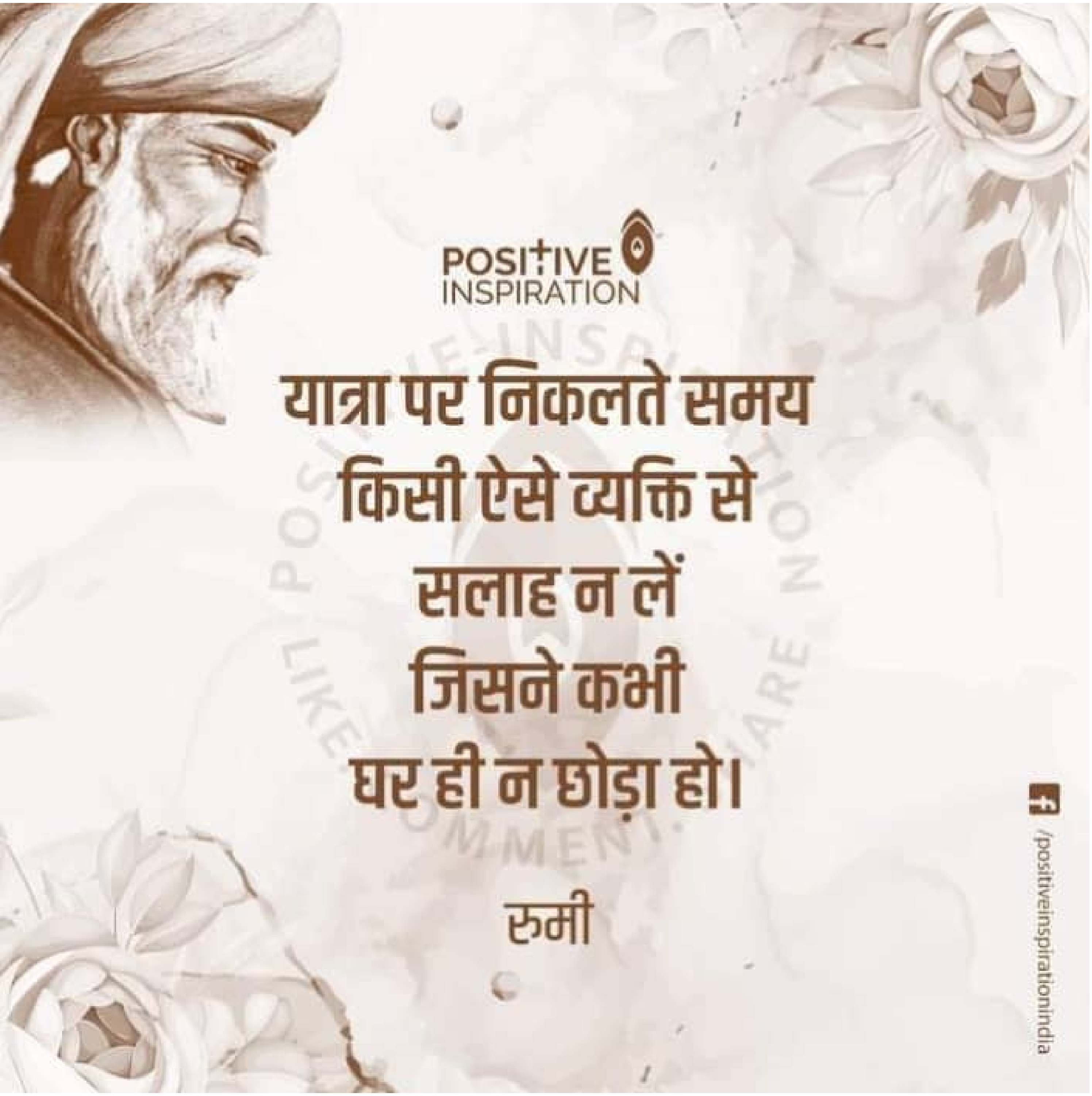


CS CamScanner

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।
अनेन वेद्यं सच्छास्त्रमिति वेदान्तडिण्डिमः ॥२०॥

ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है, "जीव" ब्रह्म ही है भिन्न नहीं है— इसे सही शास्त्र के रूप में समझा जाना चाहिए, यह वेदान्त द्वारा घोषित किया गया है ।20।

~ श्रीमद् आदि-शङ्कराचार्य | ग्रन्थ - 'ब्रह्मज्ञानावलीमाला'

CamScanner

9:52 am 0 KB/s VoLTE 4G 91%

Parshotam Rai · 1h ·

एक राजा था जिसकी केवल एक टाँग और एक आँख थी।उस राज्य में सभी लोग खुशहाल थे क्यूंकि राजा बहुत बुद्धिमान और प्रतापी था।एक बार राजा के विचार आया कि क्यों खुद की एक तस्वीर बनवायी जाये। फिर क्या था, देश विदेशों से चित्रकारों को बुलवाया गया और एक से एक बड़े चित्रकार राजा के दरबार में आये।राजा ने उन सभी से हाथ जोड़ कर आग्रह किया कि वो उसकी एक बहुत सुन्दर तस्वीर बनायें जो राजमहल में लगायी जाएगी।

सारे चित्रकार सोचने लगे कि राजा तो पहले से ही विकलांग है, फिर उसकी तस्वीर को बहुत सुन्दर कैसे बनाया जा सकता है ?ये तो संभव ही नहीं है और अगरतस्वीर सुन्दर नहीं बनी तो राजा गुस्सा होकर दंड देगा।यही सोचकर सारे चित्रकारों ने राजा की तस्वीर बनाने से मना कर दिया।

तभी पीछे से एक चित्रकार ने अपना हाथ खड़ा किया और बोला कि मैं आपकी बहुत सुन्दर तस्वीर बनाऊँगा जो आपको जरूर पसंद आएगी। फिर चित्रकार जल्दी से राजा की आज्ञा लेकर तस्वीर बनाने में जुट गया। काफी देर बाद उसने एक तस्वीर तैयार की जिसे देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और सारे चित्रकारों ने अपने दातों तले उंगली दबा ली।

उस चित्रकार ने एक ऐसी तस्वीर बनायीं जिसमें राजा एक टाँग पूरी तरह से दिखाई दे ऐसे घोड़े पर बैठा है,और एक आँख रानीसाहिबा के लटक रहे झुल्फो से ढकी हुई है!राजा ये देखकर बहुत प्रसन्न हुआ कि उस चित्रकार ने राजा की कमजोरियों को छिपाकर कितनी चतुराई से एक सुन्दर तस्वीर बनाई है।राजा ने उसे खूब इनाम एवं धन दौलत दी।

तो क्यों ना हम भी।दूसरों की कमियों को छुपाएँ,उन्हें नजरअंदाज करें और अच्छाइयों पर ध्यान दें।आजकल देखा जाता है कि लोग एक दूसरे की कमियाँ बहुत जल्दी ढूंढ लेते हैं चाहें हममें खुद में कितनी भी बुराइयाँ हों लेकिन हम हमेशा दूसरों की बुराइयों पर ही ध्यान देते हैं कि अमुक आदमी ऐसा है, वो वैसा है।

हमें नकारात्मक परिस्थितियों में भी सकारात्मक सोचना चाहिए और हमारी सकारात्मक सोच हमारी हर समस्यों को हल करती है।

2

CamScanner

9:31 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

इस शरीर का बीज जठराग्नि से नीचे स्थापित है। बीज ही अपवित्र है, शरीर पवित्र क्या होगा? पसीना हो या पीक, ठोस हो या तरल या गैस, शरीर के प्रत्येक छिद्र से, रोम रोम से जो भी निकलता है, दुर्गंधयुक्त ही निकलता है। सुबह हम कितने ही स्वच्छ सफेद कपड़े पहनें, शाम तक मैले हो ही जाते हैं। देह तो ऐसी है कि सोना चाँदी तक को काला कर दे। यह जीवन भर तो सड़ता ही है, श्मशान में जलते हुए भी दुर्गंध ही देता है।

इसके प्रेम में मत पड़ो, बस इसे काम में ले लो। इसका तो एक ही लाभ है, कि यह खुद विनाशी होते हुए भी अविनाशी की प्राप्ति करा सकती है। इसे खिलाओ पिलाओ, पर केवल साधन समझ कर। इससे सदा सदा के लिए छुटकारा पाना है तो इससे ममता मत करो।

देखो! मक्खी शहद का स्वाद लेती है, पर उड़ते उड़ते ही लेती है, शहद पर बैठ नहीं जाती। और जो कभी भूलवश बैठ जाती है, वह शहद का स्वाद लेना तो दूर रहा, प्राणों से भी हाथ धो बैठती है, चिपक कर मर जाती है। जीव को भी चाहिए कि वह इस देह का उपयोग कर ले, इससे चिपके न।

एक काम करो, अपनी इन्द्रियाँ भगवान को दे दो, कि वे इन्हें पाल लें। गो-पाल हो जाएँ। मालूम है कि नहीं कि गो माने इन्द्रियाँ? भगवान आपके बनाने से गोपाल बनते हैं। और इन्द्रियाँ भगवान की ओर न जाती हों तो पहले अपना मन भगवान में लगा दो। मन जाएगा तो इन्द्रियाँ पीछे पीछे अपने आप चली जाएँगी। मन है बछड़ा, इन्द्रियाँ हैं गाए। जहाँ बछड़ा जाएगा, गाए वहाँ स्वयं चली जाएगी। भगवान ने भी पहले बछड़े चराए, फिर गाए चराने लगे। मन सहित इन्द्रियाँ जब भगवान में लग जाएँगी तब आपका प्रेम भी भगवान से लग जाएगा, देह से न रहेगा।

लोकेशानन्द कहता है कि उपदेश पानी जैसा है। हर किसी में नहीं टिकता। तो कहाँ टिकता है? जैसे पानी ऐसे बर्तन में टिकता है जो नीचा हो, खाली हो और सीधा हो। ऐसे ही उपदेश भी ऐसे पात्र में टिकता है जो नीचा हो- माने निराभिमानी हो, खाली हो- माने निर्मल हो, और सीधा हो- माने श्रद्धावान हो। वरना तो-

"पनघट पर जाकर भी,
गागर रीती लौट रही है।"

CamScanner

9:26 am 0 KB/s VoLTE 4G 93%
Create story
Osho Ravi Yog

**Swami Lokeshanand**
2h ·

मान लीजिए कि मैं आपके घर आया। दो दिन रह कर अपने घर के लिए निकला ही था कि याद आया कि ओह! मेरा सामान तो यहीं छूट गया। तो बताएँ कि वापिस आना पड़ेगा या नहीं? पड़ेगा। बस ऐसे ही जिसने जीवन भर देह से प्रेम किया है, वह देह छूटने पर वापिस इसी जगत में लौट आता है। इसमें हैरानी क्या है?

देखो! जीवन भर जैसा चिंतन रहता है, मृत्यु के समय वैसा ही विचार आता है। एक स्वर्णकार ने 100 के भाव सोना खरीदा था कि मृत्यु का समय आ गया। बड़ा तेज बुखार चढ़ा। डाक्टर साहब आए तो बुखार नापा, बोले- ओह! 105° बुखार है। सुनार बेहोशी में ही बड़बड़ाया- बेच दे! बेच दे!

मेरे भाई बहन! इस देह रूपी बादल की ओट में ही तुमने अपने आत्मा रूपी सूर्य को छिपा रखा है। यह देह तो नितांत सुखरहित है। इसमें सुख खोजना सबसे बड़ी मूर्खता है। इस क्षण भर में नष्ट होने वाली देह पर श्रद्धा मत करो। न तो इसे सुखरूप समझ कर विषयों में फंसो, न इसे नित्य समझ कर भजन में देरी करो।

इस शरीर का बीज जठराग्नि से नीचे स्थापित है। बीज ही अपवित्र है, शरीर पवित्र क्या होगा? पसीना हो या पीक, ठोस हो या तरल या गैस, शरीर के प्रत्येक छिद्र से, रोम रोम से जो भी निकलता है, दुर्गंधयुक्त ही निकलता है। सुबह हम कितने ही स्वच्छ सफेद कपड़े पहनें, शाम तक मैले हो ही जाते हैं। देह तो ऐसी है कि सोना चाँदी तक को काला कर दे। यह जीवन भर तो सड़ता ही है, श्मशान में जलते हुए भी दुर्गंध ही देता है।

इसके प्रेम में मत पड़ो, बस इसे काम में ले लो। इसका तो एक ही लाभ है, कि यह खुद विनाशी होते हुए भी अविनाशी की प्राप्ति करा सकती है। इसे खिलाओ पिलाओ, पर केवल साधन समझ कर। इससे सदा सदा के लिए छुटकारा पाना है तो इससे ममता मत करो।

देखो! मक्खी शहद का स्वाद लेती है, पर उड़ते उड़ते ही लेती है, शहद पर बैठ नहीं जाती। और जो कभी भूलवश बैठ जाती है, वह शहद का स्वाद लेना तो दूर रहा, प्राणों से भी हाथ धो बैठती है, चिपक कर मर

CamScanner

8:02 am 0 KB/s 4G 100%
facebook

नासमझी थी; हम समझ न पाए कि क्या तुम्हें हुआ है, तुमने कौन सा झरोखा खोल लिया! हम अंधे हैं। और हमने तुम्हें अपनी तरफ खींचने की कोशिश की। उस खींचतन में सब टूट गया। न तुम वहां जा पाए, न तुम वहां के हो पाए। यहां के तुम हो नहीं सकते, वह तुम्हारी सामर्थ्य के बाहर है'।

जिसकी आंख उस पर पड़ गई, वह लौट नहीं सकता; हां, खींचतान में दुर्दशा हो जाएगी। वही दुर्दशा उनकी हो गई है। उन्हें स्वीकृति चाहिए--सम्मानपूर्वक स्वीकृति चाहिए, ताकि उनके भीतर का भी भाव यह हो जाए कि ठीक हुआ है।

ध्यान रखना, आज की दुनिया में ऐसे बहुत से पागल पागलखानों में बंद है जो आज से हजार साल पहले अगर होते तो परमहंस हो गए होते; और ऐसे भी हुआ है कि आज से हजार साल पहले ऐसे बहुत से पागल परमहंस समझे गए, जो आज होते तो पागलखानों में होते। समाज के मापदण्ड पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

परमहंस में बहुत कुछ पागल जैसा होता है। पागल में भी बहुत कुछ परमहंस जैस होता है। भेद करना बड़ा मुश्किल है, बड़ा बारीक है। पर अगर भेद न हो सके तो भी मेरा मानना यह है कि पागल को भी परमहंस कहो, हर्जा नहीं है; लेकिन परमहंस को पागल मत कहना। मेरी बात समझ में आई? अगर भेद न भी हो सके, अगर मनस-शास्त्री तय भी न कर पाएं कि सीमा-रेखा कहां है, तो तुम पागल को भी परमहंस कहना, क्या हर्ज है? तुम्हारे परमहंस कहने से वह कुछ ज्यादा पागल न हो जाएगा। लेकिन परमहंस को पागल कभी मत कहना, क्योंकि पागल कहने से, वह जो जहां जा रहा था, जा न पाएगा। और यहां तो अब हो नहीं सकता; वह आधा-आधा हो जाएगा, द्वंद्व हो जाएगा।
एक दुर्भाग्य हो गया जो सौभाग्य हो सकता था। अभी भी लेकिन दूर समय नहीं गया है। कभी भी इतनी देर नहीं होती। जब जाग जाओ तभी सुबह है!

आज इतना ही।

CamScanner

8:02 am 0 KB/s 100%

"'^पागल या परमहंस^'"

आखिरी प्रश्न: भगवान! मेरे पिता जी सत्रह-अट्ठारह वर्ष की उम्र में धूनीवाले बाबा के पास अकेले गए और वहां से लौटते समय रास्ते में उन्हें कुछ अनुभव हुआ और वे विक्षिप्त हो गए। तब से आज तक वे जीवन को दो विपरीत तलों में बारी-बारी से जीते हैं--एक विक्षिप्तता का और दूसरा सामान्य समाज-स्वीकृत। जब वे विक्षिप्तता की दशा में होते हैं, तब उनका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक होता है और वे अभय से भरे होते हैं, साधु-संतो के पास जाते हैं, तीर्थयात्रा करते हैं, चिंता-मुक्त मस्ती से जीते हैं। और जब वे सामान्य दशा में होते हैं, तब रुग्ण हो जाते हैं, भयभीत, चिंतित और गंभीर रहते हैं, और पूरे समय घर में ही बने रहते हैं। आज उनकी उम्र सत्तर वर्ष है। आप कृपाकर मुझे कहें कि इस जीवन में क्या उनकी नियति यही है, या उनके लिए भी जीवन के अंतिम चरण में नये जन्म की कोई संभावना है।...

नरेन्द्र ने पूछा है। नरेन्द्र के पिता को मैं जानता हूं। उनकी स्थिति का मुझे पूरा-पूरा पता है। और ऐसी दुर्घटना बहुत लोगों के जीवन में घटी है। जो सौभाग्य हो सकता था वह दुर्भाग्य हो गया। समझना जरूरी है।
सत्य की दिशा में कभी-कभी किसी उपलब्ध व्यक्ति के करीब अचानक झलक मिल जाती है। उस झलक के मिलने के बाद स्वभावत: व्यक्ति में दो तल हो जाते हैं। जो झलक मिली, वह किसी और दिशा में खींचती है और उस व्यक्ति का अपना व्यक्तिव किसी और दिशा में खींचता है। एक द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है।

फिर वह जो झलक मिली, वह कुछ ऐसी मस्ती से भर देती है--लगता है कि पागलपन है। न केवल व्यक्ति को लगता है, पागलपन है बल्कि परिवार के लोगों को, प्रियजनों को, मित्रों को, समाज को भी लगता है, पागलपन है। और जब वह व्यक्ति उस झलक से नीचे उतर आता है तो समाज को, परिवार को, मित्रों को लगता है, अब ठीक हुआ। हालत बिलकुल उलटी है। वह जो पागलपन की दशा है, वही ठीक दशा है।
नरेन्द्र के पिता को अगर बचपन से ही, जब उनको यह घटना घटी, तभी से अगर जबरदस्ती स्वास्थ्य लाने की चेष्टा न की गई होती और उनकी विक्षिप्तता को एक भक्त की अहोभाव की दशा समझा गया होता, तो वे

CamScanner

जब तुम शांत होकर बैठ जाओगे, तब तुम्हे यह पृथ्वी
असली घर मालूम नही होगी। इसलिए लोग शांत
बैठने में डरते है, खाली होने में भी डरते है।
उलझाए रखते है अपने को। व्यस्त रखते है।
ओशो
अहोभाव

CamScanner

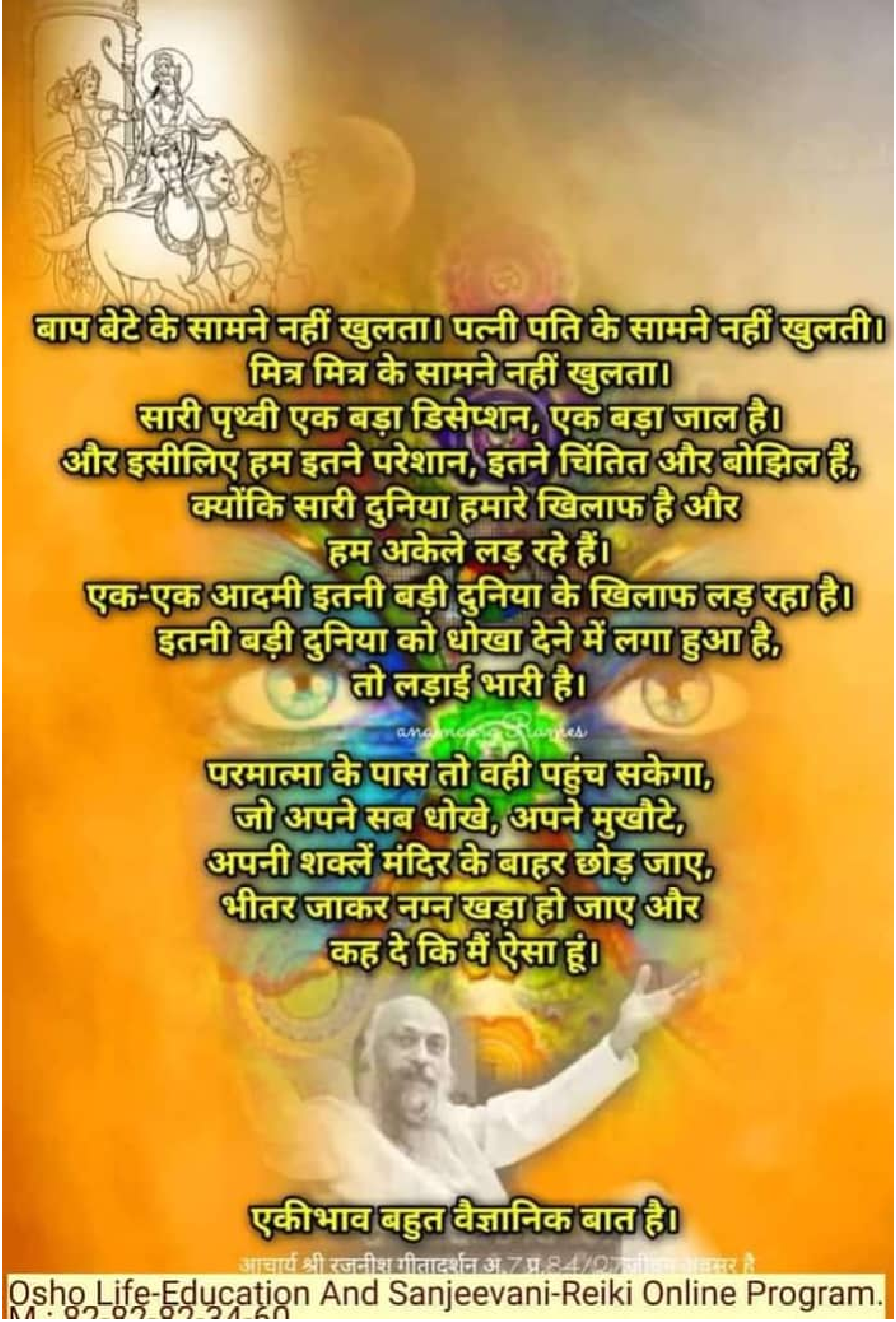
बाप बेटे के सामने नहीं खुलता। पत्नी पति के सामने नहीं खुलती।
मित्र मित्र के सामने नहीं खुलता।
सारी पृथ्वी एक बड़ा डिसेप्शन, एक बड़ा जाल है।
और इसीलिए हम इतने परेशान, इतने चिंतित और बोझिल हैं,
क्योंकि सारी दुनिया हमारे खिलाफ है और
हम अकेले लड़ रहे हैं।
एक-एक आदमी इतनी बड़ी दुनिया के खिलाफ लड़ रहा है।
इतनी बड़ी दुनिया को धोखा देने में लगा हुआ है,
तो लड़ाई भारी है।
परमात्मा के पास तो वही पहुंच सकेगा,
जो अपने सब धोखे, अपने मुखौटे,
अपनी शक्लें मंदिर के बाहर छोड़ जाए,
भीतर जाकर नग्न खड़ा हो जाए और
कह दे कि मैं ऐसा हूं।
एकीभाव बहुत वैज्ञानिक बात है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.
Osho Life-Education And Sanjeevani-Reiki Online Program.

CamScanner

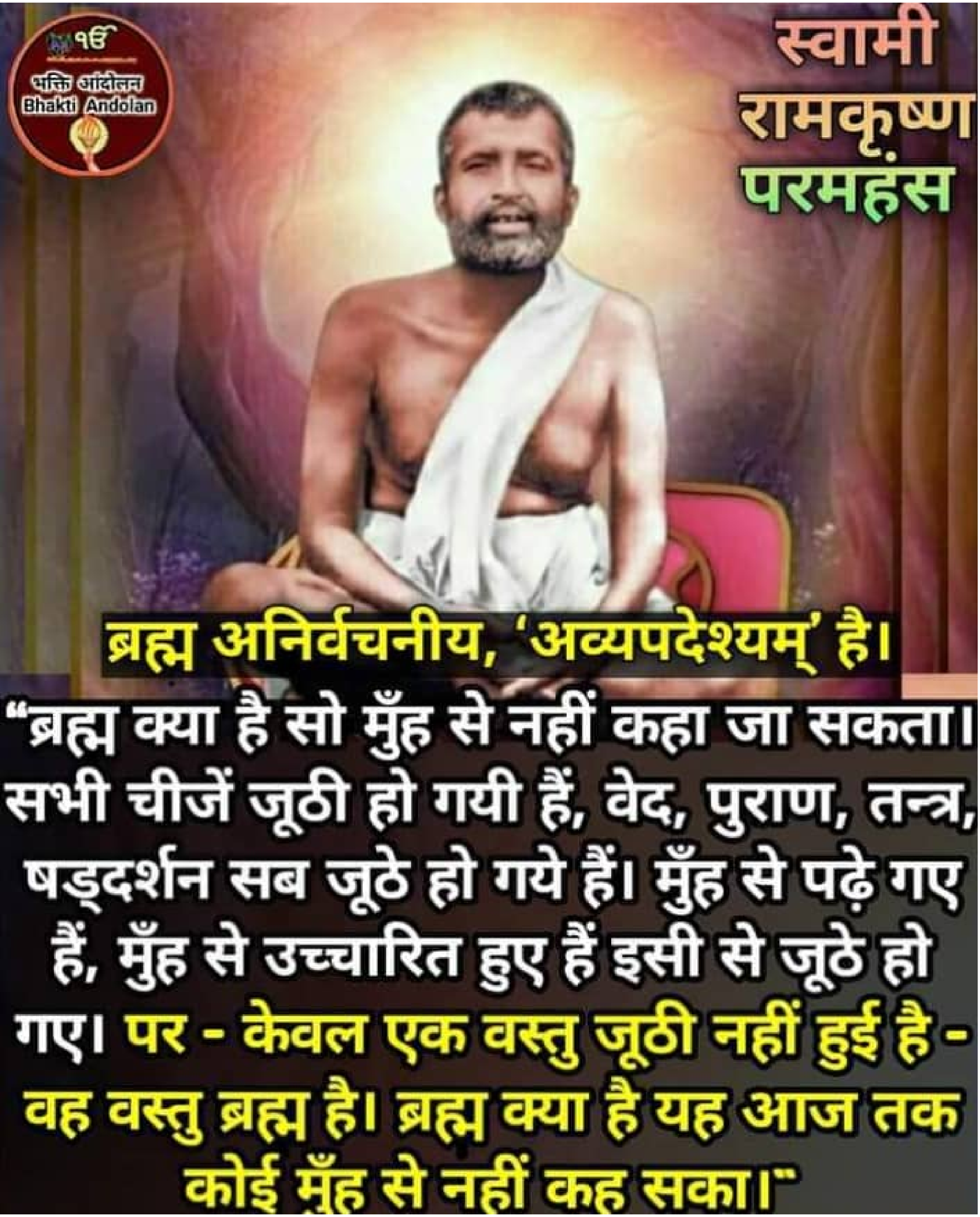


CS CamScanner

# Happy thoughts

## लड़ो या जिओ

जब इंसान पृथ्वी पर आता है तब वह बैक ब्रिज तोड़कर आता है । फिर वह कई साल तक इस पृथ्वी से वापस नहीं जा पाता है । जैसे प्राचीन काल में किसी राज्य की सेना जब युद्ध के लिए कूच करती थी तब ब्रिज (पुल) पार करने के पश्चात उसे तोड़ दिया जाता था ताकि कोई युद्ध भूमि से डरकर पीछे न भाग जाए । सैनिकों के पास दो ही विकल्प बचते थे । लड़ो या मरो । उसी तरह इंसानी शरीर मिलना यानी बैक ब्रिज का टूटना है ।

बैक ब्रिज तोड़कर पृथ्वी पर आने के बाद लोगों के पास दो ही विकल्प बचते हैं- लड़ो या जीओ । मगर इंसान को लड़ना और मरना, ये दो ही बातें याद रहती हैं, जीनेवाली बात वह भूल जाता है । जिन लोगों को आत्महत्या के विचार आते हैं, उन्हें बहुत अच्छे ढंग से समझ लेना चाहिए कि वह बैक ब्रिज तोड़कर पृथ्वी पर आए हैं इसलिए उन्हें लड़ना है । यहाँ पर लड़ने का मतलब किसी सेना के साथ लड़ना नहीं है बल्कि यहाँ समझ और तोलू मन की लड़ाई है । यह लड़ाई समझ की है, तलवार की नहीं । इस लड़ाई में विवेक की तलवार और समझ की ढाल का उपयोग करना है । विवेक की तलवार से जब इंसान लड़ेगा तब वह सच्चे अर्थों में जीवन बनकर जीएगा ।

अगर आप अकल का इस्तेमाल नहीं करेंगे तो आपके जीवन में कल-कल, मन की बड़-बड़ और उलझनों की गड़बड़ चलती ही रहेगी । जब इंसान बीते हुए कल और आनेवाले कल का गलत इस्तेमाल करता है तब वह वर्तमान में रहना बंद कर देता है । इंसान को चाहिए कि वह कल का इस्तेमाल करे, कल उसका इस्तेमाल न करे । इंसान यदि वर्तमान में नहीं रह पाता तो इसका मतलब है कि कल उसका इस्तेमाल कर रहा है, वह अकल से कल का इस्तेमाल नहीं कर रहा है ।...सरश्री

CamScanner

*कोई तारीफ करे तो तुरंत नाचने मत लग जाइए, याद रखें तारीफ के पुल के नीचे मतलब की नदी बहती है।

CamScanner

CS CamScanner

भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
स्वामी रामकृष्ण परमहंस
जिस प्रकार मिट्टी के खिलौने का हाथी या फल देखना असली हाथी या फल की याद दिलाते हैं, उसी प्रकार ईश्वर के चित्र और मूर्तियाँ भी उस परमात्मा की याद दिलाते हैं जोकि सनातन और सर्वव्यापी है।

CamScanner

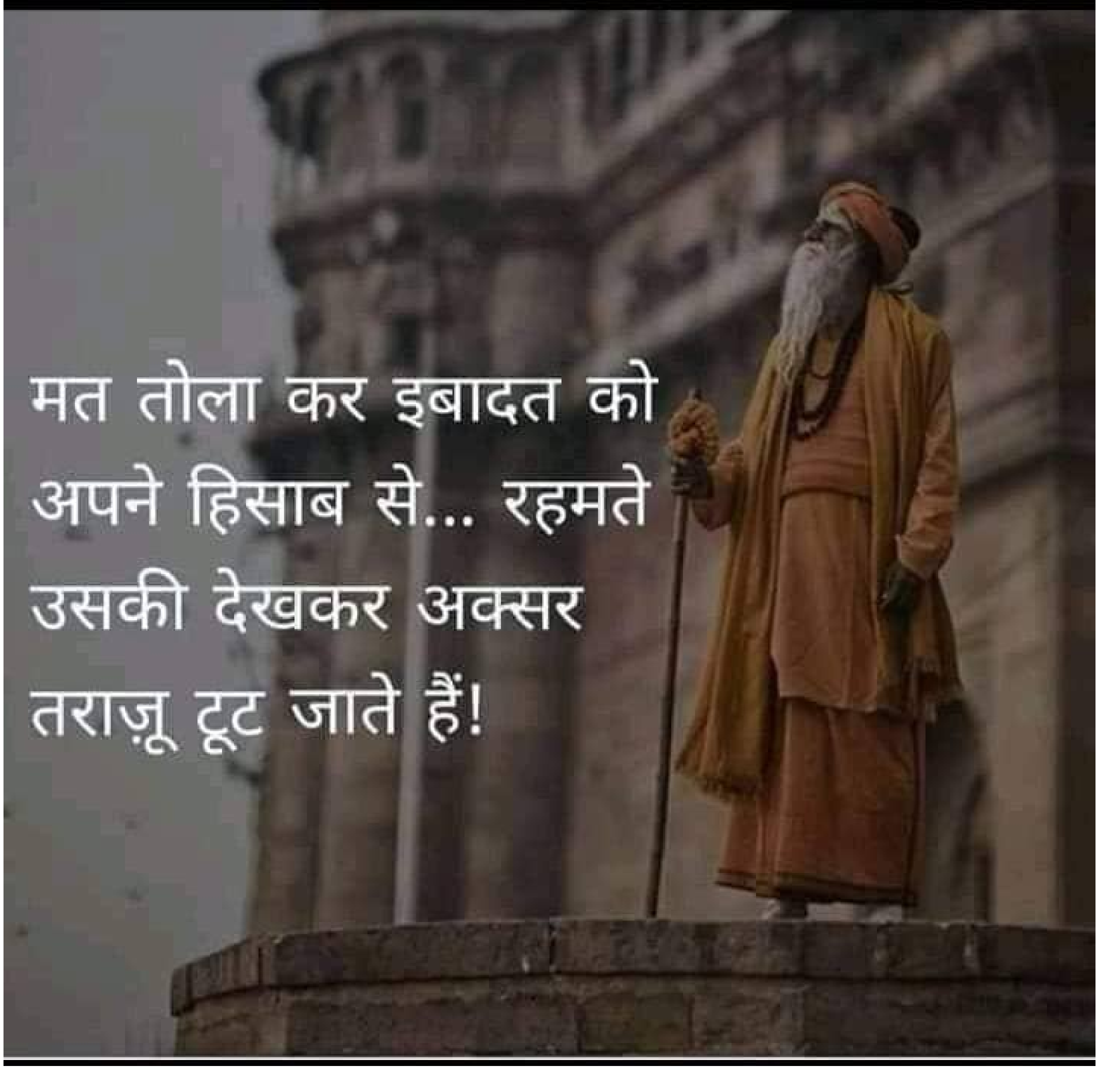


CamScanner

जिस दिन तुम
ये जान लोगे की,
यहां स्वयं को
जानने के अलावा,
कुछ भी जानना,
बेकार है, उस दिन से
आनंद के द्वार
खुल जायेगे,

CamScanner

3:08 pm 0 KB/s 35%

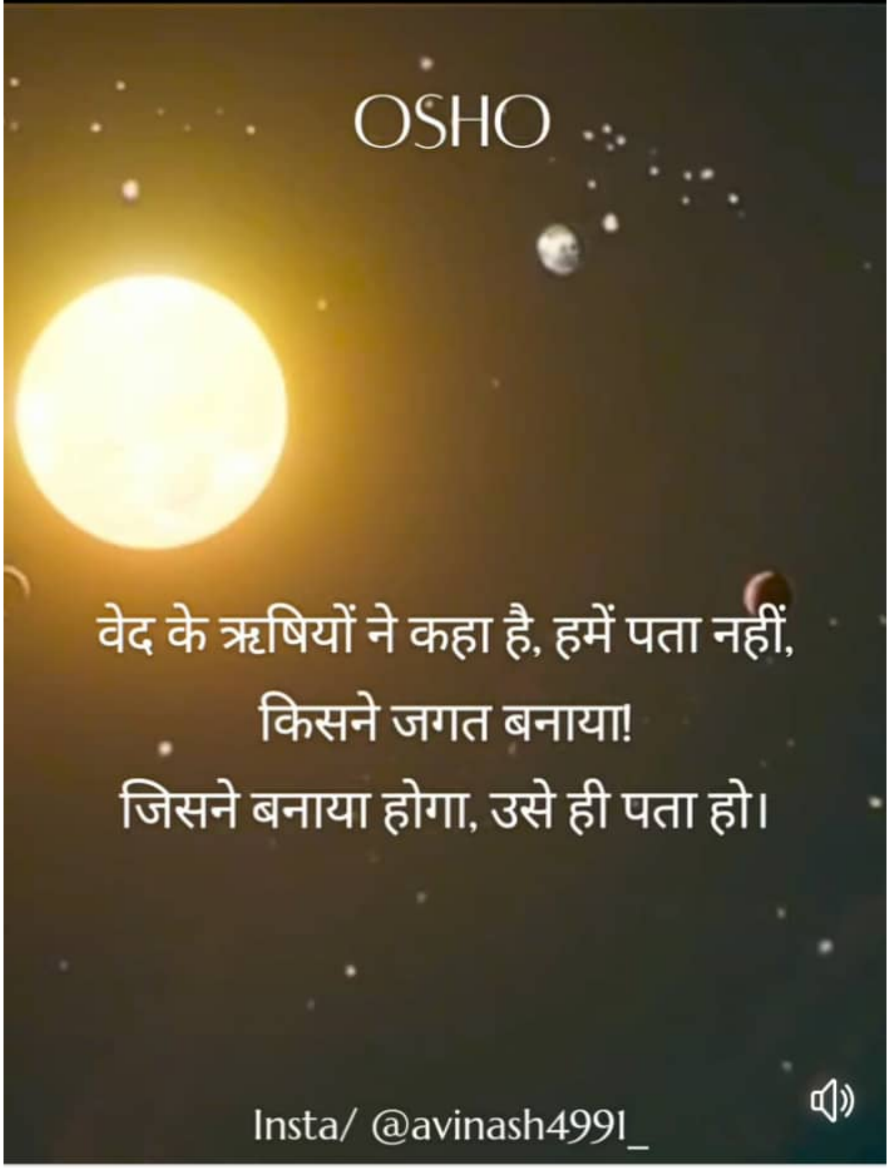


63 · 1 comment • 104 shares • 5.9K views

Like · Comment · Share

**ओशो - जीवन-मृत्यु**
दिनेश कौशिक · 1h ·

CamScanner

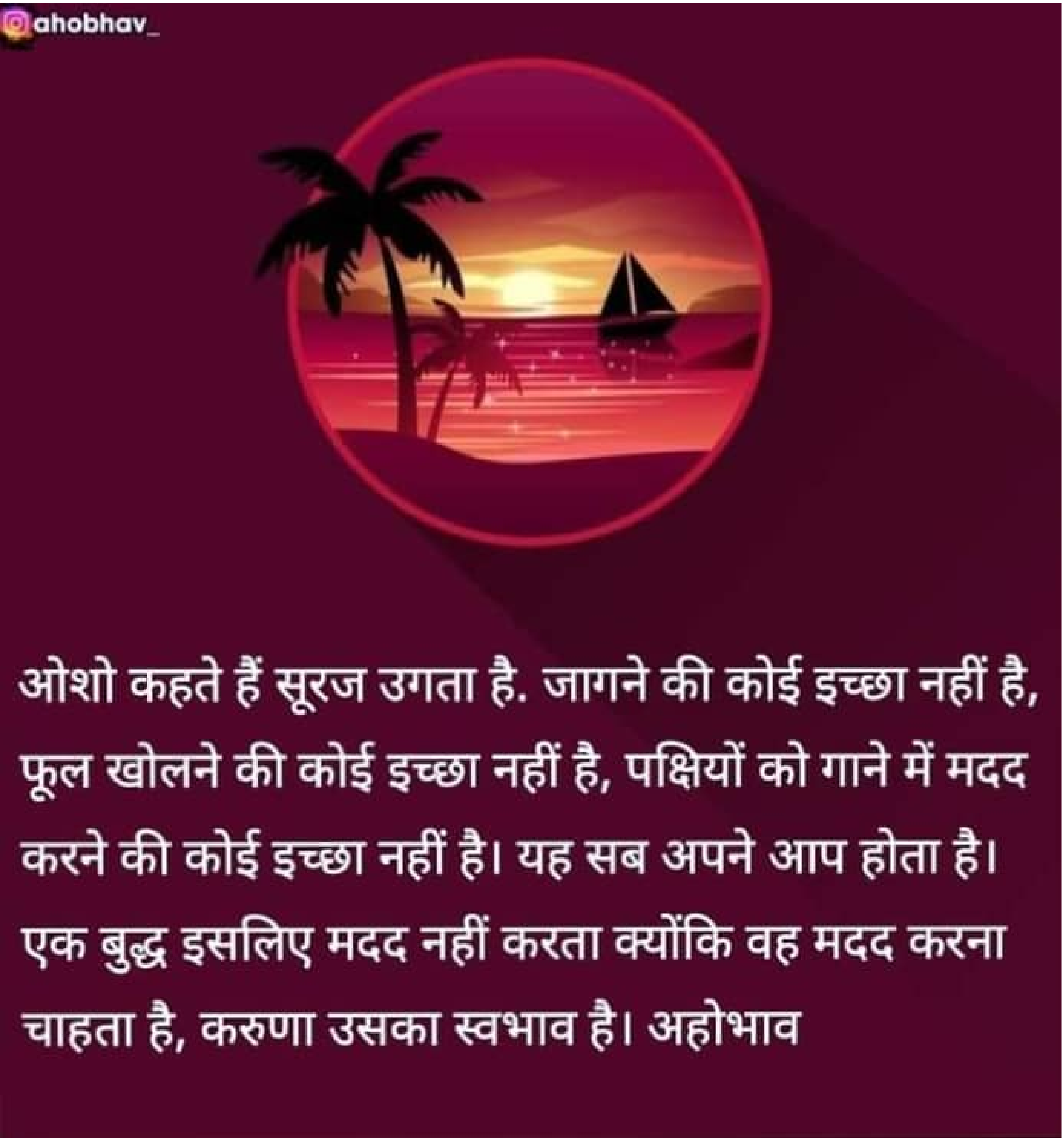
@ahobhav_
ओशो कहते हैं सूरज उगता है. जागने की कोई इच्छा नहीं है,
फूल खोलने की कोई इच्छा नहीं है, पक्षियों को गाने में मदद
करने की कोई इच्छा नहीं है। यह सब अपने आप होता है।
एक बुद्ध इसलिए मदद नहीं करता क्योंकि वह मदद करना
चाहता है, करुणा उसका स्वभाव है। अहोभाव

CamScanner

11:32 am 2 KB/s 4G 62%
facebook

मेरा दिमाग खराब है। मैं किसी बच्चे के साथ न खेलता, अपनी उम्र के बच्चों के साथ मैं कोई बातचीत नहीं करता, मुझे वे सब बुद्धू दिखाई देते और उनके सब काम मूर्खतापूर्ण।

मैंने कभी किसी फुटबाल टीम, वालीवाल टीम या हाकी टीम में भाग नहीं लिया। वे सब लोग मुझे सनकी मालूम होते। और जैसे-जैसे मैं बड़ा होने लगा मुझे तो सारी दुनिया ही पागल दिखाई देने लगी। अंतिम वर्ष में जब मैं इक्कीस वर्ष का था, मेरा नर्वस ब्रेक-डाउन होने लगा। स्वभावत: मेरे परिवार के लोग, मेरे मित्र, मेरे प्रोफेसर, कुछ कुछ समझने लगे कि मैं दूसरे बच्चों से इतना अलग क्यों हूं, क्यों मैं आंखे बंद करके घंटों बैठा रहता हूं, क्यों मैं नदी के किनारे बैठकर घंटों आकाश की ओर देखता रहता हूं? कभी-कभी तो सारी रात ऐसे ही बीत जाती। स्वभावत: जो लोग इन बातों को समझ नहीं सकते थे, उन लोगों ने समझा कि मैं पागल हो गया हूं।

अपने ही घर में मैं अनुपस्थित जैसा रहने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने मुझसे कुछ भी पूछना बंद कर दिया और मेरी उपस्थिति का उन्हें आभास ही नहीं रहा।और मुझे यह बहुत अच्छा लगा कि मैं बिल्कुल न कुछ हो गया हूं, शून्य हो गया हूं, अनुपस्थित हो गया हूं। वह एक साल बहुत महत्त्वपूर्ण था। मुझे शून्य ने और खालीपन ने घेर रखा था। संसार से मेरा सम्पर्क टूट गया था।

अगर कोई मुझे नहाने की याद दिलाता, तो मैं घंटों नहाता रहता। तब दरवाजे को खटखटा कर कोई कहता--अब बाथरूम से बाहर निकलो, तुमने तो एक महीने के लिये स्नान कर लिया। अगर कोई मुझे खाने की याद दिलाता तो मैं खा लेता, नहीं तो कईं दिन बीत जाते और मैं खाना ही न खाता। मैं उपवास नहीं कर रहा था, मुझे उपवास करने या खाने का कोई विचार ही नहीं आता। मुझे तो केवल एक ही धुन थी- अपने भीतर गहरे से गहरे जाने की। और वह द्वार बहुत ही चुम्बकीय था, आकर्षक था। उसका खिंचाव बहुत तीव्र था, ठीक "ब्लैक-होल" जैसा।

-ओशो

CamScanner

11:32 am 2 KB/s 62%

बस मेरी स्थिती भी ऐसी ही थी। एक वाक्य को पूरा करना भी मुश्किल होता था। मैं अपने आपको एक कमरे में बंद रखता। और किसी से बात नहीं करता, क्योंकि अगर मैं कुछ कहता तो उससे मेरा पागलपन प्रकट हो जाता। एक साल तक यही स्थिती थी। मैं फर्श पर लेटे-लेटे छत की ओर देखता रहता और एक से सौ तक की गिनती करता और फिर दोबारा सौ से एक तक गिनता। उस समय गिनती करना भी बहुत बड़ा काम था। मैं बार-बार भूल जाता। मुझे सामान्य स्थिति में  वापिस आने के लिये एक साल लगा।

आखिर वह घटना घट गई। यह एक चमत्कार था। और मेरे लिये बहुत मुश्किल था, क्योंकि मेरा पथ-प्रदर्शन करने वाला कोई नहीं था। कोई भी मुझे यह बताने वाला नहीं था कि मैं कहां जा रहा हूं, और क्या हो रहा है? सब लोग मेरी इस स्थिती से परेशान हो रहे थे। मेरे अध्यापक, मेरे मित्र, मेरे शुभचिन्तक, सब लोग बार-बार यही पूछते--कि मैं क्या कर रहा हूं? किन्तु मैं तो कुछ भी नहीं कर रहा था। जो हो रहा था, वह मेरे बस के बाहर था। मैंने अन्जाने किसी द्वार पर दस्तक दे दी थी--अब वह द्वार खुल गया था। मैं बहुत वर्षों से ध्यान लगा रहा था, चुपचाप बैठता और कुछ नहीं करता।

धीरे-धीरे मैं उस अवकाश में प्रवेश करने लगा, उस हृदय-अवकाश में, जहां तुम होते तो हो, किन्तु कुछ भी नहीं करते। तुम केवल उपस्थिती मात्र और द्रष्टा हो जाते हो। तुम्हें दर्शक भी नहीं कहा जाता, क्योंकि तुम उपस्थिती मात्र रह जाते हो। इस स्थिती का वर्णन करने के लिये कोई भी शब्द उपयुक्त नहीं है, क्योंकि हर शब्द से यह ध्वनि निकलती है कि कुछ किया  जा रहा है। नहीं, मैं कुछ नहीं कर रहा था। मैं लेटता, बैठता, चलता, परन्तु गहराई में कोई करने वाला नहीं था, कोई कर्ता नहीं था। मेरी सारी महत्वाकांक्षाएं खो गई थीं। कुछ भी होने की या कहीं पहुंचने की या परमात्मा या निर्वाण को प्राप्त करने की कोई इच्छा नहीं थी।

मैं निपट अकेला रह गया था। वह खालीपन था, और खालीपन व्यक्ति को पागल बना देता है। परन्तु यह खालीपन ही परमात्मा का एकमात्र द्वार है। अर्थात जो पागल होने को राजी हैं, वे ही सत्य को उपलब्ध होते हैं। समाधि के इस द्वार की खोज मैं बचपन से कर रहा था, पिछले जन्म

CamScanner

11:32 am 3 KB/s VoLTE 4G 62%

एक साल तक मैं ऐसी ही स्थिती में रहा...एक साल तक मेरी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। एक साल तक मुझे अपने आप को जीवित रखना बहुत मुश्किल हो गया था- यह बहुत मुश्किल था क्योंकि मुझे भूख ही नहीं लगती थी। बिना खाये-पीये कई दिन बीत जाते, क्योंकि न मुझे भूख लगती थी न प्यास। मैं जबरदस्ती अपने आपको खाना खिलाता और पानी पिलाता। शरीर का तो जैसे अस्तित्व ही नहीं रहा। यह जानने के लिये कि मैं अभी शरीर में हूं या नहीं, मुझे अपने शरीर पर बार-बार चिकूटी भरनी पड़ती या अपने सिर को दीवार पर मारता और जब दर्द होता तो मुझे सिर का अहसास होता और शरीर को थोड़ा महसूस करता। हर सुबह और शाम मैं आठ-आठ मील की दौड़ लगाता। लोग समझते कि मैं पागल हो गया हूं- रोज सोलह मील क्यों दौड़ता हूं? अपने आपसे सम्पर्क बनाए रखने के लिये मैं यह सब कर रहा था, और नया जो घट रहा था, उसकी आदत डाल रहा था।

मैंने अपने आपको अपने भीतर बिल्कुल बंद कर लिया। किसी से भी बात न करता, क्योंकि एक वाक्य भी बोलना मेरे लिये मुश्किल था। बात करते समय मैं वाक्य के बीच में भूल जाता कि मैं क्या बोल रहा था, चलते-चलते--आधा रास्ता चलने के बाद मैं भूल जाता कि मैं कहां जा रहा था? फिर मुझे वापिस आना पड़ता। किताब पढ़ने लगता तो पचास पृष्ठ पढ़ लेने के बाद मुझे यह सोचना पड़ता कि मैं क्या पढ़ रहा था? मुझे कुछ याद नहीं रहता। मेरी स्थिति तो ऐसी थी--

मनोवैज्ञानिक के आफिस के दरवाजे को धड़ाम से खोलते हुए एक आदमी भीतर आया और उसने चिल्लाते हुए कहा, "डाक्टर! आपको मेरी मदद करनी पड़ेगी। ऐसा लगता है कि मेरा दिमाग खराब हो रहा है। मुझे कुछ याद नहीं रहता। एक साल पहले की बात तो मुझे याद ही नहीं--कल जो हुआ वह भी मैं भूल जाता हूं। सचमुच मेरा दिमाग खराब हो रहा है।"
"हूँ..." मनोविश्लेषक ने सोचते हुए कहा, "इस समस्या का एहसास तुम्हें सबसे पहले कब हुआ?"
"कौनसी समस्या?" उस आदमी ने हैरानी से पूछा।

बस मेरी स्थिती भी ऐसी ही थी। एक वाक्य को पूरा करना भी मुश्किल

CamScanner

*ओशो समाधि के एक वर्ष पूर्व*

बुद्ध ने कहा है कि--गुरु को खोज लेने वाला व्यक्ति बहुत भाग्यशाली है। परन्तु मैं तुम लोगों जैसा भाग्यशाली नहीं था। मैं बिना किसी गुरु के ही काम कर रहा था। मैंने खोज की थी, लेकिन मुझे कोई मिला ही नहीं। मैंने बहुत देर तक खोज की थी, किन्तु असफल रहा। सद्‌गुरु का मिलना दुर्लभ है। ऐसे सिद्ध-पुरुष का मिलना मुश्किल है जो नाकुछ अर्थात शून्यवत हो गया हो। जो पूर्णतः अनुपस्थित हो, ऐसी उपस्थिती की पहचान कैसे की जा सकती है? ऐसे व्यक्ति को खोजना बहुत कठिन है जो दिव्यता का द्वार बन गया हो- दिव्यता का ऐसा द्वार जो तुम्हारे लिये बाधा नहीं बनेगा और जिसमें से तुम गुजर जाओगे।

सिख अपने मन्दिर को गुरुद्वारा कहते हैं- अर्थात गुरु का द्वार। गुरु का सही अर्थ यही है- द्वार। जीसस बार-बार यही कहते हैं- मैं द्वार हूं, मैं रास्ता हूं, मैं सत्य हूं;  मेरे पीछे-पीछे आओ और मुझमें से गुजर जाओ। जब तक तुम मुझमें से गुजरोगे नहीं, तब तक तुम कहीं पहुंच नहीं सकोगे। हां कभी-कभी साधक को बिना गुरु के काम करना पड़ता है। गुरु न मिलने के कारण साधक की यात्रा बहुत खतरनाक हो जाती है।

एक साल तक मैं ऐसी ही स्थिती में रहा...एक साल तक मेरी समझ में ही नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। एक साल तक मुझे अपने आप को जीवित रखना बहुत मुश्किल हो गया था- यह बहुत मुश्किल था क्योंकि मुझे भूख ही नहीं लगती थी। बिना खाये-पीये कई दिन बीत जाते, क्योंकि न मुझे भूख लगती थी न प्यास। मैं जबरदस्ती अपने आपको खाना खिलाता और पानी पिलाता। शरीर का तो जैसे अस्तित्व ही नहीं रहा। यह जानने के लिये कि मैं अभी शरीर में हूं या नहीं, मुझे अपने शरीर पर बार-बार चिकूटी भरनी पड़ती या अपने सिर को दीवार पर मारता और जब दर्द होता तो मुझे सिर का अहसास होता और शरीर को थोड़ा महसूस करता। हर सुबह और शाम मैं आठ-आठ मील की दौड़ लगाता। लोग समझते कि मैं पागल हो गया हूं- रोज सोलह मील क्यों दौड़ता हूं? अपने आपसे सम्पर्क बनाए रखने के लिये मैं यह सब कर रहा था, और नया जो घट रहा था, उसकी आदत डाल रहा था।

मैंने अपने आपको अपने भीतर बिल्कुल बंद कर लिया। किसी से भी

CamScanner

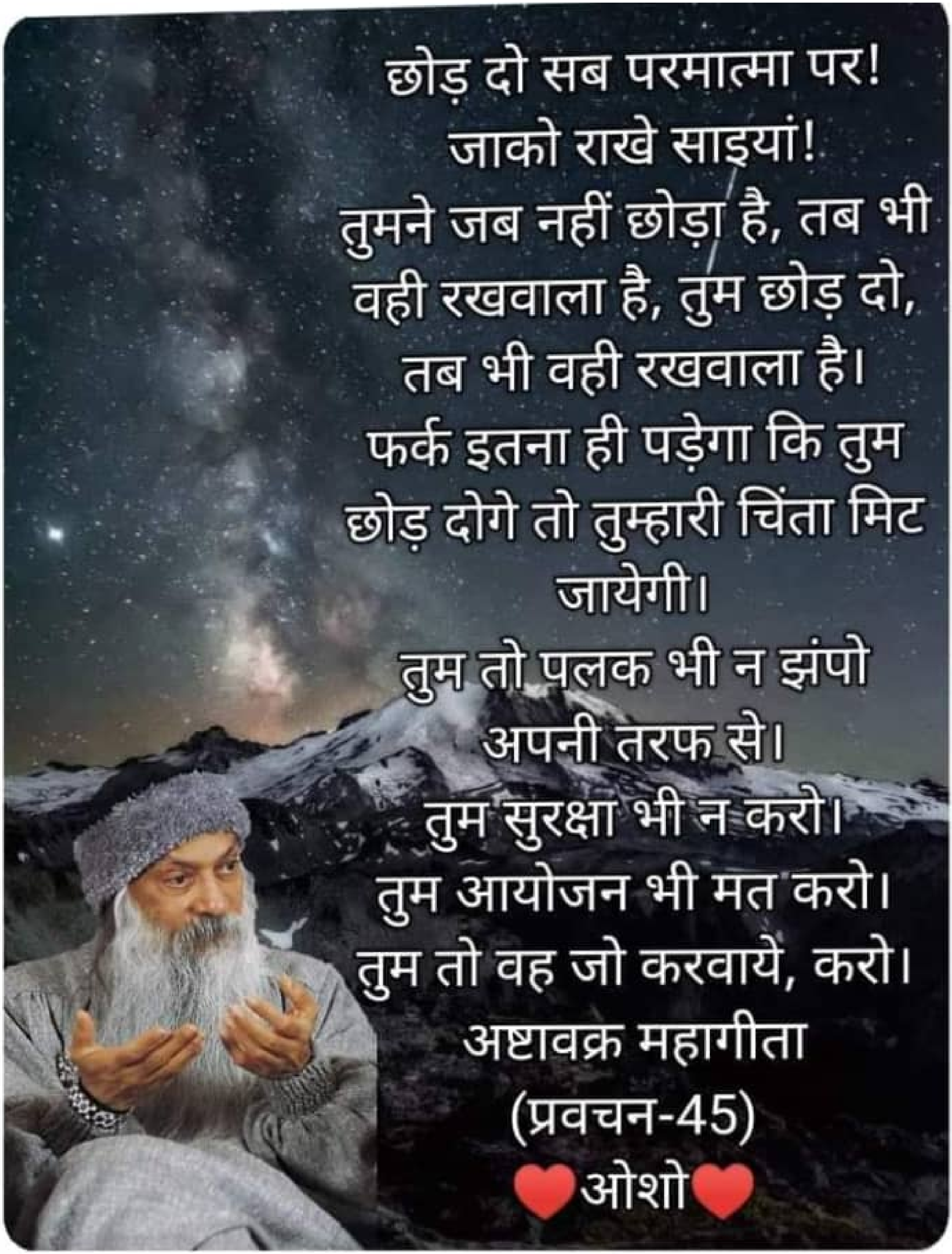
छोड़ दो सब परमात्मा पर!
जाको राखे साइयां!
तुमने जब नहीं छोड़ा है, तब भी वही रखवाला है, तुम छोड़ दो, तब भी वही रखवाला है।
फर्क इतना ही पड़ेगा कि तुम छोड़ दोगे तो तुम्हारी चिंता मिट जायेगी।
तुम तो पलक भी न झंपो अपनी तरफ से।
तुम सुरक्षा भी न करो।
तुम आयोजन भी मत करो।
तुम तो वह जो करवाये, करो।
अष्टावक्र महागीता
(प्रवचन-45)
ओशो

CamScanner

# "भक्त भाव"

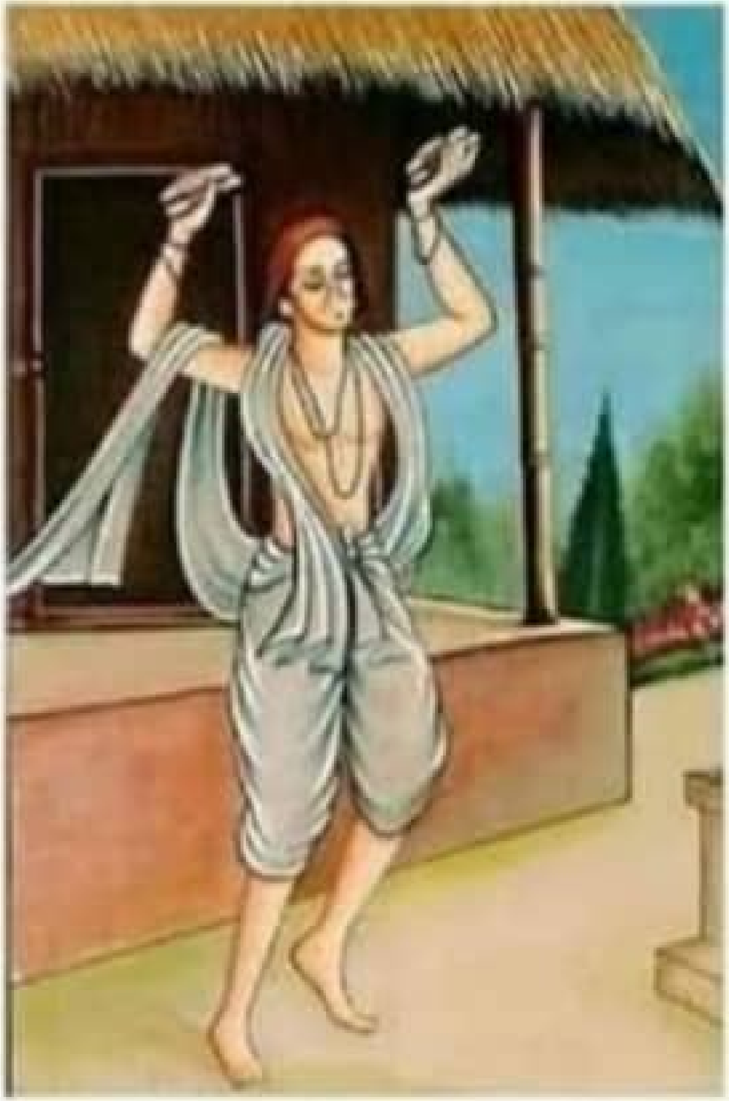

एक भक्त थे, उन्होंने 20 साल तक लगातार भगवत गीता जी का पाठ किया। अंत में भगवान ने उनकी परिक्षा लेते हुऐ कहा:- अरे भक्त ! तू सोचता है की मैं तेरे गीता के पाठ से खुश हूँ, तो ये तेरा वहम है। मैं तेरे पाठ से बिलकुल भी प्रसन्न नही हुआ। जैसे ही भक्त ने सुना तो वो नाचने लगा, और झूमने लगा। भगवान ने कहा:- अरे! मैंने कहा कि मैं तेरे पाठ करने से खुश नही हूँ और तू नाच रहा है। वो भक्त बोला:- "भगवन्! आप खुश हो या नहीं हो ये बात मैं नही जानता। लेकिन मैं तो इसलिए खुश हूँ की आपने मेरा पाठ कम से कम सुना तो सही, इसलिए मैं नाच रहा हूँ।"

"जय जय श्री राधे"

CS CamScanner

11:28 am 33 KB/s VoLTE 4G 63%

Swami Lokeshanand · 4h ·

बात तो साधारण सी है, पर नाम जप न किया हो तो बड़ी कठिन मालूम पड़ती है। यदि यह बात बिना वाद विवाद किए, सीधे ही मान ली जाए, तो न केवल हम दुख से छूट जाएँ, जगत के बंधन से भी छूट जाएँ। माने जब तक शरीर रहेगा, तब तक दुख नहीं होगा और शरीर छूटने पर दोबारा शरीर में आना नहीं पड़ेगा। वह बात है-

"भगवान जो करें, जैसा करें, जब करें, वैसा ही होने देने में कल्याण है।"

इसीलिए, क्या होगा? कैसे होगा? कब होगा? यह सब भगवान पर छोड़ कर निश्चिंत हो जाओ। विपत्ति के आवेश में आकर पाप मत करो। "इस विपरीत परिस्थिति में ही भगवान का कोई मंगलमय विधान है" ऐसा समझकर शांत हो रहो।

देखो! भय भगवान पर अविश्वास का फल है। यहाँ तो एक सिपाही भी साथ हो तो भय नहीं रहता, तब "सर्वेश्वर भगवान साथ हैं" ऐसी श्रद्धा हो तो भय कैसा?

विचार करो! जब मन में भय होता है तब बाहर भय का कारण बन ही जाता है। प्रेत का भय पहले से मन में होता है तब तो प्रेत बाहर दिखाई देता है। जब मन में किसी भी प्रकार का भय न हो, तब बाहर भय का कारण होने पर भी भय नहीं लगता। तो सब कुछ दृढ़तापूर्वक भगवान पर ही छोड़ देने पर भय कैसा?

यह भी महत्वपूर्ण है कि अभाव के अनुभव से पूर्ति की इच्छा होती है। इच्छा से चेष्टा, और चेष्टा होने पर पुनः नए नए अभाव अनुभव होते हैं। उनकी पूर्ति करते करते आयु बीत जाती है। जिस जीवन से भगवान मिल सकते हों, वह अभावों की पूर्ति में ही बीत जाए, और अभाव फिर भी बना रहे, यह कितनी बड़ी हानि है?

हजार बातों को जान कर, बेकार वाद विवाद करने से क्या प्राप्त होगा? प्राप्त करने योग्य पदार्थ को प्राप्त कर लेने में ही विद्या की पूर्णता है, न कि व्यर्थ वाद विवाद करने में। अरे भैया! रास्ते की बात करना, रास्ते पर चलना नहीं है।

आप तो उन भगवान के भरोसे की चादर तान कर, उन्हीं भगवान की प्राप्ति के लिए, किन्हीं संत का संग करो जिनका ध्यान स्वयं भगवान करते हैं। हाँ! संत तो भगवान का ध्यान करते हैं, पर भगवान किस का ध्यान करते हैं? भगवान संतों का ध्यान करते हैं। संत तो तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाले हैं।

CamScanner

11:27 am 4 KB/s 63%

1d ·

साक्षी को संभालने की कोशिश करना। इस धागे को जितनी देर तक खींच सको, खींचना। जल्दी ही यह खो जाएगा, काम धाम की दुनिया है। पुरानी आदत है मगर इसको रोज-रोज सींचना। यह पौधा धीरे-धीरे बड़ा होगा। दिखाई भी नहीं पड़ेगा कि बड़ा हो रहा है क्योंकि इतने धीमे धीमे बड़ा होगा। लेकिन अचानक तुम पाओगे की दिनभर एक धागे की तरह तुम्हारे अंदर प्रकाश की एक किरण सी बनी रहती है। और वह प्रकाश की किरण तुम्हारे जीवन को रासायनिक रूप से बदल देगी। क्रोध कम आएगा, क्योंकि साक्षी को कैसा क्रोध? मोह कम पकड़ेगा, क्योंकि साक्षी को कैसा मोह। चीजें घटेंगी, सफलता-असफलता होगी, सुख-दुख आएंगे लेकिन तुम कम डांवाडोल होओगे क्योंकि साक्षी को कैसा कंपन? सुख आएगा उसे भी तुम देख लोगे,दुख आएगा उसे भी तुम देख लोग और तुम्हारे भीतर सतत धारा बनी रहेगी कि मैं देखनेवाला हूँ, भोक्ता नहीं हूँ।

कोई भी नहीं कह सकता कि कितना समय लगेगा। तुम्हारी त्वरा,तुम्हारी तीव्रता, सघन आकांक्षा और तुम्हारी अभीप्सा पर निर्भर करेगा। कैसे तुम चलते हो, चींटी की चाल चलते हो या दौड़ते हो क्योंकि धर्म की दुनिया में लोग अक्सर बाराती की चाल चलते है। बाराती की चाल से कहीं पहुंचोगे नहीं। बाराती की चाल ठीक है क्योंकि बारात को कहीं पहुंचना ही नहीं हैं। वे ऐसे ही गांव का चक्कर लगा कर वहीं के वहीं आ जाते हैं।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

CamScanner

11:26 am 5 KB/s 63%

Report ad

**Swami Lokeshanand**
17 Oct ·

धोखे में मत रहो! यौवन जीवन में केवल एक बार आता है। एक बार चला जाए तो फिर वह लौट कर नहीं आता।
इस यौवन की कीमत को समझो। यह बहुत कीमती है। अपने यौवन के समय को व्यर्थ की क्रियाओं में नष्ट मत करो। इसे व्यर्थ की चिंताओं में मत गंवाओ। जो कहीं नहीं पहुँचाती उस दौड़ में मत दौड़ो। इसे तो किसी कीमती कार्य में लगाओ। परमात्मा प्राप्ति में लगाओ।
विचार करो! आज तुम्हारे शरीर में शक्ति है, आँखों में तेज है, मुख पर चमक है, हाथों में बल है। आज तुम चाहो तो पहाड़ों का सीना चीर सकते हो। तूफ़ानों को ललकार सकते हो। सागर की छाती पर सवार हो सकते हो। पर समय आएगा, जब तुम हाथ हिलाना चाहोगे और वह हिलेगा नहीं। पाँव से चलना चाहोगे और वे चलेंगे नहीं।
आज तुम्हारी आँखें आकाश में देखती हैं, पर समय आएगा, जब पास रखी लाठी भी तुम्हें दिखाई न देगी। आज ही साधन करने का समय है। कल न मालूम क्या हो? यह भी नहीं मालूम कि कल आएगा भी या नहीं। इसीलिए बहानेबाजी छोड़ दो।
ध्यान दो! यदि तुम आज ही सन्मार्ग पर नहीं आए, तो कल प्रयत्न करने पर भी नहीं आ पाओगे।
लोकेशानन्द का एक सूत्र है, पाँच-पचास का। यौवन के पाँच वर्ष की असावधानी, और पचास वर्ष कष्ट। या, पाँच वर्ष साधन, और सदा सदा के लिए कष्ट से मुक्ति। चुनाव तुम्हारा है।
अभी समय है, अभी सही समय है, अभी ही समय है, संभल सको तो संभल जाओ। नहीं तो यह यौवन फिर कभी लौट कर नहीं आएगा।

CamScanner

CamScanner

CamScanner

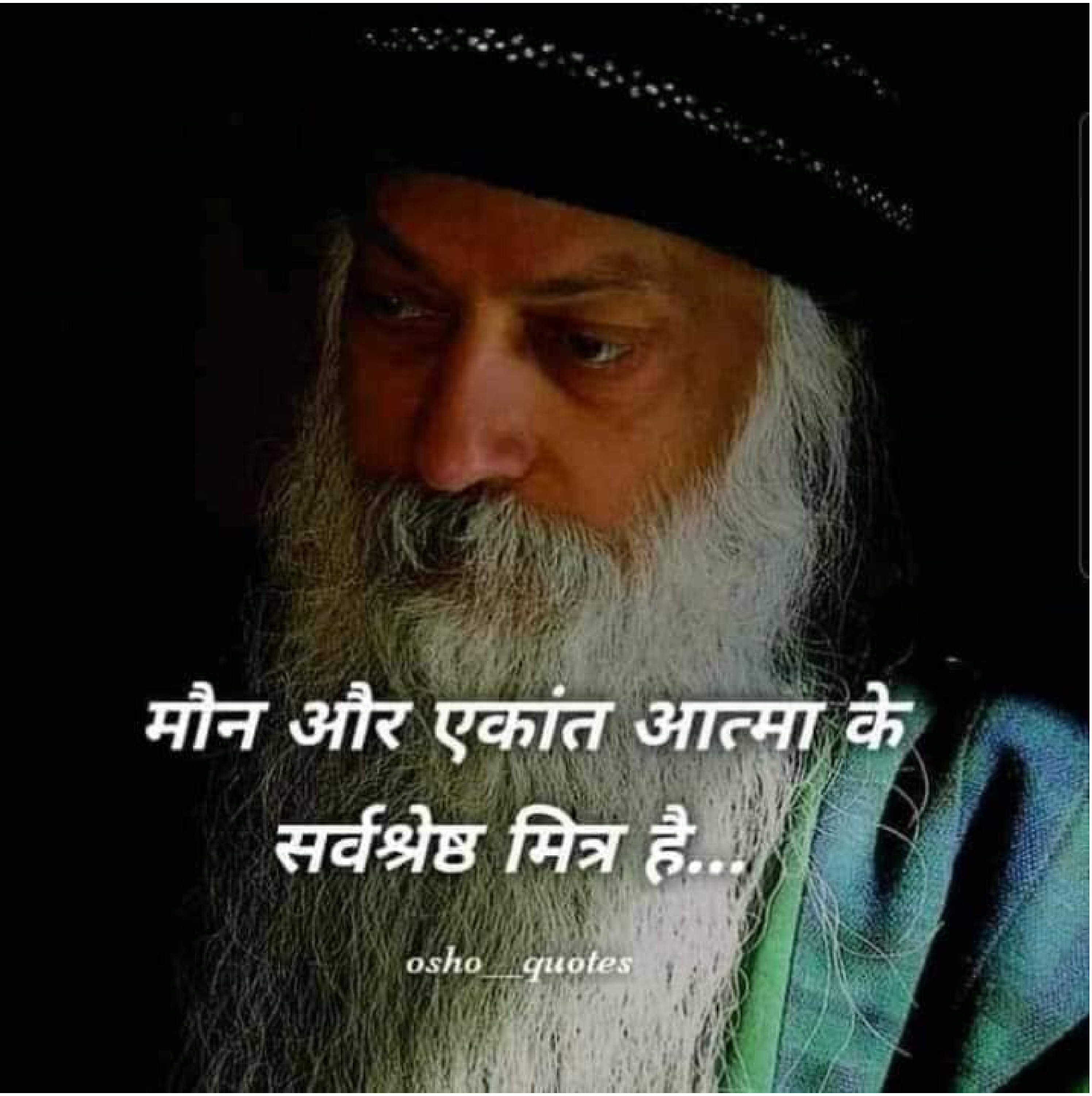


CamScanner

CamScanner

CamScanner

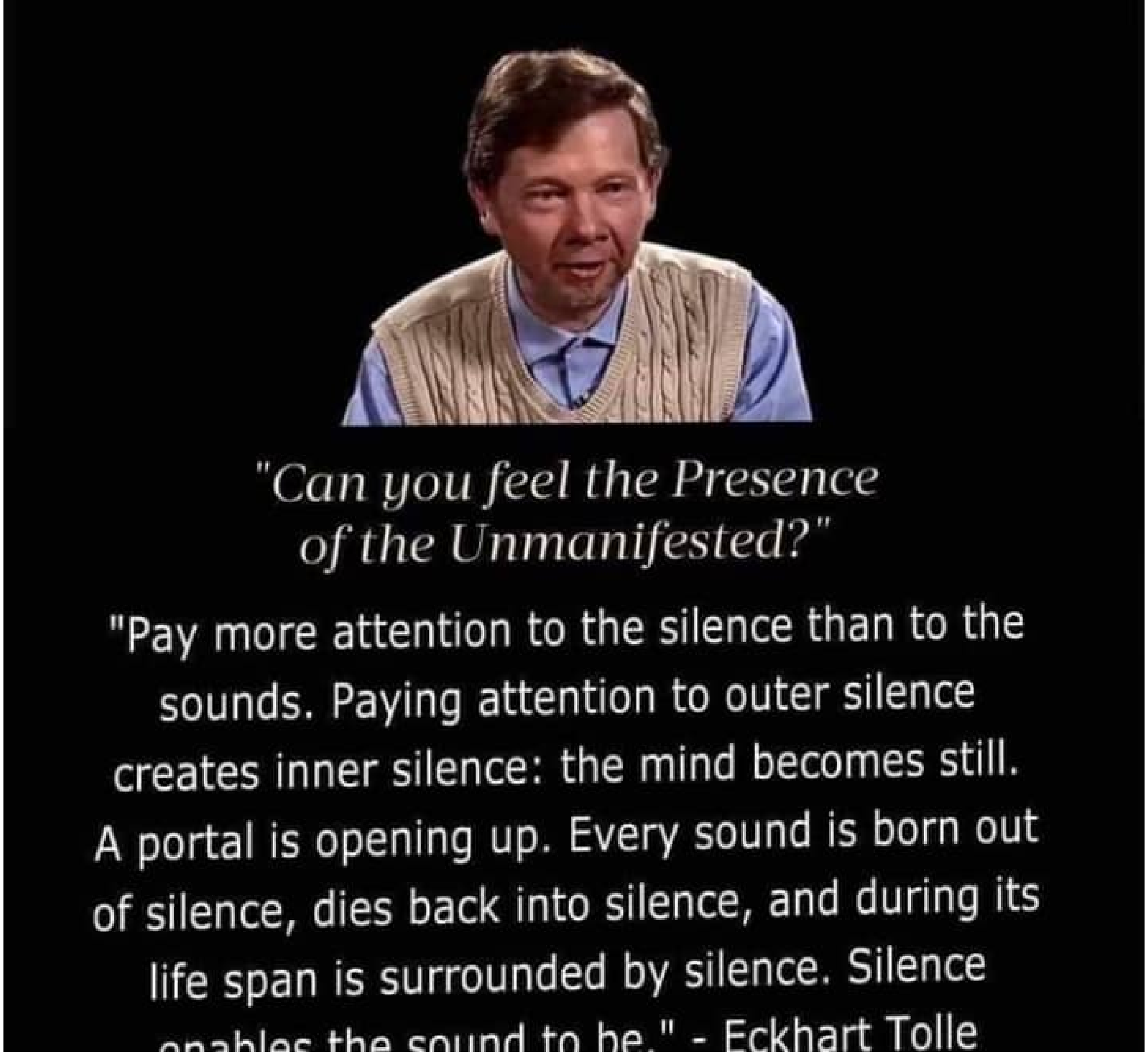
"Can you feel the Presence
of the Unmanifested?"
"Pay more attention to the silence than to the sounds. Paying attention to outer silence creates inner silence: the mind becomes still. A portal is opening up. Every sound is born out of silence, dies back into silence, and during its life span is surrounded by silence. Silence enables the sound to be." - Eckhart Tolle

CamScanner

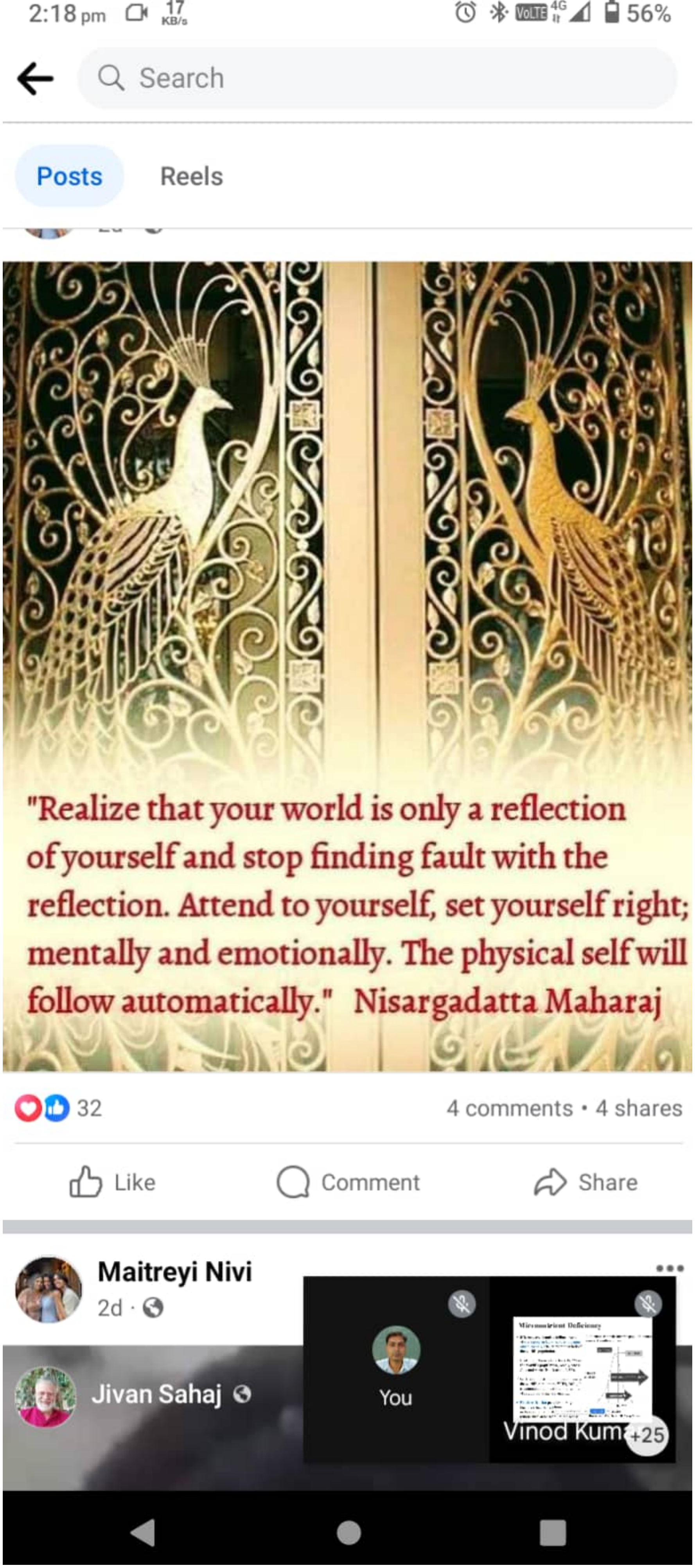
2:18 pm
56%
Search
Posts
Reels
"Realize that your world is only a reflection of yourself and stop finding fault with the reflection. Attend to yourself, set yourself right; mentally and emotionally. The physical self will follow automatically." Nisargadatta Maharaj
32
4 comments • 4 shares
Like
Comment
Share
Maitreyi Nivi
2d ·
Jivan Sahaj
You
Vinod Kum
+25

CamScanner

2:16 pm 56%

Maitreyi Nivi

**Maitreyi Nivi**
7 Jul 2022 ·

Ramana says, "keep quiet"
Poonja ji says, "keep quiet"
Mooji says, "keep quiet"
Osho says, "keep quiet"
Buddha says, "keep quiet"
Eckhart Tolle says,"keep quiet"
Robert Adams says, "keep quiet"

So many masters - I haven't mentioned all of them here - have one essence in their teachings: silence... Isn't it enough to know that silence/awareness is God, formless and everywhere, and we are in it and of it? So, all living beings - human beings, animals, birds, trees - everything is God and that alone is.

~ Maitreyi Nivi (Shoonya)

> रमण कहती है चुप रहो
> पूंजा जी कहते हैं चुप रहो
> मूजी कहते हैं चुप रहो
> ओशो कहते हैं, "चुप रहो"
> बुद्ध कहते हैं चुप रहो
> एकहार्ट टोले कहते हैं, "चुप रहो"
> रॉबर्ट एडम्स कहते हैं, "चुप रहो"
>
> इतने सारे स्वामी - मैंने उन सभी का यहां उल्लेख नहीं किया है - उनकी शिक्षाओं में एक सार है: मौन ...
> क्या यह जानना पर्याप्त नहीं है कि मौन/जागरूकता ईश्वर है,
> निराकार और हर जगह, और
> जीव-जंतु, मनुष्य, पशु, पक्षी
> एकमात्र है।

Write a comment...

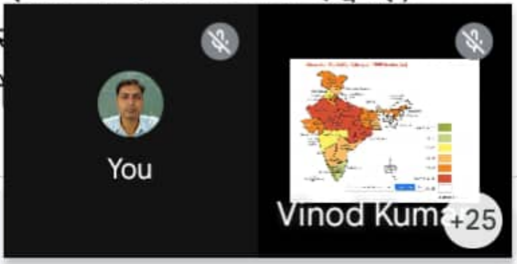


CamScanner

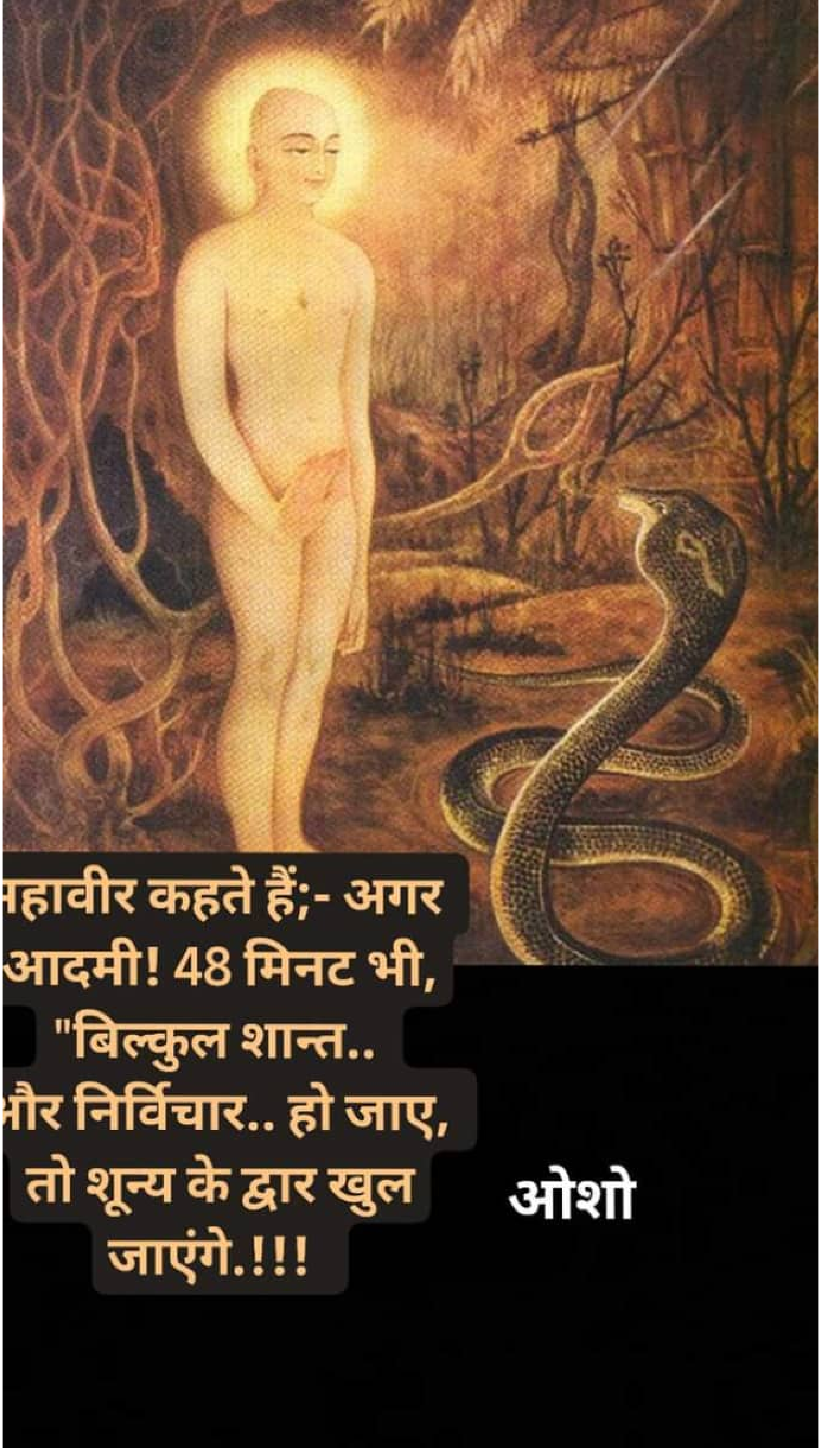

हावीर कहते हैं;- अगर
आदमी! 48 मिनट भी,
"बिल्कुल शान्त..
ौर निर्विचार.. हो जाए,
तो शून्य के द्वार खुल
जाएंगे.!!!
ओशो


CamScanner

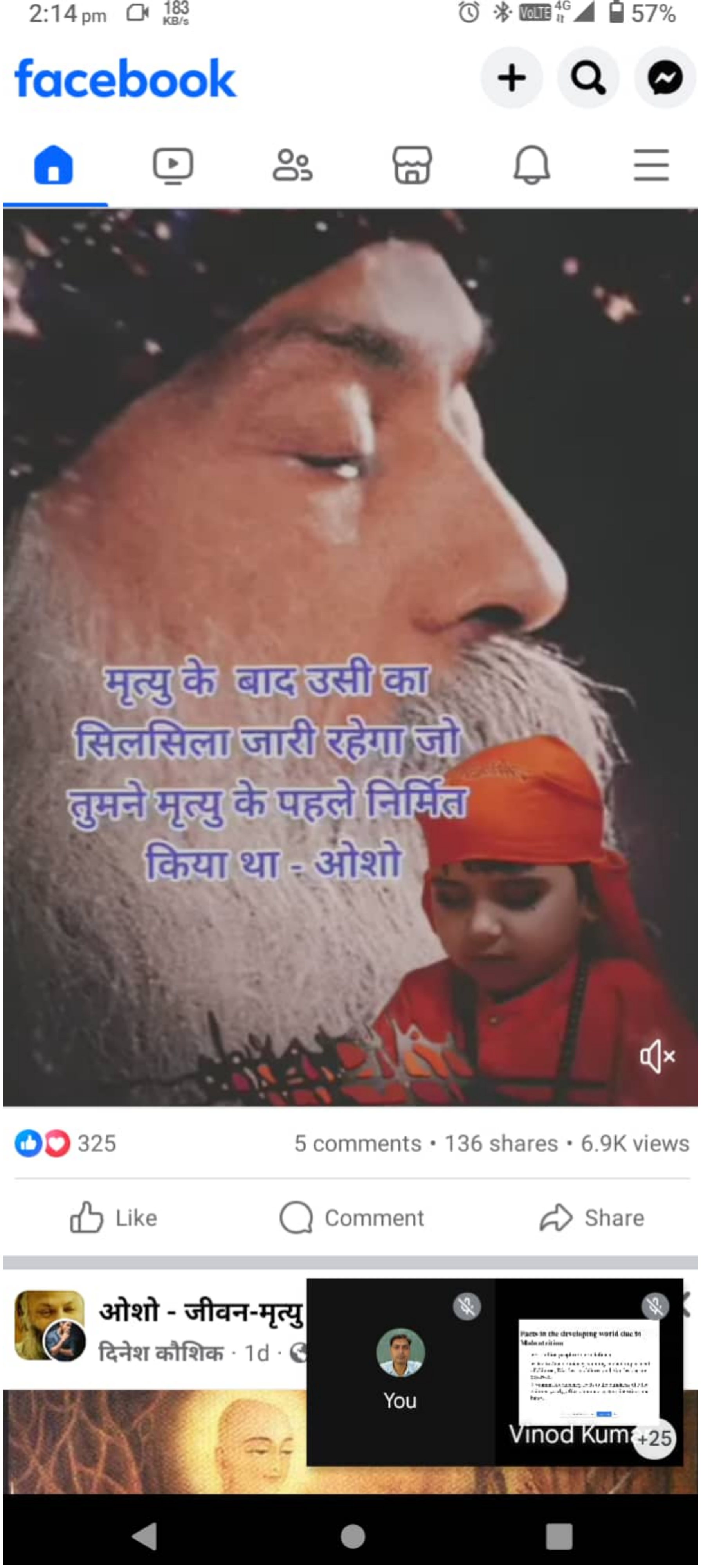
2:14 pm
57%
facebook
मृत्यु के बाद उसी का
सिलसिला जारी रहेगा जो
तुमने मृत्यु के पहले निर्मित
किया था - ओशो
325
5 comments • 136 shares • 6.9K views
Like
Comment
Share
ओशो - जीवन-मृत्यु
दिनेश कौशिक · 1d ·
You
Vinod Kum
+25

CamScanner

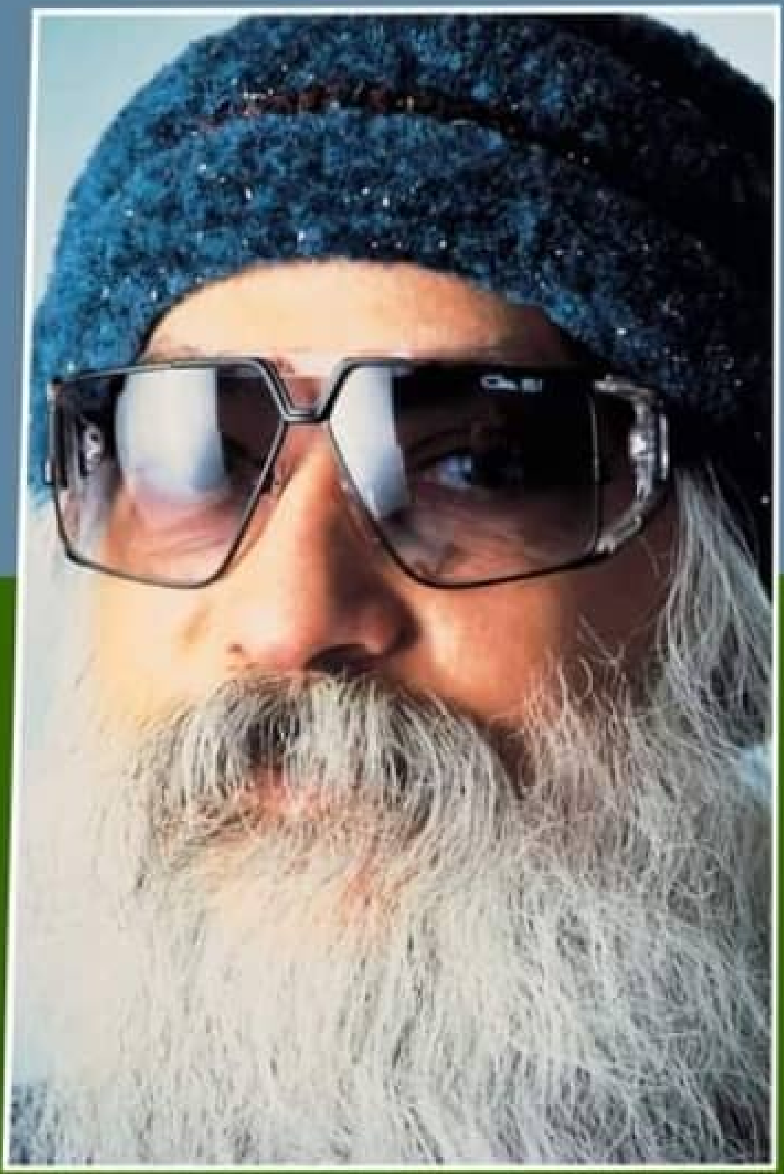

तुम्हारी आंख पर चश्मा है। यह चश्मा तुम्हारे मन का है। यह मन तुम्हें देखने नहीं देता। यह मन तुम्हें गुरुओं को देखने ही नहीं देता, क्योंकि गुरु को देखना मन की मौत का प्रारंभ है ~ ओशो अहोभाव

CamScanner

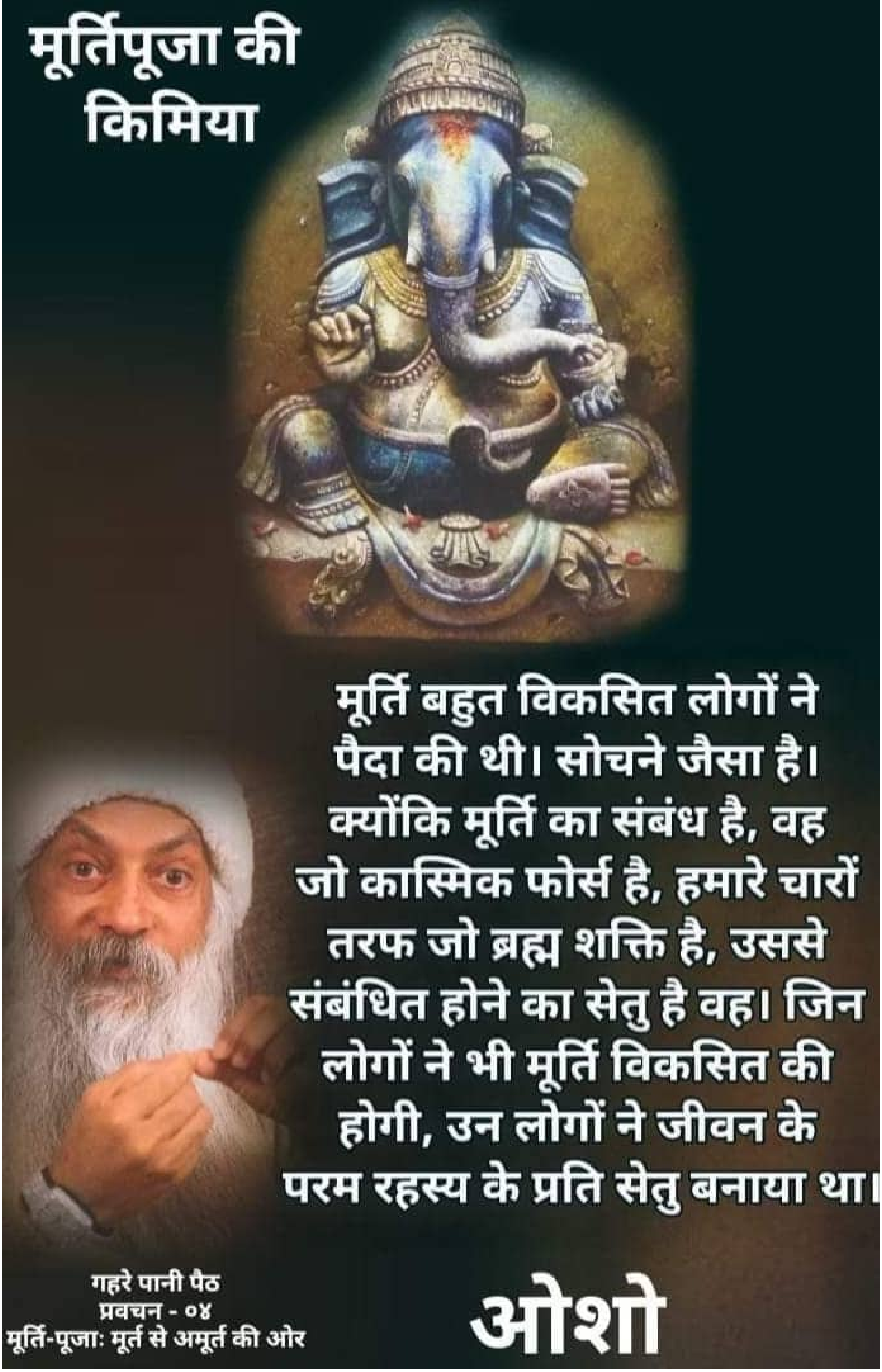
मूर्तिपूजा की किमिया
मूर्ति बहुत विकसित लोगों ने पैदा की थी। सोचने जैसा है। क्योंकि मूर्ति का संबंध है, वह जो कास्मिक फोर्स है, हमारे चारों तरफ जो ब्रह्म शक्ति है, उससे संबंधित होने का सेतु है वह। जिन लोगों ने भी मूर्ति विकसित की होगी, उन लोगों ने जीवन के परम रहस्य के प्रति सेतु बनाया था।
गहरे पानी पैठ
प्रवचन - ०४
मूर्ति-पूजाः मूर्त से अमूर्त की ओर
ओशो

CamScanner

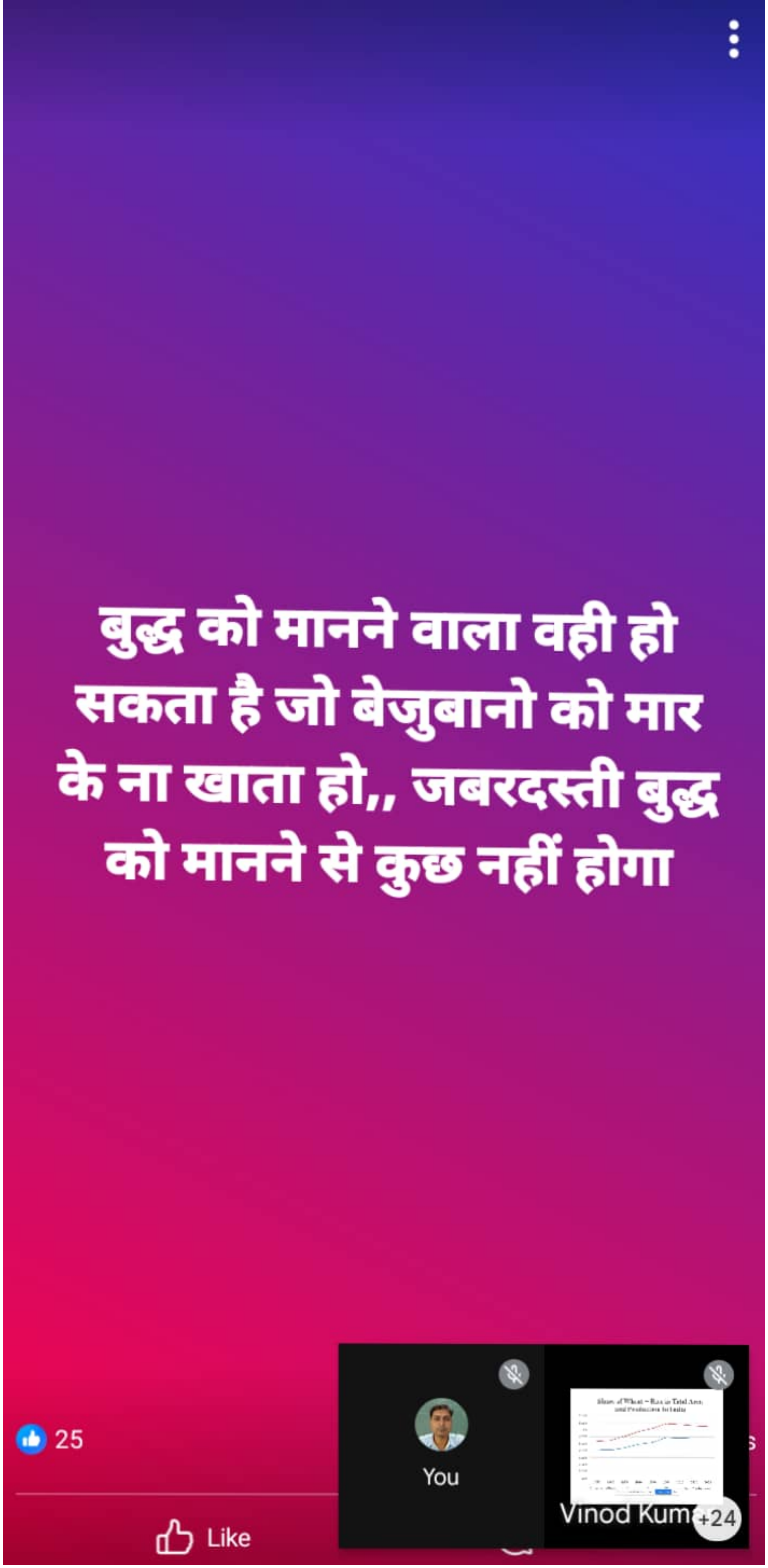
बुद्ध को मानने वाला वही हो
सकता है जो बेजुबानो को मार
के ना खाता हो,, जबरदस्ती बुद्ध
को मानने से कुछ नहीं होगा
25
Like
You
Vinod Kum
+24

CamScanner

ख्याल रखना जो जहां है,
जैसा है
अगर वहीं सुखी नहीं है
फिर कहीं भी सुखी नहीं
हो सकता
@Osho Gyan Hindi English

CamScanner

किसी को वही देना की,
जब वापिस आए तो हंस के ले सको.
बात हो या व्यवहार.

क्यों की,
दुनियां गोल है..
और नियति तय है.

CS CamScanner

ओ'शो मित्र मंडली

Sarika Agarwal · 20h ·

स्त्री को छूना भी एक कला हैं,
स्त्री काया नही हृदय है जो छू सको..!!
तो स्त्रीत्व को छूना, स्त्री को नही..!!
🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹
-----------------------------------

तुम नंगे हो जाओ, कपडे उतारने की बात नहीं कह रहा हूँ; मन के आवरणों को हटाने की बात कह रहा हूँ। लेकिन जब भी ऐसी कोई बात होती है तो तुम्हारे ख्यालो में स्त्री ही आती है! क्योकि ये बात जानकर तुम हैरान होगे कि तुम्हारी पत्नी भी स्त्री ही है!
तुम रोज उसे बिस्तर पर साथ पाते हो पर फिर भी उसे समझने की, जानने की चाह कभी नही की! अभी तुम्हे स्त्रीत्व तक पहुँचने में देर है; स्त्री को समझने का, उसके तन को जानने का दम चाहिए। अदभुत साहस चाहिए, प्रेम की अनुभूति चाहिए। परम की आकांक्षा चाहिए। जबकि लोग उसके उभारो की ऊँचाई देखकर गिर जाते हैं। उसकी गहराइयो में ऐसे डूबते हैं कि मरकर के वापस आते हैं। इसलिए जब भी तुम्हें स्त्री के नजदीक जाने का अवसर मिले तो चूकना मत! जरुरी नहीं कि हर बार तुम सेक्स में हो जाओ, कुछ समय ऐसा भी गुजारना; जहाँ तुम शरीर के पार देखने की कोशिश करना; शायद तुम उसके दिल की धडकन सुन सको, शायद तुम उसके स्त्रीत्व को छू सको, और जिस पल तुमने उसके स्त्रीत्व को छू लिया!
तब अचानक से वासना तिरोहित होगी, और प्रेम का आगमन होगा, तुम एक परमसुख की अनुभूति करोगे, एक ऐसा आनंद जो तुम्हे जन्मों जन्मों तक गुदगुदाता रहेगा, तुम मुस्करा उठोगे, खिल जाओगे, और यही खिलावट तुम्हे जीवन के परम सत्ता की अनुभूति देगी, जीवन के परमआनंद से तुम्हारा मिलन होगा।
ओशो🌹🌹

CS CamScanner

CamScanner

# ओशो
अहोभाव

भजगोविन्दम मुधमाते
(आदि शंकराचार्य)
प्रवचन-06

रामकृष्ण के पास एक दिन एक आदमी आया और उनके चरणों में उसने बहुत से रुपये रखे। रामकृष्ण ने कहा, ले जा भाई। उस आदमी ने कहा कि आप महात्यागी हैं--इसका और एक सबूत मिला। रामकृष्ण कहने लगे, महात्यागी तू है, हम नहीं। क्योंकि हम तो परमात्मा को भोग रहे हैं, तू छोड़ रहा है; तू धन बटोर रहा है, हम परमात्मा बटोर रहे हैं--त्यागी कौन है और भोगी कौन है? भोगी हम हैं, त्यागी तू है। कंकड़-पत्थर जो बीन रहा है और हीरों को छोड़ रहा है, उसको भोगी कहोगे या त्यागी? व्यर्थ को जो सम्हाल रहा है और सार्थक को गंवा रहा है, उसको ही त्यागी कहना चाहिए।

CS CamScanner

CS CamScanner

11:59 am 0 KB/s VoLTE 4G 45%
Like Comment Share

**अहोभाव**

1h ·

अहोभाव

चोर जागा हुआ दिखाई देता है। चाकर जागा हुआ दिखाई देता है। रोगी जागा हुआ दिखाई देता है। जागे नहीं हैं। जागता तो सिर्फ योगी है।
कृष्ण ने कहा है: या निशा सर्व भूतायाम् तस्याम् जागर्ति संयमी। वह जो सबके लिए गहन रात्रि है, निद्रा है—वैसी रात्रि में, वैसी निद्रा में भी योगी जागता है, संयमी जागता है, ध्यानी जागता है।
ध्यानी सो ही नहीं सकता। उसने अपने भीतर उस तत्व को पहचान लिया है जो कभी सोया ही नहीं, जहां सोने की घटना घटती ही नहीं। शरीर सोता है, मन सोता है; आत्मा कभी नहीं सोती। तुमने अपने को शरीर मान लिया, इसलिए तुम्हें सोना पड़ता है; मन मान लिया, इसलिए सोना पड़ता है। जिस दिन तुम जानोगे कि तुम आत्मा हो, शाश्वत, न जिसका कोई प्रारंभ है, न कोई अंत; जिस दिन तुम जानोगे तुम अमृत हो, तुम्हारी कोई मृत्यु नहीं; जिस दिन तुम अपने साक्षी-भाव को पहचानोगे, उसी दिन से निद्रा गई। शरीर फिर भी सोएगा, मन फिर भी सोएगा; क्योंकि ये तो यंत्र हैं, थकते हैं। लेकिन साक्षी जागा रहता है।

नींद में भी ध्यानी जागा रहता है। शरीर सोया रहता है और भीतर जागरण का दीया जलता रहता है। वह जागरण का दीया जिसने भी पा लिया, स्वर्ग में प्रविष्ट हो गया। स्वर्ग कोई भौगोलिक स्थान नहीं है कहीं। स्वर्ग तुम्हारे जागरण की अवस्था का नाम है.
ओशो

CamScanner

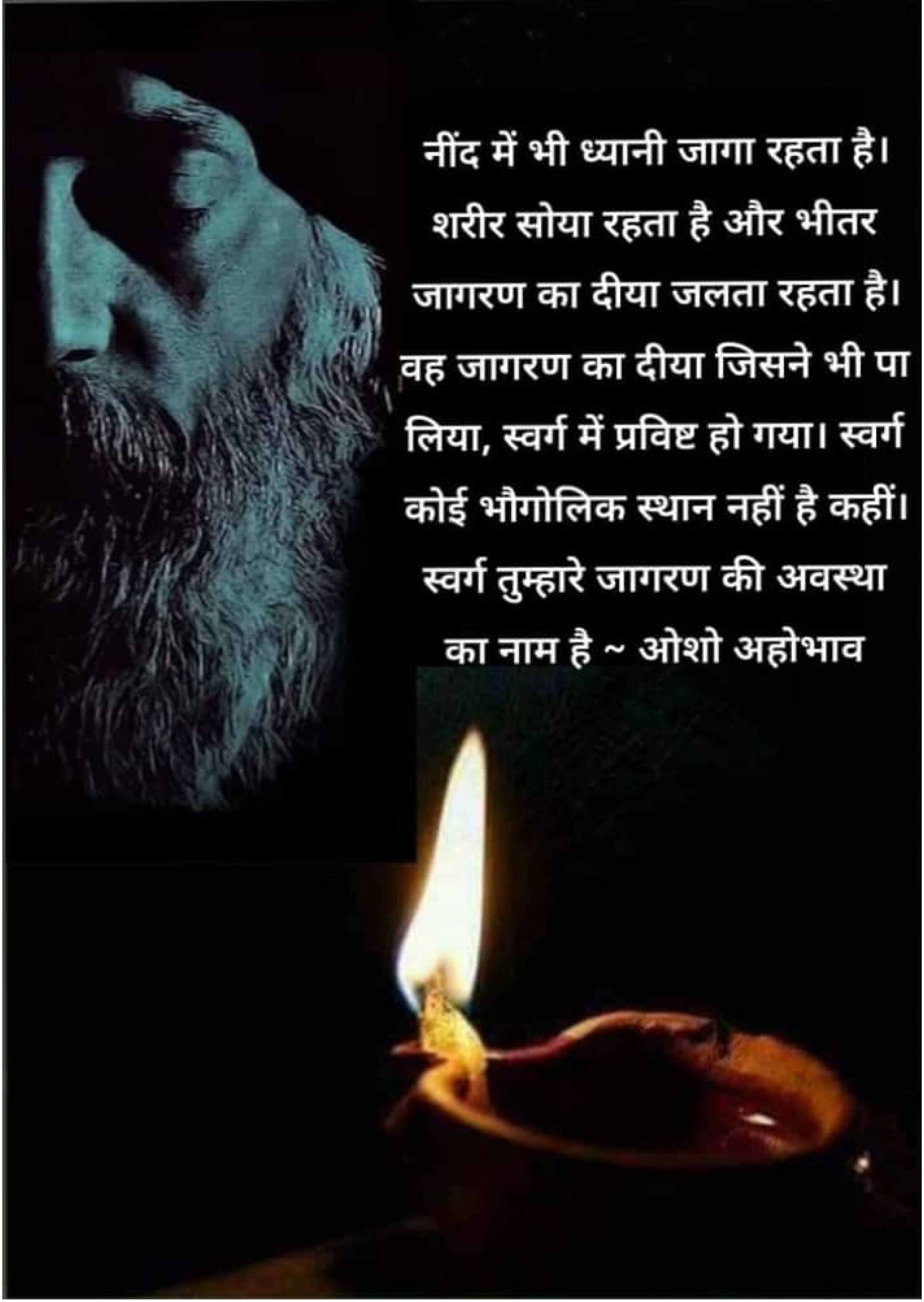
नींद में भी ध्यानी जागा रहता है।
शरीर सोया रहता है और भीतर
जागरण का दीया जलता रहता है।
वह जागरण का दीया जिसने भी पा
लिया, स्वर्ग में प्रविष्ट हो गया। स्वर्ग
कोई भौगोलिक स्थान नहीं है कहीं।
स्वर्ग तुम्हारे जागरण की अवस्था
का नाम है ~ ओशो अहोभाव

CamScanner

Oshoravi
जब एक व्यक्ति मूर्खता करें
तो उसे मूर्ख कहते हैं। जब
अनेक व्यक्ति मूर्खता करें
तो उसे पागलपन कहते हैं।
और जब लाखों करोड़ो
लोग वही मूर्खता करें तो
उसे धर्म कहते हैं।
ओशो

CamScanner

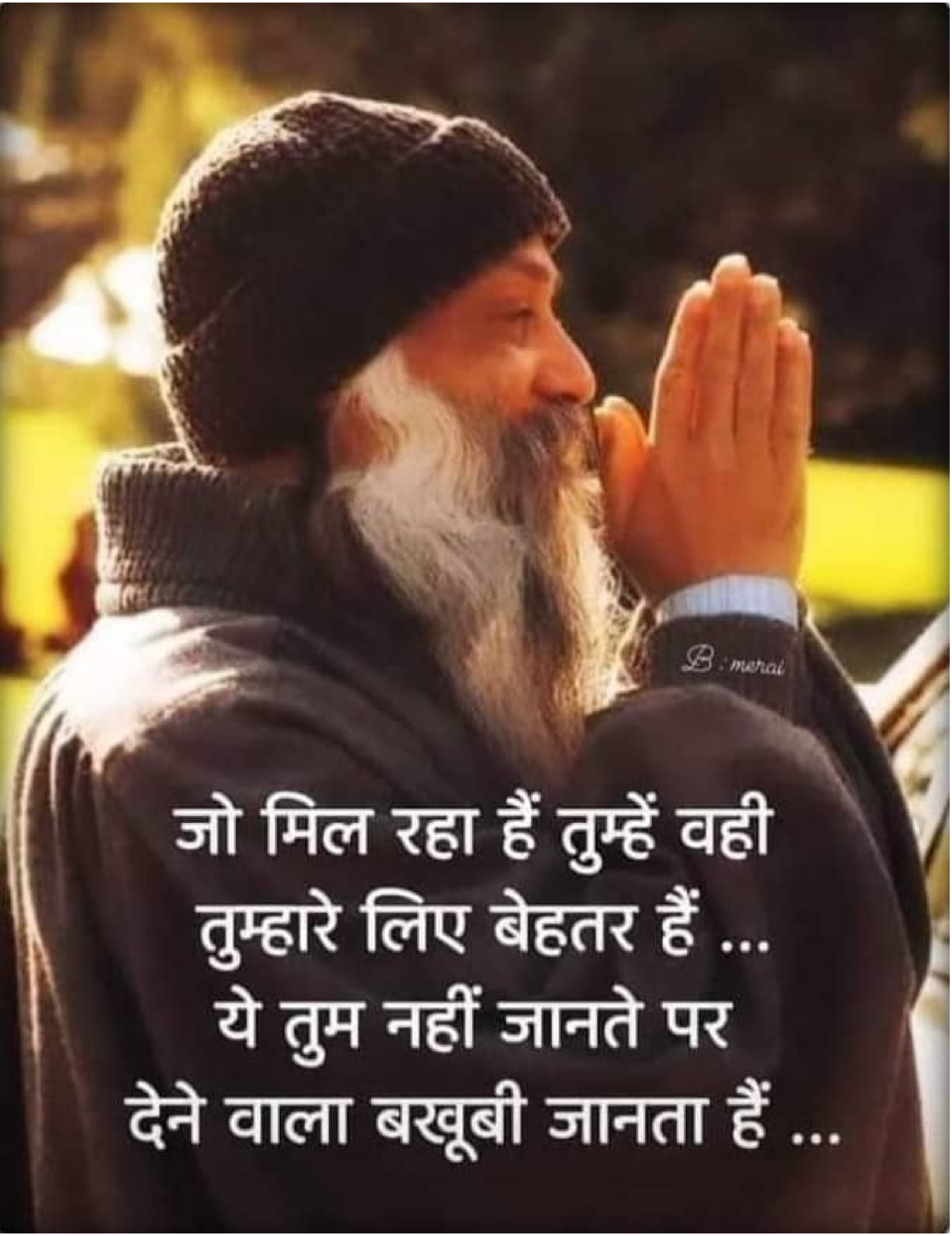


CS CamScanner

जितना बड़ा डरपोक और

#kadwijootiyan

पापी, उतना ही ज्यादा
पूजा पाठ का पाखंड..
जैसे जितना बड़ा जुर्म
उतना ही बड़ा वकील..
किसे मूर्ख बनाते हो ?

CamScanner

**ओशो शुद्ध चेतना थे, उस चेतना तक पहुँचने के लिए ओशो को भी छोड़ना होगा, ओशो के वाक्य~ मुझे भी छोड़ देना 🙏**

CamScanner

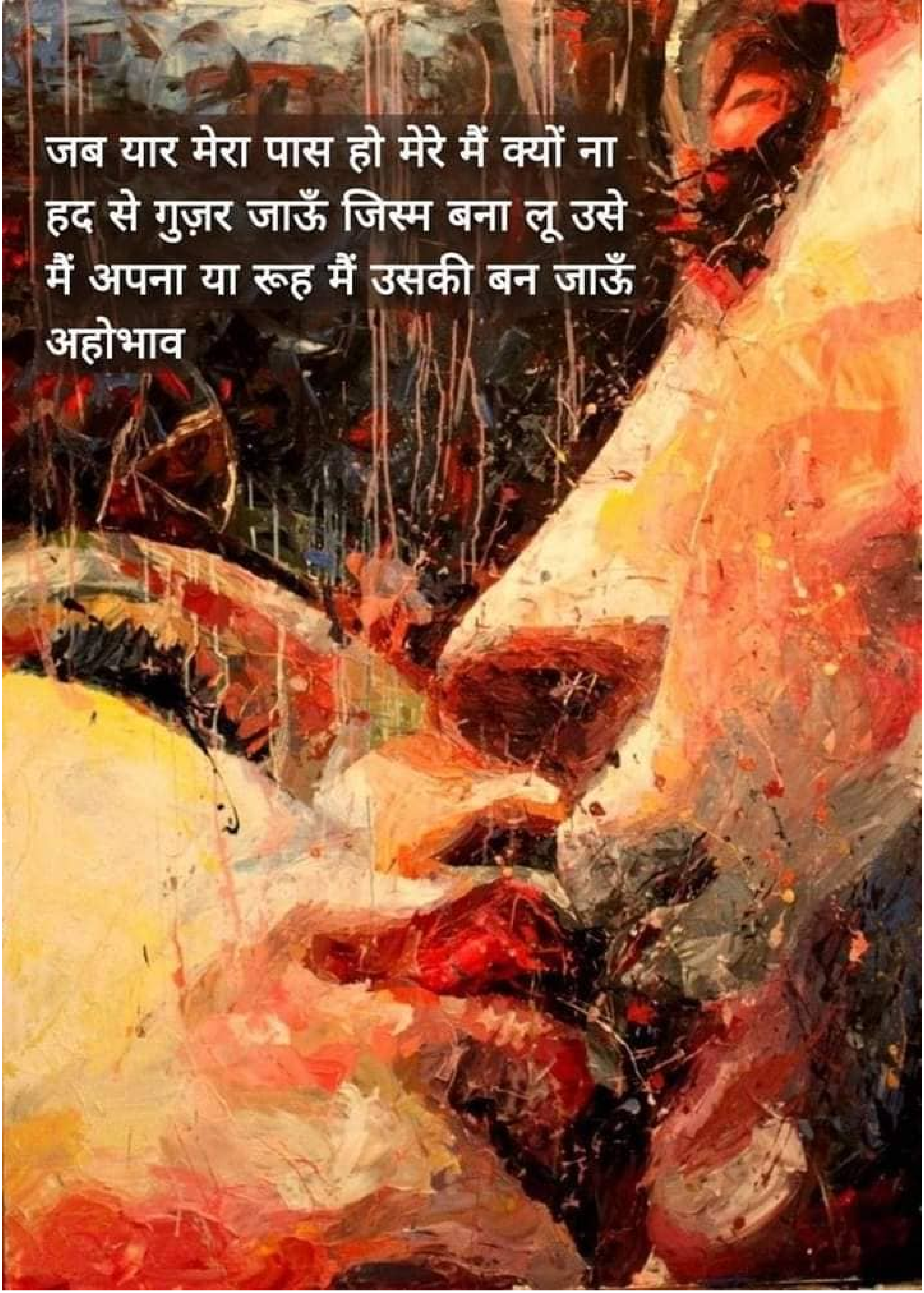
जब यार मेरा पास हो मेरे मैं क्यों ना
हद से गुज़र जाऊँ जिस्म बना लू उसे
मैं अपना या रूह मैं उसकी बन जाऊँ
अहोभाव

CamScanner

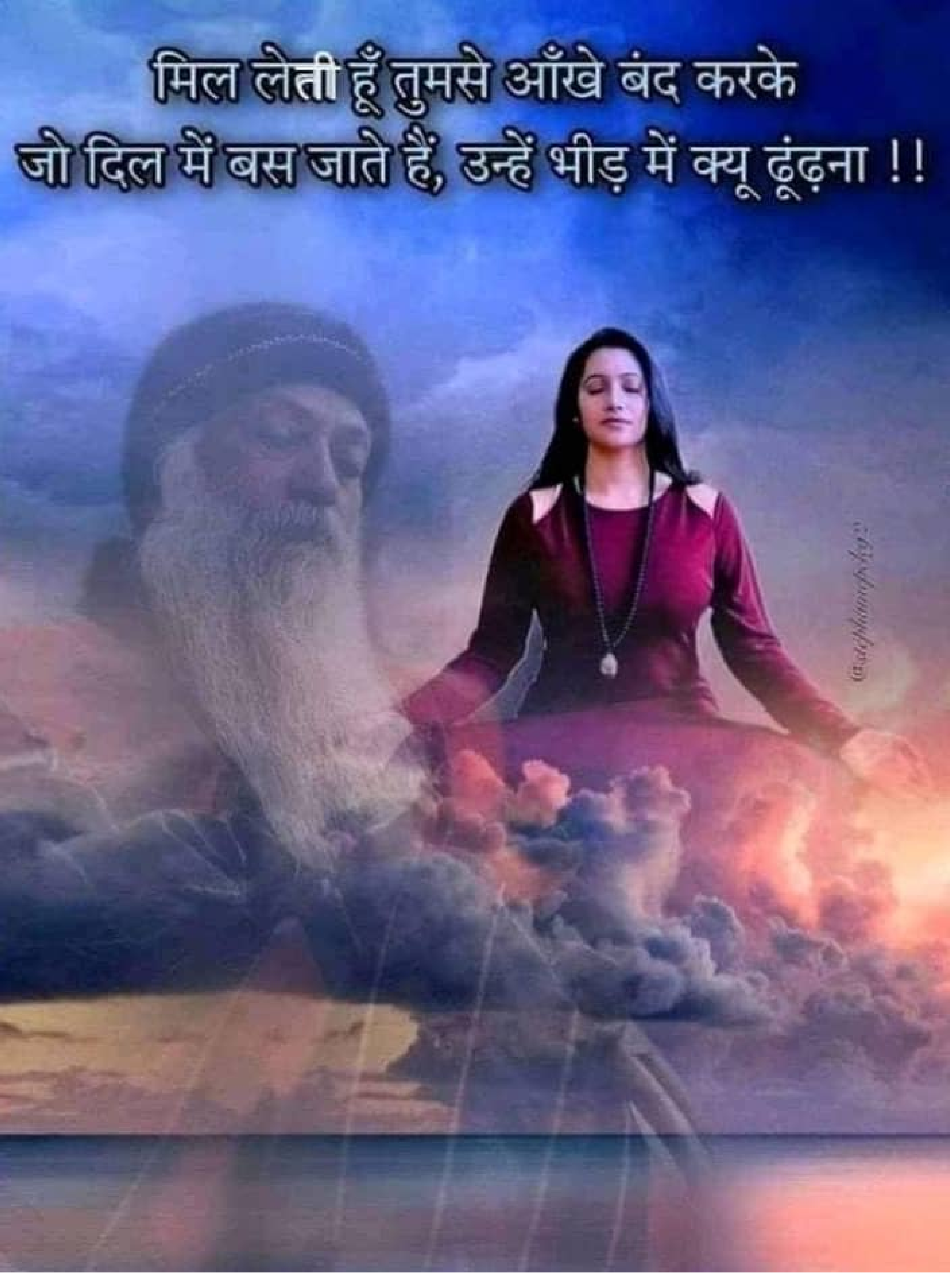


CamScanner

**Neelam Mahajan Singh** · Follow

26 Aug 2021 ·

Osho Diaries III:
By; Neelam Mahajan Singh
A Canadian by birth, #MichaelOByrne, known simply as 'Jayesh', rose meteorically in the Osho Rajneesh's hierarchy after he took sannyas in 1984-85.
I met Dr. Amrito, Jayesh, Maa Yoga Neelam, Swami Tathagat, Sadhna, Anando, Chaitanya Keerti / Swami Keerti and others at Osho Rajneesh's ashram in Pune.
It's surprising that neither Osho's personal attorney Swami Prem Niren (Philip J. Toelkes) nor Osho's disgraced personal secretary Maa Anand Sheela refer to Swami Jayesh even once in their lengthy interviews in 'The Wild Wild Life' documentary. The opening at 11:49 minutes, there is footage of Osho's arrest along with Jayesh, Amrito and eight others when their Lear Jet landed at 2 am at the Charlotte - Douglas International Airport, North Carolina on October 28, 1985.
#Jayesh has emerged as the controller of finances and key person of the Osho movement after its collapse in Oregon. He is seen in handcuffs and chains like Osho and Dr. Amrito.
Jayesh was the exact opposite- always behind the curtains, always hidden away from the glare of the media. Jayesh was the only person besides Dr. Amrito who was present by Osho's side when he died in Pune on January 19, 1990. When Osho died

CS CamScanner

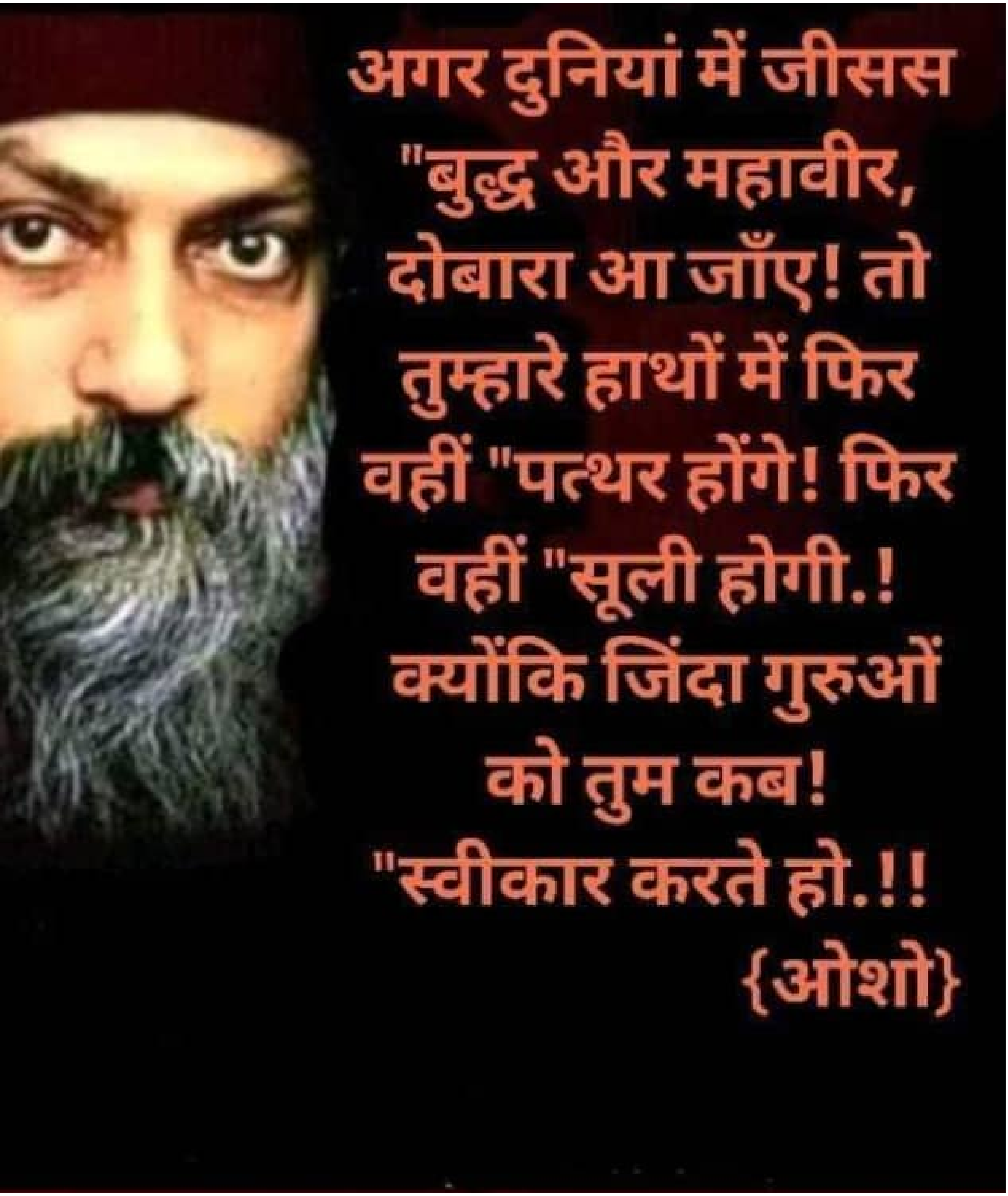


CS CamScanner

Osho
हीरा परखने वाले से, पीड़ा परखने वाला
व्यक्ति ज्यादा महत्वपूर्ण होता है, अगर आपका
प्रेम आपकी पीड़ा ही नहीं परख सकता तो उस
व्यक्ति ने कभी आपसे प्रेम किया ही नहीं था!
।• श्री कृष्ण लीला •।

CamScanner

दुख को छोड़ने
को सभी तैयार हैं।
जो ध्यान में
जाना चाहते हैं,
वे भी इसी लिए
जाना चाहते हैं कि

दुख छूट जाए और सुख मिल जाए।

लेकिन आपको
साफ हो जाना चाहिए:
ध्यान में जैसे ही प्रवेश करेंगे,
सुख-दुख दोनों ही छूट जाते हैं।
और जो उपलब्धि होती है
वह सुखकी नहीं है,
परम शांति की है।

ओशो ध्यान के कमल

CamScanner

**Osho Human Being To Be.In.God**

2d ·

भिक्षुणी चियोनो ने वर्षों तक अध्ययन किया,
लेकिन आत्मज्ञान पाने में वह असमर्थ रही।

एक रात वह पानी से भरी एक पुरानी बाल्टी ले जा रही थी। चलते हुए वह पानी की बाल्टी में प्रतिबिंबित पूर्णिमा के चंद्रमा को भी देख रही थी।

अचानक बाल्टी को थामने वाली बांस की पट्टियां टूट गईं और बाल्टी टूट कर गिर गई। सारा पानी बह गया, और चंद्रमा का प्रतिबिंब भी गायब हो गया, और तभी चियोनो प्रबुद्ध हो गई।

तब उसने यह कविता लिखी -

"इस तरह से और उस तरह से,
मैंने बाल्टी को थामे रखने की कोशिश की,
यह उम्मीद करते हुए कि कमजोर बांस
कभी नहीं टूटेगा।

अचानक तला ही बाहर गिर गया,
अब और पानी नहीं,
और पानी में कोई चाँद नहीं,
अब वहां केवल शून्यता है।"

CamScanner

राधा बनने को सब चाहे....माता सीता सी कोई नहीं....

सब कृष्ण के प्रेम में भटक रही....संग राम के वन में कोई नहीं.... 🙏😔💔

CS CamScanner

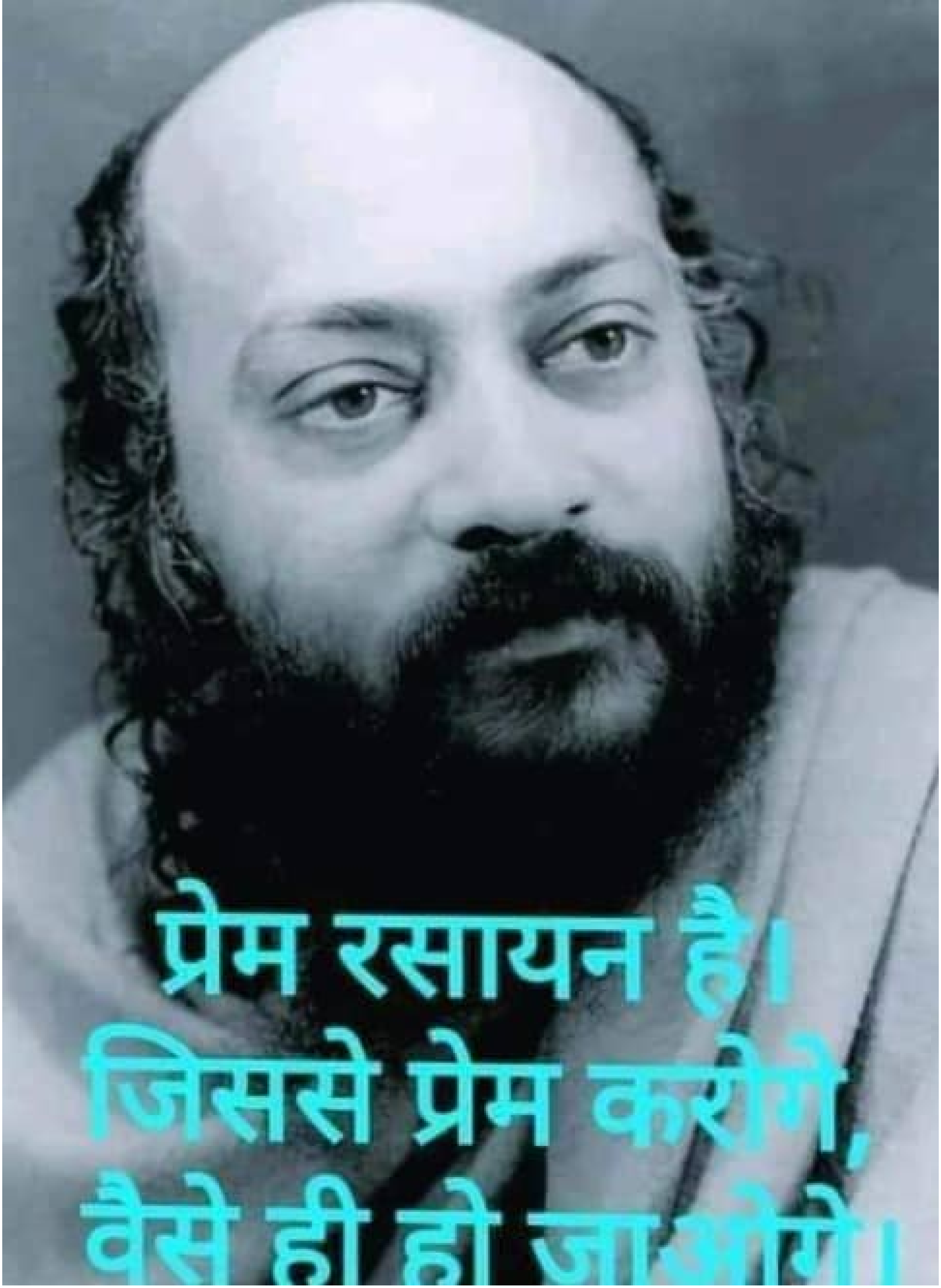


CamScanner

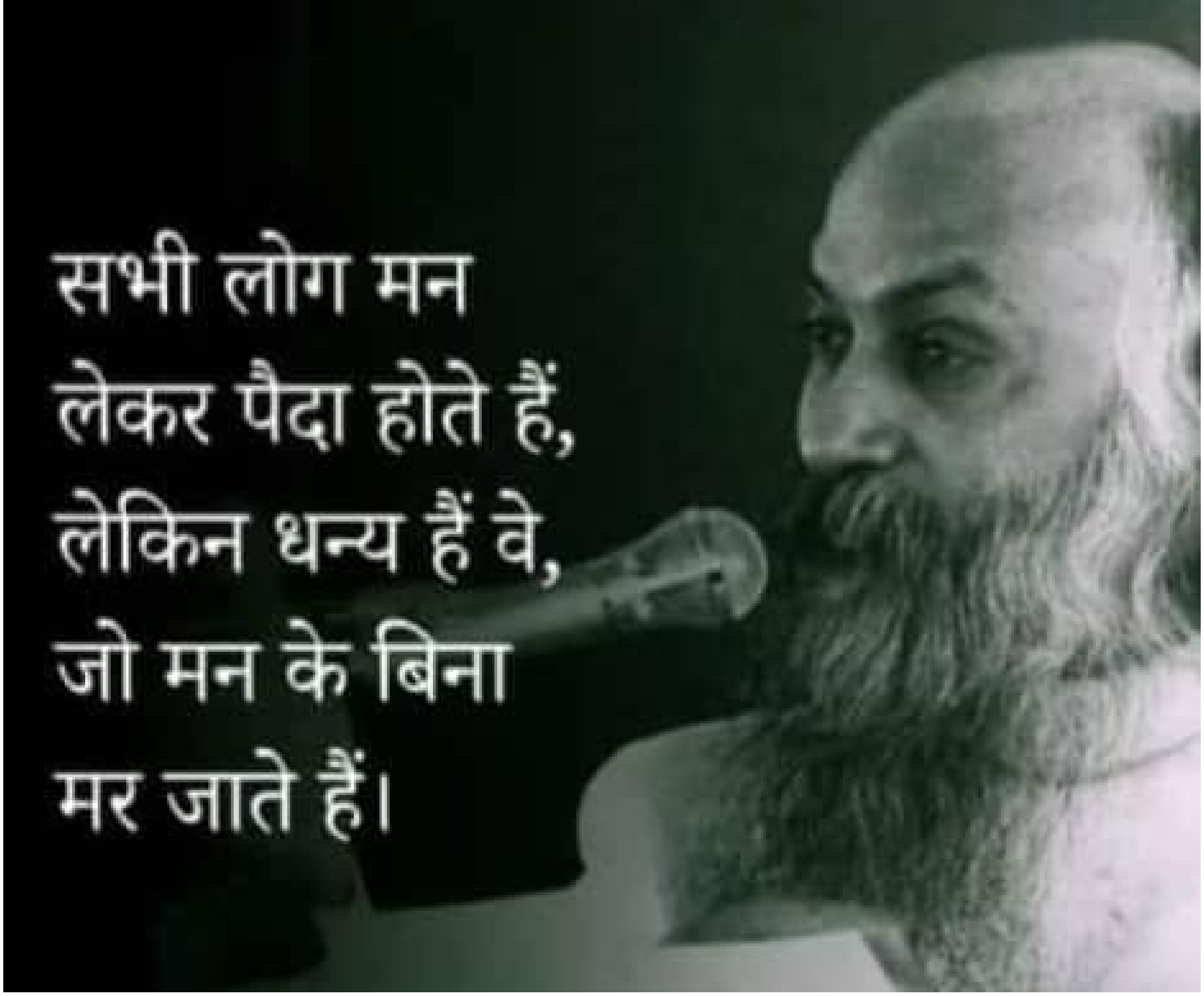


CS CamScanner

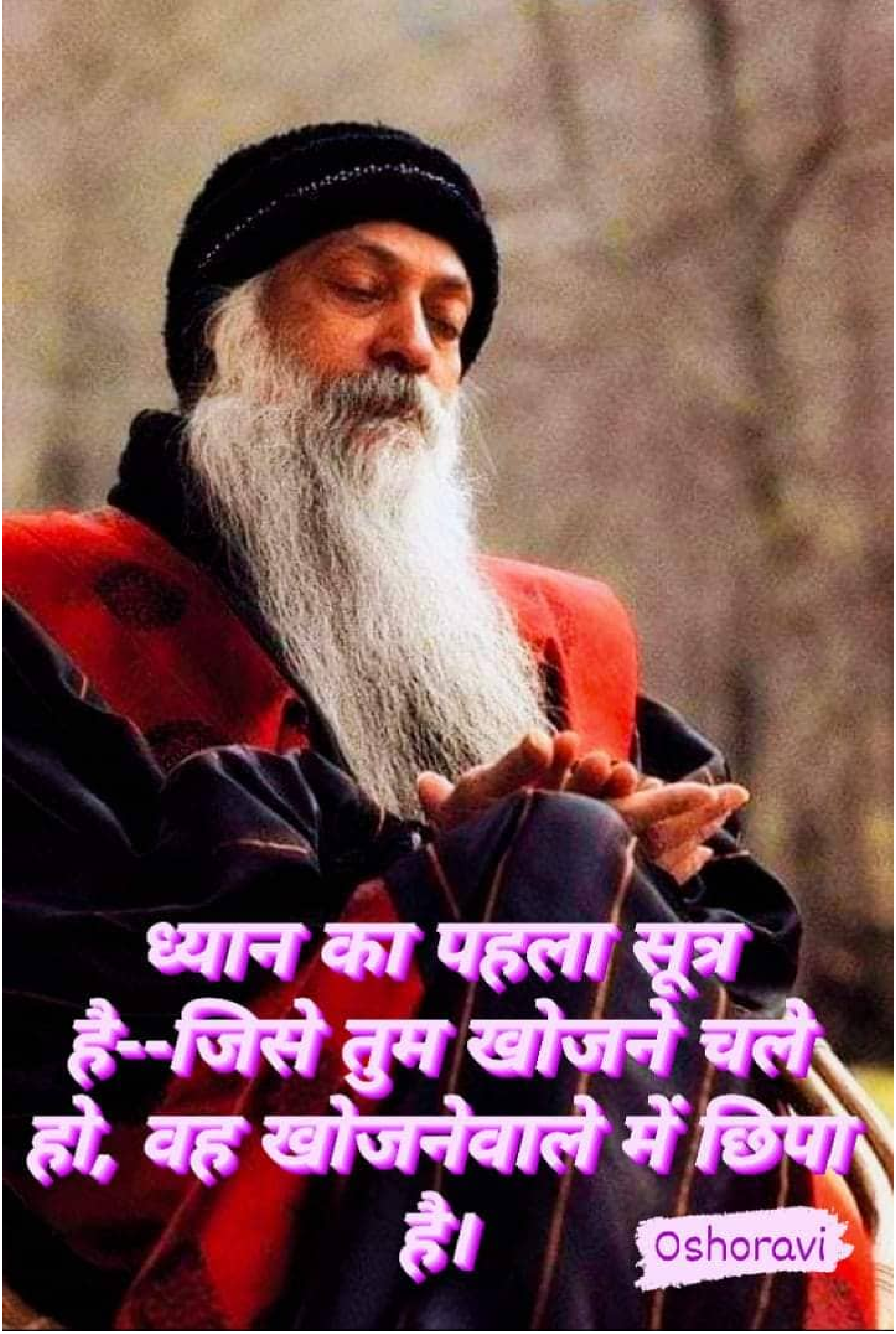


CamScanner

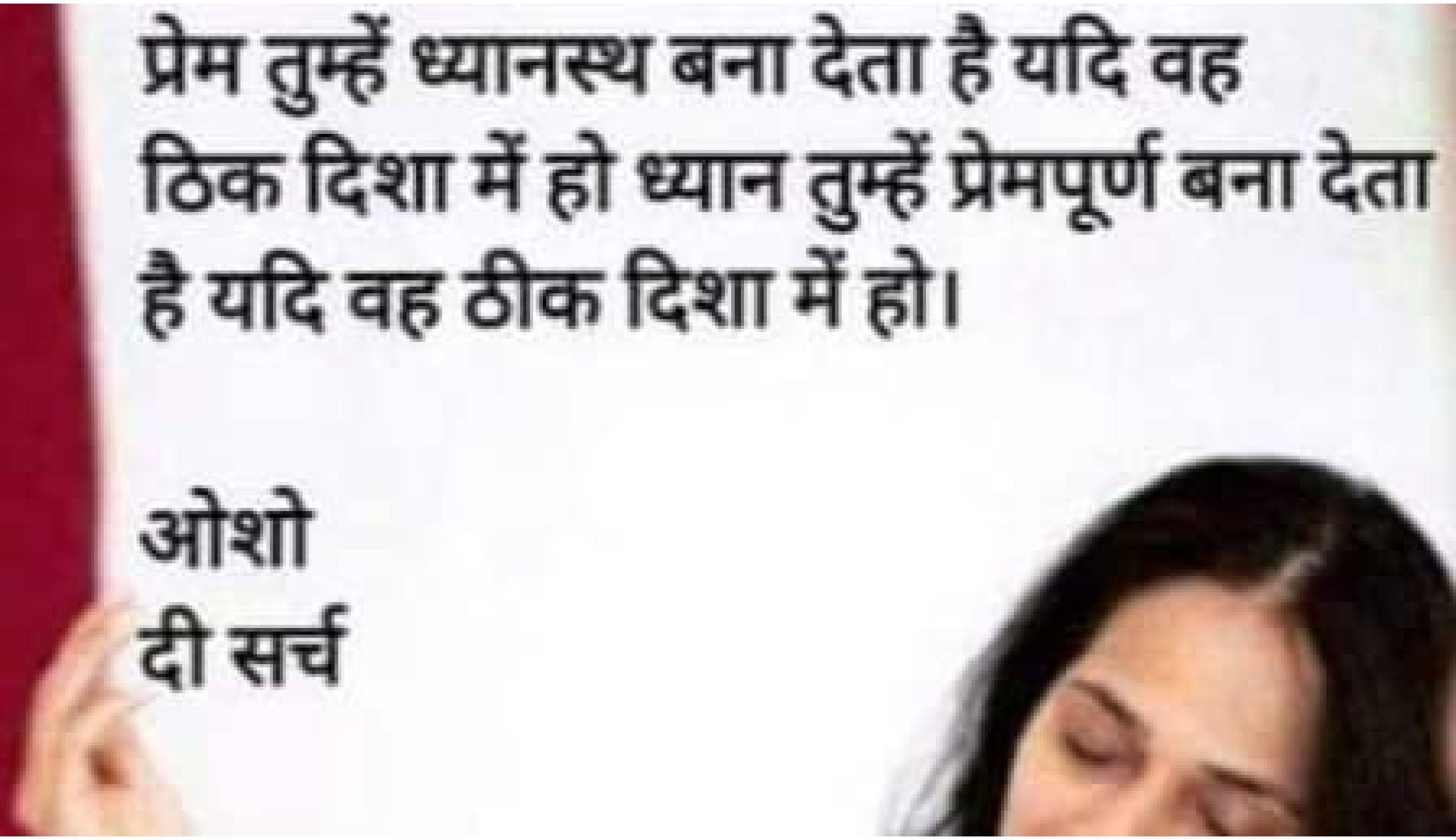
प्रेम तुम्हें ध्यानस्थ बना देता है यदि वह
ठिक दिशा में हो ध्यान तुम्हें प्रेमपूर्ण बना देता
है यदि वह ठीक दिशा में हो।
ओशो
दी सर्च

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

जो हो रहा है,
हो रहा है।
न तुमसे
पूछ कर शुरू हुआ है,
न तुम से पूछ कर
बंद होने का कोई कारण है।
जो हो रहा है, होता रहा है,
होता रहेगा–तुम देखते रहो।
बस इसमें ही
क्रांति घट जाती है।
anamcara.Rames
अष्टावक्र: महागीता--प्रवचन--13
जब जागो तभी सवेरा
आचार्य श्री रजनीश
ओशो
acR
OSHO

CamScanner

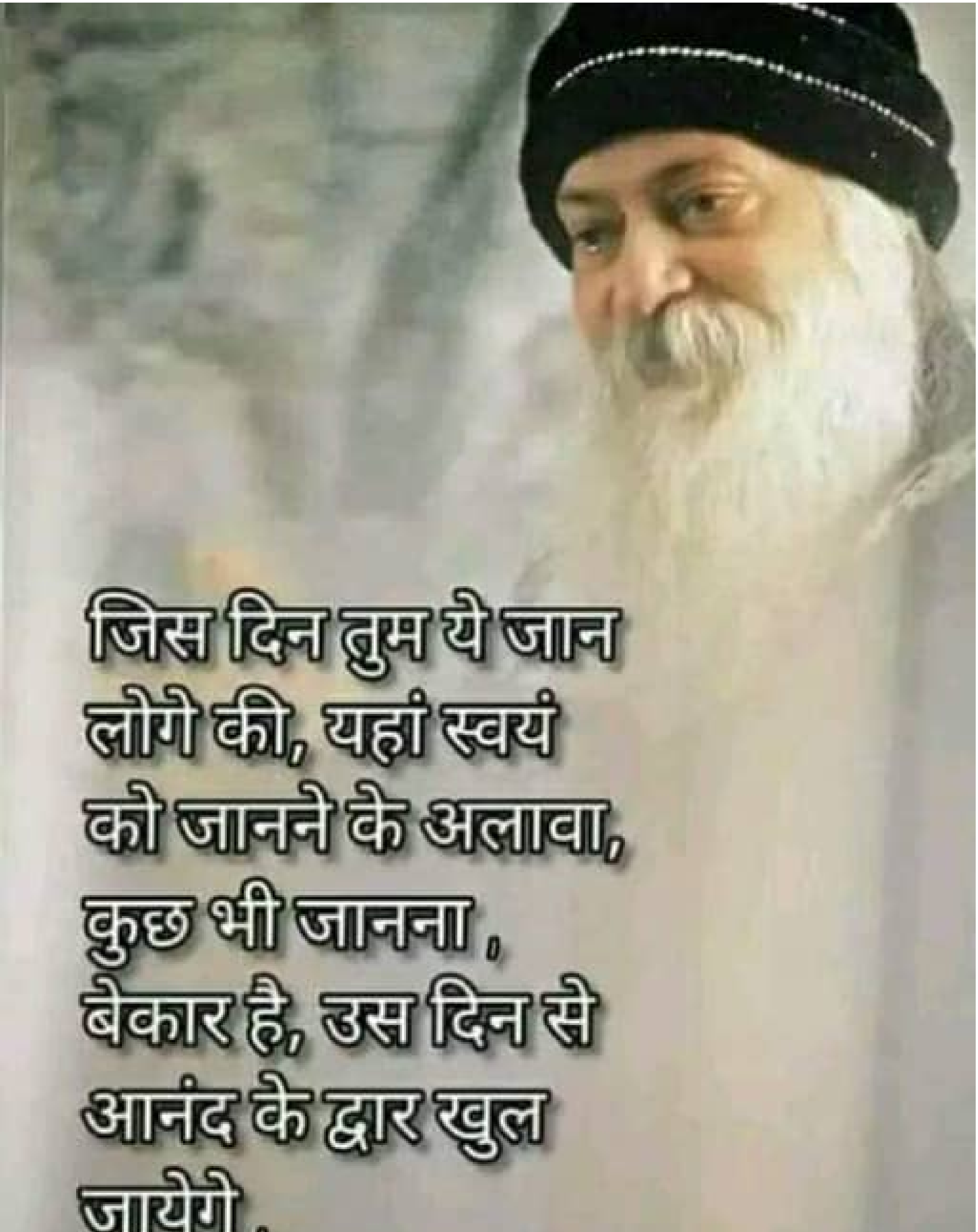

जिस दिन तुम ये जान
लोगे की, यहां स्वयं
को जानने के अलावा,
कुछ भी जानना ,
बेकार है, उस दिन से
आनंद के द्वार खुल
जायेगे ,


CamScanner

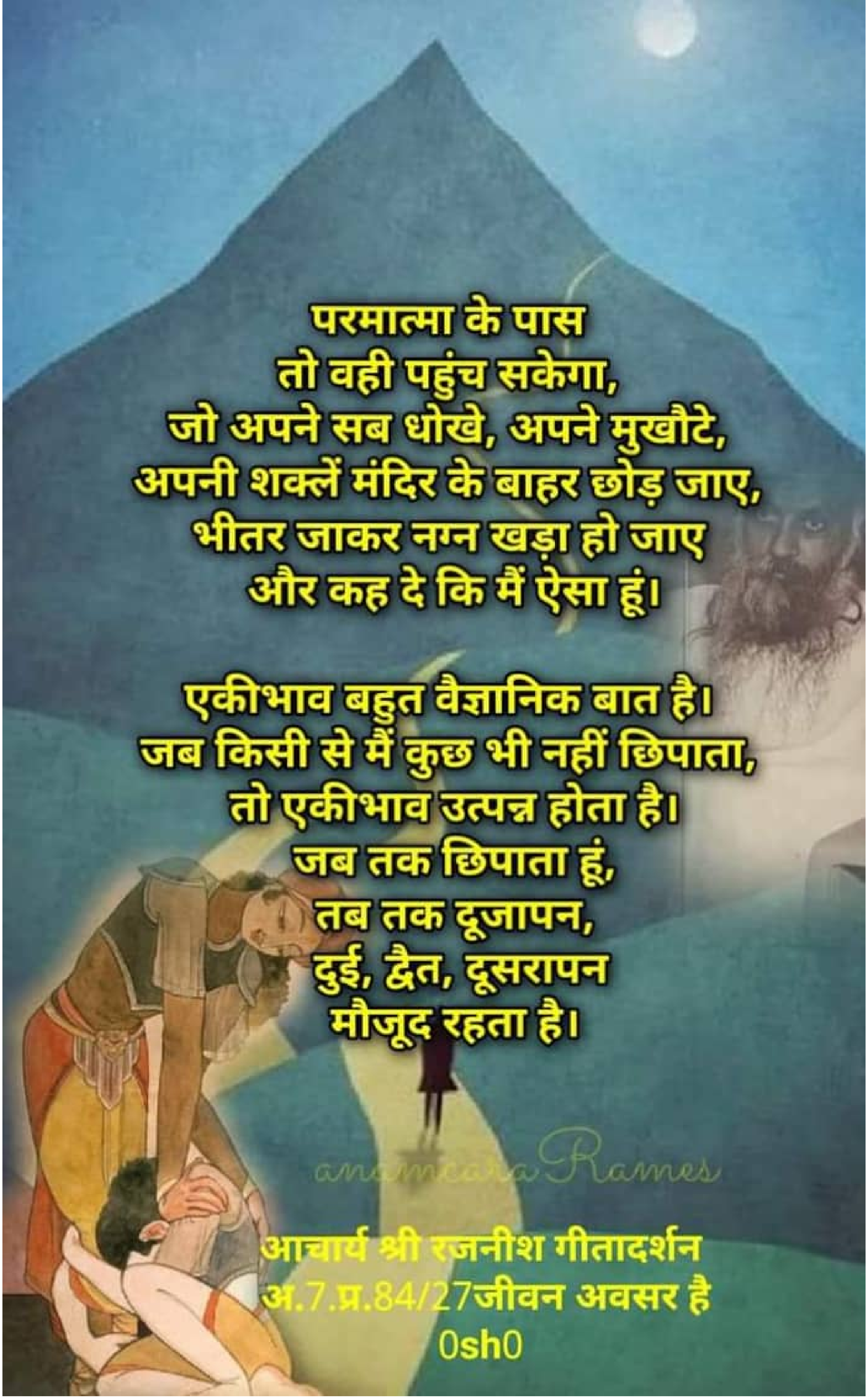
परमात्मा के पास
तो वही पहुंच सकेगा,
जो अपने सब धोखे, अपने मुखौटे,
अपनी शक्लें मंदिर के बाहर छोड़ जाए,
भीतर जाकर नग्न खड़ा हो जाए
और कह दे कि मैं ऐसा हूं।
एकीभाव बहुत वैज्ञानिक बात है।
जब किसी से मैं कुछ भी नहीं छिपाता,
तो एकीभाव उत्पन्न होता है।
जब तक छिपाता हूं,
तब तक दूजापन,
दुई, द्वैत, दूसरापन
मौजूद रहता है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन
अ.7.प्र.84/27जीवन अवसर है
0sh0

CamScanner

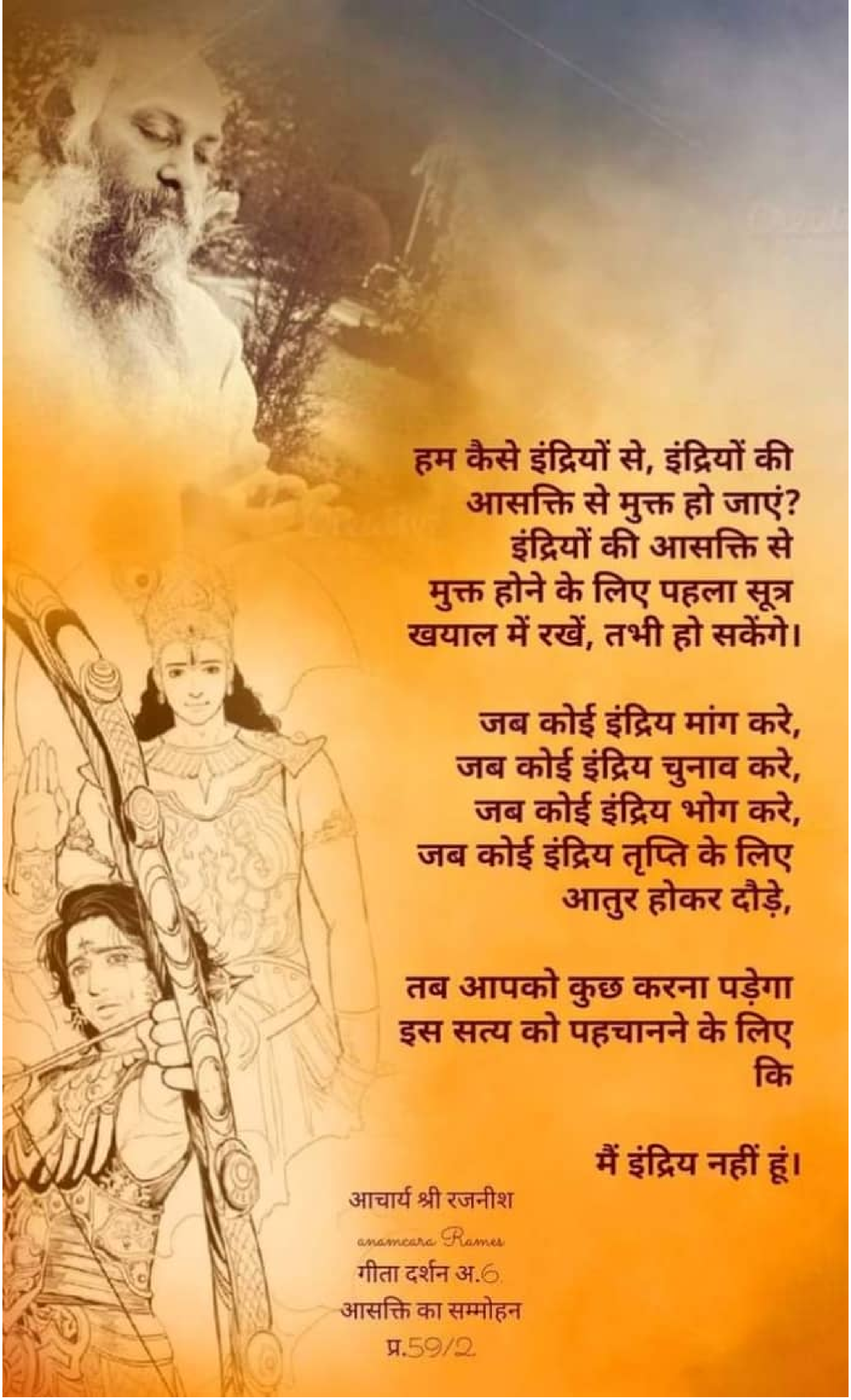
हम कैसे इंद्रियों से, इंद्रियों की
आसक्ति से मुक्त हो जाएं?
इंद्रियों की आसक्ति से
मुक्त होने के लिए पहला सूत्र
खयाल में रखें, तभी हो सकेंगे।
जब कोई इंद्रिय मांग करे,
जब कोई इंद्रिय चुनाव करे,
जब कोई इंद्रिय भोग करे,
जब कोई इंद्रिय तृप्ति के लिए
आतुर होकर दौड़े,
तब आपको कुछ करना पड़ेगा
इस सत्य को पहचानने के लिए
कि
मैं इंद्रिय नहीं हूं।
आचार्य श्री रजनीश
anamcara Rames
गीता दर्शन अ.6
आसक्ति का सम्मोहन
प्र.59/2

CamScanner

अक्सर तुम क्या करते हो, की दो,चार दिन या महीने ध्यान किया और फिर छोड़ दिया । फिर कुछ महीने बाद सुध आई, फिर शुरू कर दिया। पर तुम नही जानते की बीच में जो अंतराल आया उस दौरान , तुमने जो खुदाई की थी स्वयं की, वो तुमने दोबारा संसार से भर ली। अब फिर नए सिरे से खुदाई। ये चलता रहता है और तुम फिर कहते हो क़ि इतने दिन हो गए ध्यान करते पर कुछ हो नही रहा। होगा कहाँ से ? ध्यान को कुंआ खोदने के सामान कहा गया है, पहले मिट्टी,फिर पत्थर उसके बाद गन्दा पानी और अन्ततः स्वच्छ जल । स्वच्छ जल आने तक मत रुको, रुके कि, पत्थर मिटटी झाड़ खँखाड़ से वो फिर भर जायेगा। फिर नई शुरुआत ।

OSHO

CamScanner

6:46 pm 0 KB/s VoLTE 4G 88%
facebook
5

उन्हें खबर मिली। वे उसके दर्शन को गए। उन्होंने झुककर उसके चरण छुए, जो कि पूरब की अदभुत देन है! पूरब ने बहुत कुछ दुनिया को दिया है जिसकी कोई कीमत नहीं करता। उस तरह के आदमी को यूनान में जहर दिया जाता है, जूदिया में फांसी पर लटकाया जाता है, अरब में टुकड़े-टुकड़े करके काट दिया जाता है हिंदुस्तान ने बहुत कुछ दुनिया को दिया है जो अदभुत है। यहां अंधे आदमी को भी इतनी सहनशीलता दी है कि वह आंखवाले के पैर छूने को राजी है और इसमें अपमान अनुभव नहीं करता बल्कि गौरव अनुभव करता है। अनुभव करता है कि मैं महा महिमामंडित हूं कि एक आंखवाले आदमी के पैर छूने का मुझे अवसर मिला। नहीं सही मेरी आंखें मगर कोई आंखवाला था जिसके मैंने पैर तो छुए। यह भी क्या कम है?

बुद्ध ने पैर छुए और जैसे ही वे खड़े हुए तो हैरान हो गए। वह व्यक्ति, वह महापुरुष जो जाग चुका था वह झुका और उसने इस सोए हुए आदमी के पैर छुए। बुद्ध ने कहा, आप यह क्या करते हैं? यह कैसा पाप आप मेरे ऊपर थोप रहे हैं। आप जागृत हैं मैं आपके पैर छुऊं यह मेरा सौभाग्य है। लेकिन आप मेरे पैर छूकर मुझे किस नर्क में ढकेल रहे हैं।

उस बुद्ध पुरुष ने कहा था, नर्क में नहीं ढकेल रहा हूं। कल तक मैं भी तुम्हारी तरह सोया हुआ था। आज जाग गया हूं। आज तुम सोए हुए हो, कल तुम भी जाओगे। मुझमें और तुममें बुनियादी रूप से कोई अंतर नहीं है। जो अंतर है बहुत ऊपरी है, बहुत मामूली है। वह अंतर मामूली है यही बताने के लिए मैं तुम्हारे पैर छू रहा हूं। मैं तुम्हारे अंधेपन के पैर नहीं छू रहा हूं; मैं तुम्हारे भविष्य के, जब तुम भी जाग जाओगे उस स्वर्ण दिन के, उस स्वर्ण प्रभात के पैर छू रहा हूं। और इसलिए भी ताकि तुम्हें याद रहे कि जाग कर भूल मत जाना कि सिर्फ अंधे ही तुम्हारे पैर छू सकते हैं। तुम्हें भी उनके पैर छूने हैं। तुम भी उनकी ही जमात के हिस्से हो। इससे क्या फर्क पड़ता है कि कोई घड़ी भर पहले जाग गया और कोई घड़ी भर बाद जाग गया। इस अनंत काल काल में घड़ियों में गिनती नहीं होती। इसलिए मैं हम का ही उपयोग जारी रखूंगा।

ओशो, कोपले फिर फूट आई--प्रवचन--01

CS CamScanner

6:43 pm 0 KB/s VoLTE 4G 89%

Like Comment Share

**Osho Osho**

10h ·

स्वस्थ शब्द का अर्थ समझ लो तो रोग शब्द का अर्थ समझ मे आ जायेगा ।
स्वस्थ शब्द का अर्थ होता है स्वयं मे स्थित हो जाना । यह शब्द बडा प्यारा है ।
स्वस्थ का अर्थ होता है स्वयं मे ठहर जाना ।
जो चीज भी तुम्हे स्वयं से दूर ले जाये, वही रोग है ।
जो तुम्हे स्वयं से भटकाए, अलग करे, तोडे, अस्वस्थ करे – वही रोग ।
कौन करता है तुम्हे अपने से दूर ?
तुम्हारी वासना, तुम्हारी तृष्णा तुम्हे भविष्य मे भटकाती है, तुम्हारी तृष्णा कहती है-
कल, कल होगा धन, कल बनेगा भवन, कल मिलेगी सुन्दर स्त्री
कि सुन्दर पुरुष, कि कल होगा एक बेटे का जन्म ।
कल सब ठीक हो जायेगा, आज थोडी ही देर की बात है, गुजार दो ।
आता है कल, लायेगा स्वर्ग । आता है कल, सब ठीक हो जायेगा ।
जरा सी देर और कर लो प्रतीक्षा । थोडी और आशा को सम्हालो ।
बुझ मत जाने दो आशा का दिया – जलाए रखो, उसकाए रखो बाती को ।
डालते रहो थोडा तेल और, बस थोडी देर और, कल आता ही होगा ।
ओशो 🌹❤️🙏

CamScanner

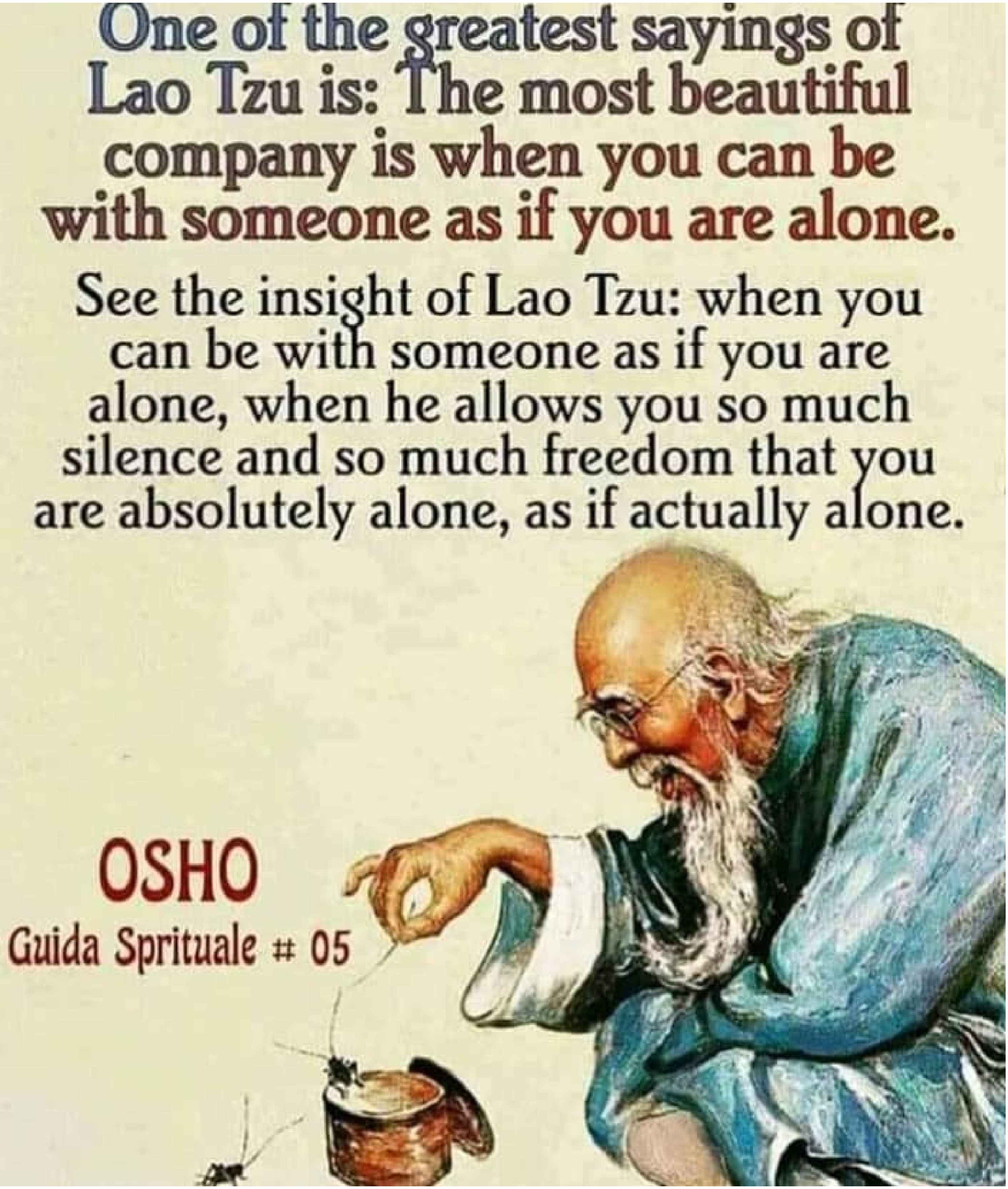
One of the greatest sayings of Lao Tzu is: The most beautiful company is when you can be with someone as if you are alone.
See the insight of Lao Tzu: when you can be with someone as if you are alone, when he allows you so much silence and so much freedom that you are absolutely alone, as if actually alone.
OSHO
Guida Sprituale # 05

CamScanner

जो मै हूँ ( शरीर ) वो मै नहीं हूँ जो मैं नहीं हूँ ( आत्म तत्व ) वो मै हूँ !

CamScanner

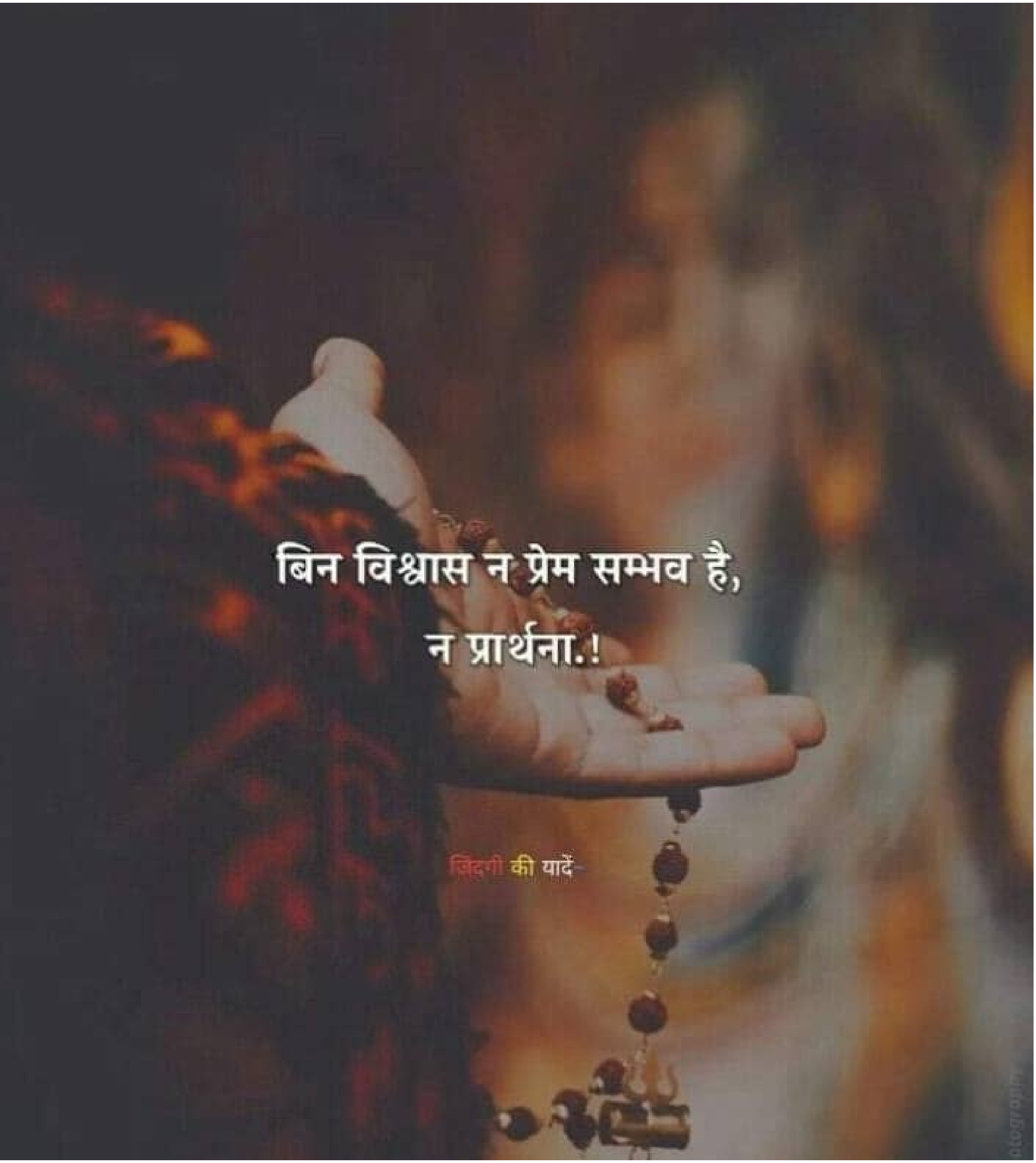


CamScanner

6:33 pm 4 KB/s
90%
facebook

होगा। इतने दिन की आसक्ति, इतने दिन का लगाव, इतने पुराने बंधन, इतनी गहरी जड़ें–सब उखाड़ कर जब अनंत की यात्रा पर निकलोगे, बहुत पीड़ा होगी। लौट-लौट कर देखोगे। न जाना चाहोगे। तड़पोगे। पकड़-पकड़ रखना चाहोगे। देह को पकड़ोगे, मन को पकड़ोगे। लेकिन कुछ भी काम न आएगा। जाना है तो जाना होगा। कितना ही रोओ, कितना ही तड़फो, कितना ही चिल्लाओ-चीखो, सराय सराय है और घर नहीं हो सकती है।

और जो सराय को सराय की तरह देख लेता है, उसने अपने घर की खोज में एक बहुत महत्वपूर्ण कदम उठा लिया। क्योंकि अंधेरे को अंधेरे की तरह पहचानना प्रकाश को प्रकाश की तरह पहचानने के लिए अनिवार्य पृष्ठभूमि है। गलत को गलत की तरह देख लेना सही को देखने के लिए भूमिका है।

दुनिया बहुत बड़ी है
जीवन का भी है विस्तार बड़ा
तू किस भ्रम में युगों युगों से
इस सराय के द्वार खड़ा?

कभी यह सराय, कभी वह सराय। कभी यह देह, कभी वह देह। कभी यह योनि, कभी वह योनि। और दुनिया का विस्तार बहुत बड़ा है! सराय ही सराय फैली हैं। एक सराय से चुकते हो, दूसरी सराय में उलझ जाते हो। अपना घर कब तलाशोगे? अपनी खोज कब करोगे? धन खोजा, पद खोजा, प्रतिष्ठा खोजी; अपने को कब खोजोगे? औरों की ही खोज में लगे रहोगे? अपने से अपरिचित! और जो अपने से अपरिचित है, वह कैसे दूसरे से परिचित हो सकता है? जो अपने से ही परिचित नहीं, उसे परिचय की कला ही नहीं आती। वह दूसरों से भी अपरिचित ही रहेगा। उसका सब ज्ञान मिथ्या है, थोथा है। जो अपने से परिचित है, उसने ठीक बुनियाद रखी ज्ञान की।

अपने से परिचय का नाम ध्यान है। आत्म-परिचय की प्रक्रिया ध्यान है। और जिसने ध्यान की शिला पर अपने मंदिर को बनाया है, उसके मंदिर के शिखर आकाश में उठेंगे; बादलों को छुए

CamScanner

6:33 pm 0 KB/s VoLTE 4G 90%

. इस जीवन में जो भी घटता है, तुम्हारे अतिरिक्त कोई और उसका कारण नहीं है। तुम हो मालिक अपनी नियति के। कोई और विधाता नहीं है जो तुम्हारा भाग्य निर्मित करता है। तुम ही रोज अपना भाग्य निर्मित करते हो। तुम ही लिखते हो अपनी किस्मत रोज, प्रतिपल। मूर्च्छित जीओगे तो नरक में जीओगे। होश में जीओगे तो जहां हो वहीं स्वर्ग है। मूर्च्छित जीओगे तो सराय घर जैसी मालूम होगी। और फिर बड़ी मुश्किल होगी। क्योंकि सराय सराय है, तुम्हारे मानने से घर न हो जाएगी। आज नहीं कल सराय छोड़नी ही पड़ेगी। और तब बहुत पीड़ा होगी। इतने दिन की आसक्ति, इतने दिन का लगाव, इतने पुराने बंधन, इतनी गहरी जड़ें—सब उखाड़ कर जब अनंत की यात्रा पर निकलोगे, बहुत पीड़ा होगी। लौट-लौट कर देखोगे। न जाना चाहोगे। तड़पोगे। पकड़-पकड़ रखना चाहोगे। देह को पकड़ोगे, मन को पकड़ोगे। लेकिन कुछ भी काम न आएगा। जाना है तो जाना होगा। कितना ही रोओ, कितना ही तड़फो, कितना ही चिल्लाओ-चीखो, सराय सराय है और घर नहीं हो सकती है।

और जो सराय को सराय की तरह देख लेता है, उसने अपने घर की खोज में एक बहुत महत्वपूर्ण कदम उठा लिया। क्योंकि अंधेरे को अंधेरे की तरह पहचानना प्रकाश को प्रकाश की तरह पहचानने के लिए अनिवार्य पृष्ठभूमि है। गलत को गलत की तरह देख लेना सही को देखने के लिए भूमिका है।

दुनिया बहुत बड़ी है
जीवन का भी है विस्तार बड़ा
तू किस भ्रम में युगों युगों से
इस सराय के द्वार खड़ा?

कभी यह सराय, कभी वह सराय। कभी यह देह, कभी वह देह। कभी यह योनि, कभी वह योनि। और दुनिया का विस्तार बहुत बड़ा है! सराय ही सराय फैली हैं। एक सराय से चुकते हो, दूसरी सराय में उलझ जाते हो। अपना घर कब तलाशोगे? अपनी खोज कब करोगे? धन खोजा, पद खोजा, प्रतिष्ठा खोजी; अपने को कब खोजोगे? औरों की ही खोज में लगे रहोगे? अपने से अपरिचित! और जो अपने से अपरिचित है, वह कैसे दूसरे से परिचित हो सकता है? जो अपने से ही परिचित नहीं, उसे परिचय की कला ही नहीं आती। वह दूसरों से भी अपरिचित

CamScanner

CS CamScanner

6:26 pm 91%

**Osho Human Being To Be.In.God**
4m ·

जिसको अपनी नासमझी से, बालपन से तुमने परमात्मा समझा है, वह कहीं असहाय अवस्था की पुकार ही तो नहीं! जिसको तुमने झुकना समझा है, वह कहीं तुम्हारे कंपते और भयभीत पैरों की कमजोरी ही तो नहीं! जिसको तुमने समर्पण समझा है, वह कहीं तुम्हारी कायरता ही तो नहीं! समर्पण के लिए संकल्प चाहिए। झुकने के लिए खड़े होने वाला बल चाहिए। परमात्मा को पुकारने के लिए बेचारगी नहीं, भीतर की एक असहाय अवस्था नहीं, भीतर का परम संतोष, परम अहोभाव चाहिए।

\- ओशो

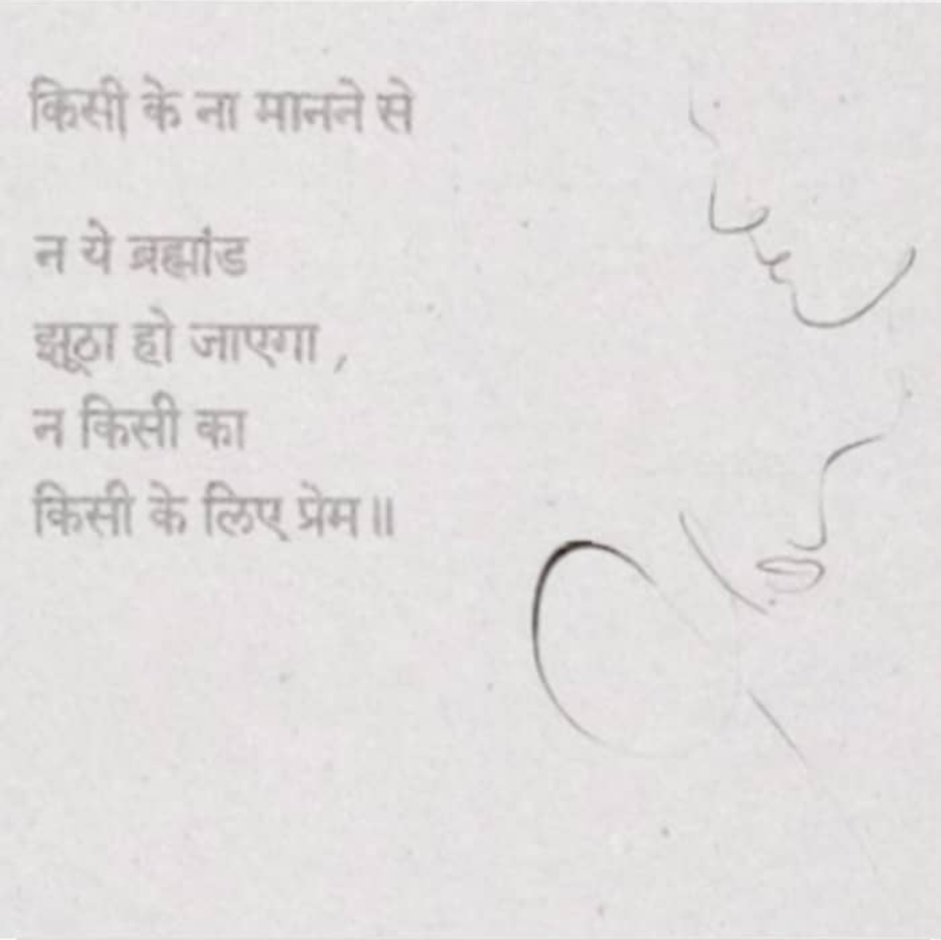


Like Comment Share

**Neelam Mahajan Singh**
1d ·

CamScanner

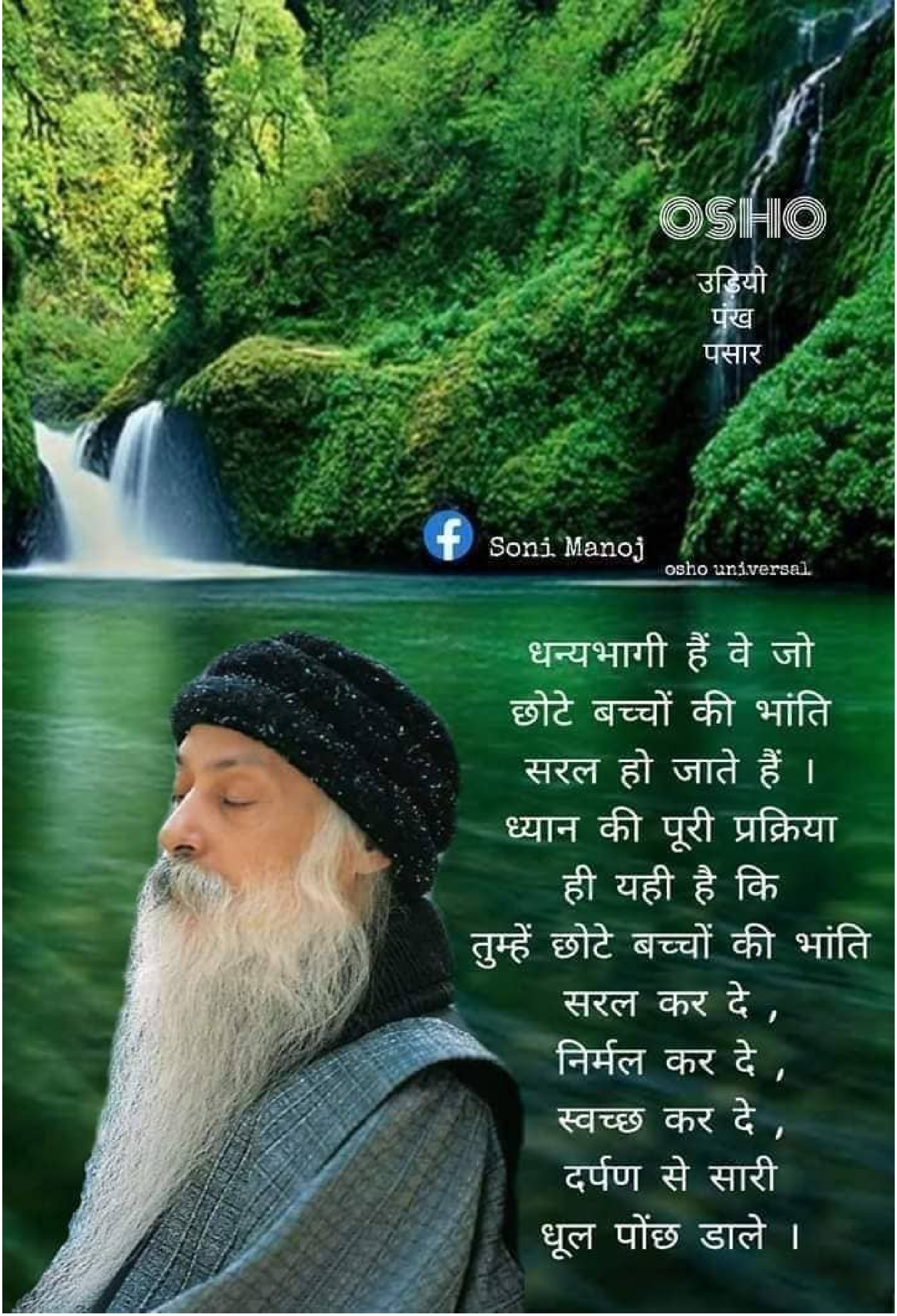
OSHO
उड़ियो
पंख
पसार
Soni Manoj
osho universal
धन्यभागी हैं वे जो
छोटे बच्चों की भांति
सरल हो जाते हैं ।
ध्यान की पूरी प्रक्रिया
ही यही है कि
तुम्हें छोटे बच्चों की भांति
सरल कर दे ,
निर्मल कर दे ,
स्वच्छ कर दे ,
दर्पण से सारी
धूल पोंछ डाले ।

CamScanner

7:43 pm 0 KB/s VoLTE 4G 82%

मनुष्य एक सात मंजिला मकान है, ए सेवन-स्टोरी हाउस, लेकिन हम एक मंजिल में ही जीते और मर जाते हैं। पहले उन सात मंजिलों के नाम आपको समझा दूं। जिस मंजिल में हम जीते हैं, उस मंजिल का नाम कांशस, चेतन है। उस मंजिल के ठीक नीचे दूसरी मंजिल है, जो तलघरे में है, जमीन के नीचे है, अंडरग्राउंड है। उस मंजिल का नाम है अनकांशस, अचेतन। उस मंजिल के भी और नीचे पाताल की तरफ तीसरी मंजिल है, उसका नाम है कलेक्टिव अनकांशस, समष्टि अचेतन। और उसके नीचे भी एक चौथी मंजिल है, और भी नीचे, सबसे नीचे, उस मंजिल का नाम है, कॉस्मिक अनकांशस, ब्रह्म-अचेतन। जिस मंजिल पर हम रहते हैं उसके ऊपर भी एक मंजिल है, उस मंजिल का नाम है सुपर-कांशस, अति-चेतन। उसके ऊपर एक मंजिल है जिसको कहें कलेक्टिव कांशस, समष्टि चेतन। और उसके भी ऊपर एक मंजिल है जिसे कहें कॉस्मिक कांशस, ब्रह्म-चेतन। जहां हम हैं उसके ऊपर तीन मंजिलें हैं और उसके नीचे भी तीन मंजिलें हैं। यह मनुष्य का सात मंजिलों वाला मकान है। लेकिन हममें से अधिक लोग चेतन मन में ही जीते और मर जाते हैं।

आत्मज्ञान का अर्थ है, इस पूरी सात मंजिल की व्यवस्था से परिचित हो जाना। इसमें कुछ भी अपरिचित न रह जाये, इसमें कुछ भी अनजाना न रह जाये। क्योंकि इसमें यदि कुछ भी अनजाना है तो मनुष्य अपना मालिक, अपना सम्राट कभी भी नहीं हो सकता। जो अनजाना है वही उसकी गुलामी है। वह जो अज्ञात है, वह जो अंधकार पूर्ण है, वही उसका बंधन है। वह जो नहीं जाना गया, वह नहीं जीता गया है। अज्ञान ही हार है और ज्ञान ही विजय की यात्रा है।

इस सात मंजिल के भवन में हम सिर्फ एक मंजिल को जानते हैं जिसमें हम अपने को पाते हैं, जहां हम हैं। इस मंजिल में ही जीते रहने का नाम प्रमाद है। इस मंजिल में ही बने रहने का नाम प्रमाद है। प्रमाद का अर्थ है–मूर्च्छा। प्रमाद का अर्थ है–बेहोशी। प्रमाद का अर्थ है–निद्रा। प्रमाद का अर्थ है–तंद्रा। प्रमाद का अर्थ है–सम्मोहित अवस्था, हिप्नोसिस। हम इस एक मंजिल से इस तरह हिप्नोटाइज हो गये हैं, हम इस एक मंजिल से इस तरह सम्मोहित हो गये हैं कि हम इधर-उधर देखते ही नहीं। हमें पता भी नहीं चल पाता है कि हमारे व्यक्तित्व में, हमारे जीवन में, हमारे

CamScanner

7:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 82%
facebook

बहुत परेशानियां झेलनी पड़ी।क्योंकि लोगों ने कहा कि जीसस जैसा महापुरुष और मैरी मेग्दलीन के घर रुक जाए- वैश्या के घर! तो समाज की नीति, आचार को बड़ा धक्का लगा था। जिन शिष्यों ने जीसस से कहा था कि इस मैरी मेग्दलीन को छोड़ दें, इस एक के पीछे अकारण हमारे विचार को नुकसान पहुंच रहा है।तो जीसस मुस्कुराए थे कुछ बोले नहीं थे।और जिस रात जीसस पकड़े गए उस रात वही शिष्य जिन्होंने कहा था मैरी मेग्दलीन को हटा दें मार्ग से,इसके पीछे विचार को नुकसान पहुंचता है तो जीसस ने कहा था सुबह होने के पहले इसके पहले की मुर्गा बांग दे तुम सब मुझे छोड़कर चले जाओगे।और जिसे तुम छोड़ने को कह रहे हो वही भर शेष रह जाएगी।

और ऐसा हुआ जिस रात जीसस पकड़े गए और जब दुश्मन उन्हें ले जाने लगे,तो उनका एक शिष्य ल्यूक पीछे-पीछे भीड़ में हो लिया;बाकी सब तो हट गए। क्योंकि खतरा था उनकी जान का भी। एक ल्यूक पीछे-पीछे हो लिया।दुश्मनों ने देखा कि कोई एक अजनबी आदमी हमारे बीच है।उन्होंने पूछा कि तू कौन है?तू जीसस का साथी तो नहीं,तो ल्यूक ने कहा कौन जीसस? मैं तो पहचानता भी नहीं।जीसस ने पीछे मुड़कर-उनके हाथ बंधे थे और दुश्मन उन्हें पकड़े हुए थे- पीछे मुड़कर कहा सुन अभी तो मुर्गे ने बांग भी नहीं दी और तूने एक दफे इंकार कर दिया। सूली से जिस स्त्री ने उतारा वह मेग्दलीन थी।

शिष्यत्व की जिस ऊंचाई पर स्त्रियां पहुंच सकती हैं, पुरुष नहीं पहुंच सकते। क्योंकि निकटता की जिस ऊंचाई पर स्त्रियां पहुंच सकती हैं,पुरुष नहीं पहुंच सकता- स्वीकार की, समर्पण की।पर शिष्याओं के नाम तो बहुत जाहिर नहीं हो सकते हैं। शिष्य आखिर शिष्य है।नाम तो गुरुओं के ही होंगे।

और चूंकि स्त्रियां बहुत अद्भुत रूप से,गहन रूप से श्रेष्ठतम रूप से शिष्य बन सकती हैं।इसलिए गुरु नहीं बन सकतीं, क्योंकि शिष्य का जो गुण है वही गुरु के लिए बाधा है।गुरु को तो आक्रमक होना पड़ेगा।गुरु तो शिष्यों को मिटाएगा,तोड़ेगा, नष्ट करेगा।वह स्त्री के बस की बात नहीं है।स्त्री बना सकती है,ग्रहण कर सकती है, संभाल सकती है, बीज को अपने भीतर आरोपित करके गर्भ बना सकती है, जन्म दे सकती है।

ओशो

CamScanner

7:38 pm KB/s VoLTE 4G 82%

Manage your Feed

**ओ शो वाणी**

Seema Mangal · 9h ·

हिन्दुस्तान की एक जलती समस्या है पाखण्ड, सब तरह का पाखण्ड। जो आदमी पक्का अहंकारी है, वह हाथ जोड़कर कहता है, मैं तो कुछ भी नहीं हूं, आपके पैर की धूल हूं। जरा उसकी आंखों में देखें। वह ऐसा लग रहा है कि अगर मौका मिल जाय तो आपको अभी पैर के नीचे दबा दे। लेकिन वह कह रहा है कि मैं विनम्र हूं, मैं सेवक आदमी हूं, मैं आपके पैर की धूल हूं। यह हम पाखण्ड सिखा रहे हैं। वह आदमी भीतर तिजोरी बड़ी करता जा रहा है और वस्त्र सादे पहने हुए है। वह पैदल चल रहा है और महल बड़ा किये जा रहा है। वह योरोप और अमरीका के बैंकों में धन इकट्ठा कर रहा है और यहां बैठ कर चर्खा कात रहा है। बहुत अजीब मामला है। यह भारत का जलता हुआ प्रश्न है, हिपोक्रेसी, पाखण्ड है। हर आदमी पाखण्ड के साथ खड़ा हो गया है। तोड़ेंगे कैसे इसे हम?

जब तक हम उन नियमों को नहीं बदलते जिनकी वजह से पाखण्ड होता है, तब तक यह तोड़ना मुश्किल है। जीवन को सहज स्वीकार करना होगा तो हिपोक्रेसी टूट सकती है।

- ओशो

भारत के जलते प्रश्न #१

अहमदाबाद डिसेंबर २३, १९७९

CamScanner

CamScanner

8:16 pm 9 KB/s VoLTE 4G 78%

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 1d

*दुनियां से बात करने के लिये*
*फोन 📞की जरूरत होती है !*
🌹 और 🌹
*प्रभु 🙏 से बात करने के लिये*
*मौन 😔की जरूरत होती है।।*
फोन से बात करने पर
बिल देना पड़ता है ,
और
ईश्वर से बात करने पर
दिल 💕देना पड़ता है।
*"माया" को चाहने वाला,*
*"बिखर" जाता है."*
*भगवान को चाहने वाला*,
*"निखर" जाता है*..👏

You and 12 others 3 comments

Like Comment Share

**प्रिय नदी**

1d

Qutab Minar (कुतुब मिनार) ❤️❤️beautiful जिन्दगी 🙈🙈

See translation

CamScanner

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Seema Mangal · 19 Oct ·

आज ओशो को गये 31 साल हो गये है । ऑरेगोन के बाद उनका दिल टूट गया था । 5 साल उन्होंने अपना काम समेटने और अपने वास्तविक शिष्यों के लिये निर्धारित किये थे । उसके बाद उन्होंने अपना देह का कागज फेंक दिया और मूर्ख मनुष्यों की बदकारियों से आजाद हो गये । बहुत झेला उन्होंने , उच्चतर चेतना के लिये निम्नतर चेतना के साथ एक क्षण भी रहना बहुत त्रासदायी होता है। उन्होंने प्यार की गंगा बहाई पर लोग प्यार को समझे नहीं । चेतना का रूपांतरण दुनिया की सबसे कठीन घटना है और इसलिये मोक्ष अत्यंत दुर्लभ है ।करोड़ों मनुष्यों में से कभी कोई एक मनुष्य मोक्ष को उपलब्ध हो पाता है । गुरु कोशिश कर कर के हार गये पर सिचुएशन में कोई बहुत इम्प्रूवमेंट नहीं हो पाया है । ओशो सन्यासी भी अपने अपने सुखों में तल्लीन है ।

ओशो को अपनी आयु 58 वर्ष का पहले से पता था । मैनें उनके प्रवचनों में तीन जगह इसे नोट किया है जहां उन्होंने indirectly अपनी आयु का जिक्र किया है । एक जगह वे कहते है कि मान लो मेरी उम्र 59 साल है । अब ये मजेदार है , क्योंकि मान लो 59 साल कोई नहीं कहता है , जो भी कहेगा मान लो 60 साल या 70 साल कहेगा । स्पष्ट है कि उन्हें पता था , पर कम लोग ही इसे पकड़ पाये । एक दूसरे प्रवचन में वे 58 साल ही बोले है । एक अन्य प्रवचन में उन्होंने कहा था मैं 80 साल जीता पर अब बहुत ज्यादा out of body एक्सपीरियंस के कारण मेरी आयु 20 साल कम हो गई है ।

दरअसल ओशो और जे के जैसे लोगों को अपनी जीवन की पटकथा पहले से पता होती है । जे के ने तो कहा भी था - my life has been planned . स्क्रिप्ट के अनुरूप अभिनय उन्होंने किया था । यही मोक्ष की अवस्था है जहां अपनी कोई ईच्छा और कर्म नहीं होता है । जो होता है विराट की हारमनी (सुसंगति) में होता है । एक तरह से ये परम गुलामी है , पर वास्तव में यही परम मुक्ति है ।

CS CamScanner

सर्व आत्माओं के परमपिता शिव परमात्मा.
श्री कृष्ण
इस्लाम
महावीर
श्री राम
गौतम बुद्ध
गुरु नानक देव
कबीर साहेब
ईसा मसीह
शंकराचार्य
शंकर जी
साई बाबा

CamScanner

OSHO
परमात्मा का कोई
धर्म नहीं होता।
मौन के क्षणो में
आप जहां बैठ गए,
वहीं तीर्थ बन जाते हैं।
वहीं परमात्मा नाचने
लगता है। मौन होना
सीखे। यह मौन ही
ध्यान है। इसी ध्यान
के क्षण में आप
परमात्मा के साथ
होते है।
ओशो
HAPPY

CamScanner

8:04 pm 3 KB/s VoLTE 4G 79%

Reels · 1d ·

ब्रह्म के सिवाय हमारा कोई नहीं....
#viralreels #viralvideoreels #explorereels #explorereel #viralshort #exploremoretoday #oshointernati... See more

342 6 comments • 51 shares • 4.3K views

Like Comment

CS CamScanner

CamScanner

बाहर की दुनिया तो देखती है उसकी मस्ती को।
मीरा की मस्ती को सबने देखा, मीरा की पीड़ा को किसने देखा? मगर उस पीड़ा के बिना मस्ती है ही नही। असल में जिसको तुम बाहर मस्ती कह रहे हो, वह उसी पीड़ा का छलकना है। वही पीड़ा लबालब हो गई है, भर गई है पात्र में, उछल रही है।

मस्ती-ओ-हाल जिसे कहते है दुनिया वाले..
तेरे दीवाने इसे तेरी नजर कहते है..!!

अहोभाव
ओशो

CamScanner

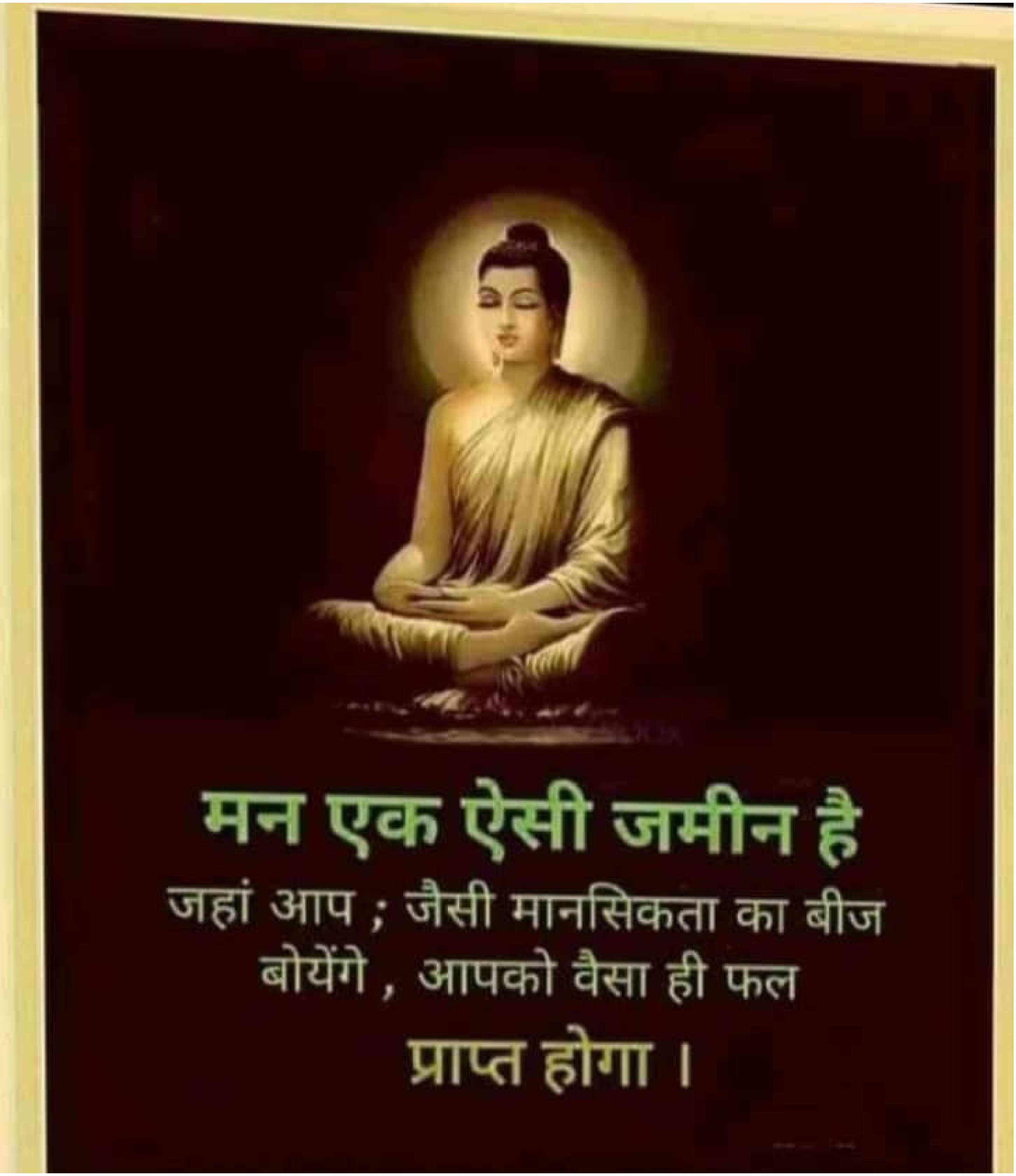


CamScanner

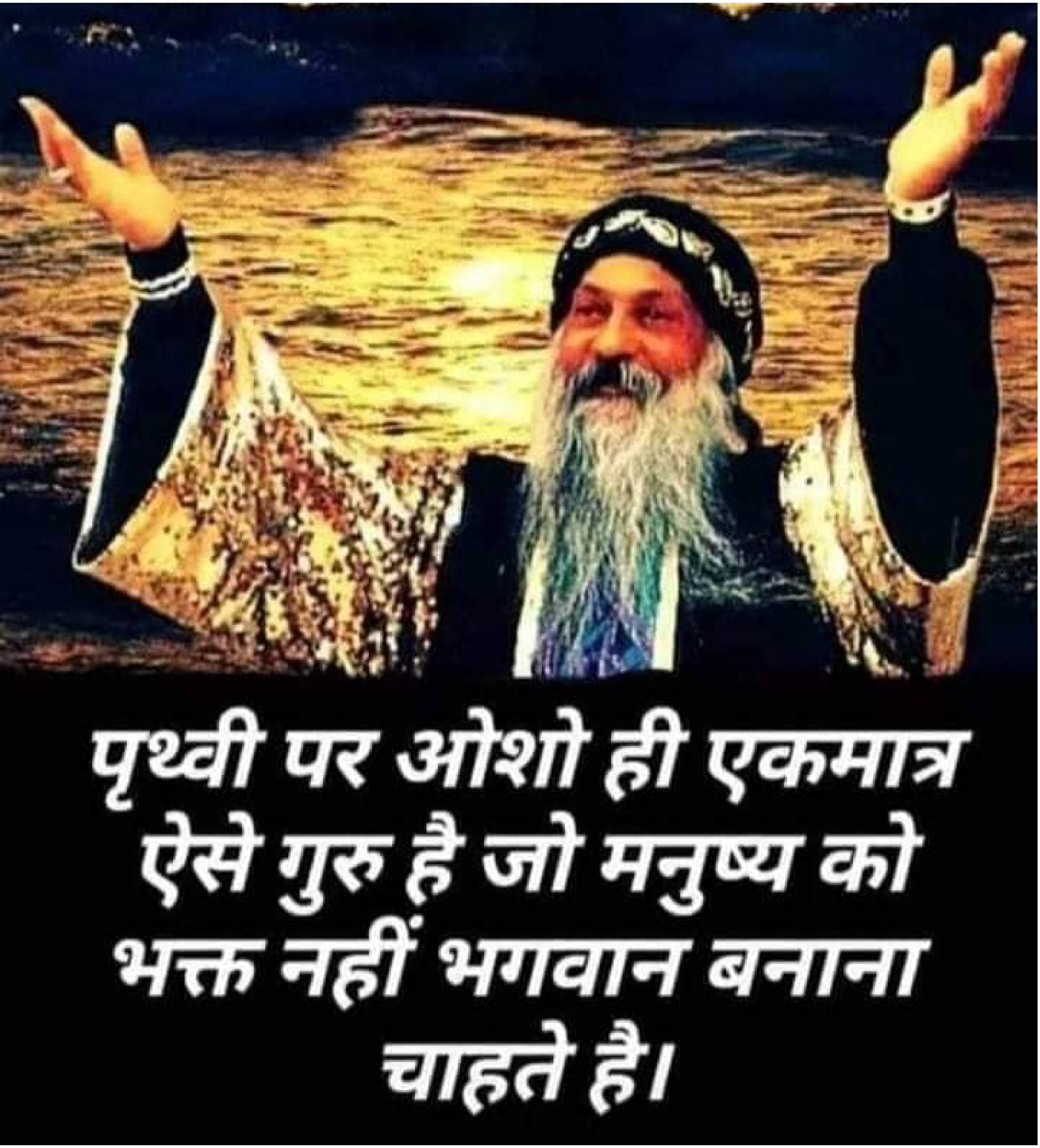


CamScanner

9:15 pm 0 KB/s 72%
facebook

इसलिए सबफिलासफीज अधूरी हैं; होंगी ही। कोई और उपाय नहीं है। साक्रेटीज कितनी ही बड़ी बात कहे, वह बात मन की ही है। और साक्रेटीज के पास मन का कितना ही विकसित रूप हो, वह मन ही है। अगर साक्रेटीज यह भी कहे कि ये सातों जो रूप टूट गए हैं किरण के, इनको जोड लेने से फिर एक किरण बन सकती है, तो भी वह मन का ही अनुमान है। अरस्तु कितना ही कहे, प्लेटो कितना ही कहे, काट और हीगल कितना ही कहें, वे जो कह रहे हैं, वह उनके विचार का निष्कर्ष है, अनुभव का नहीं। 1 वे जो कह रहे हैं, वह उनका तर्कबद्ध आयोजन है, प्रतीति नहीं। वह उनके मन की ही दृष्टि है, मन से मुक्त उनका साक्षात्कार नहीं। मन से पैदा होती है फिलासफी। मन के पार उठ जाने से जो पैदा होता है, वही धर्म है।

मन जो भी कहेगा, वह अधूरा होगा। इसलिए मेरा मन जो कहेगा और आपका मन जो कहेगा, उसमें मेल होने का कोई भी उपाय नहीं है। मन का कहना करीब-करीब वैसा ही है, जैसा पंचतंत्र की एक पुरानी कथा में हम सब जानते हैं, पांच अंधे एक हाथी को अनुभव करते हैं। और वे जो भी कहते हैं, वह सभी सच है। जिस अंधे ने हाथी के पैर को छुआ है, उसने कहा, किसी महल के सुदृढ़ स्तंभों की भांति है हाथी। और जिसने हाथी के कानों को छुआ, उसने कहा कि जैसे स्त्रिया अनाज को साफ करती हैं सूप में, वैसे सूप की भांति है हाथी!

गलत दोनों ने नहीं कहा, गलत पांचों ने नहीं कहा; और पांच हजार अंधे भी इकट्ठे हो जाते, तो कोई भी गलत न कहता। वे सभी ठीक कहते। फिर भी उनका ठीक आशिक था। और भूल उनके कहने में नहीं थी, भूल उनके विस्तार में थी। जब किसी अंधे ने कहा कि हाथी किसी महल के खंभों की भांति है, तब भूल इसमें नहीं थी, जो उसने जाना था। जो उसने जाना था, वह उसने पैर जाने थे; जो उसने कहा, वह हाथी के बाबत कहा। जो जाना था, वह अंश था; और जिसके संबंध में कहा, वह पूर्ण था। और जब भी कोई अंश को पूर्ण के संबंध में कहता है, तो असत्य हो जाता है।

CamScanner

9:12 pm 1 KB/s VoLTE 4G 73%

लेकिन उस विराट अनुभव को, तुम सोचते हो इतने सस्ते में पा लोगे? विवाह न करोगे? एक गरीब स्त्री से विवाह न करोगे और तुम्हें ब्रह्म मिल जायेगा? काश इतना आसान होता तो मैं भी तुमसे कहता कि ब्रह्मचर्य को लक्ष्य बना लो!

ब्रह्मचर्य को तो भूलो। अभी तो जीवन को जियो! परमात्मा ने जो जीवन दिया है उसे उसकी समग्रता में जियो, परिपूर्णता में जियो। जरा भी इनकार मत करो। जरा भी भयभीत नहीं, जरा भी सिकुडो मत। अभी तो डुबकी मारो इस जीवन में। इसी डुबकी को मार कर तुम जो मोती ले आओगे, वे ब्रह्मचर्य के होंगे। ब्रह्मचर्य जीवन-विपरीत नहीं है, जीवन का सार -निचोड़ है।

जैसा कुछ चाहा था,
वैसा तो हुआ नहीं!
शब्दों की भीड़ और हम,
जलते संबंध और भ्रम।
चिटका है शीशा क्यों?
हमने तो छुआ नहीं।
जीने को खींचतान।
कहने को स्वाभिमानी।
आच बहुत है लेकिन,
आस -पास धुआ नहीं।
रीतापन अपना है
बाकी सब सपना है,
डूबे हैं जिसमें हम,
शायद वह कुआ नहीं जीवन को रीता-रीता अनुभव न करोगे तो क्या करोगे? अगर अस्वाभाविक ढंग से जीने की कोशिश की तो यही होगा-
रीतापन अपना है,
बाकी सब सपना है।
डूबे हैं जिसमें हम,
शायद वह कुआ नहीं।
जीवन में डूबो, जीवन के कुएं में डूबो। डरो मत! डर - डर कर कोई परमात्मा तक नहीं पहुंचता। केवल साहसी, दुस्साहसी उस तक पहुंचते हैं। और देन न करो।

CamScanner

9:12 pm 3 KB/s VoLTE 4G 73%

।।आशा नमन।।
ब्रह्मचर्य को तो भूलो। अभी तो जीवन को जियो!

मैं तो तुमसे जीवन को सहज जीने के लिए कह रहा हूं। मैं तो कह रहा हूं कि जो तुम्हारे भीतर स्वाभाविक है, उसे उसकी अभिव्यक्ति दो, उसे पूरी अभिव्यक्ति दो। उसकी अभिव्यक्ति से ही धीरे - धीरे तुम पकोगे। वह परिपक्वता एक दिन जरूर ब्रह्मचर्य लाती है। ब्रह्मचर्य जरूर एक दिन खिलता है। और अपूर्व फूल है ब्रह्मचर्य का! लेकिन ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल कामवासना का निरोध नहीं होता। ब्रह्मचर्य का अर्थ उस शब्द में ही छिपा है-ब्रह्म जैसी चर्या, ईश्वरीय आचरण। उसका कोई इतना छोटा अर्थ नहीं है कि कामवासना का निरोध। उसका अर्थ बहुत बड़ा है। उसका अर्थ नकारात्मक नहीं है, विधायक है।

तुम जरा ब्रह्मचर्य शब्द पर देखो, ख्याल दो। अंग्रेजी में कोई शब्द नहीं ब्रह्मचर्य को अनुवाद करने के लिए। जो शब्द है अंग्रेजी में, सेलिवेसी, वह अनुवाद नहीं करता उसका। क्योंकि सेलिबेसी नकारात्मक है। उसका कुल इतना ही अर्थ होता है-अविवाहित रहना। मगर अविवाहित रहना तो नकारात्मक बात है -कुछ न करना, विवाह न करना। लेकिन ब्रह्मचर्य विधायक बात है : ब्रह्म को पा लेना। विवाह न करना तो छोटी-मोटी बात है। विवाह न करने से तुम ब्रह्म को पा लोगे, काश इतना सस्ता होता हिसाब, तो ब्रह्म की कीमत पत्नी से ज्यादा न होती! स्वभावत: जब विवाह न करने से ब्रह्म मिलता हो तो ब्रह्म को रख दो एक पलवे पर और पत्नी को रख दो एक पलवे पर, तराजू बराबर बताएगा कि या चुन लो पत्नी या चुन लो ब्रह्म, जो भी चुनना हो। ब्रह्म को इतना छोटा न करो। ब्रह्म को इतना ओछा न करो। ब्रह्म विराट अनुभव है। उसके पार फिर कोई अनुभव नहीं। और ब्रह्मचर्य का अर्थ होता है : ब्रह्म को अनुभव करके जो चर्या होती है, जो जीवन होता है; ब्रह्म के अनुभव करने से जो चारों तरफ आभा होती है; ब्रह्म को अनुभव करने से जो प्रतिभा का निखार होता है; ब्रह्म को अनुभव करने से जो आनंद -उत्सव, जो मंगल -गीत छिड़ते हैं : जो भीतर होली- दीवाली दिन-रात चलने लगती है-होली भी और दीवाली भी! दीये भी जलते हैं और रंग भी उड़ते हैं और गुलाल भी! वसंत ही छा जाता है। और सब ऋतुएं खो जाती हैं, बसंत ही बसंत रह जाता है।

CamScanner

Law of Attraction & Yug Nirman Family (Facebook)
https://t.me/yugnirmanloa (Telegram)
आत्मा अंदर, परमात्मा अंदर, परमात्मा से मिलने का रास्ता भी अंदर।
बाहर किसे ढूंढ रहे हो..

CamScanner

8:57 pm 75%
en.m.wikipedia.org/wiki/

**Quotation**

"You are walking on the earth as in a dream. Our world is a dream within a dream; you must realize that to find God is the only goal, the only purpose, for which you are here. For Him alone you exist. Him you must find." – from the book *The Divine Romance*

Yogananda was the first major Indian teacher to settle in America, and the first prominent Indian to be hosted in the White House (by President Calvin Coolidge in 1927);[7] his early acclaim led to him being dubbed "the 20th century's first superstar guru" by the *Los Angeles Times*.[8] Arriving in Boston in 1920, he embarked on a successful transcontinental speaking tour before settling in Los Angeles in 1925. For the next two and a half decades, he gained local fame and expanded his influence worldwide: he created a monastic order and trained disciples, went on teaching tours, bought properties for his organization in various California locales, and initiated thousands into Kriya Yoga.[5] By 1952, SRF had over 100 centers in both India and the United States. As of 2012, they had groups in nearly every major American city.[8] His "plain living and high thinking" principles attracted people from all backgrounds among his followers.[5]

He published his *Autobiography of a Yogi* in 1946 to critical and commercial acclaim. It has sold over four

CamScanner

8:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 76%



यह इतनी बड़ी बात है कि सदियों से लोग जो कहते आये हैं उसको ओशो ने..... मनुष्य के मन की जो गहनतम, सूक्ष्मतम, भावनाएं है उसमें उनका जितना गहरा अध्ययन है, मैं समझता हूं वैसा किसी भी व्यक्ति का नहीं है।

जो लोग अंधविश्वास में जीते हैं वे ओशो के विचारों को स्वीकार नहीं पायेंगे, लेकिन जो तर्क से काम लेते हैं। उनके भीतर वह बात तीर की तरह चली जाती है। मैंने जब भी पढ़ा है इनको, तो मुझे लगा कि जो हम महसूस कर रहे हैं अंदर और कह नहीं पाते, उसे ये कह देते हैं।

ओशो को हम बयान तो नहीं कर सकते हैं। लेकिन लगता है, वे एक ऐसी शक्ति हैं जो विश्व के चिंतन को बदल सकते हैं; या कहें कि बदल ही दिया है उन्होंने। और उससे एक नये किस्म का विश्व निर्मित किया जा सकता है।

ओशो ने पृथ्वी पर जो तीनों forces  काम करती है उनके बारे में जितना अच्छा विश्लेषण दिया गतिशीलता, स्टेबिलिटी और बैलेंस ,उतना अच्छा कोई नहीं दे सकता उसके बाद ही चीजें क्लियर हुई मतलब अब आप गीता भी पढ़ो तो आपको समझ में आएगी आप कोई भी  आध्यात्मिक पुस्तक उठा लो आपको समझ में आने लगेगा, अगर आप एक बार ओशो पढ़ लो तो

जिस वैज्ञानिकता के साथ कृष्ण जी ने गीता में उपदेश दिए हैं योग के संबंध में ,भारत के लोगों ने उसे बहुत लिटरल मीनिंग निकाल के उसको बहुत तुच्छ बना दिया है लेकिन जब आप ओशो को पढ़ते हो या योगानंद परमहंस की किताब को पढ़ते हो तो आपको चीजें क्लियर होने लगती हैं कि कितनी वैज्ञानिक बातें इतनी हजार साल पहले कृष्ण संभव कर चुके थे और उससे पहले भी योग माया को लोग संभव कर चुके थे जैसे कि संदीपनी ऋषि से स्वयं कृष्ण ने दीक्षा ग्रहण की थी और योग के ऊपर उनके पूरे उपदेश हैं जो सही मायने में हर कोई नहीं समझ सकता उनका पूरा विश्लेषण अति वैज्ञानिक है!

CS CamScanner

CS CamScanner

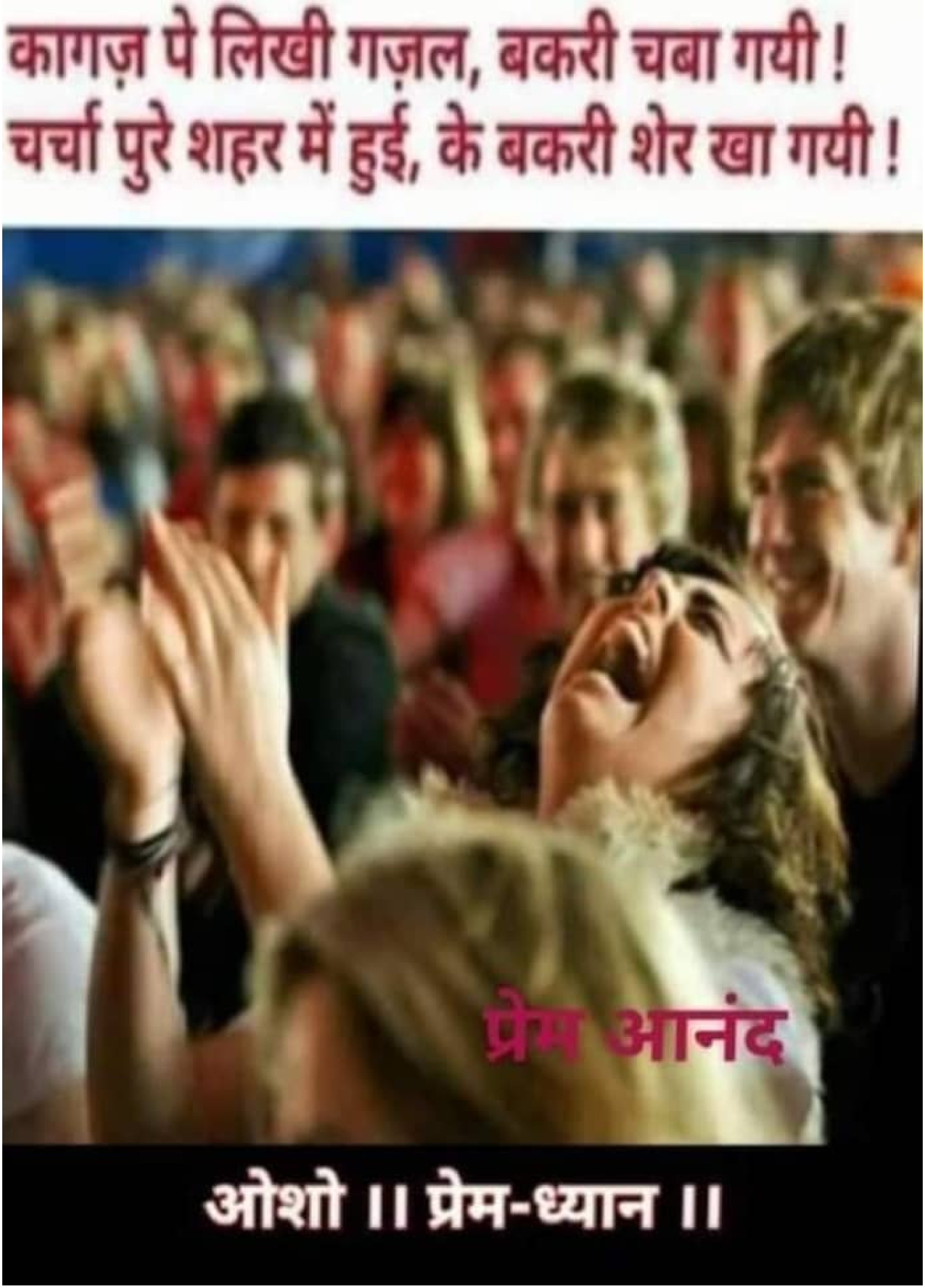
कागज़ पे लिखी गज़ल, बकरी चबा गयी !
चर्चा पुरे शहर में हुई, के बकरी शेर खा गयी !
प्रेम आनंद
ओशो ।। प्रेम-ध्यान ।।

CamScanner

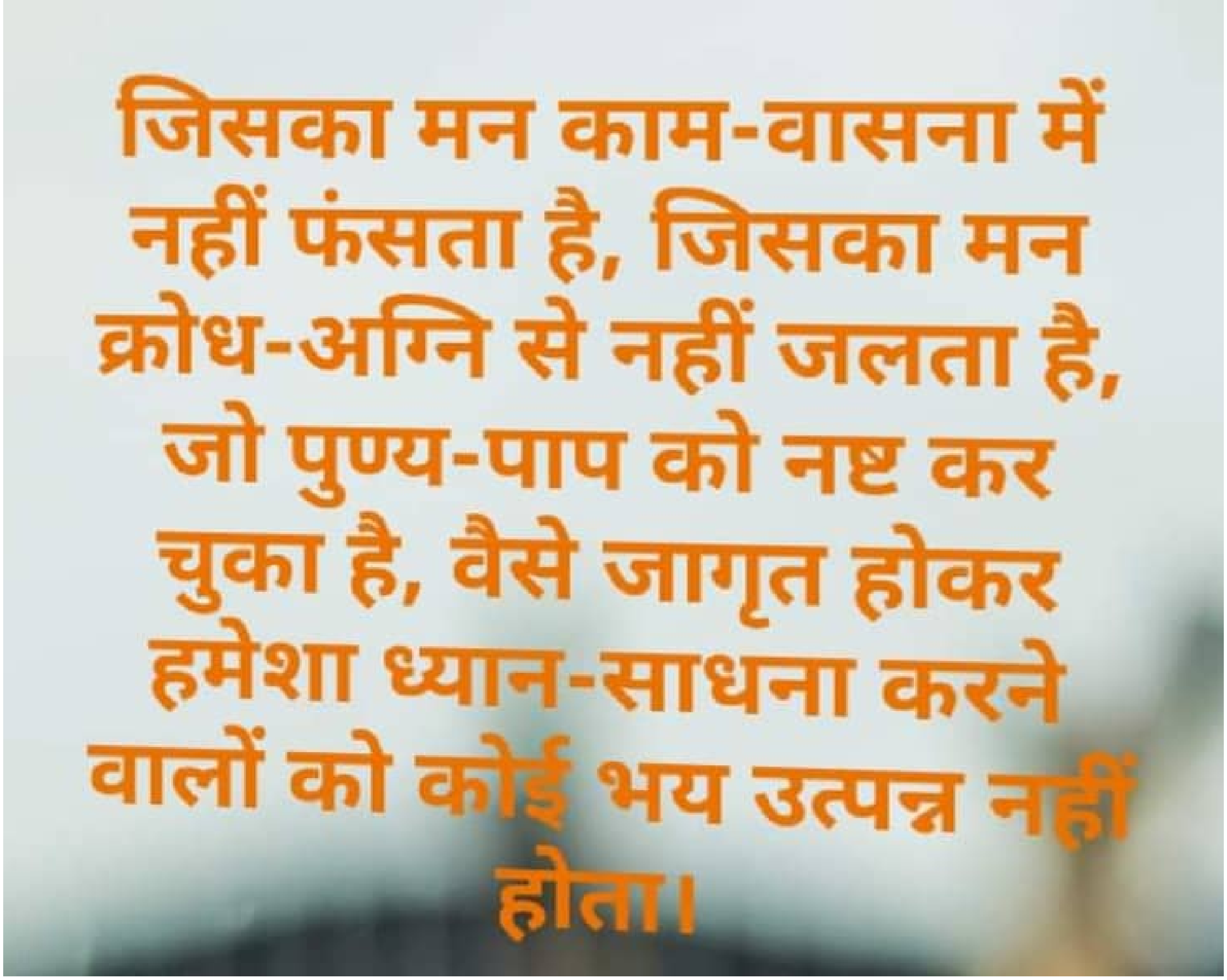
जिसका मन काम-वासना में नहीं फंसता है, जिसका मन क्रोध-अग्नि से नहीं जलता है, जो पुण्य-पाप को नष्ट कर चुका है, वैसे जागृत होकर हमेशा ध्यान-साधना करने वालों को कोई भय उत्पन्न नहीं होता।

CamScanner

8:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 76%

जाते हो। क्योंकि आज मैं कहता हूं यह ठीक है, कल कहता हूं वह ठीक है। वस्तुतः दोनों ठीक हैं।

तुम्हारी अड़चन यह हो जाती है, कि तब तुम क्या करो, कहां चलो, कैसे चलो। तुम्हारे अड़चन के कारण ही तो संप्रदाय पैदा हो गए हैं। इसलिए बुद्ध ने कहा, कि यही ठीक है तुम्हारी अड़चन को बचाने के लिए। तुम्हारी अड़चन तो बची। लेकिन सारी दुनिया संप्रदायों में विभाजित हो गई। अब वह बड़ी अड़चन हो गई। अब मैं तुम से कहूंगा कि सभी ठीक हैं, तब तुम्हें एक खयाल रखना होगा, तुम्हें सभी धर्मो पर नहीं चलना है, तुम्हें अपना व्यक्तित्व समझ लेना है। मैं सभी धर्मो पर बोलता रहूंगा।

केमिस्ट की दुकान में तुम जाते हो, वहां हजारों बीमारियों की दवाइयां रखी हुई हैं। इससे तुम्हें प्रयोजन नहीं है। तुम्हारे पास तो डाक्टर का प्रिस्क्रिप्शन है। तुम अपने प्रिस्क्रिप्शन की दवा ले कर लौट जाते हो। तुम यह नहीं पूछते, कि इतनी सारी दवाएं!

मैं तो मर जाऊंगा ले ले कर। इतनी सारी दवाएं तुम्हें लेना भी नहीं है।मैं तो केमिस्ट हूं। तुम्हें इतनी सब दवाएं लेने की जरूरत नहीं है। इतनी सब दवाएं तो तुम्हें मार ही डालेंगी। तुम तो अपनी बीमारी पकड़ लो। तुम अपनी बीमारी पहचान लो। वह भी मैं तुम्हें पहचनवा देने को तैयार हूं। और तुम अपने योग्य दवा चुनलो। सारी दुकान को तुम भूल जाओ। तुम्हारे लिए तो एक ही विधि पहुंचा देगी। न तुम्हें रामकृष्ण होने की जरूरत है, कि तुम सारी सीढ़ियों से चढ़ कर देखो। न तुम्हें मुझ जैसा होने की जरूरत है, कि तुम सारी सीढ़ियों की चर्चा करो; कि सारी सीढ़ियां सही हैं, ऐसा सिद्ध करो। इस सब प्रयोजन में तुम्हें कुछ सार नहीं है। वह तुम्हारी नियति नहीं है।

तुम्हारे लिए तो इतना जरूरी है कि तुम अपनी प्यास पहचान लो, अपना घाट पहचान लो, अपनी प्यास बुझा लो। अपनी नाव पहचान लो, अपनी नाव पर सवार हो जाओ और पार हो जाओ।

कहे कबीर दीवाना

ओशो ♣

CamScanner

8:49 pm 0 KB/s VoLTE 4G 76%

।।ओशो नमन।।
आप सभी धर्मो पर क्यों बोलते है?

संसार में तीन सौ धर्म हैं। तीन सौ धर्मो के तीन सौ धर्मशास्त्र हैं। बड़े अनूठे धर्मशास्त्र हैं। एक-एक धर्मशास्त्र अपने आपमें अदभुत है। इतना कह देना काफी नहीं है, कि मैंने अनुभव किया, सब पहुंचा देते हैं। इसको बड़े विस्तार से, इसको बड़े वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तावित करना जरूरी है। अनुभव तो भीतर होता है। मैंने अनुभव कर लिया, इससे क्या हल होता है? मेरा अनुभव इतनी प्रगाढ़ता से उपस्थित किया जाना चाहिए, कि वह हजारों लोगों के मन की आकांक्षा बनने लगे।

रामकृष्ण के पास बुद्ध जैसी क्षमता न थी, कि करोड़ों लोग रूपांतरित हो जाएं। न ही महावीर जैसी प्रतिभा थी कि वे जो कहें, वह उनके कहने के कारण सत्य मालूम होने लगे। ग्रामीण संत थे, लेकिन बड़ा अनूठा प्रयोग किया, पायोनियर थे। उस दिशा में उन्होंने पहला कदम उठाया।

उस दिशा में और कदम उठाए जाने जरूरी हैं। इसलिए मैं सभी साधना-पद्धतियों पर बोल रहा हूं। और तुम बड़ी मुश्किल में भी पड़ जाते हो। क्योंकि आज मैं कहता हूं यह ठीक है, कल कहता हूं वह ठीक है। वस्तुतः दोनों ठीक हैं।

तुम्हारी अड़चन यह हो जाती है, कि तब तुम क्या करो, कहां चलो, कैसे चलो। तुम्हारे अड़चन के कारण ही तो संप्रदाय पैदा हो गए हैं। इसलिए बुद्ध ने कहा, कि यही ठीक है तुम्हारी अड़चन को बचाने के लिए। तुम्हारी अड़चन तो बची। लेकिन सारी दुनिया संप्रदायों में विभाजित हो गई। अब वह बड़ी अड़चन हो गई। अब मैं तुम से कहूंगा कि सभी ठीक हैं, तब तुम्हें एक खयाल रखना होगा, तुम्हें सभी धर्मो पर नहीं चलना है, तुम्हें अपना व्यक्तित्व समझ लेना है। मैं सभी धर्मो पर बोलता रहूंगा।

केमिस्ट की दुकान में तुम जाते हो, वहां हजारों बीमारियों की दवाइयां रखी हुई हैं। इससे तुम्हें प्रयोजन नहीं है। तुम्हारे पास तो डाक्टर का प्रिस्क्रिप्शन है। तुम अपने प्रिस्क्रिप्शन की दवा ले कर लौट जाते हो। तुम यह नहीं पूछते, कि इतनी सारी दवाएं!

CamScanner

CamScanner

8:47 pm 0 KB/s 76%

3,338 people like this

Like Preview

2,704 people like

Like

See all

**Naye bharat ke khoj**

1d ·

भक्ति में कामना जरा भी नहीं रहती
अगर भक्ति में कामना रहे, तो भक्ति नहीं है, अगर तुमने परमात्मा से कुछ मांगा, तो चूक गए! कुछ भी मांगा तो चूक गए!
तुमने कहा कि मेरी पत्नी बीमार है ठीक हो जाए, कि मेरे बेटे को नौकरी नहीं लगती नौकरी लग जाए, कि तुम चूक गए!
फिर यह प्रार्थना न रही, यह वासना हो गयी, प्रार्थना तो तभी है जब कोई भी मांग न हो, कोई अपेक्षा न हो! प्रार्थना शुद्ध धन्यवाद है, मांग का सवाल ही नहीं है!
जो दिया वह इतना ज्यादा है कि हम अनुगृहीत हैं! जो दिया, वह मेरी पात्रता से ज्यादा है, ऐसी कृतज्ञता का नाम भक्ति है, भक्ति सौ प्रतिशत प्रीति है !!

~ओशो

CamScanner

8:29 am
98%
SPIRITUAL
OSHO | ओशो
Reels
बेबीलोन में 7000 साल
पहले मिले शिलालेख
51
2
3
भगवान श्री रजनीश
Give
SPIRITUAL
OSHO | ओशो
udio
भगवान श्री रज

CamScanner

जिस दिन तुम ये जान
लोगे की, यहां स्वयं
को जानने के अलावा,
कुछ भी जानना ,
बेकार है, उस दिन से
आनंद के द्वार खुल
जायेगे ,

CamScanner

ध्यान रहे,
वासनाओं के लिए भविष्य चाहिए,
जीवन के लिए भविष्य की
कोई भी जरूरत नहीं।
जीवन के लिए यही क्षण काफी है।
अभी मैं जीवित हूं पूरा।
आप पूरे जीवित हैं।
जीने के लिए कल की क्या जरूरत है?
लेकिन वासना के लिए
कल की जरूरत है,
क्योंकि वासनाएं बड़ी हैं;
आज कैसे पूरी होंगी?
कल चाहिए।
वासनाएं भविष्य निर्मित करती हैं।

CS CamScanner

ओशो कहते हैं - विज्ञान पुरुष है। धर्म स्त्री है. विज्ञान प्रकृति पर विजय पाने का प्रयास है; धर्म एक त्याग है; स्वयं को प्रकृति में विलीन कर देना। स्त्री जानती है कि कैसे पिघलना है, कैसे एक होना है। और प्रत्येक साधक को यह जानना होगा कि प्रकृति में कैसे घुलना है।

अहोभाव

CamScanner

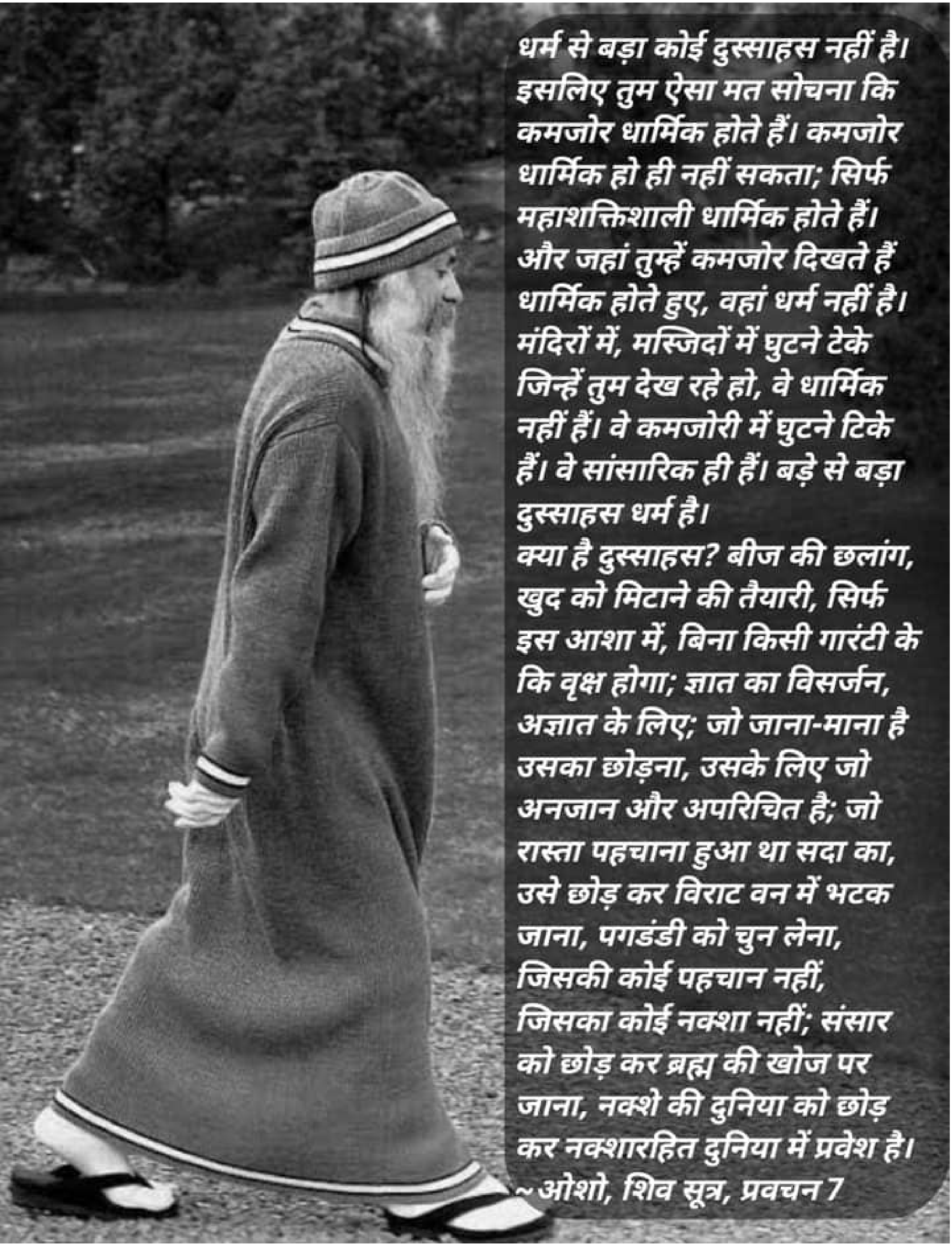


CS CamScanner

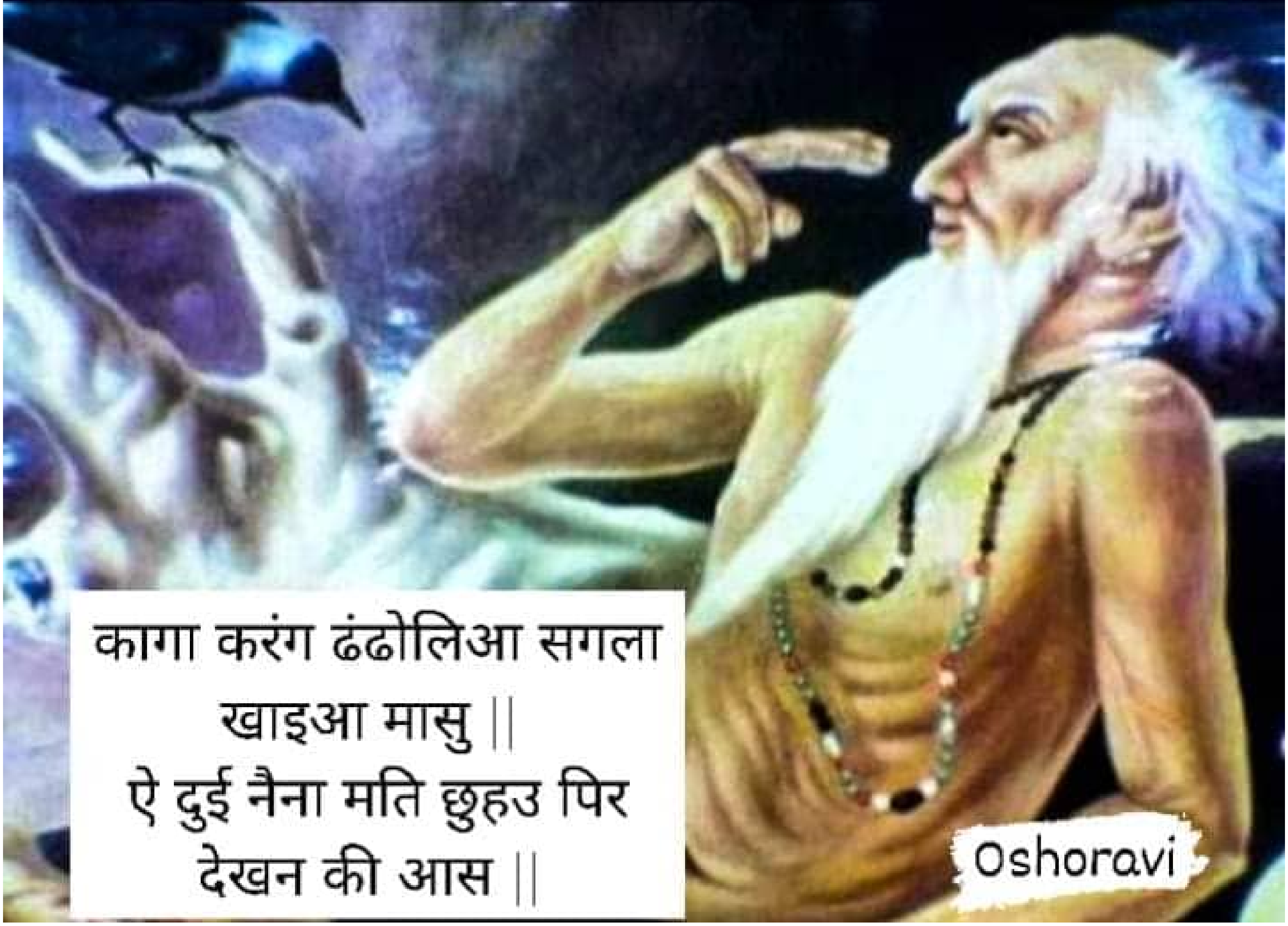

CamScanner

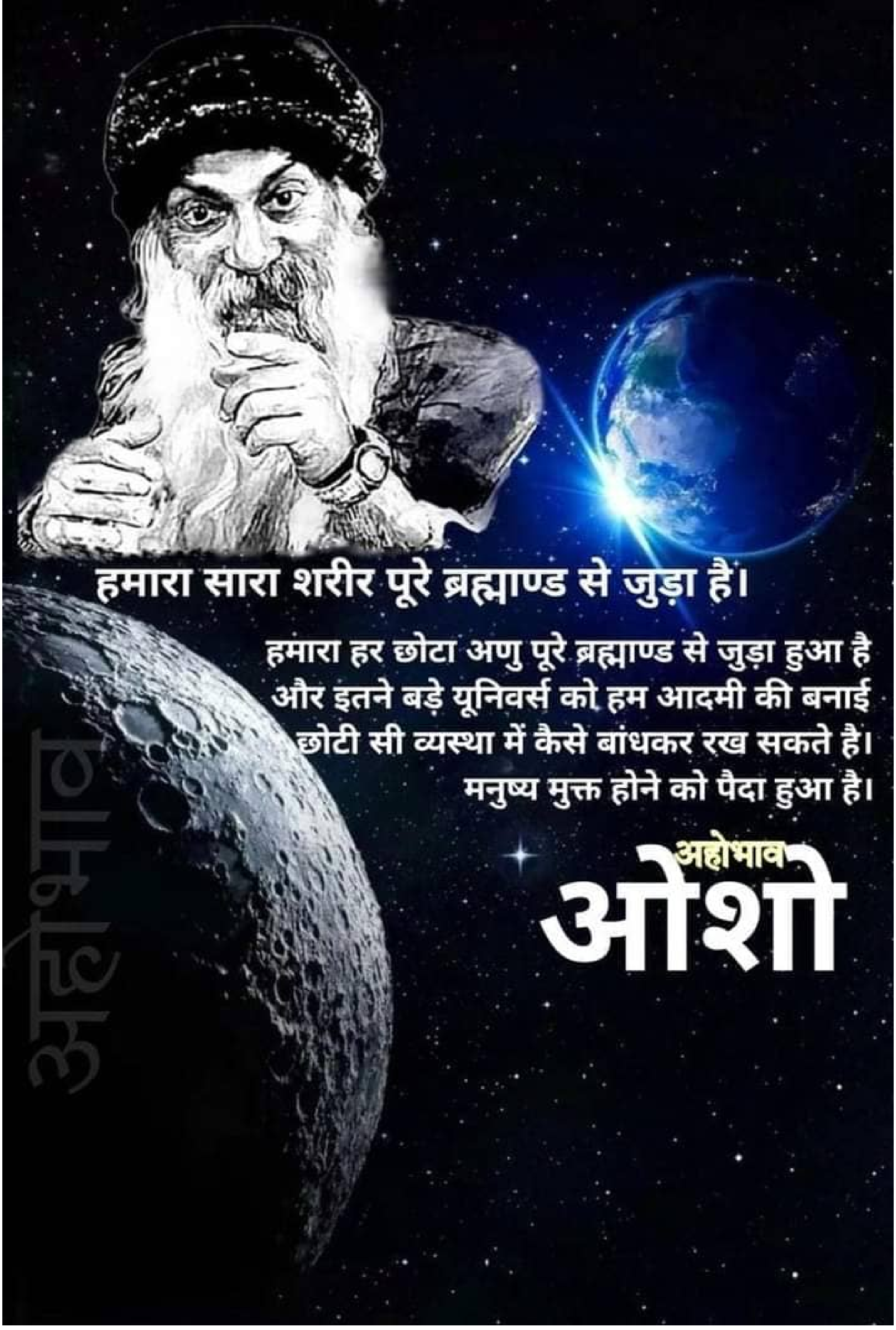


CS CamScanner

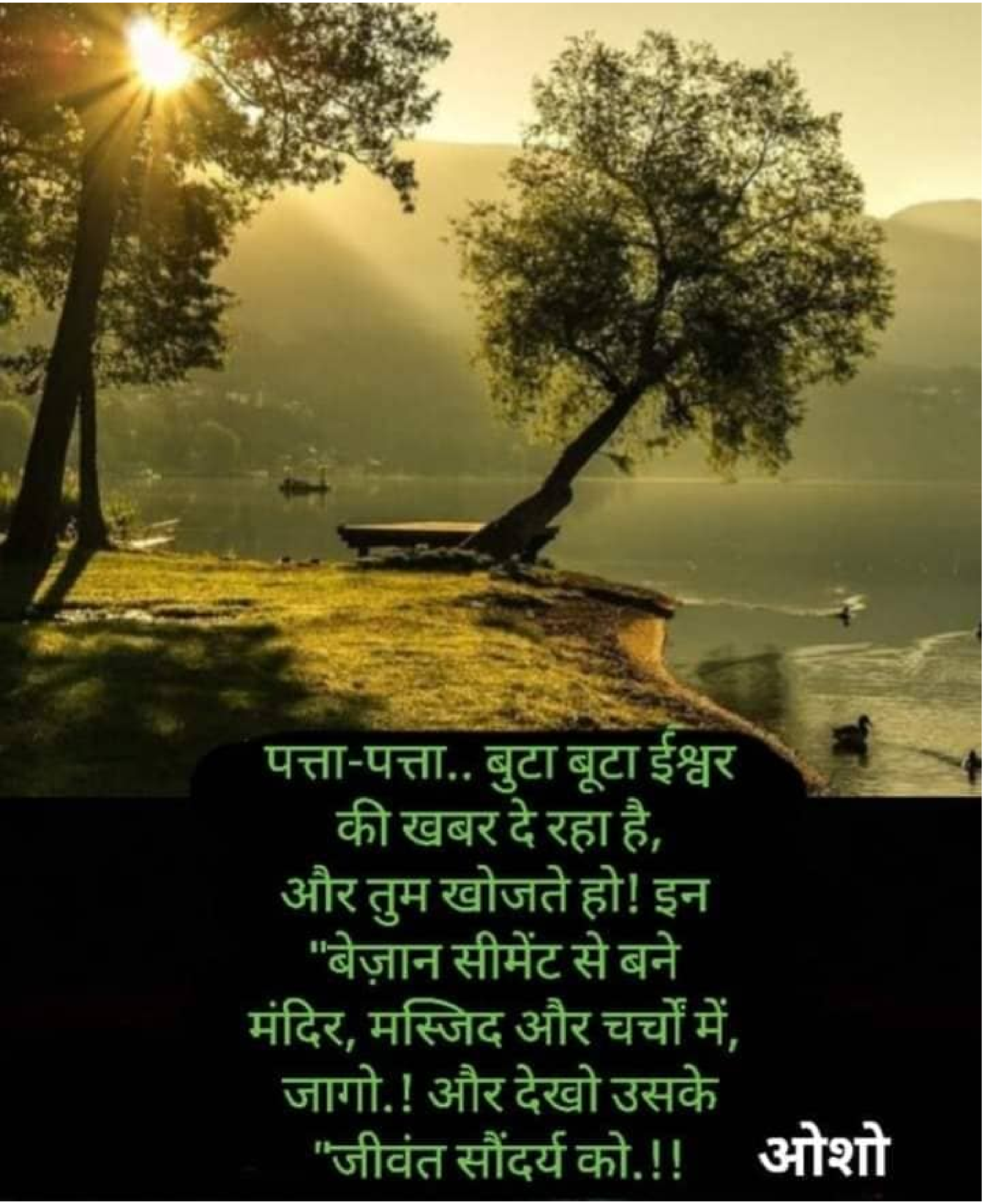


CS CamScanner

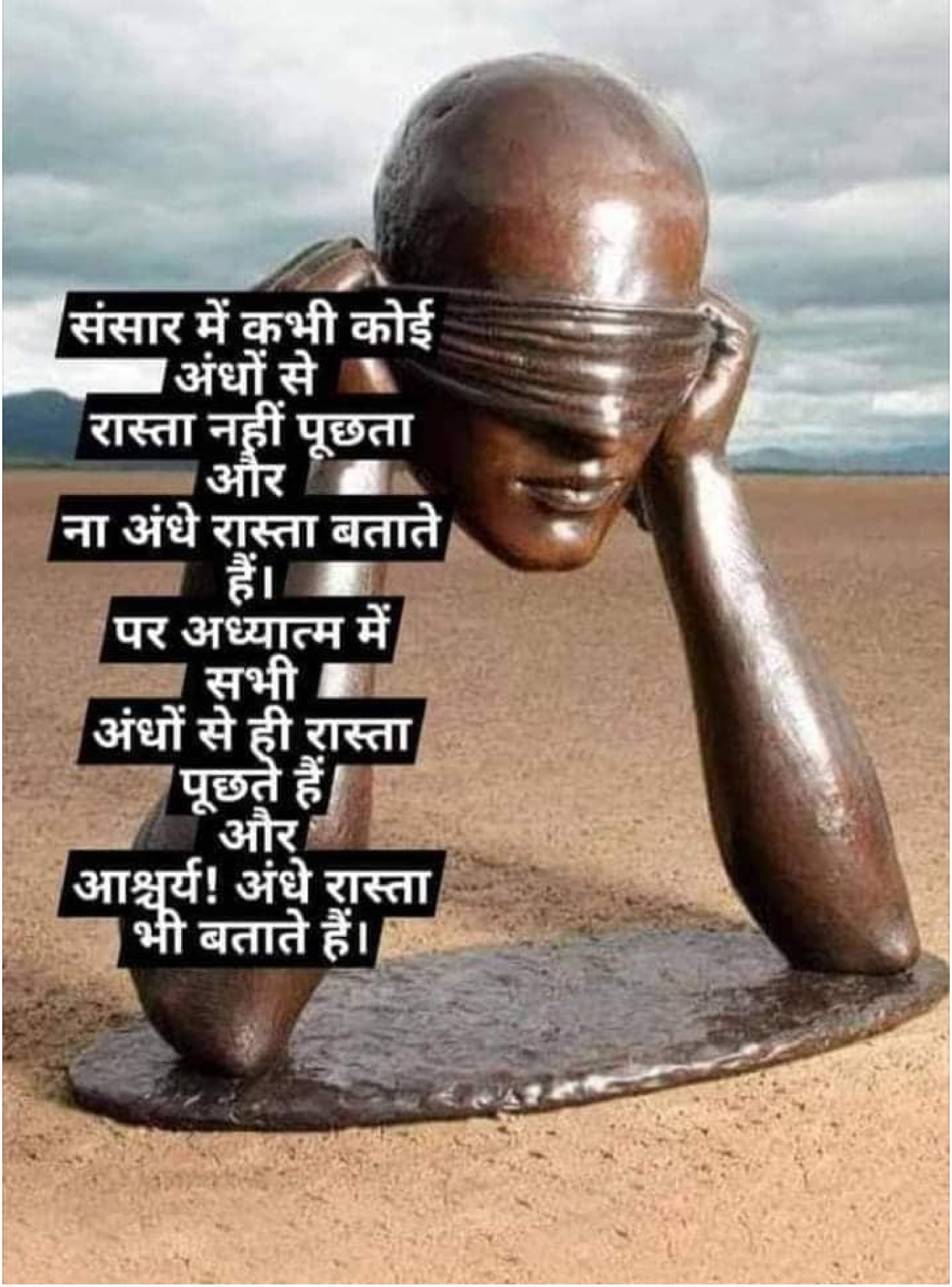
संसार में कभी कोई
अंधों से
रास्ता नहीं पूछता
और
ना अंधे रास्ता बताते
हैं।
पर अध्यात्म में
सभी
अंधों से ही रास्ता
पूछते हैं
और
आश्चर्य! अंधे रास्ता
भी बताते हैं।

CamScanner

जिसने तुम्हारा अपमान किया है,
वह उसकी मौज है। उसे जो ठीक
लगा, उसने किया। जिसने तुम्हारा
सम्मान किया है, उसकी मौज। उसे
जो ठीक लगा उसने किया। जो
उसके पास था, उसने दिया। तुम
अपमान और सम्मान दोनों को एक
ही धन्यवाद के भाव से स्वीकार
कर लेना, दोनों का आभार प्रगट
कर देना और आंख मूंदकर भीतर
डुबकी लगा लेना। प्रेम को प्रार्थना
बनाओ ❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

पूर्व जन्मों के संबंधों के बिना वर्तमान
जीवन में किसी से घनिष्ठ मित्रता होना
असंभव है। यह एक सच्चाई है जब
आप किसी के साथ मित्रता का अनुभव
करते हैं, तो इसलिए कि आप उस
आत्मा को पहले से जानते हैं। और
पूर्व जन्मों के आत्मीय संबंधों
के कारण ही आप अपने मित्र से
निकटता का अनुभव करते हैं।

~ ओशो

CS CamScanner

11:29 pm 0 KB/s VoLTE 4G 55%



अनुकरण करना अपराध है

तुम किसी दूसरे व्यक्ति जैसे कभी न हो सकोगे। अपने गहरे में तुम वैसे हो ही नहीं सकते। तुम वैसे ही बने रहोगे, लेकिन तुम अपने आप पर बल प्रयोग कर सकते हो जिससे तुम लगभग किसी दूसरे जैसे दिखना शुरू हो जाओगे।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी अनूठी निजता के साथ जन्म लेता है और प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी अलग नियति होती है। अनुकरण करना अपराध है, यह अपराधी होने जैसा है। यदि तुम बुद्ध बनने का प्रयास करते हो, तुम बुद्ध की नकल तो कर सकते हो; बुद्ध जैसे दिखाई भी दे सकते हो, बुद्ध की तरह चल भी सकते हो, उनकी ही तरह बातचीत भी कर सकते हो, लेकिन तुम चूक जाओगे।

तुम जीवन में वह सभी कुछ चूक जाओगे, जो वह तुम्हें देने के लिए तैयार है। क्योंकि बुद्ध केवल एक बार ही होते हैं, प्रकृति कभी अपने आपको दोहराती नहीं है। परमात्मा इतना अधिक सृजनात्मक है कि वह कभी भी किसी चीज को दोहराता नहीं। तुम वर्तमान में, अतीत में अथवा भविष्य में भी ठीक अपने जैसा कोई दूसरा मनुष्य नहीं खोज सकते। ऐसा आज तक कभी हुआ ही नहीं। मनुष्य होना कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। वह फोर्ड की कारों की तरह नहीं है, जिनके पुर्जे जोड़कर तुम ठीक एक जैसी लाखों कारों का उत्पादन कर सको। मनुष्य के पास अपनी आत्मा है, वह वैयक्तिक है। अनुकरण करना विष तुल्य है। कभी किसी का भी अनुकरण करना ही नहीं; अन्यथा तुम पहली कोटि के धर्म का शिकार बन जाओगे, जो अपने आप में किसी भी तरह धर्म है ही नहीं।

आनंद योग

ओशो

CamScanner

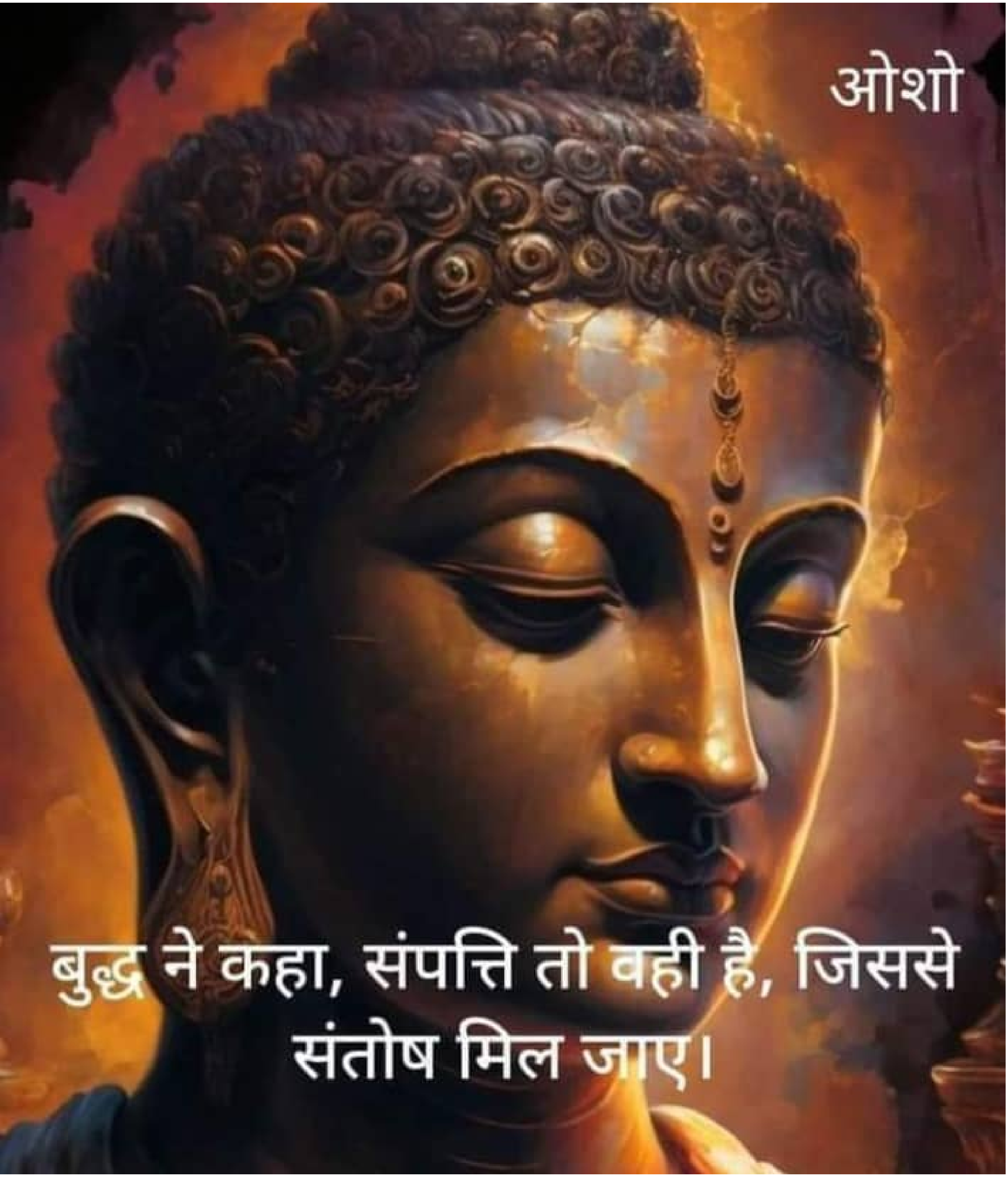


CamScanner

CamScanner

स्वयं के द्वार से ही सत्य को जाना जाता है। और सत्य को जान लेना आनंद में प्रतिष्ठित हो जाना है। असत्य में होना दुख में होना है। अज्ञान में होना दुख में होना है। और सत्य की उस ज्ञान-दशा में आनंद उपलब्ध होता है। आनंद और आत्मा अलग न समझें। आनंद और सत्य अलग न समझें। स्वयं और सत्य अलग न समझें।

ओशो अहोभाव
जिन खोजा तिन पाइया

CamScanner

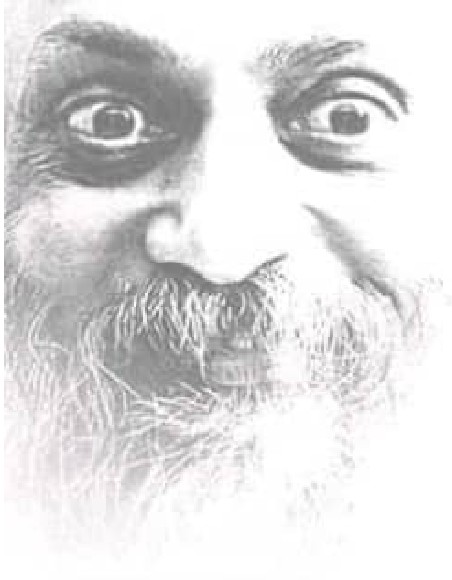

एक और एक मिलकर
दो हुआ
तो ये हुआ गणित..

एक और एक मिलकर
एक ही रहा तो
ये हुआ प्रेम..

–ओशो

CamScanner

11:24 pm 0 KB/s VoLTE 4G 56%

विचार क्षीण होने लगते हैं।
निर्विचार होने का उपाय है: विचारों के प्रति साक्षी-भाव को साधना। कोई एक क्षण में सध जाएगा, यह नहीं कहता। कोई एक दिन में सध जाएगा, यह भी नहीं कह रहा हूं। लेकिन अगर निरंतर प्रयास हो, तो थोड़े ही दिनों में आपको पता चलेगा कि जैसे-जैसे आप विचारों को देखने लगेंगे...कभी घंटे भर को किसी एकांत कोने में बैठ जाएं और कुछ भी न करें, सिर्फ विचारों को देखते रहें। कुछ भी न करें उनके साथ, कोई छेड़-छाड़ न करें, सिर्फ उन्हें देखते रहें। और देखते-देखते ही धीरे-धीरे आपको पता चलेगा, वे कम होने लगे हैं। देखना जैसे-जैसे गहरा होगा, वैसे-वैसे वे विलीन होने लगेंगे। जिस दिन देखना पूरा हो जाएगा, जिस दिन आप अपने भीतर आर-पार देख सकेंगे, जिस दिन आपकी आंख बंद होगी और आपकी दृष्टि भीतर पूरी की पूरी देख रही होगी, उस दिन आप पाएंगे—कोई विचार का कोलाहल नहीं है, वे गए। और जब वे चले गए होंगे, उसी शांत क्षण में आपको अदभुत दृष्टि, अदभुत दर्शन, अदभुत आलोक का अनुभव होगा। वह अनुभव ही सत्य का दर्शन है। और वही अनुभव स्वयं का दर्शन है। स्वयं के माध्यम से ही सत्य जाना जाता है। और कोई द्वार नहीं है।
स्वयं के द्वार से ही सत्य को जाना जाता है। और सत्य को जान लेना आनंद में प्रतिष्ठित हो जाना है। असत्य में होना दुख में होना है। अज्ञान में होना दुख में होना है। और सत्य की उस ज्ञान-दशा में आनंद उपलब्ध होता है। आनंद और आत्मा अलग न समझें। आनंद और सत्य अलग न समझें। स्वयं और सत्य अलग न समझें। ऐसी जो प्रक्रिया का उपयोग क्रमशः अपने जीवन में करेगा, वह कभी निर्विचार को अनुभव कर लेता है। निर्विचार को जो अनुभव कर लेता है, उसकी पूरी विचार की शक्ति जाग्रत हो जाती है।
जैसे किसी ने अंधेरे में प्रकाश कर दिया हो या जैसे किसी ने अंधे को आंख दे दी हों, ऐसा उसे अनुभव होता है। यह अगर क्रमिक साधना इसकी हो तो निश्चित ही उपलब्ध हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति अधिकारी है और हकदार है। जो अपने अधिकार, को मांगेगा, उसे मिल जाता है। जो उसे छोड़े रखता है, वह खो देता है।

ओशो
जिन खोजा तिन पाइया

CamScanner

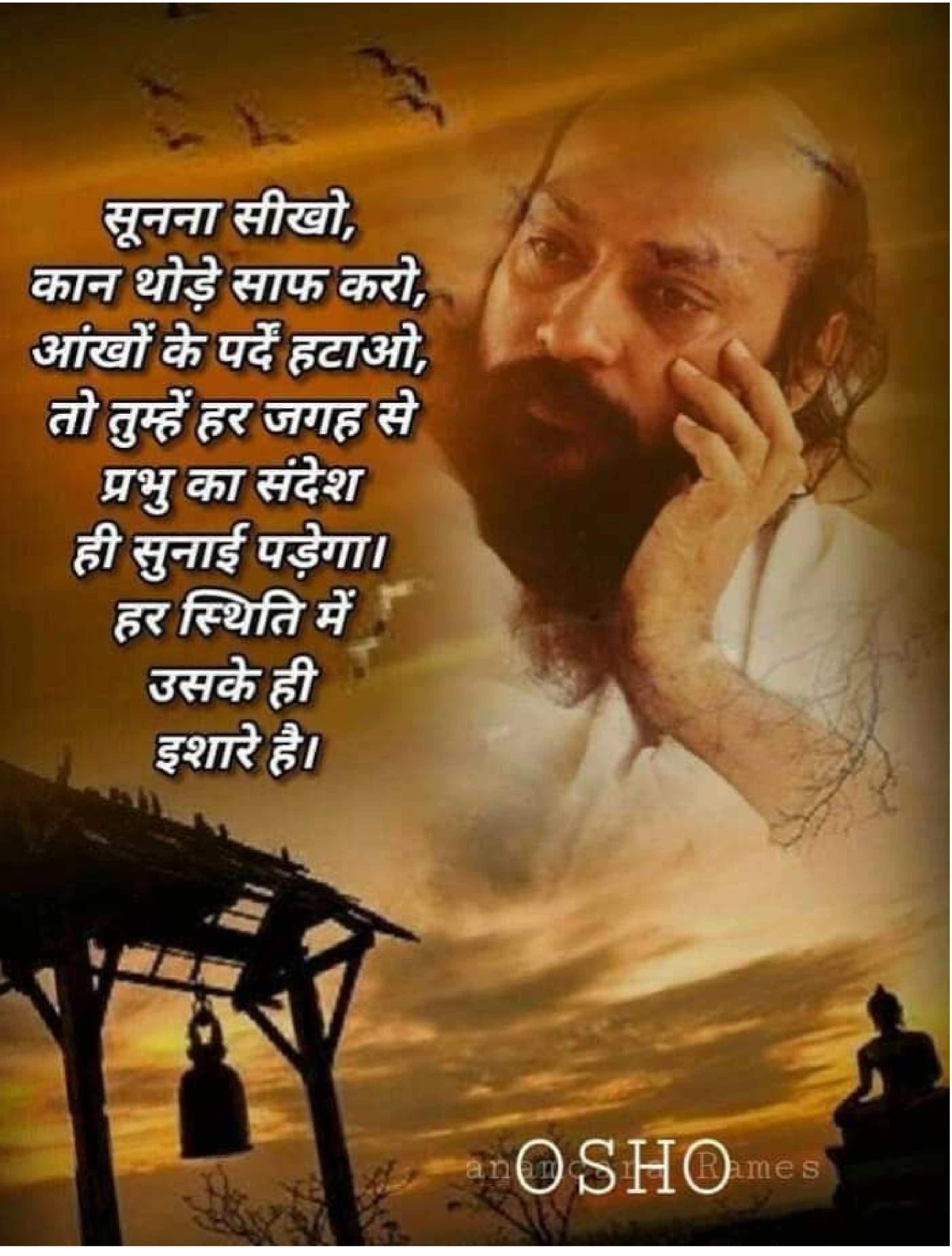
सूनना सीखो,
कान थोड़े साफ करो,
आंखों के पर्दे हटाओ,
तो तुम्हें हर जगह से
प्रभु का संदेश
ही सुनाई पड़ेगा।
हर स्थिति में
उसके ही
इशारे है।
OSHO

CamScanner

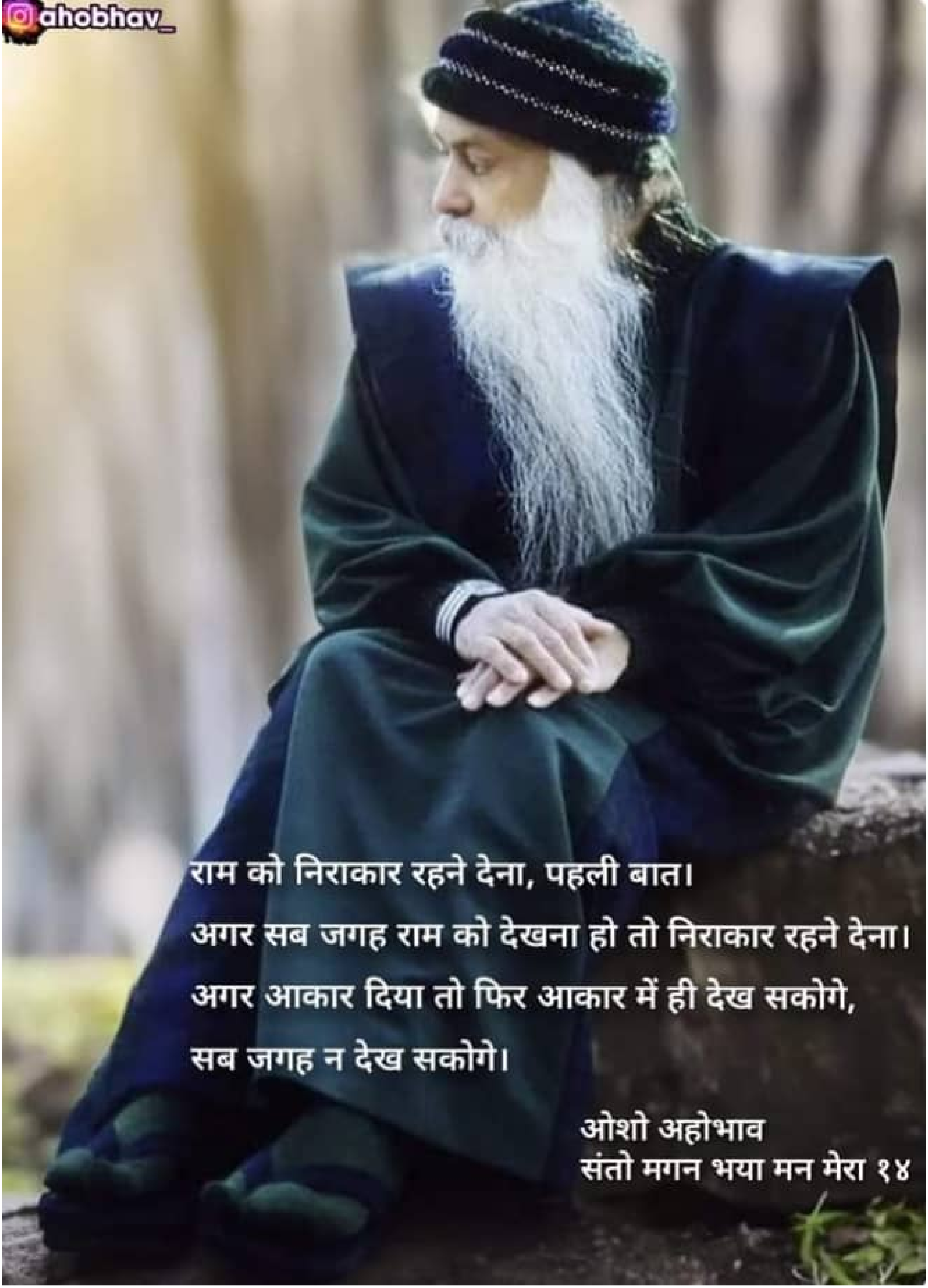
ahobhav_
राम को निराकार रहने देना, पहली बात।
अगर सब जगह राम को देखना हो तो निराकार रहने देना।
अगर आकार दिया तो फिर आकार में ही देख सकोगे,
सब जगह न देख सकोगे।
ओशो अहोभाव
संतो मगन भया मन मेरा १४

CamScanner

11:20 pm 0 KB/s 56%

5

See all

अहोभाव
3d ·

अहोभाव

तुम्हारा प्रश्न है: 'आंख को निर्मल करने का उपाय बताएं। चारों ओर राम कैसे दिखाई पड़ें?'
तो पहला तो निराकार का भाव करो। निराकार का भाव करते ही चारों ओर है ही राम, दिखाई पड़ने का सवाल नहीं है। वही है। उसके अतिरिक्त कोई और नहीं है। सारे आकार उसके हैं। निराकार का मतलब होता है: सारे आकार उसके हैं। सारी आकृतियां उसकी हैं। तुम भी वही हो। शेष सब भी वही है। मगर यह भी सिद्धांत रहे तो किसी काम का नहीं है, अनुभव बनना चाहिए। और अनुभव के लिए आंख निश्चित साफ करनी जरूरी है।
सरल उपाय है आंख को साफ कर लेने का--प्रेम से भरे हुए आंसू। रोओ। रोने से प्यारी और कोई प्रक्रिया नहीं है। दुख से मत रोना। दुख से जो रोता है उसने तो रोने की महिमा जानी ही नहीं। आनंद से रोना। आनंद-अश्रु! आंख स्वच्छ होने लगती है आनंद के अश्रुओं से। बाहर की ही आंख शुद्ध नहीं होती, भीतर की आंख भी शुद्ध हो जाती है। दृष्टि निर्मल हो जाती है। नहीं तो परमात्मा सामने खड़ा रहता है और हमें दिखाई नहीं पड़ रहा। हमारी आंखों पर इतनी धूल जमी है।

ओशो
संतो मगन भया मन मेरा १४

CamScanner

Write a comment...

**Osho Osho**
13h ·

🌿🌺🌿 ❤️ 🌿🌺🌿

भले ही निःस्वार्थ सेवा करने वाले का मूल्य...
जगत ना करे !

लेकिन...

नअदृश्य शक्ति उनके मूल्याँकन में कभी...
गलती नहीं करेगी !!

गुणों के सहारे ही व्यक्ति सफल हो पाता है
मगर विनय और विवेक साथ हो तो
शिखर छू जाता है !
जब हम अकेले हों
तब अपने विचारों को सम्भालें
और जब हम सबके बीच हों
तब अपने शब्दों को सम्भालें !

फूल सी बात करें, गन्ध बिखर जायेगी
एक भीनी सी महक़, परिवेश में घुल जायेगी !

दूर घृणा से रहें, प्यार के साये में जीयें
देह की तो बात क्या, आत्मा भी सँवर जायेगी !!

🌿🌺🌿 ❤️ 🌿🌺🌿

CS CamScanner

EkKadamSafaltakiOrr
जिसका मन स्थिर होता है,उसे कोई भी
परिस्थिति दुःख नहीं दे सकती।
एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

Papa ka phone aaya tha. Bol rahe the Rishi se kaho team ko 70hrs a week practise karaaye

CamScanner

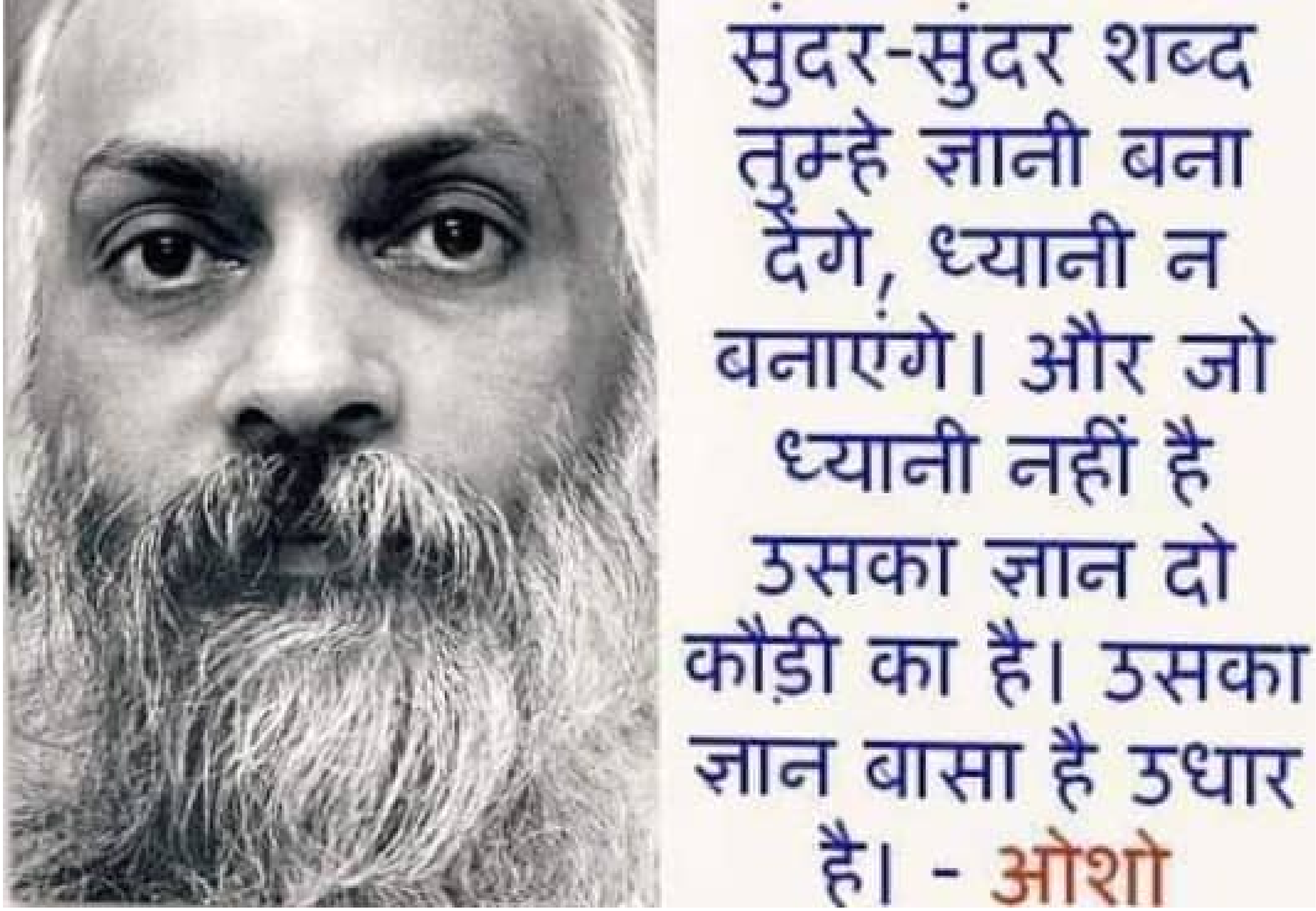
सुंदर-सुंदर शब्द
तुम्हे ज्ञानी बना
देंगे, ध्यानी न
बनाएंगे। और जो
ध्यानी नहीं है
उसका ज्ञान दो
कौड़ी का है। उसका
ज्ञान बासा है उधार
है। - ओशो

CamScanner

9:59 pm 0 KB/s 62%

Osho Ravi Yog
6h · Kolektivo ·

।।ओशो नमन।।
सत्य की खोज!✨💯
.... See more

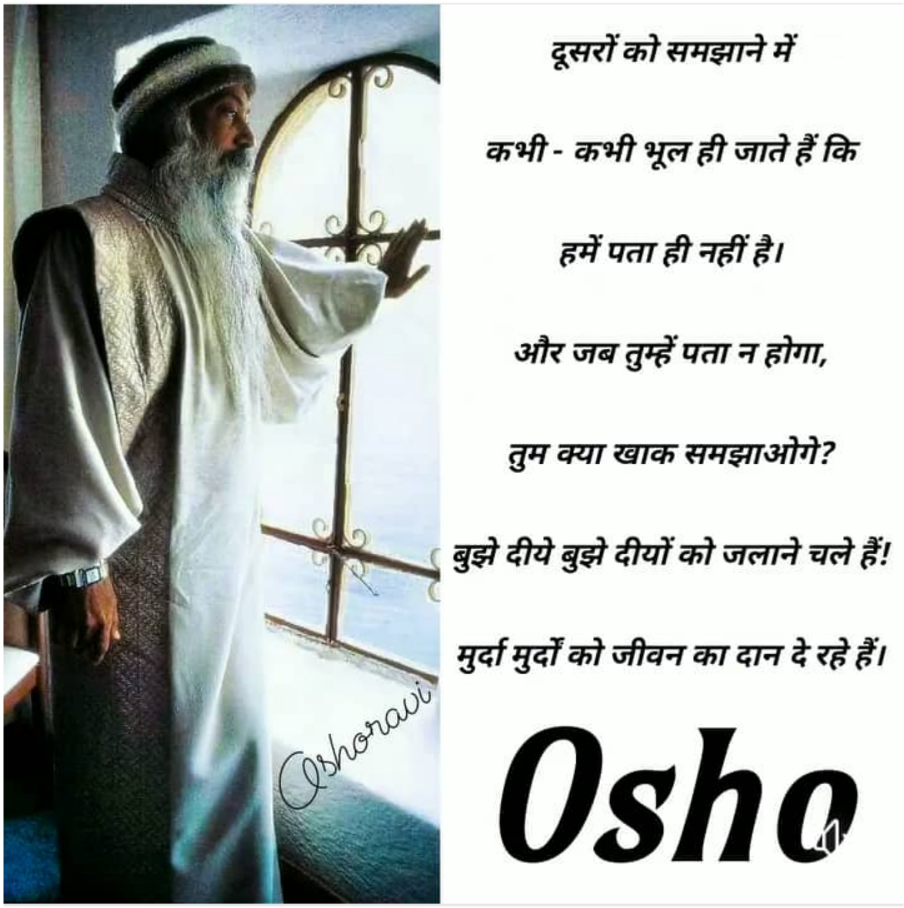


3 26 views

Like Comment Share

**Suggested pages**

सुझाए गए पेज

CamScanner

CamScanner

UPANISHADS
The Holy Spirit of Vedas
उपनिषदों ने कहा है,
कोई किसी दूसरे के लिए दुखी नहीं होता,
सब अपने लिए दुखी होते हैं।
कोई किसी दूसरे के लिए आनंदित नहीं होता,
सब अपने लिए आनंदित होते हैं।
कोई किसी दूसरे के लिए जीता नहीं,
सब अपने " मैं " के लिए जीते हैं।
हां,
जिन-जिन से हमारे " मैं " को सहारा मिलता है,
वे अपने मालूम पड़ते हैं;
और जिन-जिन से हमारे " मैं " को विरोध मिलता है,
वे पराए मालूम पड़ते हैं।
जो मेरे " मैं " को आसरा देते हैं, वे मित्र हो जाते हैं;
और जो मेरे मैं को खंडित करना चाहते हैं,
वे शत्रु हो जाते हैं।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.3 कर्ता का भ्रम (प्र.२०)

CamScanner

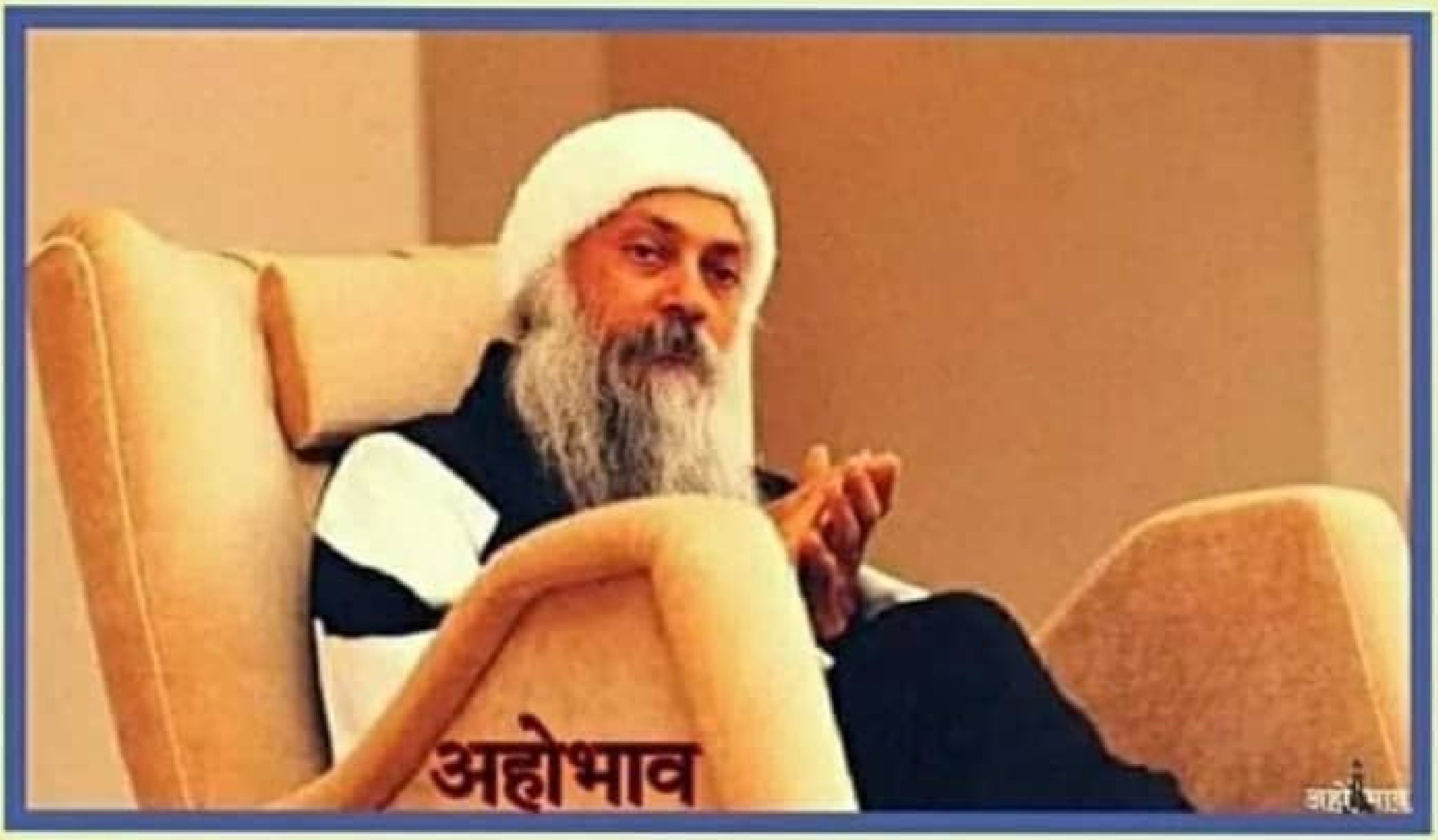


वासना बोध की अनुपस्थिति है। बोध आया, वासना गई। जब तक बोध नहीं है तब तक वासना है। वासना से मत भागो। इसलिए कहता हूं भागो मत, जागो। जगाओ, भीतर जो सोया है उसे। मन से घबड़ाओ मत। मन की मौजूदगी कुछ भी खंडित नहीं कर सकती है। शरणार्थी मत बनो, विजेता बनो। जगाओ अपने को। लेकिन आदमी सोया ही चला जाता। मरते दम तक, मौत भी आ जाती है तो भी आदमी सोया ही रहता। **ओशो**

CamScanner

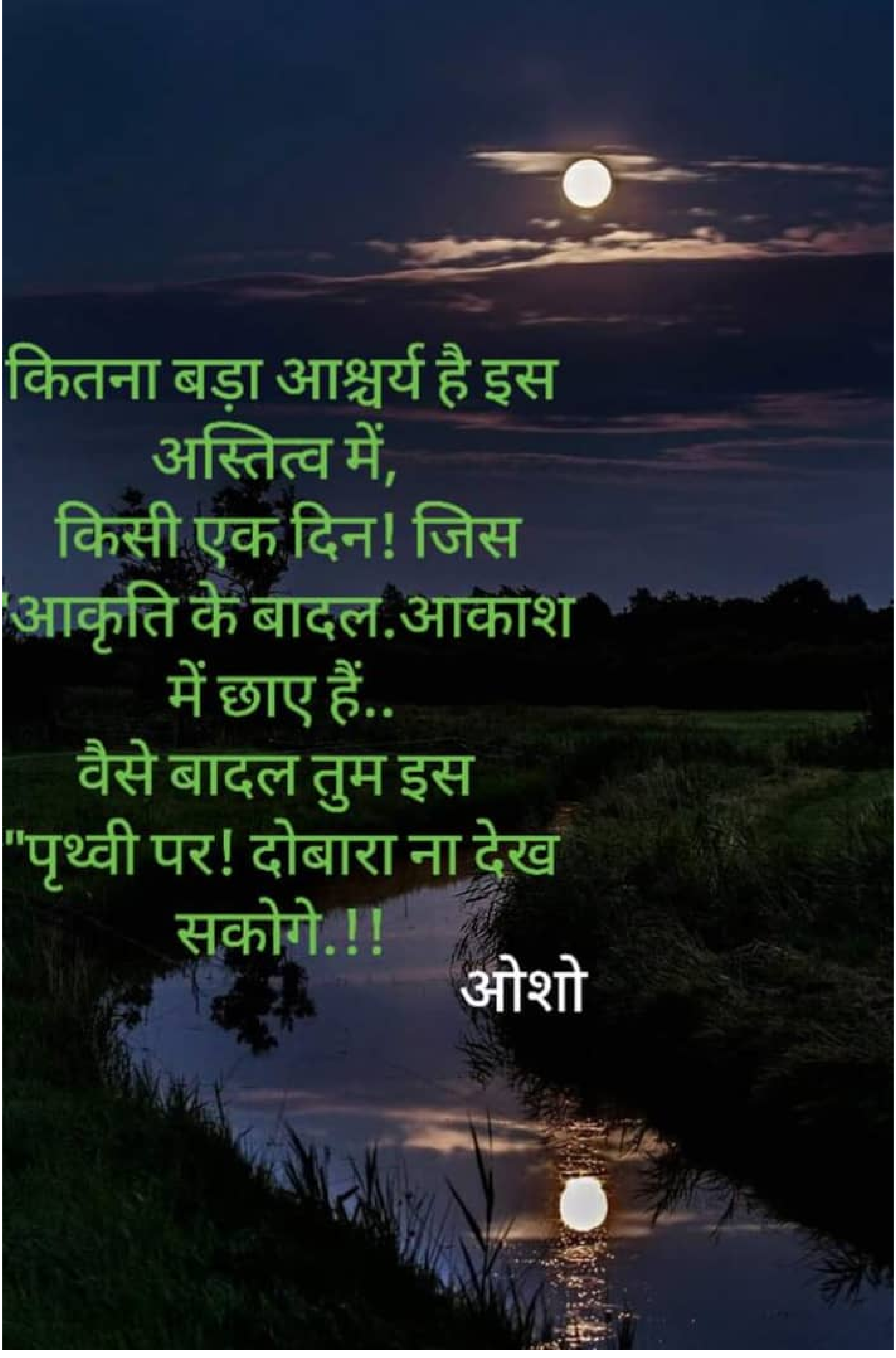


CS CamScanner

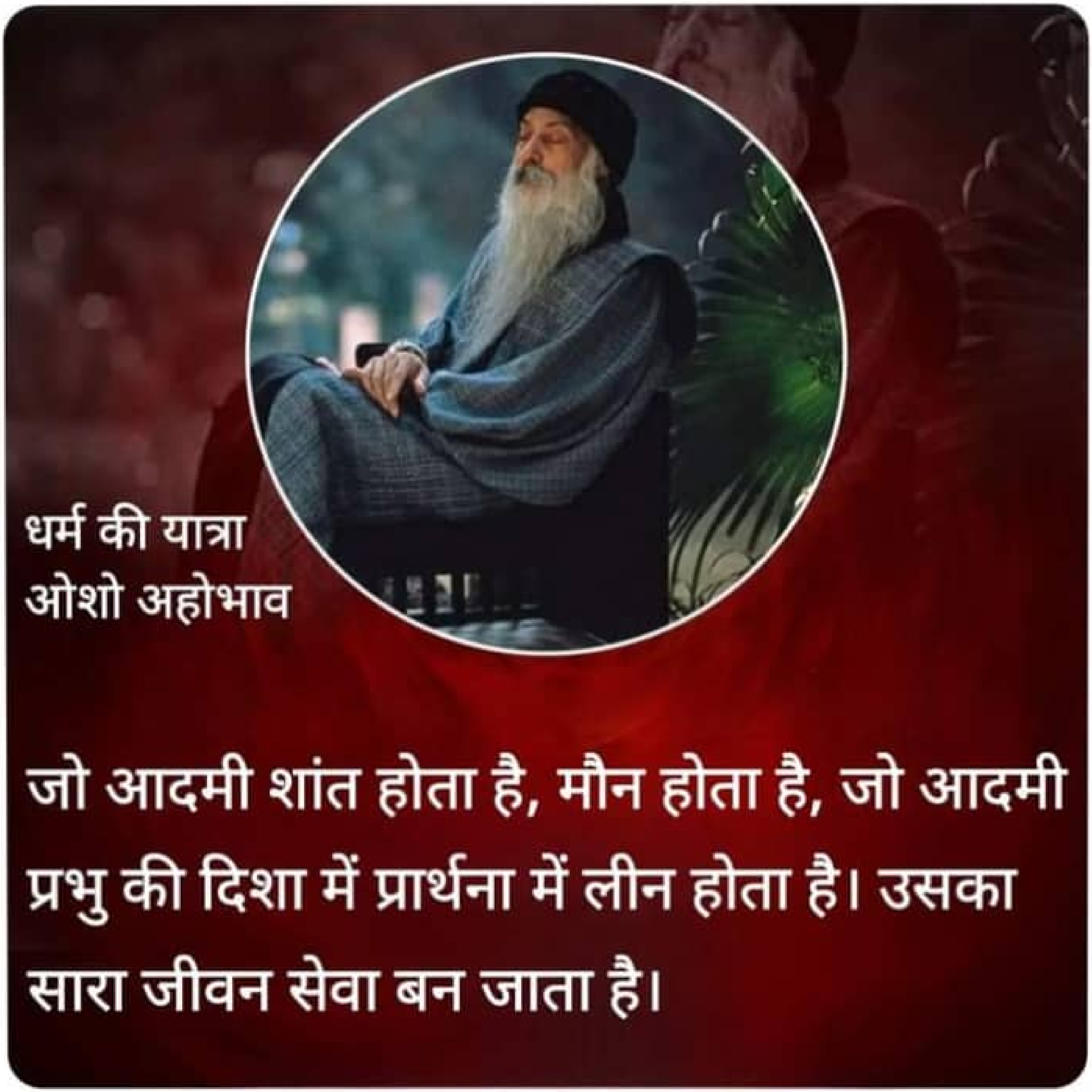
धर्म की यात्रा
ओशो अहोभाव
जो आदमी शांत होता है, मौन होता है, जो आदमी प्रभु की दिशा में प्रार्थना में लीन होता है। उसका सारा जीवन सेवा बन जाता है।

CamScanner

CamScanner

# नामजप महिमा

एक बार तुलसी दास जी से किसी ने पूछा – 'कभी-कभी भक्ति करने को मन नहीं करता फिर भी नाम जपने के लिये बैठ जाते है, क्या उसका भी कोई फल मिलता है ?'

तुलसी दास जी ने मुस्करा कर कहा–

**तुलसी मेरे राम को रीझ भजो या खीज।**
**भौम पड़ा जामे सभी उल्टा सीधा बीज॥**

अर्थात्–भूमि में जब बीज बोये जाते हैं तो यह नहीं देखा जाता कि बीज उल्टे पड़े हैं या सीधे पर फिर भी कालांतर में फसल बन जाती है, इसी प्रकार नाम सुमिरन कैसे भी किया जाये उसके सुमिरन का फल अवश्य ही मिलता है।

CamScanner

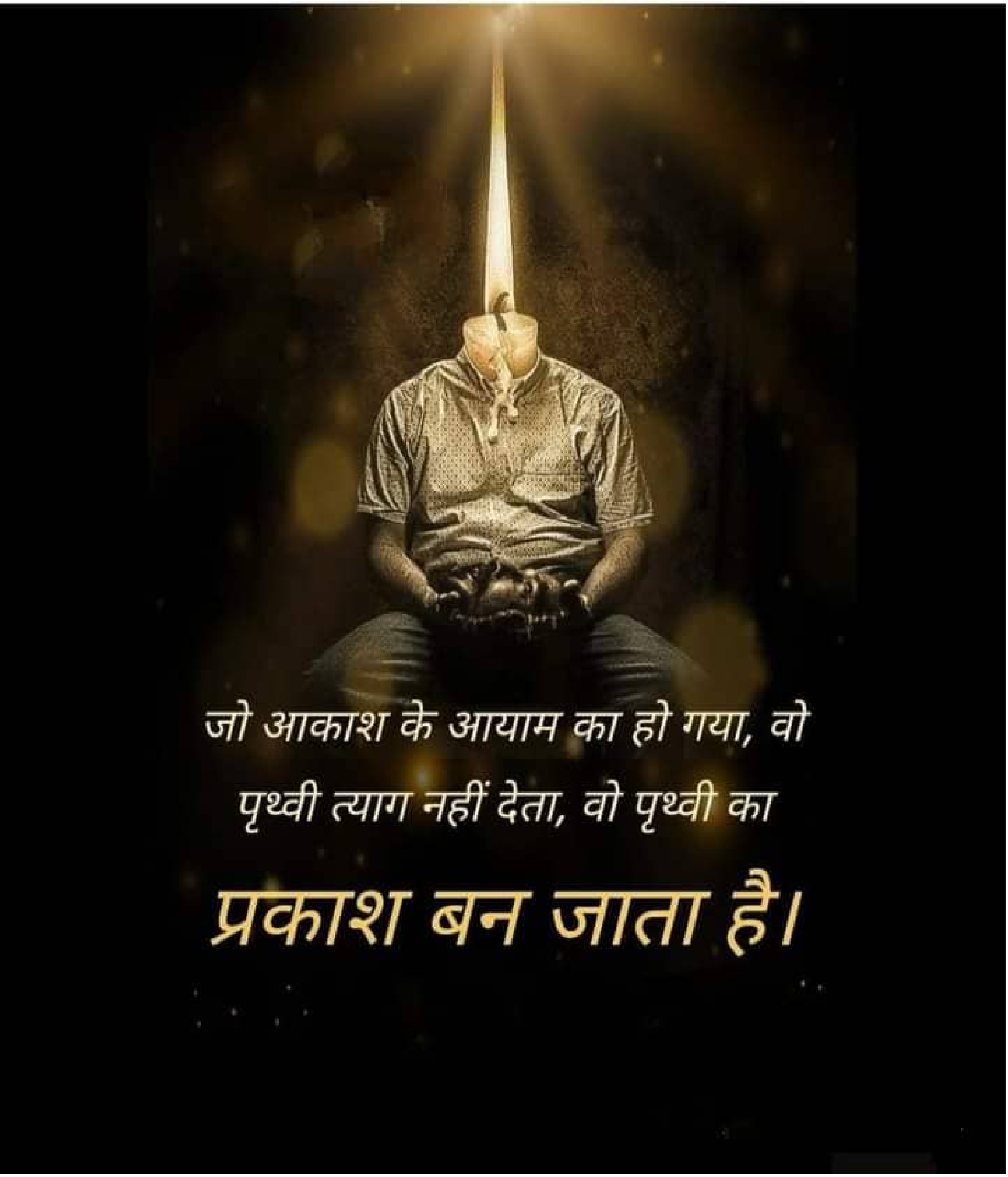


CamScanner

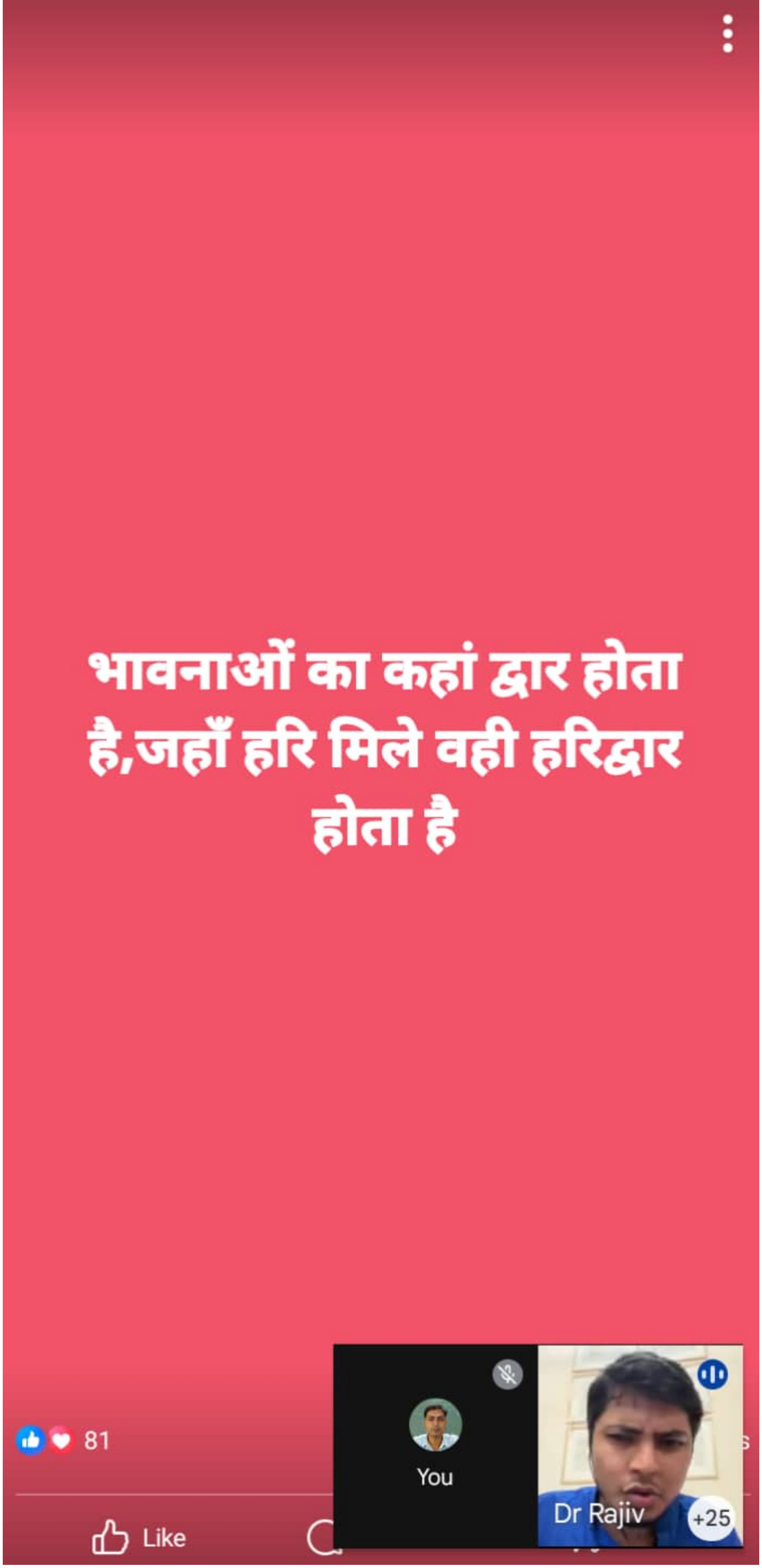


CamScanner

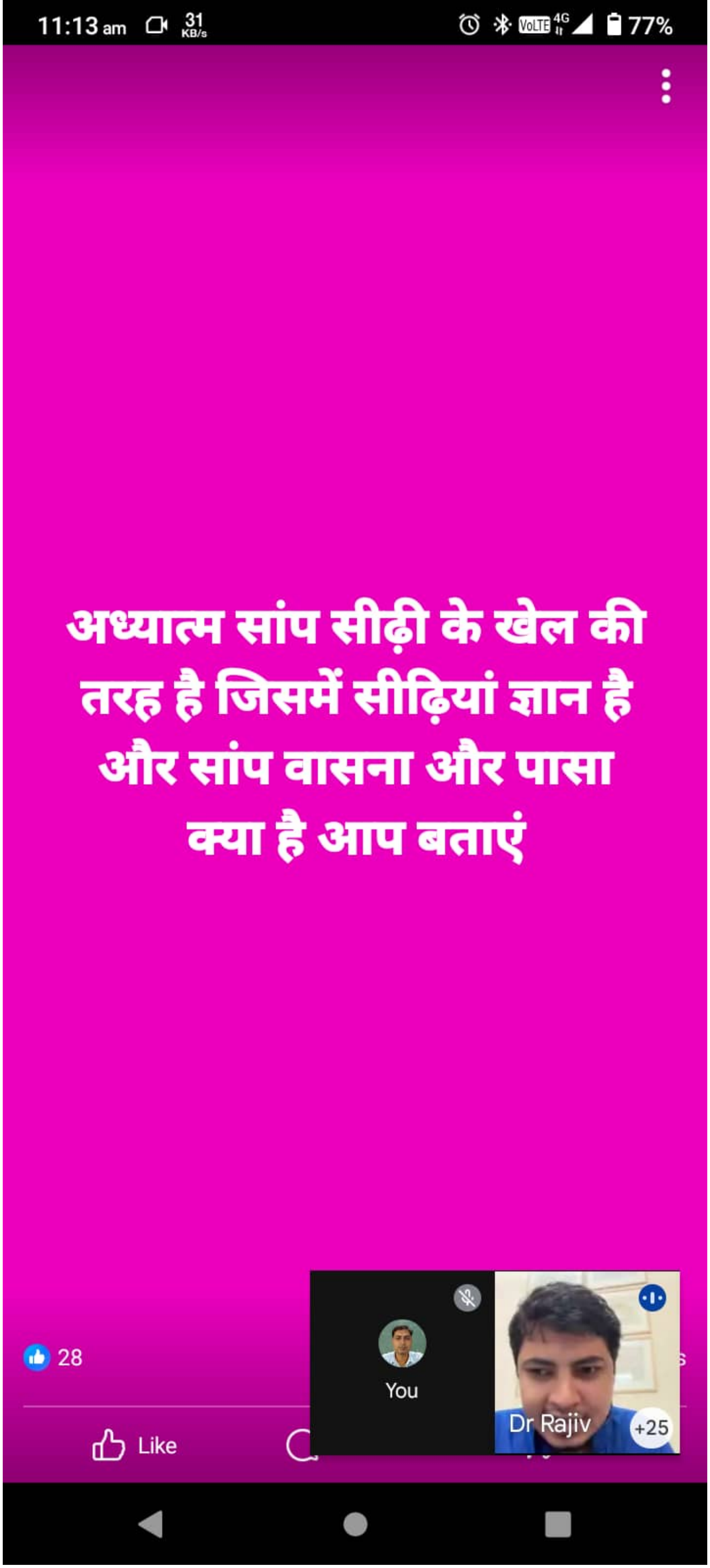
11:13 am
31 KB/s
77%
अध्यात्म सांप सीढ़ी के खेल की तरह है जिसमें सीढ़ियां ज्ञान है और सांप वासना और पासा क्या है आप बताएं
28
Like
You
Dr Rajiv
+25

CamScanner

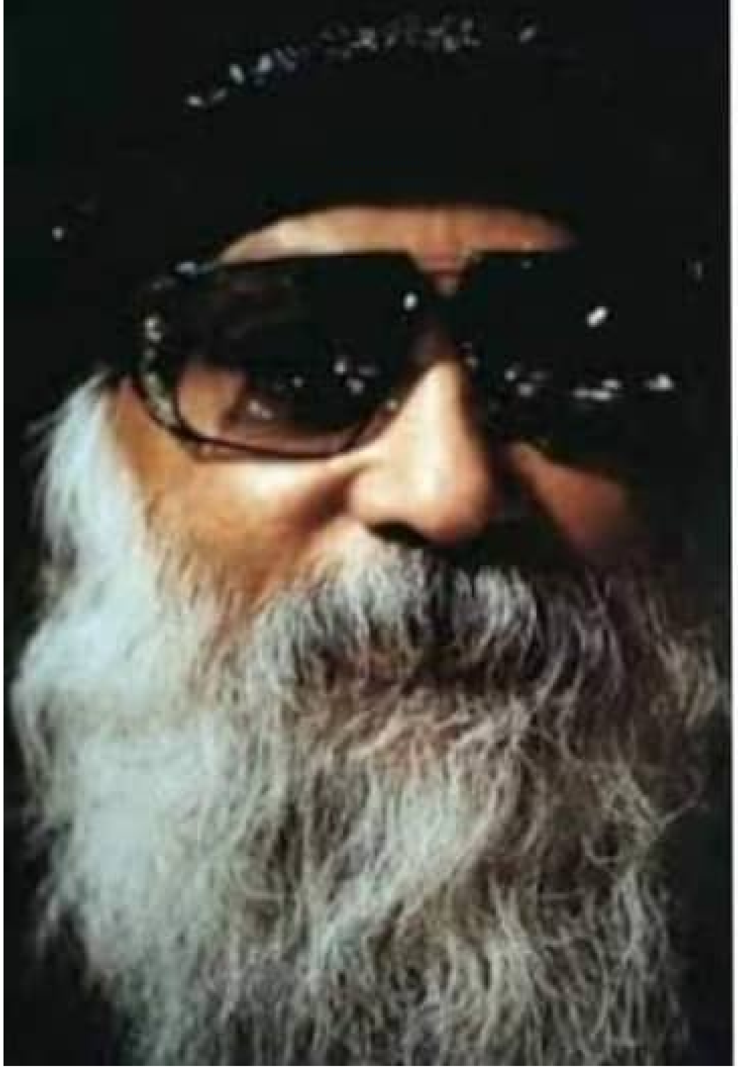

# सरल ध्यान !

आंख बंद करो
जैसे कुछ दिखाई ही ना पड़े
कान भी बंद करो
जैसे कुछ सुनाई ही ना पड़े !
अब बैठ के
होश पूर्वक
विचार करो !

*Shared by Anil Osho !*

CS CamScanner

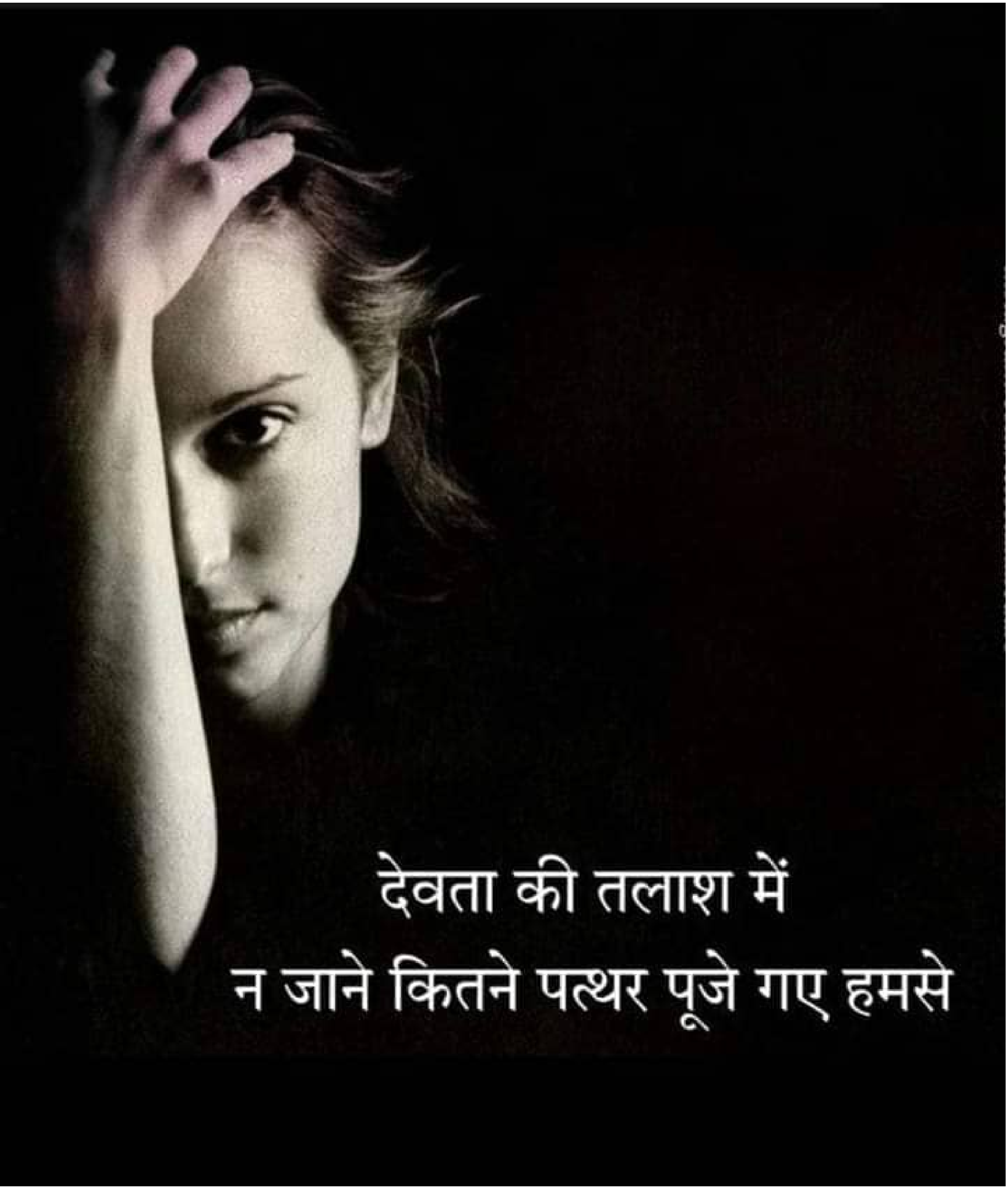


CamScanner

यह अपूर्व सूत्र है...........

कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो, तो छोटा-सा काम है बस; जरा-सी तरकीब है; जरा-सी कला है--और कला यह है: ...........

अपने को हटा लो और परमात्मा को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए तो ठीक।
तुम सारी चिंता उस पर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा हुआ है,
चांदत्तारे चलते हैं, ऋतुएं घूमती हैं, सूरज निकलता है, डूबता है; इतना विराट जीवन का सागर, इतनी लहर जो सम्हालना है, तुम्हारी भी छोटी लहर सम्हाल लेगा।
तुम अपनी लहर को अपना अहंकार मत बनाओ।
तुम अपनी लहर को उसके हाथ में समर्पित कर दो।
ओशो

CamScanner

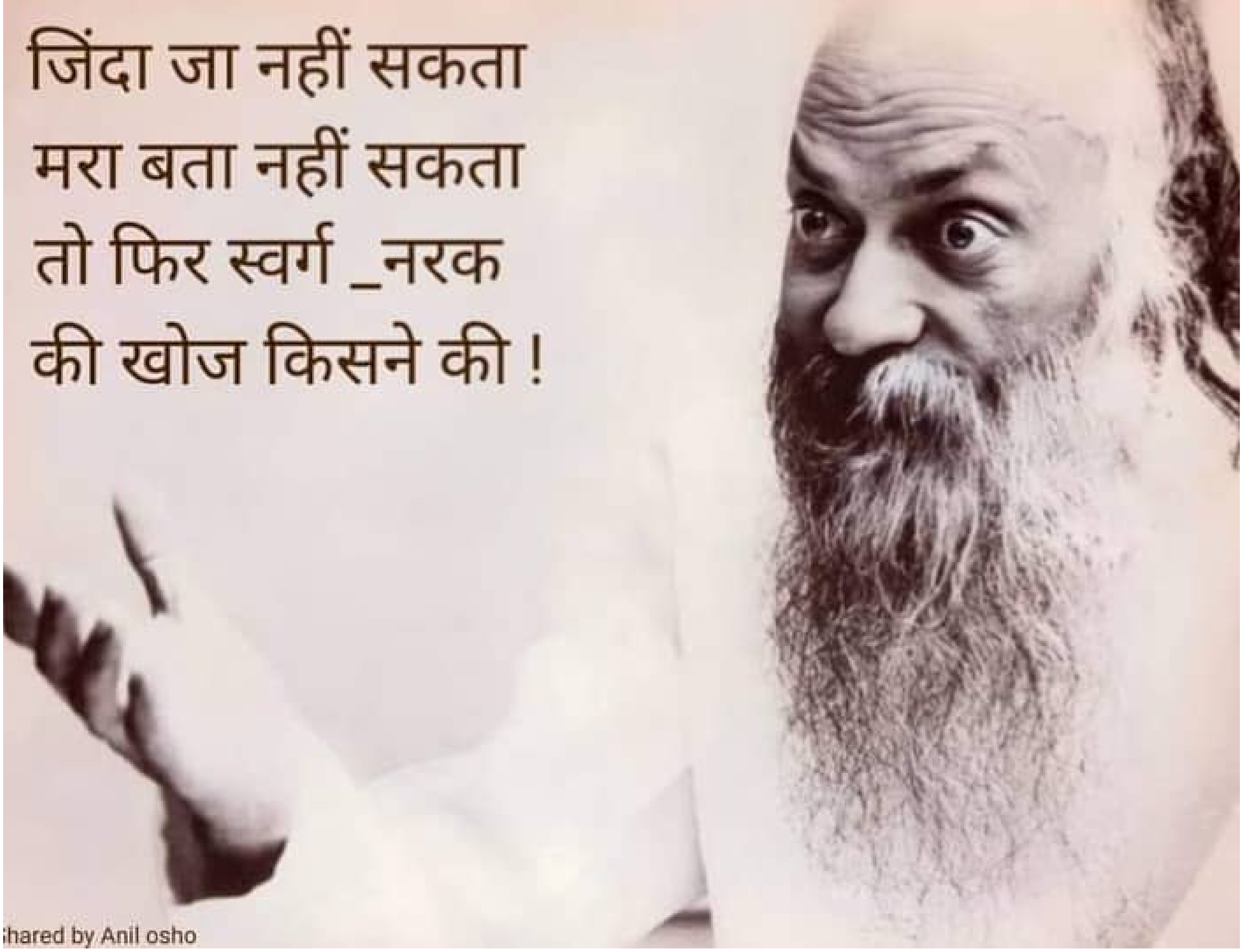


CamScanner

# संत रविदास लिखते हैं,

जीवन चारि दिवस का मेला रे !
बांभन झूठा, वेद भी झूठा, झूठा ब्रह्म अकेला रे !
मंदिर भीतर मूर्ति बैठी, पूजति बाहर चेला रे !
लड्डू भोग चढ़ावति जनता, मूर्ति के ढिंग केला रे !
पत्थर मूर्ति कछु न खाती, खाते बांभन चेला रे !
जनता लूटती बांभन सारे, प्रभु जी देति न धेला रे !

CS CamScanner

10:59 am 80%

शुरूआत में ध्यान में में अच्छा लगेगा फिर जैसे जैसे अभ्यास बढ़ता जायेगा दिन निकलते ज़ायेंगे फिर धीरे धीरे अपने मन के परदे हटेंगे और पहली बार खुद की ज़मा मैल दिखाई देगी तो बहुत बार बैचनी, द्वंद मेहसूस होगा जैसे कही फस गए हो अब कदम पिछे नहीं ले सकते और डर भी लगेगा की कही पागल ना हो जाए फिर एक एक छोटी से छोटी चीज को अभ्यास करते हूए बदलना पड़ेगा!

12

Like

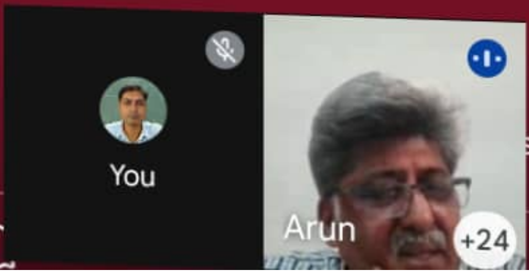


CamScanner

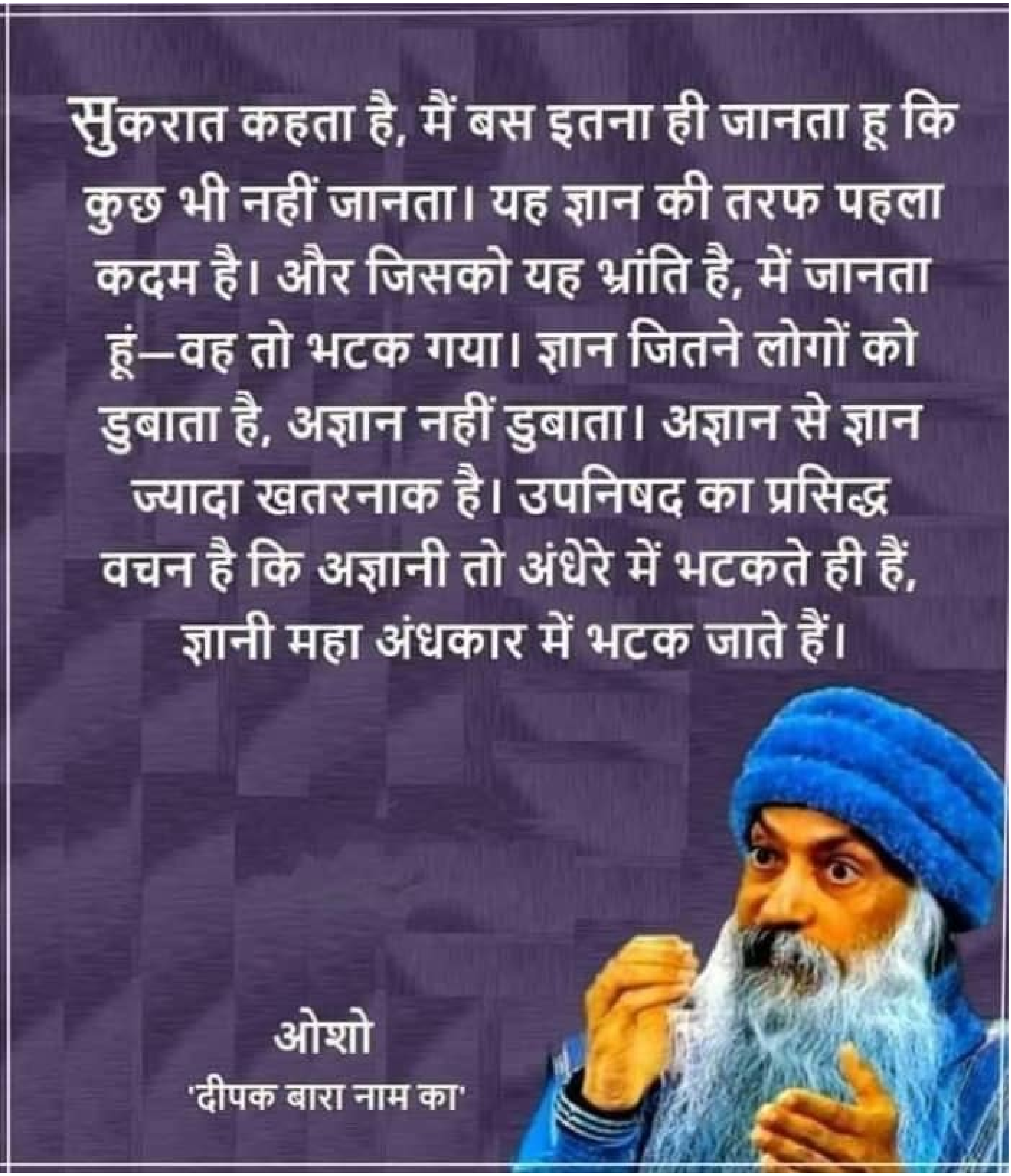
सुकरात कहता है, मैं बस इतना ही जानता हू कि
कुछ भी नहीं जानता। यह ज्ञान की तरफ पहला
कदम है। और जिसको यह भ्रांति है, में जानता
हूं—वह तो भटक गया। ज्ञान जितने लोगों को
डुबाता है, अज्ञान नहीं डुबाता। अज्ञान से ज्ञान
ज्यादा खतरनाक है। उपनिषद का प्रसिद्ध
वचन है कि अज्ञानी तो अंधेरे में भटकते ही हैं,
ज्ञानी महा अंधकार में भटक जाते हैं।
ओशो
'दीपक बारा नाम का'

CamScanner

CamScanner

10:56 am 49 KB/s 81%

नालायकों की भीड़ है और तुम उन्हीं नालायकों की भीड़ का अनुसरण कर रहे हो। और चूंकि मैंने अनुसरण नहीं किया उनका, तुम मुझसे उत्तर पूछ रहे हो। अब दुबारा दाढ़ी मत छूना। और मैं रोज आकर देख जाया करूंगा। मैंने कहा, थोड़ा सोचो तो। अगर स्त्रियां दाढ़ी बढ़ाने लगें और मूंछें बढ़ाने लगें, या रामलीला में बिकने वाली मूंछें खरीद लाए और और दाढ़ी चिपका लें, तो क्या खूबसूरत लगेंगी? और तुम बामेहनत रोज सुबह-सांझ दाढ़ी और मूंछ को काटकर वही कर रहे हो, जो कोई स्त्री दाढ़ी और मूंछ बढ़ाकर करे।

उस बूढ़े आदमी ने मुझसे कहा, माफ करो मुझे। स्कालरशिप तुम्हारी स्वीकार हुई, मगर रोज मत आना। और अब इस बुढ़ापे में दाढ़ी मत बढ़वाओ। क्योंकि अभी तुम अकेले पूछने वाले हो। अगर मैं दाढ़ी और मूंछ बढ़ाऊंगा तो पूरी यूनिवर्सिटी पूछेगी कि क्या हुआ, आप दाढ़ी और मूंछ क्यों बढ़ा रहे हैं? मत झंझट में मुझे डालो।

लेकिन उस आदमी को चोप लग गयी। उस आदमी ने फिर दाढ़ी-मूंछ नहीं काटी। सारी यूनिवर्सिटी पूछती थी और वह कहता था, कि उस लड़के से पूछ लेना। सारा राज उसे मालूम है।

चारों तरफ हजारों लोग हैं और तुम उनका अनुसरण कर रहे हो। और इसी अनुसरण से तुम्हारे व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा है। और इसी व्यक्तित्व को तुम अपनी आत्मा समझे हुए हो।

सदगुरु का काम होगा, कि सबसे पहले यह चादर उतार ले। तुम्हें नग्न कर दे। तुम्हें वहां पहुंचा दे, जहां तुम्हारे ऊपर कोई दाग नहीं। तुम्हें वैसा ही कर दे, जैसे तुम पैदा हुए थे--खाली, निर्दोष, शून्य।

ओशो, सदगुरु शिष्य की मृत्यु है

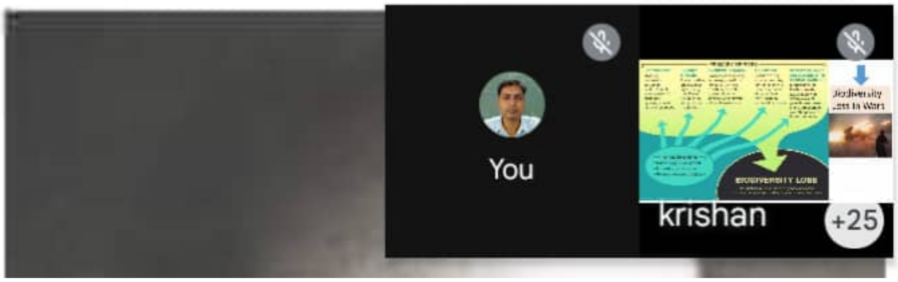


CamScanner

4:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 64%

facebook

4

10 14 comments

Like Comment Send

**OSHO LOVERS**

त्रिपाठी वैभव् "वैविध्य" · 1d ·

डूबने तक तैरा हूँ यहाँ, ये जो दूर क्षितिज तक अंधेरा है

अब कभी मिटे न मिटे सरहदें, ये साबुत आसमां मेरा है

-वैविध्य

1 1 comment

Like Comment Send

**Osho Love**

RM Savaliya · 5h ·

Jay Guru 🌹

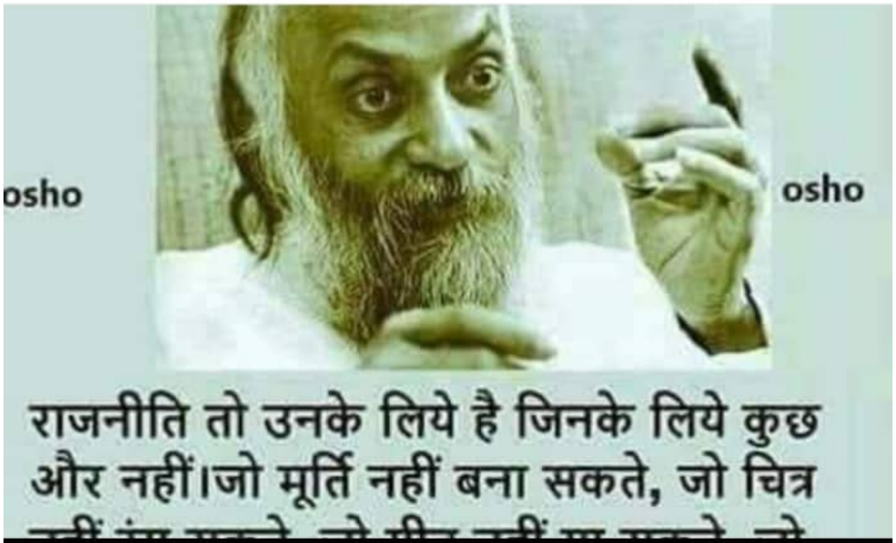


CamScanner

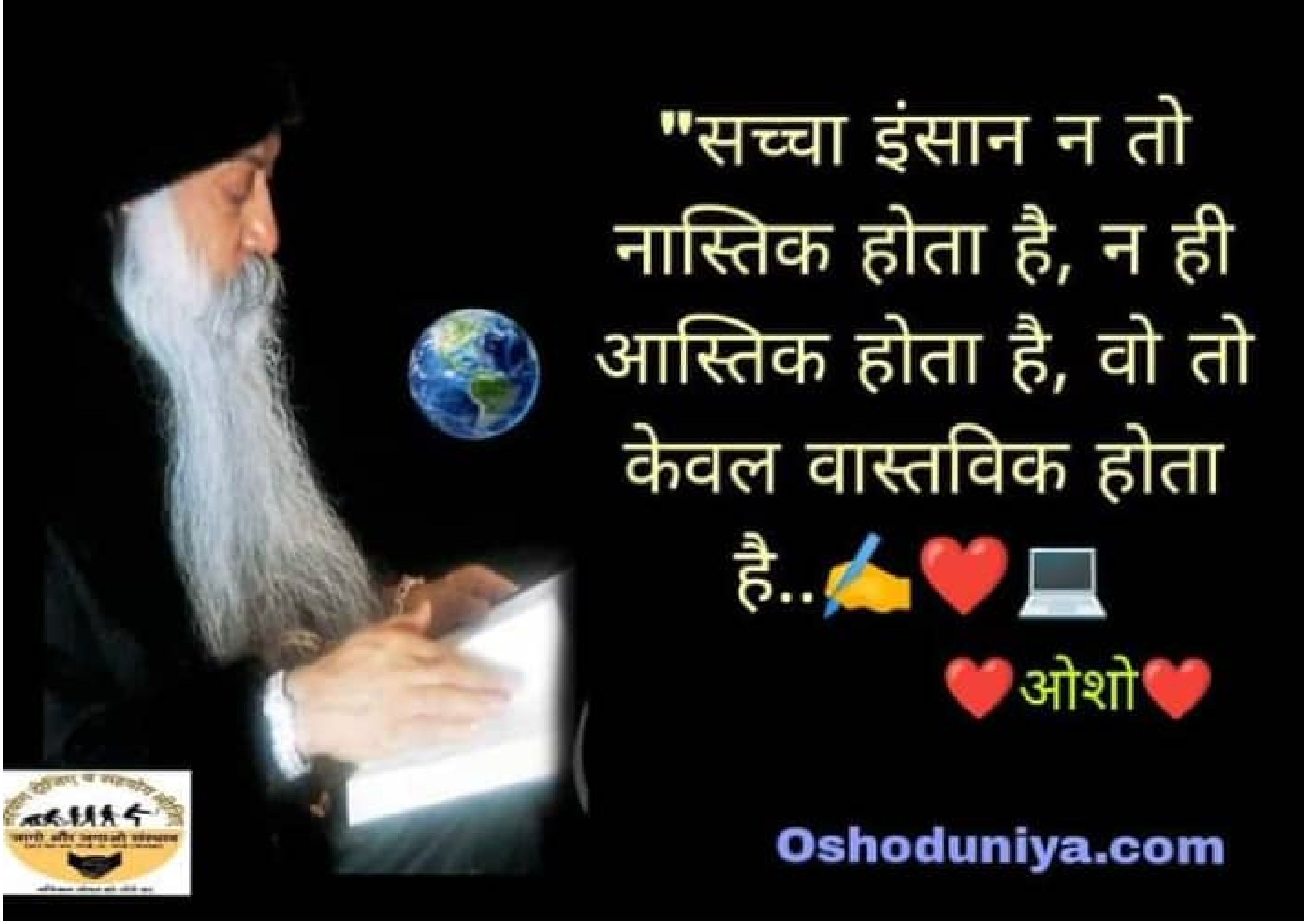
"सच्चा इंसान न तो नास्तिक होता है, न ही आस्तिक होता है, वो तो केवल वास्तविक होता है..✍️❤️💻
❤️ओशो❤️
Oshoduniya.com

CamScanner

विचार की मत सुनना। विचार व्यर्थ के साथ जुड़ा है। विचार सीमित के साथ जुड़ा है। विचार क्षुद्र के साथ बंधा है।

ओशो अहोभाव
पद घूँघरू बांध

CamScanner

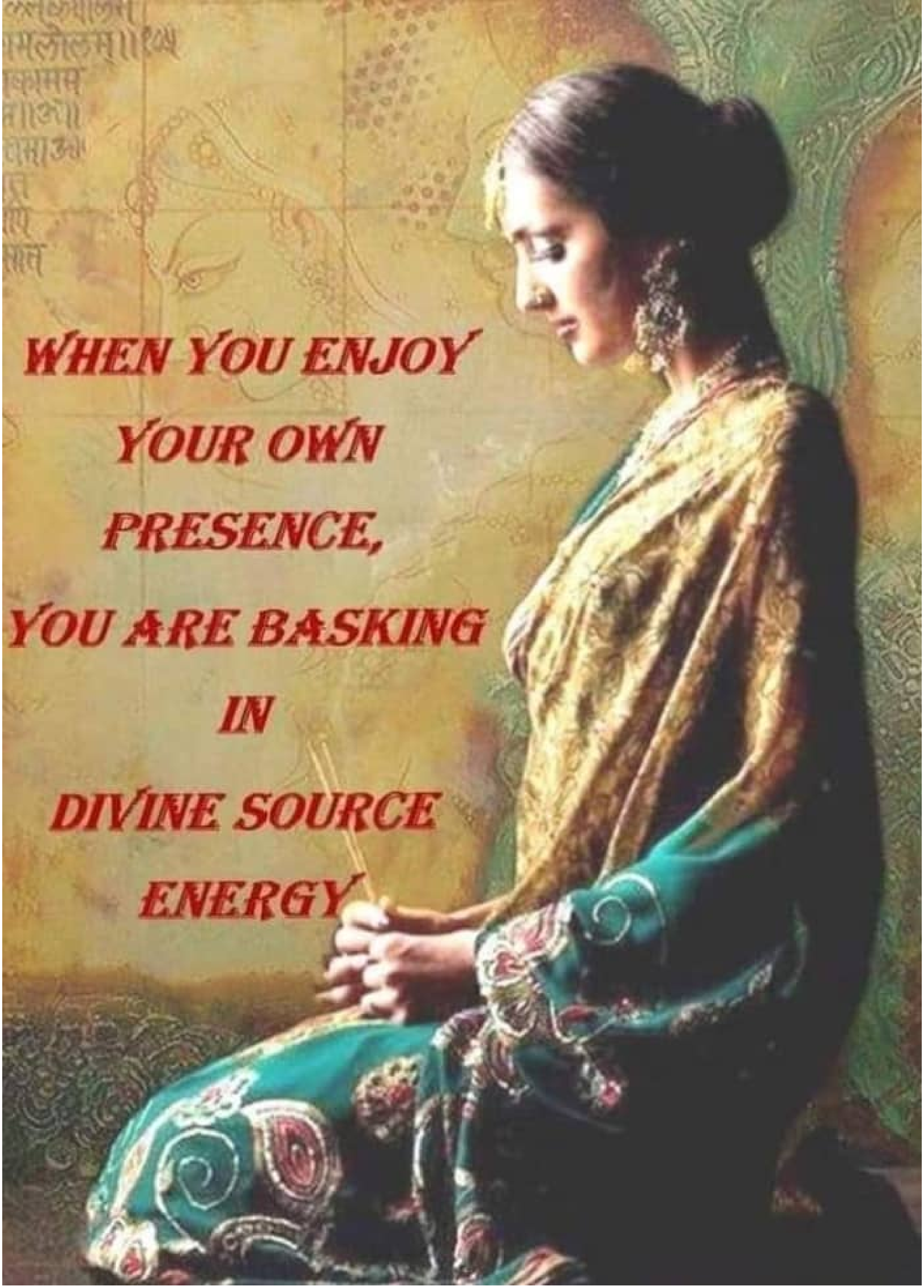
WHEN YOU ENJOY
YOUR OWN
PRESENCE,
YOU ARE BASKING
IN
DIVINE SOURCE
ENERGY

CamScanner

# एक ओंकार सतनाम—
# (नानक)

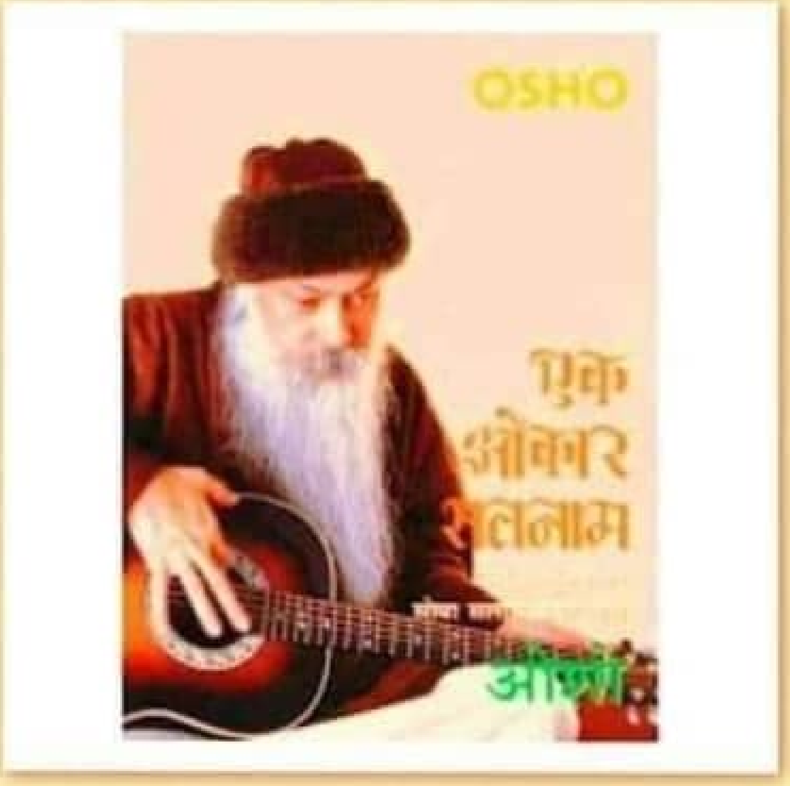


**ओशो**

नानक ने परमात्मा को गा-गा कर पाया। गीतों से पटा है मार्ग नानक का। इसलिए नानक की खोज बड़ी भिन्न है। पहली बात समझ लेनी जरूरी है कि नानक ने योग नहीं किया, तप नहीं किया, ध्यान नहीं किया। नानक ने सिर्फ गाया। और गा कर ही पा लिया। लेकिन गाया उन्होंने इतने पूरे प्राण से कि गीत ही ध्यान हो गया, गीत ही योग बन गया, गीत ही तप हो गया।

CS CamScanner

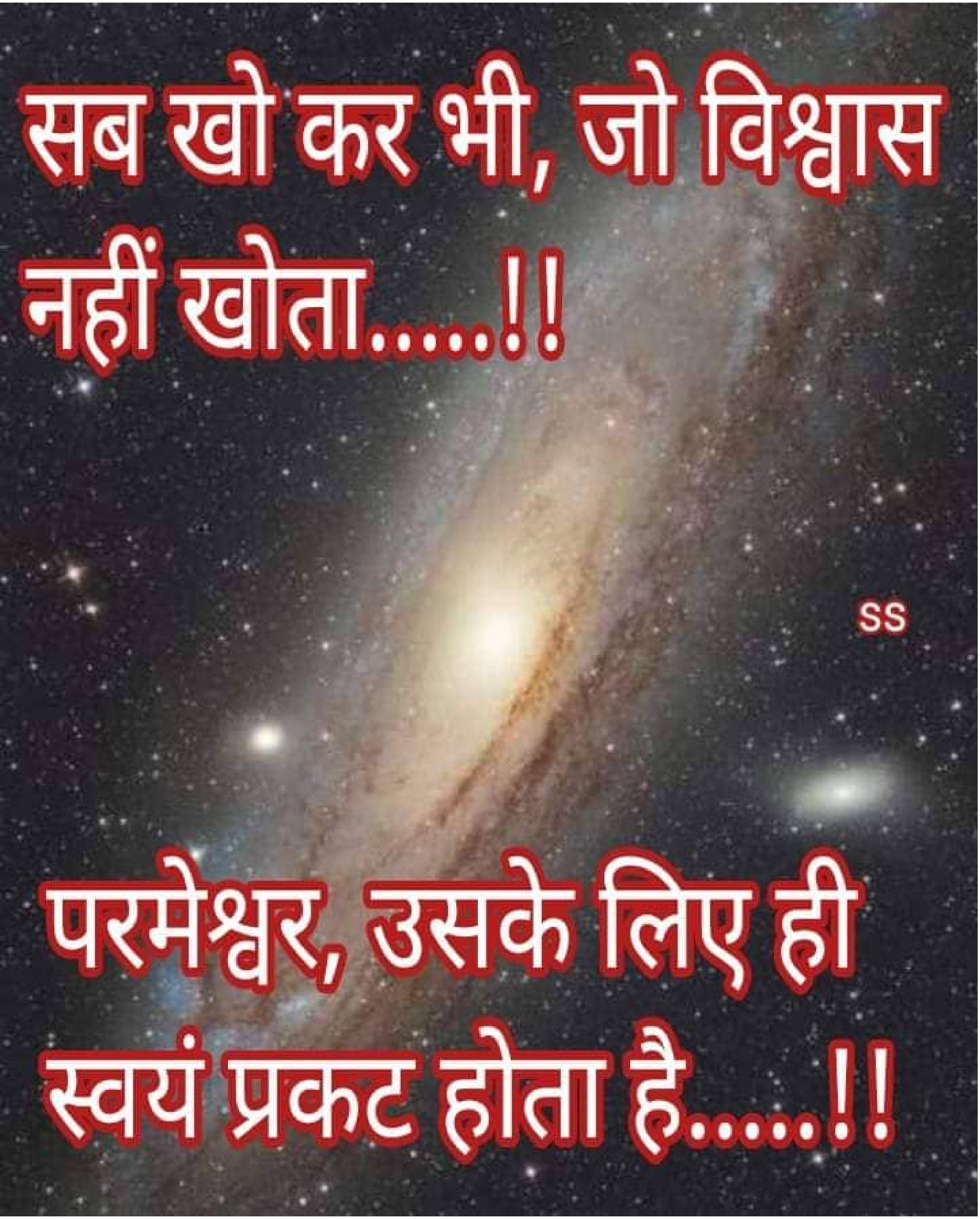


CamScanner

# जीवन अन्तर्सबंध है , इंटेररिलेशनशिप है ।

(Dr. Sohan Lal Narang )

जीवन है संयुक्त। अहंकार है वियुक्त ।
अहंकार की खोज करने जरूरी है कि कहीं यह भ्रम तो नहीं है ?
कभी एकांत में बैठ कर देखा है भीतर की तरफ – कहां है अहंकार, कहां हूं मैं ?
पूछते चले जाएं – यह हूं मैं ?
और उत्तर आएगा , नहीं । नेति - नेति उत्तर आएगा - नहीं , नहीं , यह भी नहीं हूं ।
लेकिन अगर किताब से उत्तर सीख लिया तो उत्तर आएगा - हां !
शरीर तो नहीं हूं , लेकिन आत्मा हूं !
आत्मा तो नहीं हूं , लेकिन परमात्मा हूं !
उत्तर अगर सीख हुआ है तो व्यर्थ हो जाएगा।
सिर्फ पूछें – इंक्वायरी चाहिए , अन्वेषण चाहिए और फौरन पता चलेगा कि मैं यह नहीं हो सकता ।
हाथ मैं नहीं हो सकता हूं , क्योंकि मैं तो हाथ को जान रहा हूं , पहचान रहा हूं ,
शरीर को मैं जान रहा हूं । जिसको मैं जान रहा हूं , वही मैं नहीं हो सकता हूं ,
मैं जानने वाला हूं । तो फिर और पूछें –
विचार हूं मैं ? विचारों को भी मैं जान रहा हूं ।
मन हूं मैं ? मन को भी मैं जान रहा हूं ।
पूछते चलें , पूछते चलें ।
आत्मा हूं मैं ? असल में जिसको भी हम पूछ सकते हैं , यह हूं मैं ?
वही हम नहीं होंगे । और पूछते - पूछते वह घड़ी आएगी कि पता चलेगा कि अब तो पूछने को कुछ नहीं रहा कि क्या हूं मैं । और उत्तर भी नहीं मिला ।

उत्तर भी खो जाएगा , पूछने की वृत्ति भी खो जाएगी , साथ ही 'मैं' भी खो जाएगा।
तब शेष रह जाएगी एक अंनत शांति ,
तब शेष रह जाएगा अंनत मौन ।
न वहां प्रश्न है , न उत्तर है ।
तब शेष रह जाएगा अंनत विस्तार ।
तब शेष रह जाएगा जीवन और जीवन का स्पंदन
और तब दिखाई पड़ेगा ,
यह वृक्ष भी मैं हूं ,
यह शरीर भी मैं हूं ,
यह चांद भी मैं हूं ,
यह तारा भी मैं हूं ।
वह जो सामने दूसरी आंखे दिखाई पड़ रही हैं ,
उनसे भी मैं ही झांक रहा हूं । मैं ही बोल रहा हूं
और वह जो सुन रहा हूं , वह भी मैं हूं ।
वह जिसको मैं प्रेम कर रहा हूं , वह भी मैं हूं ।
और वह जो प्रेम कर रहा है , वह भी मैं हूं ।
जिस दिन दिखाई पड़ेगा ,
'मैं नहीं हूं' उसी दिन क्रांति हो जाएगी ।
और दिखाई पड़ेगा , 'मैं ही हूं' ।
ये दोनों बातों का एक ही अर्थ है ।
जीवन है , जीवन का अंतहीन अंनत विस्तार ।
ऊर्जा का सागर है , एक एनर्जी है , जो स्पंदित हो रही है अंनत - अंनत रूपों में ।
लेकिन एक का ही स्पंदन है।
और जब तक यह बोध स्पष्ट न हो जाए ,
तब तक बोझ से मुक्ति नहीं हो सकती ।
# ओशो # (संभावनाओं की आहट )

CamScanner

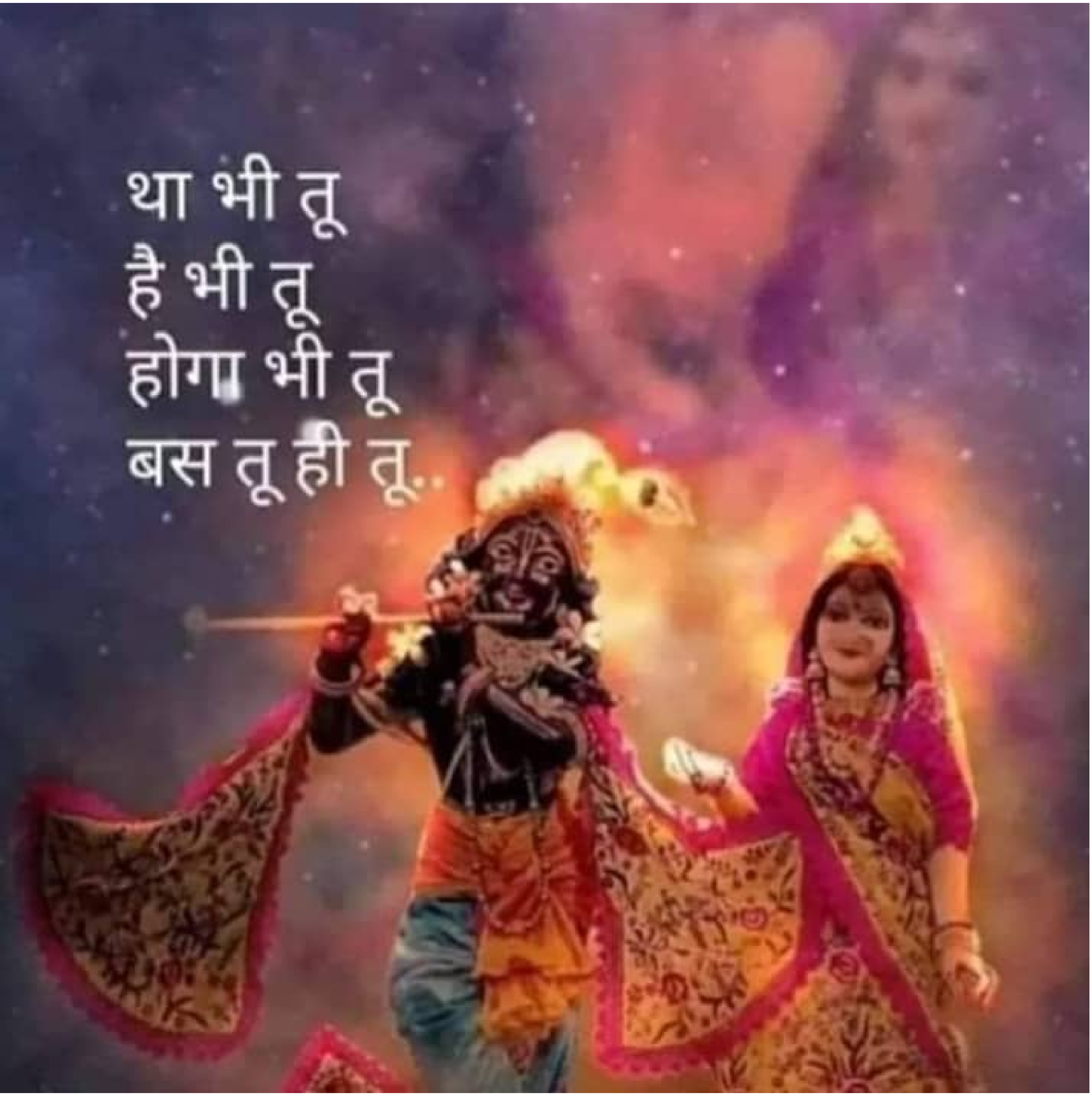


CamScanner

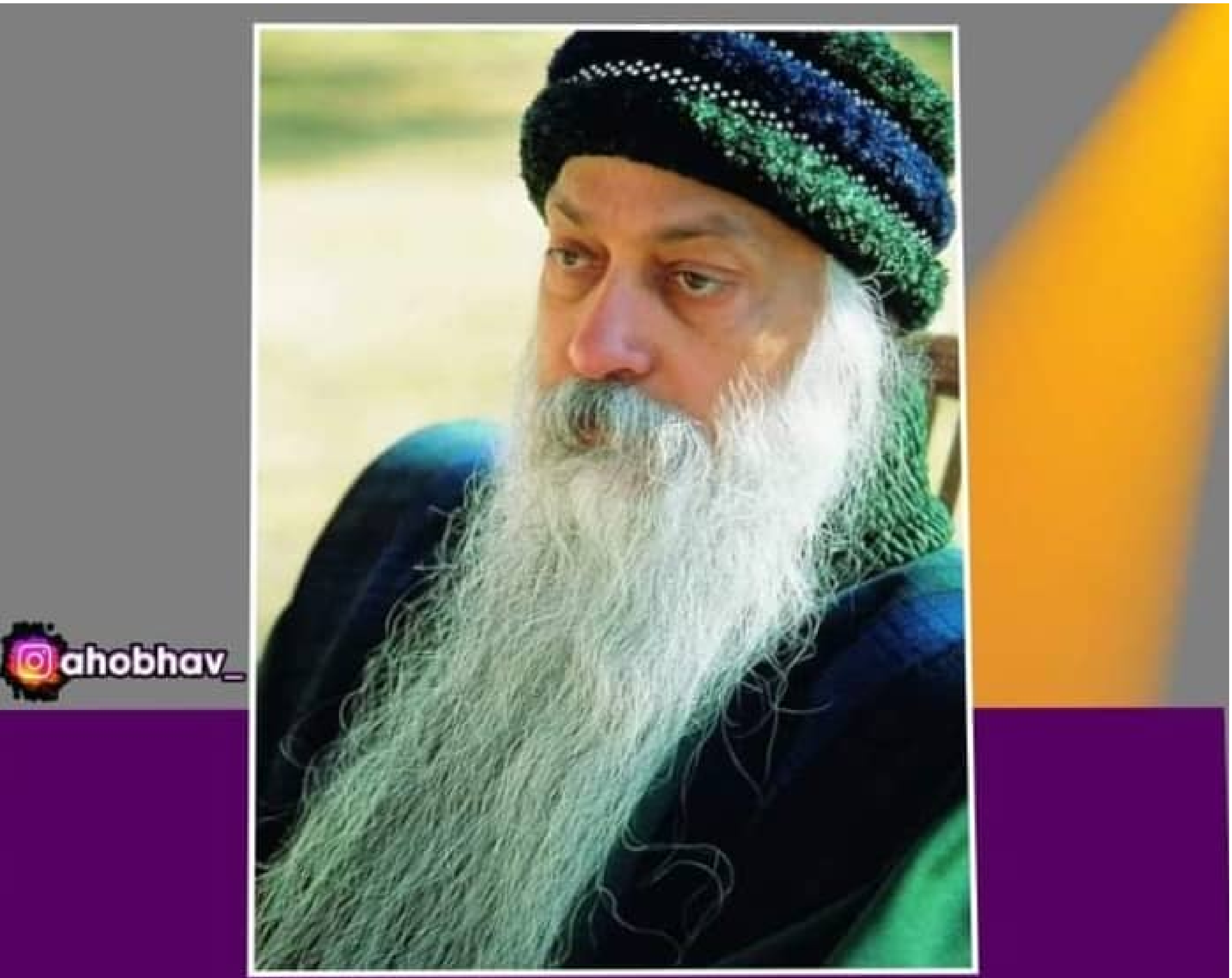


ओशो कहते हैं कि आनंद आपका अंतरतम केंद्र है। खुशी आपको दूसरों से मांगनी पड़ती है। स्वाभाविक रूप से, आप निर्भर हो जाते हैं। आनंद तुम्हें मालिक बना देता है। आनंद कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो घटित होती है; यह पहले से ही मामला है. अहोभाव

CamScanner

7:33 pm 0 KB/s VoLTE 4G 50%

ओ शो वाणी

Subhash Chandra · 1h ·

अशोक ने कहा, युद्ध अब असंभव है, एक अनुभव काफी सिद्ध हुआ। अब नहीं युद्ध कर सकूंगा, अब नहीं जीतने जा सकूंगा। क्योंकि कितनी कामना की थी कि कलिंग को जीत लूंगा, तो इतना आनंद मिलेगा। लेकिन कलिंग हाथ में आ गया, आनंद तो हाथ में नहीं आया। हालांकि मेरा मन फिर धोखा दे रहा है कि अभी और भी जीतने को जगह पड़ी है, उनको भी जीत लो। लेकिन इस मन की अब दुबारा नहीं मानूंगा। मानकर देख लिया एक बार; एक लाख आदमियों की लाशें बिछा दीं। सिर्फ खून बहा; हाथ में खून के दाग लगे। करुण चीत्कारें सुनाई पड़ीं; रोना; और न मालूम कितने घरों के दीए बुझ गए। और इस मन ने मुझे कहा था, आनंद मिलेगा; वह मैं भीतर खोज रहा हूं, वह मुझे कहीं मिला नहीं। लाखों लोग मर गए, लाखों परिवार उजड़ गए, और जिस सुख के लिए इस मन ने मुझे कहा था, उसकी रेखा भी मुझे दिखाई नहीं पड़ती। युद्ध समाप्त हो गया; मेरे लिए अब कोई युद्ध नहीं है।

और उसी दिन से अशोक ने भिक्षु की तरह रहना शुरू कर दिया। उसने कहा कि जब युद्ध मेरे लिए नहीं है, तो अब सम्राट होने का कोई अर्थ नहीं रहा। वह तो युद्ध के साथ जुड़ा हुआ भाव था–सम्राट होने का।

एच.जी.वेल्स ने विश्व इतिहास में लिखा है कि दुनिया में बहुत सम्राट हुए, लेकिन अशोक जैसा चमकता हुआ तारा विश्व के इतिहास में दूसरा नहीं है। कारण है उसका। महाबुद्धि है।

🏹🏹
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.87/30
कामना और प्रार्थना
OshO

15 4 comments • 1 share

Like Comment Share

CamScanner

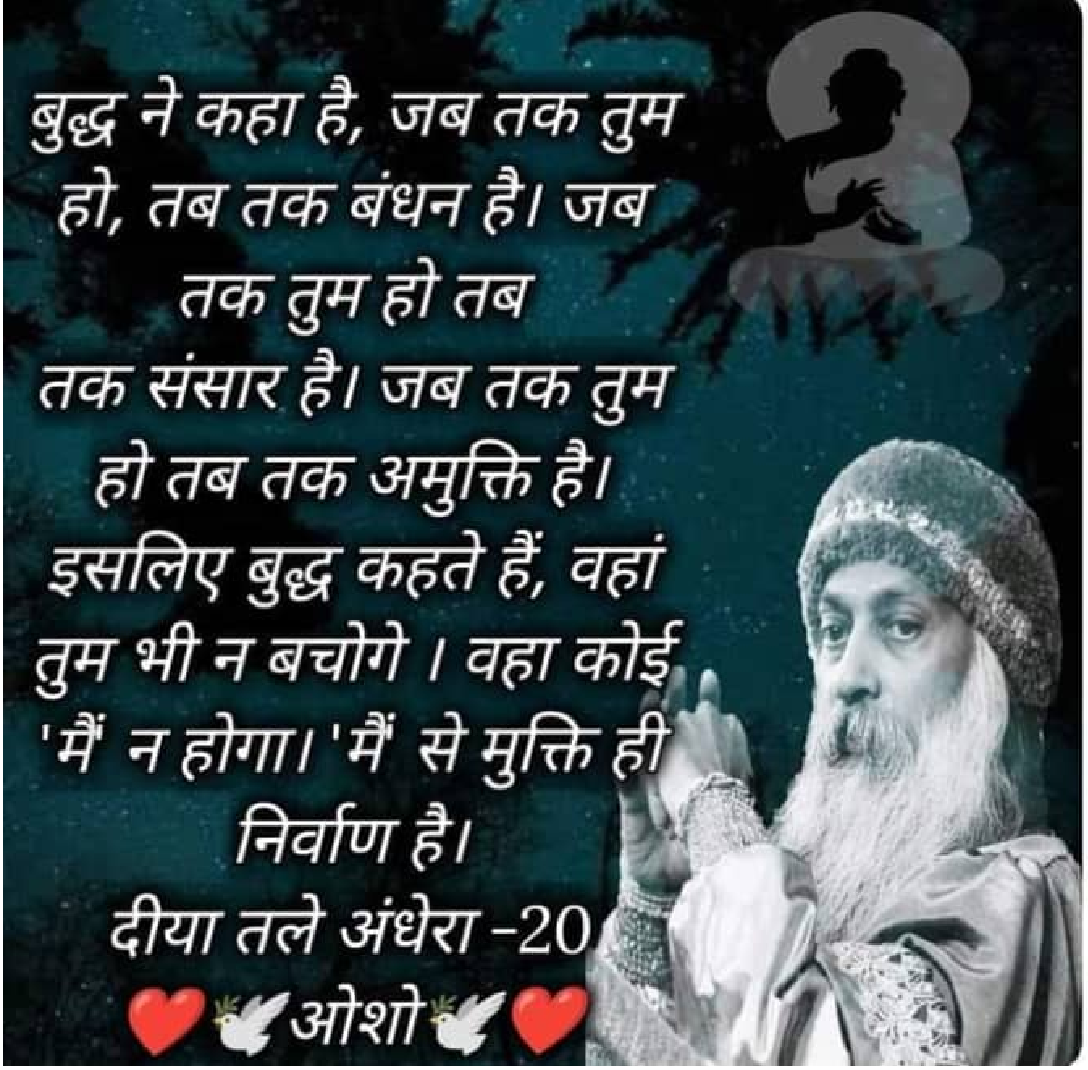
बुद्ध ने कहा है, जब तक तुम
हो, तब तक बंधन है। जब
तक तुम हो तब
तक संसार है। जब तक तुम
हो तब तक अमुक्ति है।
इसलिए बुद्ध कहते हैं, वहां
तुम भी न बचोगे । वहा कोई
'मैं न होगा। 'मैं' से मुक्ति ही
निर्वाण है।
दीया तले अंधेरा -20
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

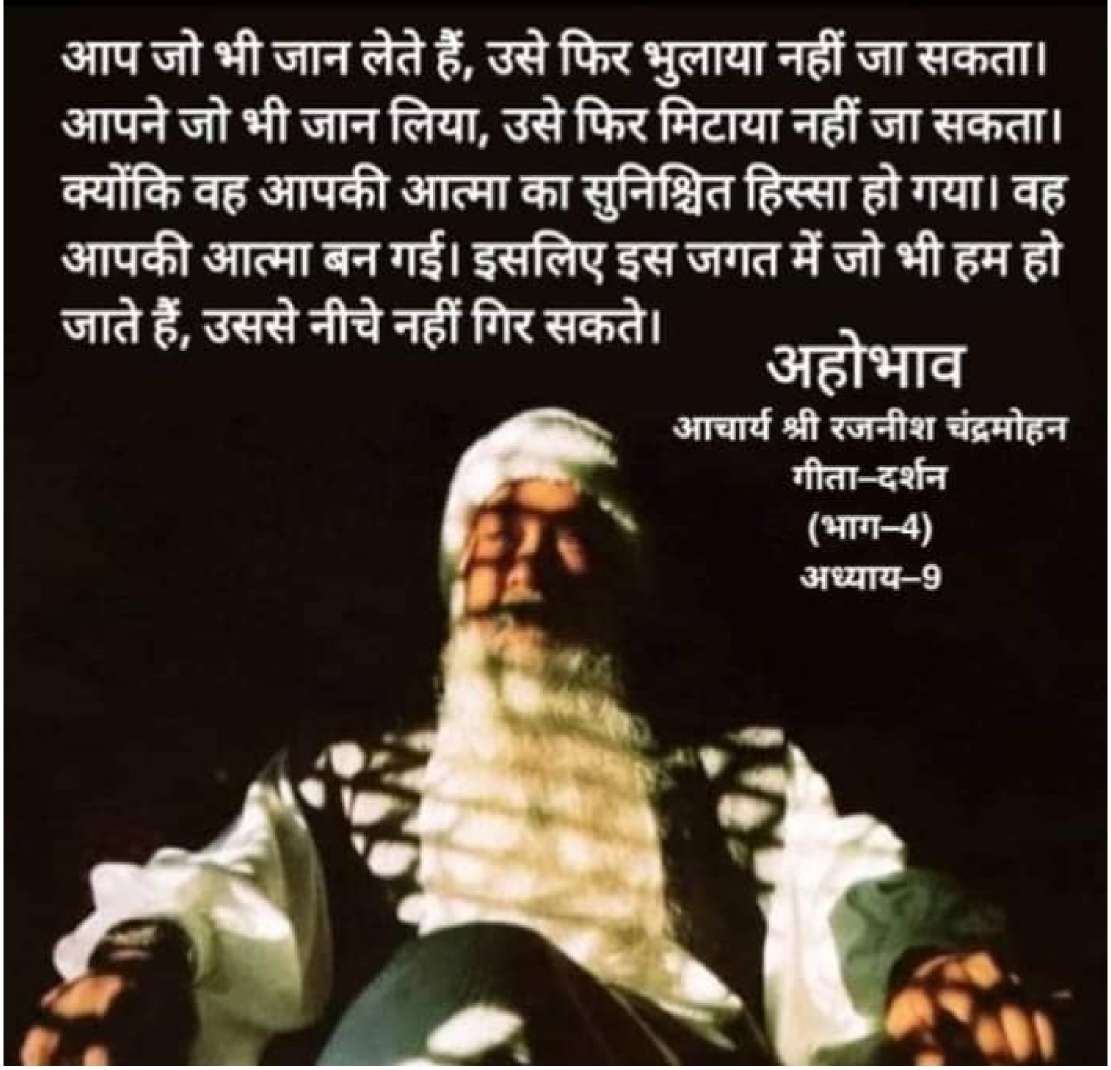
आप जो भी जान लेते हैं, उसे फिर भुलाया नहीं जा सकता। आपने जो भी जान लिया, उसे फिर मिटाया नहीं जा सकता। क्योंकि वह आपकी आत्मा का सुनिश्चित हिस्सा हो गया। वह आपकी आत्मा बन गई। इसलिए इस जगत में जो भी हम हो जाते हैं, उससे नीचे नहीं गिर सकते।
अहोभाव
आचार्य श्री रजनीश चंद्रमोहन
गीता–दर्शन
(भाग–4)
अध्याय–9

CamScanner

जीवन में कुछ भी दुर्भाग्य नहीं है।
बाधाएं ही सीढ़ियां भी बन सकती हैं।
और सीढ़ियां बाधाएं भी बन सकती हैं।
सौभाग्य और दुर्भाग्य तुम्हारे हाथ में है। जीवन तटस्थ अवसर है। एक राह पर बड़ा पत्थर पड़ा हो, तुम वहीं अटककर बैठ सकते हो कि अब कैसे जाएं, पत्थर आ गया। तुम उस पत्थर पर चढ़ भी सकते हो। और तब तुम पाओगे कि पत्थर ने तुम्हारी ऊंचाई बढ़ा दी। तुम्हारी दृष्टि का विस्तार बढ़ा दिया। तुम रास्ते को और दूर तक देखने लगे। जितना पत्थर के बिना देखना संभव न था। तब पत्थर सीढ़ी हो गया।

❤️ओशो ❤️

CamScanner

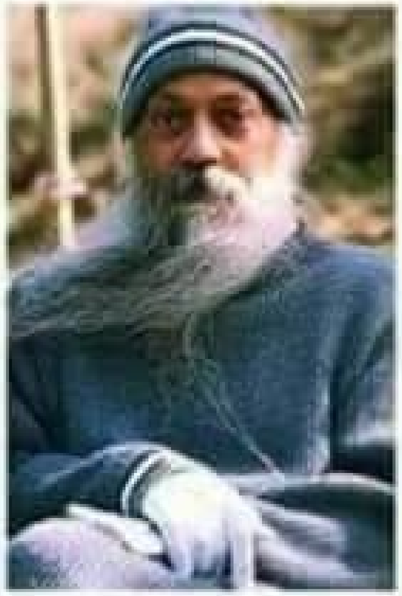 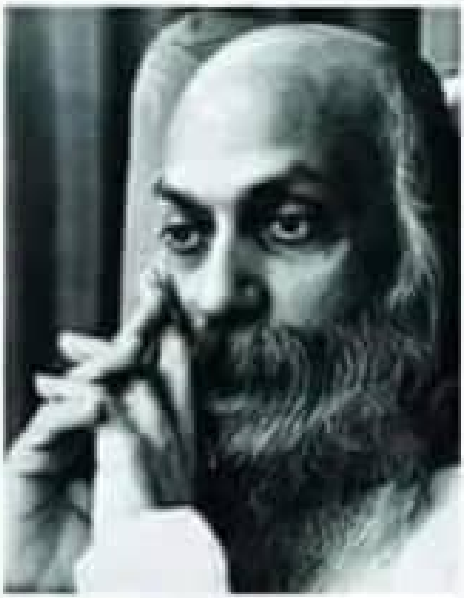

मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि
जिस दिन आदमी बेसहारा हो जाता है,
उसी दिन परमात्मा के सारे सहारे
उसे उपलब्ध हो जाते हैं।
लेकिन हम इतने कमजोर हैं,
हम इतने डरे हुए लोग हैं कि हम
कोई न कोई सहारा पकड़े रहते हैं।
और जब तक हम सहारा पकड़े रहते हैं,
तब तक परमात्मा का सहारा उपलब्ध
नहीं हो सकता है।
ओशो , सभोंग से समाधि की और

CamScanner

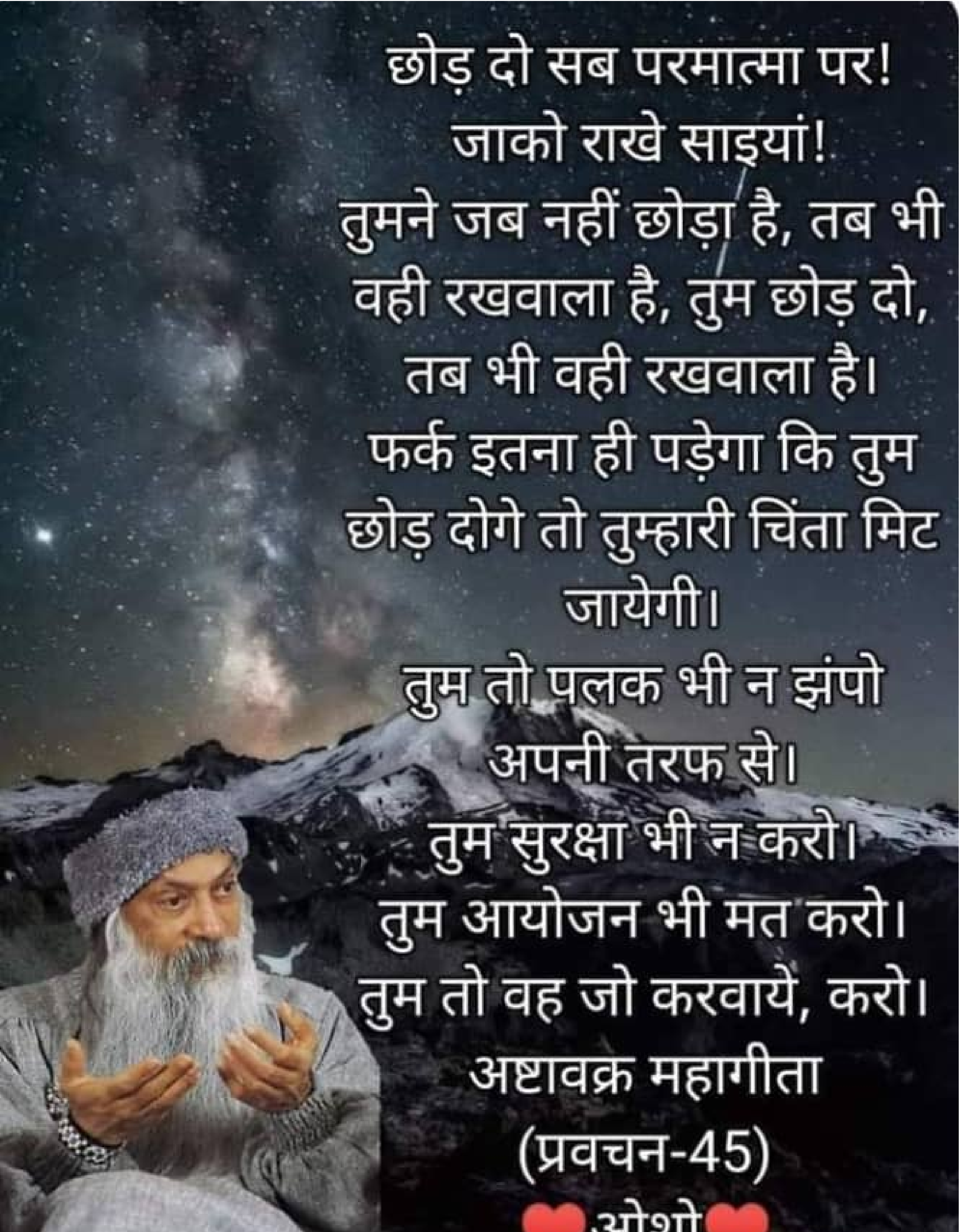
छोड़ दो सब परमात्मा पर!
जाको राखे साइयां!
तुमने जब नहीं छोड़ा है, तब भी
वही रखवाला है, तुम छोड़ दो,
तब भी वही रखवाला है।
फर्क इतना ही पड़ेगा कि तुम
छोड़ दोगे तो तुम्हारी चिंता मिट
जायेगी।
तुम तो पलक भी न झंपो
अपनी तरफ से।
तुम सुरक्षा भी न करो।
तुम आयोजन भी मत करो।
तुम तो वह जो करवाये, करो।
अष्टावक्र महागीता
(प्रवचन-45)
ओशो

CamScanner

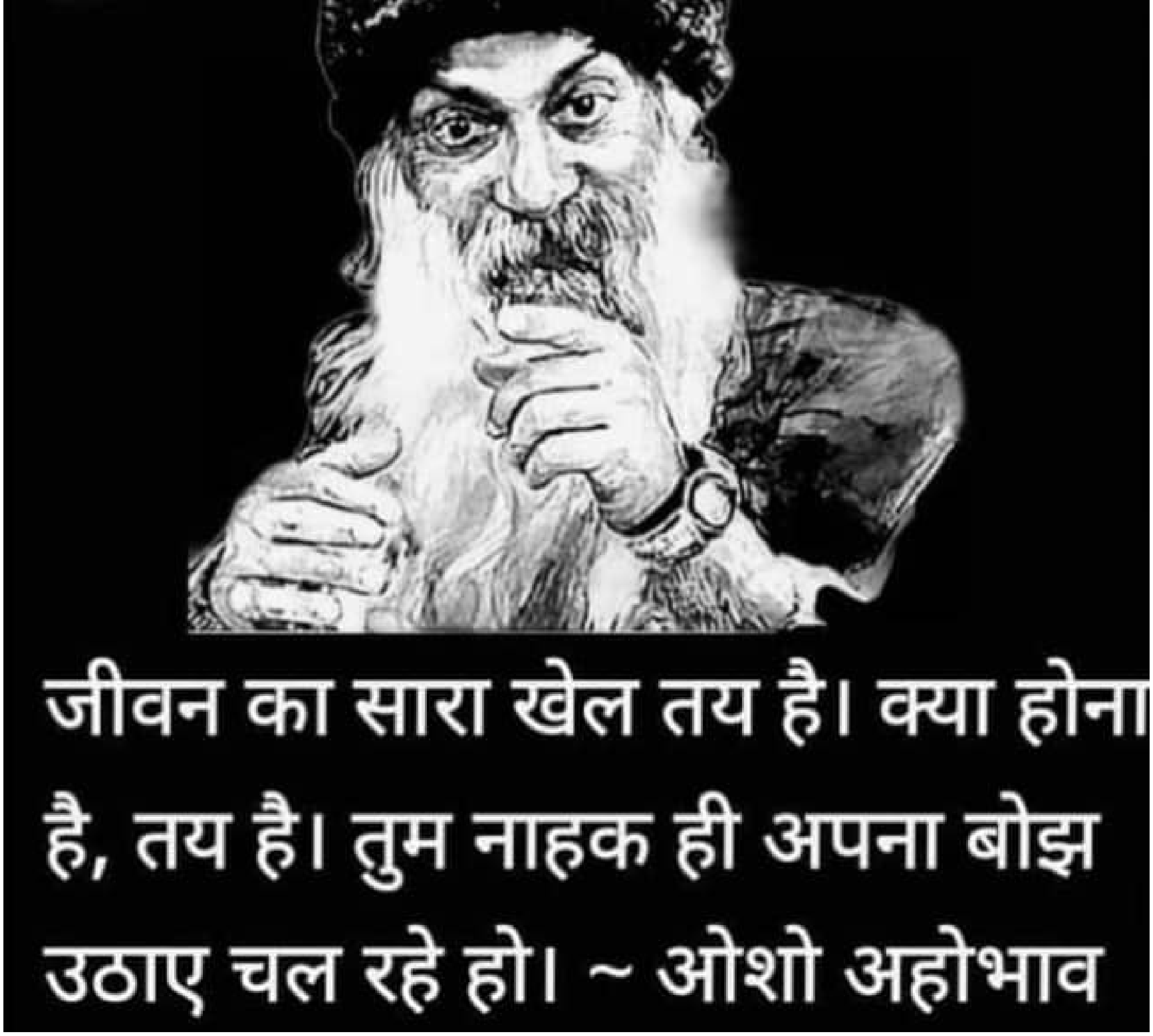


CamScanner

जब तुम शांत होकर बैठ जाओगे, तब तुम्हे यह पृथ्वी असली घर मालूम नही होगी। इसलिए लोग शांत बैठने में डरते है, खाली होने में भी डरते है। उलझाए रखते है अपने को। व्यस्त रखते है ~ ओशो अहोभाव

CamScanner

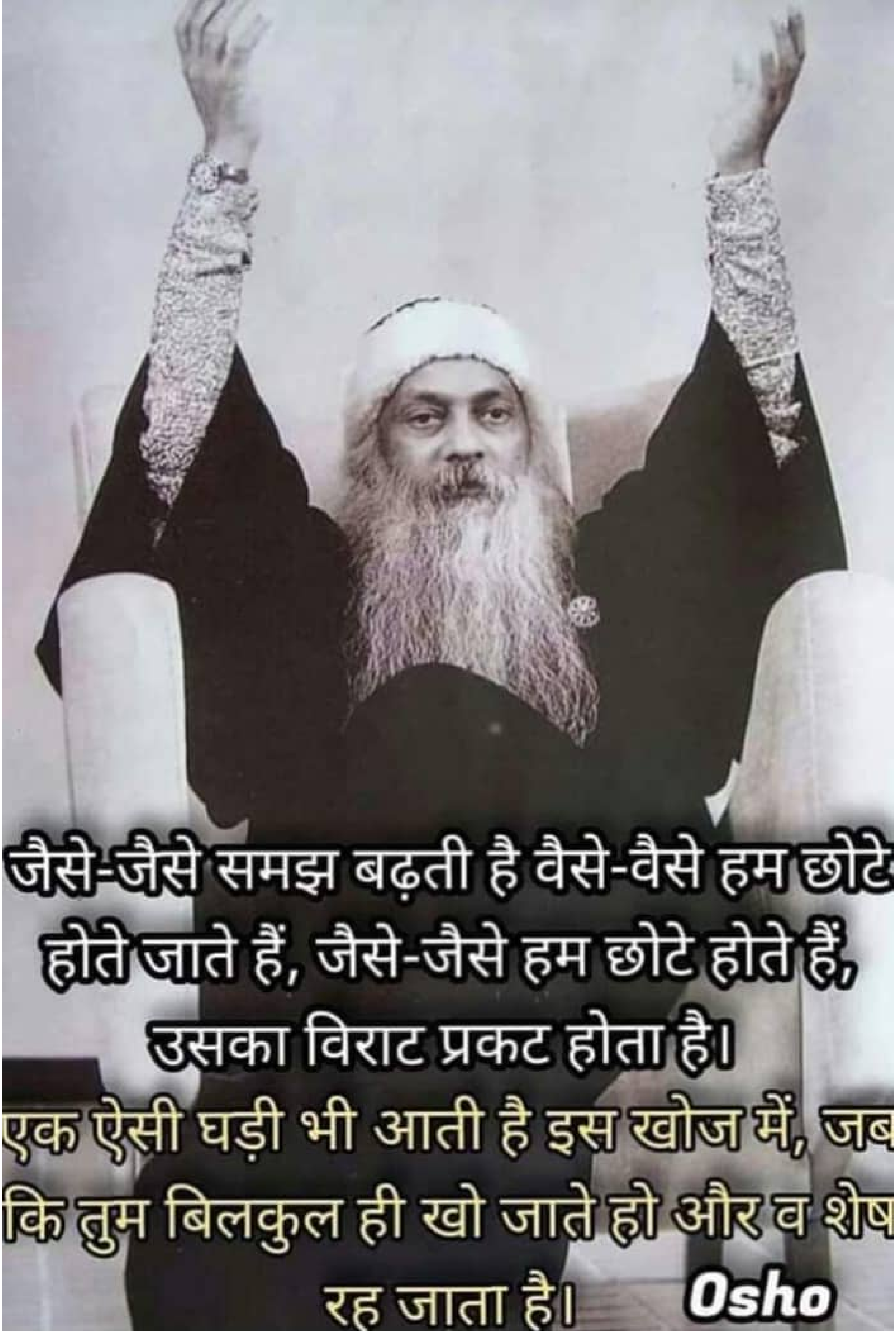
जैसे-जैसे समझ बढ़ती है वैसे-वैसे हम छोटे
होते जाते हैं, जैसे-जैसे हम छोटे होते हैं,
उसका विराट प्रकट होता है।
एक ऐसी घड़ी भी आती है इस खोज में, जब
कि तुम बिलकुल ही खो जाते हो और व शेष
रह जाता है।
Osho

CamScanner

7:23 pm 9 KB/s VoLTE 4G 51%

**ओ शो वाणी**
Virendra Kumar · 51m ·

मृत्यु कीमती चीज है। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो संन्यास न होता। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो धर्म न होता। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो परमात्मा का कोई स्मरण न होता, प्रार्थना न होती, पूजा न होती, आराधना न होती; न होते बुद्ध, न महावीर, न कृष्ण, न क्राइस्ट, न मोहम्मद। यह पृथ्वी दिव्य पुरुषों को तो जन्म ही न दे पाती, मनुष्यों को भी जन्म न दे पाती। यह पृथ्वी पशुओं से भरी होती है। यह तो मृत्यु ने ही झकझोरा। मृत्यु की बड़ी कृपा है, उसका बड़ा अनुग्रह है। मृत्यु ने झकझोरा, याद दिलाई। बुद्ध को भी स्मरण आया था, मृत्यु को ही देखकर। एक मरे हुए आदमी की लाश को देख कर पूछा था अपने सारथी से, इसे क्या हो गया?

उस सारथी ने कहा कि यह आदमी मर गया। बुद्ध ने कहा, क्या मुझे भी मरना होगा? सारथी झिझका, कैसे कहे? बुद्ध ने कहा, झिझको मत। सच-सच कहो, झूठ न बोलना। क्या मुझे भी मरना होगा? मजबूरी में सारथी को कहना पड़ा कि कैसे छिपाऊं आपसे! आज्ञा तो यही है आपके पिता की कि आपको मौत की खबर न होने दी जाए, क्योंकि बचपन में आपके ज्योतिषियों ने कहा था कि जिस दिन इसको मौत का स्मरण आएगा, उसी दिन यह संन्यस्त हो जाएगा। मगर झूठ भी कैसे बोलूं! मृत्यु तो सबको आएगी। आपको भी आएगी, मालिक! मृत्यु से कोई कभी बच नहीं सका है। मृत्यु अपरिहार्य है।

बुद्ध ने उसी रात घर छोड़ दिया, क्रांति घट गई। जब मृत्यु होने ही वाली है तो हो ही गई; तो जितने दिन हाथ में हैं इतने दिनों में हम उसको खोज लें जो अमृत है।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷
🙏🔥🙏

CamScanner

Thakur Jitendrabhai Ramanuj Balbhadrasinh Zala Krishna Kumar Ramesh Kumar Parasram Bamblani Sarhade Intazar Vishnu Ashok Bhai Shihora Falesh Kumar Thakur Anuj Jain पुडासैनी तारा Dhyan Meera @followers

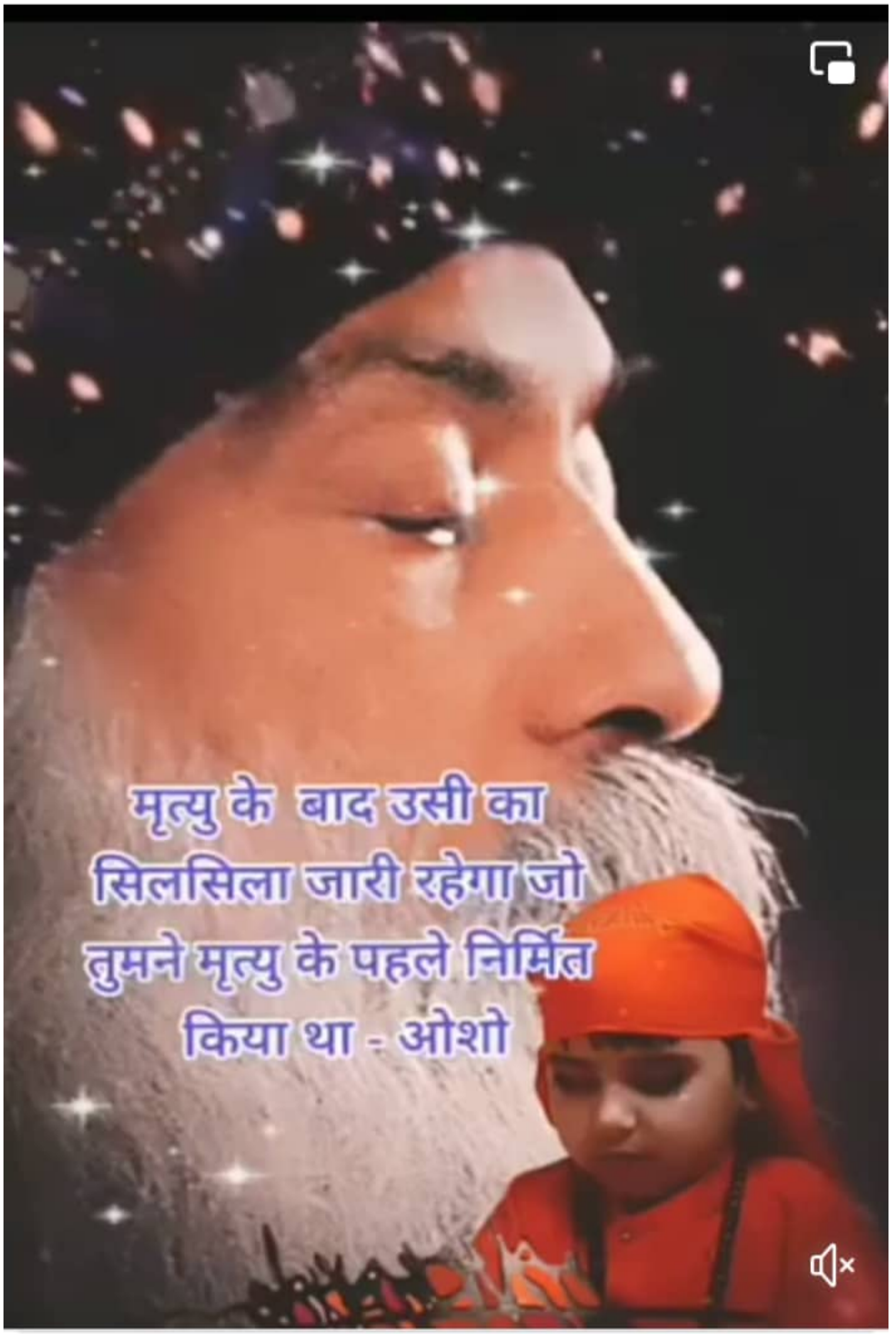


Like Comment Share

Write a comment...

CamScanner

मत फिक्र करो कि लोग
बुरे हैं या अच्छे, फिक्र
इतनी ही करो कि;

तुम कहां हो.?

तुम क्या हो.?

तुम कौन हो.?

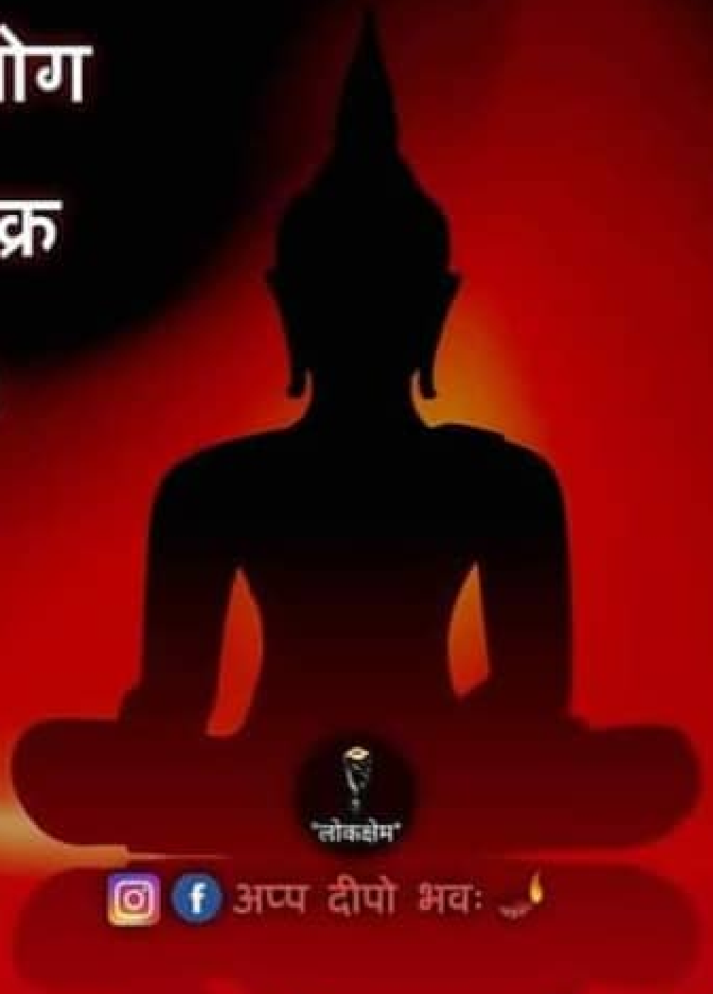


लोगों से लेना देना भी क्या है ! आज तुम हो, कल नहीं रहोगे, दुनिया तो चलती रही है, चलती रहेगी। कल तुम नहीं थे तब भी दुनिया चलती थी, कल तुम नहीं होओगे तब भी दुनिया चलती रहेगी.! फिर लोगों को बदलना होता, लोगों को अच्छा बनाना होता, ऐसा कोई दायित्व तुम्हारे ऊपर किसी ने सौंपा होता, तो भी कोई बात थी कि तुम चिंता करो, कौन अच्छा, कौन बुरा? तुम्हें लेना देना क्या है ! एक दूसरे में बुराइयां देख रहे हैं सब। क्या तुम्हें पड़ी है? अपनी संवारो! थोड़े दिन हैं, थोड़ा समय है, अपने को निखारो।।

- Osho -

CamScanner

तुम अपने को रत्तीभर
भी कम मत आंकना
ईश्वर ने तुमको सबसे
अनूठा पैदा किया है।
@Osho Gyan Hindi English

CamScanner

Create

My reels

**आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां**

Arun Mishra · 1h ·

कल हृदय रो उठा जब जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज ने एक न्यूज चैनल पर एंकर से कहा - 'मैं जन्म से दृष्टिहीन हूँ, फिर भी सभी वेद मुझे याद हैं । डेढ़ लाख से अधिक पन्ने कंठस्थ हैं। अब और कौन सा चमत्कार देखना चाहती हो बेटी इससे ज्यादा क्या कहूं जो भी बोलता हूं गीता, भागवत और रामायण सब बिना देखे कहता हूं कोई मेरे पास किताब नहीं है,

ये हमारे देश के महान सनातन धर्म की पहचान है इसलिए ऐसे पुरुष युग निर्माण के लिए होते हैं ऐसे गुरुओं को बार बार प्रणाम, शीश झुका कर 🙏🙏🙏🌹🌹🌹🚩🚩

🙏❣️जय श्री राम राधे राधे जी ❣️🙏

CamScanner

10:18 pm 0 KB/s VoLTE 4G 33%

O My Beloved Master
26m ·

तीन महीने आधा घंटा रोज आंख बंद करके यही केवल सोचें कि मेरी सीमा कहां है?

आज सोचेंगे तो आपको शरीर ही अपनी सीमा मालूम पड़ेगी। लेकिन पंद्रह दिन से ज्यादा नहीं लगेगा कि आपको एक अदभुत अनुभव होना शुरू हो जाएगा। कभी शरीर बहुत बड़ा होता हुआ मालूम पड़ेगा, कभी बहुत छोटा होता हुआ मालूम पड़ेगा, सिर्फ पंद्रह दिन के भीतर। कभी लगेगा, शरीर पहाड़ जैसा हो गया और सीमा बड़ी हो गई। और कभी लगेगा, शरीर चींटी जैसा हो गया, सीमा बड़ी छोटी हो गई। घबड़ा मत जाना, क्योंकि बहुत घबड़ाहट का अनुभव होता है।

जब पहली दफा सीमा का भाव टूटता है, तो फ्लक्चुएशन होता है। कभी लगता है, बहुत बड़ा हो गया; कभी लगता है, बिलकुल छोटा हो गया। अगर आप पीछे पड़े ही रहे, तो एक महीना पूरा होते-होते अचानक कभी-कभी ऐसे क्षण आ जाएंगे, जब लगेगा कि शरीर है ही नहीं–न छोटा, न बड़ा। और तब आपको पहली दफा पता चलेगा कि मेरी कोई सीमा नहीं। मैं हूं, और सीमा कोई भी नहीं है। अपने ही भीतर अगर तीन महीने इस प्रयोग को करें, तो आप असीम की और निराकार की छोटी-सी झलक को पा लेंगे।

और जिस दिन आप अपने भीतर जान लेंगे, उस दिन आप दूसरे के भीतर भी जान लेंगे। क्योंकि हम दूसरे के भीतर जो भी जानते हैं, वह अनुमान है, इनफरेंस है। ज्ञान तो अपने भीतर होता है, दूसरे की तरफ तो अनुमान होता है।

Osho
गीतादर्शन
अ.7.प्र.87/30
कामना और प्रार्थना

CamScanner

CamScanner

7:47 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%
facebook

यह एक बहुत अनूठी दुनिया है। यहां बादशाहत से भरे हुए लोग भिखमंगे बिने हुए घूम रहे हैं। जिन्हें सम्राट होना था, वे हाथ में भिखारी के पात्र लिए हुए घूम रहे हैं। थोड़ा सा प्रयास...लेकिन तुम्हारे समाज और तुम्हारे संस्कार तुम्हें डराते हैं। वे तुमसे कहते हैं स्वयं को जानना यह जन्मों में होता है, यह कभी—कभी होता है, यह किसी अवतारी पुरुष के जीवन में होता है, यह किसी तीर्थंकर के जीवन में होता है। यह कोई मसीहा, कोई पैगंबर, कोई ईश्वर का पुत्र...तुम तो एक आदमी हो। तुम इस झंझट में मत पड़ जाना, तुम इस मुश्किल को हाथ में मत ले लेना। यह तुम्हारे बस की बात नहीं है।

मैं तुमसे कहता हूं कि यह तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और इसके लिए तीर्थंकर होना जरूरी नहीं है। हां, यह घटना घट जाए तो तुम मसीहा हो जाओगे। मसीहा होना पहली जरूरत नहीं है, अंतिम परिणाम है।

बस तुमसे एक घंटा मांगता हूं। और चौबीस घंटे में तुम एक घंटा न दे सको, इतने दीन तो नहीं। इतना दिन तो कोई भी नहीं। और मैं नहीं कहता कि मंदिर में जाओ और मैं नहीं कहता कि मस्जिद कि फिकर करो। क्योंकि मेरी दृष्टि यह है कि मंदिर और मस्जिद और गिरजे और गुरुद्वारे घातक सिद्ध हुए हैं। इन्होंने यह खयाल पैदा किया कि भगवान तुम्हारे घर में नहीं है। मैं तुमसे कहता हूं, तुम जहां हो, वहां भगवान है। इसलिए तुम जहां बैठ गए, वहीं तीर्थ हो गया। बस जरा मौन बैठ जाओ, शांत बैठ जाओ। थोड़ी देर—सबेर लगे तो घबराना मत।

और लोग इतने अधैर्य से भरे हैं कि एक साधारण सी शिक्षा, जो उन्हें ज्यादा से ज्यादा किसी आफिस में क्लर्क बनाकर छोड़ेगी, उसके लिए जिंदगी का एक—तिहाई हिस्सा खर्च करने को राजी हैं, और पच्चीस वर्ष युनिवर्सिटी, स्कूल, कालेजों के चक्कर काटने के बाद फिर दफ्तरों के चक्कर काटेंगे; और तो भी नहीं सोचते कि मैं तुमसे केवल एक ही घंटा मांग रहा हूं। और उस घंटे भर की अनुभूति तुम्हें वहां पहुंचा देगी, उस अमृत अनुभव में, उस शाश्वत में, जिसके पाने के लिए यह जगत एक पाठशाला है।

CamScanner

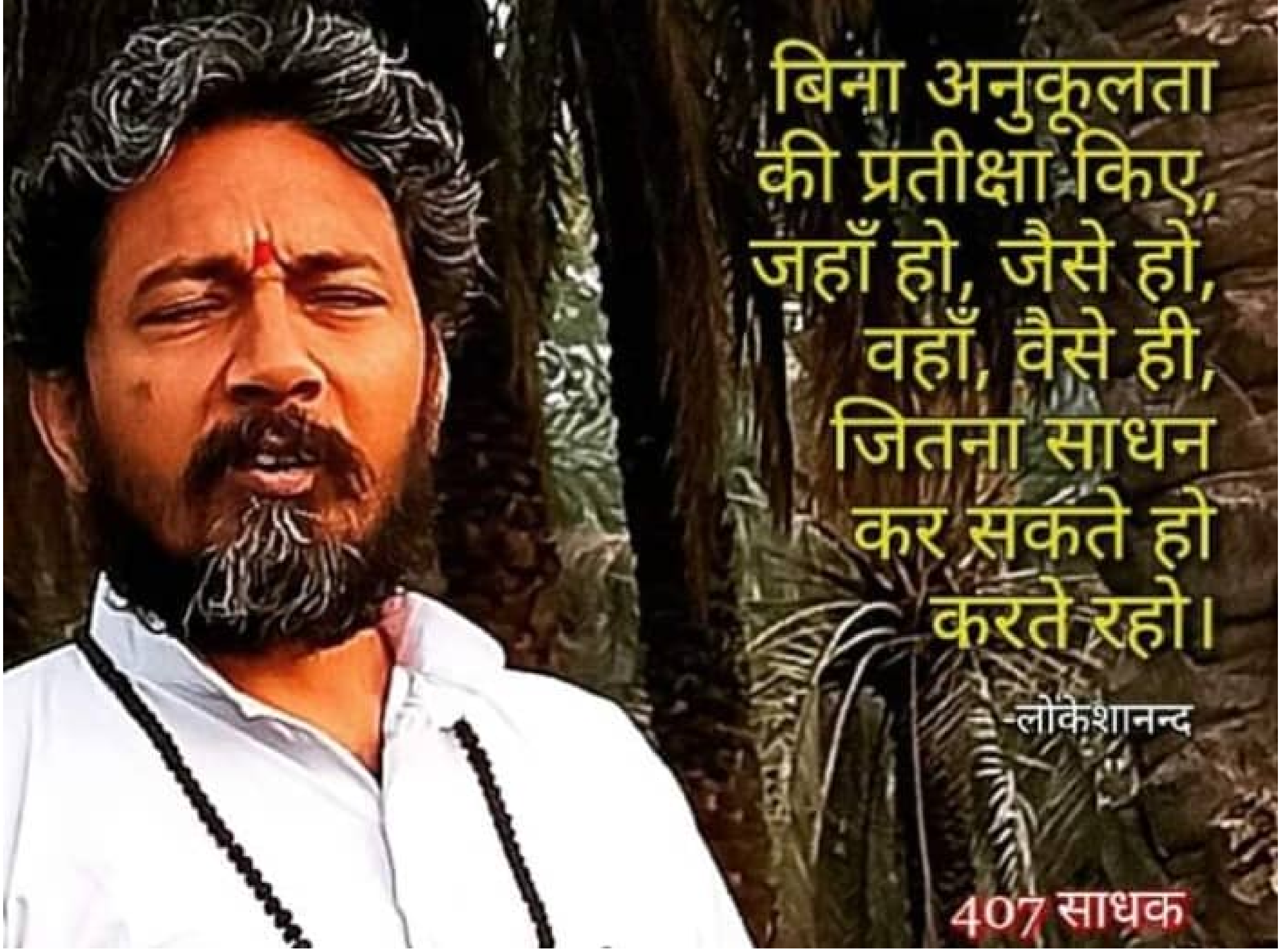

बिना अनुकूलता
की प्रतीक्षा किए,
जहाँ हो, जैसे हो,
वहाँ, वैसे ही,
जितना साधन
कर सकते हो
करते रहो।
-लोकेशानन्द
407 साधक


CamScanner

# लघुकथा

एक आदमी रात को झोपड़ी में बैठकर एक छोटे से दीये को जलाकर कोई शास्त्र पढ़ रहा था।

आधी रात बीत गई

जब वह थक गया तो फूंक मार कर उसने दीया बुझा दिया।

लेकिन वह यह देख कर हैरान हो गया कि जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चांद बाहर खड़ा रहा।

लेकिन जैसे ही दीया बुझ गया तो चांद की किरणें उस कमरे में फैल गई।

वह आदमी बहुत हैरान हुआ यह देख कर कि एक छोटे से दीए ने इतने बड़े चांद को बाहर रोक कर रखा।

इसी तरह हमने भी अपने जीवन में अहंकार के बहुत छोटे-छोटे दीए जला रखे हैं जिसके कारण परमात्मा का चांद बाहर ही खड़ा रह जाता है।

जबतक वाणी को विश्राम नहीं दोगे तबतक मन शांत नहीं होगा।

मन शांत होगा तभी ईश्वर की उपस्थिति महसूस होगी।

CamScanner

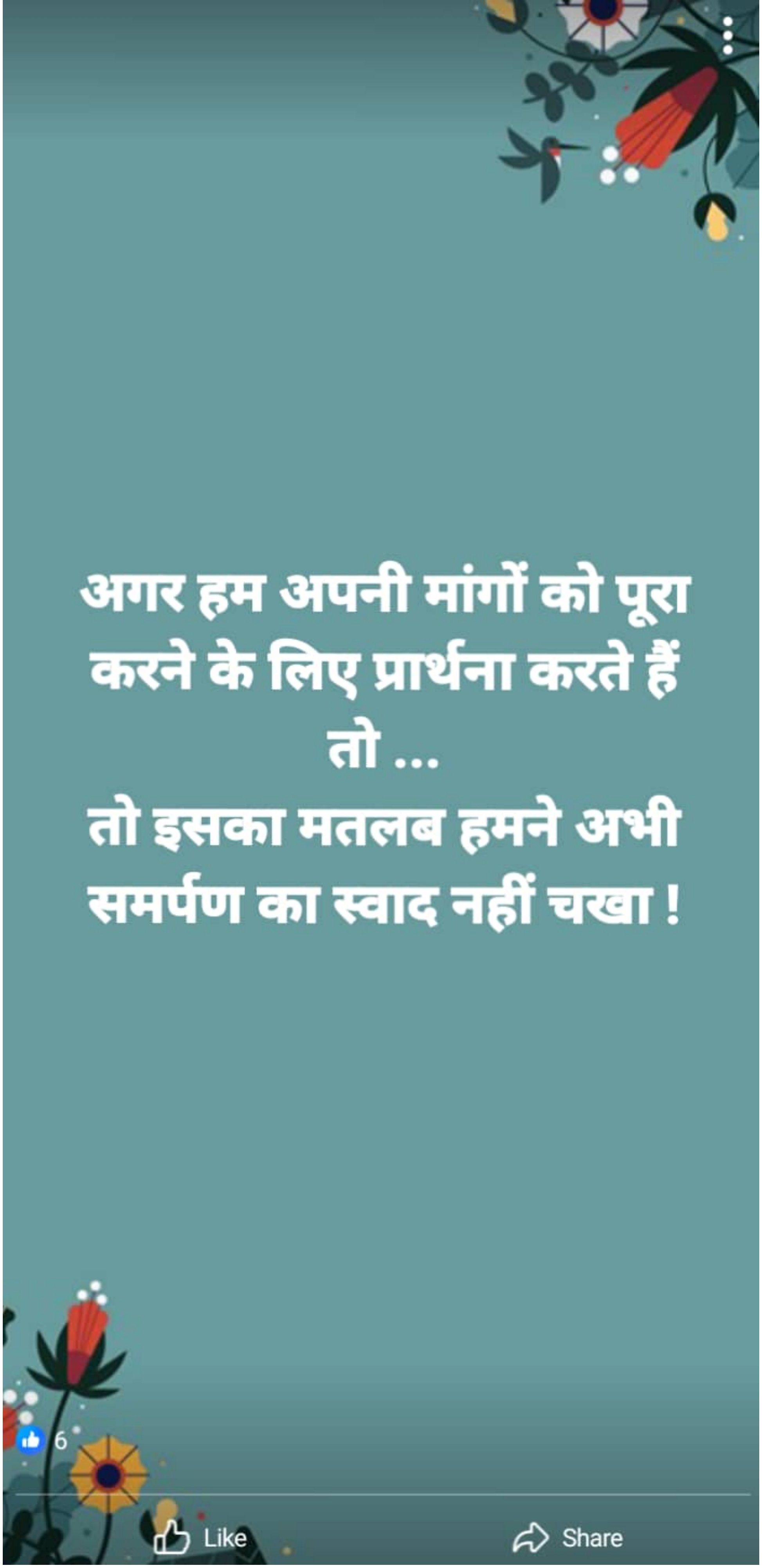


CS CamScanner

11:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 28%
facebook

दरख्त बड़ा अजीब है। यह दरख्त बिलकुल साधारण है। इसके पत्ते कोई जानवर नहीं खाते। इसकी लकड़ियों को जलाया नहीं जा सकता, वे धुआ करती हैं। इसकी लकड़ियां बिलकुल फ्री—टेढ़ी हैं, इनको काटकर फर्नीचर नहीं बनाया जा सकता। द्वार—दरवाजे नहीं बनाये जा सकते। दरख्त बिलकुल बेकार है, बिलकुल साधारण है। इसलिए इसको कोई काटता नहीं। लेकिन जो दरख्त सीधा है, और ऊंचा गया है, उसे जाता है, उसके खंभे बनाये जाते हैं। '

लाओत्से हंसा और वापस लौट आया। और उसने कहा, उस दिन से मैं समझ गया कि अगर सच में तुम्हें जीवन में बड़ा होना है, तो उस दरख्त की भांति हो जाओ, जो बिलकुल साधारण है। जिसके पत्ते भी अर्थ के नहीं, जिसकी लकड़ी भी अर्थ की नहीं। तो उस दिन से मैं वैसा दरख्त हो गया। बेकार। मैंने फिर सारी महत्वाकांक्षा छोड़ दी। बड़ा होने की, ऊंचा होने की, असाधारण होने की सारी दौड़ छोड़ दी, क्योंकि मैंने पाया कि जो ऊंचा होना चाहेगा, वह काटा जायेगा। मैंने पाया कि जो बड़ा होना चाहेगा, वह काट कर छोटा कर दिया जायेगा। मैंने पाया है कि प्रतियोगिता में, प्रतिस्पर्धा में महत्वाकांक्षा में सिवाय मृत्यु के और कुछ भी नहीं है। और तब मैं अति साधारण—जैसा मैं था, न कुछ... चुपचाप वैसे ही बैठा रहा। और जिस दिन मैंने सारी दौड छोड़ दी, उसी दिन मैंने पाया कि मेरे भीतर कोई अदभुत चीज का जन्म हो गया है। उसी दिन मैंने पाया कि मेरे भीतर परमात्मा के अनुभव की शुरुआत हो गयी है।

जो व्यक्ति साधारण से साधारण और सरल से सरल होने को राजी हो जाता है, सत्य खुद उसके द्वार आ जाता है। और जो व्यक्ति असाधारण होने की, विशिष्ट होने की, बडा होने की, महत्वाकांक्षी होने की, अहंकार तृप्त करने की दौड में पड जाता है, उसके जीवन में असत्य घना से घना होता जाता है और सत्य से उसके संबंध सदा के लिए क्षीण होते जाते हैं। अंततः उसके पास झूठ का एक ढेर रह जाता है और सत्य की कोई भी किरण नहीं। लेकिन जो सरल हो जाता है, सीधा, साधारण, सामान्य, उसके जीवन में झूठ की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती। उसके जीवन में सत्य की किरण का जन्म होता है और सारा अंधकार समाप्त हो जाता

CamScanner

थोड़ा स्मरणपूर्वक खोज करें, तो जब भी
मन को कोई वासना तीव्रता से पकड़े,
तब आप जरा अपने भीतर देखना कि
आपके ज्ञान की जो क्वालिटी है,
आपके ज्ञान का जो गुण है,
क्या वह बदला? क्या वह निम्न हुआ?
क्या वह नीचे गिरा?

इसलिए हर वासना,
चाहे तृप्त ही क्यों न हो जाए,
एक सूक्ष्म विषाद में छोड़ जाती है।
क्योंकि वह आपको पतित कर जाती है।

CamScanner

जो जाग जाता है,
चल पडता है, और जो चलता ही
रहता है, वही भगवान है, वही
भगवत्ता को उपलब्ध है।
ओशो 'बहुतेरे हैं घाट'

CamScanner

You and 72 others >

Top comments

**Shripal Gupta**
Why are you doing foolish type senseless post . To take bath in Ganga is a Aastha of a person. Do you think that by offering Chadars on Peer Majars you shall get heaven. Behave like a civilized and sensible person and not as a foolish man
See translation

3h Like Reply 1

**Purna Dinesh Patel**
Jay Shree Girdhar

5h Like Reply

**Surendraprasad Bajpai**
Radhey radhey

3h Like Reply

**Kalpana Gupta**
Radhe radhe jai shri krishna

49m Like Reply

**Umesh Kumar Trivedi**

1h Like Rep

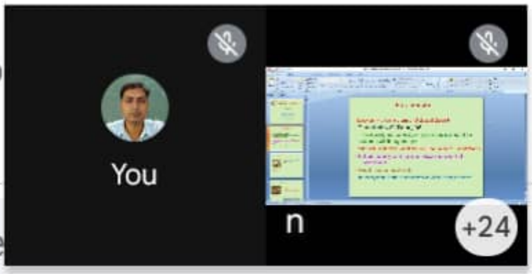


Write a public comme

CamScanner

11:57 am 17 KB/s VoLTE 4G 66%

परमात्मा भविष्य नहीं है। परमात्मा वर्तमान है। हवा का झोंका आए, तो वही आता है। और सूरज की किरण आए, तो वही आता है। और पक्षियों के गीत हों, तो वही गाता है। उसके अतिरिक्त तो यहां कुछ है ही नहीं।

इसलिए हमारी प्रार्थनाएं उसे बुलाने की व्यर्थ चली जाती हैं।
वह आया हुआ है और हम बुलाते हैं। वह द्वार पर खड़ा है और हम दूर तलाशते हैं। वह निकट से भी निकट है और हमारी आंखें चांद-तारों में उलझी हैं। मनुष्य चूकता है, इसलिए नहीं कि परमात्मा दूर है, इसलिए नहीं कि परमात्मा छिपा है, बल्कि इसलिए कि परमात्मा इतना प्रकट है, इतना निकट है, इतना उघड़ा है कि हम उसे पहचान नहीं पाते। जैसे मछली सागर की सागर को न पहचान पाए। वहीं जन्मी, वहीं बड़ी हुई, वहीं जीयी, वहीं खेली-कूदी, जीवन का सारा जाल रचाया--सागर तो सदा था। मछली को सागर की याद तभी आती है जब मछुवा उसे पकड़ लेता है और फेंक देता है रेत पर। सागर से टूटती है, तो सागर की याद आती है।

लेकिन मनुष्य तो परमात्मा से टूट ही नहीं सकता। ऐसा कोई तट नहीं है, जहां तुम्हें फेंका जा सके। क्योंकि जहां भी है, जो भी है, परमात्मा ही है। परमात्मा से भिन्न होने का उपाय नहीं है। यही सबसे बड़ी अड़चन है। काश, हम उससे भिन्न हो सकते, तो क्षण में हम उससे जुड़ने के लिए तैयार हो जाते। क्योंकि भिन्न होते ही तड़फते। मछली की तरह तड़फते। हम अभिन्न हैं। हम हैं ही नहीं, वही है। हम उसकी ही श्वासें हैं, हम उसकी ही धड़कन हैं, हम उसकी ही लहरें हैं।

इसलिए प्रार्थना न करो कि परमात्मा कब आएगा। कुछ दूसरी तरफ से कोशिश करनी होगी। परमात्मा आया हुआ है, हमने आंखें बंद कर रखी हैं। शिवानंद, आंखें खोलो! परमात्मा आया हुआ है, हम पीठ किए खड़े हैं।

शिवानंद, जिस तरफ पीठ किए
हुआ है, उसने अपनी वीणा छेड़
संगीत सनातन है। शिवानंद, अ

CamScanner

बूढ़े आदमी को जब मौत करीब आने लगती है,
तो तीन-चार घंटे से ज्यादा की नींद की कोई जरूरत नहीं रहती।
उसका कारण है कि शरीर में अब कोई निर्माण नहीं होता,
शरीर अब निर्मित नहीं होता। अब शरीर विसर्जित होने की
तैयारी कर रहा है। नींद की कोई जरूरत नहीं है।
नींद निर्माणकारी तत्व है।
उसकी जरूरत तभी तक है, जब तक शरीर में कुछ नया बनता है।
जब शरीर में सब नया बनना बंद हो गया,
तो बूढ़े आदमी को ठीक से कहें तो नींद नहीं आती;
वह सिर्फ विश्राम करता है; वह थकान है।
बच्चे ही सोते हैं ठीक से; बूढ़े तो सिर्फ थककर विश्राम करते हैं।
क्योंकि अब मौत करीब आ रही है।
अब शरीर को कोई नया निर्माण नहीं करना है।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.6.प्र.65/8
योगाभ्यास–गलत को काटने के लिए

CamScanner

............................

मेरे प्रत्येक संन्यासी को न केवल खुद डूबना है, बल्कि एक दिन अपनी मस्ती के कारण और अनेकों को निमंत्रण भी दे आना है। उसकी मस्ती निमंत्रण दे आएगी।

यह दुनिया एक नये मनुष्य की प्रतीक्षा कर रही है। तुम सौभाग्यशाली हो, क्योंकि तुम्हारे हाथ में एक ऐसा अवसर है जो कभी-कभी मनुष्य-जाति के हाथ में होता है। हर पच्चीस सौ साल में सिर्फ एक बार ऐसा अवसर मनुष्य-जाति के हाथ में होता है, जब मनुष्यता एक नया कदम लेती है, एक नया सोपान चढ़ती है। वे पच्चीस सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। जो सौभाग्य बुद्ध के समय के लोगों का था, जो बुद्ध के संघ में बैठ कर लोगों ने आनंद अनुभव किया था, वैसे आनंद-अनुभव की तुम्हारी भी अनायास क्षमता है। अनअर्जित तुम्हारा सौभाग्य है।

बुद्ध के पास बैठे थे जो, उन्हें भी पता नहीं था कि वे किस महाक्रांति में सम्मिलित हो रहे हैं। तुम्हें भी ठीक-ठीक पता नहीं है। जागोगे तो धीरे-धीरे पता चलेगा कि तुम सिर्फ किसी पिटी-पिटाई परंपरा के हिस्से नहीं हो। न तुम हिंदू हो, न मुसलमान, न ईसाई। तुम्हारा अतीत से कोई संबंध नहीं है।

तुम तो एक भविष्य के उदघोषक हो। एक नये मनुष्य के। एक नई धार्मिकता के। डूबोगे तो औरों को भी डुबा सकोगे।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -7 "

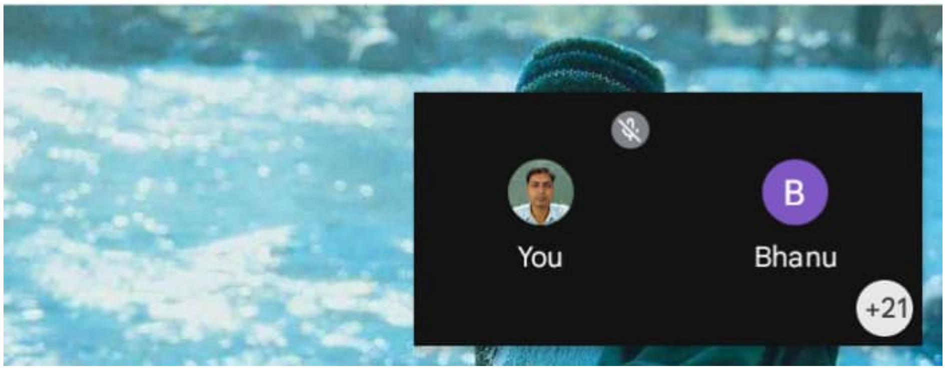


CS CamScanner

10:26 am 14 KB/s VoLTE 4G 87%
facebook

मिलन क्षण भर ही हो सकता है।
भीतर की स्त्री से मिलना शाश्वत हो सकता है।
बाहर की स्त्री से मिलना है,
तो वीर्य-कण की जो देह है,
उसके सहारे ही मिलना पड़ेगा,
क्योंकि देह का मिलन तो
देह के सहारे ही हो सकता है।
अगर भीतर की स्त्री से मिलना है
तो देह की कोई जरूरत नहीं है।
वीर्य-कण की देह तो अपने केन्द्र में,
काम-केन्द्र में पड़ी रह जाती है;
और वीर्य-कण की ऊर्जा उससे मुक्त हो जाती है।
वही ऊर्जा भीतर की स्त्री से मिल जाती है।
इस मिलन की जो आत्यंतिक घटना है,
वह सहस्रार में घटित होती है।
क्योंकि सहस्रार ऊर्जा का श्रेष्ठतम केंद्र है,
और काम-केन्द्र देह का श्रेष्ठतम केंद्र है।
ऊर्जा शुद्ध हो जाती है सहस्रार में पहुँच कर;
सिर्फ ऊर्जा रह जाती है,
Pue Energy.
और सहस्रार में हमारी स्त्री प्रतीक्षा कर रही है।
और हम अगर स्त्री हैं,
तो सहस्रार में हमारा पुरुष आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।
यह भीतरी मिलन है।
इस मिलन को ही हमने अर्धनारीश्वर कहा है !!!

CamScanner

मरौ वे जोगी मरौ!

मरौ वे जोगी मरौ मरौ है मीठा?

तिस मरणी मरौ ...

जिस मरणी गोरष मरि दीठा !!

CamScanner

गोरख ने कहा : पागल हुए हो,
आत्महत्या कोई कर ही नहीं सकता।
कोई मर ही नहीं सकता । मरना संभव नहीं है।
मैं तुमसे कहे देता हूं करो, करके बहुत चौंकोगे।
करके पाओगे कि अरे, देंह तो छुट गयी ,
मैं तो वैसा का वैसा हूं!
और अगर असली आत्महत्या करनी हो तो
फिर मेरे पास रूक जाओ।
छोटा-मोटा खेल करना हो तो तुम्हारी
मर्जी--कूद जाओ किसी पहाड़ी से,
लगा लो गर्दन में फांसी। असली मरना हो तो
रूक जाओ मेरे पास।
मैं तुम्हें वह कला दूंगा जिससे महामृत्यु घटती है,
फिर दुबारा आना न हो सकेगा।
लेकिन वह महामृत्यु भी सिर्फ हमे महामृत्यु
मालूम होती है, इसलिए उसे मीठा कह रहे हैं

मरौ वे जोगी मरौ मरौ मरन है मीठा ।
तिस मरणी मरौ जिस मरणी गोरष मरि दीठा ॥

ऐसी मृत्यु तुम्हें सिखाता हूं गोरख कहते हैं,
जिस मृत्यु से गुजर कर मैं जागा।
सोने की मृत्यु हुई है, मेरी नहीं।
अंहकार मरा, मैं नहीं द्वैत मरा, मैं नहीं,
द्वैत मरा तो अद्वैत का जन्म हुआ,
समय मरा तो शाश्वत मिली,
वह जो क्षुद्र--सीमित जीवन था, टूटा,
तो बूंद सागर हो गयी। ही, निश्चित जो बूंद सागर
में गिरती है तो एक अर्थ में मर जाती है,
बूंद की तरह मर जाती है, और एक अर्थ में
पहली बार महाजीवन उपलब्ध होता
है--सागर की भांति जीती है !

ओशो जी

CamScanner

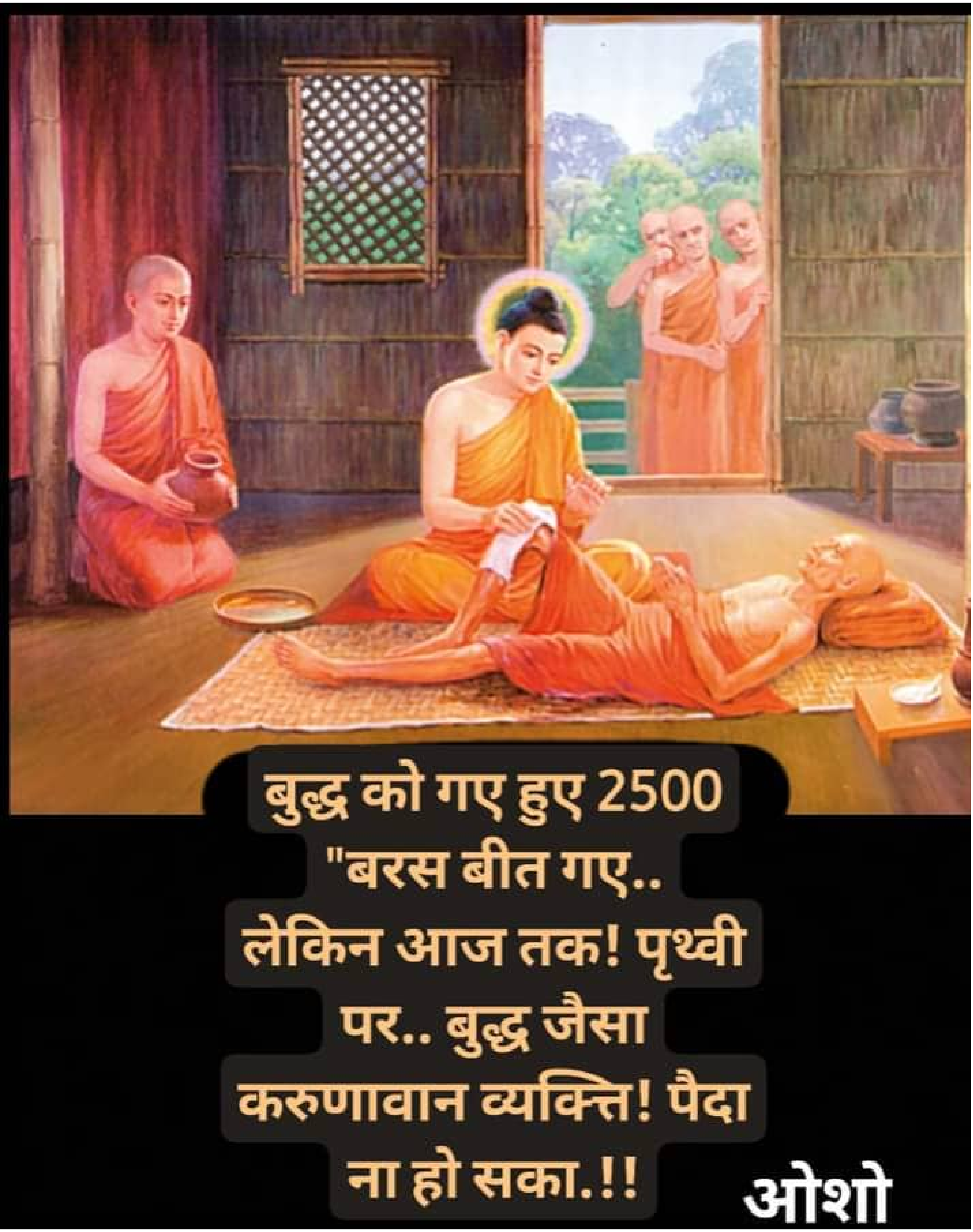


CS CamScanner

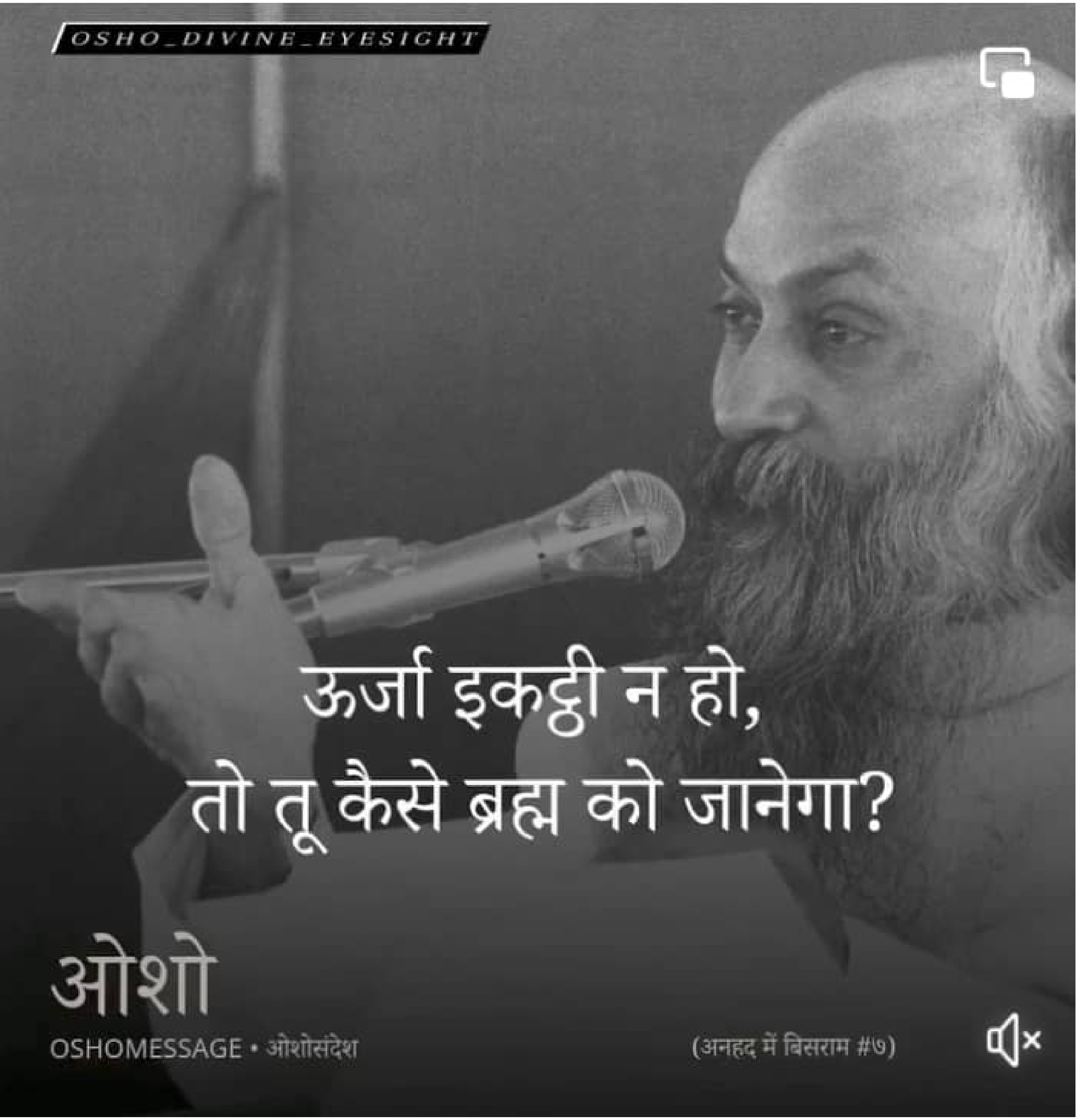

OSHO_DIVINE_EYESIGHT
ऊर्जा इकट्ठी न हो,
तो तू कैसे ब्रह्म को जानेगा?
ओशो
OSHOMESSAGE • ओशोसंदेश
(अनहद में बिसराम #७)


CamScanner

धन की भूख भिखारी
बना देती है।
और परमात्मा की भूख
बादशाह बना देती है।
@Osho Gyan Hindi English

CamScanner

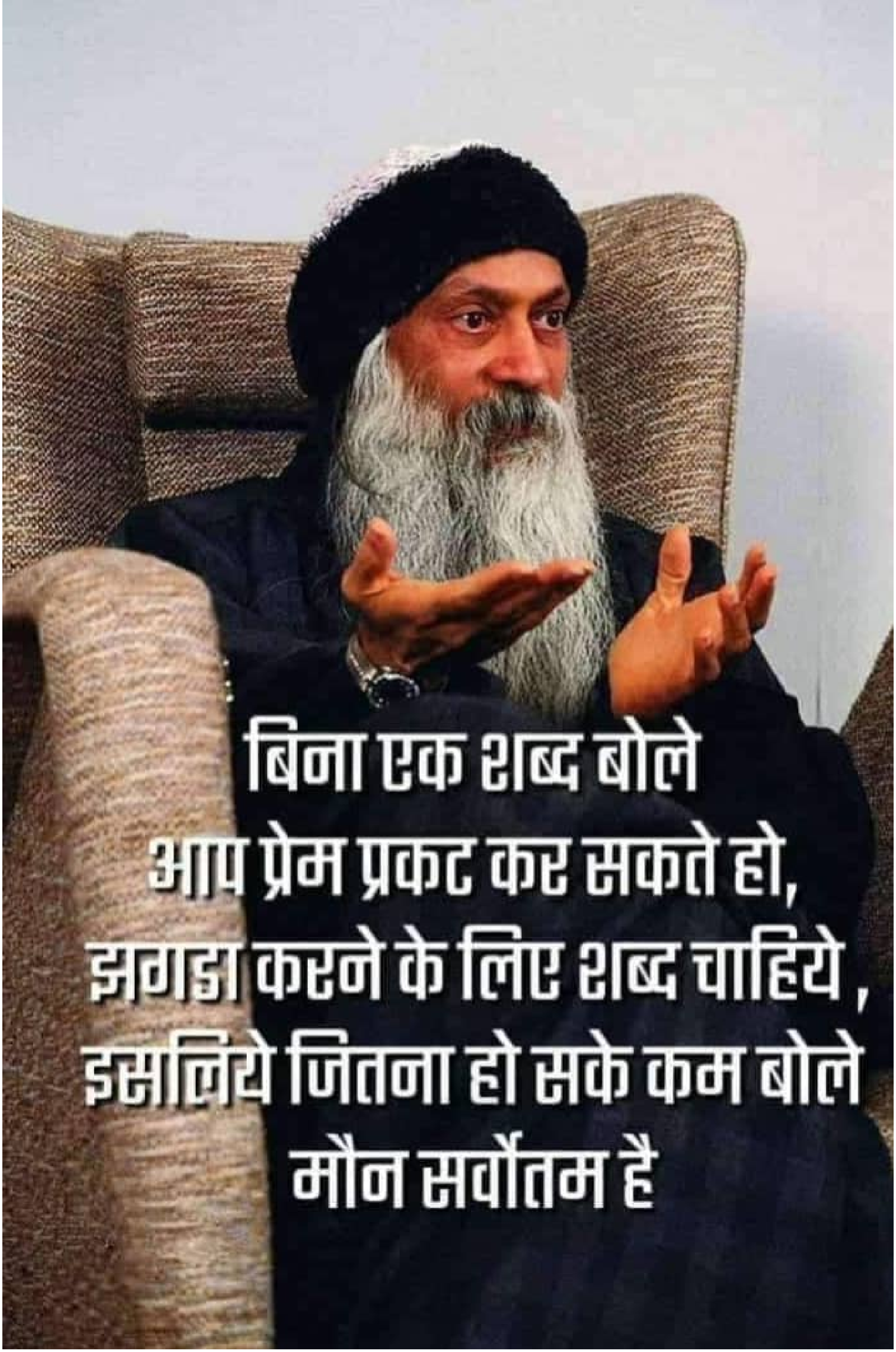
बिना एक शब्द बोले
आप प्रेम प्रकट कर सकते हो,
झगड़ा करने के लिए शब्द चाहिये ,
इसलिये जितना हो सके कम बोले
मौन सर्वोतम है

CamScanner

परमात्मा शब्द नही जो तुम्हे
किताब में मिलेगा..
परमात्मा मूर्ति नही जो तुम्हे
मंदिर में मिलेगा..!
परमात्मा इंसान नही जो तुम्हे
समाज में मिलेगा..
"परमात्मा जीवन है जो तुम्हे..
अपने भीतर मिलेगा"

CamScanner

7:11 pm 0 KB/s 29%

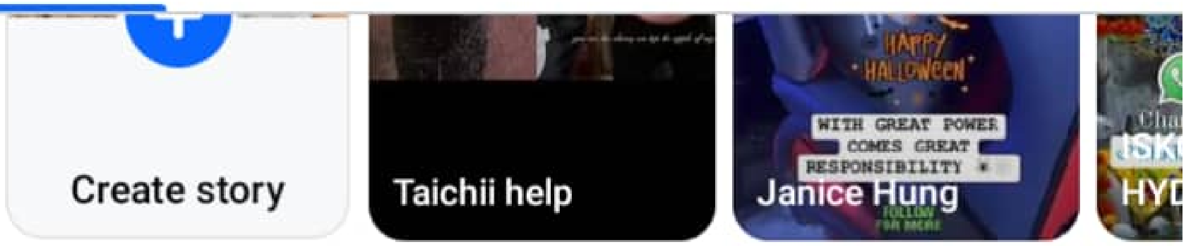


**Osho Rishi Valley. Shimla** is feeling blessed.
55m ·

मौन का यह अर्थ नहीं कि ओंठ बंद हों। मौन का अर्थ है, भीतर मन का चलन-हलन बंद हो, भीतर वहां चुप्पी हो। जब भी मौका मिले मौन हो जाएं। जिस क्षण आप मौन में हैं उसी क्षण आप मंदिर में हैं। चाहे फिर वह दुकान हो, चाहे फिर वह बाजार हो, चाहे वह दफ्तर हो। जीवन का अधिकतम क्षण मौन में व्यतीत हो, इसका स्मरण रखें।

और आप क्रमशः एक नये आदमी को अपने भीतर आते हुए अनुभव करेंगे। क्रमशः आपके भीतर एक नये मनुष्य का जन्म होने लगेगा। आप बिलकुल नई चेतना को अनुभव करेंगे। और आपके भीतर जड़ता टूटनी शुरू हो जाएगी। एक समय आएगा आपके भीतर कोई जड़ता नहीं होगी और केवल चैतन्य रह जाएगा।

जिस क्षण व्यक्ति पूर्ण मौन में स्थापित अपनी चेतना को प्रवेश करता है उसी क्षण उसके भीतर शरीर विलीन हो जाता है और केवल आत्मा का अनुभव शेष रह जाता है।
जिस क्षण आप पूरे मौन में हैं उसी क्षण आप संसार में नहीं हैं परमात्मा में हैं। इसको मैं संन्यास कहता हूं।
~ओशो, आठो पहर यू झूमिये।

CamScanner

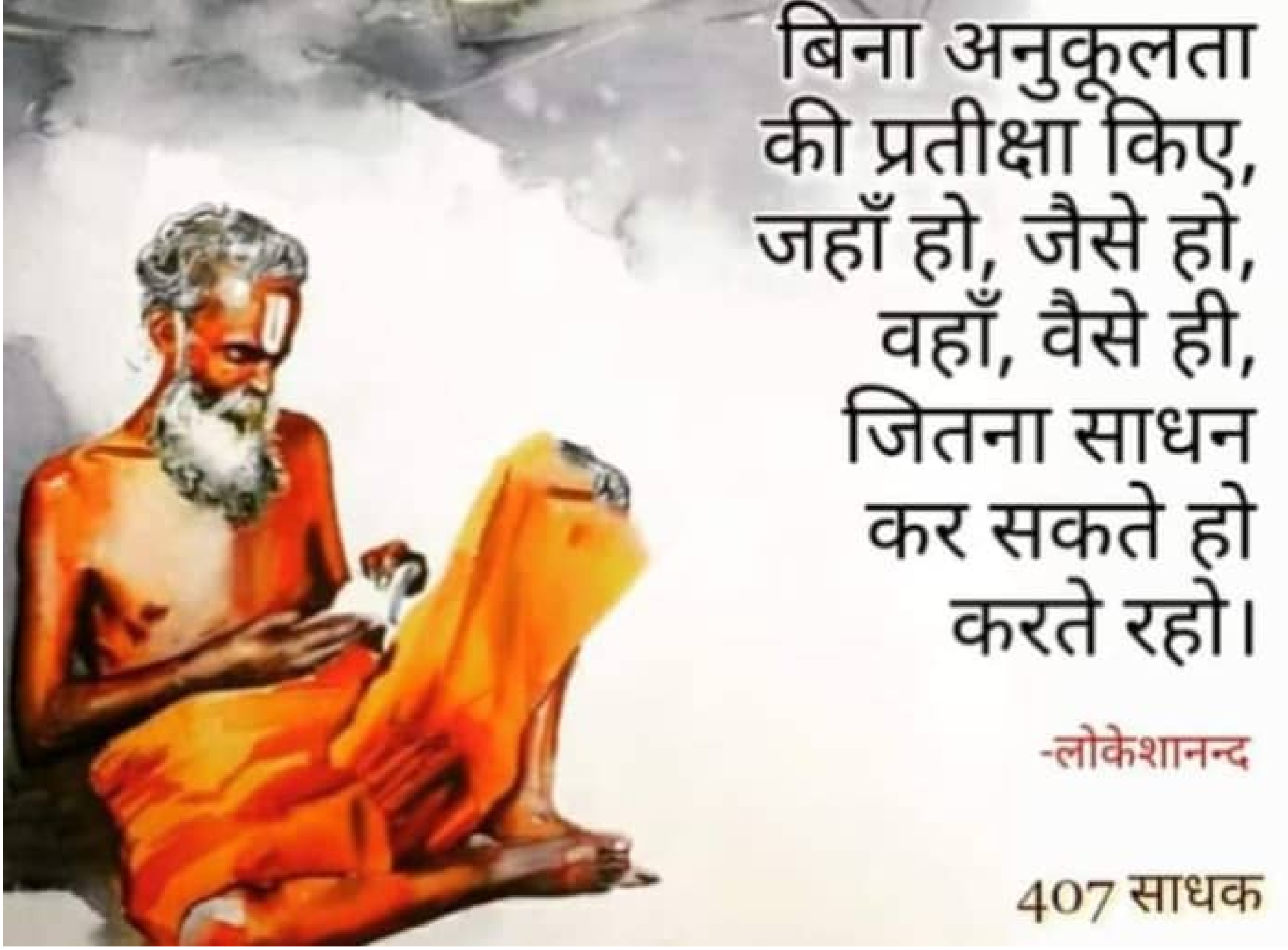
बिना अनुकूलता
की प्रतीक्षा किए,
जहाँ हो, जैसे हो,
वहाँ, वैसे ही,
जितना साधन
कर सकते हो
करते रहो।
-लोकेशानन्द
407 साधक
CamScanner

7:56 pm 0 KB/s 26%

साधक ध्यान दें-
अपने साधन से कभी भी तृप्त न होओ, यहाँ तक की अपने आँसुओं को भी अपने प्रेम का प्रमाण मत मानो। वे अभ्यास से भी निकल आते हैं और स्वाभाविक आर्तता से भी। संसार वाले तुम्हें भाग्यवान और भगवान के कृपा पात्र बतलाने लगें तो चौकन्ने हो जाओ। नाम मत कमाओ। प्रशंसा के लिए मत तरसो। खुशामद से प्रसन्न मत होओ। अपने साधन का प्रदर्शन मत करो। अनावश्यक संबंध मत बनाओ। परोपकार की दुकान मत खोलो। और राग द्वेष तो करो ही मत। क्योंकि राग और द्वेष तो विवेक की आँख को ढक कर साधक को अंधा कर देते हैं। द्वेष से गुण भी दोष और राग से दोष भी गुण दिखने लगते हैं।
धन मल लगने लगे। घर सराय लगने लगे। परिजन बटोही लगने लगें। लोभ और क्रोध से ऐसे दूर हटने लगो जैसे वे साँप या बिच्छू हों। परचर्चा-परनिंदा से कष्ट होने लगे। संतोष, शांति, भगवद्स्मरण, भगवद्गुणगान स्वाभाविक ही होने लगें। अपने अपमान और निंदा से कष्ट न हो। सिद्धि में सुख न हो, असिद्धि में दुख न हो। यश-ऐश्वर्य से काम न हो। न चाह हो, न परवाह। न अपेक्षा हो, न उपेक्षा।
आपका जीवन जितना ही सीधा-सादा, अपरिग्रही, संतोषयुक्त होगा, उतना ही अभावहीन, स्वावलम्बी और सुखी होगा। जितना ही अधिक आडम्बर, विलास और शौक होंगे, उतना ही अभाव, दासता और दुख होंगे।
और वासनाएँ तो अंगुली पकड़ाते ही पहुँचा पकड़ लेती हैं। वासनावान मनुष्य धनवानों का मुखापेक्षी, पदानुगामी और दोष समर्थक हो जाता है। वासना तो भगवान की कृपा रूपी धूप के लिए बंद किवाड़ है। वासना न रहे तो कृपा वृष्टि अभी हो जाए। फिर भी गुलामी के अभ्यास से, यदि गुलाम रहना ही है, तो अपना मालिक बदल लो। वासनाओं की गुलामी छोड़ कर, भगवान की इच्छा को मालिक बना लो।
बीता हुआ कल मर गया, आने वाला कल अभी पैदा नहीं हुआ। यह अभी का समय भगवान का उपहार है। आयु बीत रही है। इसी बचे खुचे थोड़े से समय में ही भजन करना है। इसीलिए लोकेशानन्द कहता है कि बिना अनुकूलता की प्रतीक्षा किए, जहाँ हो, जैसे हो, वहाँ, वैसे ही, जितना साधन कर सकते हो करते रहो। भगवान की कृपा से परिस्थितियाँ अपने आप बनती जाएँगी, मार्ग मिलता जाएगा।

CamScanner

पटाचारा के मन में हुआ कि : 'आखिर यह क्या ? जिस पति के लिये माँ-बाप छोडे उस पतिको साँप ने डँस मारा, वह चल बसा । बेटों को सम्भाला, पाला-पोसा, बडे होंगे तो सुख देंगे यह अरमान किये । एक बेटे को हिंसक पशु उठाकर ले गया । दूसरा बेटा गायब हो गया । इतना सब दु:ख सहते सहते माँ-बाप के लिए आयी, वहाँ के झोंके ने मकान गिरा दिया और वे माँ-बाप दब मरे । क्या यही है जीवन ? क्या यही है हमारे मानव जन्म की उपलब्धि ? पटाचारा की अशांति और मीमांसा दोनों शुरू हुई । वह बुद्ध के पास पहुँची । पटाचारा से बुद्ध ने कहा : "पटाचारा ! जो कुछ होता है, जीव की उन्नति के लिए, विकास के लिए होता है । तेरे दो पुत्र इस जन्म में तेरे पुत्र थे परंतु न जाने कितनी बार और कितनों के पुत्र हुये और अभी न जाने वे किसकी कोख में होंगे तुझे क्या पता ? तेरा पति इस जन्म में तेरा पति था परंतु करोडों बार न जाने कितनों का पति बना होगा ? पटाचारा ! तू इस जन्म में इस माँ-बाप की बेटी थी, परंतु अगले जन्म के तेरे कौन माँ-बाप हुये होंगे ? कितने माँ-बाप बदल गये होंगे यह तुझे पता नहीं । शायद वह पता दिलाने के लिए परमात्मा ने यह व्यवस्था की हो ।

★ जगत की नश्वरता समझाते हुये बुद्ध ने पटाचारा को उपदेश दिया । पटाचारा ऐसी भिक्षुणी बनी कि उसने एक बार महिलाओं के बीच प्रवचन किया और उसी एक प्रवचन से प्रभावित होकर पाँच सौ महिलायेँ साध्वी हो गयीं । कहाँ तो जीवन की इतनी भीषण दु:खद अवस्था और कहाँ बुद्ध का मिलना और वह ऐसी भिक्षुणी हो गयी कि पाँच सौ महिलायेँ एक साथ भिक्षुणी बन पडी । अभी सत्संग में उसकी चर्चा होती है ।

★ *हम समीक्षा करेंगे तो पता चलेगा कि हर दु:ख के पीछे कोई नया सुख छिपा है और सुख के पीछे दु:ख छिपा है । हम इतने अनजान हैं कि दु:ख के भय से दु:खी होते रहते हैं और सुख में लेपायमान होते रहते हैं । सुख और दु:ख की अगर ठीक से समीक्षा करेंगे तो ये सुख और दु:ख दोनों हमें जगाने का काम करेंगे ।

ओशो

CamScanner

7:50 pm 0 KB/s 26%

Like Comment Share

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

Yash Bansal · 1d ·

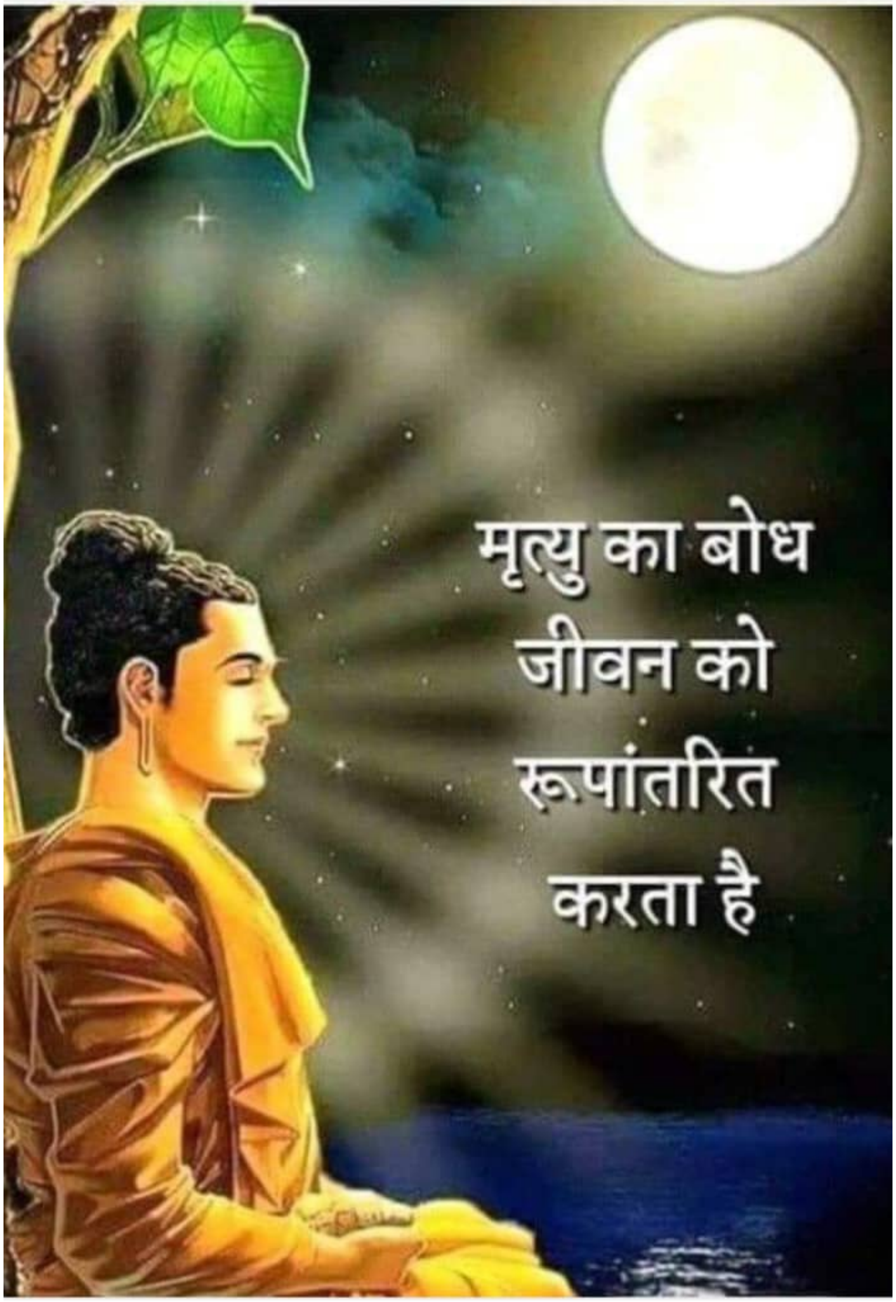


20 1 comment • 1 share

Like Comment Send Share

CamScanner

7:50 pm 0 KB/s 26%

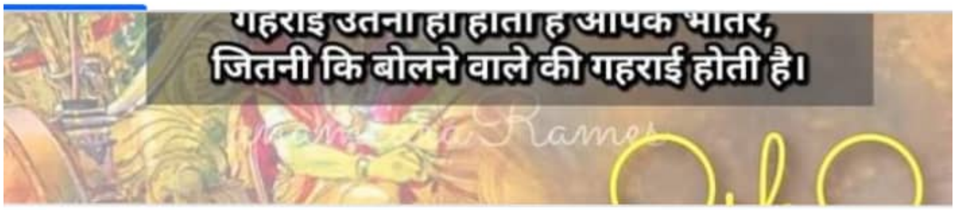


12

Like Comment Send Share

**ओ शो वाणी**

Ravinder Singh · 9h ·

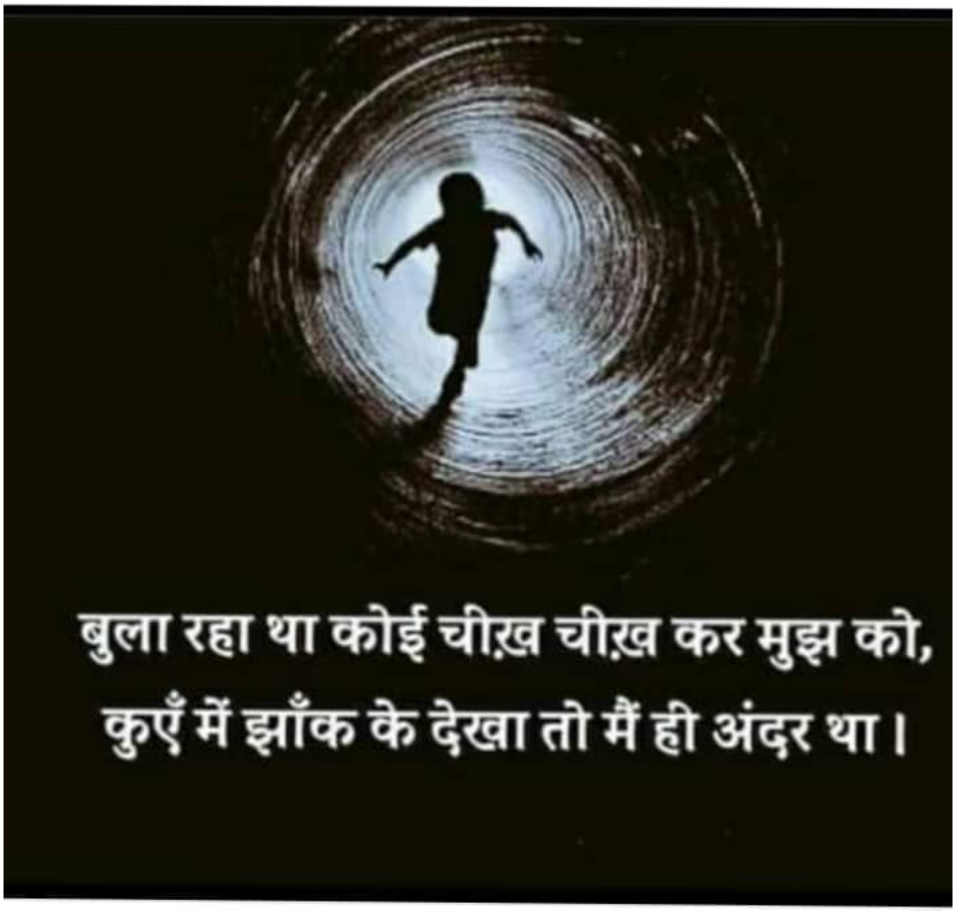


17 1 comment

Like Comment Send Share

**BBC News हिन्दी**

Sponsored ·

CamScanner

7:50 pm 0 KB/s 26%

ओशो - जीवन-मृत्यु

Meera Sharma · 8h ·

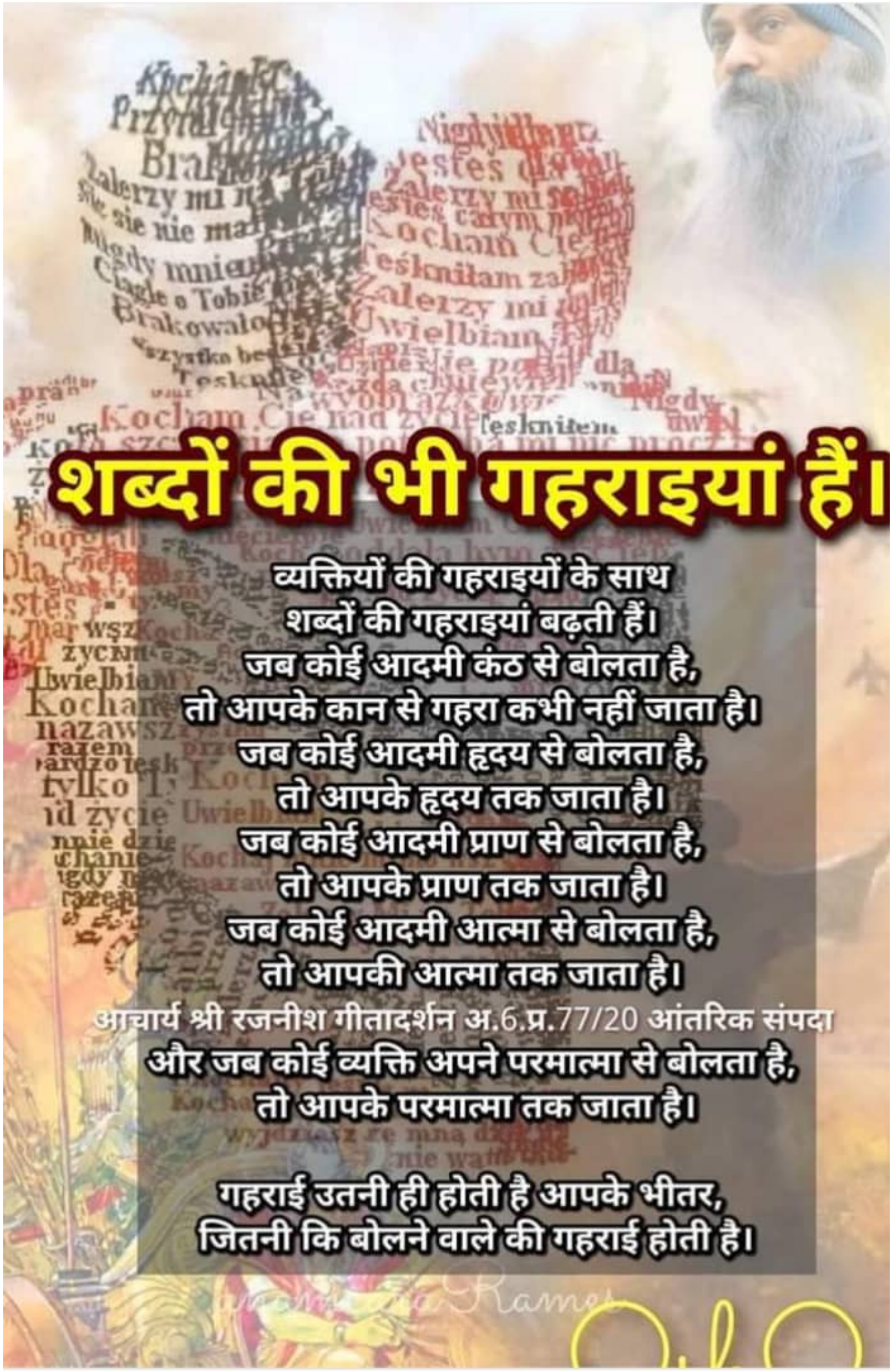


12

Like Comment Send Share

ओशो वाणी

CamScanner

7:49 pm 0 KB/s 26%

6 1 share

Like Comment Share

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

Gagandeep Singh · 1d ·

बोलने में मर्यादा मत छोड़ना,

गालियाँ देना कायरों का काम है।

68 3 comments • 3 shares

Like Comment Send Share

Comment... 💕🙏💕 Good morning❤️

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

अभिनव अभिषद · 12h ·

CamScanner

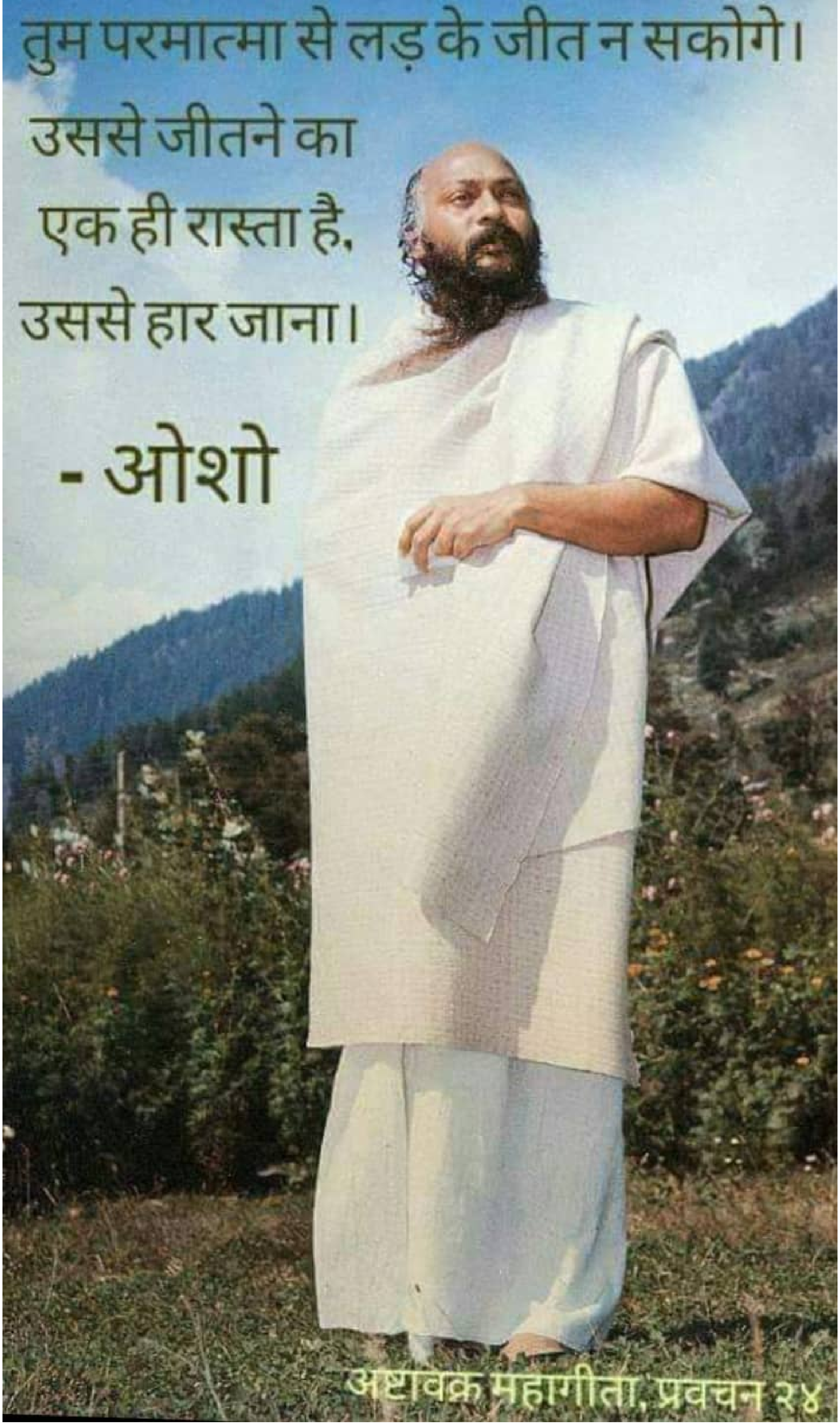
तुम परमात्मा से लड़ के जीत न सकोगे।
उससे जीतने का
एक ही रास्ता है,
उससे हार जाना।
- ओशो
अष्टावक्र महागीता, प्रवचन २४

CamScanner

7:49 pm 0 KB/s 26%

FORM ON FACEBOOK

Become a City Partner

Learn more

499 16 comments

Like Comment

**ओ शो वाणी**

Rajendra Patidar · 12h

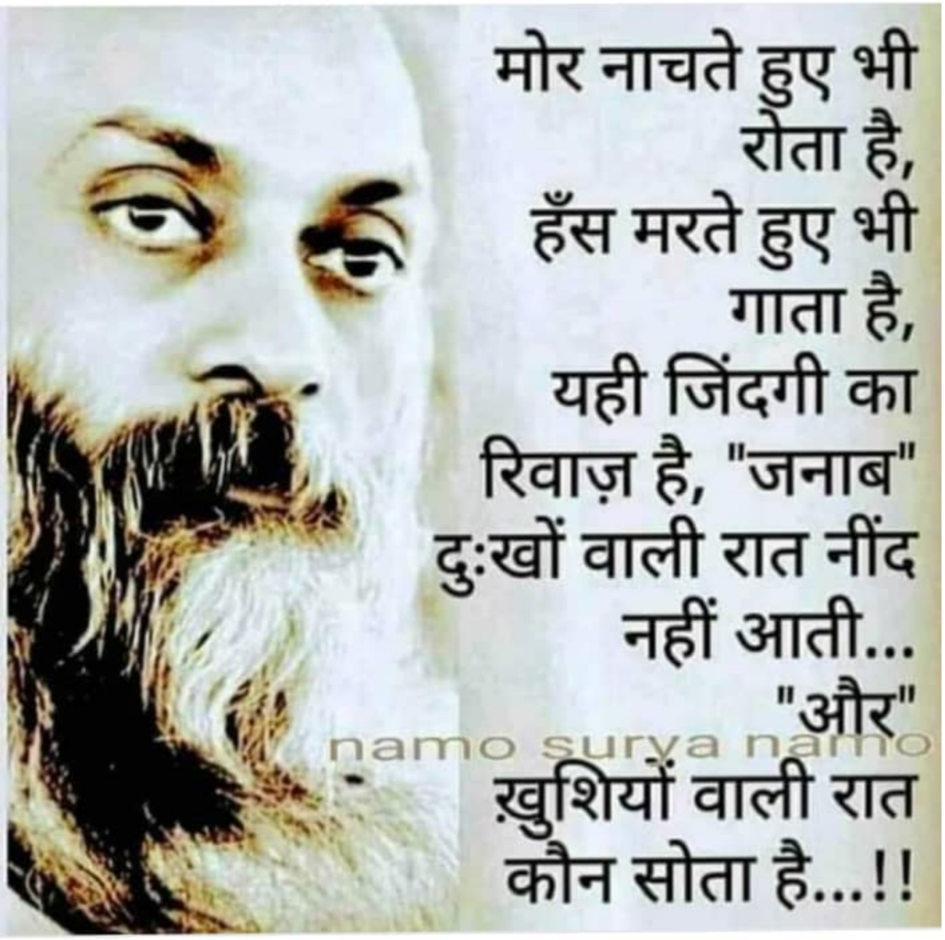


263 6 comments • 32 shares

Like Comment Send Share

**🧘 jivan Darshan🧘(OSHO)**

Madhumita Pandey · 8h

CamScanner

7:48 pm 0 KB/s 26%

Like Comment Send Share

**Ten thousand Buddha's Osho**
7h ·

25 1 comment

Like Comment Send Share

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**
अमेय विक्रमा · 7h ·

CamScanner

जो व्यक्ति परमात्मा पर सारे फल छोड़ देता है उसके जीवन में चिंता नहीं हो सकती। यह सूफी फकीर कभी पागल नहीं हो सकता। असंभव, इसे कैसे पागल करोगे? यह चिंतित नहीं हो सकता, इसे कैसे चिंतित करोगे? इसके भीतर सदा ही गहन शांति बनी रहेगी, अखंड ज्योति जलती रहेगी। लेकिन उपक्रम जारी है। दूसरे दिन सुबह फिर दूसरे द्वार पर गांव के दस्तक दी....उपक्रम जारी है: फिर शरण मांगी जाएगी, फिर भोजन मांगा जाएगा, फिर पानी मांगा जाएगा। उपक्रम जारी है। क्रम जारी रहे, श्रम जारी रहे और फलाकांक्षा परमात्मा के हाथ में हो; तो तुम्हारे जीवन में अद्भुत समन्वय पैदा हो जाता है।

CamScanner

(ओशो ) के प्रेमी

Vijay Mahindra · 21h ·

osho prem naman...💓🙏🙏🙏💓

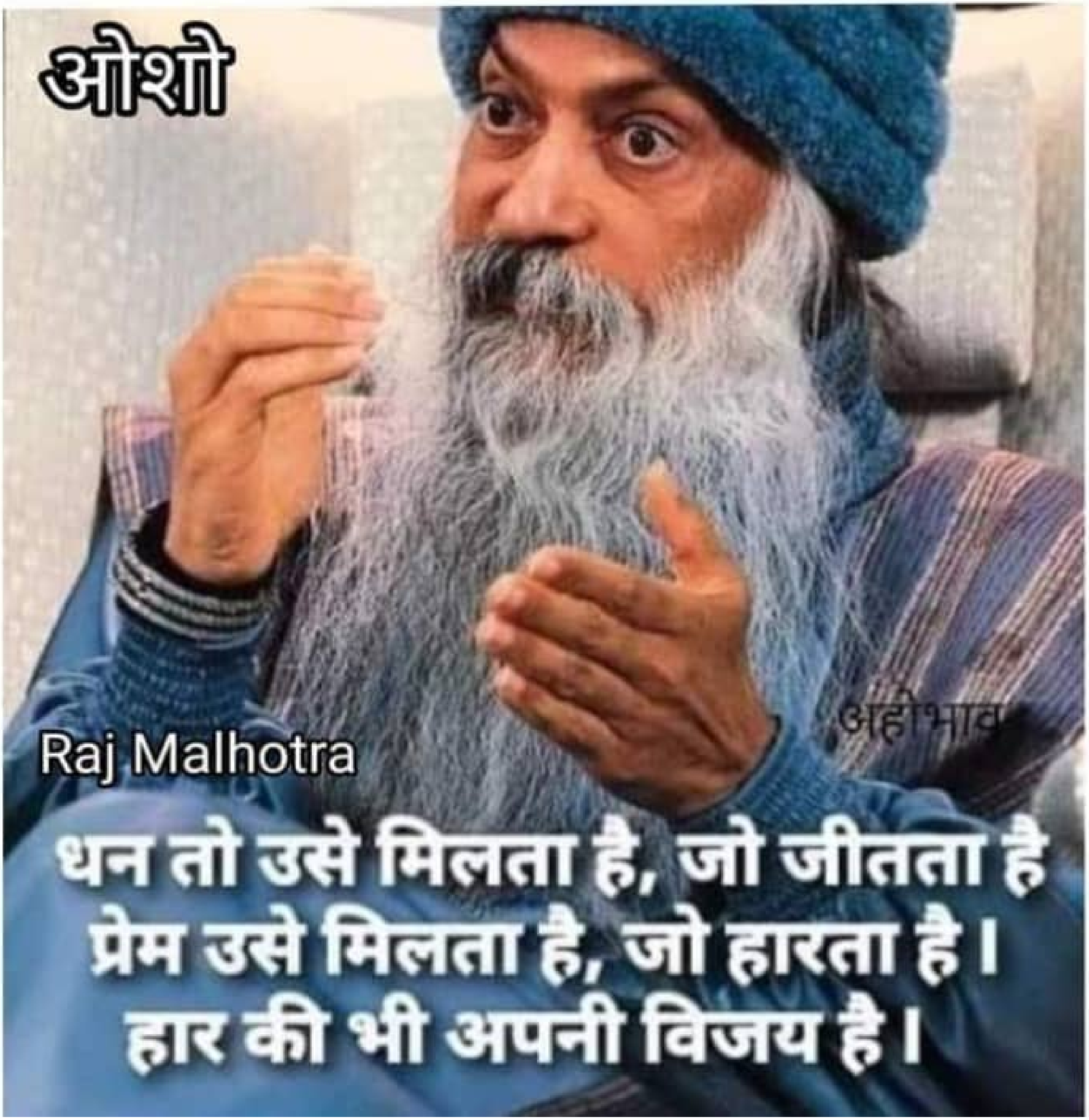


CamScanner

7:46 pm 0 KB/s 26%

FREE Access to Dr. Sha TV

Learn more

1

Like Comment Share

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 10h ·

हरि ॐ 🙏

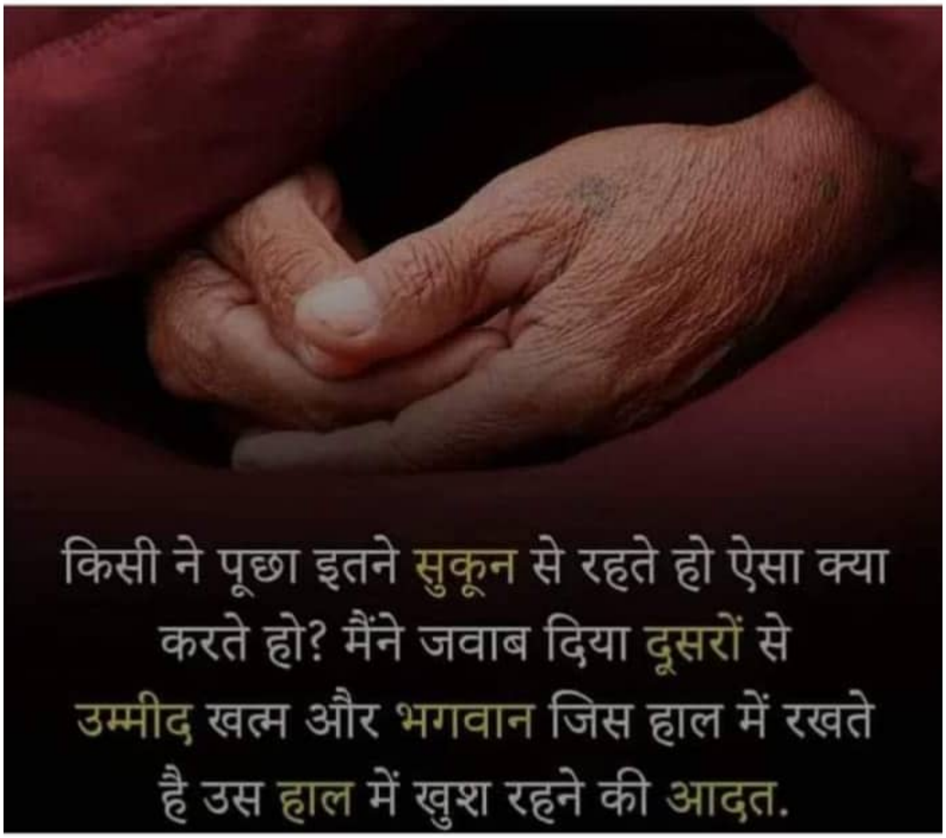


22 2 shares

Like Comment Send Share

**ओशो-रूमी**

11h ·

#osho #ओशोरूमी #ओशो #प्रेम

CamScanner

7:44 pm 0 KB/s 26%

Like Comment Send Share

**ओ शो वाणी**

Subhash Chandra · 6h ·

कृष्ण कहते हैं, मुझे सब दिखाई पड़ता है। लेकिन जो अज्ञानी हैं, वे मुझे नहीं देख पा रहे हैं, मैं उन सबको देख रहा हूं।

अब कृष्ण को भलीभांति दिखाई पड़ रहा है कि कौरव हार जाएंगे। यह बैलगाड़ी कृष्ण के लिए सामने आ गई है। अर्जुन को दिखाई नहीं पड़ रहा है कि कौरव हार जाएंगे कि पांडव जीत जाएंगे। यह दुर्योधन को भी नहीं दिखाई पड़ रहा है कि कौरव हार जाएंगे और पांडव जीत जाएंगे। अब यह अर्जुन भी डरा है कि पता नहीं हम हार न जाएं! अभी कौरव भी इस खयाल में हैं कि हम जीत लेंगे, क्योंकि शक्ति हमारे पास ज्यादा है। एक आदमी वहां मौजूद था, उस महाभारत के युद्ध में, जिसे पता था कि क्या होने वाला है और क्या होगा।

कृष्ण का अर्जुन से यह कहना कि तू भाग मत, बहुत दूर की जानकारियों से जुड़ा हुआ है। कृष्ण का यह कहना कि तू सोच रहा है, जिन्हें तू मारेगा, मैं तुझसे कहता हूं, समय ने उन्हें पहले ही मार डाला है। मैं उनकी लाशें देख रहा हूं। तुझे नहीं दिखाई पड़ता, मैं देख रहा हूं कि वे युद्ध के मैदान पर लाश होकर पड़े हैं। दो दिन बाद तुझे भी दिखाई पड़ेगा; बैलगाड़ी तेरे सामने आ गई होगी। तू समझता है, तू मारेगा। मैं कहता हूं कि विधि ने उन्हें समाप्त कर दिया है; तू केवल निमित्त होगा।

🏹🏹
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.87/30
कामना और प्रार्थना
OshO

39 1 comment • 3 shares

Like Comment Send Share

Naye bharat ke khoj

CamScanner

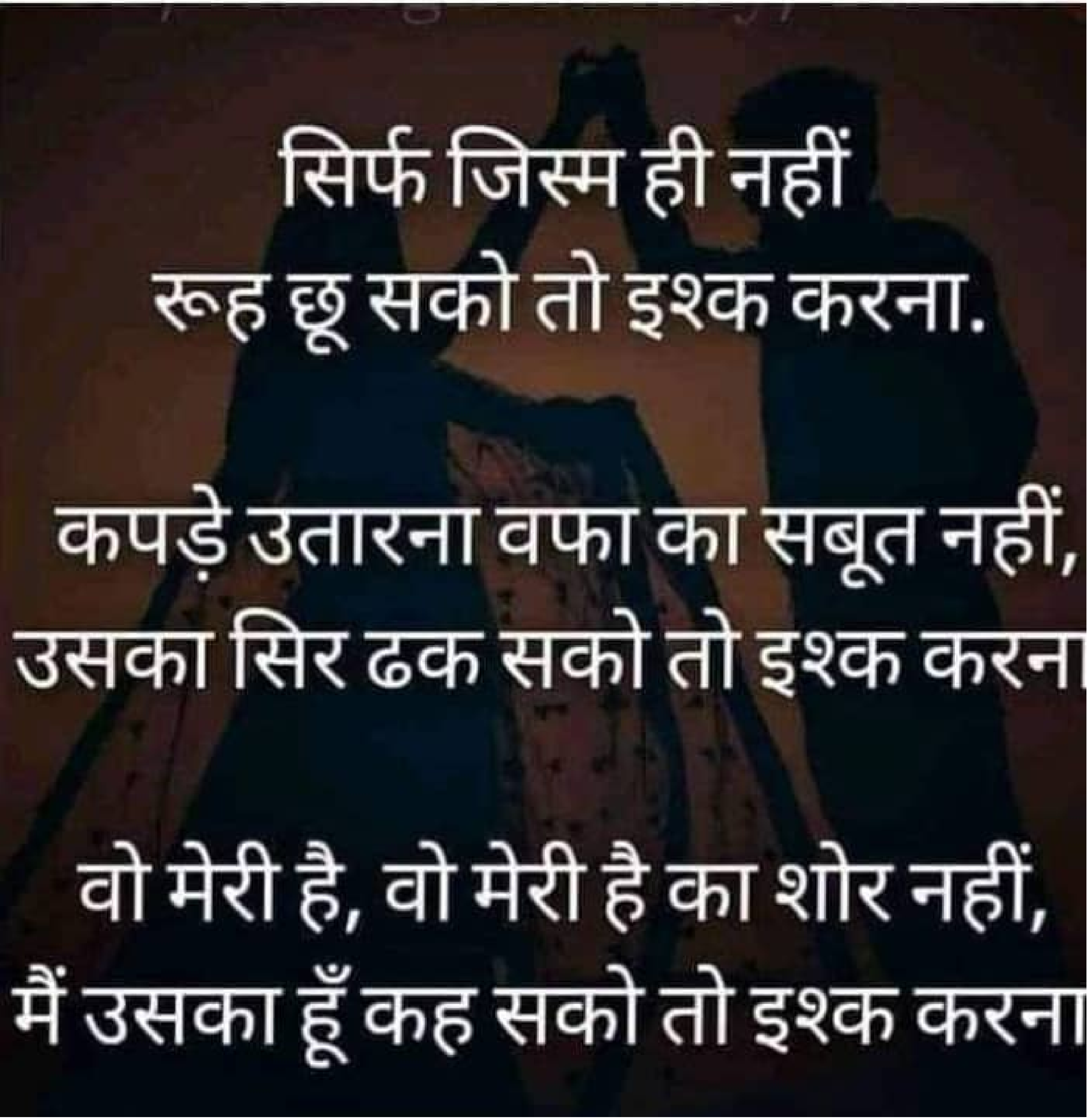
सिर्फ जिस्म ही नहीं
रूह छू सको तो इश्क करना.
कपड़े उतारना वफा का सबूत नहीं,
उसका सिर ढक सको तो इश्क करना।
वो मेरी है, वो मेरी है का शोर नहीं,
मैं उसका हूँ कह सको तो इश्क करना।

CamScanner

7:42 pm 0 KB/s 26%

**ओ शो वाणी**

Subhash Chandra · 6h ·

बीज से कुछ सीखो, क्योंकि तुम भी बीज हो। और तुम इस पृथ्वी पर सर्वाधिक बहुमूल्य बीज हो, क्योंकि तुमसे ही परमात्मा का फूल खिल सकता है। वह स्वर्ण-कमल तुम्हारी झील में ही खिलेगा। तुम पर एक बड़ा दायित्व है। तुम अगर बिना परमात्मा को जाने मर गये तो तुमने अपना दायित्व पूरा न किया। तुम बीज की तरह ही मर गये; टूटे नहीं, अंकुरित न हुए; फूले नहीं, फले नहीं। और परितोष, संतोष उसी को मिलता है--जो फूला, जो फला।
देखा है, फूल और फलों से जब वृक्ष लद जाता है, तो उसके आसपास कैसी परितोष की छाया होती है, कैसे आनंद का भाव होता है, परितृप्ति!

आदमी बांझ ही मर जायेगा? अधिक आदमी बांझ ही मर जाते हैं। जो होने को हुए थे बिना हुए मर जाते हैं। बीज से कुछ सीखो। बीज वृक्ष हो सकता है, लेकिन अगर ठीक भूमि न खोजे तो नहीं हो पायेगा। कंकड़-पत्थर जैसा ही रह जायेगा, मुर्दा। और भूमि खोजनी पड़ती है और भूमि में अपने को गला देना पड़ता है, मिटा देना पड़ता है। बीज जब मरता है तब वृक्ष होता है।

खोजो कोई स्थल--जहां तुम मर सको, मिट सको। खोजो कोई भूमि--जहां तुम अपने को समर्पित कर सको। जहां तुम झुक जाओ और अहंकार गल जाये, वहीं तुम्हारे भीतर से अंकुरण होगा--और वह अंकुरण सच्चा जीवन है! उस अंकुरण से तुम द्विज बनोगे, तुम्हारा दुबारा जन्म होगा। उसके पहले तुम द्विज नहीं हो, कोई भी द्विज नहीं पैदा होता। पहला जन्म मां-बाप से होता है, दूसरा जन्म स्वयं को स्वयं से ही देना होता है।

ओशो

Do you want to see more or less posts like this in Feed?

CamScanner

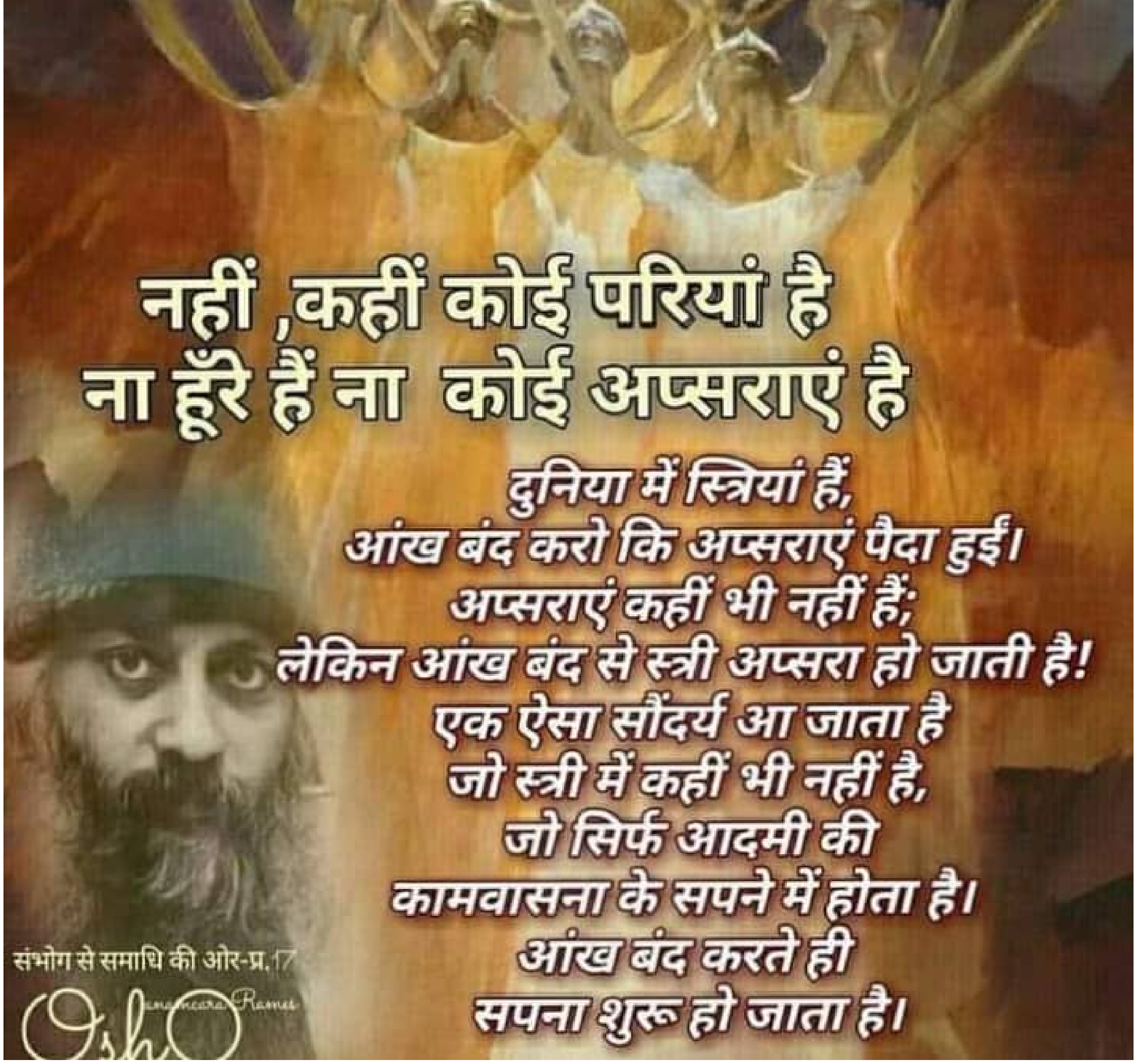
नहीं ,कहीं कोई परियां है
ना हूँरे हैं ना कोई अप्सराएं है
दुनिया में स्त्रियां हैं,
आंख बंद करो कि अप्सराएं पैदा हुईं।
अप्सराएं कहीं भी नहीं हैं;
लेकिन आंख बंद से स्त्री अप्सरा हो जाती है!
एक ऐसा सौंदर्य आ जाता है
जो स्त्री में कहीं भी नहीं है,
जो सिर्फ आदमी की
कामवासना के सपने में होता है।
आंख बंद करते ही
सपना शुरू हो जाता है।
संभोग से समाधि की ओर-प्र.17
Osho

CamScanner

CamScanner

8:21 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%



करना! कि आठ बजकर पच्चीस मिनट पर कुहू-कुहू करना! और जब एक दफे कर ली कुहू-कुहू तो फिर पीछे लौटकर भी नहीं देखती कि कुहू-कुहू की। जो हो गया, हो गया। ऐसे निसर्ग में जीने का नाम ही संन्यास है।

संन्यास कोई चीज थोड़े ही है जो तुम ले लोगे, संन्यास कोई ढंग थोड़े हो है, संन्यास कोई व्यवस्था थोड़े ही है, संन्यास बोध है, जीवन को पल-पल जीने की जो चेतना है, जो जागरूकता है, वही संन्यास है।

ओशो; एस धम्मो सनंतनो--( भाग 9 )

92 1 comment • 16 shares

CamScanner

Seema Mangal
Moderator · 11h ·

#फाचांग नाम का एक अदभुत सदगुरु हुआ। उसका इतना ही उपदेश था--अभी, यहीं। बस दो शब्दों का ही उपदेश था। सम्राट ने उसे बुलाया था जापान के प्रवचन करने, तो वह मंच पर खड़ा हुआ--सम्राट बैठा, उसके दरबारी बैठे, बड़ा आयोजन किया था, फाचांग बड़ा प्रसिद्ध गुरु था--वह खड़ा हुआ, उसने जोर से टेबल पीटी और कहा, अभी, यहीं। नीचे उतरा और वापस चला गया। सम्राट तो बहुत चौंका। उसने अपने वजीरों से पूछा, यह क्या मामला है? यह कैसा प्रवचन? यह टेबल पीटना और कहना, अभी और यहीं। यह बात क्या है?

उसके वजीरों ने कहा कि महाराज, इतना ही उनका उपदेश है। और इसमें उन्होंने सब कह दिया जो समस्त कालों में बुद्धों ने कहा है।

शुभ करना हो तो अभी और यहीं।

फिर फाचांग मरता था, उसके मरने के समय की घटना है। बिस्तर पर मरणासन्न पड़ा है। अंतिम घड़ियां हैं, शिष्य इकट्ठे हुए हैं। शिष्यों ने सोचा कि जिंदगीभर यह अभी और यहीं कहता रहा, अब तो मौत आ गयी, पूछ लें, शायद कुछ और कह दे। तो किसी ने पूछा, वर्तमान में जागरूक होने के सिद्धांत को आप हमें एक बार क्षण है द्वार प्रभु का और समझा दें। फाचांग ने आंख खोली, उसी समय झोपड़ी के छप्पर पर एक गिलहरी दौड़ी और उसने चीं-चीं, किट-किट की, फाचांग बोला, यही-यही, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। इट इज जस्ट दिस, एंड नथिंग एल्स। मुस्कुराया, आंखें बंद कर लीं और मर गया।

गिलहरी की ची-चीं, किट-किट, और उसने कहा--यही। यह कोयल को सुनते हो? कोयल इसी क्षण में कुहू-कुहू कर रही है। एक क्षण पहले इसकी योजना नहीं बनायी थी उसने, और एक क्षण बाद इसकी याद भी नहीं रखेगी। ऐसा नहीं है कि उसके पास कोई ब्लूप्रिंट तैयार है कि कब करना! कि आठ बजकर पच्चीस मिनिट पर कुहू-कुहू करना! और जब एक दफे कर ली कुहू-कुहू तो फिर पीछे लौटकर भी नहीं देखती कि कुहू-कुहू की। जो हो गया, हो गया। ऐसे निसर्ग में जीने का नाम ही संन्यास है।

CS CamScanner

Osho
कुछ बनने का विचार छोड़ दें, क्योंकि आप पहले से ही
एक मास्टरपीस हैं। आपको सुधारा नहीं जा सकता।
आपको केवल इसके पास आना है, इसे जानना है,
इसे महसूस करना है ~ ओशो अहोभाव

CamScanner

9:03 pm 0 KB/s VoLTE 4G 90%

दूसरे की किसी बात को लेकर सोचें मत। "और तुम यही सोचते रहते हो। निन्यानबे प्रतिशत बातें जो तुम सोचते हो उनका लेना-देना दूसरों से रहता है। छोड़ दें, उन्हें इसी वक्त छोड़ दें! "तुम्हारा जीवन बहुत छोटा है, और जीवन हाथों से फिसला जा रहा है। हर घड़ी तुम कम हो रहे हो, हर दिन तुम कम हो रहे हो, और हर दिन तुम कम जीवित होते जाते हो! हर जन्म-दिन तुम्हारा मरण-दिन है; तुम्हारे हाथों से एक वर्ष और फिसल गया। कुछ और प्रज्ञावान बनो।

"जिस बात का लेना-देना दूसरों से है, उसके बारे में मत सोचें। पहले अपनी मुख्य दुर्बलता के विपरीत अभ्यास करें।

"गुरजिएफ अपने अनुयायियों से कहा करता था-- 'पहली बात, सबसे पहली बात, ढूंढें कि तुम्हारी मूल दुर्बलता क्या है, तुम्हारा मुख्य अकर्म, तुम्हारे अवचेतन की केंद्रीय संकीर्णता क्या है। 'हर व्यक्ति अलग है। कोई व्यक्ति काम से ग्रसित है। भारत जैसे देश में, जहां काम को सदियों दबाया जाता रहा है, यह लगभग वहां एक मनोग्रस्ति बन गया है; हर व्यक्ति काम से ग्रसित है। कोई क्रोध से ग्रसित है, और कोई लोभ से ग्रसित है। तुम्हें देखना होगा कि तुम्हारी मूल मनोग्रस्ति क्या है। "अत: सबसे पहले अपनी मूल मनोग्रस्ति को जानें जिसके ऊपर तुम्हारे पूरे अहंकार का भवन खड़ा है। और फिर निरंतर सचेत रहें क्योंकि यह केवल तभी रह सकती है अगर तुम अचेत हो। बोध की अग्नि में जल कर यह स्वयं ही भस्म हो जाती है। "और स्मरण रहे, सदा स्मरण रहे कि तुम्हें इसके विपरीत को पोषित नहीं करना है। नहीं तो होता यह है कि व्यक्ति को यह बोध होने लगता है कि 'मैं क्रोध में ग्रसित हो जाता हूं तो मुझे करुणा को पोषित करना चाहिए।' 'मैं काम मे आविष्ट हो जाता हूं, मुझे क्या करना चाहिए? मुझे ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए।' "लोग एक अति से दूसरी अति पर जाने लगते

CamScanner

9:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 91%

**OSHO TOMORROW**

Vaibhav Tandale · 1d ·

ओशो नमन दोस्तो

जो लोग ध्यान में गहरे नही उतर पाते
उन लोगो के लिए सुरुवात मे
नामस्मरण(नाम जपना) भी काफी कारगर है इससे मन एक लय में आ जाता है
नामस्मरण से क्या होगा ये हक़ भी उन लोगो को है जिन्होंने जिन लोगो ने ये किया हो,,

मन हर बार चाल चुकता है इस मन को छलांग मारने की बड़ी आदत है ,
जिन लोगों ने कभी जीवन में नामस्मरण किया भी नही वो लोग भी उससे क्या होगा ये कहते है,,

और छलांग मार के ध्यान करना चाहते है,,
लेकिन छलांग हर किसी की बस की बात नही,,

जिन लोगो को ध्यान को मुद्रा लगाके बैठना तो आ गया लेकिन ध्यान करते समय विचार आते हो,,

उन लोगो ने नामसमरण नामस्मरण (नाम जपना) करना चाहिए
इससे मन एक तरह की धुंध में बंध जाता है,,
एक बार बिना किए जाप होने लगे
तो फिर आ
अ जपा जप की अवस्था पा लेते है
इससे, फिर ध्यान में बैठने के बाद विचार आना बंद हो जाते है और व्यक्ति की ध्यान की गहराई बढ़ती है,,

और अगर आप सीधे ध्यान की गहराई में उतर पाए तो आप का स्वभाव इसके लिए महत्वपूर्ण है,,

*आपका मित्र वैभव*
*ओशो ननम*

CS CamScanner

9:01 pm 0 KB/s VoLTE 4G 91%

आऊंगी, तुम्हारे बुलाने भर से न आऊंगी। इतनी स्वतंत्रता हमारे बीच रहे, तो स्वतंत्रता के इस आकाश में ही प्रेम का फूल खिल सकता है।

एक तो साधारण प्रेम है जिसको तुम जानते हो। इस प्रेम ने तुम्हारे जीवन को नरक बना दिया है। इस प्रेम की बात नहीं कर रहा प्रेम-पंथ ऐसो कठिन! यह तो कठिन है ही नहीं। यह तो बड़ा सरल है। दुनिया में सभी इसको सम्हाल लेते हैं। इसमें कठिनाई क्या होगी? हर घर में चल रहा है, हर परिवार में चल रहा है, हर व्यक्ति में चल रहा है। यह तो बड़ा सरल है।

इससे ऊंचा एक प्रेम होता है। उसको प्रेम में गिरना नहीं कह सकते। उसको हम कहेंगे: प्रेम में होना, बीइंग इन लव। वह बड़ी और बात है। उसका स्वभाव मैत्री का है। खलील जिब्रान ने ठीक कहा है कि सच्चे प्रेमी मंदिर के दो स्तंभों की भांति होते हैं। बहुत पास भी नहीं, क्योंकि बहुत पास हों तो मंदिर गिर जाए। बहुत दूर भी नहीं, क्योंकि बहुत दूर हों तो भी मंदिर गिर जाए।...देखते हो ये स्तंभ, जिन्होंने च्वांग्त्सु-मंडप को सम्हाला हुआ है? ये बहुत पास भी नहीं हैं, बहुत दूर भी नहीं हैं। थोड़ी दूरी, थोड़े पास। तो ही छप्पर सम्हला रह सकता है। एकदम पास आ जाएं तो छप्पर गिर जाए; बहुत दूर हो जाएं तो छप्पर गिर जाए। एक संतुलन चाहिए।

असली प्रेमी न तो एक-दूसरे के बहुत पास होते हैं, न बहुत दूर होते हैं। थोड़ा सा फासला रखते हैं, ताकि एक-दूसरे की स्वतंत्रता जीवित रहे। ताकि एक-दूसरे की स्वतंत्रता में व्याघात न हो, अतिक्रमण न हो। ताकि एक-दूसरे की सीमा में अकारण हस्तक्षेप न हो।

प्रेम में होने का अर्थ होता है: हम पास भी होंगे इतने कि हमें एक-दूसरे से कोई भय का कारण नहीं, और हम इतने दूर भी होंगे कि हम एक-दूसरे को रौंद भी न डालेंगे, हमारे बीच आकाश होगा। और तुम्हारा निमंत्रण होगा तो मैं आऊंगा, और मेरा निमंत्रण होगा तो तुम मेरे भीतर आओगे। मगर निमंत्रण पर। यह हक न होगा, अधिकार न होगा।

ओशो

CamScanner

9:01 pm 0 KB/s 4G 91%

रवींद्रनाथ के एक उपन्यास में एक युवती अपने प्रेमी से कहती है कि मैं विवाह करने को तो राजी हूं, लेकिन तुम झील के उस तरफ रहोगे और मैं झील के इस तरफ।

प्रेमी की बात समझ के बाहर है। वह कहता है: तू पागल हो गई है? प्रेम करने के बाद लोग एक ही घर में रहते हैं।
उसने कहा कि प्रेम करने के पहले भला एक घर में रहें, प्रेम करने के बाद एक घर में रहना ठीक नहीं, खतरे से खाली नहीं। एक-दूसरे के आकाश में बाधाएं पड़नी शुरू हो जाती हैं। मैं झील के उस पार, तुम झील के इस पार। यह शर्त है तो विवाह होगा। हां, कभी तुम निमंत्रण भेज देना तो मैं आऊंगी। या मैं निमंत्रण भेजूंगी तो तुम आना। या कभी झील पर नौका-विहार करते अचानक मिलना हो जाएगा। या झील के पास खड़े वृक्षों के पास सुबह के भ्रमण के लिए निकले हुए अचानक हम मिल जाएंगे, चौंक कर, तो प्रीतिकर होगा। लेकिन गुलामी नहीं होगी। तुम्हारे बिना बुलाए मैं न आऊंगी, मेरे बिना बुलाए तुम न आना। तुम आना चाहो तो ही आना, मेरे बुलाने से मत आना। मैं आना चाहूं तो ही आऊंगी, तुम्हारे बुलाने भर से न आऊंगी। इतनी स्वतंत्रता हमारे बीच रहे, तो स्वतंत्रता के इस आकाश में ही प्रेम का फूल खिल सकता है।

एक तो साधारण प्रेम है जिसको तुम जानते हो। इस प्रेम ने तुम्हारे जीवन को नरक बना दिया है। इस प्रेम की बात नहीं कर रहा प्रेम-पंथ ऐसो कठिन! यह तो कठिन है ही नहीं। यह तो बड़ा सरल है। दुनिया में सभी इसको सम्हाल लेते हैं। इसमें कठिनाई क्या होगी? हर घर में चल रहा है, हर परिवार में चल रहा है, हर व्यक्ति में चल रहा है। यह तो बड़ा सरल है।

इससे ऊंचा एक प्रेम होता है। उसको प्रेम में गिरना नहीं कह सकते। उसको हम कहेंगे: प्रेम में होना, बीइंग इन लव। वह बड़ी और बात है। उसका स्वभाव मैत्री का है। खलील जिब्रान ने ठीक कहा है कि सच्चे प्रेमी मंदिर के दो स्तंभों की भांति होते हैं। बहुत पास भी नहीं, क्योंकि बहुत पास हों तो मंदिर गिर जाए। बहुत दूर भी नहीं, क्योंकि बहुत दूर हों तो भी मंदिर गिर जाए।...देखते हो ये स्तंभ, जिन्होंने च्वांग्त्सु-मंडप को सम्हाला हुआ है? ये बहुत पास भी नहीं हैं, बहुत दूर भी नहीं हैं। थोड़ी

CS CamScanner

।।श्री हरिः ।।

अंत में अकेला ही जाना पड़ेगा, इसलिए पहले से ही अकेला हो जाएं अर्थात वस्तु, व्यक्ति और क्रिया से असंग हो जाएं, इनका आश्रय न लें ।"-

श्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदासजी महाराज

CamScanner

# THE ETERNAL NOW

There exists only the present instant... a Now which always and without end is itself new. There is no yesterday nor any tomorrow, but only Now, as it was a thousand years ago and as it will be a thousand years hence.

1260 - 1327

*Meister Eckhart*

CamScanner

8:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 91%

Search

**Nadia Omizzolo**
29 Aug ·

❤️❤️❤️🙏❤️❤️❤️

**Bernd Kalidas Flory** · Follow
29 Aug ·

"When death finally comes, you will welcome it like an old friend, being aware of how dreamlike and impermanent the phenomenal world really is.
You should leave this life like an eagle soaring up into the blue sky."

~ Dilgo Khyentse Rinpoche ~

See translation

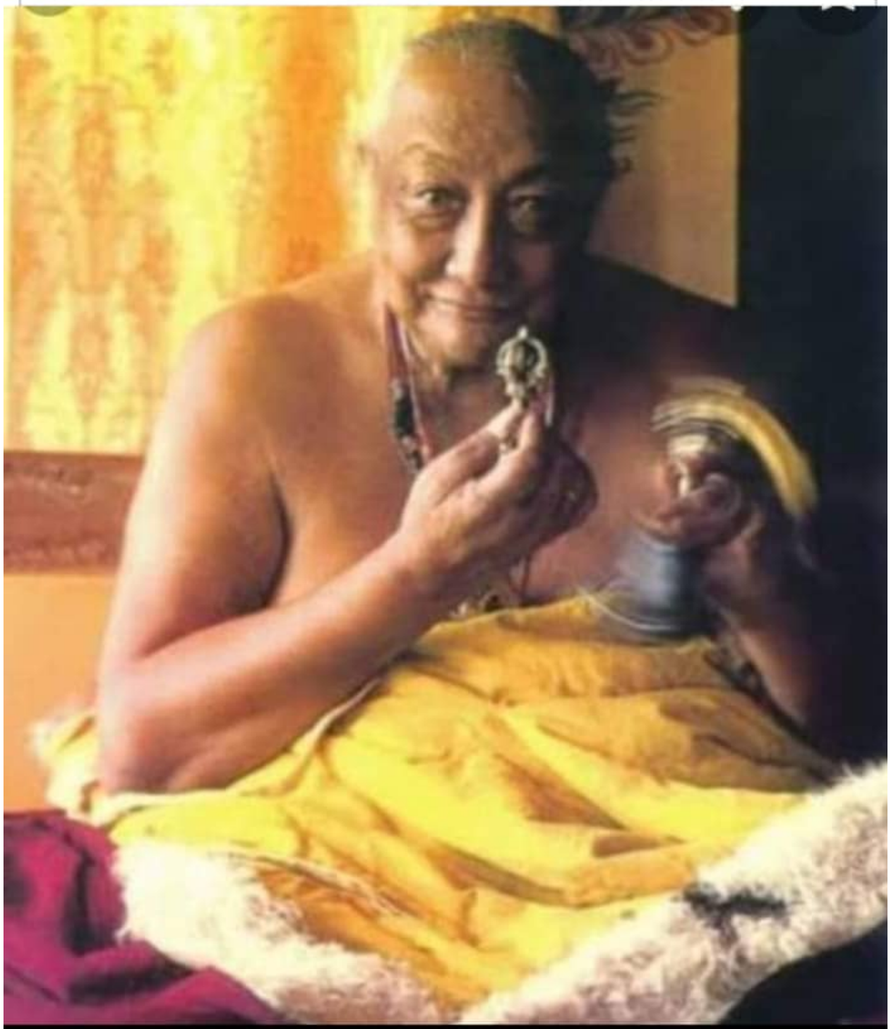

CamScanner

8:54 pm 15 KB/s 92%

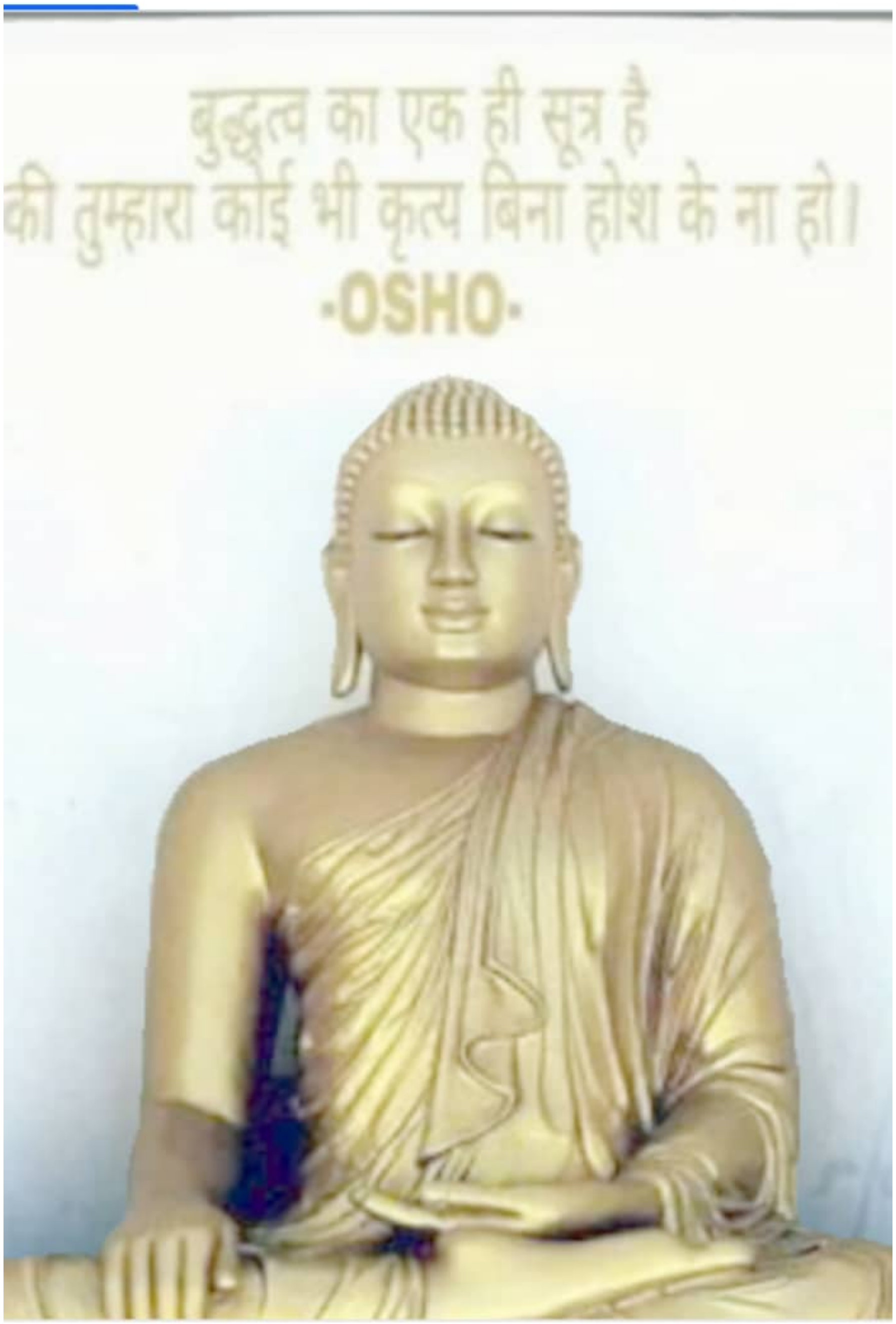


1

Like Comment Send Share

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]
Anil Singh · 9h ·

CamScanner

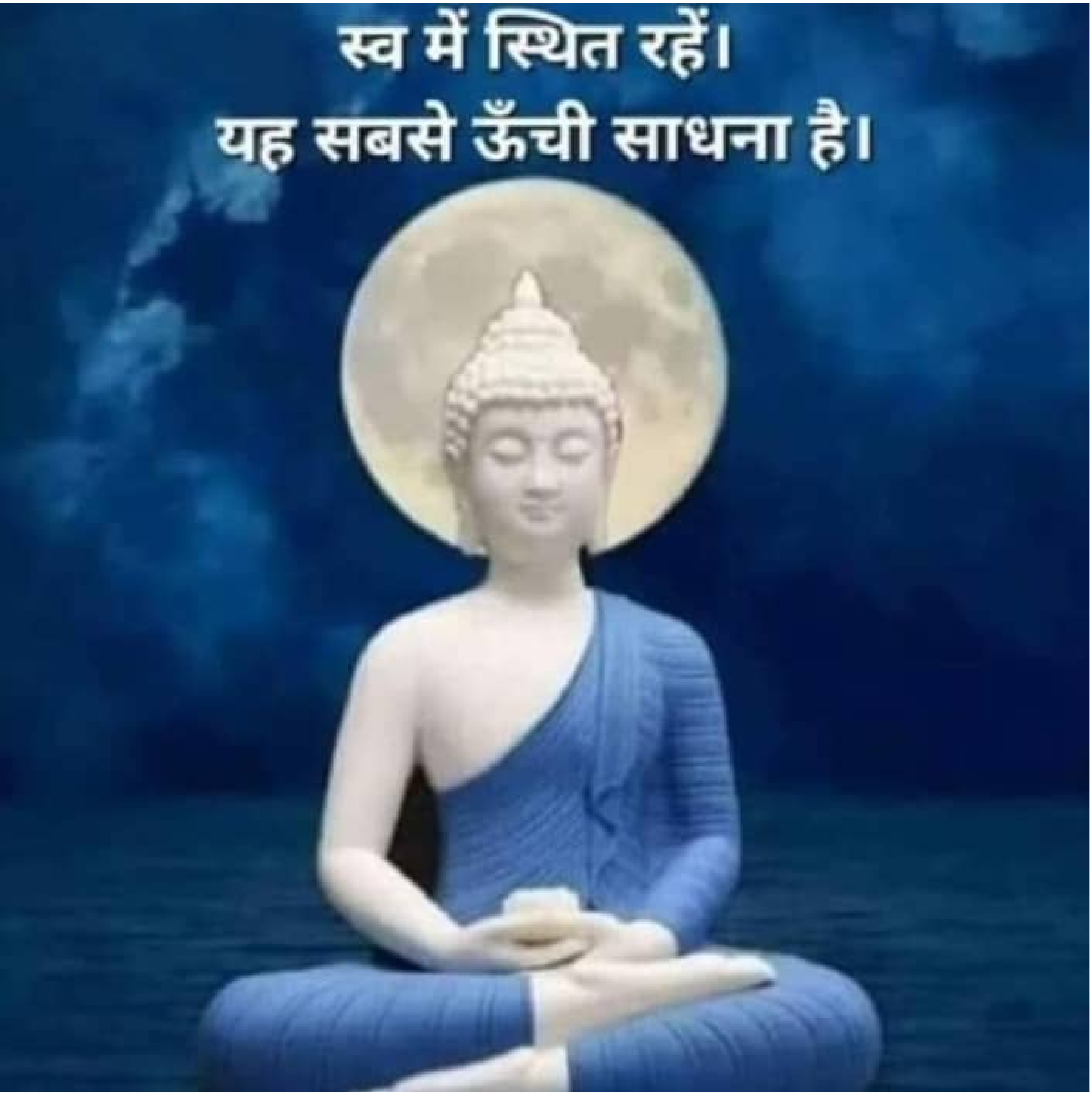


CamScanner

8:51 pm 0 KB/s 92%

Parshotam Rai · 13h ·

*अहंकार ना कीजिये*

*गुरुनानक देव जी जब आठ वर्ष के थे तब पहली बार अपने घर से अकेले निकल पड़े, सब घर वाले और पूरा गाँव चिंतित हो गया तब शाम को किसी ने नानक जी के पिता श्री कालू मेहता को खबर दी कि नानक तो श्मशान घाट में शांत बैठा है। सब दौड़े और वाकई एक चिता के कुछ दूर नानक बैठे हैं और एक अद्भुत शांत मुस्कान के साथ चिता को देख रहे थे, मॉ ने तुरंत रोते हुए गले लगा लिया और पिता ने नाराजगी जताई और पूछा यहां क्यों आऐ।*

*नानक ने कहा पिता जी कल खेत से आते हुए जब मार्ग बदल कर हम यहां से जा रहे थे और मैंने देखा कि एक आदमी चार आदमीयो के कंधे पर लेटा है और वो चारो रो रहे हैं तो मेरे आपसे पूछने पर कि ये कौन सी जगह हैं, तो पिताजी आपने कहा था कि ये वो जगह है बेटा जहां एक न एक दिन सबको आना ही पड़ेगा और बाकी के लोग रोएगें ही। बस तभी से मैनें सोचा कि जब एक दिन आना ही हैं तो आज ही चले और वैसे भी अच्छा नही हैं लगता अपने काम के लिए अपने चार लोगो को रूलाना भी और कष्ट भी दो उनके कंधो को , तो बस यही सोच कर आ गया।*

*तब कालू मेहता रोते हुए बोले नानक पर यहां तो मरने के बाद आते हैं इस पर जो आठ वर्षीय नानक बोले वो कदापि कोई आठ जन्मो के बाद भी बोल दे तो भी समझो जल्दी बोला "नानक ने कहा पिता जी ये ही बात तो मैं सुबह से अब तक मैं जान पाया हूं कि लोग मरने के बाद यहां लाए जा रहे हैं , अगर कोई पूरे चैतन्य से यहां अपने आप आ जाऐ तो वो फिर कभी मरेगा ही नही  क्योंकि मरता तो अंहकार है और जो यहां आकर अपने अंहकार कि चिता जलाता है वो फिर कभी मरता ही नही मात्र मोक्ष प्राप्त कर लेता है।।"*

*कबीर जिस मरने ते जग डरे, मेरे मन आनंद*
वाहे गुरू 🙏

23 2 comments • 2 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

8:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 92%

**Osho Human Being To Be.In.God**
51m ·

तुमने महाभारत की कथा तो सुनी है न, कि पांडव प्यासे हैं, जंगल में भटक गए हैं। और एक झील पर पानी भरने पांच भाइयों में से एक भाई गया है। और जैसे ही झुका है पानी पीने को और पानी भरने को, एक यक्ष वृक्ष पर से आवाज दिया: रुक, या तो मेरे पांच प्रश्नों का उत्तर दे, या अगर पानी छुआ तो मौत घट जाएगी। मेरे पांच प्रश्नों का पहले उत्तर चाहिए। अगर ठीक उत्तर दिया तो ठीक, नहीं तो मृत्यु परिणाम होगा।

पहला भाई इस तरह गिर गया, उत्तर नहीं दे पाया और पानी पीने की कोशिश की; प्यास ऐसी थी। दूसरा भाई और वही, तीसरा भाई और वही...। और अंत में युधिष्ठिर आए--चारों भाई कहां खो गए? देखा, चारों की लाशें पड़ी हैं झील के तट पर। चारों ने जिद्द की, उत्तर नहीं दे पाए फिर भी पानी पीने की जिद्द की। युधिष्ठिर झुके, यक्ष फिर बोला...। उसमें एक प्रश्न आज के काम का है; सारे प्रश्न अर्थपूर्ण थे, मगर एक प्रश्न यह था कि संसार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर ने कहा: सबसे बड़ा आश्चर्य यही है कि हम रोज लोगों को मरते देखते हैं, फिर भी यह भरोसा नहीं आता कि मैं मरूंगा!

यह ठीक उत्तर था। सबसे बड़ा आश्चर्य ताजमहल नहीं है, और सबसे बड़ा आश्चर्य इजिप्त के पिरामिड नहीं हैं, और न बेबीलोन का उलटा लटका हुआ गार्डन और न अलेग्जेन्ड्रिया का लाइट हाऊस। ये चमत्कार नहीं हैं, ये बड़े आश्चर्य नहीं हैं। सबसे गहन आश्चर्य यह है कि रोज मरते देखकर भी, रोज लोगों को मरते देखकर, रोज मृत्यु के प्रमाण देखकर भी यह भरोसा आता ही नहीं कि मैं मरूंगा! भरोसे की बात-यह प्रश्न ही नहीं उठता कि मैं मरूंगा। मन कहे चला जाता है, जैसे सदा कोई और मरता है, दूसरा मरता है।

ओशो; कहै वाजिद पुकार, प्रवचन-07

CamScanner

8:34 pm 1 KB/s 4G 92%

और ध्यान का अर्थ है--परिपूर्ण चैतन्य, जागरूकता, कांशसनेस। बेहोशी नहीं, नींद नहीं--होश। जितना ज्यादा मेरे भीतर जागरूक होता जाए चैतन्य, जितना अलर्ट, जितना अवेअर, जितना बोधपूर्ण--उतना मेरे भीतर क्या है, उसकी जानने की दिशा, जानने की सामर्थ्य, जानने की पात्रता मुझे उपलब्ध होती चली जाती है।

इतना जाग जाना है भीतर--कि भीतर एक कोना भी न रह जाए अनजाना, अपरिचित। भीतर एक अंधेरे का कण भी न रह जाए, इतना जाग जाना है कि सब हो जाए आलोकित, सब भीतर प्रकाश से भर जाए, होश से भर जाए। एक-एक कोना मेरे चित्त का मुझसे परिचित हो जाए। जिस दिन टोटल माइंड, जिस दिन पूरा चित्त जान लिया जाता है--सिर्फ कांशस माइंड नहीं, टोटल, सिर्फ चेतन मन नहीं, अचेतन भी। वह जो छिपा है अनकांशस, वह भी। जिस दिन पूरा मन...पूरा मन जिस दिन जान लिया जाता है, उस दिन जीवन के सारे रहस्यों के द्वार खुल जाते हैं। पूरे मन के प्रति जाग जाना है। और जान लिया जाना पूरे मन का, ध्यान है।

तो ध्यान तो सोने की तरकीब नहीं है, जागने की तरकीब है। और एकाग्रता, और नाम-जप इत्यादि सोने की तरकीबें हैं,जागने की नहीं। इसलिए जिन कौमों ने इस तरह की सोने की विधियों का उपयोग किया, उनके पूरे प्राण धीरे-धीरे सुस्त होकर सो गए। उनके जीवन में जागरण की प्रफुल्लता, जागरण की ऊर्जा और शक्ति दिखाई पड़नी बंद हो गई। वे सो गए। उनके जीवन में क्रांति और परिवर्तन विलीन हो गया। क्योंकि क्रांति और परिवर्तन होता है उसके जीवन में, जो जागा हुआ है। जो सोया हुआ है, वह क्या क्रांति और परिवर्तन करेगा। जो आदमी सोया हुआ है, उसके घर में आग लग जाए तो भी वह उठकर नहीं आएगा। जो आदमी जागा हुआ है, घर में आग लगे तो उसको बदलने की कोशिश करेगा।

आदमी के घर में कितनी आग लगी हुई है, इसका कुछ पता है? आदमी निरंतर आपके भीतर जी रहा है, इसका कुछ पता है? आदमी के जीवन में कितनी दीनता, कितनी दरिद्रता, कितना दुख है, इसका कुछ पता है? लेकिन हम सो रहे हैं--तो पता कैसे हो?

CamScanner

8:33 pm 0 KB/s VoLTE 4G 92%

पहली बात, ध्यान और एकाग्रता एक ही बात नहीं है। दोनों बड़ी भिन्न बातें हैं। एकाग्रता, आत्म-सम्मोहन की विधि है,सेल्फ-हिप्नोसिस की, आटो-हिप्नोसिस की--खुद को मूर्च्छित कर लेने का उपाय है। एकाग्रता, कांसनट्रेशन, खुद को मूर्च्छित कर लेने की विधि है।

ध्यान आत्म-ज्ञान की विधि है।

ध्यान है आत्म-ज्ञान की विधि, और एकाग्रता है आत्म-मूर्च्छा की।

एकाग्रता है--स्वयं को भूल जाने की विधि, ध्यान है--स्वयं को जान लेने की।

एकाग्रता है--फारगेटफुलनेस, विस्मरण, ध्यान है--रिमेंबरिंग, स्मृति।

इसे थोड़ा समझ लेना जरूरी है।

हजारों वर्षों से यह भ्रम है कि एकाग्रता ही ध्यान है। और यह भ्रांति इतनी महंगी पड़ी है जितनी महंगी कोई भ्रांति नहीं पड़ी है। एकाग्रता का अर्थ है: चित्त को किसी एक चीज पर रोकना, ठहराना।

दीए की ज्योति पर ठहरा लें, राम के नाम पर ठहरा लें किसी प्रतिमा पर ठहरा लें; किसी सिंबल पर ठहरा लें, किसी एक चीज पर, एक विचार पर, एक धारणा पर--चित्त को सब भांति रोक लेने का प्रयास है।

चित्त को जब इस भांति रोक लेने की तीव्र चेष्टा की जाती है, तो क्या होता है? चित्त को जब बहुत जोर से कांसनट्रेट करने की, एकाग्र करने का श्रम किया जाता है, तो क्या होता है?

होता है यह कि जब तीव्रता से चित्त को एक जगह जबर्दस्ती हम रोकने की कोशिश करते हैं, चित्त वहां से भागने की कोशिश करता है। चित्त का स्वभाव गति है, डायनामिक है। माइंड जो है, चित्त जो है, वह डायनामिक है, गत्यात्मक है--जाना चाहता है, गति करना चाहता है, ठहरना नहीं चाहता।

समझ लें, गंगा को हमें ठहराना हो। गंगा को ठहराना हो तो क्या करना

CamScanner

6:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 30%

इसलिए हम अपने मुल्क में कवियों की दो कोटियां करते रहे हैं। एक कोटि कवियों की वह थी, जो शब्दों को निर्माण कर लेते थे, जमा लेते थे, उनको हम कवि कहते थे। एक वे भी कवि थे, जिनके भीतर कविता का जन्म होता था, उनको हम ऋषि कहते थे। ऋषि का अर्थ कवि है। लेकिन फर्क थोड़ा-सा है। ऋषि हम उसे कहते हैं, जो मिट गया और जिसने जन्म होते अपने भीतर किसी चीज को देखा। कभी, सृजन के किसी क्षण में उसकी झलक मिल सकती है, क्योंकि हर सृजन में वह मौजूद होता है। कभी आपने खयाल किया हो, जब कोई स्त्री पहली दफा गर्भवती होती है, तो उसके सौंदर्य में शरीर के पार की कोई चीज उतरनी शुरू हो जाती है! असल में मां बने बिना स्त्री सौंदर्य के पूरे निखार को कभी उपलब्ध नहीं होती है। जब उसके भीतर कोई जन्म हो रहा होता है, कोई सृजन हो रहा होता है, तब उसके आस-पास परमात्मा की छबि और मौजूदगी अनिवार्य है।

अगर स्त्रियां इस सत्य को जान लें कि जब उनके भीतर कुछ निर्मित हो रहा है, तब वे परमात्मा के अति निकट होती हैं, अगर वे क्षण उनके ध्यानपूर्ण हो जाएं, तो एक स्त्री को अलग से साधना करने की कोई भी जरूरत नहीं है। उसका मां होना ही उसकी साधना हो जा सकती है।

पुरुष इस लिहाज से वंचित है, स्त्री इस लिहाज से बहुत गरिमा युक्त है। क्योंकि पुरुष के भीतर कुछ भी निर्माण नहीं होता, सृजन नहीं होता, स्त्री के भीतर कुछ सृजन होता है। स्त्री के भीतर सृजन की प्रक्रिया गुजरती है। और छोटा-मोटा सृजन नहीं होता। एक फूल जब खिलता है पौधे पर, तो सारा पौधा सुंदर हो जाता है। क्यों? क्योंकि फूल का सृजन हुआ। लेकिन जब जीवन का श्रेष्ठतम फूल, मनुष्य, किसी स्त्री के भीतर निर्मित होता है, तो स्वभावत: उसका सारा व्यक्तित्व एक अनोखे सौंदर्य से भर जाता है। उस क्षण परमात्मा बहुत निकट है।

इसलिए मातृत्व एक गहरी धार्मिकता। इसलिए जिस दिन स्त्री मां नहीं होना चाहेगी, उस दिन स्त्री का धार्मिक होना असंभव हो जाएगा।

ओशो

CamScanner

6:55 pm 0 KB/s VoLTE 4G 30%

रवींद्रनाथ ने कहा कि मैंने अब तक स्वयं कुछ भी नहीं लिखा है। जब मैं मिट जाता हूं, तभी कोई मुझसे लिखवा जाता है। जब मैं नहीं होता हूं तभी कोई मुझसे गा जाता है। और मैं लाख कोशिश करूं, कितने ही सुंदर शब्दों को जमाऊं, तुकबंदी तो बन जाती है, लेकिन काव्य का जन्म नहीं होता। काव्य का जन्म तो तभी होता है, जब मैं मिट जाता हूं, जड़-मूल से खो जाता हूं।

अगर रवींद्रनाथ को इस काव्य के जन्म के क्षण में ही ईश्वर का अहसास हो, तो हो सकता है। क्योंकि जब भी जगत में कोई चीज सृजित होती है, कहना चाहिए, इन दि मोमेंट आफ क्रिएशन; नाट ' व्हेन इट हैज बीन क्रिएटेड, पैदा हो गई तब नहीं, सृजित हो गई तब नहीं, जब सृजन हो रही होती है, इन दि वेरी प्रोसेस, प्रक्रिया में होती है; जब जन्म हो नहीं गया होता, जन्म हो रहा होता है, तब कभी-कभी उसकी झलक मिल जाती है। क्योंकि उसकी मौजूदगी के बिना किसी भी चीज का जन्म नहीं होता है। उसकी मौजूदगी के बिना, उस कैटेलिटिक के मौजूद हुए बिना, एक कविता भी जन्मती नहीं है।

कभी-कभी सर्जकों को उसकी प्रतीति होती है, उसका कारण यह है। और जिस कवि को कवि के अंतरतम में सृजन का यह अनुभव न हुआ हो, वह तुकबंद है, कवि नहीं है। उसने शब्दों को जोड़ना सीख लिया है। उसकी कविता कंस्ट्रक्यान है, क्रिएशन नहीं। कपोजीशन है, क्रिएशन नहीं। उसने जोड़-तोड़ बना ली है। वह भाषा जानता है, वह भाषा का खेल जानता है। वह नियम जानता है। वह शब्दों को बिठा लेता है। लेकिन उसने कभी काव्य का जन्म नहीं देखा है।

इसलिए हम अपने मुल्क में कवियों की दो कोटियां करते रहे हैं। एक कोटि कवियों की वह थी, जो शब्दों को निर्माण कर लेते थे, जमा लेते थे, उनको हम कवि कहते थे। एक वे भी कवि थे, जिनके भीतर कविता का जन्म होता था, उनको हम ऋषि कहते थे। ऋषि का अर्थ कवि है। लेकिन फर्क थोड़ा-सा है। ऋषि हम उसे कहते हैं, जो मिट गया और जिसने जन्म होते अपने भीतर किसी चीज को देखा। कभी, सृजन के किसी क्षण में उसकी झलक मिल सकती है, क्योंकि हर सृजन में वह मौजूद होता है। कभी आपने खयाल किया हो, जब कोई स्त्री पहली

CamScanner

6:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 30%

लोग तो चले गए, मलिक बाहर दीवाल के पास छिपकर बैठ गए। रवींद्रनाथ की आंखों से आंसू बहने लगे, और उनके शरीर में एक पुलकन और एक सिहरन का दौर शुरू हो गया। जैसे ' रोआं-रोआं किसी अज्ञात ऊर्जा से भर गया हो, और जैसे रोएं-रोएं में कोई सूक्ष्म स्पंदन प्रवेश कर रहे हों। कोई अनूठी शक्ति ने सारे कमरे को घेर लिया है, ऐसा मलिक को भी अनुभव होने लगा। कोई मौजूदगी!

जैसे कभी-कभी आपको भय लगता है, लगता है, कोई मौजूद है और दिखाई नहीं पड़ता। ऐसे ही मलिक भी घबड़ा गए। घबड़ाहट दोहरी थी। एक तो यह थी कि मैं अपराध कर रहा हूं; मुझे यहां रुकना नहीं चाहिए। और दूसरी घबड़ाहट यह थी कि चारों तरफ कोई मौजूद हो गया था। वह जगह खाली न रही थी।

घड़ी दो घड़ी, फिर मलिक के पैर बंध गए। अब वे भागना भी चाहते हैं, वहा से हट भी जाना चाहते हैं, लेकिन अब हट भी नहीं सकते, किसी चीज ने जैसे कि जमीन से कशिश बांध ली। आंखें झपकाना चाहते हैं, झपकती नहीं हैं। श्वास जैसे ठहर गई हो। वहा कोई विराट जैसे उतर आया चारों तरफ। सारा स्थान किसी की उपस्थिति से भर गया। रवींद्रनाथ डोल रहे हैं, जैसे कोई वृक्ष हवाओं में डोलता हो। कि रवींद्रनाथ नाच रहे हैं, जैसे कोई मोर आषाढ़ में नाचता हो। कि रवींद्रनाथ के भीतर कुछ हो रहा है, जैसे किसी मां के गर्भ से बच्चे का जन्म हो रहा हो।

रात गहरी होने लगी, और रवींद्रनाथ वैसी ही अवस्था में हैं। फिर वे स्वस्थ हुए, वापस हुए। और जैसे ही वे स्वस्थ और वापस हुए, मलिक के पैर जमीन से जैसे छूट गए, वे भागे। बाद में उन्होंने रवींद्रनाथ से जाकर दूसरे दिन पूछा कि अपराध मेरा क्षमा हो। रात मैं चोरी छिपे खडा रह गया था। ऐसा लगा कि आप तो मिट गए, कोई और मौजूद हो गया था!

रवींद्रनाथ ने कहा कि मैंने अब तक स्वयं कुछ भी नहीं लिखा है। जब मैं मिट जाता हूं, तभी कोई मुझसे लिखवा जाता है। जब मैं नहीं होता हूं तभी कोई मुझसे गा जाता है। और मैं लाख कोशिश करूं, कितने ही

CamScanner

6:53 pm
Osho Human Being To Be.in.God
3h ·

रवींद्रनाथ को जब भी कोई गीत जन्मता, तो वे खाना-पीना बंद कर देते थे--बंद हो जाता था। खा-पी नहीं सकते थे। द्वार--दरवाजे बंद कर लेते थे। मिलना-जुलना बंद कर देते थे--बंद हो जाता था। मिल नहीं सकते थे। होंठ बंध जाते थे। बोलने की असमर्थता हो जाती थी। द्वार-दरवाजे बंद करके, भूखे। वे सो नहीं सकते थे। जब भी कोई गीत उनमें जन्म लेता था, तो जब तक वह पूरा जन्म न ले ले, तब तक वे और कुछ भी नहीं कर सकते थे। मनाही थी कि जब रवींद्रनाथ अपने कमरे में बंद होकर कुछ लिखते हों, तो कोई आस-पास न आए।

कभी ऐसा भी हो जाता था--क्योंकि सृजन के क्षणों के लिए कोई प्रेडिक्यान, कोई भविष्यवाणी नहीं हो सकती--रवींद्रनाथ बैठे हैं, मित्र पास बैठे हैं, या शिष्य पास बैठे हैं, और अचानक उनकी आंखें बंद हो गईं, और गीत का जन्म शुरू हो गया। तो लोगों को खबर थी कि चुपचाप हट जाना है। वहा फिर जरा भी बाधा नहीं डालनी है। इतना भी नहीं कहना है कि अब मैं जाऊं! क्योंकि इतना भी उस भीतर हो रही रचना की प्रक्रिया में बाधा बन जाएगी।

गुरदयाल मलिक ने लिखा है कि मैं नया-नया गया था। नियम तो मुझे पता था, लेकिन मन में एक अभिलाषा भी थी कि जब सच में ही गीत जन्मता है, तब मैं भी छिपकर देख लूं कि रवींद्रनाथ को होता क्या है!

पांच-सात मित्र बैठकर गपशप करते थे और रवींद्रनाथ अपने हाथ से चाय बनाकर उनको पिला रहे थे। अचानक उनके हाथ से प्याली छूट गई। सब लोग चुपचाप वहा से अधूरी चाय पीए उठ गए। लोगों ने मलिक को भी इशारा किया। मन तो नहीं था उठने का, लोग नहीं माने तो उन्हें भी उठ जाना पड़ा।

लोग तो चले गए, मलिक बाहर दीवाल के पास छिपकर बैठ गए। रवींद्रनाथ की आंखों से आंसू बहने लगे, और उनके शरीर में एक पुलकन और एक सिहरन का दौर शुरू हो गया। जैसे ' रोआं-रोआं किसी अज्ञात ऊर्जा से भर गया हो, और जैसे रोएं-रोएं में कोई सूक्ष्म स्पंदन प्रवेश कर रहे हों। कोई अनूठी शक्ति ने सारे कमरे को घेर लिया है, ऐसा

CamScanner

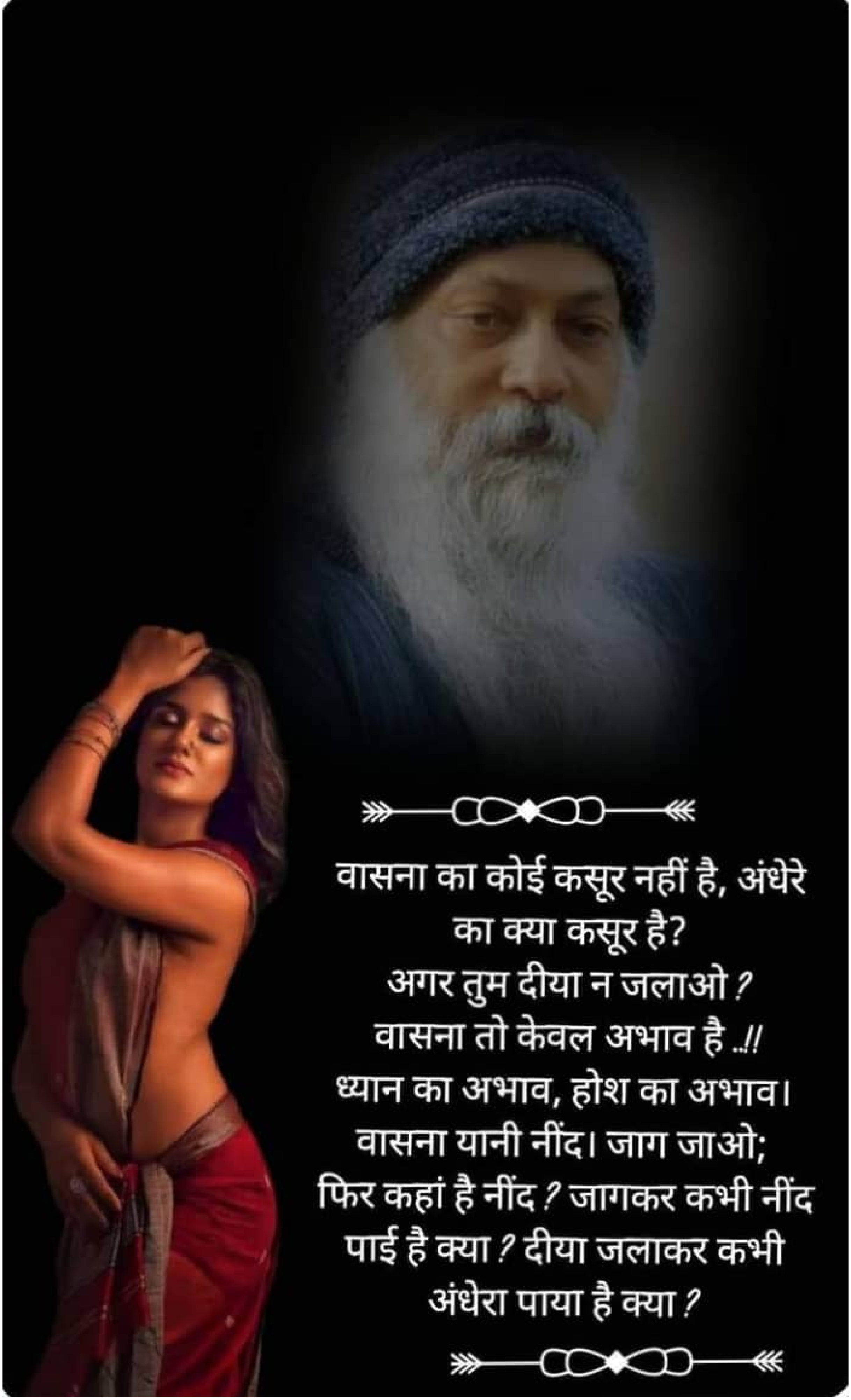
वासना का कोई कसूर नहीं है, अंधेरे
का क्या कसूर है?
अगर तुम दीया न जलाओ?
वासना तो केवल अभाव है ..!!
ध्यान का अभाव, होश का अभाव।
वासना यानी नींद। जाग जाओ;
फिर कहां है नींद? जागकर कभी नींद
पाई है क्या? दीया जलाकर कभी
अंधेरा पाया है क्या?

CamScanner

10:12 pm 0 KB/s VoLTE 4G 83%

facebook

देखा नहीं था। स्वप्न में भी ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। युवती पहचानी भी लगती थी और अपरिचित भी लगती थी। रूप-रेखा तो वही थी, लेकिन कुछ महिमा उतर आई थी। अंग-प्रत्यंग वही थे, लेकिन कोई स्वर्ण-आभा से घिर गए थे। जैसे कोई गीत की कड़ी, भूली-बिसरी, फिर किसी संगीतज्ञ ने बांसुरी में भर कर बजाई हो।

तपस्वी बैठ गया। उसने पुनः आंख बंद कर लीं। वह रुक गया। उस रात युवती सो न सकी--विजय का उल्लास भी था और साधु को पतित करने का पश्चात्ताप भी। आनंदित थी कि जीत गई और दुखी थी कि किसी को भ्रष्ट किया, किसी के मार्ग में बाधा बन गई, और कोई जो ऊर्ध्वगमन के लिए निकला था, उसकी यात्रा को भ्रष्ट कर दिया। रात भर सो न सकी--रोई भी, हंसी भी। सुबह निर्णय लिया, आकर तपस्वी के चरणों में झुकी और कहा, मुझे जाना पड़ेगा, मेरा परिवार दूसरे गांव जा रहा है। तपस्वी ने आशीर्वाद दिया कि जाओ, जहां भी रहो, खुश रहो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

युवती चली गई। वर्ष बीते, तपस्या पूरी हुई। इंद्र उतरा, तपस्वी के चरणों में झुका और कहा, स्वर्ग के द्वार स्वागत के लिए खुले हैं।

तपस्वी ने आंखें खोलीं और कहा, स्वर्ग की अब मुझे कोई जरूरत नहीं! इंद्र तो भरोसा भी न कर पाया कि कोई मनुष्य और कहेगा कि स्वर्ग की मुझे अब कोई जरूरत नहीं। इंद्र ने सोचा, तब क्या मोक्ष की आकांक्षा इस तपस्वी को पैदा हुई है। पूछा, क्या मोक्ष चाहिए?

तपस्वी ने कहा, नहीं, मोक्ष का भी मैं क्या करूंगा।
तब तो इंद्र चरणों में सिर रखने को ही था कि यह तो आत्यंतिक बात हो गई, तपश्चर्या का अंतिम चरण हो गया, जहां मोक्ष की आकांक्षा भी खो जाती है। पर झुकने के पहले उसने पूछा, मोक्ष के पार तो कुछ भी नहीं है, फिर तुम क्या चाहते हो?

उस तपस्वी ने कहा, कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने वाली युवती कहां है, वही चाहिए।

CS CamScanner

10:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 83%

कहा है, वहां चाहिए।

हंसना मत; आदमी की ऐसी कमजोरी है। सोचना, हंसना मत; क्योंकि पृथ्वी का ऐसा प्रबल आकर्षण है। कहानी को कहानी समझ कर टाल मत देना, मनुष्य के मन की पूरी व्यथा है। और ऐसा मत सोचना कि ऐसा विकल्प उस तपस्वी के सामने ही था कि युवती थी, स्वर्ग था, दोनों के बीच चुनना था। तुम्हारे सामने भी विकल्प वही है; सभी के सामने विकल्प वही है--या तो उन सुखों को चुनो जो क्षणभंगुर हैं, या उसे चुनो जो शाश्वत है; या तो शाश्वत को गंवा दो क्षणभंगुर के लिए, या क्षणभंगुर को समर्पित कर दो शाश्वत के लिए। और अधिकतम लोग वही चुनेंगे, जो तपस्वी ने चुना। ऐसा मत सोचना कि तुमने कुछ अन्यथा किया है। चाहे इंद्र तुम्हारे सामने खड़ा हुआ हो या न खड़ा हुआ हो; चाहे किसी ने स्पष्ट स्वर्ग और पृथ्वी के विकल्प सामने रखे हों, न रखे हों--विकल्प वहां हैं। और जो एक को चुनता है, वह अनिवार्यतः दूसरे को गंवा देता है। जिसकी आंखें पृथ्वी के नशे से भर जाती हैं, वह स्वर्ग के जागरण से वंचित रह जाता है। और जिसके हाथ पृथ्वी की धूल से भर जाते हैं, स्वर्ग का स्वर्ण बरसे भी तो कहां बरसे, हाथों में जगह नहीं होती! हाथ खाली चाहिए तो ही स्वर्ग उतर सकता है; आत्मा खाली चाहिए तो ही परमात्मा विराजमान हो सकता है।

तुम्हारी आत्मा में अगर कोई आसक्ति पहले से ही विराजमान है, अगर वहां सिंहासन पहले से ही भरा है, तो तुम यह मत कहना कि परमात्मा ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है; यह तुम्हारा ही चुनाव है। अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता, तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना, तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी, जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है--एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है। लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता; सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता। तुम्हें जन्मों-जन्मों तक सत्य को इंकार करने की स्वतंत्रता है। यही मनुष्य की गरिमा है, यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी।

ओशो,
भजगोविंदम मूढ़मते

CamScanner

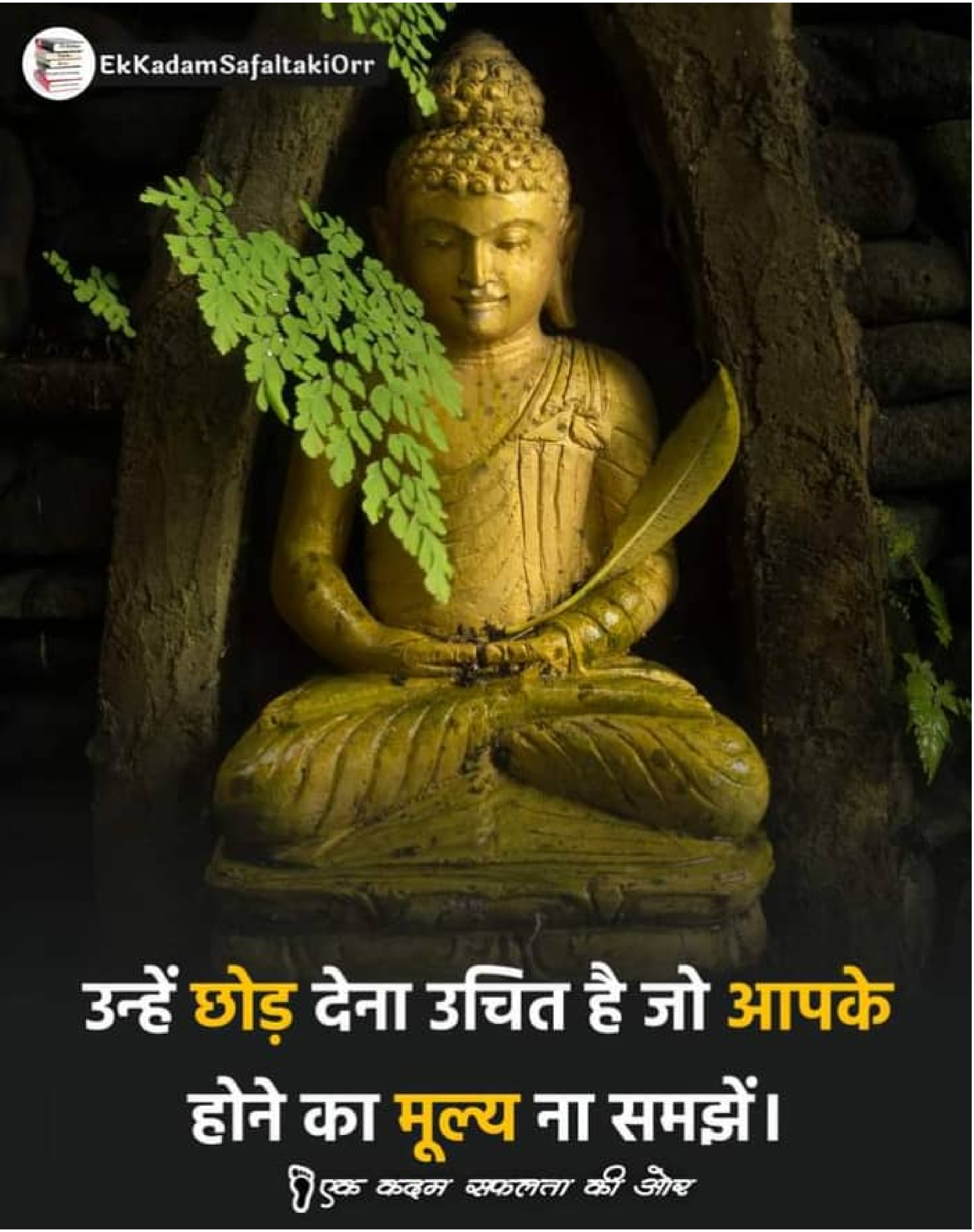
EkKadamSafaltakiOrr
उन्हें छोड़ देना उचित है जो आपके
होने का मूल्य ना समझें।
एक कदम सफलता की ओर
CamScanner

10:04 pm

facebook

Like Comment Send Share

Shashi Shubhangee

2h ·

#ताओ

ड्यूक ह्वान अपने हॉल में बैठा पुस्तक पढ़ रहा था। नीचे आँगन में बिएन (Pien) नामक बढ़ई एक पहिये को छेनी से तराश रहा । उसने अपनी छेनी और हथौड़ा नीचे रखा और हॉल में आकर इयूक ह्वान से बोला, “जनाब, क्या मैं यह पूछने का साहस का सकता हूँ कि आप जो किताब पढ़ रहे हैं, उसमें किसके वचन हैं?" " इसमें संतों के वचन हैं ।"ड्यूक ने कहा।

"क्या वे संत अभी जीवित हैं ?"

“उनकी तो बहुत समय पहले ही मृत्यु हो चुकी है", ड्यूक ने कहा। “फिर तो जो आप पढ़ रहे हैं, उसमें पुराने लोगों की भूसी और कचरे के सिवाय और कुछ नहीं है । "

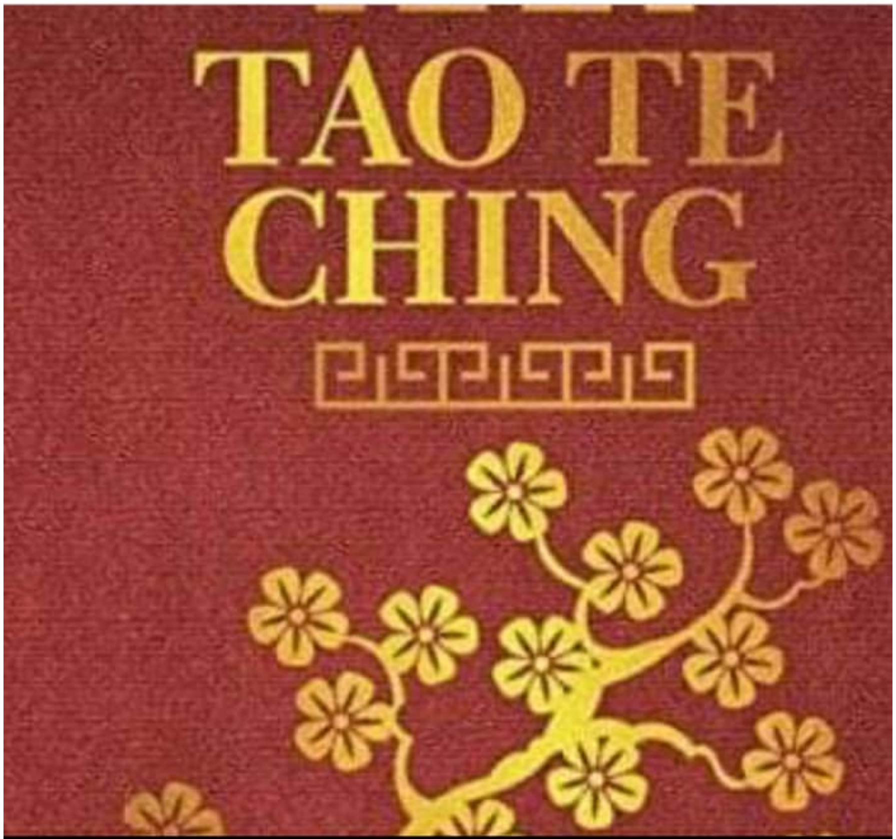


CamScanner

10:01 pm 0 KB/s VoLTE 4G 84%

।।ओशो नमन।।
कृष्ण ने गीता में कहा है – 'सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं वज'...... अर्जुन, तू सब धर्मों को छोड़कर मुझ एक की शरण में आ।

कृष्ण जिस युग में बोल रहे थे, वह युग अत्यंत सरल, निर्दोष, श्रद्धा का युग था। किसी के मन में ऐसा नहीं हुआ कि कृष्ण कैसे अहंकार की बात कह रहे हैं कि तू सब छोड़कर मेरी शरण में आ। अगर कोई घोषणा अहंकारग्रस्त मालूम हो सकती है तो इससे ज्यादा अहंकारग्रस्त घोषणा दूसरी मालूम नहीं होगी – अर्जुन को यह कहना कि छोड़ दे सब और आ मेरी शरण में। पर वह युग अत्यंत श्रद्धा का युग रहा होगा, जब कृष्ण बेझिझक, सरलता से ऐसी बात कह सके और अर्जुन ने सवाल भी न उठाया कि क्या कहते हैं आप? आपकी शरण में और मैं आऊं? अहंकार से भरे हुए मालूम पड़ते हैं।

लेकिन बुद्ध और महावीर तक आदमी की चित्त दशा में बहुत फर्क पड़े। इसलिए जहां हिन्दू चिंतन 'मामेकं शरणं वज' पर केन्द्र मानकर खड़ा है वहीं बुद्ध और महावीर की दृष्टि में आमूल परिवर्तन करना पड़ा। महावीर ने नहीं कहा कि तुम सब छोड़कर मेरी शरण में आ जाओ, न बुद्ध ने कहा। दूसरे छोर से पकड़ना पड़ा सूत्र को। तो बुद्ध का सूत्र है, वह साधक की तरफ से है। महावीर का सूत्र है, वह भी साधक की तरफ से है, सिद्ध की तरफ से नहीं। अरिहंत की शरण स्वीकार करता हूं सिद्ध की शरण स्वीकार करता हूं साधु की शरण स्वीकार करता हूं केवली प्ररूपित धर्म की शरण स्वीकार करता हूं– यह दूसरा छोर है शरण और गति का। दो ही छोर हो सकते हैं। या तो सिद्ध कहे कि मेरी शरण में आ जाओ, या साधक कहे कि मैं आपकी शरण में आता हूं।

हिन्दू और जैन विचार में मौलिक भेद यही है। हिन्दू विचार में सिद्ध कह रहा है, आ जाओ मेरी शरण में; जैन विचार में साधक कहता है, मैं आपकी शरण में आता हूं। इससे बहुत बातों का पता चलता है। पहली तो यही बात पता चलती है कि कृष्ण जब बोल रहे थे तब बड़ा श्रद्धा का युग था और जब महावीर बोल रहे हैं तब बड़े तर्क का युग है। महावीर कहें– मेरी शरण आ जाओ तत्काल लोगों को लगेगा, बड़े अहंकार की बात हो गई।

CamScanner

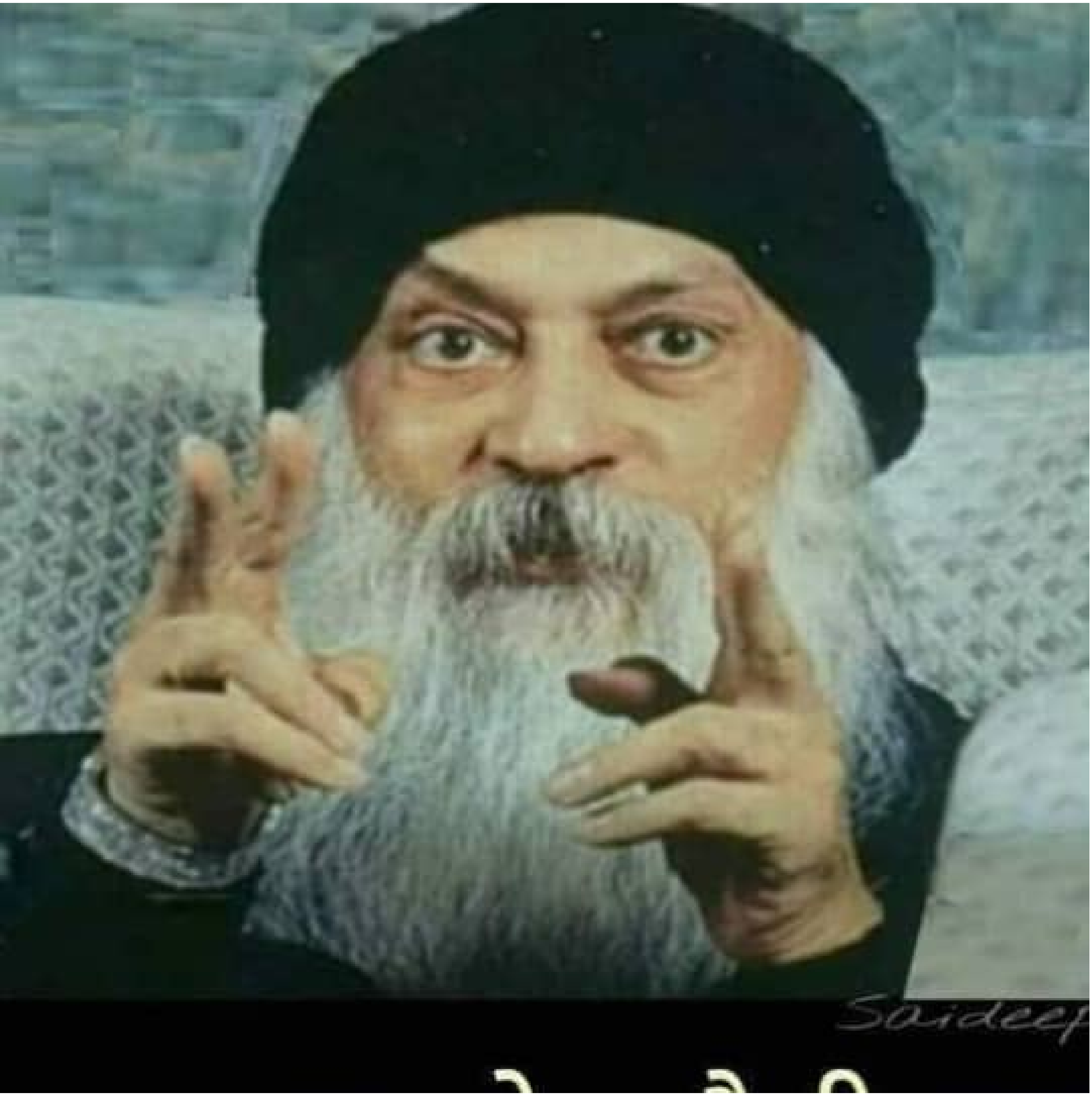


CamScanner

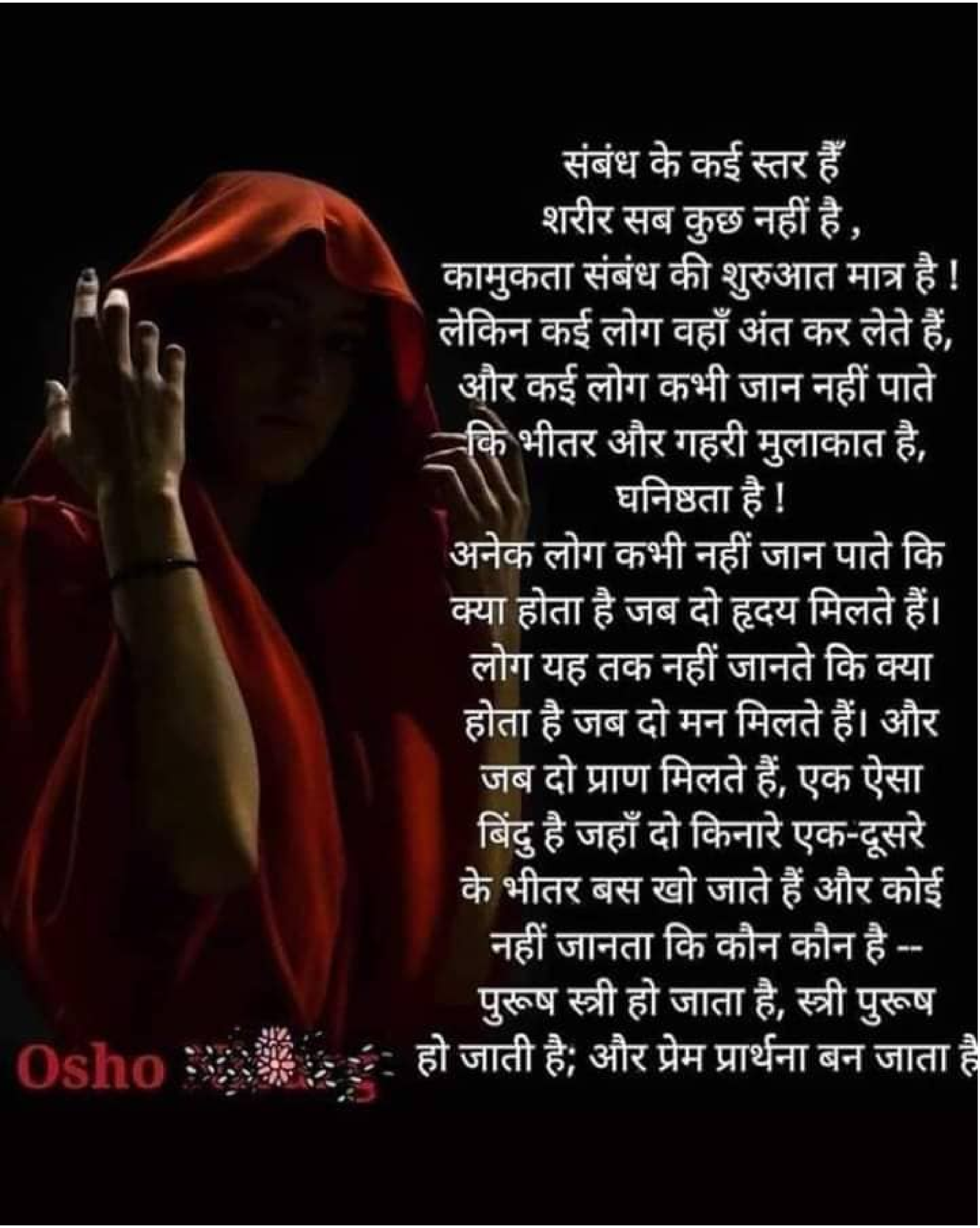
संबंध के कई स्तर हैं
शरीर सब कुछ नहीं है ,
कामुकता संबंध की शुरुआत मात्र है !
लेकिन कई लोग वहाँ अंत कर लेते हैं,
और कई लोग कभी जान नहीं पाते
कि भीतर और गहरी मुलाकात है,
घनिष्ठता है !
अनेक लोग कभी नहीं जान पाते कि
क्या होता है जब दो हृदय मिलते हैं।
लोग यह तक नहीं जानते कि क्या
होता है जब दो मन मिलते हैं। और
जब दो प्राण मिलते हैं, एक ऐसा
बिंदु है जहाँ दो किनारे एक-दूसरे
के भीतर बस खो जाते हैं और कोई
नहीं जानता कि कौन कौन है --
पुरूष स्त्री हो जाता है, स्त्री पुरूष
हो जाती है; और प्रेम प्रार्थना बन जाता है
Osho

CamScanner

12:36 pm 327 KB/s 57%

82K 1K comments • 3 shares

Like Comment Share

**माँ प्रेम सुगंधा**

Reels · 3d · PARTHOMATIC ·

आत्मा निरंतर बहुत धीमी आवाज़ में आप से कुछ कहना चाहती है जिसे मौन रह कर हि सुना जा सकता है यहीं परम सुख। #अहोभाव #मौन #morningvibes #meditation #love #blessed #...

See more

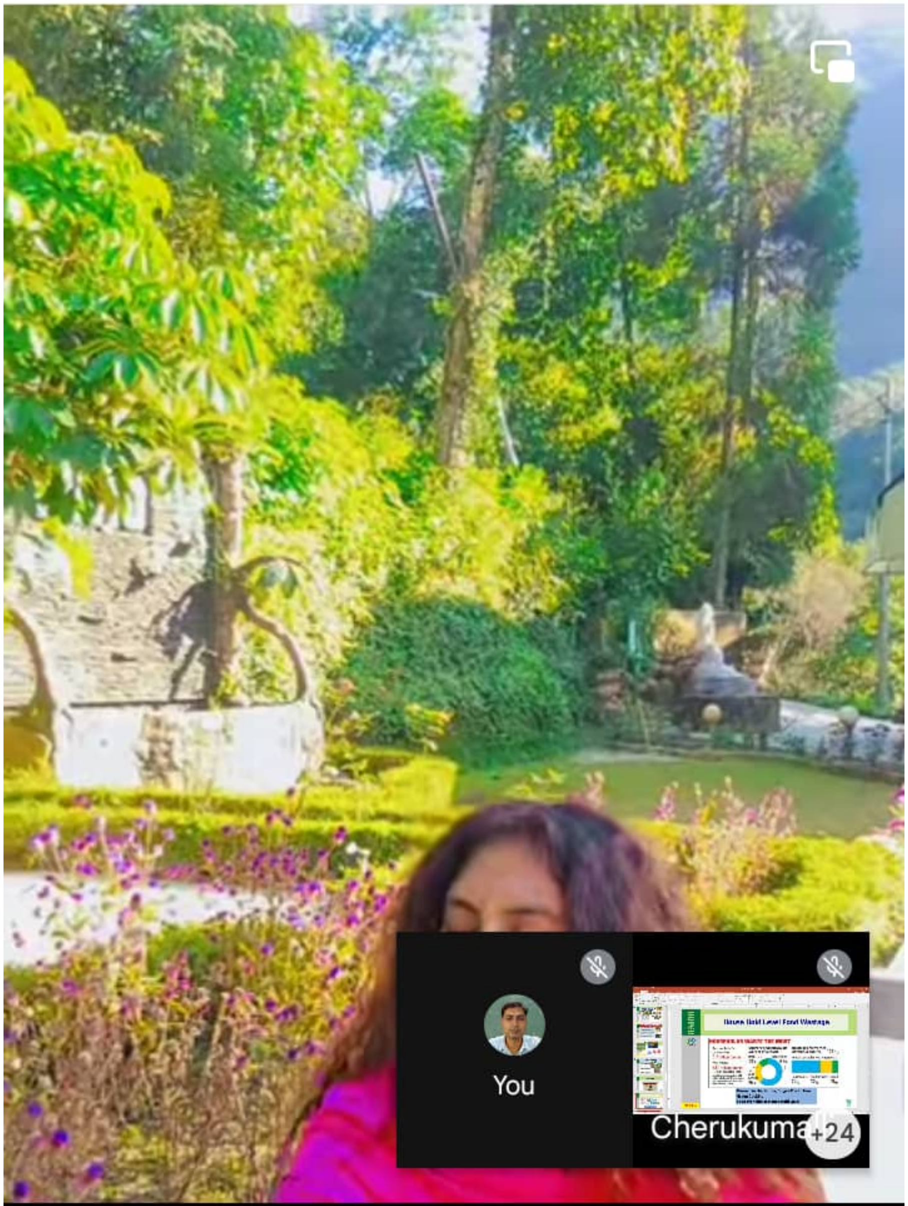


CamScanner

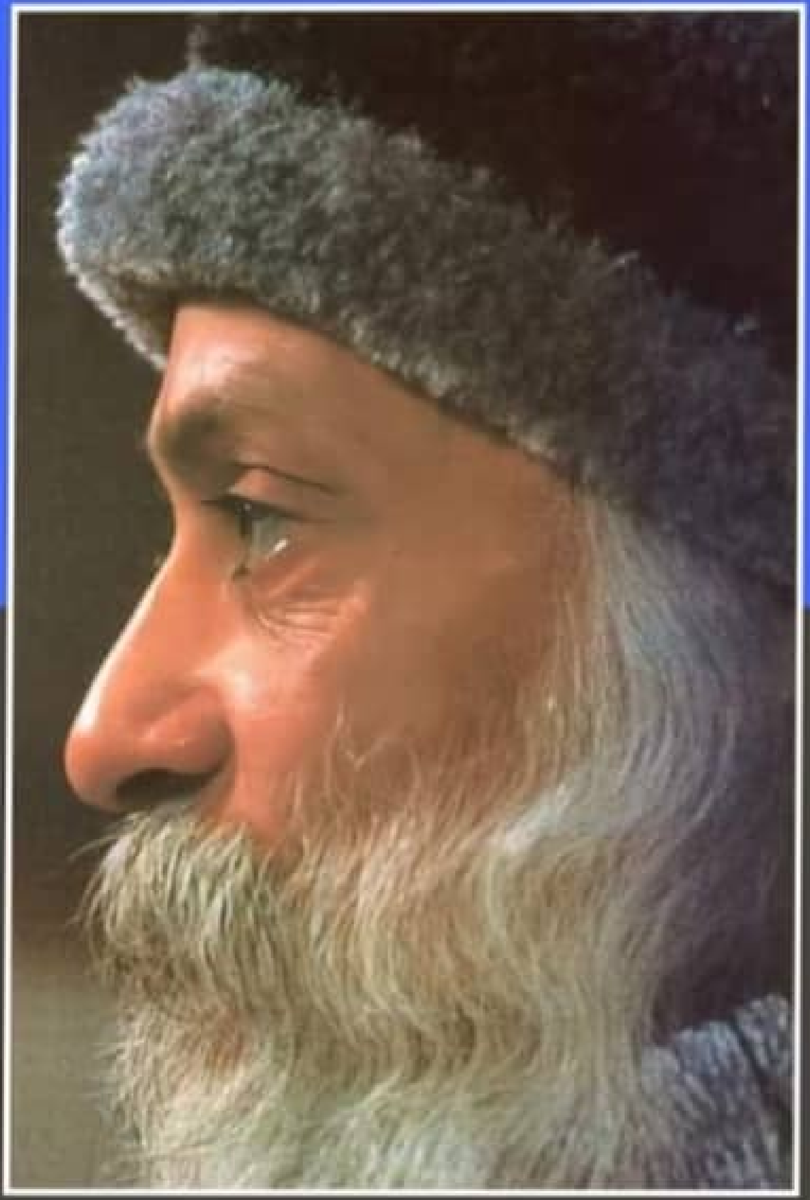

वही आदमी बुद्धिमान है, जो इस जीवन के अवसर का उपयोग जीवन के परम सत्य की खोज में कर ले। बाकी कोई आदमी बुद्धिमान नहीं है। बाकी सभी बुद्धिहीन हैं।
ओशो अहोभाव

CamScanner

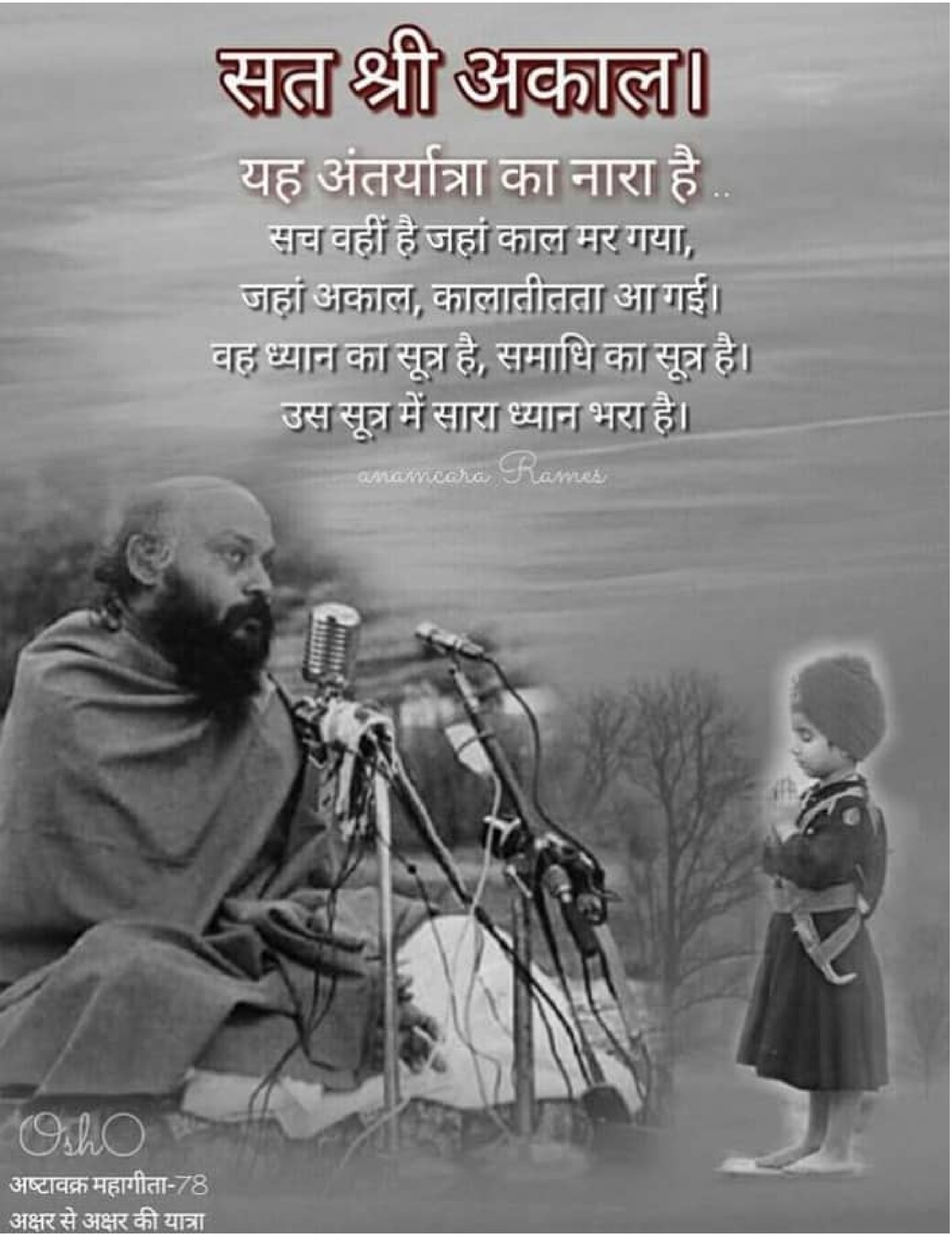
सत श्री अकाल।
यह अंतर्यात्रा का नारा है ..
सच वहीं है जहां काल मर गया,
जहां अकाल, कालातीतता आ गई।
वह ध्यान का सूत्र है, समाधि का सूत्र है।
उस सूत्र में सारा ध्यान भरा है।
anamcara Ramesh
OshO
अष्टावक्र महागीता-78
अक्षर से अक्षर की यात्रा

CamScanner

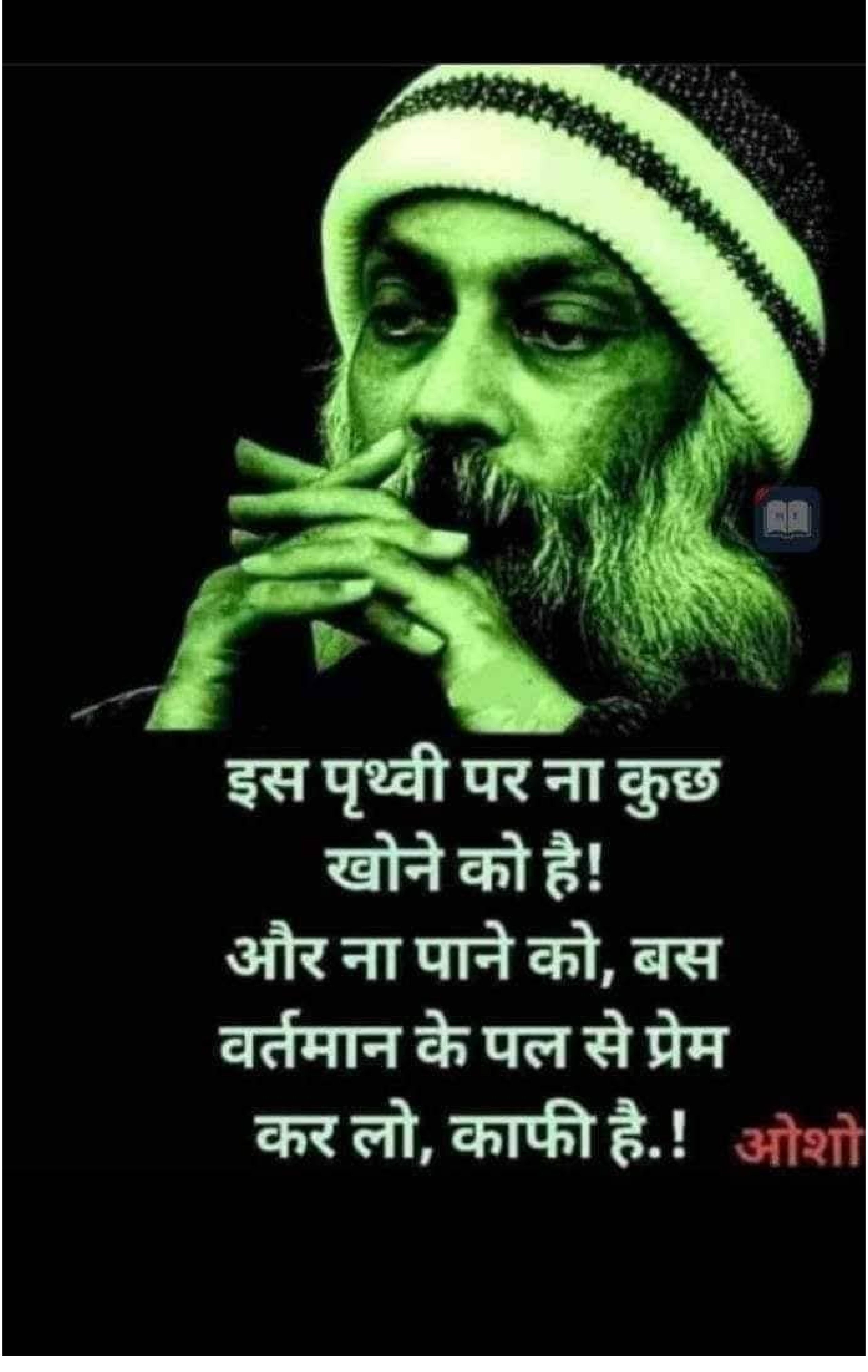


CamScanner

12:30 pm 0 KB/s 59%

हैं और पी रहे रस!

दिन बीत जाते। न भोजन की फिक्र है, न प्यास का पता है। लेकिन एक आभा प्रकट होने लगी, एक तेजोमंडल आविर्भूत होने लगा। चारों तरफ एक सुगंध फैलने लगी। लोग सेवा करने लगे। लोग भोजन ले आते, हाथ--पैर दबाते कि लौट आओ, भोजन कर लो। कोई पानी ले आता, कोई स्नान करवा देता; नहीं तो वे बैठे रहते बिना ही स्नान के। मक्खियों के झुंड के झुंड उन पर बैठे रहते और वे मस्त हैं, वे मदहोश हैं। और लोग पूछते : तुम करते क्या हो? तो वे कहते कि मैं कुछ भी नहीं करता हूं। करने की कोई जरूरत ही नहीं। फिर यही उनका जिंदगी--भर संदेश रहा जो भी उनके पास जाता, पूछता : हम क्या करें परमात्मा को पाने को? तो वे कहते: करने की कोई जरूरत नहीं, बस बैठ रहो। खाली बैठे रहो। खाली बैठे, बैठे, बैठे, बैठे एक दिन ऐसा सुर बंध जाएगा कि जो भीतर है उसकी प्रतीति होने लगेगी। बाहर से मन मुड़ जाएगा, भीतर का अनुभव होने लगेगा।

सुंदरदास कह रहे हैं : सुंदर कहत कोऊ कौन विधि जानै ताहि। विधि से तो नहीं होता, बिना विधि के होता है। इसलिए छोटे बच्चे चाहें तो उनको भी हो सकता है। स्वस्थ को हो सकता है, बीमार को हो सकता है। बाजार में जो बैठा है उसको हो सकता है, हिमालय पर जो बैठा है उसको हो सकता है। सुंदर को कुरूप को, गरीब को अमीर को, पढ़े--लिखे को गैर पढ़े--लिखे को, सब को हो सकता है। क्योंकि बात सब छोड़कर भीतर थोड़ी देर चुपचाप डुबकी मार लेने की है।

और जब ऐसा हो जाए तो सुंदर कहते हैं कुछ बोलना। नहीं तो लोगों के सिर वैसे ही कचरे से भरे हैं, और कचरे से मत भरना।

इस जगत् में जो सबसे बड़ा पाप चल रहा है, वह है--उनके द्वारा बोला जाना जिन्हें अनुभव नहीं है। वे लोगों के मस्तिष्क कचरे से भरते रहते हैं।
आचार्य रजनीश जी
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞

CamScanner

12:30 pm 2 KB/s 59%

रमण को एक बात सूझी। बच्चों को अकसर बातें सूझ जाती हैं। घर के लोग तो रोने-धोने में लगे थे, वे बगल के कमरे में चले गए और जमीन पर लेट गए, जैसे वह मुर्दा आदमी लेटा था वैसे लेट गए। हाथ—पैर वैसे ही कर लिए ढीले, जैसे मुर्दे ने किए थे। आंखे बंद कर लीं। एक प्रयोग किया मृत्यु का कि मैं देखूं कि मेरे भीतर क्या होता है; अगर मैं ऐसे ही मर जाऊं तो कोई आता--जाता है या नहीं; कोई बचता है कि नहीं भीतर? शरीर को शिथिल छोड़ दिया। सरल भाव का बच्चा रहा होगा--अति सरल भाव का, कि जल्दी ही लगा कि मौत घट रही है। हाथ--पैर सब सूख गए। थोड़ी देर विचार घूमते रहे, फिर विचार भी समाप्त हो गए। थोड़ी देर बाहर की आवाजें और रोना--धोना सुनाई पड़ता रहा, फिर पता नहीं वे भी सब आवाजें कहीं दूर...निकल गईं। कान जैसे बंद हो गए। थोड़ी देर श्वास चलती मालूम पड़ती रही, फिर उससे भी दूरी हो गई। मृत्यु जैसे घटी। और जब घंटे--भर बाद रमण ने आंखें खोलीं तो वे दूसरे ही व्यक्ति थे। चमत्कार हो गया। देख ही लिया उन्होंने भीतर अपने कि "जो है", उसकी कोई मृत्यु नहीं। जाकर घर के लोगों को कहा : व्यर्थ रो रहे हो, धो रहे हो। कोई कहीं गया नहीं, कोई कहीं जाता नहीं।

और उसी दिन उन्होंने घर छोड़ दिया, चल पड़े जंगल की तरफ। अब इस संसार में कुछ अर्थ न रहा। सारे अर्थों का अर्थ तो भीतर मिल गया। संपदा तो मिल गई, अब क्या तलाश करनी है? इस संसार में तो हम संपदा की ही तलाश करते रहते हैं। जब मिल गयी संपदा, धनी हो गए, तो अब यहां क्या करना है? चल पड़े। और ऐसा रस लगा, यह मरने की कला में ऐसा रस लगा कि लोग कहते हैं कि जहां रमण बैठ जाते थे, दिनों बैठे रहते थे। आंख बंद कर ली, शरीर को मुर्दा कर लिया और बैठ हैं और पी रहे रस!

दिन बीत जाते। न भोजन की फिक्र है, न प्यास का पता है। लेकिन एक आभा प्रकट होने लगी, एक तेजोमंडल आविर्भूत होने लगा। चारों तरफ एक सुगंध फैलने लगी। लोग सेवा करने लगे। लोग भोजन ले आते, हाथ--पैर दबाते कि लौट आओ, भोजन कर लो। कोई पानी ले आता, कोई स्नान करवा देता; नहीं तो वे बैठे रहते बिना ही स्नान के। मक्खियों के झुंड के झुंड उन पर बैठे रहते और वे मस्त हैं, वे मदहोश हैं। और

CamScanner

12:30 pm 1 KB/s 4G 59%

रमण की समाधि समझने जैसी है। ज्यादा उम्र उनकी न थी। ज्यादा होती तो शायद समाधि मिलती भी न। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है लोगों की, अनुभव का कचरा खूब इकट्ठा हो जाता है। फिर उस कचरे से छूटना बड़ा मुश्किल होता है। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है, लोग ज्ञानी हो जाते हैं बिना ज्ञान के--और बिना ज्ञान के जो ज्ञानी हो गया उसकी हालत अज्ञानी से बहुत बदतर हो जाती है। ज्यादा उम्र क्या हो जाती है लोग, सुन-सुन कर पंडित हो जाते हैं, तोते हो जाते हैं। उपनिषद--वेद दोहराने लगते हैं। और जितने ही वेद-उपनिषद कंठस्थ हो जाते हैं, उतना ही समझ लेना कि परमात्मा से दूरी बढ़ी। अब तुम्हारा वेद नहीं जन्म सकेगा; अब तुम उधार वेद से बंध गए। अब तुम्हारा उपनिषद नहीं जन्मेगा; अब तुमने दूसरों के उपनिषद पकड़ लिए।

सत्रह साल की उम्र थी रमण की। परिवार में किसी की मृत्यु हो गयी। रमण ने मृत्यु को घटते देखा। अभी-अभी था यह आदमी, अभी-अभी नहीं हो गया! न किसी को देखा आते न किसी को देखा जाते। सब वैसा ही का वैसा। नाक, मुंह, आंख, कान सब वैसे, हाथ--पैर सब वैसे। एक क्षण पहले यह था और एक क्षण बाद न रहा। हुआ क्या! कौन चला गया! कहां चला गया! कहां से आया था!

रमण को एक बात सूझी। बच्चों को अकसर बातें सूझ जाती हैं। घर के लोग तो रोने-धोने में लगे थे, वे बगल के कमरे में चले गए और जमीन पर लेट गए, जैसे वह मुर्दा आदमी लेटा था वैसे लेट गए। हाथ—पैर वैसे ही कर लिए ढीले, जैसे मुर्दे ने किए थे। आंखे बंद कर लीं। एक प्रयोग किया मृत्यु का कि मैं देखूं कि मेरे भीतर क्या होता है; अगर मैं ऐसे ही मर जाऊं तो कोई आता--जाता है या नहीं; कोई बचता है कि नहीं भीतर? शरीर को शिथिल छोड़ दिया। सरल भाव का बच्चा रहा होगा--अति सरल भाव का, कि जल्दी ही लगा कि मौत घट रही है। हाथ--पैर सब सूख गए। थोड़ी देर विचार घूमते रहे, फिर विचार भी समाप्त हो गए। थोड़ी देर बाहर की आवाजें और रोना--धोना सुनाई पड़ता रहा, फिर पता नहीं वे भी सब आवाजें कहीं दूर...निकल गईं। कान जैसे बंद हो गए। थोड़ी देर श्वास चलती मालूम पड़ती रही, फिर उससे भी दूरी हो गई। मृत्यु जैसे घटी। और जब घंटे--भर बाद रमण ने आंखें खोलीं तो वे दूसरे ही व्यक्ति थे। चमत्कार हो गया। देख ही लिया

CamScanner

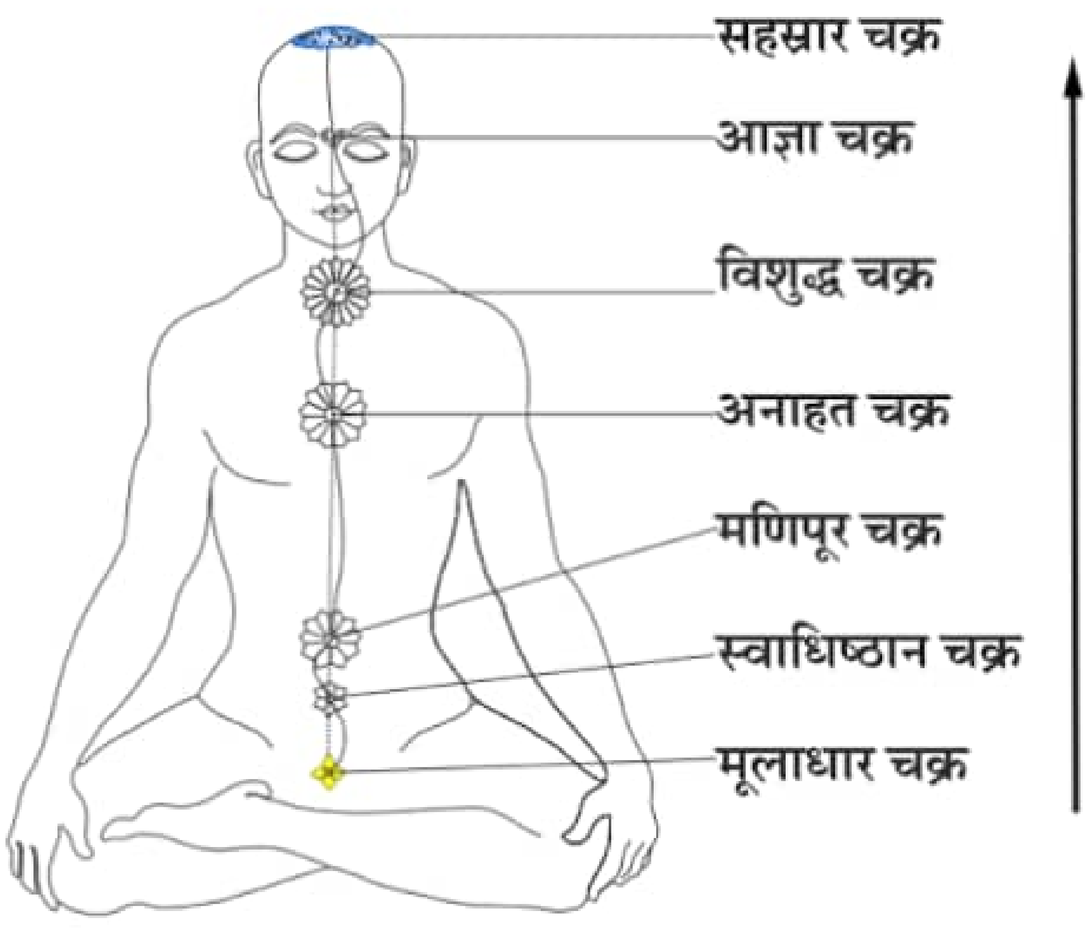
सहस्रार चक्र
आज्ञा चक्र
विशुद्ध चक्र
अनाहत चक्र
मणिपूर चक्र
स्वाधिष्ठान चक्र
मूलाधार चक्र

CamScanner

11:24 am 0 KB/s 69%
facebook

Osho Rishi Valley. Shimla is 😇 feeling blessed.
13h ·

*हाय! बुराई मार गई..* 🥺

सभी जगह अच्छे लोग हैं और सभी जगह बुरे लोग हैं। *लेकिन बुरे लोग ताकत में हैं हर जगह। और अच्छे लोग शक्तिहीन हैं हर जगह। अच्छाई की एक मजबूरी है। अच्छाई आक्रामक नहीं होती। हिंसात्मक नहीं होती। बुराई आक्रामक होती है। हिंसक होती है। स्वभावत: बुराई छाती पर चढ़ जाती है। और अच्छाई को कोई मौका भी नहीं मिलता।*

दूसरी खूबी: अच्छाई को कोई आकांक्षा भी नहीं होती कि उसे स्वीकार मिले। अच्छाई अपने आप में ऐसा सुखद अनुभव है कि अब और कुछ और न चाहिए, न जोड़ा जा सकता है। बुराई महत्वाकांक्षी है। तो अगर बुरे लोगों को देखना हो तो राजनीति। और अगर अच्छे लोगों को देखना हो तो शांत, मौन, ध्यान में संलग्न लोग। दुनिया दो हिस्सों में बंटी है, दो देशों में नहीं। बुरे लोग छाती पर सवार हैं और अच्छे लोग, इतने अच्छे लोग हैं कि उनसे यह भी नहीं कहते कि अब उतरो भी। उनके छाती पर सवार होने से भी फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि उनकी आनंद की, उनके प्रेम की, उनके अमृत की वर्षा उनके भीतर हो रही है।

– ओशो

फिर अमरित की बूंद पड़ी
प्रवचन: ०२
एक नया ध्रुवतारा

CamScanner

11:15 am 0 KB/s VoLTE 4G 71%

प्रेम करने वाले को को दु:ख कैसे मिल सकता है ? ||*

प्रेम शारीरिक नहीं है, इसका नाता कहीं विश्रांति से है, पिघलने से है, पूरा मिट जाने से है।

तुम्हें अधिक प्रेम देना सीखना होगा। तुम्हे बस लेने का अनुभव है। तो पहला अनुभव जो उसके अचेतन तक पैठ जाता है वह प्रेम लेने का है। परंतु समस्या यह है कि हर व्यक्ति बच्चा रहा है और हर व्यक्ति के भीतर प्रेम पाने की आकांक्षा है; कोई भी किसी अलग ढंग से पैदा नहीं हुआ है। तो सभी मांग रहे हैं,"हमें प्रेम दो" लेकिन देने वाला कोई भी नहीं क्योंकि वे भी उसी तरह पैदा हुए हैं।

हमें सजग व सचेत रहना चाहिए कि हम जन्म की यह अवस्था हमारे पूरे जीवन पर आच्छादित न हो जाए। प्रेम देना बहुत सुंदर अनुभव है क्योंकि देने में तुम सम्राट हो जाते हो। लेना बहुत तुच्छ अनुभव है क्योंकि तुम भिखारी हो जाते हो।

जहां तक प्रेम का प्रश्न है, भिखारी मत बनो, सम्राट रहो क्योंकि तुम्हारे भीतर यह गुणवत्ता असीम है। तुम जितना देना चाहो, दिए चले जा सकते हो।

तुम यह चिंता मत करना कि यह चुक जाएगा, कि एक दिन तुम पाओगे कि "हे प्रभु, मेरे पास तो प्रेम देने के लिए बचा ही नहीं।" प्रेम मात्रा नहीं, गुणवत्ता है, ऐसी गुणवत्ता ..जो देने से बढ़ती है और पकड़े रहने से मर जाती है।

अत: इसे पूरी तरह लुटा दो। चिंता मत लो, किसे..यह कंजूस व्यक्ति सोचता है: मैं उसे प्रेम दूंगा जिसमें अमुक गुण होंगे। तुम्हें पता ही नहीं कि तुम्हारे पास कितना प्रेम है..तुम भरे हुए बादल हो।

बादल यह चिंता नहीं लेता कि कहां बरसे। चट्टान हो कि उपवन या कि सागर– कोई परवाह नहीं। यह स्वयं को हल्का करना चाहता है और वह निर्भारता ही विश्रांति है।

CamScanner

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | PRADESH | | COMMERCE AND EDUCATION | | | | | | | | |
| 15 | UTTAR PRADESH | VARANASI | SHRI RAM P.G. COLLEGE OF COMMERCE AND EDUCATION | ISHIKA JAISWAL | KAMESHWAR NATH JAISWAL | FEMALE | 4/25/2003 | B.COM-2 | COMMERCE | ishikajais890@gmail.com | 9305464595 |
| 16 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Shivam Maurya | Suresh Maurya | M | | | | | 9453220174 |
| 17 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Vishwash Srivastava | Vinay Kumar Srivastava | M | | | | | 8887952497 |
| 18 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Vikash Verma | Shivmohan Verma | M | | | | | 7860680012 |
| 19 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Aditya Kumar Kashyap | Jagdhari | M | | | | | 8127218144 |
| 20 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Akash Maurya | Deenanath Maurya | M | | | | | 7785008030 |
| 21 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Akash Singh | Ashwini Kumar | M | | | | | 9305799974 |
| 22 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Dipanshu Singh | Sanjeev Kumar Singh | M | | | | | 7985638821 |
| 23 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Gaurav Upadhayay | Jyoti Shankar Upadhayay | M | | | | | 7269091924 |
| 24 | UTTAR PRADESH | VARANASI | U.P.College, Varanasi | Prince Patel | Rajendra Prasad Patel | M | | | | | 7084249797 |

CamScanner

9:58 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

चिन्मय! ध्यान का प्रचार और प्रसार नहीं करना होता। प्रचार और प्रसार से ही तो सारी बातें झूठी हो गयी हैं। लोग तोते हो गये हैं। ध्यान का तो सिर्फ आचार करना होता है। प्रचार और प्रसार तो आचार के पीछे छाया की तरह चलते हैं।

मैं तुमसे यह नहीं कहता हूँ कि तुम जाओ और ध्यान का प्रचार करो, मैं तुमसे कहता हूँ——जाओ और ध्यान को जीओ। जोर जीने पर है। उस जीने में जो तुम्हें मिलेगा, जो गंध तुमसे उठेगी, वही अगर प्रचार बन जाए तो बन जाए, लेकिन चेष्टा से कोई प्रचार नहीं करना है। नहीं तो अक्सर यह हो जाता है कि लोग भूल ही जाते हैं कि ध्यान करना है, ध्यान का प्रचार करने में मजा लेने लगते हैं। असल में प्रचार करना इतना सस्ता और सरल है, ध्यान करना कठिन मालूम होता है। यह भूल ही जाते हैं कि अपना ध्यान हुआ या नहीं हुआ। दूसरे को ज्ञान देने का मजा ऐसा है। क्योंकि ज्ञान देने में तुम्हारे अहंकार की बड़ी तृप्ति होती है कि देखो, मैं ज्ञानी और तुम अज्ञानी। जब भी तुम किसीको ज्ञान देते हो, तुम ज्ञानी और वह अज्ञानी।

तो लोग ध्यान के प्रचार में लग जाते हैं, ध्यान के व्यवहार में नहीं। यह खतरा बहुत बार हो गया है। कितने ईसाई मिसनरी हैं दुनिया में! दस लाख ईसाई पादरी हैं सारी दुनिया में। ये भूल ही गये कि इनको क्राइस्ट होना हैं। ये क्राइस्ट के प्रचार में ही लगे हैं। ये भूल ही गये कि क्राइस्ट को भीतर बुलाना है। फुर्सत कहाँ? समय कहाँ? प्रचार से बचें तब! फिर प्रचार के बड़े–बड़े आयोजन किये जाते हैं। फिर प्रचार का शास्त्र निर्मित करना होता है।..

ध्यान का विश्वव्यापी प्रचार व प्रसार अत्यत जरूरी हो गया है। चिन्मय, तुम खतरनाक बात पूछ रहे हो। तुम कह रहे हो कि करना पड़ेगा! अत्यंत जरूरी हो गया है! लोगों को बदल कर रखना पड़ेगा! यही चलता रहा है इस दुनिया में। जब इस्लाम आया तो मुसलमानों ने कहा कि दुनिया को मुसलमान बना कर रखना पड़ेगा, इससे कम में काम नहीं चलेगा। ख्याल रखना, उनकी भी बड़ी अच्छी आकांक्षा। क्योंकि इस्लाम के बिना उद्धार कहाँ? अज्ञानी भटक रहे हैं–कोई हिंदू है, कोई ईसाई है, कोई यहूदी है, इन अज्ञानियों को सबको रास्ते पर लाना है। जरा उनकी

CamScanner

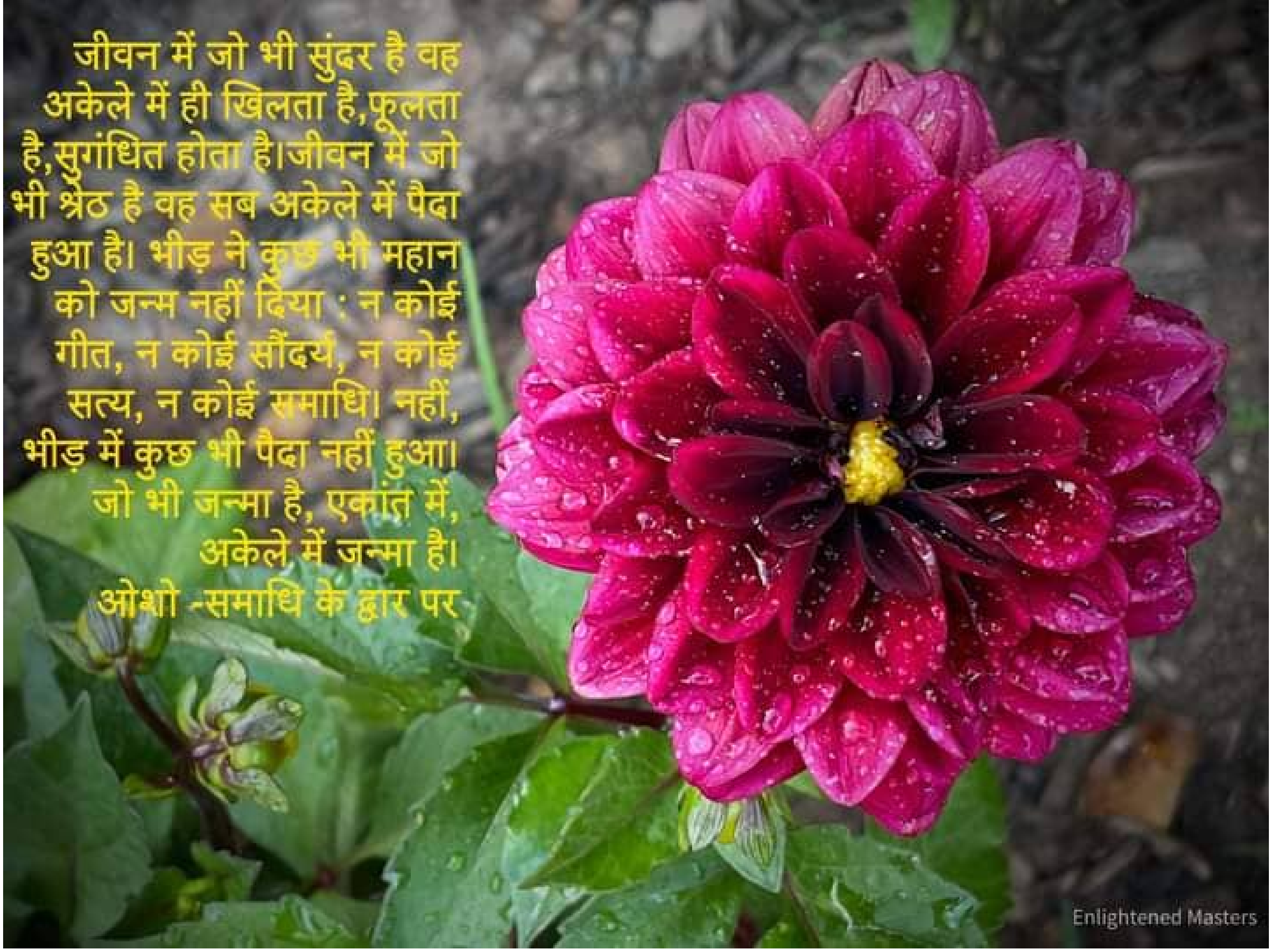
जीवन में जो भी सुंदर है वह
अकेले में ही खिलता है,फूलता
है,सुगंधित होता है।जीवन में जो
भी श्रेठ है वह सब अकेले में पैदा
हुआ है। भीड़ ने कुछ भी महान
को जन्म नहीं दिया : न कोई
गीत, न कोई सौंदर्य, न कोई
सत्य, न कोई समाधि। नहीं,
भीड़ में कुछ भी पैदा नहीं हुआ।
जो भी जन्मा है, एकांत में,
अकेले में जन्मा है।
ओशो -समाधि के द्वार पर
Enlightened Masters

CamScanner

9:51 am 84 KB/s 4G 90%

Osho Human Being To Be.In.God
8h ·

लाओत्से कहते हैं, "कोई मेरा अपमान नहीं कर सकता क्योंकि मैं सम्मान नहीं चाहता।" सम्मान पाना यही है.

लाओत्से कहता है, "मुझे कोई नहीं हरा सकता क्योंकि मैंने जीतने का विचार ही छोड़ दिया है। तुम मुझे कैसे हरा सकते हो? आप केवल उसे ही हरा सकते हैं जो जीतना चाहता है।" यह एक अजीब तथ्य है.

इस संसार में जो लोग सम्मान की इच्छा नहीं रखते, उन्हें सम्मान मिलता है। जो लोग सफलता नहीं चाहते उन्हें सफलता मिल जाती है, क्योंकि जो लोग सफलता नहीं चाहते वे पहले ही मान लेते हैं कि वे सफल हैं: आपको और क्या सफलता चाहिए? आप पहले से ही अपने भीतर के अस्तित्व से सम्मानित हैं: आप और क्या चाहते हैं? अस्तित्व ने तुम्हें जन्म देकर पहले ही तुम्हें सम्मान दिया है: तुम और किसका सम्मान चाहते हो? अस्तित्व ने तुम्हें पर्याप्त महिमा दी है। इसने तुम्हें जीवन दिया. इसने तुम्हें आँखों से नवाजा है - उन्हें खोलो और इन हरे पेड़ों, फूलों, पक्षियों को देखो। इसने तुम्हें कान दिए हैं - संगीत सुनो, झरने की फुहारें सुनो। इसने जागरूकता प्रदान की है ताकि आप बुद्ध बन सकें: आपको और क्या चाहिए? आपको पहले ही सम्मानित किया जा चुका है. अस्तित्व ने तुम्हें प्रमाणित किया है: तुम भिखारी की तरह किससे प्रमाणपत्र मांग रहे हो? जो आपसे सर्टिफिकेट मांगते हैं?

यह बहुत ही हास्यास्पद स्थिति है, दो भिखारी आमने-सामने एक-दूसरे से भीख मांग रहे हैं। तुम्हें कुछ भी कैसे मिल सकता है? दोनों भिखारी हैं. आप किससे सम्मान मांग रहे हैं? आप किसके सामने खड़े हैं? इस तरह आप अपना अपमान कर रहे हैं. और अपमान गहरा होगा.

संतोष का अर्थ है: देखो तुम्हारे पास क्या है!

ओशो

CamScanner

10:36 pm 0 KB/s VoLTE 4G 80%

चौरासी कोटि योनियों में भटकने के बाद जीवन-चक्र का आरा केवल एक बार ही मनुष्य-रूप में आता है और इस बार में मूर्च्छा एवं अज्ञानवश भगवद्स्वरूप होने की संभावना खो जाए और खो जाने की पूरी व्यवस्था है, तो क्या पुनः चौरासी कोटि योनियों में भटकना पड़ेगा? चौरासी कोटि योनियों का अभिप्राय कृपा करके समझाइए और हमें भय से मुक्त करिए।

भय से मुक्त मैं तुम्हें नहीं कर सकता, तुम ही कर सकते हो। भय वास्तविक है। तुम चाहोगे कि मैं तुमसे कह दूं कि नहीं जी, कोई चिंता की बात नहीं है, चौरासी कोटि योनियां वगैरह नहीं होतीं--ताकि तुम निर्भार हो जाओ और लग जाओ अपनी वासनाओं की दौड़ में फिर।

नहीं, यह मैं तुमसे नहीं कह सकता। ऐसा ही है। सत्य यही है कि यह जो वर्तुल है, यह घूम रहा है। तुमने अगर मनुष्य होने का लाभ न उठाया तो तुम मनुष्य होने का हक खो देते हो। यह सीधा-सा गणित है। आखिर मनुष्य होने का हक तुम्हें मिला है--किसी कारण से।

बुद्ध से किसी ने पूछा--एक युवक आया, संन्यस्त होना चाहता था--उसने पूछा कि आपको देखकर, राह पर आपको चलते देखकर, आपकी यह प्रसादपूर्ण कांति, आपका यह अपूर्व अपार्थिव सौंदर्य--मेरे मन में भी बड़ी गहन आकांक्षा उठी है। मगर मैंने कभी इसके पहले संन्यास का सोचा भी नहीं था। और मैं कभी धर्म इत्यादि में उत्सुक भी नहीं रहा। पंडित-पुरोहितों से मैं ज़रा दूर ही दूर रहा। मेरे पिता और मेरी भी मुझे अगर कभी ले जाना चाहते हैं तो मैं बच जाता हूं हजार बहाने करके। पंडितों की बातें सुन कर मुझे सिर्फ सिरदर्द हो जाता है और ऊब आती है। मगर आपको देखकर मैं बड़ा आंदोलित हो गया हूं और एक भाव उठता है भीतर कि मैं दीक्षित हो जाऊं। मगर यह मेरी समझ में नहीं आता कि अनायास! पीछे कोई सिलसिला नहीं है, कोई श्रृंखला नहीं है। अनायास! इतनी बड़ी बात होने की मेरे मन में कैसे कामना आ गई!

बुद्ध ने आंख बंद की और उसे कहा : "युवक, तुझे पता नहीं, तू पिछले जन्म में हाथी था। जंगल में आग लग गई थी और तू भागा जा रहा था। सारे पशु-पक्षी भागे जा रहे थे। थका-मांदा तू एक वृक्ष के नीचे थोड़ी देर विश्राम करने को खड़ा हो गया। तेरे पैर थक गए थे और एक पैर के नीचे

CamScanner

10:34 pm 188 KB/s 81%

(ओशो ) के प्रेमी
Aadi Yogi · 5d ·

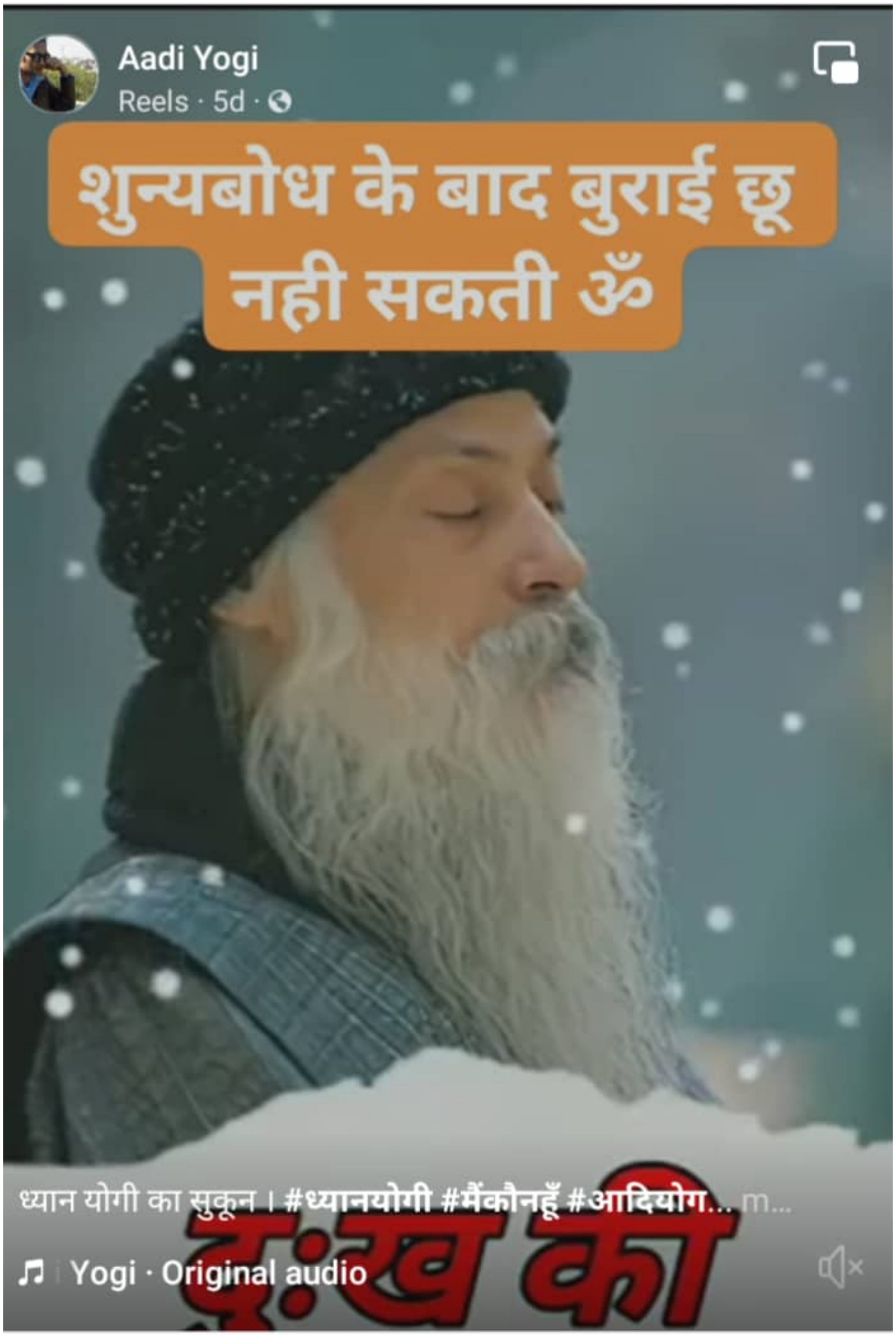


200 61 comments

Like Comment Send

CamScanner

10:34 pm
216 KB/s
81%
Mahbub Ahmad 16h
Suggested
FOLLOW
मन दौड़ता बहुत हैं
पहुँचता कहीं नहीं
Mars Seema
Right baat hai
Comment

CamScanner

2:39 pm
#kundalinienergy
कामवासना का रूपांतरण
–ओशो
तुम संपूर्ण रूप से
श्वास को बाहर फेंकने
You and 11 others
40 shares • 4.8K views
Like
You
Rajesh Kum
+26
StellarWaves Cry
Reels · 1 Sep ·
@northandsoul

CamScanner

**OSHO FRAGRANCE FRIENDS**

Swami Prem Ji Dhyanam · 18 Dec 2020 ·

❤️🌹 #धन्यवाद_माश्री, आज आपने बहुत कीमती बात समझाई कि हमारे #साक्षी_स्वभाव_की_उपलब्धि में क्या क्या #बाधाएँ है।जब हम दुख में होते है तो #साक्षी में नही हो सकते,और दुख के बहुत से कारण हो सकते है।जैसे #शिकायत_भाव,#अतीत और #भविष्य में होना इत्यादि।इसी कारण से
#आत्म_प्रकाश के होते हुए भी #मनुष्य_अज्ञान में जीता है जैसे दिये तले अंधेरा।और आज आपने जो #ओशोवाणी सुनवाई वह भी बहुत अदभुद है।#एकाग्रता_और_साक्षी_में_भेद,#शक्ति_और_शांति।कितनी अद्भुत बात है शक्ति मिल जाये तो जरूरी नही की शांति भी मिल जाये,लेकिन #शांति_की_उपलब्धि से शक्ति अपने आप ही प्राप्त होती है।विशेष ध्यान विधि में #कठपुतली की तरह स्वयं को नाचते हुए,#संगीत की धुन पर गाते हुए,सुनते हुए #एकदम_साक्षी का सघन अनुभव हुआ।#सहस्रार पर सारी #ऊर्जा का #सुनहरा_फूल लिए #शून्य_आकाश में गूंजती #प्रकाशित_शांति में #समाधिस्थ हुआ। इस गहन #साक्षीबोध की #अनुभूति के लिए बहुत बहुत #अहोभाव सहित #प्रेम_नमन,💝 #जय_ओशो 💝 🌹🙏

CamScanner

2:30 pm 50 KB/s 43%

#सहस्रार

Top Latest Video Reels

**OSHO FRAGRANCE FRIENDS**

Swami Prem Ji Dhyanam · 21 Jan ·

🕉❤🌹 #धन्यवाद_प्रभु,प्रभु की पगडंडियां साधना शिविर के #शुभारंभ पर आपको #कोटि_कोटि प्रेम नमन।आज के सत्र की शुरुआत करते हुए आपने कहा #प्रभु_मंदिर में प्रवेश के चार #द्वार है। करुणा,मैत्री,प्रमुदिता और उपेक्षा।और ये तभी हो सकता है जब हम साधना के असली #सूत्र को समझेंगे।साधना का सूत्र है, #अप्रमाद। आज के सूत्र #अकाम को समझाते हुए आपने कहा,बच्चे के #जन्म से ही उसमे #हीनभावना की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।फिर #मृत्यु तक उसमे बाहर की दौड़ बनी रहती है।#ओशो ने अकाम को और स्पष्ट समझाते हुए कहा,#मनुष्य एक ऊर्जा है। काम मनुष्य की सर्वाधिक #महत्वपूर्ण ऊर्जा का नाम है।#ऊर्जा बाहर बहती है तो #काम बनती है, और भीतर #उर्ध्वगामी हो तो #अकाम बनती है।धर्म का बाहर से कोई भी संबंध नहीं है।फिर आपने सुंदर #मूलबंध ध्यान प्रयोग द्वारा ऊर्जा को #जागृत करके #सहस्रार पर स्थित करके भीतर के #संगीत में निमज्जित कर #समाधि में डूबो दिया।बहुत बहुत #अहोभाव सहित #प्रेम_नमन 💝 #जय_ओशो 💝 🌹🙏🕉

CamScanner

3:04 pm 330 KB/s 33%





# Food vs. Sex: Why Some Female Spiders Eat Males Before Mating

News By Megan Gannon published April 23, 2014

Aggressive female wolf spiders of the species Lycosa hispanica are more likely than their docile counterparts to cannibalize suitors before sex. (Image credit: Eva de Mas)

Certain female spiders are infamous for eating their partners after sex, but some actually pounce on suitors, fangs first, before mating even occurs.

CamScanner

3:01 pm 14 KB/s 34%

मैं काटा जा रहा हूँ मारा जा रहा हूँ
और खाया जा रहा हूँ।
यह भी भूल जाता है।
आश्चर्यजनक है।
लेकिन अगर हम अपने को भी समझें,
तो आश्चर्यजनक नहीं मालूम होगा।
वह कीड़ा है, इससे क्या फर्क पड़ता है ?
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
वही स्थिति मनुष्य की है।
वह जानता है, भलीभाँति पहचानता है।
फिर वासना पकड़ लेती है,
फिर वासना पकड़ लेती है।
वासना के बाद अनुभव भी होता है कि
व्यर्थ है, कोई अर्थ नहीं है।
लेकिन उस व्यर्थता के बोध का
कोई लाभ नहीं होने वाला है,
क्योंकि जब तक बेहोशी न टूटे,
वह फिर आ जायेगा ;
जिसको व्यर्थ कहा, वह फिर सार्थक हो जायेगा।
इसलिए ऋषि यह नहीं कहते कि उसे दबाओ।
वे कहते हैं, इतने जागो,
होश की इतनी अग्नि पैदा करो,
द फायर आफ अवेकनिंग,
कि उसमें सब दग्ध हो जाए।
और जब कामवासना दग्ध हो जाती है,
तो और शेष वासनाएँ अपने आप दग्ध हो जाती हैं।
यह कोई फ्रायड की नयी खोज नहीं है कि
कामवासना सब वासनाओं का केन्द्र है।
यह तो ऋषि सदा से जानते रहे हैं।
यह जिन्होंने भी खोज की है मनुष्य की अन्तरात्मा में,
वे सदा से जानते रहे हैं कि
बाकी सारी वासनाएँ कामवासना से ही पैदा होती हैं।

निर्वाण उपनिषद - ओशो

CamScanner

3:01 pm 2 KB/s VoLTE 4G 34%

सारी वासनाएँ कामवासना से ही पैदा होती हैं।
अफ्रीका में एक मकोड़ा होता है।
जब भी नर मकोड़ा मादा
मकोड़े के साथ सम्भोग में जाता है,
इधर मकोड़ा सम्भोग शुरू करता है,
उधर मादा उस मकोड़े के शरीर को
खाना शुरू कर देती है।
एक ही सम्भोग कर पाता है वह मकोड़ा,
क्योंकि वह सम्भोग करता रहता है और
मादा उसके शरीर को खाती चली जाती है।
वैज्ञानिक जब उसके अध्ययन में थे,
तब बड़े हैरान हुए कि
क्या उस मकोड़े को यह भी पता नहीं चलता कि
मैं मारा जा रहा हूँ खाया जा रहा हूँ
और नष्ट किया जा रहा हूँ !
मकोड़ा सम्भोग के बाद मुर्दा ही गिरता है।
उसकी लाश को मादा खा जाती है पूरा।
बस, एक ही सम्भोग कर पाता है।
दूसरे मकोड़े यह देखते रहते हैं,
लेकिन जब उनकी सम्भोग की वृत्ति जगती है
तब वे भूल जाते हैं कि मौत में उतर रहे हैं।
तो शरीर शास्त्रियों ने उस मकोड़े का
बहुत अध्ययन कर के पता लगाया कि
उसके शरीर में बड़ी गहरी विषाक्तता है।
जब कामवासना पकड़ती है उसको,
तो उसे इतना भी होश नहीं रह जाता कि
मैं काटा जा रहा हूँ मारा जा रहा हूँ
और खाया जा रहा हूँ।
यह भी भूल जाता है।
आश्चर्यजनक है।
लेकिन अगर हम अपने को भी समझें,
तो आश्चर्यजनक नहीं मालूम होगा।
वह कीड़ा है, इससे क्या फर्क पड़ता है ?

CamScanner

5:23 pm 0 KB/s 43%

## Description

TV Show: Dil Sambhal Jaa Zara (2017)
Singer(s): Yasser Desai And Arijit Singh
Lyricist(s): Shakeel Azmi
Composer(s): Harish Sagane
Music Director(s): Harish Sagane
Genre(s): Love
Music Label: © Star Plus

This Song lyrics

Jeene Bhi De Duniya Humme,
Ilzaam Na Laga,
Ek Baar To Karte Hai Sab,
Koi Haseen Khata..

Warna Koi Kaise Bhala,
Chahe Kisi Ko Bepanah,
Aye Zindagi Tuhi Bata,
Kyun Ishq Hai Gunaah...

Jeene Bhi De Duniya Humme,
Ilzaam Na Laga,
Ek Baar To Karte Hai Sab,
Koi Haseen Khata..

Khud Se He Karke Guptgu,
Koi Kaise Jiye,
Ishq To Lazmi Sa Hai,
Zindagi Ke Liye

CamScanner

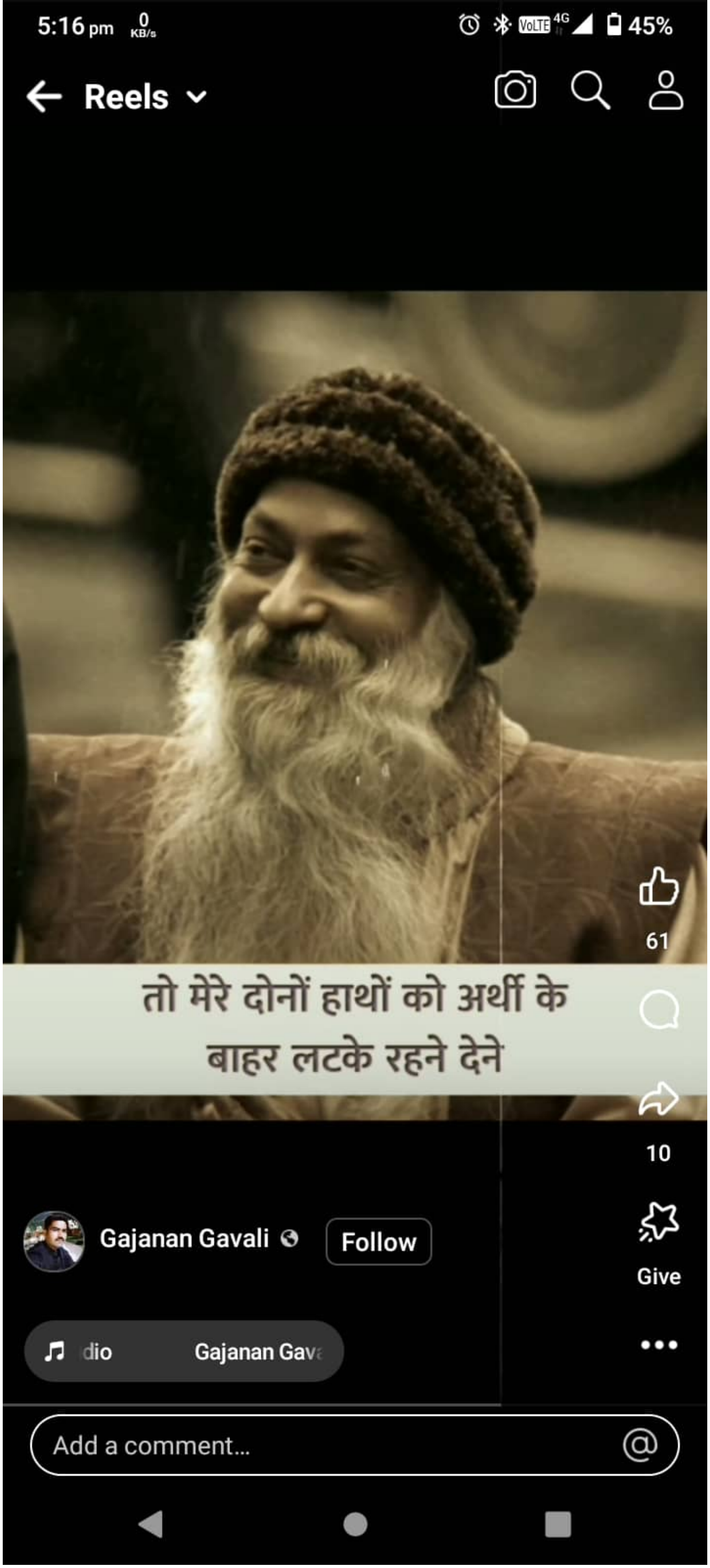
5:16 pm
45%
Reels
तो मेरे दोनों हाथों को अर्थी के
बाहर लटके रहने देने
61
10
Gajanan Gavali
Follow
Give
Add a comment...

CamScanner

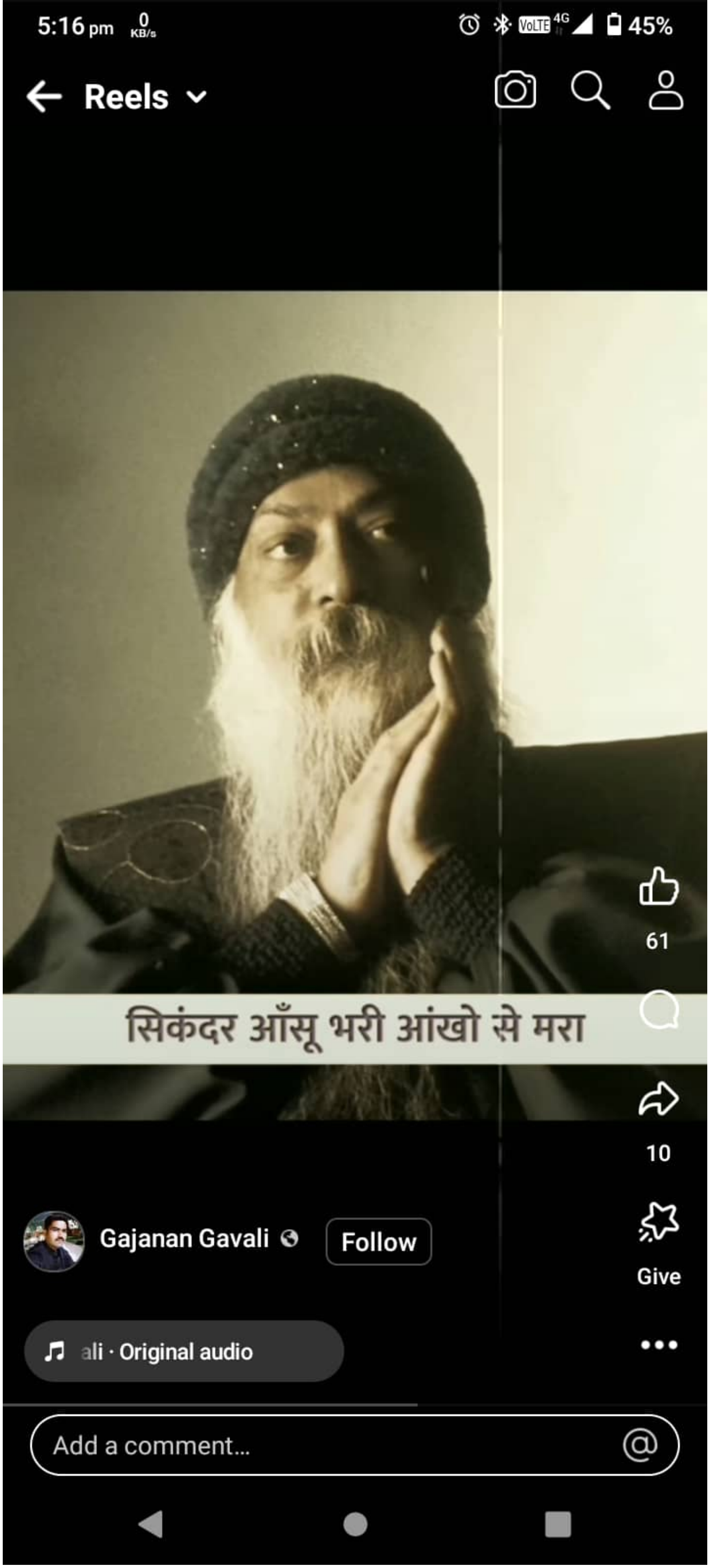
5:16 pm
45%
Reels
सिकंदर आँसू भरी आंखो से मरा
61
10
Give
Gajanan Gavali
Follow
ali · Original audio
Add a comment...

CamScanner

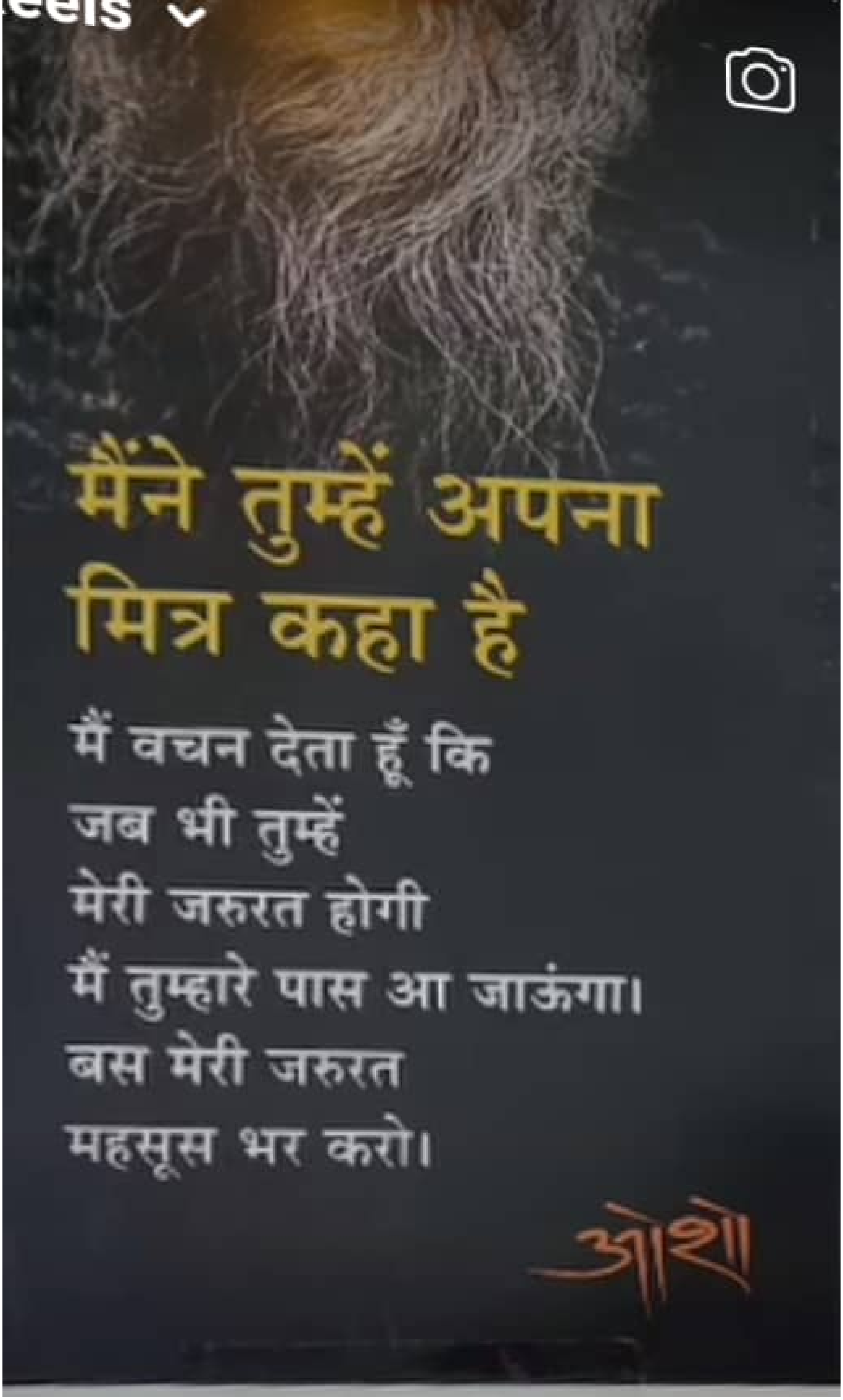
मैंने तुम्हें अपना
मित्र कहा है
मैं वचन देता हूँ कि
जब भी तुम्हें
मेरी जरुरत होगी
मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा।
बस मेरी जरुरत
महसूस भर करो।
ओशो

CamScanner

चौथा प्रश्न:

*ओशो, पिछले जन्म के*
*संस्कार इस जन्म में आदत*
*बन जाते हैं। इस जन्म की*
*आदतें अगले जन्म में फिर*
*संस्कार बन जाएंगी। फिर*
*अंत कहां है?*

अंत है इस बात में, इस सत्य को जान लेने में कि तुम संस्कार नहीं हो, तुम आदत नहीं हो। अंत है इस सत्य के प्रति जाग जाने में कि तुम पृथक हो। अंत है होश में। अंत है साक्षी भाव में।

निश्चित ही तुमने कल भी क्रोध किया था, परसों भी क्रोध किया था, आदत बन गयी। आज किसी ने जरा सा उकसा दिया, अंगारा तो था ही भीतर--रोज-रोज सम्हाला था--हो गया। राख भी जमी थी तो बस ऊपर जरा सी पर्त थी। किसी ने फूंक मार दी, पर्त झर गयी, अंगारा बाहर आ गया, तुम क्रोध से भर गए। आज तुम क्रोध करोगे, कल के लिए फिर और तैयारी हो गयी।

ऐसे रोज-रोज तुम अभ्यास बनाते जाओगे। संस्कार गहन होता जाएगा। और जितना संस्कार गहन हो जाएगा, उतने ही तुम यंत्रवत हो जाओगे। कोई भी तुम्हारी बटन दबा दे, तो क्रोध करवा दे। कोई भी तुम्हारी बटन दबा दे, तो तुम प्रसन्न हो जाओ। कोई भी झुककर नमस्कार कर ले, तुम्हारी प्रशंसा कर दे, तो तुम गदगद! कोई जरा गाली दे दे, तो तुम जार-जार! तुम यंत्रवत हो जाओगे। और बटनें लोगों को पता हो जाती हैं। सबको पता हैं एक-दूसरे की बटनें। कहां से दबा दो कि सब ठीक हो जाता है। कहां से दबा दो कि सब गड़बड़ हो जाता है। तुम मशीन हो क्या? या मनुष्य हो!

मनुष्य होने का इतना ही अर्थ है कि कोई तुम्हारी क्रोध की बटन दबाए चला जाए, लेकिन तुम कहते हो नहीं करना है, तो बटन दबती रहती है, वह आदमी थक जाता है, लेकिन तुम क्रोध नहीं करते। तुम कहते हो मैं अपना मालिक हूं। जब करना चाहूंगा करूंगा, जब न करना चाहूंगा नहीं करूंगा। प्रतिक्रिया और क्रिया में यही फर्क है। प्रतिक्रिया में दूसरा मालिक है, तुम नहीं। और क्रिया में तुम मालिक हो, दूसरा नहीं।

5:05 pm 0 KB/s 47%

google.com/search?q=अं

Google

ओशो तुम मशीन हो क्या या मनुष्य हो

All Videos News Shopping Images Maps

हिंदी में खोजें

ओशो तुम मशीन हो क्या या मनुष्य हो

इसे सुनें

तुम मशीन हो क्या? या मनुष्य हो! मनुष्य होने का इतना ही अर्थ है कि कोई तुम्हारी क्रोध की बटन दबाए चला जाए, लेकिन तुम कहते हो नहीं करना है, तो बटन दबती रहती है, वह आदमी थक जाता है, लेकिन तुम क्रोध नहीं करते। तुम कहते हो मैं अपना मालिक हूं।

https://www.osho.com › osho-talks

सुख – आदमी – जीवन? – OSHO ऑनलाइन लाइब्रेरी

About featured snippets Feedback

## Videos

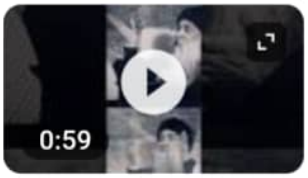


Are you a machine. तुम मशीन हो क्या ? by osho hindi

YouTube · Anant ki Pukar

3 weeks ago

तुम मशीन हो क्या?#osho #oshomeditation...

CamScanner

परमात्मा शब्द नही जो तुम्हे
किताब में मिलेगा..
परमात्मा मूर्ति नही जो तुम्हे
मंदिर में मिलेगा..!
परमात्मा इंसान नही जो तुम्हे
समाज में मिलेगा..
"परमात्मा जीवन है जो तुम्हे..
अपने भीतर मिलेगा"

CamScanner

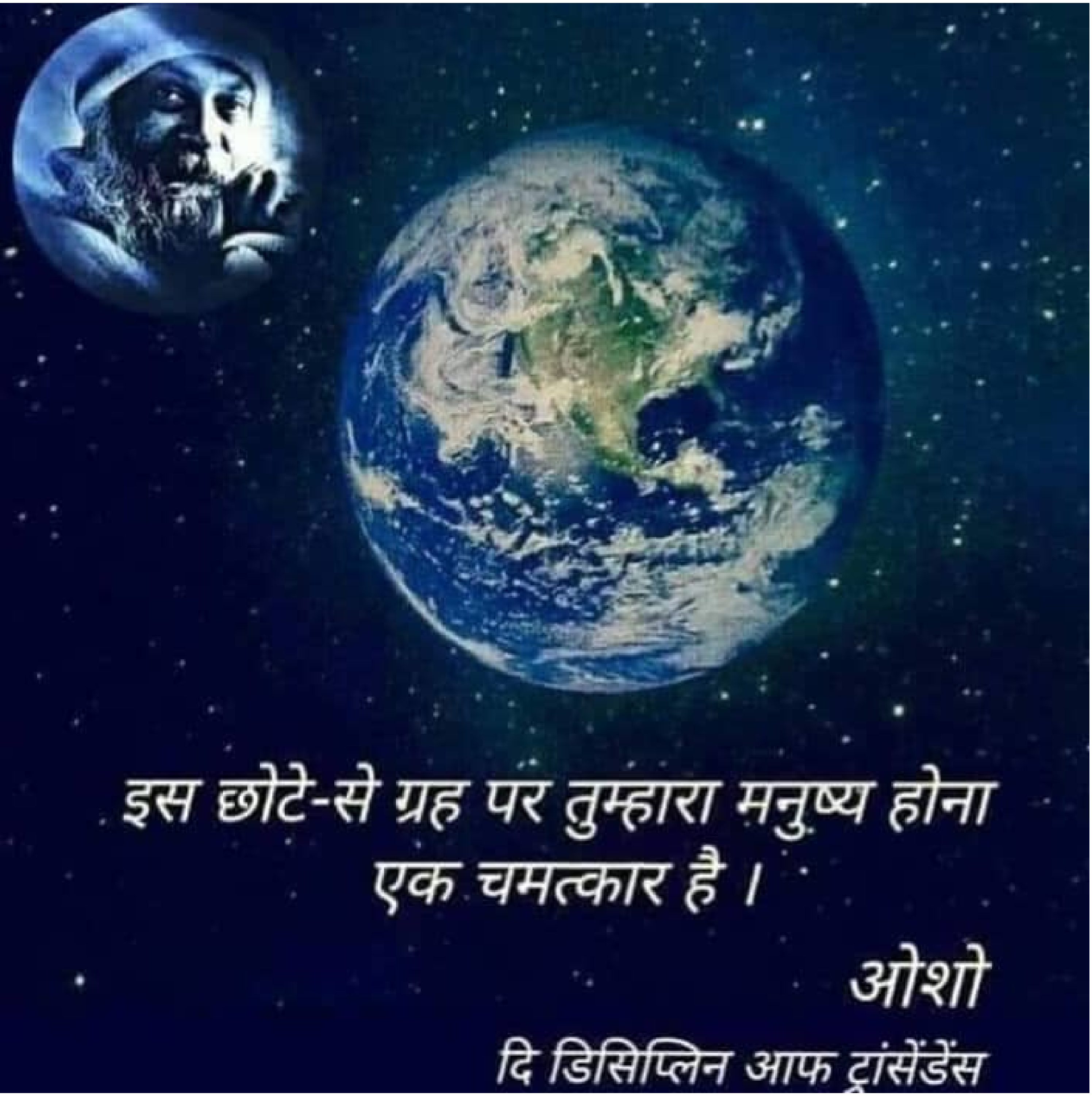


CamScanner

!!...महामुद्रा...!!
शुद्धता प्रेम की है पर....
ज्ञान अशुद्ध कर जाता है...
छाया पूर्णता की है पर...
शून्य पागल कर जाता है...
सारा प्रणय निवेदन द्वैत का है पर...
अद्वैत घायल कर जाता है...

CamScanner

CamScanner

3:36 pm 58 KB/s 4G 30%

Like Comment

Osho Osho

1h ·

मौन का यह अर्थ नहीं कि ओंठ बंद हों। मौन का अर्थ है, भीतर मन का चलन-हलन बंद हो, भीतर वहां चुप्पी हो। जब भी मौका मिले मौन हो जाएं। जिस क्षण आप मौन में हैं उसी क्षण आप मंदिर में हैं। चाहे फिर वह दुकान हो, चाहे फिर वह बाजार हो, चाहे वह दफ्तर हो। जीवन का अधिकतम क्षण मौन में व्यतीत हो, इसका स्मरण रखें।

और आप क्रमश: एक नये आदमी को अपने भीतर आते हुए अनुभव करेंगे। क्रमश: आपके भीतर एक नये मनुष्य का जन्म होने लगेगा। आप बिलकुल नई चेतना को अनुभव करेंगे। और आपके भीतर जड़ता टूटनी शुरू हो जाएगी। एक समय आएगा आपके भीतर कोई जड़ता नहीं होगी और केवल चैतन्य रह जाएगा।

जिस क्षण व्यक्ति पूर्ण मौन में स्थापित अपनी चेतना को प्रवेश करता है उसी क्षण उसके भीतर शरीर विलीन हो जाता है और केवल आत्मा का अनुभव शेष रह जाता है।
जिस क्षण आप पूरे मौन में हैं उसी क्षण आप संसार में नहीं हैं परमात्मा में हैं। इसको मैं संन्यास कहता हूं।
🌹ओशो🌹

CamScanner

मत दो किसी को दुःख। हरि डाल भी मत तोड़ो वृक्ष से। क्योंकि वहां भी परमात्मा का ही वास है; एक ही जीवन व्याप्त है। किसी को दुःख न दो, पीड़ा न दो। क्योंकि इस तरफ पीड़ा दिए चले जाओ और वहां मंदिर में प्रार्थना किए चले जाओ, तो प्रार्थना कभी पूरी नही होगी। झूठी है, झूठी ही रहेगी।

ओशो

CamScanner

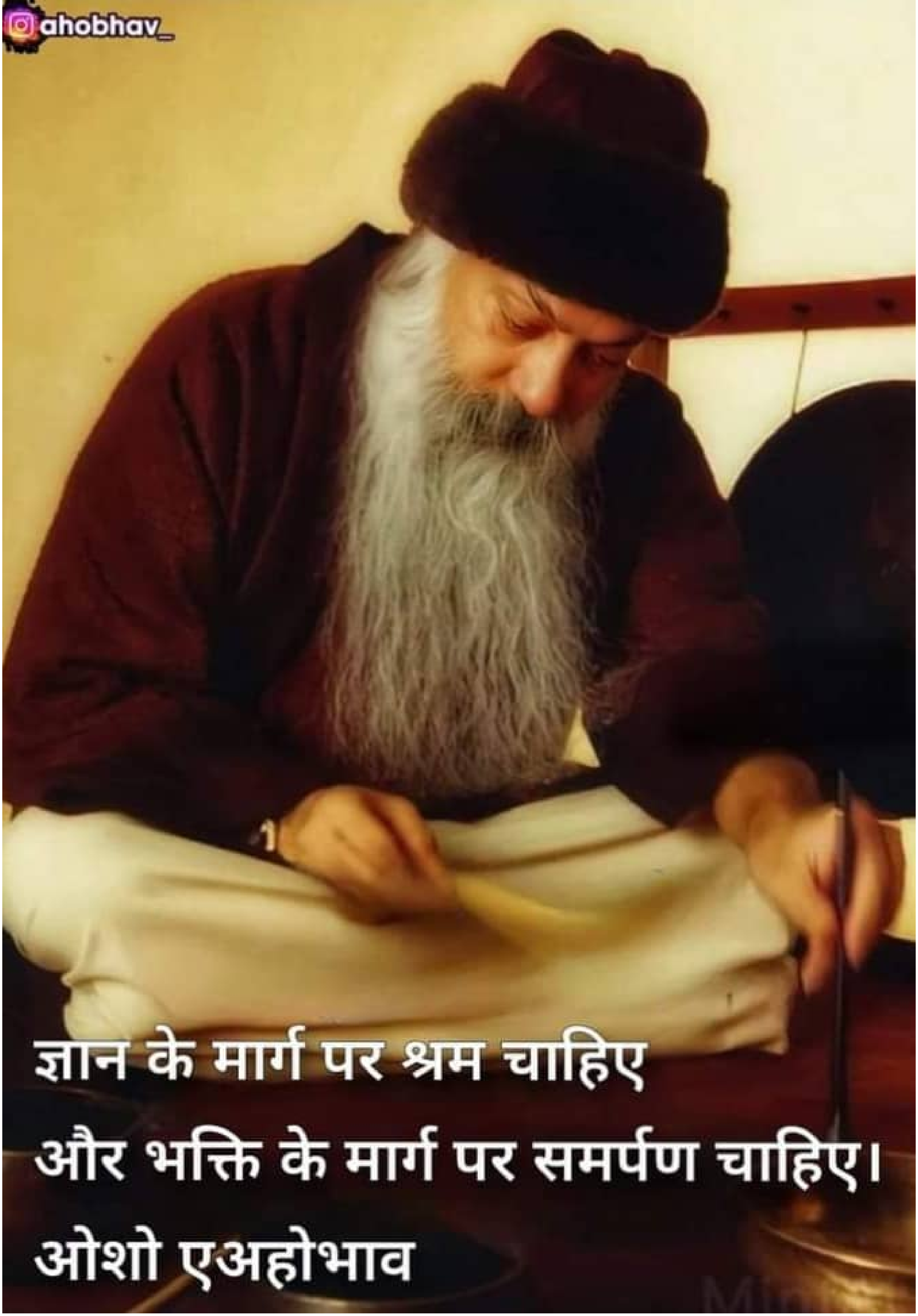


CamScanner

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**
Pradeep Shukla · 2d

जब सोमनाथ के मंदिर को वि ध्वंस करने के लिए मोहम्मद गजनवी सोमनाथ पहुंचा तो वहां के राजगुरु आचार्य ब्रह्मभट्ट ने राजा से कहा कि एक राजा विष्णु का अवतार होता है और मैं इस ज्योतिर्लिंग शिवलिंग की ज्योति आपके शरीर में प्रत्यारोपित करता हूँ...

उसके पश्चात आचार्य ने राजा को वहां से प्रस्थान करने को कहा...

तत्पश्चात जब गजनी ने मंदिर में प्रवेश किया तो आचार्य ने गजनी को कहा कि तुम अपने गुर्ज को मेरे मस्तक पर दे Marो क्योंकि आचार्य ब्रह्मभट्ट को ज्ञात था कि मस्तिष्क के अंदर जो रक्त रहता है उसे ब्रह्मकपाली कहते हैं और ये रक्त बहुत ही पवित्र होता है, यदि गजनी ने मेरे शीश पर गुर्ज को मारा तो महादेव का रक्त स्नान के अभिषेक द्वारा विसर्जन हो जाएगा और एक बार विसर्जन होने के बाद कोई भी मुर्ती या पत्थर जिसमें प्राण प्रतिष्ठा कि गई हो वो मिट्टी के समान हो जाता है।

ऐसे ही नहीं शेष रहा है हमारा पवित्र सनातन धर्म...
इसकी रक्षा के लिए आचार्य ब्रह्मभट्ट जैसी लाखों विभूतियों ने अपनी आहुति दी है...

हर-हर महादेव,जय महाकाल,जय गोविंदा

CamScanner

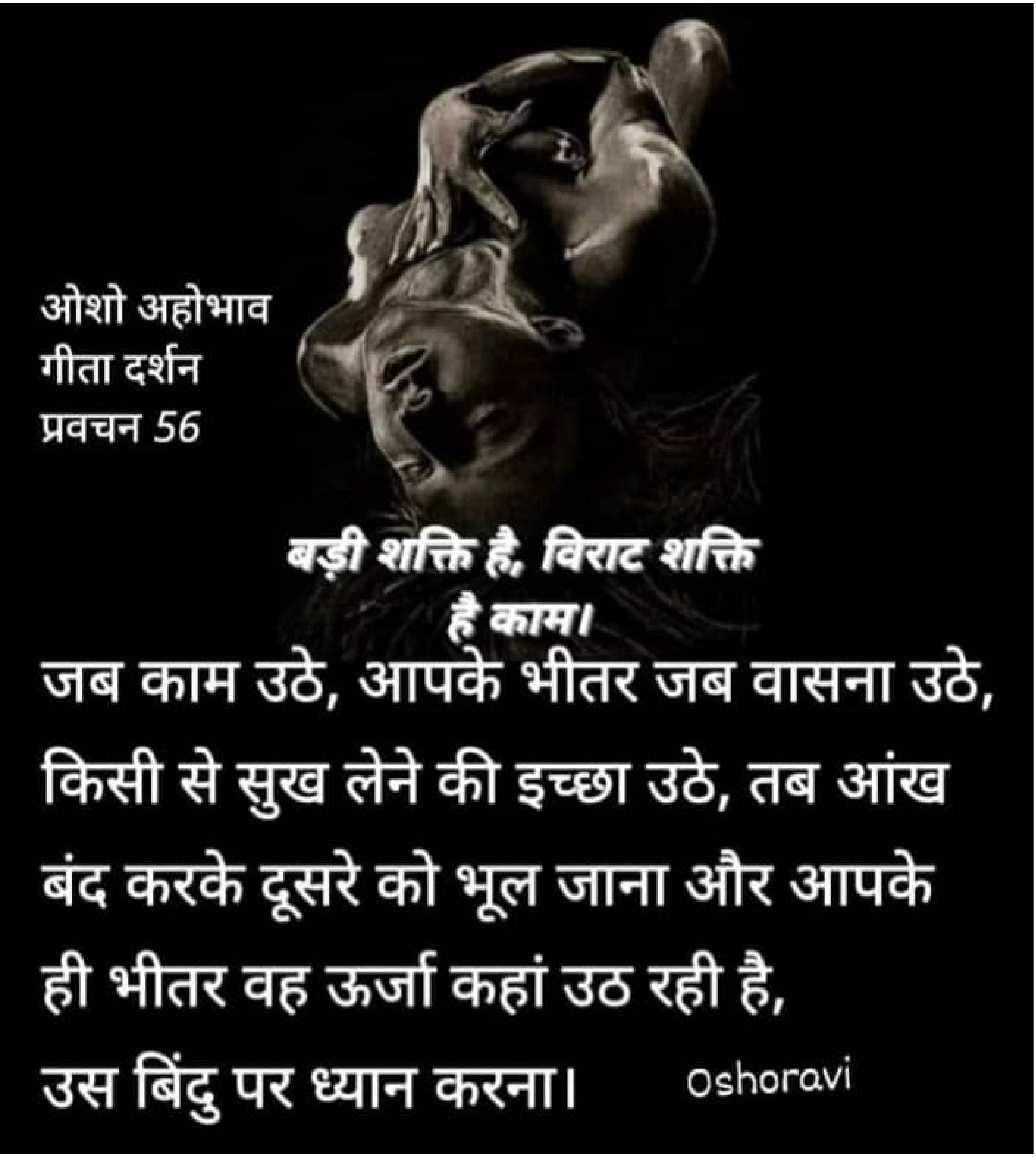
ओशो अहोभाव
गीता दर्शन
प्रवचन 56
बड़ी शक्ति है, विराट शक्ति
है काम।
जब काम उठे, आपके भीतर जब वासना उठे,
किसी से सुख लेने की इच्छा उठे, तब आंख
बंद करके दूसरे को भूल जाना और आपके
ही भीतर वह ऊर्जा कहां उठ रही है,
उस बिंदु पर ध्यान करना।
Oshoravi

CamScanner

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

अहोभाव · 8m ·

अहोभाव

जब भी मन में काम उठे- तो काम एक ऊर्जा है,
एनर्जी है, बड़ी शक्ति है।
इसीलिए तो प्रकृति काम ऊर्जा को संतति के लिए,
जन्म के लिए उपयोग में लाती है।
बड़ी शक्ति है, विराट शक्ति है काम।
ओशो
गीता दर्शन प्रवचन 56

CamScanner

ओशो अहोभाव
गीता दर्शन
प्रवचन 56

जब काम उठे, आपके भीतर जब वासना उठे, किसी से सुख लेने की इच्छा उठे, तब आंख बंद करके दूसरे को भूल जाना और आपके ही भीतर वह ऊर्जा कहां उठ रही है, उस बिंदु पर ध्यान करना।

CamScanner

10:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 10%

और यही उचित है। समुराई संसार के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में गिने जाते है। दुनिया में समुराई का कोई मुकाबला नहीं है। वह भिन्न ही किस्म का मनुष्य है, भिन्न ही प्राणी है; क्योंकि उसका केंद्र भिन्न है।

वे कहते है कि जब तुम युद्ध करते हो तो समय नहीं रहता है। और मन को समय की जरूरत पड़ती है। वह हिसाब-किताब करता है। अगर तुम पर कोई आक्रमण करे और उसे समय तुम्हारा मन सोच-विचार करने लगे कि कैसे बचाव किया जाए, तो तुम गए; तुम अपना बचाव न कर सकोगे। समय नहीं है; तुम्हें तब समयातित में काम करना होगा। और मन समयातित में काम नहीं कर सकता है। मन को समय चाहिए। मन को समय चाहिए। चाहे कितना भी थोड़ा हो, मन को समय चाहिए।

नाभि के नीचे एक केंद्र है जिसे हारा कहते है; यह हारा समयातित में काम करता है। अगर चेतना को हारा पर स्थिर किया जाए और तब योद्धा लड़े तो वह युद्ध प्रज्ञा से लड़ा जाएगा। मस्तिष्क से नहीं। हारा पर स्थिर योद्धा आक्रमण होने के पूर्व जान जाता है के आक्रमण होने वाला है। यह हारा का एक सूक्ष्म भाव है। बुद्धि का नहीं। यह कोई अनुमान नहीं है; यह टेलीपैथी है। इसके पहले कि तुम उस पर आक्रमण करो, उसके पहले कि तुम उस पर आक्रमण करने की सोचो। वह विचार उसे पहुंच जाता है। उसके हारा पर चोट लगती है और वह अपना बचाव करने को तत्पर हो जाता है। वह आक्रमण होने के पहले ही अपने बचाव में लग जाता है। उसने अपना बचाव कर लिया।

कभी-कभी जब दो समुराई आपस में लड़ते है तो हार-जीत मुश्किल हो जाती है। समस्या यह होती है कि कोई किसी को नहीं हरा सकता। किसी को विजेता नहीं घोषित कर सकता। एक तरह से निर्णय असंभव है; क्योंकि आक्रमण ही नहीं हो सकता। तुम्हारे आक्रमण करने के पहले ही वह जान जाता है।

🙏🌹💖ओशो💖🌹🙏
विज्ञान भैरव तंत्र, भाग—2
प्रवचन—29

CamScanner

10:06 pm 0 KB/s 10%
3h ·

मन को बदला जा सकता है। तंत्र कहता है कि शरीर में सात चक्र है और मन को उनमें से किसी भी चक्र पर स्थिर किया जा सकता है। प्रत्येक चक्र का अलग गुण है। और अगर तुम एक विशेष चक्र पर एकाग्र करोगे तो तुम भिन्न ही व्यक्ति हो जाओगे।

जापान में एक सैनिक समुदाय हुआ है, जो भारत के क्षत्रियों जैसा है। उन्हें समुराई कहते है, उन्हें सैनिक के रूप में प्रशिक्षित किया जाता है। और उन्हें पहली सीख यह दी जाती है कि तुम अपने मन को सिर से उतार कर नाभि-केंद्र के ठीक दो इंच नीचे ले आओ। जापान में इस केंद्र को हारा कहते हे। समुराई को मन को हारा पर लाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। जब तक समुराई हारा को अपने मन का केंद्र नहीं बना लेना है तब तक उसे युद्ध में भाग लेने की इजाजत नहीं है।

और यही उचित है। समुराई संसार के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में गिने जाते है। दुनिया में समुराई का कोई मुकाबला नहीं है। वह भिन्न ही किस्म का मनुष्य है, भिन्न ही प्राणी है; क्योंकि उसका केंद्र भिन्न है।

वे कहते है कि जब तुम युद्ध करते हो तो समय नहीं रहता है। और मन को समय की जरूरत पड़ती है। वह हिसाब-किताब करता है। अगर तुम पर कोई आक्रमण करे और उसे समय तुम्हारा मन सोच-विचार करने लगे कि कैसे बचाव किया जाए, तो तुम गए; तुम अपना बचाव न कर सकोगे। समय नहीं है; तुम्हें तब समयातित में काम करना होगा। और मन समयातित में काम नहीं कर सकता है। मन को समय चाहिए। मन को समय चाहिए। चाहे कितना भी थोड़ा हो, मन को समय चाहिए।

नाभि के नीचे एक केंद्र है जिसे हारा कहते है; यह हारा समयातित में काम करता है। अगर चेतना को हारा पर स्थिर किया जाए और तब योद्धा लड़े तो वह युद्ध प्रज्ञा से लड़ा जाएगा। मस्तिष्क से नहीं। हारा पर स्थिर योद्धा आक्रमण होने के पूर्व जान जाता है के आक्रमण होने वाला है। यह हारा का एक सूक्ष्म भाव है। बुद्धि का नहीं। यह कोई अनुमान नहीं है; यह टेलीपैथी है। इसके पहले कि तुम उस पर आक्रमण करो, उसके पहले कि तुम उस पर आक्रमण करने की सोचो। वह विचार उसे पहुंच जाता है। उसके हारा पर चोट लगती है और वह अपना बचाव

CamScanner

10:04 pm 0 KB/s VoLTE 4G 10%
facebook

तू समझता नहीं है रे नरेन्द्र। जो जमा किया है, उसका निपटारा कर लेना जरूरी है। नहीं तो उसके निपटारे के लिए फिर से आना पड़ेगा। तो जो हो रहा है, उसे हो जाने देना उचित है। उसमें कोई भी बाधा डालनी उचित नहीं है।"
तो विवेकानंद बोले -
"इतना ना सही, इतना ही कह दें कम से कम कि गला इस योग्य तो रहे कि जीते जी पानी जा सके, भोजन किया जा सके ! हमें बड़ा असह्य कष्ट होता है,
आपकी यह दशा देखकर ।"
रामकृष्ण परमहंस बोले
"आज मैं कहूंगा।"

जब सुबह वे उठे, तो जोर जोर से हंसने लगे
और बोले -
"आज तो बड़ा मजा आया । तू कहता था ना, माँ से कह दो। मैंने कहा माँ से,
तो मां बोली -
"इसी गले से क्या कोई ठेका ले रखा है ? दूसरों के गलों से भोजन करने में तुझे क्या तकलीफ है ?"

हँसते हुए रामकृष्ण बोले -
"तेरी बातों में आकर मुझे भी बुद्धू बनना पड़ा ! नाहक तू मेरे पीछे पड़ा था ना और यह बात सच है, जाहिर है, इसी गले का क्या ठेका है ? तो आज से जब तू भोजन करे, समझना कि मैं तेरे गले से भोजन कर रहा हूं"।
फिर रामकृष्ण बहुत हंसते रहे उस दिन, दिन भर।
डाक्टर आए और उन्होंने कहा, आप हंस रहे हैं ? और शरीर की अवस्था ऐसी है कि इससे ज्यादा पीड़ा की स्थिति नहीं हो सकती !

रामकृष्ण ने कहा - "हंस रहा हूं इससे कि मेरी बुद्धि को क्या हो गया कि मुझे खुद खयाल न आया कि सभी गले अपने ही हैं। सभी गलों से अब मैं भोजन करूंगा ! अब इस एक गले की क्या जिद करनी है !"

CamScanner

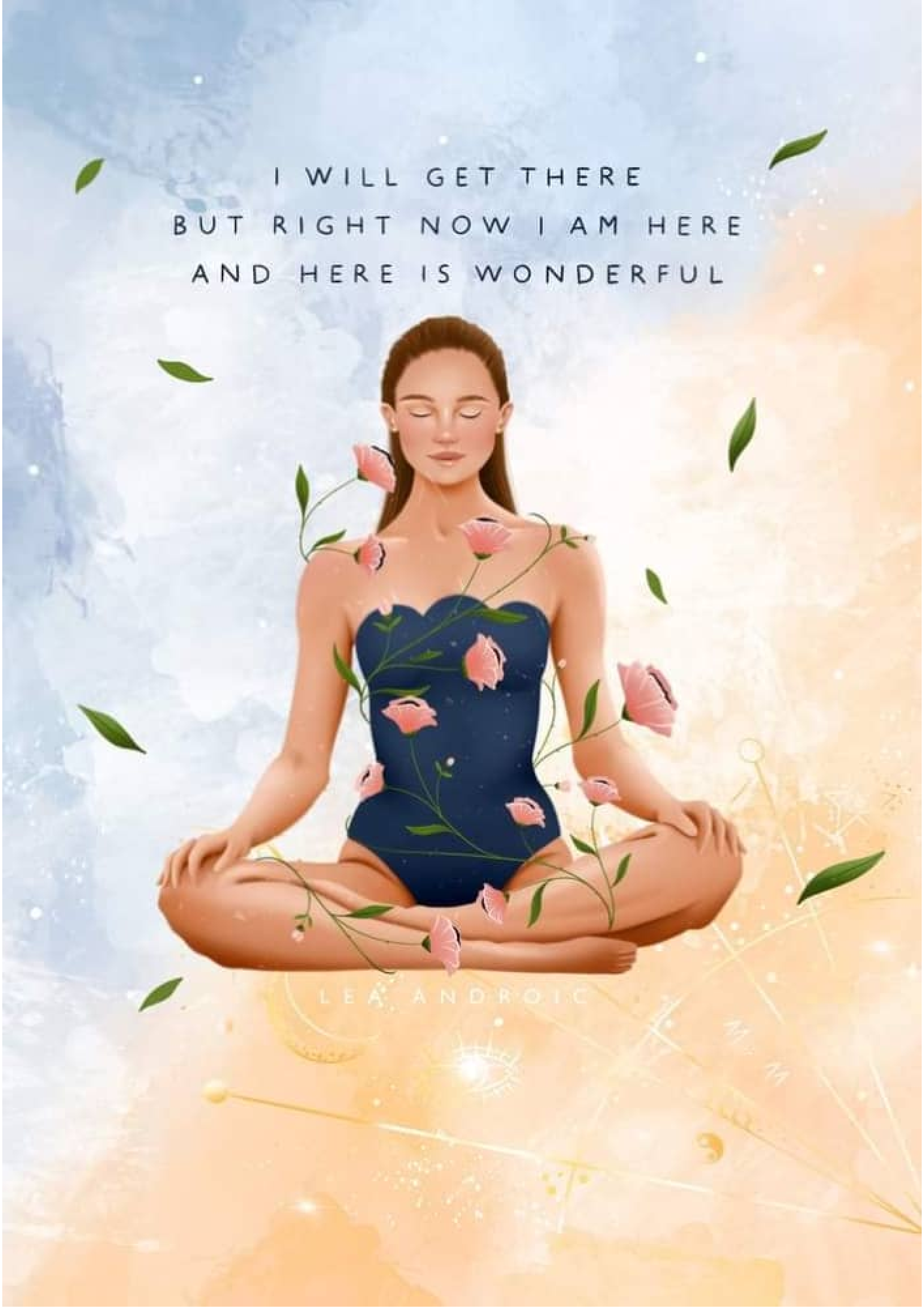
I WILL GET THERE
BUT RIGHT NOW I AM HERE
AND HERE IS WONDERFUL
LEA ANDROIC

CamScanner

10:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 91%

मैं आपको कहूं, किसी दिन आधा घंटे को सप्ताह में एक एकांत कमरे में बंद हो जाएं और आपका शरीर जो करना चाहे, करने दें। आप बहुत हैरान होंगे। हो सकता है, शरीर आपका नाचे। जो करना चाहे, करने दें। आप उसे बिलकुल न रोकें। और आप बहुत हैरान होंगे। हो सकता है, शरीर आपका नाचे। हो सकता है, आप कूदें। हो सकता है, आप चिल्लाएं। हो सकता है, आप किसी काल्पनिक दुश्मन पर टूट पड़ें। यह हो सकता है। और तब आपको पता चलेगा कि यह क्या हो रहा है! ये सारी ग्रंथियां हैं, जो दबी हुई हैं और मौजूद हैं और निकलना चाहती हैं, लेकिन समाज नहीं निकलने देता है और आप भी नहीं निकलने देते हैं।

ऐसा शरीर बहुत-सी ग्रंथियों का घर बना हुआ है और जो शरीर ग्रंथियों से भरा हुआ है, वह शरीर शुद्ध नहीं होता, वह भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। तो योग का पहला चरण होता है, शरीर-शुद्धि और शरीर-शुद्धि का पहला चरण है, शरीर की ग्रंथियों का विसर्जन। तो नयी ग्रंथियां तो बनाएं नहीं और पुरानी ग्रंथियां विसर्जन करने का उपाय करें। और उसके उपाय के लिए जरूरी है कि महीने में एक बार, दो बार अकेले कमरे में बंद हो जाएं और शरीर जैसा करना चाहे, करने दें। अगर कपड़े फेंककर और नग्न नाचने का मन हो, तो नाचें और सारे कपड़े फेंक दें।

और आप हैरान होंगे, आधा घंटे की उस उछलकूद के बाद आप बहुत रिलैक्स्ड, बहुत शांत, बहुत स्वस्थ अनुभव करेंगे। यह बात बहुत अजीब लगेगी, लेकिन आप बहुत शांत अनुभव करेंगे। और आपको बहुत हैरानी होगी कि यह शांति कैसे आ गयी?

आप जो व्यायाम करते हैं, या घूमने चले जाते हैं, उसके बाद जो आपको हलकापन लगता है, उसका कारण क्या है? उसका कारण यह है कि बहुत-सी ग्रंथियां उसमें विसर्जित होती हैं।

🌾ओशो🌾

10 1 comment • 3 shares
Like Comment Send Share

CamScanner

10:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 91%

समझ लीजिए, आप दफ्तर में हैं और मालिक ने कुछ कहा। आपको क्रोध तो आया, लेकिन आप मुट्ठियां नहीं भींच सकते। वह जो शक्ति पैदा हुई है, उसका क्या होगा? शक्ति नष्ट नहीं होती, स्मरण रखिए। कोई शक्ति नष्ट नहीं होती। अगर आपने मुझे गाली दी और मुझे क्रोध आ गया, लेकिन यहां इतने लोग थे कि मैं उसे प्रकट नहीं कर सका, न मैं दांत भींच सका, न मैं हाथ खींच सका, न मैं गाली बक सका, न मैं गुस्से में कूद सका, न मैं पत्थर उठा सका। तो उस शक्ति का क्या होगा, जो मेरे भीतर पैदा हो गयी? वह शक्ति मेरे शरीर के किसी अंग को क्रिपल्ड कर देगी। और उसको क्रिपल्ड करने में, उसको विकृत करने में व्यय हो जाएगी। एक ग्रंथि पैदा होगी।

शरीर की ग्रंथियों का मेरा मतलब यह है। शरीर में हमारे बहुत ग्रंथियां पैदा हो जाती हैं। और आप शायद हैरान होंगे, आप कहेंगे, ऐसी तो हमें कुछ ग्रंथियां पता नहीं हैं! तो मैं आपको एक प्रयोग करने को कहता हूं। आप देखें, फिर आपको पता चलेगा कि कितनी ग्रंथियां हैं।

क्या आपने कभी खयाल किया है कि अकेले किसी कमरे में आप जोर से दांत बिचकाने लगे हैं, या आईने में जीभ दिखाने लगे हैं, या गुस्से से आंख फाड़ने लगे हैं! और आप अपने पर भी हंसे होंगे कि यह मैं क्या कर रहा हूं! हो सकता है, स्नानगृह में आप नहा रहे हैं और आप अचानक कूदे हैं। आप हैरान होंगे कि मैं क्यों कूदा हूं? या मैंने आईने में देखकर दांत क्यों बिचकाए हैं? या मेरा जोर से गुनगुनाने का मन क्यों हुआ है?

मैं आपको कहूं, किसी दिन आधा घंटे को सप्ताह में एक एकांत कमरे में बंद हो जाएं और आपका शरीर जो करना चाहे, करने दें। आप बहुत हैरान होंगे। हो सकता है, शरीर आपका नाचे। जो करना चाहे, करने दें। आप उसे बिलकुल न रोकें। और आप बहुत हैरान होंगे। हो सकता है, शरीर आपका नाचे। हो सकता है, आप कूदें। हो सकता है, आप चिल्लाएं। हो सकता है, आप किसी काल्पनिक दुश्मन पर टूट पड़ें। यह हो सकता है। और तब आपको पता चलेगा कि यह क्या हो रहा है! ये सारी ग्रंथियां हैं, जो दबी हुई हैं और मौजूद हैं और निकलना चाहती हैं, लेकिन समाज नहीं निकलने देता है और आप भी नहीं निकलने देते हैं।

CamScanner

10:00 am 0 KB/s 91%

🟢ग्रंथियों का विसर्जन🟢

शरीर में जो भी कंपन हैं, वे मन के कंपन से पैदा होते हैं। मन का कंपन जितना कम होने लगता है, शरीर उतना थिर मालूम होने लगेगा। ये बुद्ध और महावीर की मूर्तियां, जो बिलकुल पत्थर जैसी मालूम होती हैं, ये आदमी भी बैठे होते, तो भी ऐसे ही मालूम होते थे। ये मूर्तियां ही पत्थर जैसी नहीं मालूम होतीं, इन आदमियों को भी आपने देखा होता, तो ये बिलकुल पत्थर जैसे मालूम होते। हमने इनकी पत्थर की मूर्तियां व्यर्थ ही नहीं बनायीं, उसके पीछे कारण था। ये बिलकुल पत्थर जैसे ही मालूम होने लगे थे। इनके भीतर कंपन विलीन हो गए थे। या कि कंपन सार्थक थे, जब उनकी जरूरत थी, होते थे; अन्यथा वे विलीन थे।

आप जब पैर हिला रहे हैं, तो आपके भीतर अशांति से जो एनर्जी पैदा हो रही है, जो शक्ति पैदा हो रही है, उसे निकालने का कोई रास्ता न पाकर, पैर में कंपित होकर वह निकल रही है। जब एक आदमी क्रोध में होता है, उसके दांत भिंच जाते हैं और मुट्ठियां बंध जाती हैं। क्यों? उसकी आंखों में खून उतर आता है। क्यों? आखिर मुट्ठियां बंधने से क्या प्रयोजन है? अगर आप अकेले में भी किसी पर क्रुद्ध होंगे, तो भी मुट्ठियां बंध जाएंगी। वहां तो कोई मारने को भी नहीं, जिसको आप मारें। लेकिन जो शक्ति क्रोध से पैदा हो रही है, उसका निष्कासन कैसे होगा? हाथ के स्नायु खिंचकर उस शक्ति को व्यय कर देते हैं।

सभ्यता ने बहुत दिक्कत पैदा कर दी है। असभ्य आदमी का शरीर हमसे ज्यादा शुद्ध होता है। एक जंगली आदमी का शरीर हमसे बहुत शुद्ध होता है, उसमें ग्रंथियां नहीं होतीं, क्योंकि उसके भावावेग वह सहज प्रकट कर देता है। लेकिन हम अपने भावावेगों को दबा लेते हैं।

समझ लीजिए, आप दफ्तर में हैं और मालिक ने कुछ कहा। आपको क्रोध तो आया, लेकिन आप मुट्ठियां नहीं भींच सकते। वह जो शक्ति पैदा हुई है, उसका क्या होगा? शक्ति नष्ट नहीं होती, स्मरण रखिए। कोई शक्ति नष्ट नहीं होती। अगर आपने मुझे गाली दी और मुझे क्रोध आ गया, लेकिन यहां इतने लोग थे कि मैं उसे प्रकट नहीं कर सका, न मैं दांत भींच सका, न मैं हाथ खींच सका, न मैं गाली बक सका, न मैं गुस्से में कह सका, न मैं पत्थर उठा सका। तो उस शक्ति का क्या होगा, जो मेरे

CamScanner

9:52 am 2 KB/s VoLTE 4G 92%

आपका डूबना तय है। क्योंकि अहंकार के आश्रय में किया गया कोई भी कर्म, अहंकार को ही पुष्ट करता है। और अहंकार ही संपूर्ण समस्याओं की जड़ है। क्या आप कीचड़ से कीचड़ धोना चाहते हैं?

अब उस नारायण कवच को धारण करने की विधि-

जीवन की किसी भी परिस्थिति में, कोई भी प्रमुख निर्णय, अंत:करण में बैठे अव्यक्त परमात्मा से पूछ कर ही करने लगना, नारायण कवच धारण करना है। भगवान गीता में कहते हैं-

"उपद्रष्टाऽनुमंता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।"

वह परमात्मा सबके अंत:करण में द्रष्टा रूप से अवस्थित है। वह अनुमंता भी है, साधन पकने पर वह अनुमति देने लगता है। आदेश का पालन होने लगे तो वह भर्ता बन कर योगक्षेम वहन करने लगता है। जैसे अर्जुन भगवान की आज्ञा में चलने लगा, आप भी उनसे बिना पूछे कुछ न करें। यह उनके मार्गदर्शन में चलना ही नारायण कवच धारण करना है।

हाँ यदि आपमें भीतर का आदेश पकड़ने की क्षमता न हो, तो भगवान ने दूसरा भी एक सरल विकल्प दिया है। गीता में ही भगवान कहते हैं-

"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।"

तुम एक काम करो, मेरी शरण में आ जाओ। भीतर बात न बनती हो, तो बाहर से आदेश लो। किस से पूछें? मुझ से पूछ लो। माने गुरू जी से आदेश लो।

दोनों एक ही हैं। पर जो मुझ से, माने सगुण ब्रह्म से, माने किन्हीं समकालीन आत्मज्ञानी महापुरुष से आदेश लेकर चलते हैं, वे मुझे अधिक प्रिय हैं।

"ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रिया:॥"

तो आप अपनी क्षमतानुसार कहीं से भी आदेश लें, पर बिना आदेश के न चलें। जो बिना आदेश के चला, उसने तो नारायणी सेना का कवच धारण कर लिया, वह तो डूबेगा ही।

इसीलिए लोकेशानन्द गाता है-

"ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरो:पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरो:कृपा॥"

CamScanner

9:52 am 0 KB/s 92%

बड़ी विचित्र बात है। दुर्योधन ने श्रीकृष्ण से नारायणी सेना मांग ली। अर्जुन ने केवल श्रीकृष्ण को मांगा। अर्जुन से कहा गया-

"हार निश्चित है तेरी, हर दम रहेगा उदास।
माखन दुर्योधन ले गया, छाछ बची तेरे पास॥"

अर्जुन ने कहा-

"जीत निश्चित है मेरी, दास ना होय उदास।
माखन है किस काम का, माखनचोर मेरे पास॥"

देखें, एक ओर भगवान हैं, दूसरी ओर भगवान से प्राप्त सम्पत्ति है। गुरूदेव भगवान स्वामी मित्रानन्द जी महाराज कहते हैं कि शास्त्र में "नारायण कवच" का महान महिमामंडन है। अर्जुन ने नारायण कवच धारण किया और कौरवों की सेना का पार पा लिया। जबकि दुर्योधन ने नारायणी सेना को कवच बना कर अपना सब कुछ गंवा दिया।

नारायणी सेना क्या है? आपके पास जो भी है, मकान, दुकान, धन, बल, पद, प्रतिष्ठा, और इस लोक और परलोक के जितने भी सुख साधन हैं, वह ही नारायणी सेना है। जो इनके भरोसे चला, माने नारायणी कवच धारण किया, वह डूब गया। जो भगवान के भरोसे रहा, माने नारायण कवच धारण किया, उसने लोक, परलोक दोनों को ही प्राप्त कर लिया।

विचार करें! यदि आप भौतिक जगत में विजय प्राप्त करने के लिए, अथवा अध्यात्मिक उन्नति के लिए, अहंकार के वशीभूत होकर, अपने जीवन की उलझी हुई समस्याओं का समाधान स्वयं करना चाहते हैं, तो आपका डूबना तय है। क्योंकि अहंकार के आश्रय में किया गया कोई भी कर्म, अहंकार को ही पुष्ट करता है। और अहंकार ही संपूर्ण समस्याओं की जड़ है। क्या आप कीचड़ से कीचड़ धोना चाहते हैं?

अब उस नारायण कवच को धारण करने की विधि-

जीवन की किसी भी परिस्थिति में, कोई भी प्रमुख निर्णय, अंत:करण में बैठे अव्यक्त परमात्मा से पूछ कर ही करने लगना, नारायण कवच धारण करना है। भगवान गीता में कहते हैं-

"उपद्रष्टाऽनुमंता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।"

वह परमात्मा सबके अंत:करण में द्रष्टा रूप से अवस्थित है। वह अनुमंता भी है, साधन पकने पर वह अनुमति देने लगता है। आदेश का पालन होने लगे तो वह भर्ता बन कर योगक्षेम वहन करने लगता है। जैसे अर्जुन भगवान की आज्ञा में चलने लगा, आप भी उनसे बिना पूछे

CamScanner

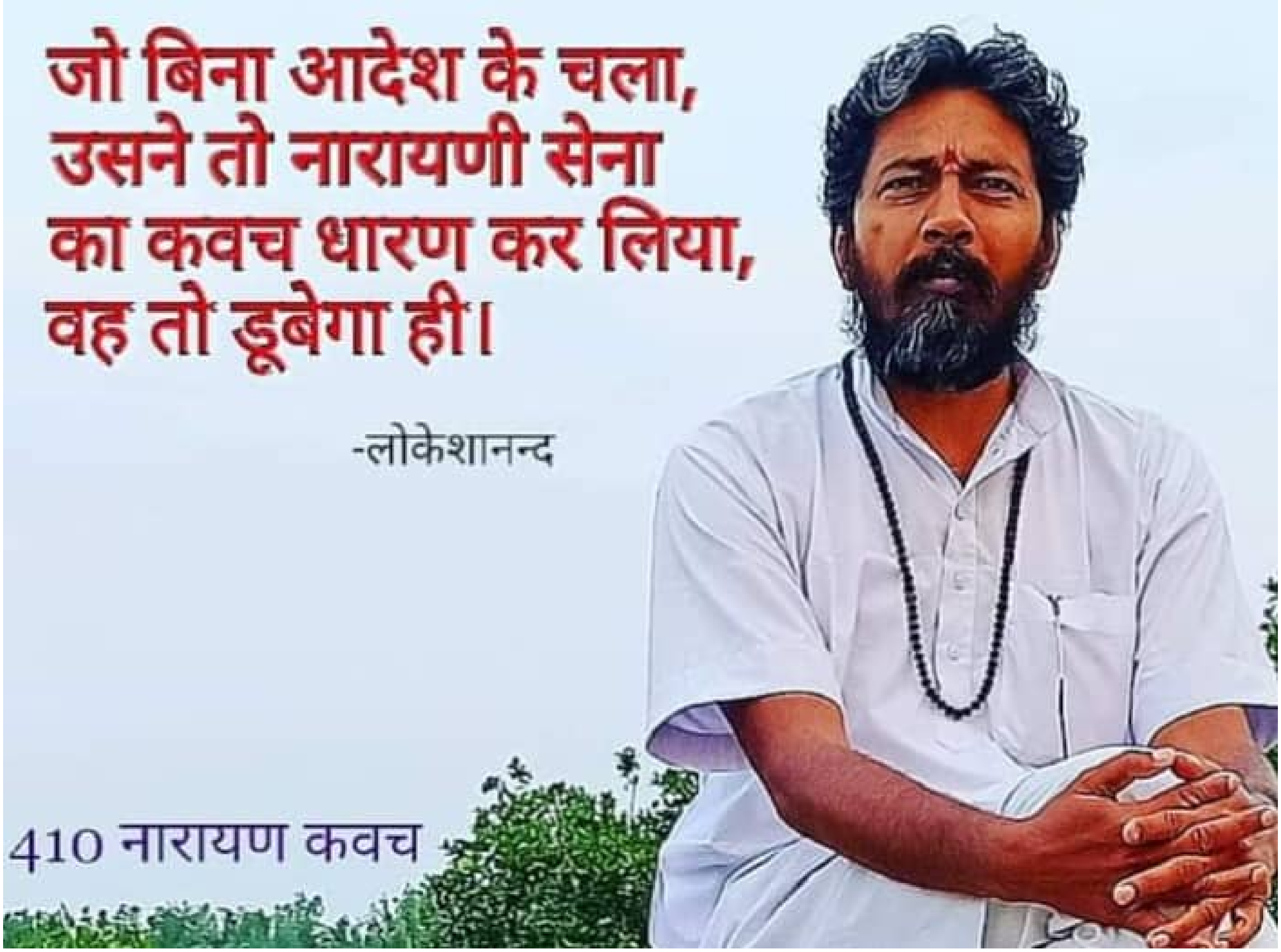
जो बिना आदेश के चला,
उसने तो नारायणी सेना
का कवच धारण कर लिया,
वह तो डूबेगा ही।
-लोकेशानन्द
410 नारायण कवच

CamScanner

11:49 am 0 KB/s 4G 72%

Like Comment Send Share

**Osho janaki dhyan kendra**
3h ·

पूरे डूबने की घटना एक विशिष्ट परिपक्वता के क्षण में घटेगी।

हम उसे ला नहीं सकते। आएगी, अपने से आएगी। कब आ जाएगी, बिना खबर दिए, आकस्मिक द्वार पर खड़ी हो जाएगी कि तुम भौचक्क, अवाक रह जाओगे। तुम्हारी अपेक्षा से आने वाली नहीं है।

अक्सर तो ऐसा होता है, जब तुम्हें बिलकुल भी अपेक्षा न होगी, जब तुम्हें बिलकुल भी सुध न होगी, तब अचानक मेहमान आ जाएगा। क्योंकि जब कोई अपेक्षा नहीं होती, कोई आकांक्षा नहीं होती, तब तुम्हारा हृदय अपनी परिपूर्णता में खुला होता है। अपेक्षा में थोड़ा बंद हो जाता है। जितनी तेज अपेक्षा होती है, उतना संकीर्ण हो जाता है। तनाव पैदा हो जाता है। द्वंद्व बन जाता है। जब तुम निर्द्वंद्व होओगे, जब तुम जीवन को, जैसा जितना मिल रहा है, उतने के लिए ही धन्यवाद देकर अनुगृहीत होओगे, परितृप्त, उतने से ही जितना परमात्मा दे आज, और ज्यादा की मांग न करोगे, उस दिन ज्यादा भी होगा।

इस गणित को ठीक से याद रख लेना। मांग मत करना, तो ज्यादा रोज-रोज होगा। मांग करोगे, अड़चन पड़ जाएगी, बाधा बन जाएगी।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -7 "

CamScanner

11:49 am KB/s 72%

उस तपस्वी ने कहा, कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने वाली युवती कहां है, वही चाहिए।

हंसना मत; आदमी की ऐसी कमजोरी है। सोचना, हंसना मत; क्योंकि पृथ्वी का ऐसा प्रबल आकर्षण है। कहानी को कहानी समझ कर टाल मत देना, मनुष्य के मन की पूरी व्यथा है। और ऐसा मत सोचना कि ऐसा विकल्प उस तपस्वी के सामने ही था कि युवती थी, स्वर्ग था, दोनों के बीच चुनना था। तुम्हारे सामने भी विकल्प वही है; सभी के सामने विकल्प वही है--या तो उन सुखों को चुनो जो क्षणभंगुर हैं, या उसे चुनो जो शाश्वत है; या तो शाश्वत को गंवा दो क्षणभंगुर के लिए, या क्षणभंगुर को समर्पित कर दो शाश्वत के लिए। और अधिकतम लोग वही चुनेंगे, जो तपस्वी ने चुना। ऐसा मत सोचना कि तुमने कुछ अन्यथा किया है। चाहे इंद्र तुम्हारे सामने खड़ा हुआ हो या न खड़ा हुआ हो; चाहे किसी ने स्पष्ट स्वर्ग और पृथ्वी के विकल्प सामने रखे हों, न रखे हों--विकल्प वहां हैं। और जो एक को चुनता है, वह अनिवार्यतः दूसरे को गंवा देता है। जिसकी आंखें पृथ्वी के नशे से भर जाती हैं, वह स्वर्ग के जागरण से वंचित रह जाता है। और जिसके हाथ पृथ्वी की धूल से भर जाते हैं, स्वर्ग का स्वर्ण बरसे भी तो कहां बरसे, हाथों में जगह नहीं होती! हाथ खाली चाहिए तो ही स्वर्ग उतर सकता है; आत्मा खाली चाहिए तो ही परमात्मा विराजमान हो सकता है।

तुम्हारी आत्मा में अगर कोई आसक्ति पहले से ही विराजमान है, अगर वहां सिंहासन पहले से ही भरा है, तो तुम यह मत कहना कि परमात्मा ने तुम्हारे साथ अन्याय किया है; यह तुम्हारा ही चुनाव है। अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता, तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना, तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी, जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है--एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है। लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता; सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता। तुम्हें जन्मों-जन्मों तक सत्य को इंकार करने की स्वतंत्रता है। यही मनुष्य की गरिमा है, यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी।

ओशो,
भजगोविंदम मूढ़मते

CamScanner

11:49 am 57 KB/s 72%

तपस्वी ने सोचा, उस युवती के चेहरे की तरफ देखा। ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। स्वप्न में भी ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। युवती पहचानी भी लगती थी और अपरिचित भी लगती थी। रूप-रेखा तो वही थी, लेकिन कुछ महिमा उतर आई थी। अंग-प्रत्यंग वही थे, लेकिन कोई स्वर्ण-आभा से घिर गए थे। जैसे कोई गीत की कड़ी, भूली-बिसरी, फिर किसी संगीतज्ञ ने बांसुरी में भर कर बजाई हो।

तपस्वी बैठ गया। उसने पुनः आंख बंद कर लीं। वह रुक गया। उस रात युवती सो न सकी--विजय का उल्लास भी था और साधु को पतित करने का पश्चात्ताप भी। आनंदित थी कि जीत गई और दुखी थी कि किसी को भ्रष्ट किया, किसी के मार्ग में बाधा बन गई, और कोई जो ऊर्ध्वगमन के लिए निकला था, उसकी यात्रा को भ्रष्ट कर दिया। रात भर सो न सकी--रोई भी, हंसी भी। सुबह निर्णय लिया, आकर तपस्वी के चरणों में झुकी और कहा, मुझे जाना पड़ेगा, मेरा परिवार दूसरे गांव जा रहा है। तपस्वी ने आशीर्वाद दिया कि जाओ, जहां भी रहो, खुश रहो, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

युवती चली गई। वर्ष बीते, तपस्या पूरी हुई। इंद्र उतरा, तपस्वी के चरणों में झुका और कहा, स्वर्ग के द्वार स्वागत के लिए खुले हैं।

तपस्वी ने आंखें खोलीं और कहा, स्वर्ग की अब मुझे कोई जरूरत नहीं! इंद्र तो भरोसा भी न कर पाया कि कोई मनुष्य और कहेगा कि स्वर्ग की मुझे अब कोई जरूरत नहीं। इंद्र ने सोचा, तब क्या मोक्ष की आकांक्षा इस तपस्वी को पैदा हुई है। पूछा, क्या मोक्ष चाहिए?

तपस्वी ने कहा, नहीं, मोक्ष का भी मैं क्या करूंगा।
तब तो इंद्र चरणों में सिर रखने को ही था कि यह तो आत्यंतिक बात हो गई, तपश्चर्या का अंतिम चरण हो गया, जहां मोक्ष की आकांक्षा भी खो जाती है। पर झुकने के पहले उसने पूछा, मोक्ष के पार तो कुछ भी नहीं है, फिर तुम क्या चाहते हो?

उस तपस्वी ने कहा, कुछ भी नहीं, वह लकड़ियां बीनने वाली युवती कहां है, वही चाहिए।

CamScanner

11:48 am 0 KB/s VoLTE 4G 72%

एक अति प्राचीन कथा है। घने वन में एक तपस्वी साधनारत था--आंख बंद किए सतत प्रभु-स्मरण में लीन। स्वर्ग को पाने की उसकी आकांक्षा थी; न भूख की चिंता थी, न प्यास की चिंता थी। एक दीन-दरिद्र युवती लकड़ियां बीनने आती थी वन में। वही दया खाकर कुछ फल तोड़ लाती, पत्तों के दोने बना कर सरोवर से जल भर लाती, और तपस्वी के पास छोड़ जाती। उसी सहारे तपस्वी जीता था। फिर धीरे-धीरे उसकी तपश्चर्या और भी सघन हो गई--फल बिना खाए ही पड़े रहने लगे; जल दोनों में पड़ा-पड़ा ही गंदा हो जाता--न उसे याद रही भूख की और न प्यास की। लकड़ियां बीनने वाली युवती बड़ी दुखी और उदास होती, पर कोई उपाय भी न था।

इंद्रासन डोला; इंद्र चिंतित हुआ; तपस्या भंग करनी जरूरी है; सीमा के बाहर जा रहा है यह व्यक्ति--क्या स्वर्ग के सिंहासन पर कब्जा करने का इरादा है?

लेकिन कठिनाई ज्यादा न थी, क्योंकि इंद्र मनुष्य के मन को जानता है। स्वर्ग से जैसे एक श्वास उतरी--सूखी, दीन-दरिद्र, काली-कलूटी वह युवती अचानक अप्रतिम सौंदर्य से भर गई; जैसे एक किरण उतरी स्वर्ग से और उसकी साधारण सी देह स्वर्णमंडित हो गई। पानी भर रही थी सरोवर से तपस्वी के लिए, अपने ही प्रतिबिंब को देखा, भरोसा न कर पाई--साधारण स्त्री न रही, अप्सरा हो गई; खुद के ही बिंब को देख कर मोहित हो गई! तपस्वी की सेवा उसने करनी जारी रखी।

फिर एक दिन तपस्वी ने आंख खोलीं। इस वनस्थली से जाने का समय आ गया--तपश्चर्या को और गहन करना है, पर्वत-शिखरों की यात्रा पर जाना है। उसने युवती से कहा कि मैं अब जाऊंगा, यहां मेरा कार्य पूरा हुआ। अब और भी कठिन मार्ग चुनना है, स्वर्ग को जीत कर ही रहना है।युवती रोने लगी। उसकी आंख से आंसू गिरने लगे। उसने कहा, मैंने कौन सा दुष्कर्म किया कि मुझे अपनी सेवा से वंचित करते हो? और तो कुछ मैंने कभी मांगा नहीं!

तपस्वी ने सोचा, उस युवती के चेहरे की तरफ देखा। ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। स्वप्न में भी ऐसा सौंदर्य कभी देखा नहीं था। युवती

CS CamScanner

जन्म हुआ है तो मृत्यु भी निश्चित है
इसी प्रकार जीवन में चिंताएं भी
निश्चित है क्योंकि जब तक
किसी के जीवन में कोई चिंता
नहीं होती तब तक वह इंसान
परिपक्व और जिम्मेदार नहीं
बन सकता प्रभु ने चिंता की भट्टी
इंसान को तराशने के लिए ही
बनाई है इस धरती पर ऐसा कोई नहीं
जिसको कोई चिंता ना हो।

गौरी सोनी

CamScanner

11:45 am 9 KB/s 73%

जा उस महल, उस राज्य का मालिक था।

एक सपना आना शुरू हुआ। उस सपने में उसने देखा कि सारी पृथ्वी का मैं मालिक हूं। बारह बेटे हैं उसके, बहुत सुंदर, स्वर्ण जैसी काया है उनकी, बहुत स्वस्थ, बहुत बुद्धिमान। सारी पृथ्वी पर फैला हुआ है राज्य, स्वर्ण के महल हैं उसके पास, हीरे-जवाहरातों की सीढ़ियां हैं, वह अति आनंद में है।

और तभी इस बाहर लेटे हुए बेटे की सांस टूट गयी। पत्नी छाती पीटकर रोने लगी। रोने से नींद खुल गयी सम्राट की। आंख खोलकर वह उठा। खो गये वे सपने के स्वर्ण महल, खो गये वे बारह बेटे, खो गया वह चक्रवर्ती का बड़ा राज्य! देखा तो बाहर बेटा मर चुका है, पत्नी रोती है। लेकिन उसकी आंखों में आंसू नहीं आये, होठों पर हंसी आ गयी उस सम्राट के!

पत्नी कहने लगी, क्या तुम्हारा मन विक्षिप्त हो गया? क्या तुम पागल हो गये हो? बेटा मर गया है और तुम हंस रहे हो!

वह सम्राट कहने लगा, मुझे हंसी किसी और बात से आ रही है। मैं इस चिंता में पड़ गया हूं कि किन बेटों के लिए रोऊं? अभी-अभी बारह मेरे बेटे थे, सोने के महल थे, बड़ा राज्य था। तू रोई और वह मेरा सारा राज्य छिन गया, मेरे वे बेटे छिन गये! आंख खोलता हूं, तो वे सब खो गये हैं! और यह बेटा, जब तक आंख बंद थी, खो गया था। मुझे याद भी नहीं था कि मेरा कोई बेटा है, जो बीमार पड़ा है। जब तक वे बारह बेटे थे, इस बेटे की कोई याद नहीं थी! और अब जब यह बेटा दिखायी पड़ रहा है, तब वे बारह बेटे खो गये हैं! अब मैं सोचता हूं कि मैं किसके लिए रोऊं? उन बारह बेटों के लिए, उन स्वर्ण-महलों के लिए, उस बड़े राज्य के लिए या इस बेटे के लिए?

और मुझे हंसी इसलिए आ गयी कि कहीं दोनों ही सपने तो नहीं हैं--एक आंख बंद का सपना और एक खुली आंख का सपना। क्योंकि जब तक आंख बंद थी, वह भूल गया था! और जब आंख खुली तो, वह जो आंख बंद में दिखाई पड़ा था, वह भूल गया!

एक सपना है, जो हम आंख बंद करके देखते हैं और एक सपना है, जो हम आंख खोलकर देखते हैं! लेकिन वे दोनों ही सपने हैं।

ओशो.

सत्य की खोज(प्रवचन-10).

CamScanner

11:44 am 0 KB/s 73%

बोध कथा

एक सम्राट का युवा पुत्र बीमार पड़ा। एक ही बेटा था उसका, वही मरण-शय्या पर पड़ा था। चिकित्सकों ने कहा था कि बचने की कोई उम्मीद नहीं है। उस रात ही उसका दीया बुझ जायेगा, ऐसी संभावना थी।

सम्राट रात भर जागता बैठा रहा। सुबह भोर होते-होते उसकी झपकी लग गयी। सम्राट अपनी कुर्सी पर बैठा ही बैठा पांच बजे के करीब सो गया। सोते ही भूल गया उस बेटे को, जो सामने खाट पर बीमार पड़ा था; जो उस महल, उस राज्य का मालिक था।

एक सपना आना शुरू हुआ। उस सपने में उसने देखा कि सारी पृथ्वी का मैं मालिक हूं। बारह बेटे हैं उसके, बहुत सुंदर, स्वर्ण जैसी काया है उनकी, बहुत स्वस्थ, बहुत बुद्धिमान। सारी पृथ्वी पर फैला हुआ है राज्य, स्वर्ण के महल हैं उसके पास, हीरे-जवाहरातों की सीढ़ियां हैं, वह अति आनंद में है।

और तभी इस बाहर लेटे हुए बेटे की सांस टूट गयी। पत्नी छाती पीटकर रोने लगी। रोने से नींद खुल गयी सम्राट की। आंख खोलकर वह उठा। खो गये वे सपने के स्वर्ण महल, खो गये वे बारह बेटे, खो गया वह चक्रवर्ती का बड़ा राज्य! देखा तो बाहर बेटा मर चुका है, पत्नी रोती है। लेकिन उसकी आंखों में आंसू नहीं आये, होठों पर हंसी आ गयी उस सम्राट के!

पत्नी कहने लगी, क्या तुम्हारा मन विक्षिप्त हो गया? क्या तुम पागल हो गये हो? बेटा मर गया है और तुम हंस रहे हो!

वह सम्राट कहने लगा, मुझे हंसी किसी और बात से आ रही है। मैं इस चिंता में पड़ गया हूं कि किन बेटों के लिए रोऊं? अभी-अभी बारह मेरे बेटे थे, सोने के महल थे, बड़ा राज्य था। तू रोई और वह मेरा सारा राज्य छिन गया, मेरे वे बेटे छिन गये! आंख खोलता हूं, तो वे सब खो गये हैं! और यह बेटा, जब तक आंख बंद थी, खो गया था। मुझे याद भी नहीं था कि मेरा कोई बेटा है, जो बीमार पड़ा है। जब तक वे बारह बेटे थे, इस बेटे की कोई याद नहीं थी! और अब जब यह बेटा दिखायी पड़ रहा है, तब वे बारह बेटे खो गये हैं! अब मैं सोचता हूं कि मैं किसके लिए रोऊं? उन बारह बेटों के लिए, उन स्वर्ण-महलों के लिए, उस बड़े राज्य के लिए या इस बेटे के लिए?

CamScanner

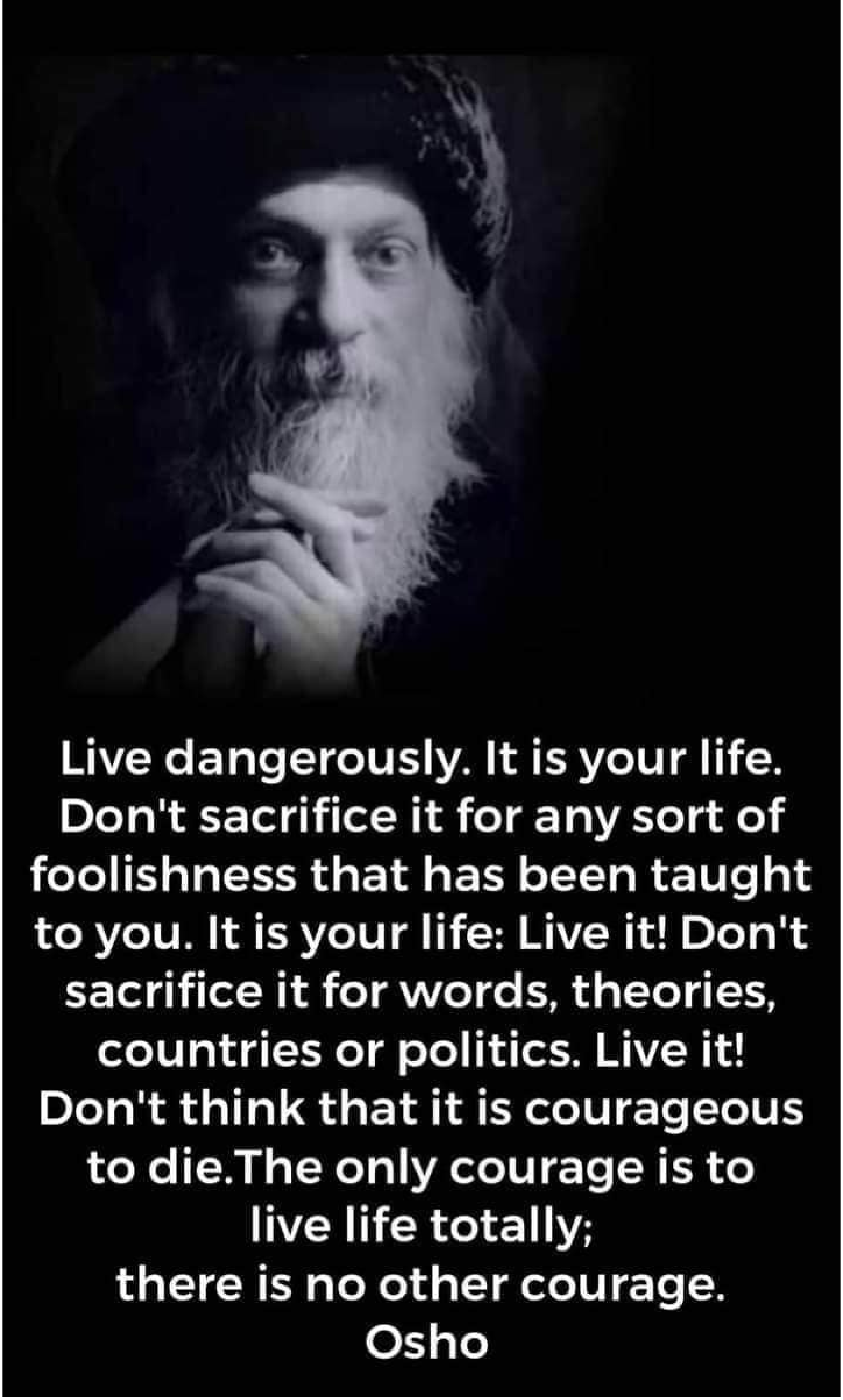
Live dangerously. It is your life.
Don't sacrifice it for any sort of
foolishness that has been taught
to you. It is your life: Live it! Don't
sacrifice it for words, theories,
countries or politics. Live it!
Don't think that it is courageous
to die.The only courage is to
live life totally;
there is no other courage.
Osho

CamScanner

अहोभाव · 20m ·

अहोभाव

प्रत्येक क्षण को महोत्सव बना लो...
तब फिर तुम्हे परमात्मा को नहीं खोजना पड़ेगा।
तुम जहां भी होओगे, परमात्मा खुद तुम्हें खोजता
हुआ आ जायेगा।
ओशो

ओशो कहते हैं - सच्ची प्रार्थना एक उत्सव है; यह कोई प्रयास नहीं है, किसी और चीज़ का साधन नहीं है। यह अपने आप में उत्पन्न होता है और अपने आप में ही विलीन हो जाता है। प्रार्थना का एक क्षण अपने आप में अनंत काल है। अहोभाव

7

Like Comment Send Share

CamScanner

8

Top comments

**Vimal Shah**
तप से कर्मो का क्षय होता है, और पुण्य भोगतना पड़ता है।

2h Like Reply 3

**Ketan Sharma**
तप सांसारिक नही है और पुण्य सांसारिक है

2h Like Reply

**Deshraj Deshraj**
Tp stogunh wirtimnki

59m Like Reply

**Vishnu Srivastava**
तप एक कर्म है और पुण्य उसका फल है।

1h Like Reply

**Adv Ravindra Singh Yadav**
तप का 3D world में पॉजिटिव outcome ही पुण्य कहलाता है।
यदि आप तपस्वी है,
आप पुण्यशील हैं ।

2h Like Reply

**वीर भगत**
तप करना पड़ता है, पुण्य अपने आप हो जाता है ...
तप हठ है , पुण्य सहज है.

2h Like Reply 2

**Sohit Kumar Sen**
Tap se hi punya milta hai

Write a comment...

CamScanner

11:36 am 0 KB/s 4G 74%

फिर एक दिन तुम युवा हुए। फिर तुम भूल गए वे खेल-खिलोने कहा गए, किस कोने में पड़े है। फिर धीरे-धीरे झाड़कर,बुहरकर कचरे में फेंक दिए गए। तुम्हे उनकी याद भी नही है। एक दिन तुम लड़ते थे,एक दिन तुम उसके लिए मरने-मारने को तैयार हो जाते थे।आज तुमसे कोई पूछे कि कहाँ गए  वे तुम्हारे खेल-खिलोने? तो तुम हँसोगे। तुम कहोगे की अब मैं बड़ा हो गया हूं,अब मैं बच्चा नही रहा,मैं ने जान लिया है कि खेल-खिलोने तो खेल-खिलोने ही है।

ऐसे ही प्रौढ़ता फिर घटती है,जब किसी को भीतर के परमात्मा का बोध होता है। तब संसार के सब खेल खिलोने धन, पद, प्रतिष्ठा ऐसे ही सब व्यर्थ हो जाते है।

जैसे बचपन के खेल-खिलोने व्यर्थ हो जाते है,फिर उसके लिए कोई संघर्ष नही रह जाता, प्रतिद्वंद्वता नही रह जाती, कोई स्पर्धा नहीं रह जाती।

धन की दौड़ आत्महीन व्यक्ति की दौड़ है। जितना निर्धन होता है आदमी भीतर,उतना ही बाहर धन से भरने की कोशिश करता है। बाहर का धन भीतर की निर्धनता को भुलाने की व्यवस्था है। विधि है। जितना गरीब आदमी होता है,उतना धन के पीछे दौड़ता है।

इसीलिए तो हमने देखा कि कभी बुद्ध,कभी महावीर महाधनी लोग रहे होंगे,की सब छोड़कर निकल पड़े और भिखारी हो गए। इस आश्चर्य की घटना को देखते हो। यहां निर्धन धन के पीछे दौड़ते है। यहां धनी निर्धन हो जाते है। यह आपने को भूलने की विधि है। जितना गरीब आदमी होता है, उतना ही धन के पीछे दौड़ता है।

इसीलिए तो हमने देखा  कि कभी बुद्ध,कभी महावीर महाधनी लोग रहे होंगे, जो कि सब छोडकर  निकल पड़े और भिखारी हो गए। इस आश्चर्य की घटना को देखते हो। यहा निर्धन धन के पीछे दौड़ते है,यहां धनी निर्धन हो जाते है। जिन्हें भीतर का धन मिल गया,वे बाहर की दौड़ छोड़ देते है।
🌹ओशो🌹

CamScanner

11:36 am 35 KB/s VoLTE 4G 74%

🌹आत्महीन व्यक्ति की दौड़🌹

जनक के सामने एक प्रश्नचिन्ह खड़ा किया अष्टावक्र ने,की तूझसे पूछता हूं जनक,जब एक का तुझे पता चल गया और तुझे बोध हो गया कि तू स्वयं तू परमात्मा है। तो क्या धन के पीछे तू अब भी दौड़ सकता है ? तू तलाश अपने भीतर की कहि धन का अब भी मोह तो शेष नही रह गया ?

यह पहली बात धन की ही क्यों उठाई? क्योंकि इस जीवन मे बड़ी से बड़ी हमारी दौड़,और बड़े से बड़ा हमारा पागलपन धन के लिए ही है। हम भीतर खाली,रिक्त है, सुख से धन से उसे भरते है। खालीपन काटता है। खालीपन से बड़ी बेचैनी होती है। कि मैं ना कुछ, कुछ करके दिखाना है। मैं कैसे दिखाऊ।

क्योंकि इस जीवन मे बड़ी से बड़ी हमारी दौड़ और बड़े से बड़ा हमारा पागलपन धन के लिए है। हम भीतर है खाली,रिक्त, सुख को हम धन से भरते है। खालीपन काटता है, खालीपन में बड़ी बेचैनी होती है। कि मैं और ना कुछ? अत: कुछ करके दिखाना है। मैं कैसे कर के दिखाऊ? तो पद,प्रतिष्ठा, धन वे सब धन के ही रूप है। उनसे हम अपने को भरते है,त की मैं कह सकु के मैं भी कुछ हुँ-मैं ना कुछ नहीं हूं।देखो कितना धन है मेरे पास।ता की  मैं प्रमाण दे सकु,की देखो मैं भी कुछ हुँ। अष्टावक्र कहते है कि धन की दौड़ तो उस आदमी की है जिसे भीतर के परमात्मा का कुछ पता नही है। जिसे भीतर के परमात्मा का पता चल गया वह तो धनी हो गया,उसे तो मिल गया धन। राम रतन धन पायो। अब उससे कुछ बचा नही पाने को। अब कोई धन धन नही है। धन तो उसे मिल गया,परम् धन मिल गया। और परम् धन को पाकर फिर कोई धन के पीछे दौड़ेगा?

छोटे थे तुम खेल-खिलौने से खेलते थे। टूट गया खिलौना तो रोते भी थे, कोई छीन लेता तो रोते भी थे।

फिर एक दिन तुम युवा हुए। फिर तुम भूल गए वे खेल-खिलोने कहा गए, किस कोने में पड़े है। फिर धीरे-धीरे झाड़कर,बुहरकर कचरे में फेंक दिए गए। तुम्हे उनकी याद भी नही है। एक दिन तुम लड़ते थे,एक दिन

CamScanner

प्राणी है तो आप समय में आगे और पीछे कहीं भी जा सकते हैं.

## Fifth Dimensional-पाचवां आयाम

अगर आप 5th Dimension के प्राणी हैं तो आप समय में आगे पीछे जाने के अलावा समय में किसी भी दिशा में जा सकते हैं. समय में किसी भी दिशा में जाना !! सुनकर दंग रह गए ना. इसे इमेजिन करना भी हमारे लिए नामुमकिन हैं क्योंकि हम अपने से ऊपर के Dimensions को कभी नहीं समज सकते. लेकिन मेरे ख्याल से यहाँ पर समय में किसी भी दिशा में जाने का मतलब हैं : संभावनाए. मतलब 5th Dimension के प्राणी समय में किसी भी संभावना को देख सकते हैं या महसूस कर सकते हैं.

मेरा सुजाव हैं की आप 5th Dimension को अच्छे से समजने के लिए Christopher Nolan की मूवी Interstellar जरुर देखिएगा. String Theory के मुताबिक कुदरत में 11 Dimensions हो सकते हैं. 6th से 11th Dimensions अनंत और सोच की सीमाओं के बहार की संभावनाओं से भरे हो सकते हैं. लेकिन उन्हें देखना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं नामुमकिन हैं.

Share This: F

Google+

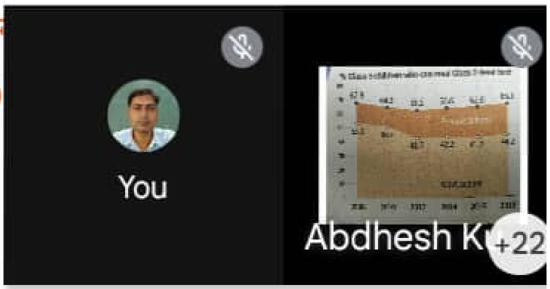


CamScanner

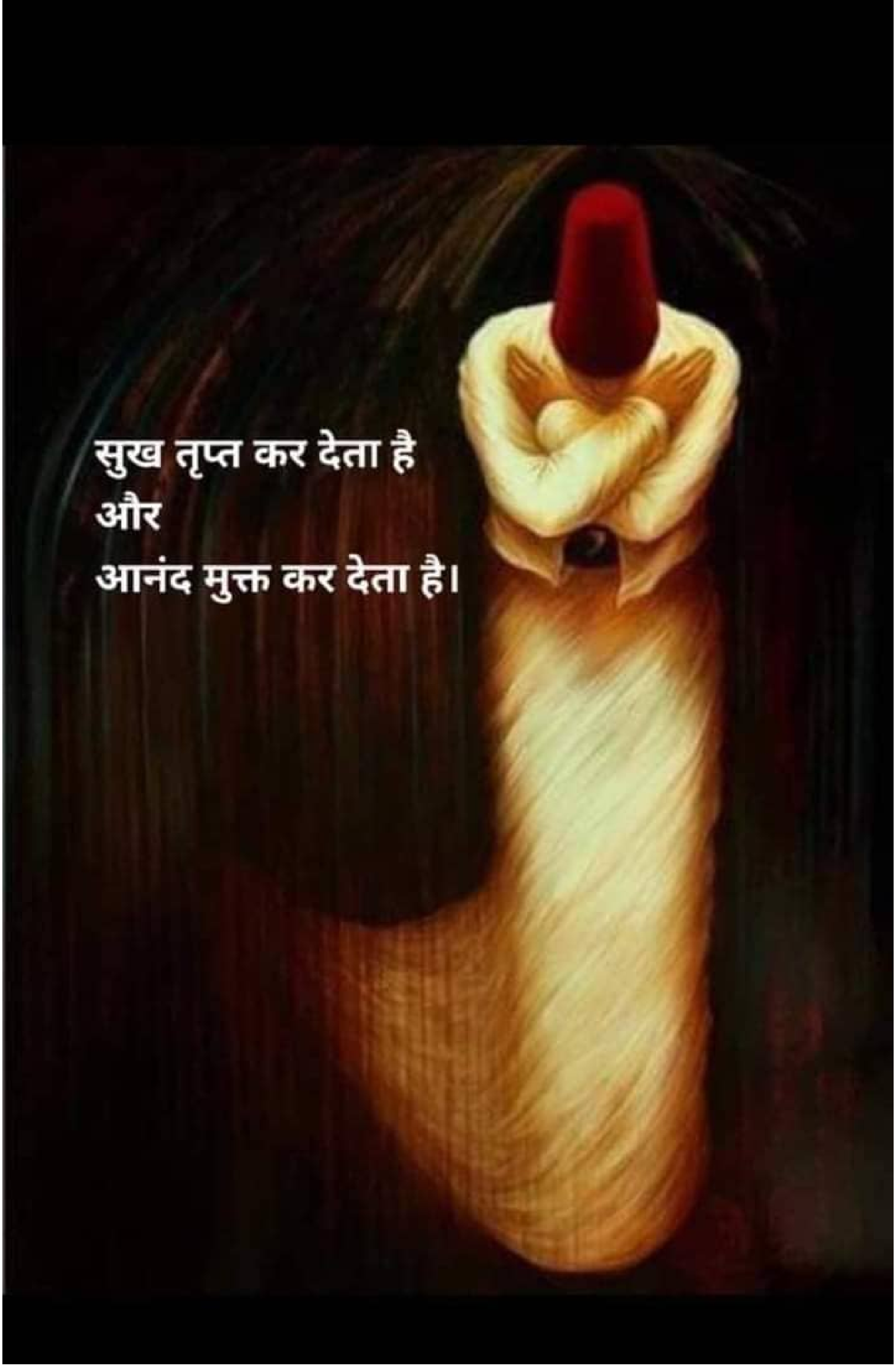


CamScanner

1:05 pm 13 KB/s 59%

28 4 comments • 2 shares

Like Comment Send Share

Write a comment...

**Doha Glassdoor**
Sponsored ·

कस्तूरी कुन्डल बसे, मृग ढूंढत बन माहिं।... See more

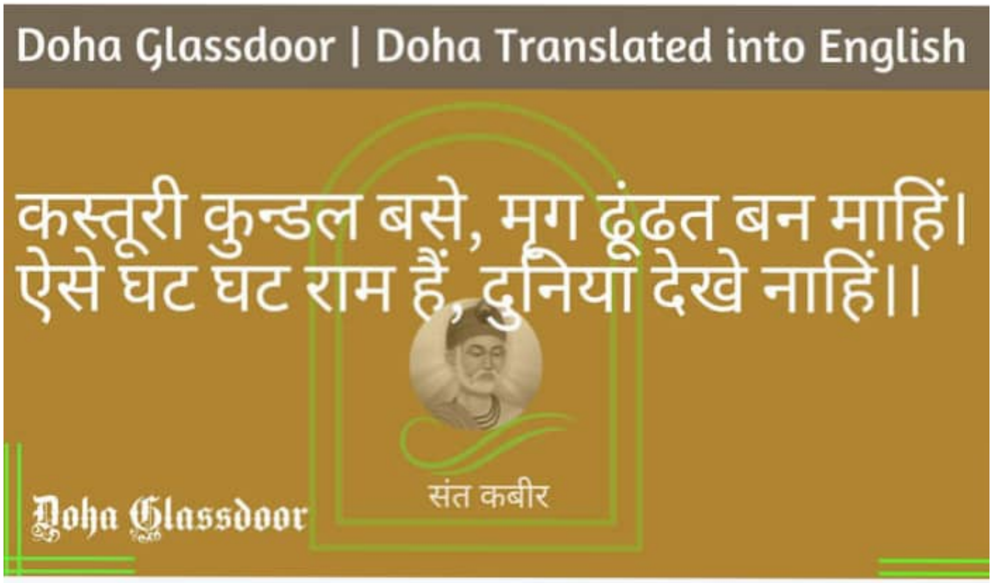


Doha Glassdoor

2.1K 56 comments • 2 shares

Like Comment Share

**Osho international**
5m ·

*भगवान, क्या संतोष रखकर जीना ठीक नहीं है..!

देवदास, संतोष और संतोष में बड़ा भेद है। एक तो है सं... See more

CamScanner

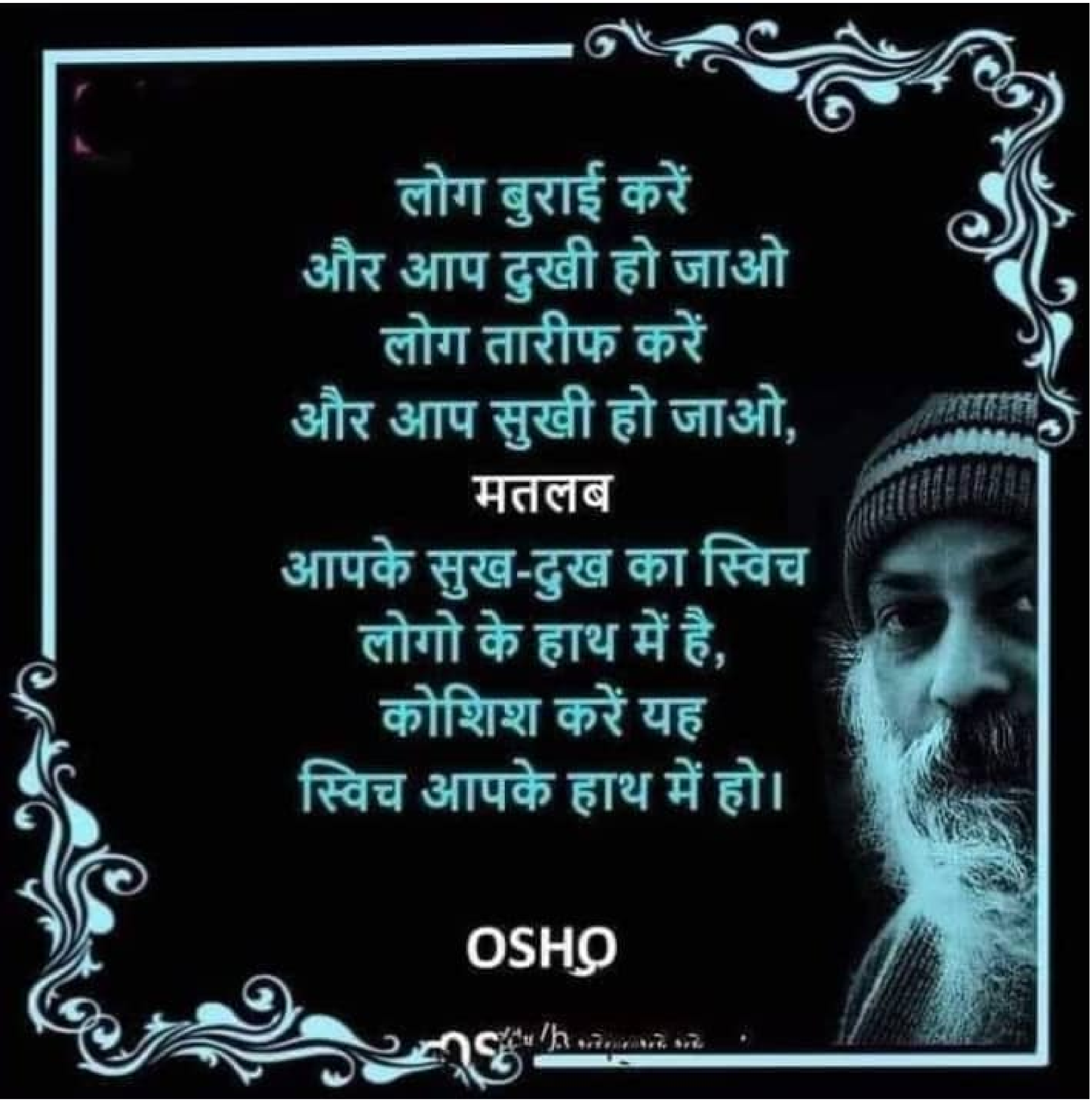


CS CamScanner

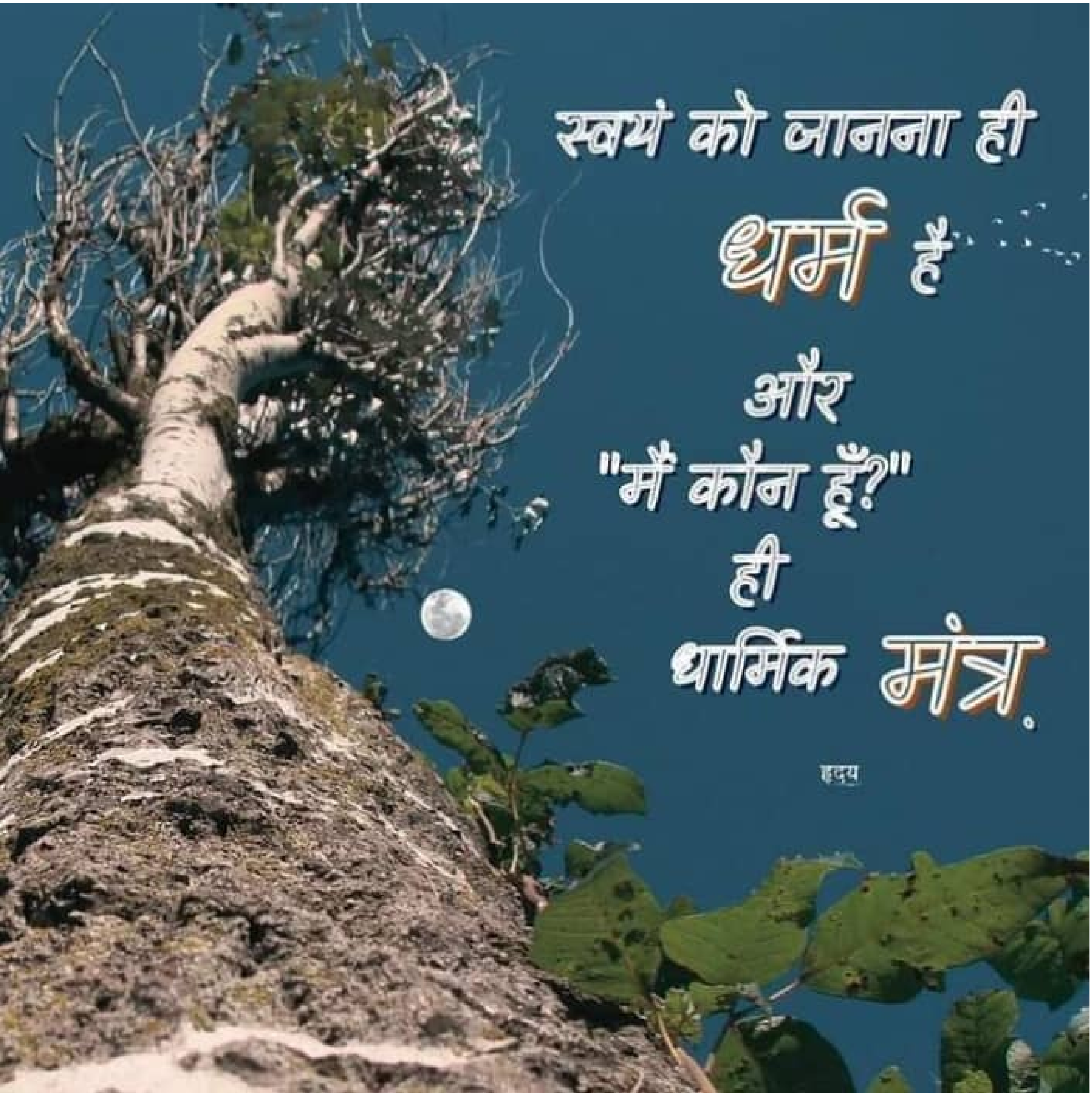


CamScanner

*मन ही मनुष्यों के बंधन और मुक्ति का कारण है।*

11 1 comment

Like Comment Send Share

**Osho Nirvana (ओशो निर्वाण समूह)**
Virendra Kumar · 14h ·

एक बच्चा पैदा हुआ। चेतना को लेकर आया है, वह माइंड को लेकर नहीं आया है। माइंड तो अब पैदा किया जाएगा। चेतना को वह लेकर आया है, सीखने की क्षमता लेकर आया है, एक कॉन्शसनेस लेकर आया है, एक आत्मा लेकर आया है। इस आत्मा के चारो तरफ अब मन की एक दीवार खड़ी की जाएगी, जिसमे सिखाया जाएगा कि तू हिंदू है और दीवार पर लिखा जाएगा, तू हिंदू है। इसको सारी बातें सिखायी जाएंगी, ऊंचा है, नीचा है ;ब्राह्मण है, शूद्र है ;क्या है, क्या नहीं है ;यह सब सिखाया जाएगा। यह दीवार खड़ी होगी। इसी को हम लर्निंग कह रहे हैं - इस माइंड को क्रिएट करने को। यह खड़ा हो जाएगा माइंड। इस लड़के को, इस बच्चे को यह भूल ही जाएगा कि मैं इसके अलावा कुछ हूँ। यह समझेगा, मैं यही हूँ। यह आइडेंटिटी हो जायेगी।

ध्यान की प्रक्रिया में जाने का मतलब, इस आइडेंटिटी को तोड़ना। जो मैं जानता हूं, क्या वही मैं हूँ? जो मैंने समझा है, सुना है, क्या वही मैं हूँ? क्या मेरा मन ही मैं हूँ? इसके बाबत बोध है, इसके बाबत अवेयरनेस है।

🪷 आचार्य श्री रजनीश 🪷

🙏🌹🙏

CamScanner

1:03 pm 11 KB/s VoLTE 4G 60%

Parshotam Rai · 5h ·

*मन ही मनुष्यों के बंधन और मुक्ति का कारण है।*

*राजा जनक ब्रह्म विद्या में पारंगत विद्वान माने जाते थे। दूर दूर से लोग उनके पास धर्म सम्बन्धी जिज्ञासा का समाधान करने आते थे। एक बार एक महात्मा व्यक्ति उनसे मिलने आये। उन्होंने चंचल मन के पाश से छूटने का उपाय पूछा। राजा जनक अपने स्थान से उठे और एक वृक्ष को जोर से पकड़ कर बोले- "अगर यह वृक्ष हमें छोड़ दे तो हम आपके प्रश्न का उत्तर दे पाये।" प्रश्न पूछने वाले महात्मा का दिमाग चकरा गया। उसके मन में शंका हुई क्या यही राजा जनक है जो सम्पूर्ण भूमण्डल में ब्रह्म विद्या के ज्ञाता के रूप में प्रसिद्द है और एक वृक्ष को पकड़ कर कह रहे हैं की अगर यह वृक्ष हमें छोड़ दे तो हम आपके प्रश्न का उत्तर दे पाये। महात्मा बोले- महाराज! आपको जड़ वृक्ष कैसे पकड़ सकता है? यह तो आपने स्वयं ही पकड़ा हुआ है। आप वृक्ष छोड़ दे, आप स्वयं छूट जायेंगे। महाराज जनक ने कहा- क्या आपको दृढ़ विश्वास है की यह छूट जायेगा? महात्मा बोले महाराज यह तो बिलकुल प्रत्यक्ष है कि आप वृक्ष छोड़ दें तो आप छूट जायेंगे। महाराज जनक ने कहा ,"बस इसी भाँति आपने मन को पकड़ा हुआ है। यदि आप मन को वश में कर ले और इसके फंदे में न आयें तो मन कुछ नहीं कर सकता। आप इस जड़ मन को चाहे सुमार्ग पर चलाये, चाहे कुमार्ग पर। यह आपके अधीन है। बिना जीव कि इच्छा के मन में संकल्प नहीं हो सकते। इसलिये मन को वश में करना व्यक्ति के अधीन है।" यह सुनकर ब्राह्मण राजा जनक के ब्रह्मज्ञानी होने की प्रशंसा करने लगा।*

*मन ही मनुष्यों के बंधन और मुक्ति का कारण है।*

11 1 comment

Like Comment Send Share

Osho Nirvana (ओशो निर्वाण समूह)

Virendra Kumar · 14h ·

एक बच्चा पैदा हुआ। चेतना को लेकर आया है, वह माइंड को लेकर नहीं आया है। माइंड तो अब पैदा किया जाएगा। चेतना को वह लेकर

CamScanner

CamScanner

1:01 pm 16 KB/s VoLTE 4G 60%

करवाते है और लम्बा लम्बा प्रोसेस बता के भरपूर पैसा एठते है.
लेकिन आज कल ये बाते ओशो शिविर में बैठे लोग भी करने लगे है हा ओशो शिविर वाले तांत्रिको को तरह नही करते वो लोग लेकिन फिर भी परमात्मा से मिलने का वादा करते है,
लेकिन इसके पीछे एक मानोविज्ञान ही है कुछ लोगो को मनसूस भी होता है अब उन्हें परमात्मा के दर्शन हो गए.

कुछ लोगो को भगवान दिखते है
तो कुछ लोगो को खुद ओशो भी दिखते है.
माना ये सच सच है लेकिन सिर्फ मानो स्थल पर वास्तव में नही लेकिन ये अनुभव इतना ध्रुड होता है की सत्य प्रतीत होता.
लेकिन मेरे भाइयों ये सब एक तरह से आदमी की चेतना की ही लहर होती है आपका प्रेम आपकी भक्ति जिस किसी ईस्ट भगवान के प्रति होती है वही आपको दिखाई देता है.
लेकिन एक असली शून्य में उतरना ये नही होता
शून्य का मतबतलब तो होता शांति निर्विचार peace full life
एक असली ध्यानी व्यक्ति तो वही माना जायेगा जिसे कोई भी तनाव ना आए टेंशन ना आए
ना आए .
बस इतना ही काफी है.

और जब दिमाग शांत होता है तो हर बात का हल निकलता है हर चीज सुलझ जाती है
बस एक बार ध्यान करवाके आपका वो डर वो लालच वो अहंकार निकाला जाए,
फिर आप पुन: अपने दिल से जीना शुरू करते है.
लेकिन इसका ये मतलब नही की आप सन्यासी ही हो जाए.
हा अब जिसको होना हो वो जाए
लेकिन हर किसी को सन्यासी ही हो जाना चाहिए ये जरूरी नही
फिर जिसकी जो इच्छा वो करे
बस जीवन आजादी से जिए.

#आपका_मित्र_वैभव

CamScanner

1:01 pm 10 KB/s 60%

#ओशो_नमन_दोस्तो
क्या है ध्यान के असल मायने

सत्य कहूं तो ध्यान एक ऐसी चीज है जो किसी भी तरह के.
मानसिक त्रास पीड़ा दुख इन सबसे मुक्ति देता है.
लेकिन ये सब मानसिक लेवल पर ही होता है.
ध्यान का बाहरी तल से कोई संबंध नही है.

और इस मे ईश्वर मिल जाए ऐसी भी कोई बात नही,
सच कहूं तो ये एक तरह का मनोविज्ञान है.
और ये ध्यान कोई नई बात भी नही है ये भारत में कई सो साल से हर तरह के बाबा लोग करते आ रहे है खासकर तत्रिक लोग इसने ज्यादा एक्सपर्ट है,

लेकिन तांत्रिको को खुद भी नही पता ये क्या है कैसे काम करता है,
उनके लिए किसी की सोई चेतना जागृत करवा बोहोत बड़ा काम है,
लेकिन वैसे ये बड़ा है नही, ये ओशो ने साबित कर दिखाया,
तात्रीक लोग
चेतनाओं को जागृत करने लोगो को डराते है उनसे उल्टी सीधी चीजे करवाते है और लम्बी लम्बी प्रोसेस बता के भरपूर पैसा ऐंठते है.
लेकिन आज कल ये बाते ओशो शिविर में बैठे लोग भी करने लगे है हा ओशो शिविर वाले तांत्रिको को तरह नही करते वो लोग लेकिन फिर भी परमात्मा से मिलने का वादा करते है,
लेकिन इसके पीछे एक मानोविज्ञान ही है कुछ लोगो को मनसूस भी होता है अब उन्हें परमात्मा के दर्शन हो गए.

कुछ लोगो को भगवान दिखते है
तो कुछ लोगो को खुद ओशो भी दिखते है.
माना ये सच सच है लेकिन सिर्फ मानो स्थल पर वास्तव में नही लेकिन ये अनुभव इतना ध्रुड होता है की सत्य प्रतीत होता.
लेकिन मेरे भाइयों ये सब एक तरह से आदमी की चेतना की ही लहर होती है आपका प्रेम आपकी भक्ति जिस किसी ईस्ट भगवान के प्रति होती है वही आपको दिखाई देता है.

CamScanner

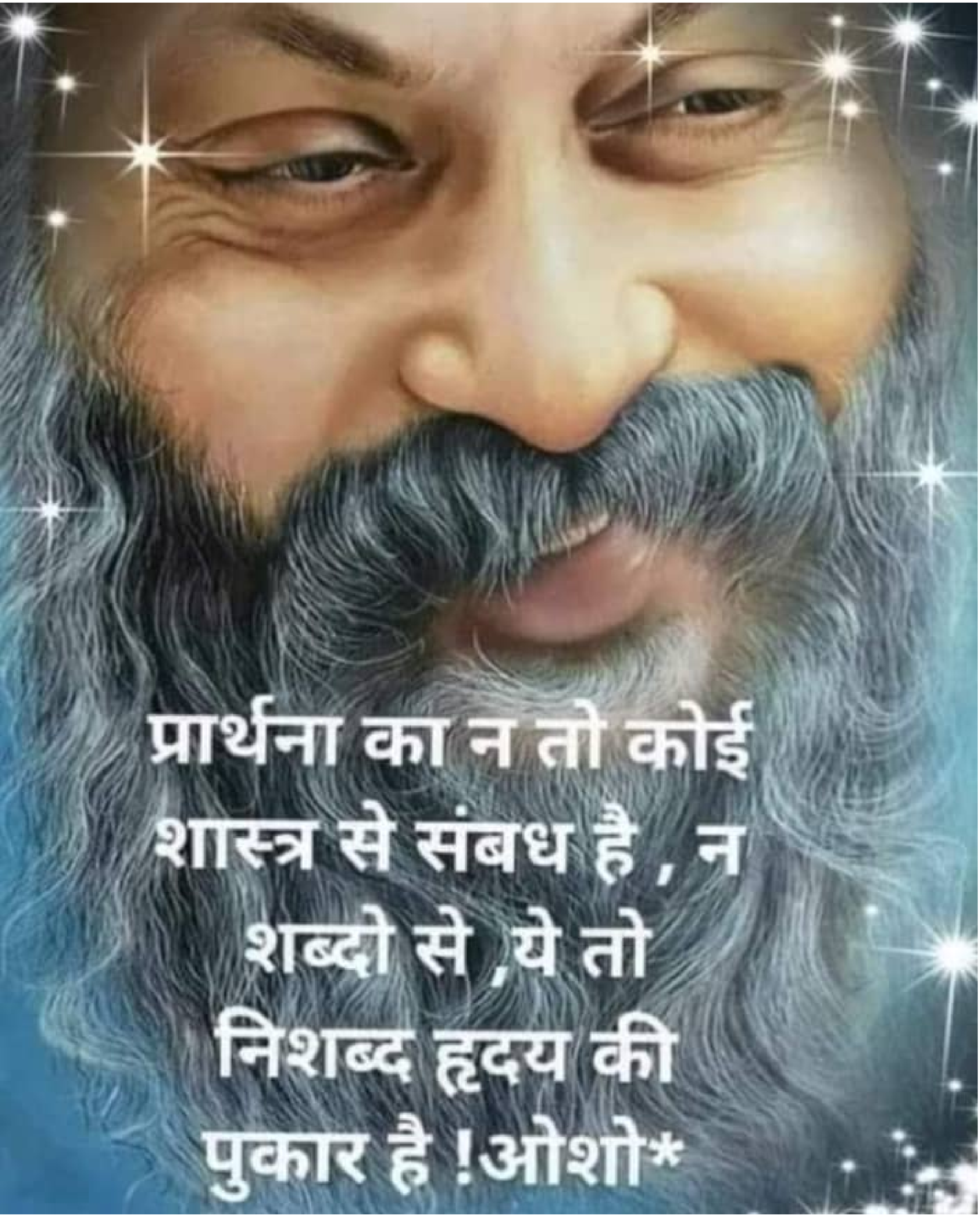


CamScanner

संत हम उसे कहते हैं जिसकी साधुता सधी हुई नहीं है, जिसकी साधुता सहज स्वभाव है। फिर कोई विश्राम नहीं है। तुम सांस लेने से तो कभी विश्राम नहीं लेते हो। तुम होने से तो कभी विश्राम नहीं लेते हो। जब तक तुम्हारे अन्तस् में प्रवेश न कर जाए शिवत्व तब तक सब ऊपर ऊपर है।

CamScanner

तुम्हारे भीतर शिवत्व तो बैठा ही हुआ है। वह तुम्हारा सदा का खजाना है। उसे पाने के लिए देर नहीं करने की जरूरत है सिर्फ आंख मोड़कर देखने की जरूरत है। अगर वह कहीं भविष्य में होता तो फिर कठिनाई थी, फिर समय लगता,जन्म-जन्म लगते,पहुंचते। इसलिए शिवत्व को पाना नहीं है सिर्फ आविष्कृत करना है।

osho suvichar

CamScanner

12:58 pm 9 KB/s 4G 61%

osho suvichar
1d ·

शिवतुल्य जो हो गया, वह जो भी बोलता है वही जप है। तुम उसे प्रार्थना करते न पाओगे, क्योंकि अब प्रार्थना को अलग करने की कोई जरूरत नहीं है। तुम उसे पूजा करते हुए न पाओगे, क्योंकि अब पूजा करने का हिस्सा न रही। अब वह स्वयं पूजा है। इसलिए वह जो भी करता है, उसमे अगर तुम गौर से देखोगे, तो सब जगह पूजा पाओगे। अगर वह स्वास भी लेता है तो भी जप है। वह अगर हाथ भी हिलाता है, तो पूजा है। वह उठता है, बैठता है, वह परिक्रमा है। शिवतुल्य जो हो गया उसका आचरण साधन हो जाता है। उसे साधना भी नहीं पड़ता,क्योंकि उसे साधना पड़ता हो, वह कभी सहज नहीं होगा। और जिसे साधना पड़ता हो उससे हम कभी न कभी थक जाएंगे । थकेंगे तो विश्राम करेंगे। विश्राम का अर्थ होगा विपरीत में चले जायेंगे। इसलिए अगर तुमने अपनी साधुता को साधा है तो छह दिन साधोगे, सातवें दिन विश्राम करना पड़ेगा। उस दिन तुम असाधु हो जाओगे। इसलिए तुम्हारे जो साधु है, उनके जीवन में असाधुता का क्षण होगा ही, क्यंकि तुम साधुता से भी थक चुके हो। एक दिन तो तुम्हें छुट्टी लेनी ही पड़ेगी। कृत्य को कोई सतत नहीं कर पाता है। उससे थकान अवश्य आएगी। इसलिए साधु भी छुट्टी पर होता है और अगर वह छुट्टी पर न हो तो तनाव बहुत बढ़ जाएगा।

इसलिए साधु के जीवन में भी असाधुता के क्षण होते हैं, और असाधु के जीवन में भी साधुता के क्षण होते हैं। तुम ऐसा पापी न पा सकोगे, जिसके जीवन में पुण्य का क्षण न हो, क्योंकि वह पाप से थक जाता है, तो विपरीत में विश्राम लेना पड़ता है। और तुम ऐसा पुण्यात्मा न पा सकोगे जिसके जीवन में पाप का क्षण न हो, क्योंकि वह पुण्य से थक जाता है तो पाप में विश्राम लेना पड़ता है। हमेशा विपरीत में जाकर डूबना पड़ता है, ताकि मन हल्का हो जाये।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

CamScanner

12:55 pm 98 KB/s 61%
facebook

♦ युवराज ने कहा - "पिता जी ! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राज नहीं दे रहे थे । मैंने आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना था । लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले ! आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है । धैर्य रख ।"

♦ जब ये सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया । राजा के मन में वैराग्य आ गया । राजा ने तुरन्त फैसला लिया - "क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ ।" फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - "पुत्री ! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं । तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रुप में चुन सकती हो ।" राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्याग कर जंगल में गुरु की शरण में चला गया ।

♦ यह सब देखकर नर्तकी ने सोचा - "मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, लेकिन मैं क्यूँ नहीं सुधर पायी ?" उसी समय नर्तकी में भी वैराग्य आ गया । उसने उसी समय निर्णय लिया कि आज से मैं अपना बुरा धंधा बन्द करती हूँ और कहा कि "हे प्रभु ! मेरे पापों से मुझे क्षमा करना । बस, आज से मैं सिर्फ तेरा नाम सुमिरन करुँगी ।"

♦ समझ आने की बात है, दुनिया बदलते देर नहीं लगती । एक दोहे की दो लाईनों से भी हृदय परिवर्तन हो सकता है । बस, केवल थोड़ा धैर्य रखकर चिन्तन करने की आवश्यकता है ।

♦ प्रशंसा से पिघलना नहीं चाहिए, आलोचना से उबलना नहीं चाहिए । नि:स्वार्थ भाव से कर्म करते रहें । क्योंकि इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा

8 3 comments • 2 shares
Like Comment Send Share
CamScanner

12:54 pm 31 KB/s VoLTE 4G 61%

♦ नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - "बस कर, एक दोहे से तुमने वैश्या होकर भी सबको लूट लिया है ।"

♦ जब यह बात राजा के गुरु ने सुनी तो गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरु जी कहने लगे - "राजा ! इसको तू वैश्या मत कह, ये तो अब मेरी गुरु बन गयी है । इसने मेरी आँखें खोल दी हैं । यह कह रही है कि मैं सारी उम्र संयमपूर्वक भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुज़रा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ, भाई ! मैं तो चला ।" यह कहकर गुरु जी तो अपना कमण्डल उठाकर जंगल की ओर चल पड़े ।

♦ राजा की लड़की ने कहा - "पिता जी ! मैं जवान हो गयी हूँ । आप आँखें बन्द किए बैठे हैं, मेरी शादी नहीं कर रहे थे और आज रात मैंने आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद कर लेना था । लेकिन इस नर्तकी ने मुझे सुमति दी है कि जल्दबाजी मत कर कभी तो तेरी शादी होगी ही । क्यों अपने पिता को कलंकित करने पर तुली है ?"

♦ युवराज ने कहा - "पिता जी ! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राज नहीं दे रहे थे । मैंने आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना था । लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले ! आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है । धैर्य रख ।"

♦ जब ये सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया । राजा के मन में वैराग्य आ गया । राजा ने तुरन्त फैसला लिया - "क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ ।" फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - "पुत्री ! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं । तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रुप में चुन सकती हो ।" राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्याग कर जंगल में गुरु की शरण में चला गया ।

♦ यह सब देखकर नर्तकी ने सोचा - "मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, लेकिन मैं क्यूँ नहीं सुधर पायी ?" उसी समय नर्तकी में भी वैराग्य

CamScanner

12:53 pm 14 KB/s 61%

♦ एक राजा को राज भोगते हुए काफी समय हो गया था। बाल भी सफ़ेद होने लगे थे। एक दिन उसने अपने दरबार में एक उत्सव रखा और अपने गुरुदेव एवं मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमन्त्रित किया। उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलाया गया।

♦ राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्रायें अपने गुरु जी को भी दीं, ताकि यदि वे चाहें तो नर्तकी के अच्छे गीत व नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सकें। सारी रात नृत्य चलता रहा। ब्रह्म मुहूर्त की बेला आयी। नर्तकी ने देखा कि मेरा तबले वाला ऊँघ रहा है, उसको जगाने के लिए नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा -
*"बहु बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिताय।*
*एक पलक के कारने, क्यों कलंक लग जाय।"*

♦ अब इस दोहे का अलग-अलग व्यक्तियों ने अपने अनुरुप अलग-अलग अर्थ निकाला। तबले वाला सतर्क होकर बजाने लगा।

♦ जब यह बात गुरु जी ने सुनी तो उन्होंने सारी मोहरें उस नर्तकी के सामने फैंक दीं।

♦ वही दोहा नर्तकी ने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नवलखा हार नर्तकी को भेंट कर दिया।

♦ उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के पुत्र युवराज ने अपना मुकट उतारकर नर्तकी को समर्पित कर दिया।

♦ नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - "बस कर, एक दोहे से तुमने वैश्या होकर भी सबको लूट लिया है।"

♦ जब यह बात राजा के गुरु ने सुनी तो गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरु जी कहने लगे - "राजा! इसको तू वैश्या मत कह, ये तो अब मेरी गुरु बन गयी है। इसने मेरी आँखें खोल दी हैं। यह कह रही है कि मैं सारी उम्र संयमपूर्वक भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुज़रा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ, भाई! मैं

CamScanner

12:52 pm 19 KB/s 4G 62%

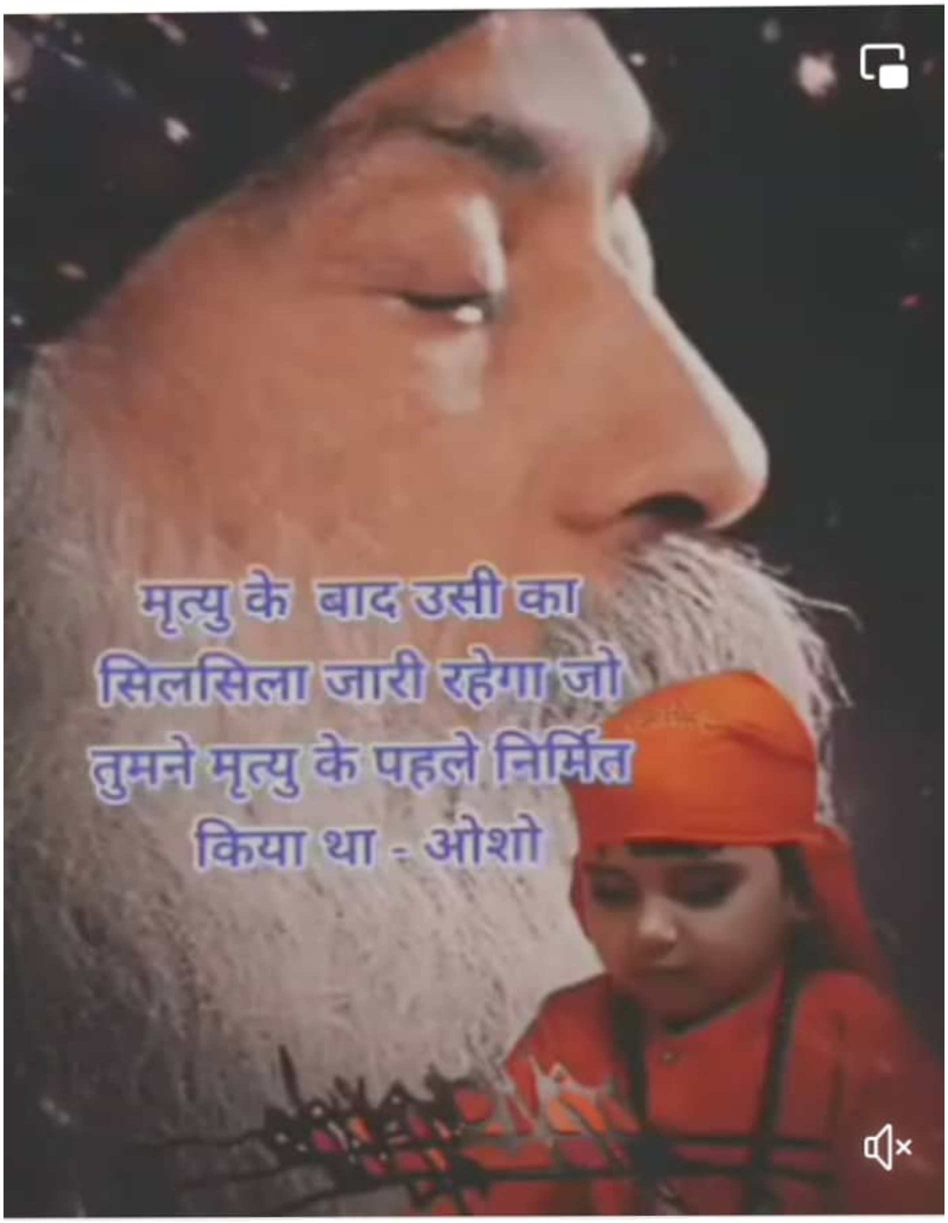


289 10 comments • 87 shares • 1.9K views

Like Comment Send Share

**Raju Daiya**
सद्गुरु शरणम् गच्छामि ओशो शरणम् गच्छामि।

Like Reply

Write a comment...

**Ananda Kriya Yoga Home Study**

CamScanner

12:52 pm 15 KB/s VoLTE 4G 62%

कोई रूमी कहीं मिल गया होगा, कोई मंसूर कहीं मिल गया होगा। लेकिन तुम चूक गए। तुम देख नहीं पाए। तुम्हारी आंख पर चश्मा है। यह चश्मा तुम्हारे मन का है। यह मन तुम्हें देखने नहीं देता। यह मन तुम्हें गुरुओं को देखने ही नहीं देता, क्योंकि गुरु को देखना मन की मौत का प्रारंभ है।

को खोलै कपट-किवरिया हो
बिन सतगुरु साहिब।

और जब तक तुम सदगुरु को न देखोगे, कौन खोलेगा किवाड़ प्रभु के मंदिर के? कौन खोलेगा झरोखे, जिनसे तुम झांक सको शाश्वत को–उस परम रहस्यमय को, उस परम विस्मय को!

नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो
ससुरे में भई फुहरिया हो
तुम्हारी जिंदगी यूं ही जा रही है।
जनम गुजर जाते हैं, तुम कुछ सीखते ही नहीं।

नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो
ससुरे में भई फुहरिया हो
न तो नैहर में कुछ सीखा,न ससुराल आकर।
ससुराल में आकर और फूहड़पन आ गया।

अपने मन की कुलवंती
छुए न पावै गगरिया हो

और अपने अहंकार से तुम इतने भरे हो कि सागर को पाना तो दूर, गागर को पाना भी मुश्किल है। तुम अपने अहंकार से इतने भरे हो कि सागर तो कहां तुम्हारे भीतर जगह पाएगा, एक गागर को रखने की भी जगह नहीं है। गुरु गागर है; परमात्मा सागर है
🌹ओशो🌹

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

12:52 pm 15 KB/s VoLTE 4G 62%

तुम अनेक बार बुद्धों के करीब आ गए हो और चूक गए। तुम कोई नये तो नहीं हो, शाश्वत यात्री हो। तुममें से कुछ जरूर गौतम बुद्ध के करीब से गुजरे होंगे; ऐसे ही किसी सुबह बैठ कर तुमने गौतम बुद्ध को सुना होगा। कुछ जीसस के पास से गुजरे होंगे; ऐसे ही किसी सुबह बैठ कर तुमने जीसस के वचन सुने होंगे। या जरथुस्त्र, या मोहम्मद, या कबीर, या कौन जाने कोई तुम में से पलटू के वचन भी सुना हो। तुम यहां सदा से हो। अनेक-अनेक रूपों में, अनेक देशों में, अनेक जातियों में तुम पैदा हुए हो। अनेक योनियों में तुम पैदा हुए हो। असंभव है यह बात कि इतनी लंबी यात्रा में कभी तुम किसी बुद्धपुरुष के पास से न गुजरे होओ। कोई नानक कहीं मिल गया होगा, कोई फरीद कहीं मिल गया होगा, कोई रूमी कहीं मिल गया होगा, कोई मंसूर कहीं मिल गया होगा। लेकिन तुम चूक गए। तुम देख नहीं पाए। तुम्हारी आंख पर चश्मा है। यह चश्मा तुम्हारे मन का है। यह मन तुम्हें देखने नहीं देता। यह मन तुम्हें गुरुओं को देखने ही नहीं देता, क्योंकि गुरु को देखना मन की मौत का प्रारंभ है।

को खोलै कपट-किवरिया हो
बिन सतगुरु साहिब।

और जब तक तुम सदगुरु को न देखोगे, कौन खोलेगा किवाड़ प्रभु के मंदिर के? कौन खोलेगा झरोखे, जिनसे तुम झांक सको शाश्वत को−उस परम रहस्यमय को, उस परम विस्मय को!

नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो
ससुरे में भई फुहरिया हो
तुम्हारी जिंदगी यूं ही जा रही है।
जनम गुजर जाते हैं, तुम कुछ सीखते ही नहीं।

नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो
ससुरे में भई फुहरिया हो
न तो नैहर में कुछ सीखा,न ससुराल आकर।
ससुराल में आकर और फूहड़पन आ गया।

अपने मन की कुलवंती

CamScanner

12:51 pm 17 KB/s VoLTE 4G 62%

आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]

सुरजीत सिंह रिबॉर्न · 2d ·

"हम खोते हैं तो होते हैं.."

सत्य बड़ा बदत्मीज है और अगर बदतमीज है तो, उस बदतमीज सत्य के तर्क भी तर्क संगत नहीं लगेंगे क्योंकि, सत्य है ही ऐसा जो सारी धारणाओं को तोड़ दे और अगर धारणा टूट रही है तो उसमे तर्क बचता ही कहां है।
वहां तो सत्य जैसा है ..वैसा ही दिखाई देता है..

CamScanner

12:50 pm 12 KB/s 4G 62%

**Osho international**
1h ·

मृत्यु कीमती चीज है। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो संन्यास न होता। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो धर्म न होता। अगर दुनिया में मृत्यु न होती तो परमात्मा का कोई स्मरण न होता, प्रार्थना न होती, पूजा न होती, आराधना न होती; न होते बुद्ध, न महावीर, न कृष्ण, न क्राइस्ट, न मोहम्मद। यह पृथ्वी दिव्य पुरुषों को तो जन्म ही न दे पाती, मनुष्यों को भी जन्म न दे पाती। यह पृथ्वी पशुओं से भरी होती है। यह तो मृत्यु ने ही झकझोरा। मृत्यु की बड़ी कृपा है, उसका बड़ा अनुग्रह है। मृत्यु ने झकझोरा, याद दिलाई। बुद्ध को भी स्मरण आया था, मृत्यु को ही देखकर। एक मरे हुए आदमी की लाश को देख कर पूछा था अपने सारथी से, इसे क्या हो गया?

उस सारथी ने कहा कि यह आदमी मर गया। बुद्ध ने कहा, क्या मुझे भी मरना होगा? सारथी झिझका, कैसे कहे? बुद्ध ने कहा, झिझको मत। सच-सच कहो, झूठ न बोलना। क्या मुझे भी मरना होगा? मजबूरी में सारथी को कहना पड़ा कि कैसे छिपाऊं आपसे! आज्ञा तो यही है आपके पिता की कि आपको मौत की खबर न होने दी जाए, क्योंकि बचपन में आपके ज्योतिषियों ने कहा था कि जिस दिन इसको मौत का स्मरण आएगा, उसी दिन यह संन्यस्त हो जाएगा। मगर झूठ भी कैसे बोलूं! मृत्यु तो सबको आएगी। आपको भी आएगी, मालिक! मृत्यु से कोई कभी बच नहीं सका है। मृत्यु अपरिहार्य है।

बुद्ध ने उसी रात घर छोड़ दिया, क्रांति घट गई। जब मृत्यु होने ही वाली है तो हो ही गई; तो जितने दिन हाथ में हैं इतने दिनों में हम उसको खोज लें जो अमृत है।
🌹ओशो🌹

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

12:50 pm 14 KB/s 62%

facebook

419 37 comments

Like Comment

**Osho Osho**
2h ·

स्त्री को तो शरीर के पार के देखने की सुविधा है।
उसके पास एक झरोखा है, जहां से वह देह को भूल जाती है और परमात्मा को देख लेती है। पुरुषों ने नहीं समझाया है स्त्री को कि पति परमात्मा है। यह स्त्रियों की प्रतीति है; कि जिसको भी उन्होंने प्रेम किया उसमें परमात्मा देखा। जहां प्रेम की छाया पड़ी, वहीं परमात्मा प्रगट होता है। जहां प्रेम की भनक आयी, वहीं परमात्मा के आने का प्रारंभ हो जाता है। प्रेम की पगध्वनि में परमात्मा की पगध्वनि अपने आप सुनायी पड़ने
लगती है।

ओशो
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-06)

CamScanner

स्त्रियों की प्रतीति है; कि जिसको भी उन्होंने
प्रेम किया उसमें परमात्मा देखा।
ओशो अहोभाव
एस धम्मो सनंतनो
(प्र-06)

CamScanner

#viralvideoreels #explorereels #viralshort #ex... See more

294 13 comments • 42 shares • 5.4K views

Like Comment Send Share

**Osho Rishi Valley. Shimla** is 😇

CamScanner

12:49 pm 13 KB/s VoLTE 4G 62%

12m ·

तिब्बत में बारदो नाम की प्रक्रियाएं हैं। मरते हुए आदमी को बौद्ध भिक्षु बारदो की प्रक्रिया करवाते हैं। जब वह मर रहा होता है, तब उसे सब सुझाव देते हैं कि- देख, अब तेरा शरीर छूट रहा है। अब तू स्मरण से भर कि तेरा शरीर छूट रहा है। अभी यह देह हट जाएगी तू स्मरण कर, तू होशपूर्वक मर कि अब तेरे साथ जो देह है वह भौतिक देह नहीं है, सूक्ष्म देह है। अब तूने शरीर छोड़ दिया अब तेरे सामने विकल्प हैं कि तू किस तरह से गर्भ को ग्रहण करे। ऐसे सब सुझाव बारदो की प्रकिया में मरते हुए आदमी को दिए जाते हैं।
और तिब्बत ने जितनी गहरी खोज मृत्यु के संबंध में की है किसी दूसरी जाति ने नहीं की है। आदमी मर रहा है और भिक्षु यह सुझाव दे रहा है। आखिरी क्षण तक जब शरीर छूट रहा है तब तक वह सुन रहा है भिक्षु को। यहां आदमी मर जायेगा और भिक्षु बोले चला जायेगा। तुम कहोगे कि अब तुम किससे बोल रहे हो अब बंद करो, आदमी तो मर गया। लेकिन भिक्षु अभी बोले चला जायेगा, क्योंकि अब तुम्हें मर गया है आदमी लेकिन भिक्षु को अभी भी नहीं मर गया है। और यह आदमी अभी भी सुन रहा है क्योंकि इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता कि शरीर छूट गया है यह अभी भी सुन रहा है।
और इसके अगले जन्म को प्रभावित किया जा सकता है कि कैसा गर्भ ग्रहण करे। और इसे इस जन्म के मोह और आसक्ति से मुक्त किया जा सकता है और इन क्षणों में इस आदमी को पूरी याद दिलाई जा सकती है कि तू शरीर नहीं है जो कि किसी और क्षण में याद दिलाना बहुत कठिन है-क्योंकि अब यह पायेगा की मैं हूँ और शरीर अलग पड़ा है। भिक्षु कहेगा कि देख अब तू ऊपर है और शरीर नीचे पड़ा है, गौर से देख। इसी शरीर के साथ तूने अपने को एक समझ रखा था और अब तेरे मित्र, प्रियजन इस शरीर को मरघट ले जाएंगे और तू पीछा कर। वहां तू इसे जलता देख, वहां यह राख हो जाएगा, फिर भी तेरे होने में रत्तीभर कमी नहीं पड़ती। स्मरण रखना इसको आगे यात्रा में। दुबारा शरीर के साथ ग्रस्त मत होना। अगले जन्म में पहले ही क्षण से स्मरण रखना कि तू शरीर नहीं है। सब कहेंगे कि तू शरीर है लेकिन तू अपनी स्मृति को मत खोना। तुम अपनी स्मृति को उनके सुझाव से ढकने मत देना।
प्रवचन- शिवसूत्र
ओशो

CamScanner

12:46 pm 13 KB/s 63%

62 · 9 comments • 5 shares

Like · Comment · Send · Share

**ओशो,मेरा मुझमे कुछ नही**

6d ·

विराट को पकड़ो क्षुद्र अपने आप छूट जाता है,

'प्रेम' की दिव्यता में डूबों 'काम' अपने से धुआ बन उड़ जायेगा,

प्रेम सहज योग है।

"ध्यान" भी मुक्ति है ,
यदि 'साक्षी' जाग जाये!

निर्विचार चित्त किसी प्रकार की कल्पना नहीं करता ,

कल्पना शून्य होते ही वासना तिरोहित हो जाती है।

ॐ ओशो प्रेम प्रणाम ॐ

6 · 1 comment

Like · Comment · Send · Share

**Pooja A Shah - Life Coach**

Sponsored ·

Sign Up Now
FREE Awareness Webin

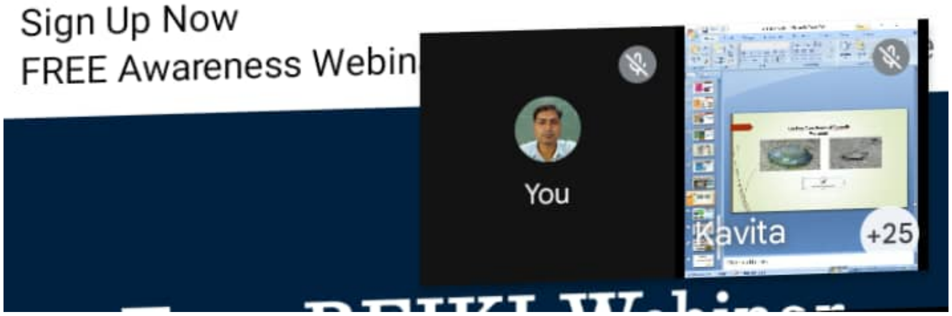


CamScanner

CamScanner

12:42 pm 13 KB/s VoLTE 4G 64%

**Osho Rishi Valley. Shimla**

**Osho Rishi Valley. Shimla** is 😇 feeling blessed.

13h ·

ओशो कहते हैं - परमानंद तुम्हारा सबसे आंतरिक मूल है। आनंद आपको दूसरों से भीख मांगना पड़ता है। स्वाभाविक रूप से, आप निर्भर हो जाते हैं। परमानंद आपको एक मास्टर बनाता है। परमानंद कुछ ऐसा नहीं है जो होता है; यह पहले से ही मामला है।

Rate this translation

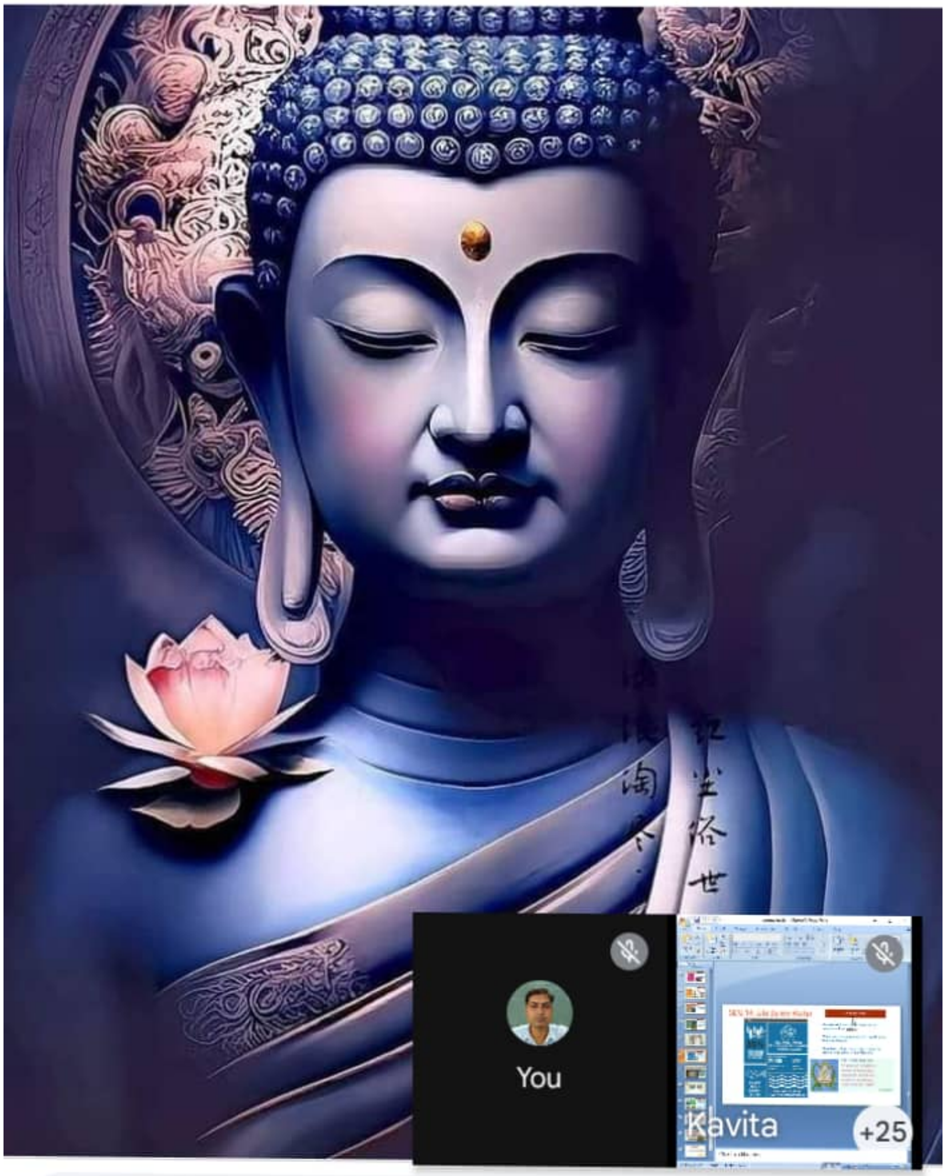


Write a comment...

CamScanner

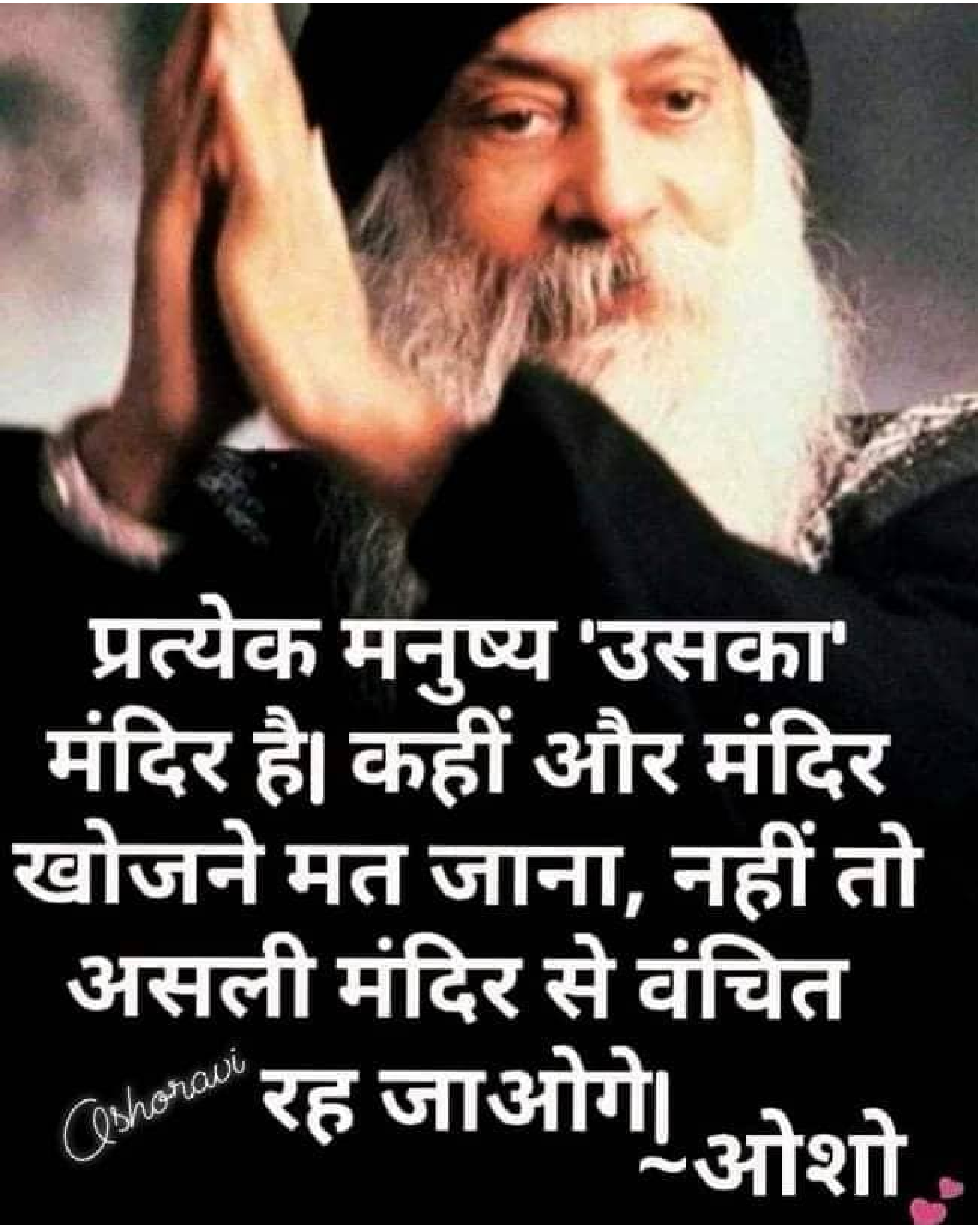
प्रत्येक मनुष्य 'उसका'
मंदिर है। कहीं और मंदिर
खोजने मत जाना, नहीं तो
असली मंदिर से वंचित
रह जाओगे।
~ओशो
Oshoravi

CamScanner

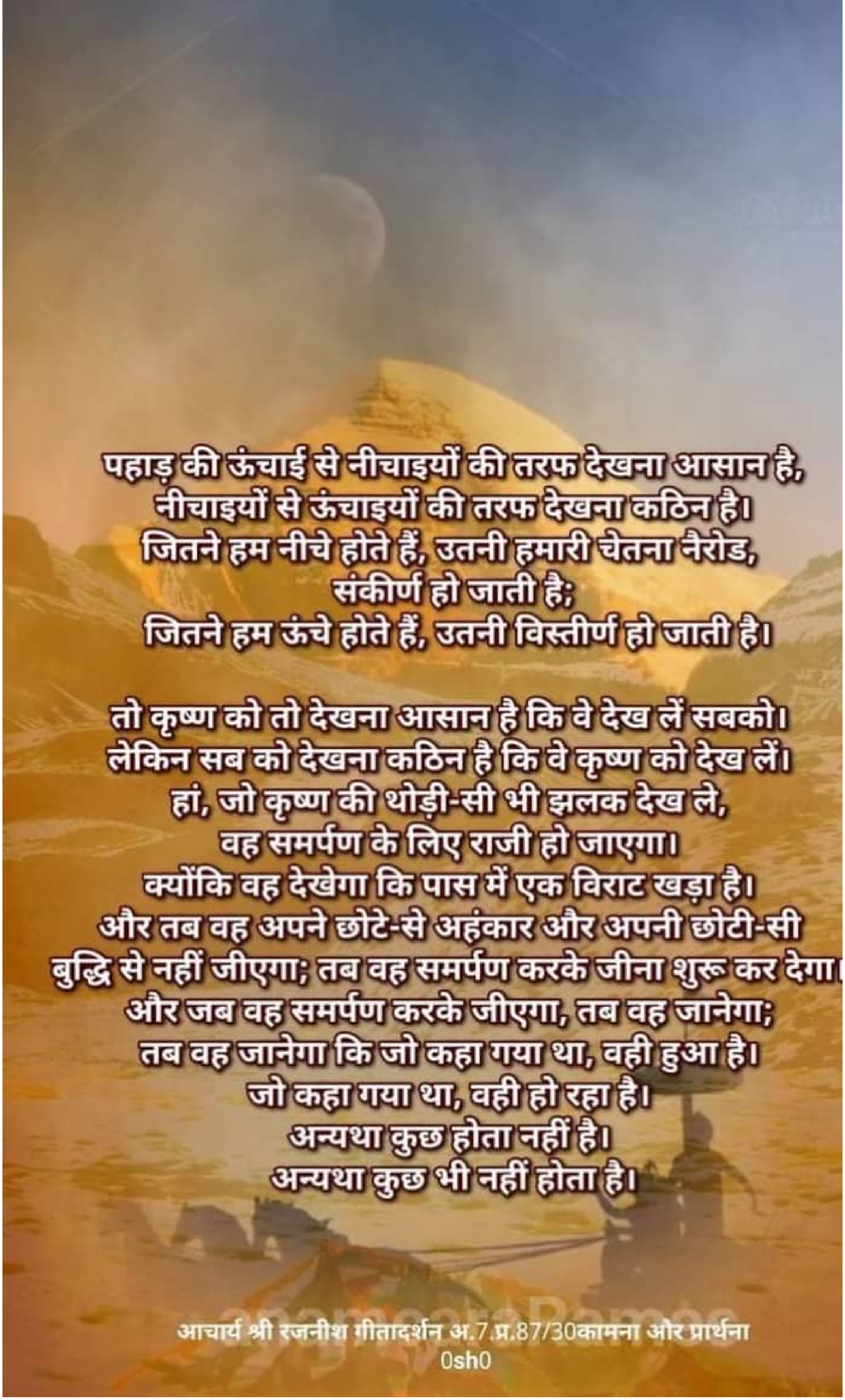
पहाड़ की ऊंचाई से नीचाइयों की तरफ देखना आसान है,
नीचाइयों से ऊंचाइयों की तरफ देखना कठिन है।
जितने हम नीचे होते हैं, उतनी हमारी चेतना नैरोड,
संकीर्ण हो जाती है;
जितने हम ऊंचे होते हैं, उतनी विस्तीर्ण हो जाती है।
तो कृष्ण को तो देखना आसान है कि वे देख लें सबको।
लेकिन सब को देखना कठिन है कि वे कृष्ण को देख लें।
हां, जो कृष्ण की थोड़ी-सी भी झलक देख ले,
वह समर्पण के लिए राजी हो जाएगा।
क्योंकि वह देखेगा कि पास में एक विराट खड़ा है।
और तब वह अपने छोटे-से अहंकार और अपनी छोटी-सी
बुद्धि से नहीं जीएगा; तब वह समर्पण करके जीना शुरू कर देगा।
और जब वह समर्पण करके जीएगा, तब वह जानेगा;
तब वह जानेगा कि जो कहा गया था, वही हुआ है।
जो कहा गया था, वही हो रहा है।
अन्यथा कुछ होता नहीं है।
अन्यथा कुछ भी नहीं होता है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.87/30कामना और प्रार्थना
0sh0

CamScanner

12:28 pm 33 KB/s 66%

Osho Osho

1h ·

प्रेम का जो विकास है, वह काम की शक्ति का ही रूपांतरण है। दूर दूर रहकर जो प्रेम है, वह अलग है, उससे प्रकृति का निर्माण नहीं हो सकता। और संभोग एक प्राकृतिक क्रिया है, बगैर उसके प्रकृति का बने रहना संभव नहीं। स्वस्थ संभोग स्वस्थ प्रकृति के जरूरी है। और स्वस्थ संभोग तभी संभव है, जब उसे पाप या जहर न बताया जाए।

जैसे कोयला रूपांतरित होकर हीरा बन जाता है। हीरे और कोयले में कोई फर्क नहीं है। हीरे में भी वे ही तत्व हैं जो कोयले में हैं। कोयला एक लंबी प्रक्रिया से गुजर कर हीरा बन जाता है। कोयले की शक्ति ही हीरा बनती है। और अगर आप कोयले के दुश्मन हो गए.. तो हीरे के पैदा होने की संभावना भी समाप्त हो गई, क्योंकि कोयला ही हीरा बन सकता था।

सेक्स की शक्ति ही, काम की शक्ति ही प्रेम बनती है। धीमे-धीमे धरती की गर्मी से तपता रहता है, तब जाकर हीरा बन पाता है। यह भी एक तरह का संभोग ही है। ठीक वैसे ही जैसे औरत की गर्मी से आदमी धीर-धीरे तपता रहे तो, उस संभोग की यात्रा से प्रेम निकल सकता है।

ओशो

CamScanner

7

**Sohit Kumar Sen**
Atma aur kuchh nhi wo param chetna hi hai usse alag nhi hai
Swaroop iska nirakar nirvikar hai yah maya ya prakrati se pare hai
Yah swayam mai ot prot hai jis tarah makdi jaal bnati hai usme vichran karti hai fir use hi nigal jati hai ese hi parmatma maya nirman karta hai usme vichran karta hai aur khud maya ka bhanjan karta hai yah khud hi khud ka srot hai bs swaroop parivartan hota hai ye tha hai aur rahega
Jese energy $e=mc^2$
Parmatma pahle maya ka nirman karta hai fir maya ke dwara hi shrasti rachi jati hai....
💐❤️🙏 achha prashn hai apka

4h Like Reply 2 ❤️

**Gaurav Rai Dilse** Sohit Kumar Sen Chetna sharir...

**हरि और हाइड्रोजन**
आत्मा परमात्मा की ही एक प्रजाति 🙏

3h Like Reply

**Gaurav Rai Dilse**
Atma kuch nahi h. Chetna sharir aur Parmatma hai. Ek sikke k 3 pehlu hai. Ek paheli h. Jo nirakar hai. Aur do saakaar hai.

5m Like Reply

**Sunil Humane**
Atma.parmatan
pahale.swaym.k
r.sakta..hai.

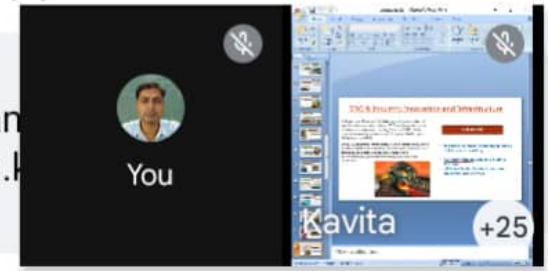


3h Like Reply

Write a comment...

CamScanner

12:23 pm 19 KB/s VoLTE 4G 67%

geetmanjusha.com/lyrics

Hindi Songs's Lyrics

Lyrics

# Zindagi Khwab Hai / ज़िन्दगी ख्वाब है

रंगी को नारंगी कहे, बने दूध को खोया
चलती को गाडी कहे, देख कबीरा रोया

ज़िन्दगी ख्वाब है
ख्वाब में झूठ क्या और भला सच है क्या
सब सच है

दिल ने हम से जो कहा, हम ने वैसा ही किया
फिर कभी फुरसत से सोचेंगे, बुरा था या भला

एक कतरा मय का जब पत्थर के होठों पर पड़ा
उस के सीने में भी दिल धड़का, ये उस ने भी कहा

एक प्याली भर के मैंने गम के मारे दिल को दी
जहर ने मारा जहर तो मुर्दे में फिर जान आ गयी

#Motilaal #RajKapoor

geetmanjusha.com

## Zindagi Khwab Hai Lyrics

Rngi ko naarngi kahe, a
Chalati ko gaadi kahe,

Zindagi khwaab hai
Khwaab men jhuthha
Sab sach hai

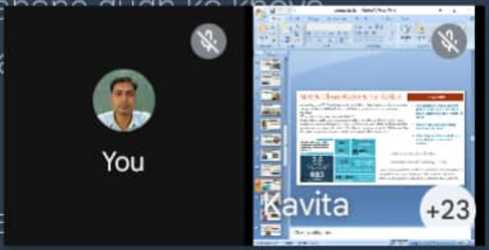


CamScanner

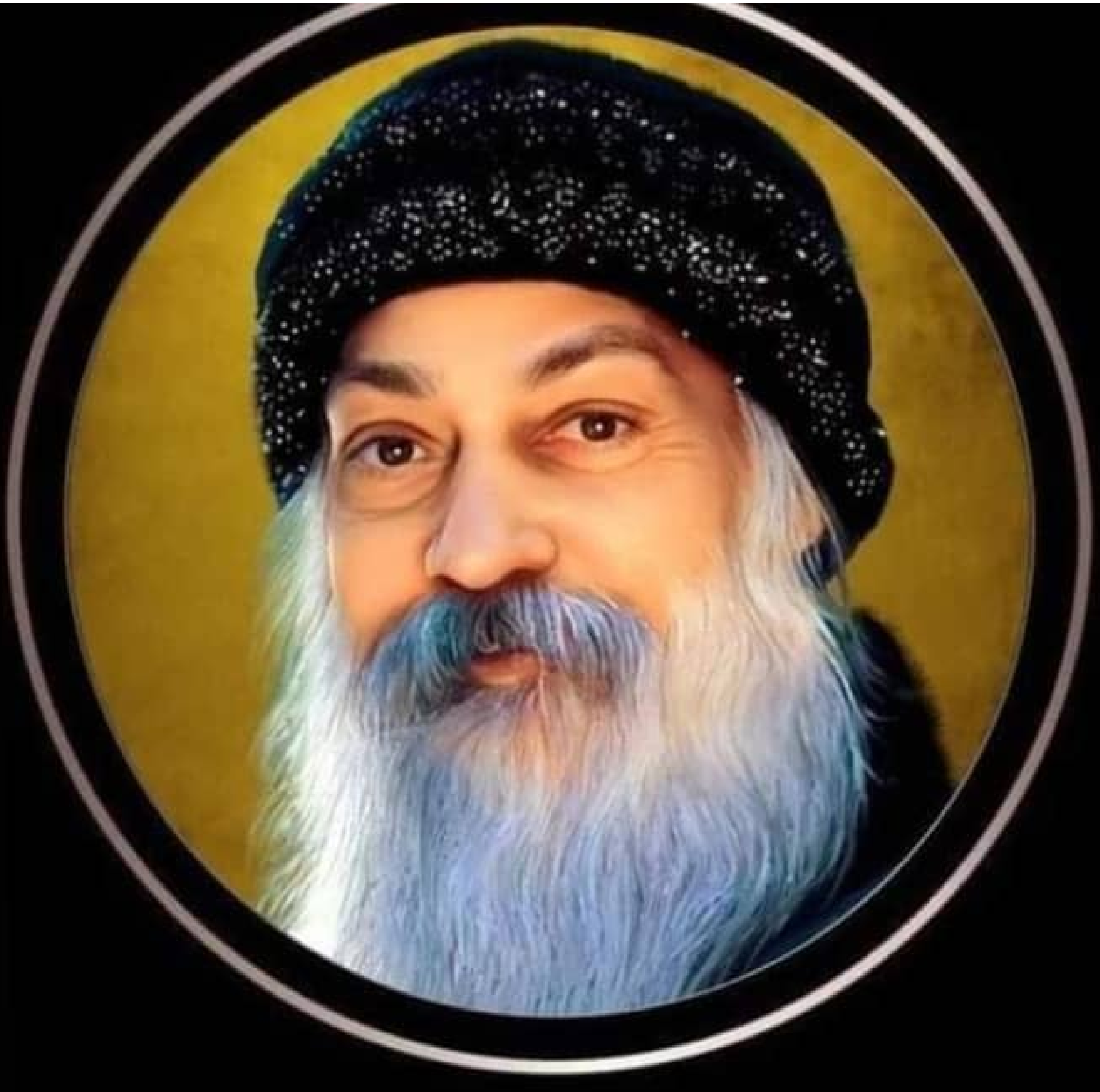

शुद्ध वही है, जो बाहर – भीतर एक-सा है। भीतर कुछ और है, बाहर कुछ और है, वह अशुद्ध है। ओशो अहोभाव

CamScanner

3:33 pm 10 KB/s 4G 38%
facebook

है? किसी को पता नहीं है।

फिर दरवाजा खुला, वह आदमी बाहर निकला। सब उसकी तरफ देखने लगे। कैप्टेन ने पूछा,कहां है ऊगल-गूगल? उसने अपने पीठ के पीछे से एक चीज निकाली, जैसे कोई टीन के डिब्बे को सब तरफ से पीटा गया हो, इस तरह की शक्ल थी उसकी। उसने कहा, यह ऊगल-गूगल है। अब सब बड़े हैरान हुए! उन्होंने कहा, इसका उपयोग क्या है? यह किस काम में आता है?उसने कहा, आइए मेरे साथ। वह जाकर जहाज के किनारे ले गया और उसने अपने ऊगल-गूगल को पानी में फेंका। जब वह डब्बा पानी में डूबने लगा, तो उससे आवाज निकली--ऊगल-गूगल! यह ऊगल-गूगल था!

लेकिन एक भी आदमी उस जहाज पर यह नहीं कह सका, यह क्या बेवकूफी है? किस चीज का नाम है? क्योंकि हमारे भीतर यह अहंकार बड़ा प्रबल है कि हम जानते हैं।

एक आदमी ईश्वर के बाबत बातें करता रहता है,आत्मा के बाबत, पुनर्जन्म के बाबत। मृत्यु के बाद--मोक्ष, नरक और स्वर्ग। और लोग बैठे सुनते रहते हैं, जैसे कि वह आदमी किन्हीं चीजों की बात कर रहा हो, जिनको जानता है। सुनने वाले भी ऐसे सुनते हैं कि हम भी जानते हैं। बोलने वाला भी शब्द जानता है, सुनने वाले भी शब्द जानते हैं। उनके शब्द मेल खाते हैं,परिचित मालूम होते हैं। वे दोनों राजी मालूम होते हैं किक बिलकुल ठीक है, बिलकुल ठीक है। बिलकुल ठीक है, यह बात बिलकुल सही कही जा रही है।

दुनिया में एक गहरा डिसेप्शन, एक प्रवंचना,एक धोखा चल रहा है शब्दों के नाम पर--ज्ञान का। परंपरा से कोई ज्ञान उपलब्ध नहीं होता,केवल शब्द उपलब्ध होते हैं। और शब्दों को हम ज्ञान समझ कर बैठ जाते हैं।

ओशो
माटी कहे कुम्हार सूं-(ध्यान-साधना)-प्रवचन-07

CamScanner

3:31 pm 38%

फर्क है। तुम मांगते हो भगवान को, वह ले जाता है वेद की पोथियां।
वह कहता है, सब इसमें लिखा है।

यह ऐसे ही है, जैसे कोई भूखा मर रहा हो और तुम जाकर पाक—शास्त्र का ग्रंथ सामने रख दो और कहो कि सब तरह के भोज—मिष्ठान्न, सब इसमें लिखे हैं। वह तुम्हारे पाक—शास्त्र को उठाकर फेंक देगा भूखा आदमी। ही, भरा पेट होगा, तो विश्राम से बैठकर पाक—शास्त्र को पड़ेगा। लेकिन भूखे को पाक—शास्त्र का क्या अर्थ है?

जिसको परमात्मा की भूख लग गई है, वेद व्यर्थ है, उपनिषद बकवास है, गीता असार है। वह परमात्मा को चाहता है; उससे कम पर वह राजी नहीं है। और गोपियां न केवल परमात्मा को चाहती थीं, बल्कि उनको परमात्मा का स्वाद भी लग गया था, वे परमात्मा को जान भी चुकी थीं। हां, जिसने न जाना हो परमात्मा को, उसको प्यास भी लगी हो, तो शायद थोड़ी—बहुत देर पंडित उसको भरमा ले। क्योंकि उसके पास कोई कसौटी तो नहीं है अनुभव की। इसलिए अज्ञानी को पंडित भरमा लेता है। लेकिन जिसको ध्यान की जरा—सी भी भनक आ गई, फिर पंडित उसको नहीं भरमा सकता।

ये गोपिया कृष्ण के साथ नाच चुकी थीं; वह उनकी स्मृति में संजोया हुआ मंदिर था। वह स्मृति भूलती नहीं थी, बिसरती नहीं थी। वह तो निशि—वासर, दिन—रात भीतर कौंधती रहती थी। एक दफा जिसने चख लिया कृष्ण का साथ, नाच लिया कृष्ण के साथ वृक्षों के तले पूर्णिमा की रातों में, अब इसे पंडित धोखा नहीं दे सकता, भरमा नहीं सकता।

उद्धव खूब समझाए होंगे, ज्ञान की बातें की होंगी। गोपियों ने उनकी जरा भी न सुनी। बल्कि गोपिया नाराज हुईं कि कृष्ण ने यह कैसा मजाक किया! यह बरदाश्त के बाहर है। और प्रेमी परमात्मा से नाराज हो सकता है, सिर्फ प्रेमी! पंडित कभी नहीं नाराज हो सकता। पंडित तो डरता है। प्रेमी थोड़े ही डरता है, प्रेम तो अभय है। गोपियां नाराज हुईं। यह मजाक बरदाश्त के बाहर है। इस उद्धव को किसलिए भेजा? इससे क्या लेना—देना है? आना हो, कृष्ण आ जाएं; कम से कम पंडितों को तो न भेजें। परमात्मा चाहिए, शास्त्र नहीं; ज्ञान नहीं, अनुभव चाहिए। गोपिया बहुत नाराज हुईं। प्रेमी नाराज हो सकते हैं।

ओशो - गीता दर्शन – भाग - 8, - अध्याय—17
(प्रवचन—दूसरा) - भक्ति और भगवान

CS CamScanner

3:31 pm 10 KB/s 38%

नहीं। क्योंकि वहां हम व्यर्थ ही सिद्ध होंगे।

वे कृष्ण को मांगती थीं, उद्धव को नहीं। संदेशवाहक नहीं चाहिए; चिट्ठी—पत्री लाने से क्या होगा! बुलाया था प्रेमी को, आ गया पोस्टमैन! इनसे क्या लेना—देना है? उन्होंने उद्धव को बैरंग भेज दिया वापस।

वह उद्धव को समझाने के लिए ही कृष्ण ने खेल किया होगा। इतना तो पक्का था कि गोपियां नहीं समझाई जा सकतीं, कृष्ण तो समझते हैं कि नहीं समझाई जा सकतीं। कृष्ण से कम पर वे राजी न होंगी।

प्रेमी का अर्थ है, परमात्मा से कम पर जो राजी न होगा। तुम परमात्मा के संबंध में समझाओ, प्रेमी कहेगा, क्यों व्यर्थ की बातें कर रहे हो? परमात्मा के संबंध में नहीं जानना है उसे। उसे परमात्मा को जानना है। परमात्मा के संबंध में वेद क्या कहते हैं, उपनिषद क्या कहते हैं, शास्त्रों में क्या लिखा है, क्या नहीं लिखा है! वह कहेगा, बंद करो यह बकवास। मुझे परमात्मा चाहिए। परमात्मा मिल गया, तो मुझे वेद मिल गए। परमात्मा ही मेरा वेद है।

लेकिन पंडित कहता है, वेद भगवान! पंडित वेद को भगवान! बतलाता है। प्रेमी को भगवान ही वेद है। और बड़ा फर्क है; जमीन—आसमान का फर्क है। तुम मांगते हो भगवान को, वह ले आता है वेद की पोथियों को। वह कहता है, सब इसमें लिखा है।

यह ऐसे ही है, जैसे कोई भूखा मर रहा हो और तुम जाकर पाक—शास्त्र का ग्रंथ सामने रख दो और कहो कि सब तरह के भोज—मिष्ठान्न, सब इसमें लिखे हैं। वह तुम्हारे पाक—शास्त्र को उठाकर फेंक देगा भूखा आदमी। ही, भरा पेट होगा, तो विश्राम से बैठकर पाक—शास्त्र को पड़ेगा। लेकिन भूखे को पाक—शास्त्र का क्या अर्थ है?

जिसको परमात्मा की भूख लग गई है, वेद व्यर्थ है, उपनिषद बकवास है, गीता असार है। वह परमात्मा को चाहता है; उससे कम पर वह राजी नहीं है। और गोपियां न केवल परमात्मा को चाहती थीं, बल्कि उनको परमात्मा का स्वाद भी लग गया था, वे परमात्मा को जान भी चुकी थीं। हां, जिसने न जाना हो परमात्मा को, उसको प्यास भी लगी हो, तो शायद थोड़ी—बहुत देर पंडित उसको भरमा ले। क्योंकि उसके पास कोई कसौटी तो नहीं है अनुभव की। इसलिए अज्ञानी को पंडित भरमा लेता है। लेकिन जिसको ध्यान की जरा—सी भी भनक आ गई, फिर पंडित उसको नहीं भरमा सकता।

ये गोपिया कृष्ण के साथ नाच चुकी थीं; वह उनकी स्मृति में संजोया हुआ मंदिर था। वह स्मृति भूलती नहीं थी, बिसरती नहीं थी। वह तो

CamScanner

3:30 pm 10 KB/s VoLTE 4G 39%

1h ·

कृष्ण ने गोपियों को समझाने के लिए उद्धव को वृंदावन भेजा था, पर वे सफल क्यों न हो पाए?

हो ही न सकते थे, बात ही संभव न थी। उद्धव थे ज्ञानी, और ज्ञान कब प्रेमियों को समझा पाया है? कृष्ण ने मजाक किया होगा। ज्ञानी को भेजकर मजाक किया। ज्ञानी कभी प्रेमी को नहीं समझा सकता, क्योंकि ज्ञानी के पास होते हैं शब्द कोरे। पंडित थे उद्धव; बड़े पंडित होगे, कुशल होंगे समझाने में। लेकिन उन्होंने जिनको समझाया होगा तब तक, वे गोपियां नहीं थीं, जिनको प्रेम का रस लग गया था।
पंडित तभी तक तुम्हें सार्थक मालूम होगा, जब तक तुम्हें प्रेम का रस नहीं लगा। प्रेम के काटे को पंडित नहीं झाड़ू सकता। पंडित उन्हीं को झाड़ सकता है, जो प्रेम के काटे नहीं हैं। पंडित उनके काम का है, जिनकी प्यास ही नहीं जगी। पंडित उनको बडा महापंडित मालूम होता है, कितनी जानकारी लाता है! लेकिन जिसको प्यास जग गई, और प्रेम की भनक पड़ गई, और जिसके हृदय में कोई धुन बजने लगी अशांत की, पंडित कूड़ा—कर्कट है। उद्धव व्यर्थ थे।
मेरी जो समझ है, वह यह है कि उन्होंने उद्धव को गोपियों को समझाने भेजा ही नहीं था; उद्धव को समझने भेजा था गोपियों को। ऐसा किसी ने कभी कहा नहीं, लेकिन मेरी यही समझ है। वह उद्धव को मूर्ख बनाया, उसको अकल दी, कि तू जरा जा! यहां तू बड़ा पंडित हुआ जा रहा है। क्योंकि जिनको तू समझा रहा है, उनको प्रेम का रस ही नहीं लगा है, उनकी प्यास ही नहीं जगी है। तो तू ज्ञान की बातें कर, वे सिर हिलाते हैं। जब प्रेमी मिलेगा, तब तुझे अड़चन आएगी, तब तेरी ज्ञान की बातें जरा भी काम न आएंगी। जिसको प्यास लगी है, तुम पानी का शास्त्र समझाओगे, क्या फल होगा? वे कहेंगे, पानी चाहिए।
गोपियों ने कहा, कृष्ण चाहिए, तुम किसलिए आए हो? उद्धव बड़े बुद्ध बने। जाना ही नहीं था, अगर थोड़ी अकल होती। लेकिन पंडित में अकल होती ही नहीं। पंडित से ज्यादा बेअकल आदमी नहीं होता। जाना ही नहीं था, पहले ही हाथ जोड़ लेना था, कि गोपियों के? मैं जाने वाला नहीं। क्योंकि वहां हम व्यर्थ ही सिद्ध होंगे।
वे कृष्ण को मांगती थीं, उद्धव को नहीं। संदेशवाहक नहीं चाहिए; चिट्ठी—पत्री लाने से क्या होगा! बुलाया था प्रेमी को, आ गया पोस्टमैन! इनसे

CamScanner

हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है।
तुमने कभी समझा, क्यों?
दो कारणों से।
एक तो हंस सार को असार से अलग कर लेता है।
और दूसरा, हंस सभी दिशाओं में गतिवान है।
वह जल में तैर सकता है, जमीन पर चल सकता है, आकाश में उड़ सकता है। उसके स्वातंत्र्य पर कहीं कोई सीमा नहीं है। जमीन हो तो चल लेता है। सागर हो तो तैर लेता है। आकाश हो तो उड़ लेता है। तीनों आयामों में, तीनों डायमेंशन्स में उसके लिए कहीं कोई रुकावट नहीं है। जिस दिन तुम सार और असार को पहचानने लगोगे, उस दिन तुम्हारा स्वातंत्र्य भी इतना ही अपरिसीम हो जाएगा जैसा हंस का।
इसलिए हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है।

न जानने से ही बंधें हो। जमीन पर ही ठीक से रहना नहीं आता, पानी पर चलने की तो बात अलग! आकाश में उड़ना तो बहुत दूर! शरीर में ही ठीक से रहना नहीं आता, मन की तो बात अलग, आत्मा की तो बात बहुत दूर!

शरीर यानी जमीन। मन यानी जल। आत्मा यानी आकाश। इसलिए मन जल की तरह तरंगायित। शरीर थिर है पृथ्वी की तरह। सत्तर साल तक डटा रहता है। गिर जाता है उसी पृथ्वी में जिससे बनता है। मन बिलकुल पानी की तरह है। पारे की तरह कहो। छितर-छितर जाता है। आत्मा आकाश की तरह निर्मल है। कितने ही बादल घिरे, कोई बादल धुएं की एक रेखा भी पीछे नहीं छोड़ गया। कितनी ही पृथ्वियां बनीं और खो गयीं। कितने ही चांद-तारे निर्मित हुए और विलीन हो गए। आकाश कूटस्थ है, अपनी जगह, हिलता-डुलता नहीं।

शरीर में ही रहना तुमसे नहीं हो पाता, मन की तो बात अलग। मन में जाते ही चिंता पकड़ती है। विचारों का ऊहापोह पकड़ता है। आत्मा तो फिर बहुत दूर है। क्योंकि आत्मा यानी निर्विचार ध्यान, आत्मा यानी समाधि-आकाश, मुक्त, असीम।

#ओशो

CamScanner

3:21 pm 11 KB/s VoLTE 4G 41%

4h ·

जगत की सृजन की जो प्रक्रिया हैं
उस प्रक्रिया में सदा से ही जिन्होंने खोज की है उन्होंने पाया कि वह प्रक्रिया तीन चीजों पर निर्भर है। वह 'थ्री फोल्ड' है।
अभी विज्ञान ने भी जब खोज किया अणु की, तो उसने पाया कि अणु भी गहरे में तोड़ने पर तीन चीजों में टूट जाता है। वह जो अंतिम हमारी उपलब्धि है विज्ञान की, वह भी कहती है, 'इलेक्ट्रॉन', 'प्रोटॉन', और 'न्यूट्रॉन' में अणु टूट जाता है।
जिन लोगों ने धर्म के जगत में बड़ी गहरी अंतर्दृष्टि पाई थी, उन्होंने भी जगत को तीन हिस्सों में तोड़कर देखा था।

विष्णु उन्हीं तीन के एक हिस्से है।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ये तीन शब्द धर्म के द्वारा जगत की सृजन-प्रक्रिया के तीन हिस्सों के नाम हैं। और इन तीनों के तीन अर्थ हैं।

इसमें ब्रह्मा जन्मदाता, स्रष्टा, बनानेवाला, 'क्रिएटिव फोर्स' है। इसमें शंकर, शिव–महेश–विध्वंस, प्रलय, विनाश, अंत की शक्ति है।

विष्णु इन दोनों के बीच में है–संस्थापक, चलानेवाला। मृत्यु है, जन्म है और बीच में फैला हुआ जीवन है। जिसकी शुरुआत हुई है, उसका अंत होगा। और शुरुआत और अंत के बीच में फैला हुआ जीवन है। जिसकी शुरुआत शिव के बीच की यात्रा है।

ब्रह्मा की एक दफे जरूरत पड़ेगी सृजन के क्षण में। और शिव की एक बार जरूरत पड़ेगी विध्वंस के क्षण में। और विष्णु की जरूरत दोनों बिंदुओं के मध्य में। सृजन और विध्वंस, और दोनों के बीच में जीवन। जन्म और मृत्यु, और दोनों के बीच जीवन।

ये तीन जो नाम हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के, ये व्यक्तियों के नाम नहीं हैं। ये कोई व्यक्ति नहीं हैं, ये सिर्फ शक्तियों के नाम हैं।

और जैसा मैंने कहा, सृजन की तो एक दिन जरूरत पड़ती है, फिर विध्वंस की एक दिन जरूरत पड़ती है, लेकिन बीच में जीवन की जो

CamScanner

3:21 pm 16 KB/s VoLTE 4G 41%

शरीर ध्वनि का ही जोड़ है। और ओंकार से अद्भुत ध्वनि नहीं। यह दस मिनट ओंकार का उच्चार जोर से, शरीर के माध्यम से, फिर आंख बंद कर लेना। ओंठ बंद कर लेना। जीभ तालू से लग जाए,इस तरह मुंह बंद कर लेना कि बिलकुल बंद है, कोई जगह न बची;क्योंकि अब जीभ का उपयोग नहीं करना है, ओंठ का उपयोग नहीं करना है।
दूसरा कदम है, दस मिनिट तक अब ओम का उच्चार करना भीतर मन में। अभी तक कक्ष था चारों तरफ, अब शरीर है चारों तरफ। अभी तक मकान के भीतर थे तुम, अब शरीर मकान है। दूसरे दस मिनिट में अब तुम अपने भीतर मन में. ही गुजाना। ओंठ का, जीभ का, कण्ठ का कोई उपयोग न करना। सिर्फ मन में ओम..... ओम्. .लेकिन गति वही रखना। तीव्रता वही रखना। जैसे तुमने कमरे को भर दिया था ओंकार से, ऐसे ही अब शरीर को भीतर से भर देना ओंकार से—कि शरीर के भीतर ही कंपन होने लगे, ओम. दोहरने लगे, पैर से लेकर सिर तक। और इतनी तेजी से यह ओम करना है,जितनी तेजी से तुम कर सको और दौ ओम के बीच जरा भी जगह मत छोड़ना क्योंकि मन का एक नियम है कि वह एक साथ दो विचार नहीं कर सकता। एक साथ दो विचार असंभव हैं।

अगर तुमने ओम इतने जोर से गुंजाया कि दो ओम के बीच में जरा—सी भी संधि न बची तो कोई विचार न आ सकेगा। अगर जरा—सी संधि बची तो विचार आ जायेगा; उसी संधि में जगह बना लेगा। तो संधि मत छोड़ना; संधि—शून्य उच्चार। इसकी भी फिक्र न करना कि एक ओम पर दूसरा चढ़ा जा रहा है। जैसे कभी मालगाड़ी टकरा जाती है, एक डब्बे के ऊपर दूसरा डब्बा हो जाता है, ऐसा तुम ओम को एक दूसरे के ऊपर हो जाने देना। जगह बीच में मत छोड़ना और ध्यान रखना, शरीर का उपयोग नहीं करना है इसमें। आंख इसलिए अब बंद कर ली। शरीर थिर है। मन में ही गज करनी है। शरीर से ही टकराकर गज मन पर वापस गिरेगी,जैसे कमरे से टकराकर शरीर पर गिर रही थी। उससे शरीर शुद्ध हुआ; इससे मन शुद्ध होगा। और जैसे—जैसे गज गहन होने लगेगी, तुम पाओगे कि मन विसर्जित होने लगा। एक गहन शांति,जैसी तुमने कभी नहीं जानी, उसका स्वाद मिलना शुरू हो जायेगा।

दस मिनिट तक तुम भीतर गुंजार करना। दस मिनिट के बाद गर्दन झुका

CamScanner

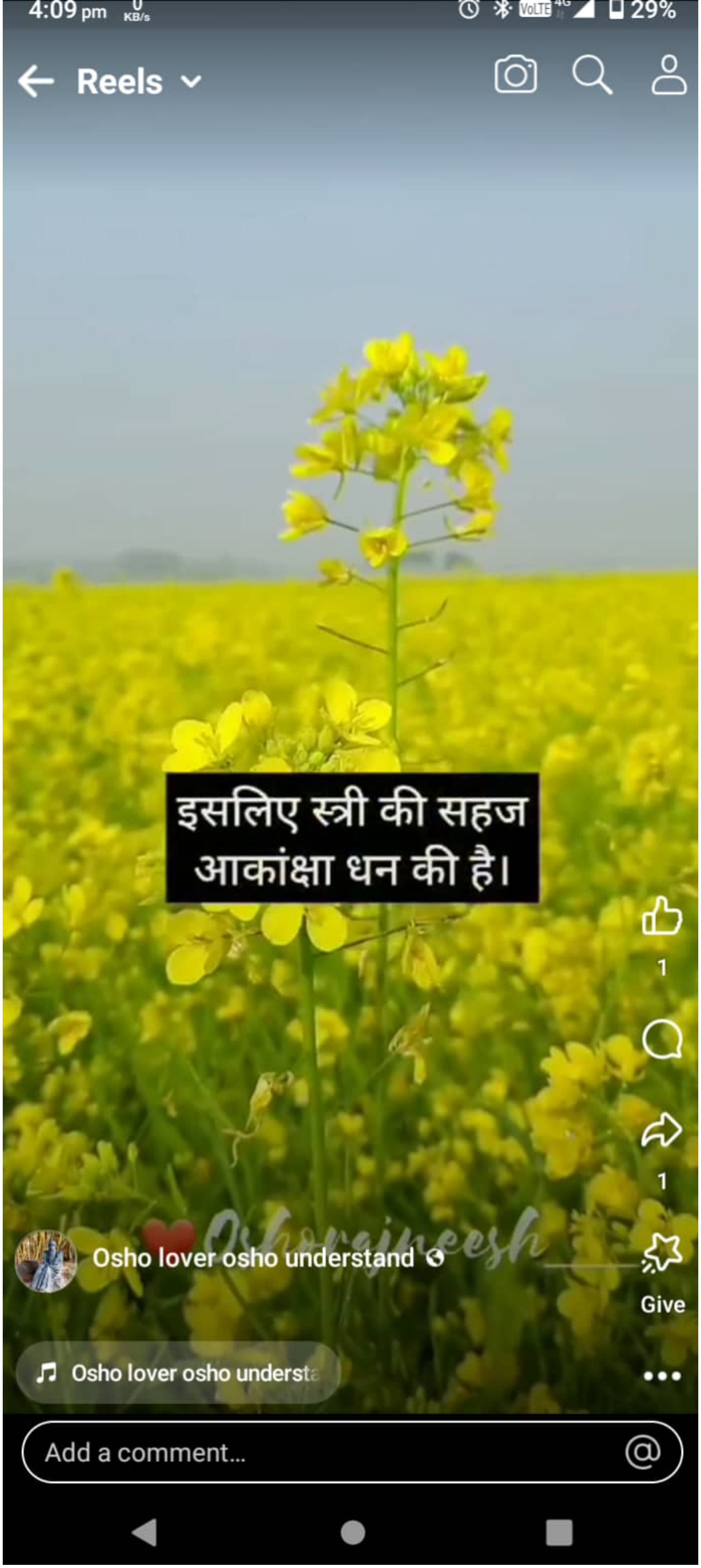

4:09 pm
29%
Reels
इसलिए स्त्री की सहज
आकांक्षा धन की है।
1
1
Osho lover osho understand
Give
Add a comment...


CamScanner

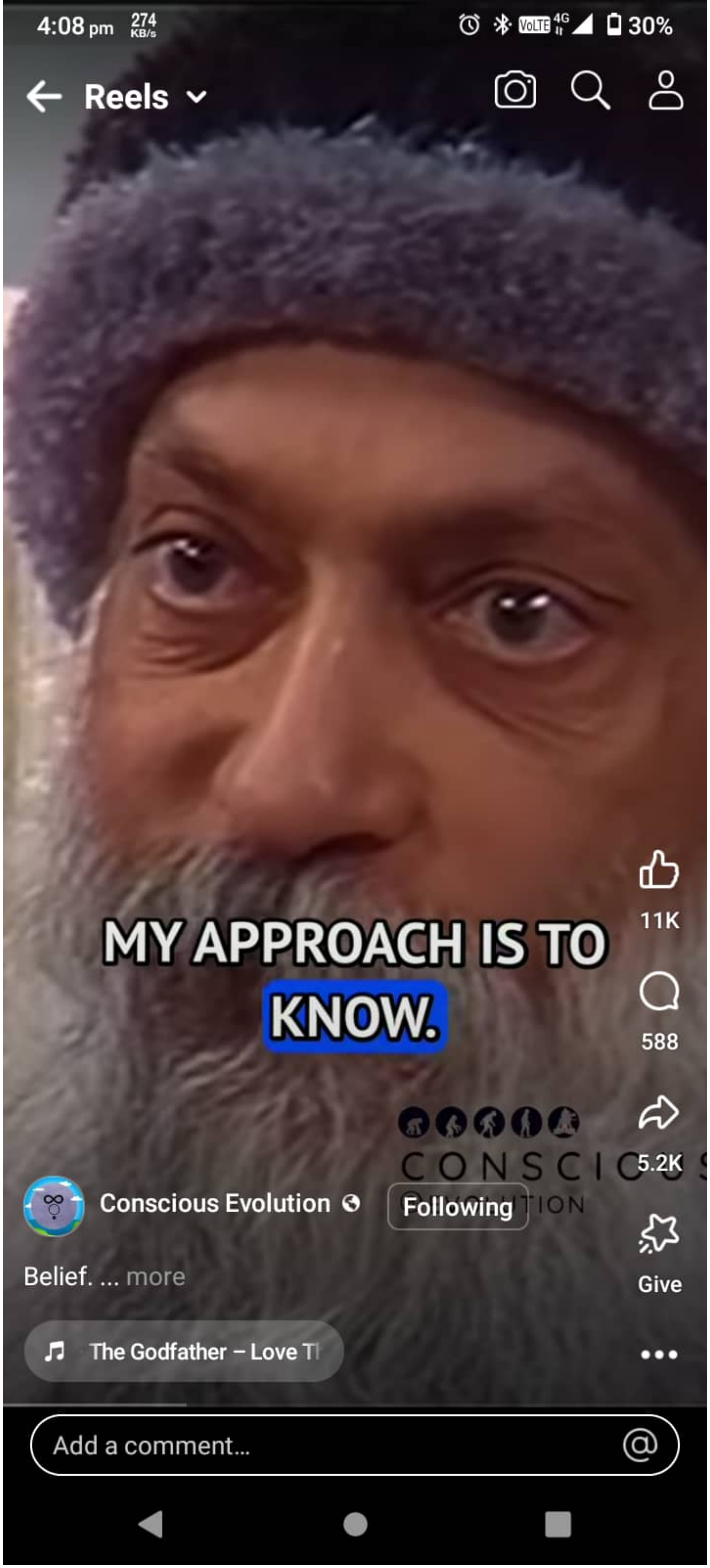
4:08 pm
274 KB/s
30%
Reels
MY APPROACH IS TO
KNOW.
11K
588
5.2K
Conscious Evolution
Following
Belief. ... more
Give
Add a comment...

CamScanner

4:07 pm
30%
Reels
हर चीज कामवासना के
आसपास घूम रही है। अगर
कार भी बेचनी हो तो एक नग्न
स्त्री को या सुंदर स्त्री को उसके
पास
7K
21
1.2K
@oshorajneesh_
oshorajneesh_
कामरति का गुणगान मत करो।
Send
oshorajneesh_ · Original
Add a comment...


CamScanner

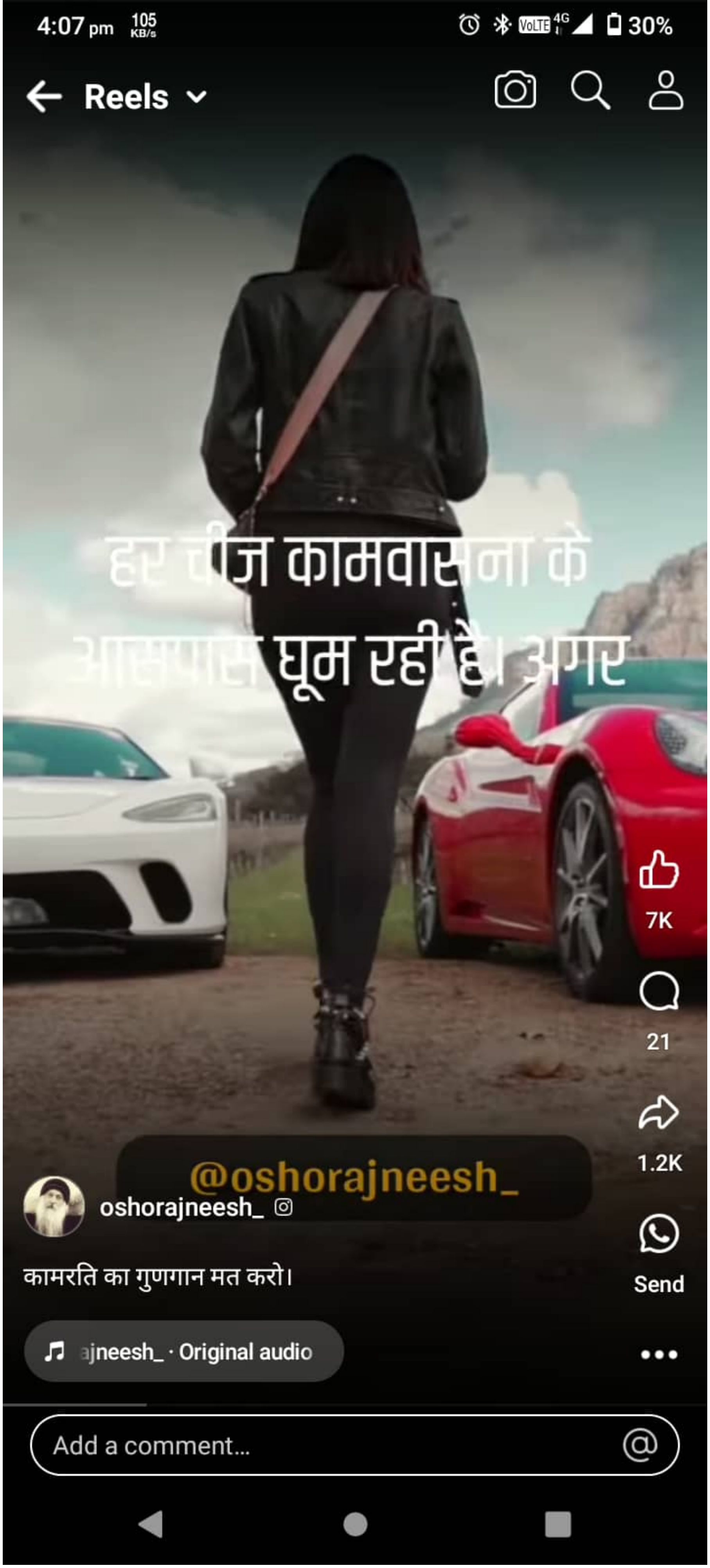
4:07 pm
Reels
हर चीज कामवासना के
आसपास घूम रही है। अगर
7K
21
1.2K
@oshorajneesh_
oshorajneesh_
Send
कामरति का गुणगान मत करो।
ajneesh_ · Original audio
Add a comment...

CamScanner

बंदगी तो
मुझे तेरी करनी ही थी
क्योंकि
तेरा भरोसा कभी मायूस
नहीं करता।
तेरी बंदगी ना करता
तो फिर
क्या करता मैं?
तेरी दुनिया में
बेवजह रहा भी तो नहीं
जाता!

CamScanner

4:03 pm 59 KB/s 31%

**ओ शो वाणी**

Prem Jain · 1d ·

ये हुस्न, जवानी, अभिमान, नफरत, जात, समाज, दौलत, शोहरत, फरेब, बुराई, झगडा, फायदा-हानि।

नश्वर जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है .... चार दिन उसके फोन के इंतजार में दर्द भरी खुशी की जिंदगी.. अच्छा कर यार तीन दिन के लिए आप यहाँ हैं
ओशो नमन प्रेम नम

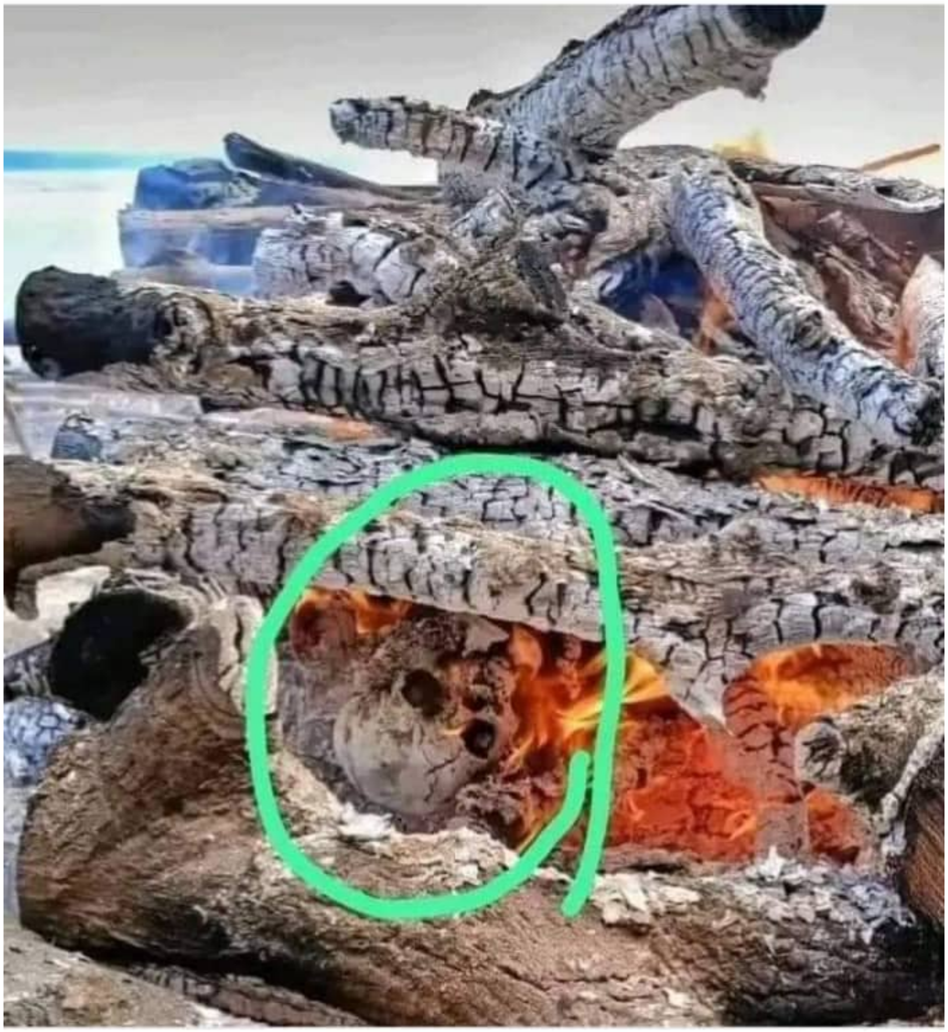

141 2 comments • 23 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

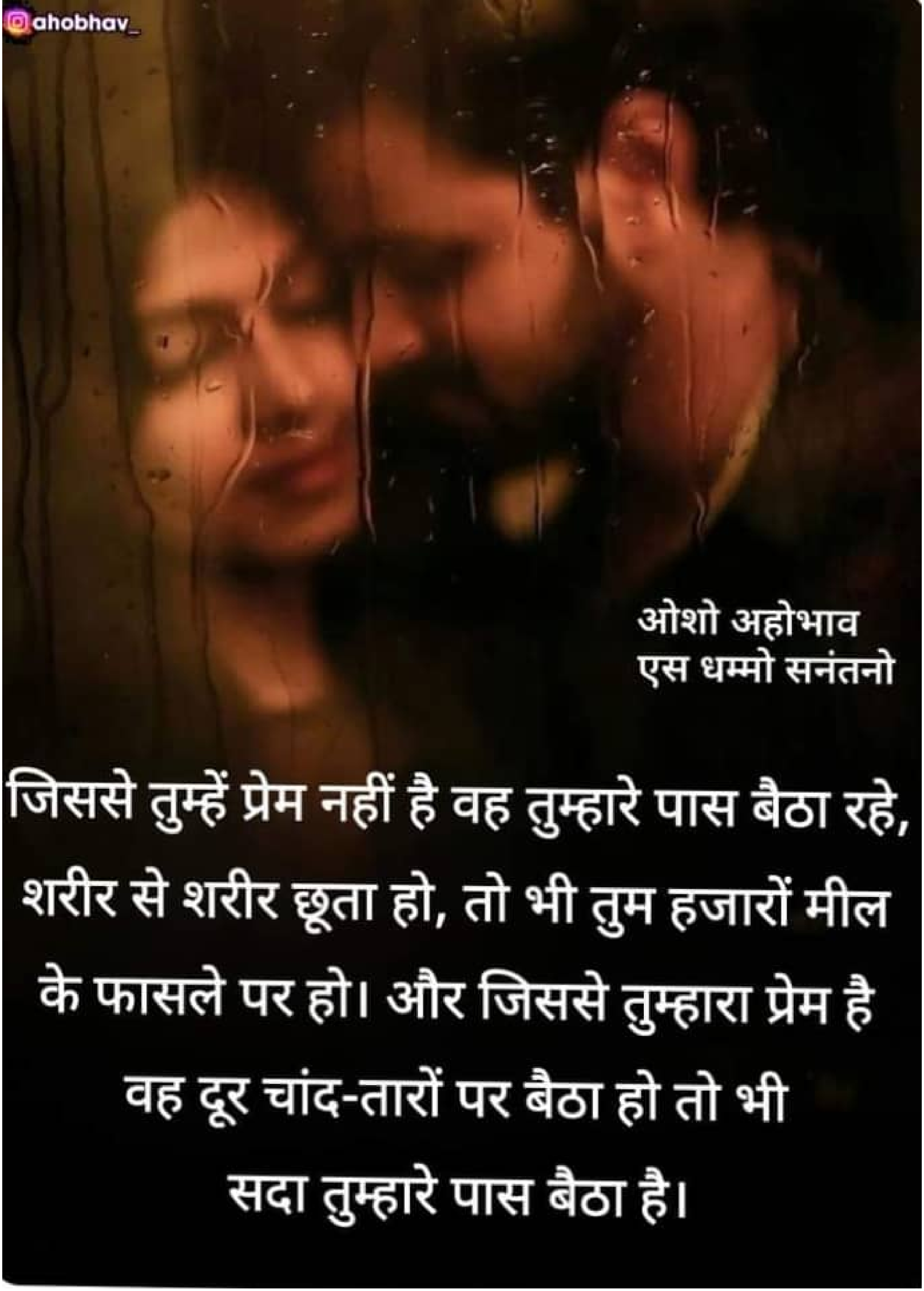
ahobhav_
ओशो अहोभाव
एस धम्मो सनंतनो
जिससे तुम्हें प्रेम नहीं है वह तुम्हारे पास बैठा रहे,
शरीर से शरीर छूता हो, तो भी तुम हजारों मील
के फासले पर हो। और जिससे तुम्हारा प्रेम है
वह दूर चांद-तारों पर बैठा हो तो भी
सदा तुम्हारे पास बैठा है।

CamScanner

CamScanner

CamScanner

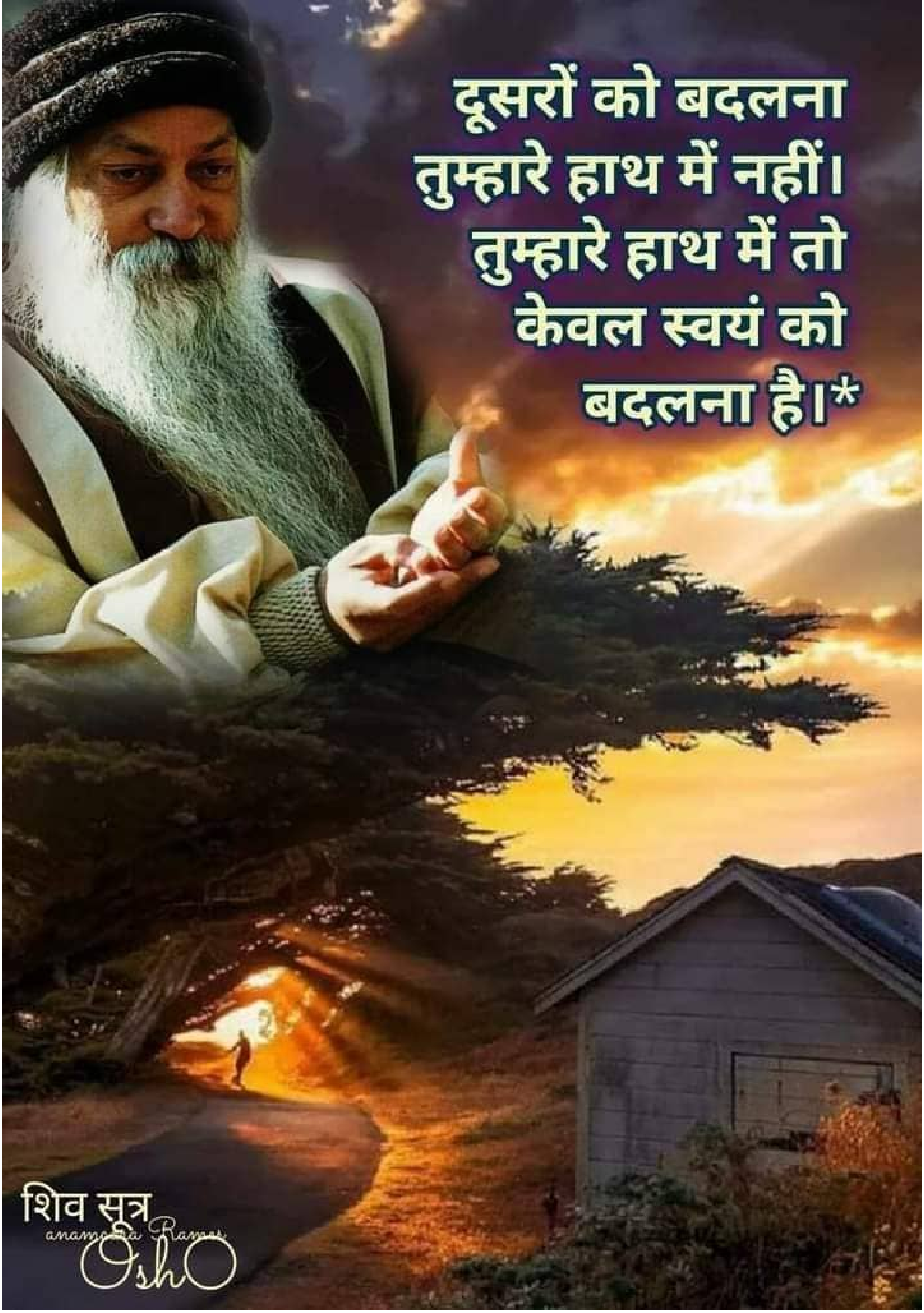


CamScanner

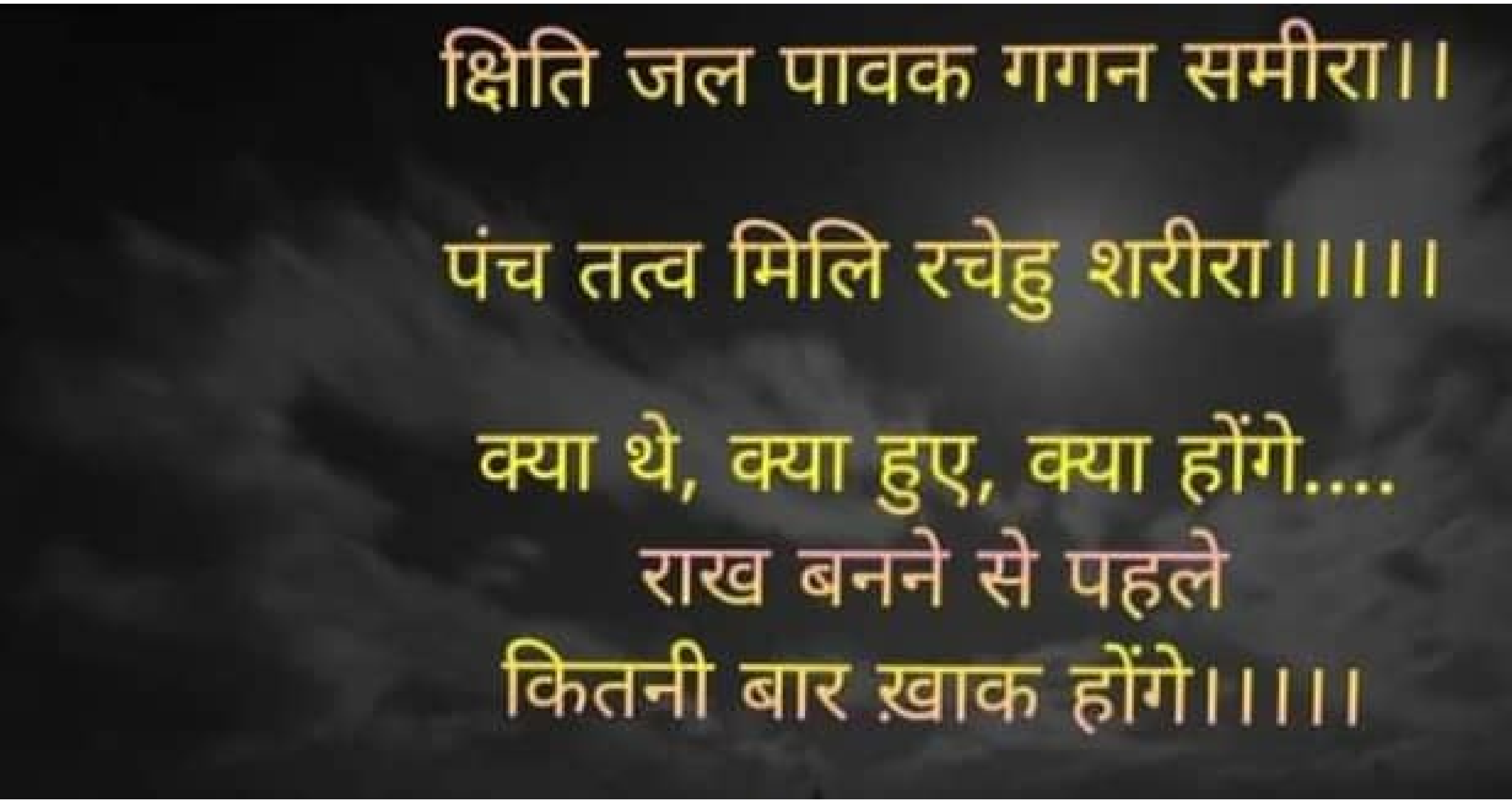
क्षिति जल पावक गगन समीरा।।
पंच तत्व मिलि रचेहु शरीरा।।।।
क्या थे, क्या हुए, क्या होंगे....
राख बनने से पहले
कितनी बार ख़ाक होंगे।।।।

CamScanner

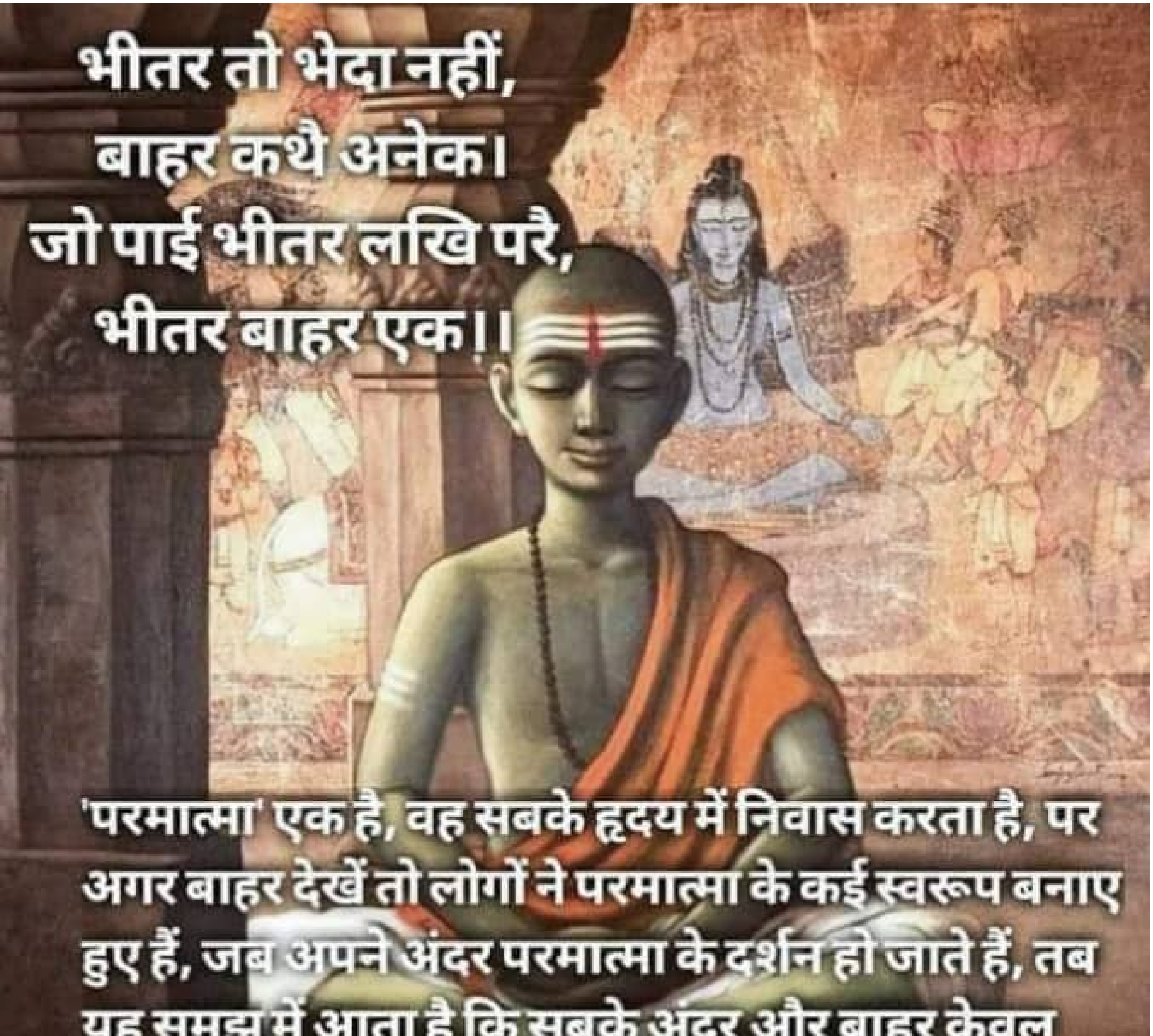
भीतर तो भेदा नहीं,
बाहर कथै अनेक।
जो पाई भीतर लखि परै,
भीतर बाहर एक।।
'परमात्मा' एक है, वह सबके हृदय में निवास करता है, पर
अगर बाहर देखें तो लोगों ने परमात्मा के कई स्वरूप बनाए
हुए हैं, जब अपने अंदर परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं, तब
यह समझ में आता है कि सबके अंदर और बाहर केवल
एक ही परमात्मा है, बाकी तो सब मन का भ्रम है।

CamScanner

CamScanner

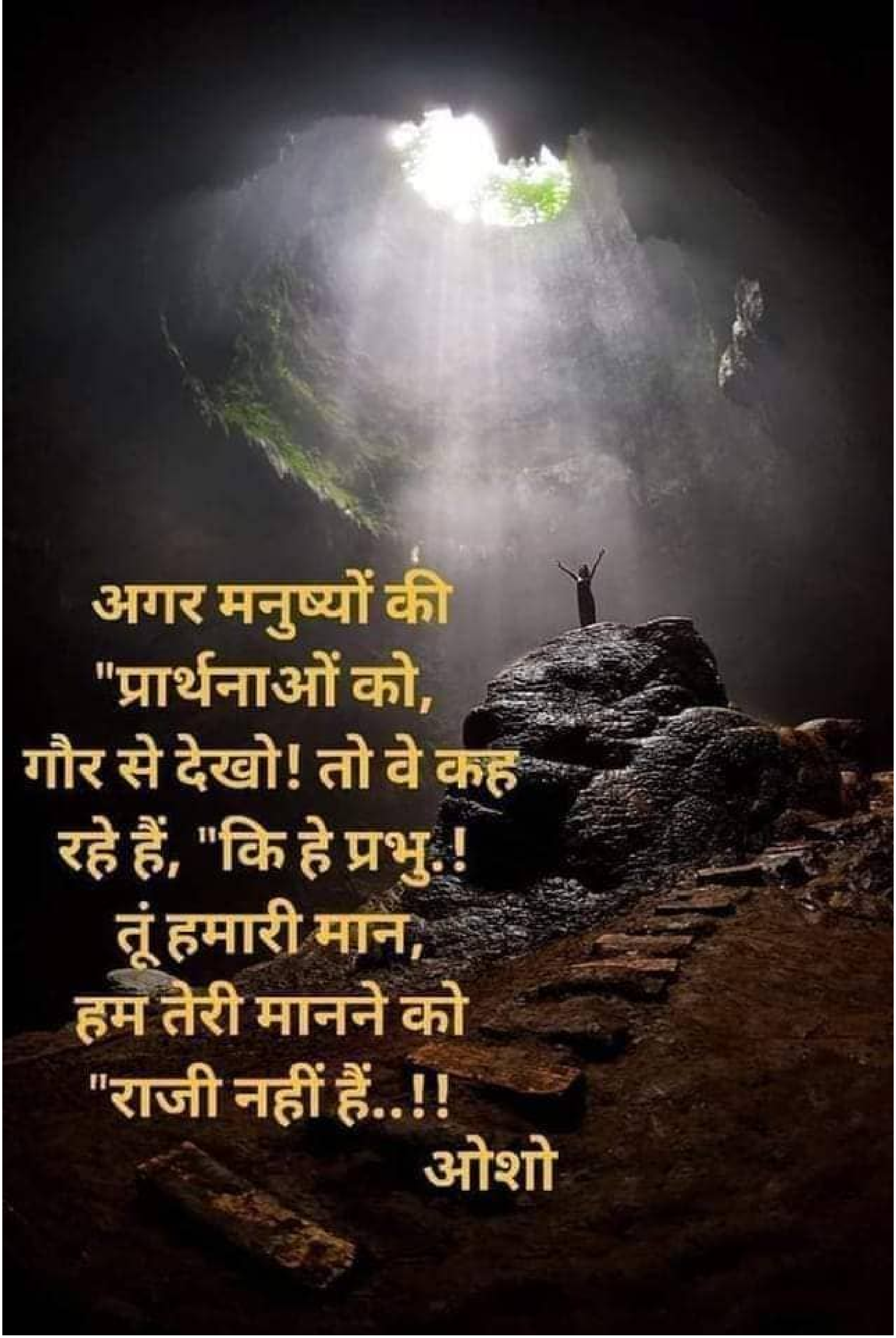


CS CamScanner

CamScanner

# ओशो

अहो भाव

पद घुँघरू बांध

जरा खयाल करो! तुमसे पहले अरबों–अरबों लोग इस पृथ्वी पर हो चुके हैं। तुम्हारे जैसे ही सपने देखने वाले लोग। तुम्हारे जैसा ही धन इकट्ठा करने वाले लोग। तुम्हारे जैसे ही पद–लोलुप, पदाकांक्षी, धन –लोलुप, धनाकांक्षी! वे सब अब कहां हैं? उनका नाम भी तो पता नहीं। वे कहां खो गए? हो सकता है, जिस धूल पर तुम चल कर आए हो उस धूल में पड़े हों। तुम जिस जगह बैठे हो, हो सकता है, वहीं उनकी लाश गड़ी हो, वहीं उनकी हड्डियां गल गई हों। कभी वे भी अकड़ कर चलते थे जैसा अकड़ कर तुम चलते हो। कभी किसी का जरा सा धक्का लग गया था तो नाराज हो गए थे, तलवारें खिंच गई थीं। आज धूल में पड़े हैं और कोई भी उनको पैरों से रौंदे चला जा रहा है। न नाराज हो सकते हैं, न तलवारें खींच सकते हैं।

CS CamScanner

91

All comments

**Jaymin Chaudhary**

इस कहावत का अर्थ है कि एक मूर्ख व्यक्ति भी किसी ऐसी गलती कर सकता है जिसका प्रभाव बहुत दूर तक और लंबे समय तक पड़ता है। लेकिन बुद्धिमान लोग भी उस गलती को ठीक करने में असमर्थ हो सकते हैं।

इस कहावत को निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है:

* एक मूर्ख व्यक्ति किसी नदी या झील में कचरा फेंक सकता है। यह कचरा पानी को प्रदूषित कर सकता है और मछलियों और अन्य जलीय जीवन को नुकसान पहुंचा सकता है। हजार बुद्धिमान लोग भी उस कचरे को पूरी तरह से साफ नहीं कर सकते हैं।
* एक मूर्ख व्यक्ति किसी देश में युद्ध छेड़ सकता है। यह युद्ध कई लोगों की जान ले सकता है और देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकता है। हजार बुद्धिमान लोग भी उस युद्ध के परिणामों को पूरी तरह से ठीक नहीं कर सकते हैं।
* एक मूर्ख व्यक्ति किसी कंपनी में गलत निर्णय ले सकता है। यह निर्णय कंपनी को आर्थिक नुकसान पहुंचा सकता है और यहां तक कि कंपनी का दिवालियापन भी हो सकता है। हजार बुद्धिमान लोग भी उस निर्णय के परिणामों को पूरी तरह से ठीक नहीं कर सकते हैं।

इस कहावत से यह सीख मिलती है कि हमें अपनी हर क्रिया-प्रतिक्रिया पर सावधानी से विचार करना चाहिए। एक छोटी सी गलती भी बहुत बड़े परिणाम पैदा कर सकती है।

53m Like Reply 4

Write a comment...

CamScanner

बहुत अच्छे हो कर भी
आप,
हर किसी के लिए अच्छे
नहीं हो सकते।
कहीं बुरे बना दिए जाते
हैं,
कहीं बुरे साबित कर दिए
जाते हैं।

CamScanner

**Osho Nisarga Foundation** — at **Osho Nisarga Foundation**.

Reels · 6h · Alex G ·

Be like a dry leaf ,
Let the winds take you where they will-
Isn't this what is meant by shunya (emptiness) ?

-OSHO

एक सूखे पत्ते की तरह बनो,
हवाओं को ले जाने दो जहाँ वो चाहें-
क्या शुन्या (खालीपन) का मतलब यही नहीं है?

- ओशो

Rate this translation

CamScanner

6:11 pm 772 KB/s 78%

facebook

Osho Nisarga Foundation — at Osho Nisarga Foundation.

Reels · 6h · Alex G ·

Be like a dry leaf ,
Let the winds take you where they will-
Isn't this what is meant by shunya (emptiness) ?

-OSHO

See translation

CamScanner

6:09 pm 32 KB/s 4G 78%
facebook

आगे बढाया और जरा ही आगे गया था कि बुद्ध ने फिर कहा गिरा दो।

अब तो उसे जरा समझ के बाहर हो गई बात की यह आदमी कुछ भी नही समझता। न ह्रदय की बात समझता है , न बुद्धि की बात समझता है। बुद्धि के लिए हीरा था,गणित था उसमें, हिसाब था,धन था उसमें। प्रेम कमल, भाव ह्रदय।

और उसको भी कहता है गिरा दो।
और मेरी पत्नी भी बहुत आती है उसके चरणों मे। वह इसे पहचानती है। और यह उसको भी नही समझ पाया। मगर अब जब कहता ही है तो हीरा गिरा दिया। तो अब इस कमल में क्या रखा है,दो कौड़ी का है।

उसने गिरा दिया।जब वह खाली हाथ बुद्ध की तरफ झुकने लगा तो फिर बुद्ध ने कहा गिरा दो। तब तो उसने समझावे के यह आदमी पागल है। अब कुछ है ही नही गिराने को। दोनों हाथ खाली है।

उसने कहा अब क्या गिरा दु?

बुद्ध तो चुप रहे लेकिन बुद्ध के एक शिष्य सारिपुत्र ने कहा आपने को गिरा दो। हिरे और कमलो को गिराने से क्या होगा? अपने को गिरा दो,शून्यवत हो जाओ तो ही उस चरणों का स्पर्श हूँ जाएगा। तुम बचे,की चरण दूर। तुम मिटे की चरण पास।

तब कहते है उस सम्राट को तक्षण बोध हुआ। वह गिर गया। जब वह उठा तो दूसरा आदमी था। वह महल की तरफ वापिस नही गया। भिक्षु हो गया। उसने कहा जब गिरा ही दिया तो अब वापस जाने वाला न बचा।

बहुत दुसरो ने समझाया ,कहा कि इतनी कोई जल्दी नही। उसने कहा। अब कोई बात ही नही, जब मैं ही न रहा तो कौन वापस जाए?जो आया था वह अब नही है। अब बुद्ध मुझ में समा गए है।

ओशो

CS CamScanner

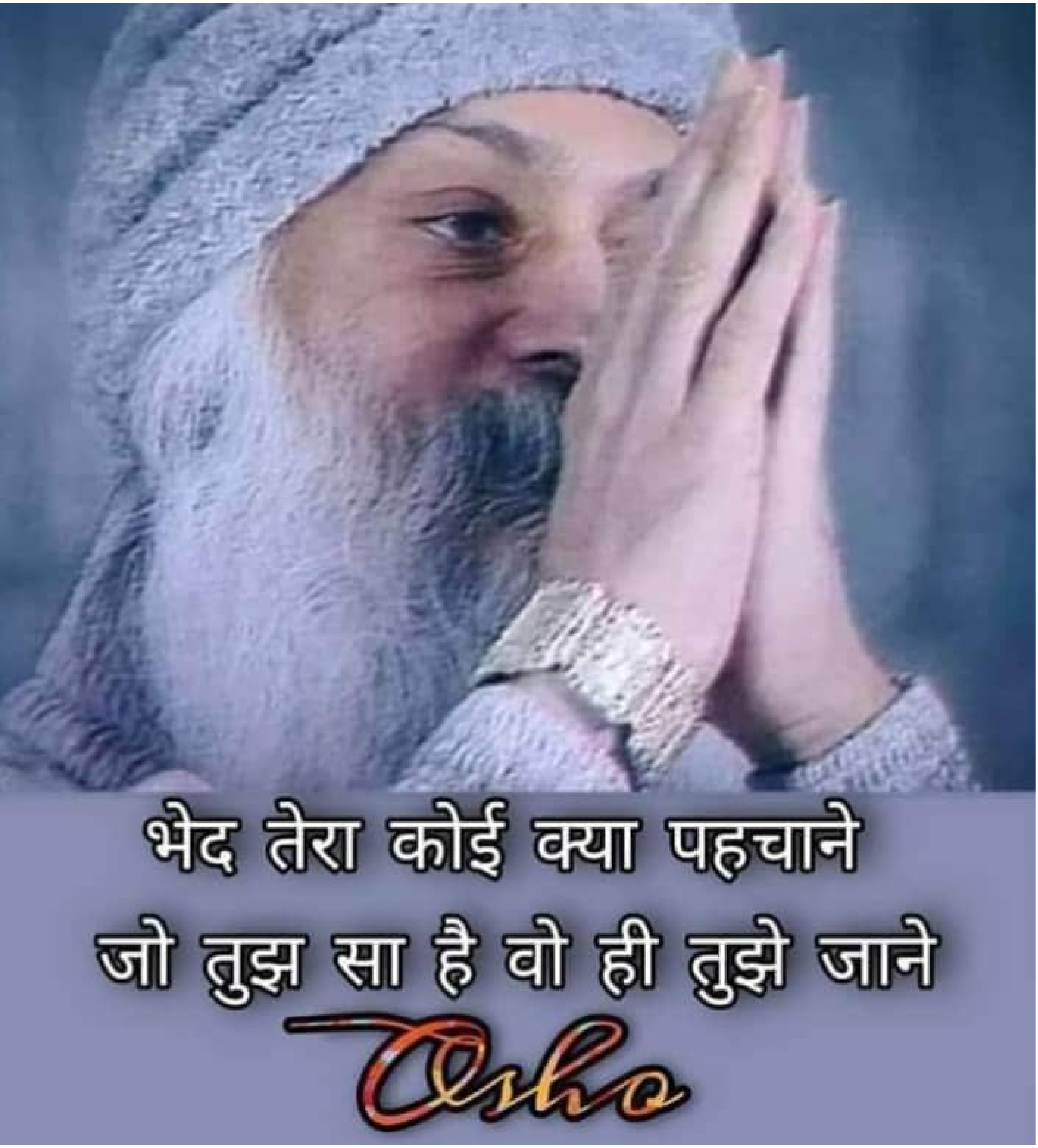


CamScanner

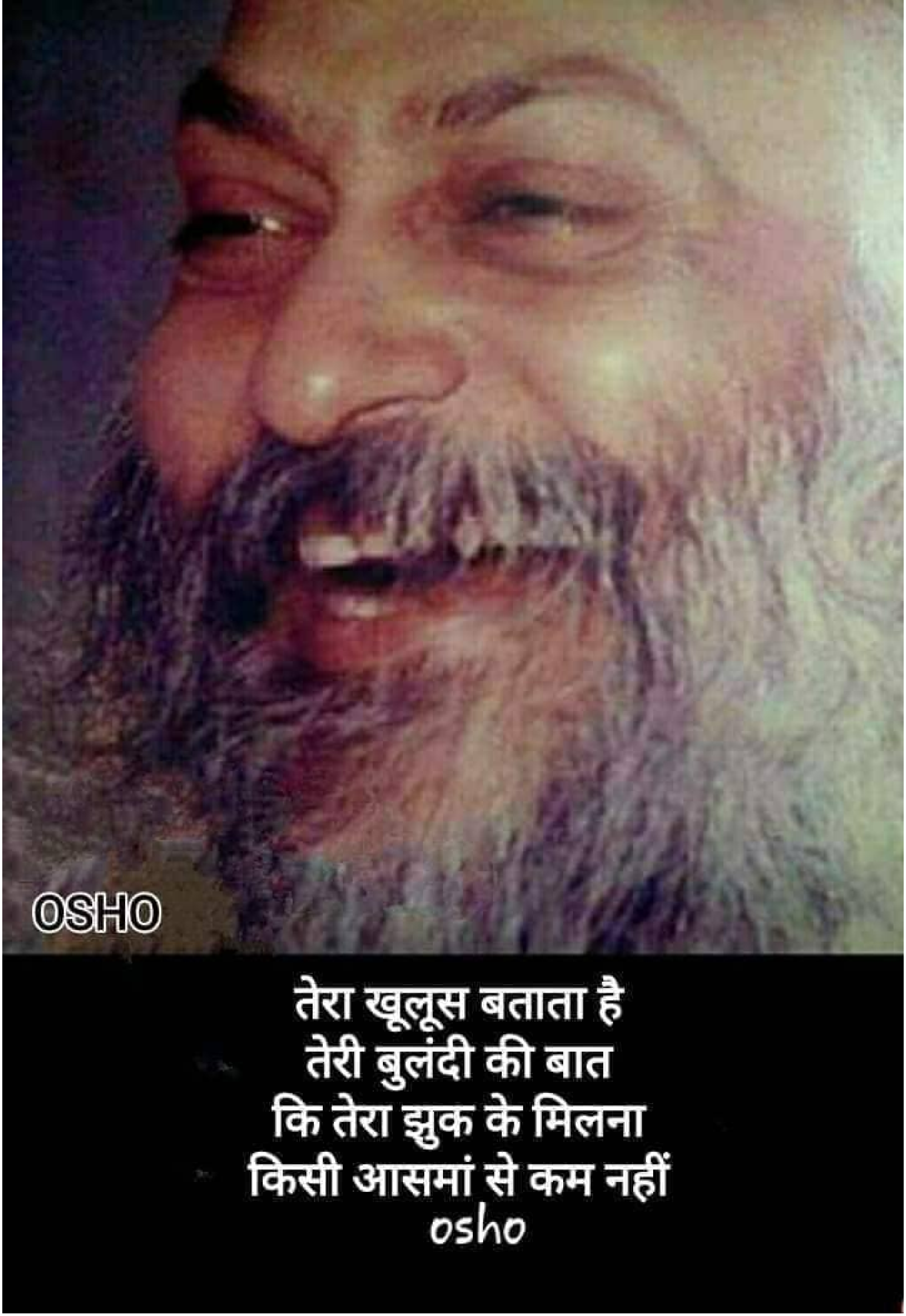


CS CamScanner

9:20 pm 0 KB/s VoLTE 4G 68%



आंधरे को हाथी हरि हाथ जाको जैसो आयो।
बूझो जिन जैसो तिन तैसोई बतायो है।।...

कहानी तो तुमने सुनी है पंचतंत्र की, कि पांच अंधे हाथी को देखने गए। हाथी कभी देखा न था, सुना था। हाथी के संबंध में खूब सुना था। और जब गांव में हाथी आया, तो अंधे अपने को न रोक सके। ऐसे ही तुमने परमात्मा के संबंध में सुना है और परमात्मा गांव में आया हुआ। लेकिन उन अंधों ने तो कम से कम इतनी भी कोशिश की थी कि गए थे और परमात्मा को टटोला था। तुमने उतना भी नहीं किया है। और परमात्मा सदा गांव में आया हुआ है। उसी का गांव है! यहीं वह बसा है। यह उसी की बस्ती है। कहीं और जाने का उसे उपाय भी नहीं है। यहीं है, अभी है!

वे अंधे तुमसे बेहतर थे! वे पंचतंत्र के अंधे तुमसे कम अंधे थे। उनकी बाहर की ही फूटी थीं, तुम्हारी भीतर की बंद हैं। गांव में हाथी आया था। सुनी थी बहुत बातें हाथी के संबंध में! आज आया था तो पांचों अंधे देखने गए। मित्र थे; अंधे ही अंधों के मित्र होते हैं। अंधे आंखवालों से दोस्ती करते भी नहीं। अंधे तो आंखवालों से बचते हैं। अंधे तो यह मानना ही नहीं चाहते कि कोई आंखवाला भी है। क्योंकि आंखवाले को मानने का दूसरा अर्थ होता है कि मैं अंधा हूं। और यह चित्त को चोट पहुंचाता है। इससे अहंकार को बड़ी पीड़ा होती है। कौन मानना चाहता है कि मैं अंधा हूं!..

तुम सत्य को जानने की चेष्टा में कम संलग्न हो, लोगों को चित करने में ज्यादा संलग्न हो। अपने चित को तो जगाने की तो चिंता नहीं है, किस-किस को चित किया, इसकी चिंता में पड़े हो!

यह दुनिया अंधों से भरी है।

आंधरे को हाथी हरि...। *तुमने भगवान को अंधों का हाथी बना लिया। इससे ज्यादा और भगवान का क्या अपमान हो सकता था।*

*और आग्रह है कि यही सत्य है। केवल मात्र यही सत्य है, और सब शेष

CS CamScanner

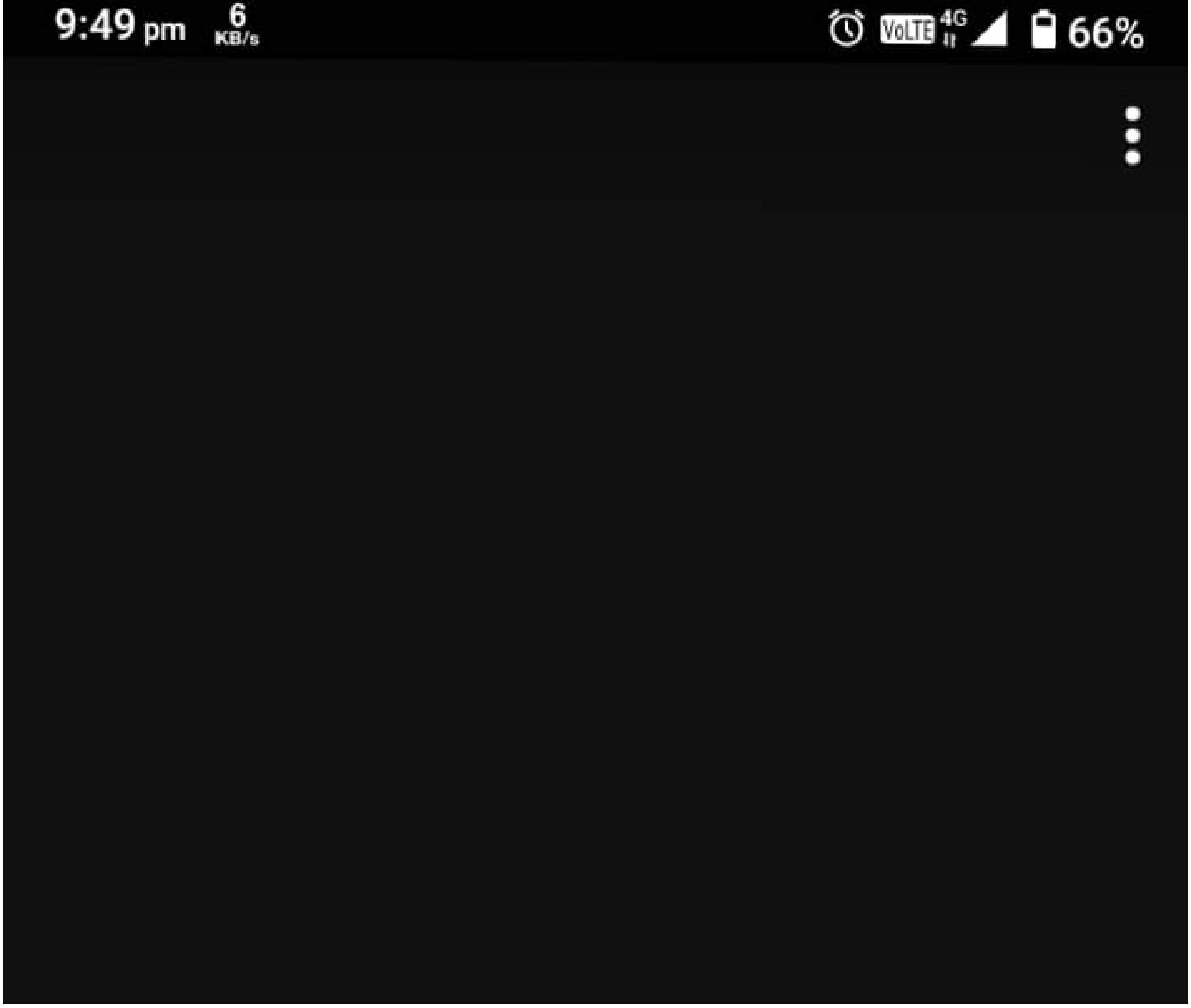


CamScanner

9:46 pm 0 KB/s
VoLTE 4G 66%

**Maitreyi Nivi**
3h ·

Don't be bothered with what others do, do not criticize or judge them for their dualistic thoughts and actions; just pay attention to your own mind and nothing else. Once you have become completely liberated you will be able to help others become liberated. When you are liberated you become like a lake of warm water, naturally melting all the ice-blocks you touch. So don't scrutinize what others say or do, just let them be, love them, be kind, and focus on your own liberation first. We are unable to let go of dualistic thoughts that label and judge because, although we might be smart, our love is limited - it isn't yet immeasurable.

~ Garchen Rinpoche

दूसरे क्या करते हैं उससे परेशान मत हो, उनके दोहरे विचारों और कार्यों के लिए उनकी आलोचना मत करो या उनका न्याय मत करो; बस अपने दिमाग पर ध्यान दो और कुछ नहीं। एक बार जब आप पूरी तरह से स्वतंत्र हो जाते हैं तो आप दूसरों को स्वतंत्र होने में मदद कर पाएंगे। जब आप आजाद हो जाते हैं तो आप गर्म पानी की झील की तरह बन जाते हैं, स्वाभाविक रूप से आपके द्वारा छूए गए सभी बर्फ के ब्लॉक्स को पिघल इसलिए दूसरे क्या कहते हैं या करते हैं इसकी जांच न करें, बस उन्हें रहने दें, उन्हें प्यार करें, दयालु बनें, और पहले अपनी मुक्ति पर ध्यान केंद्रित करें। हम दोहरे विचारों को जाने में असमर्थ हैं जो लेबल और न्याय करते हैं क्योंकि, हालांकि हम स्मार्ट हो सकते हैं, हमारा प्यार सीमित है - यह अभी तक असीम नहीं है।

~ गार्चेन रिनपोचे

· Rate this translation

CamScanner

**Maitreyi Nivi**

3h ·

Don't be bothered with what others do, do not criticize or judge them for their dualistic thoughts and actions; just pay attention to your own mind and nothing else. Once you have become completely liberated you will be able to help others become liberated. When you are liberated you become like a lake of warm water, naturally melting all the ice-blocks you touch. So don't scrutinize what others say or do, just let them be, love them, be kind, and focus on your own liberation first. We are unable to let go of dualistic thoughts that label and judge because, although we might be smart, our love is limited - it isn't yet immeasurable.

~ Garchen Rinpoche

See translation

CS CamScanner

मूल चेहरे की खोज करें इतने सारे मुखौटों में तुम्हारा
असली चेहरा खो गया है। तुम दूसरों के सामने
दिखावा करते रहे हो और धीरे-धीरे तुम्हें
अपने दिखावे पर यकीन हो गया है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

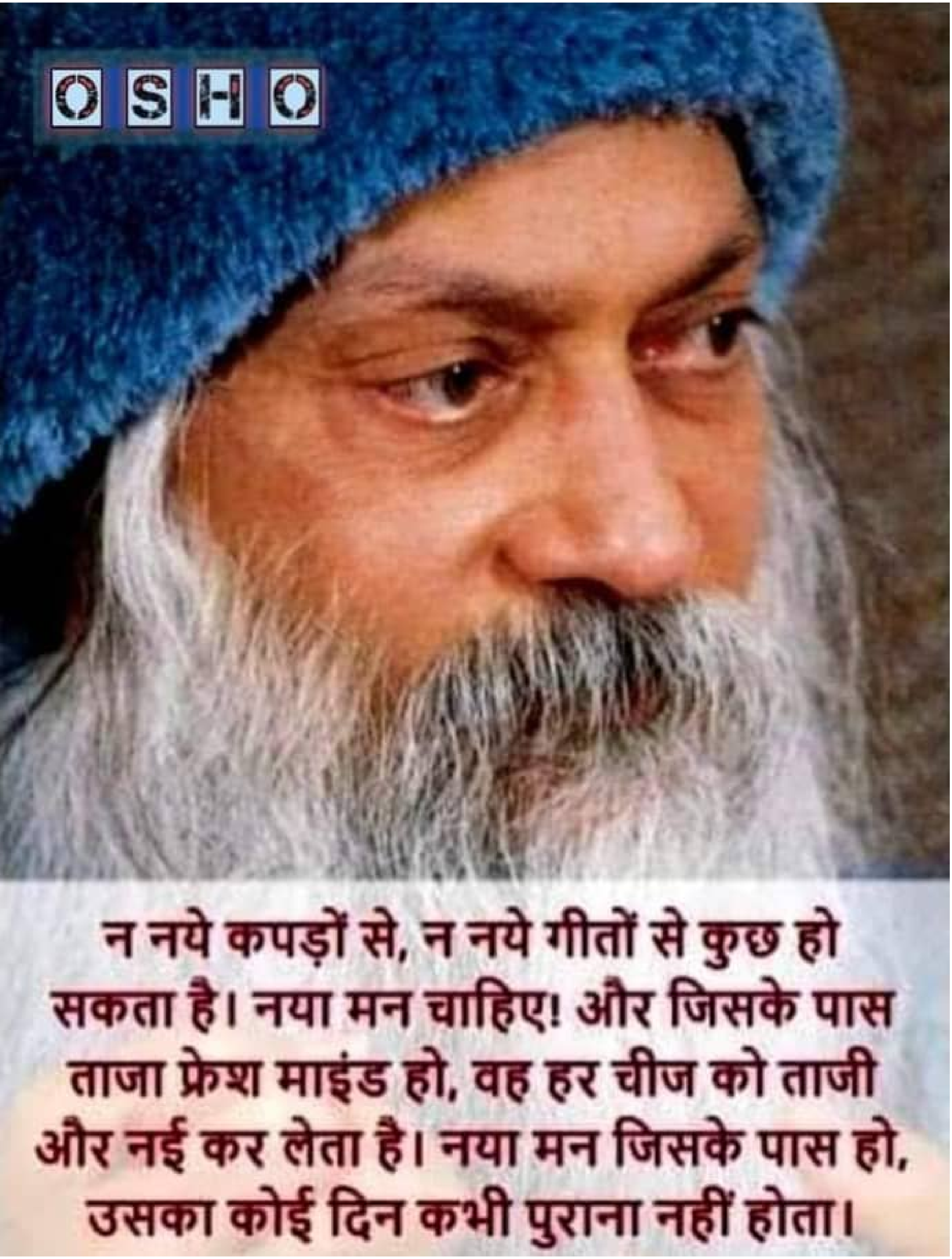


CS CamScanner

7:46 am 0 KB/s 99%

जलन करता हूं। लेकिन आश्चर्य है कि वह मेरा भविष्य देख सका—भले ही धुंधला-धुंधला, अस्पष्ट सा, अनेक संभावनाओं के साथ—लेकिन वह अपना भविष्य न देख सका। इतना ही नहीं, जब मैने कहा कि वह भिक्षु बनेगा, तो वह मेरे साथ शर्त लगाने को तैयार था।

मैं चौदह वर्ष का था और अपने दादा के साथ वाराणसी के आस पास घूम रहा था। वे कुछ काम से गए थे और मैन उनके साथ जाने की जिद की थी। वाराणसी और सारनाथ के बीच सड़क पर एक बूढ़े भिक्षु को मैने रोका और कहा, 'क्या आप मुझे पहचानते है।'

उसने कहा: 'मैने तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा, फिर पहचानने का सवाल ही—नहीं उठता।'

मैने कहा: 'आपको मेरी याद नहीं है, लेकिन मुझे तो आपकी याद है। वह हीरे से जड़ी सोने की घड़ी कहां है। मैं वही बच्चा हूं जिसके साथ आपने शर्त लगाई थी। अब समय आ गया है कि मैं पूछूं । मैने भविष्यंवाणी की थी कि आप भिक्षु हो जाएंगे और अब आप हो गए है। अब वह घड़ी मुझे दे दीजिए।'

वह हंसा और अपनी जेब से उसने वह सुदंर घड़ी निकाली और मुझे दी। उसकी आंख आंसुओं से भरी हुई थी और—तुम भरोसा नहीं करोगे—उसने मेरे पैर छुए। मैने कहा: 'नहीं-नहीं, आप भिक्षु है, संन्यासी है, आप मेरे पैर नहीं छू सकते।'

उसने कहा: 'वह सब छोड़ो, तुम मुझसे बड़े ज्योतिषी सिद्ध हुए। मुझे तुम्हारे पैर छूने दो।'

मैने वह घड़ी अपनी पहली संन्यासिन को दे दी। मेरी पहली संन्यासिन का नाम है, मा आनंद मधु

– ओशो

स्वर्णिम बचपन
सत्र–3

CamScanner

7:46 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%

मैने कहा: 'उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। आप जितने की चाहे उतने की शर्त लगा लें। क्योंकि यदि मैं जीता तो मैं जीता; लेकिन यदि मैं हारा तो मैं कुछ भी नहीं हारूगा, क्योंकि मेरे पास कुछ है ही नहीं। आप सात साल के बच्चे के साथ शर्त लगा रहे है। क्या आप यह देख नहीं सकते कि मेरे पास कुछ भी नहीं है।'

तुम्हें जान कर आश्चर्य होगा कि मैं वहां नंगा खड़ा था। उस गरीब गांव में यह वर्जित नहीं था—कम से कम सात साल के बच्चे के लिए नंगे इधर-उधर भागना-दौड़ना वर्जित नहीं था। वह कोई इंग्लैंड का गांव नहीं था। सारा गांव इकट्ठा हो गया था और सब लोग हम दोनों की बातचीत सुन रहे थे। उस ज्योतिषी ने कहा: 'ठीक है, यदि मैं संन्यासी बना, भिक्षु बना,–और उसने अपनी हीरे-जड़ी सोने की पाकेट-घड़ी दिखाई—मैं यह तुम्हो दे दूँगा, और यदि तुम हार गए तो तुम क्या करोगे।'
मैने कहा: 'मैं बस हार जाऊँगा। मेरे पास कुछ नहीं है—आपको देने के लिए कोई सोने की घड़ी नहीं है। मैं केवल आपको धन्यवाद दूँगा।'

वह हंसा और चला गया। मैं ज्योतिष में विश्वास नहीं करता। यह 99.9 बकवास है। लेकिन 0.1 बिलकुल सच है। कोई भी आंतरिक पवित्रता और अंतर्दृष्टि वाला व्यक्ति भविष्य को देख सकता है। क्योकि भविष्य अस्तित्व-विहीन नहीं है, वह सिर्फ हमारी आंखों से छिपा है। शायद केवल विचारों का एक झीना सा पर्दा है जो वर्तमान और भविष्य को अलग करता है। लेकिन आश्चर्य है कि वह मेरा भविष्य देख सका—भले ही धुंधला-धुंधला, अस्पष्ट सा, अनेक संभावनाओं के साथ—लेकिन वह अपना भविष्य न देख सका। इतना ही नहीं, जब मैने कहा कि वह भिक्षु बनेगा, तो वह मेरे साथ शर्त लगाने को तैयार था।

मैं चौदह वर्ष का था और अपने दादा के साथ वाराणसी के आस पास घूम रहा था। वे कुछ काम से गए थे और मैन उनके साथ जाने की जिद की थी। वाराणसी और सारनाथ के बीच सड़क पर एक बूढ़े भिक्षु को मैने रोका और कहा, 'क्या आप मुझे पहचानते है।'

उसने कहा: 'मैने तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा, फिर पहचानने का सवाल ही—नहीं उठता।'

CamScanner

7:46 am 0 KB/s 99%

*** वह हंसा और अपनी जेब से उसने वह सुदंर घड़ी निकाली और मुझे दी।... ***

वह बूढ़ा ज्योतिषी आया। मेरे नाना अपनी आंखों पर विश्वास न कर सके। वह ज्योतिषी इतना प्रसिद्ध था कि अगर वह किसी राजा के महल में भी जाता तो वह राजा भी आश्चर्यचकित होता। और वह मेरे बूढ़े नाना के घर आया। उसे घर कहना पड़ता है, लेकिन ज्यादा कुछ था नहीं बस मिट्टी की दीवालों से बना मकान था। उसमें अलग गुसलखाना भी नहीं था। तो वह हमारे घर आया और मैं तुरंत उस बूढ़े व्यक्ति का मित्र बन गया। उसकी आंखों में देखते हुए—यद्यपि मैं केवल सात साल का था। और एक शब्द भी नहीं पढ़ सकता था। लेकिन उसकी आंखें पढ़ सका, उसके लिए किसी पढ़ाई की जरूरत नहीं है—मैंने उस ज्योतिषी से कहा, 'बड़ी अजीब बात है कि आप इतनी दूर से मेरी जन्म कुडली बनाने आए है।' उन दिनों, और आज भी, वाराणसी उस छोटे से गांव से बहुत दूर है। ज्योतिषी ने कहा: 'मैने वादा किया था, और वायदे को तो पूरा करना पड़ता है।' वह मुझे रोमांचित कर गया। तो यह जिंदा आदमी है। मैने कहा: 'यदि आप अपना वादा पूर करने आए है तो मैं आपके बारे में भविष्यवाणी कर सकता हूं।'

उसने कहां: 'क्या, तुम मेरा भविष्य बता सकते हो।'

मैने कहा: 'हां, निश्चित ही तुम बुद्ध तो नहीं बनोगे, लेकिन तुम एक भिक्षु, एक संन्यासी अवश्य बनोगे।'

वह हंसा और बोला: 'यह असंभव है।'

मैने कहा: 'आप शर्त लगा सकते है।'

उसने मुझसे पूछा: 'अच्छा ठीक है, कितने की शर्त।'

मैने कहा: 'उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। आप जितने की चाहे उतने की शर्त लगा लें। क्योंकि यदि मैं जीता तो मैं जीता; लेकिन यदि मैं हारा तो मैं कुछ भी नहीं हारूंगा, क्योंकि मेरे पास कुछ है ही नहीं। आप सात

CamScanner

CamScanner

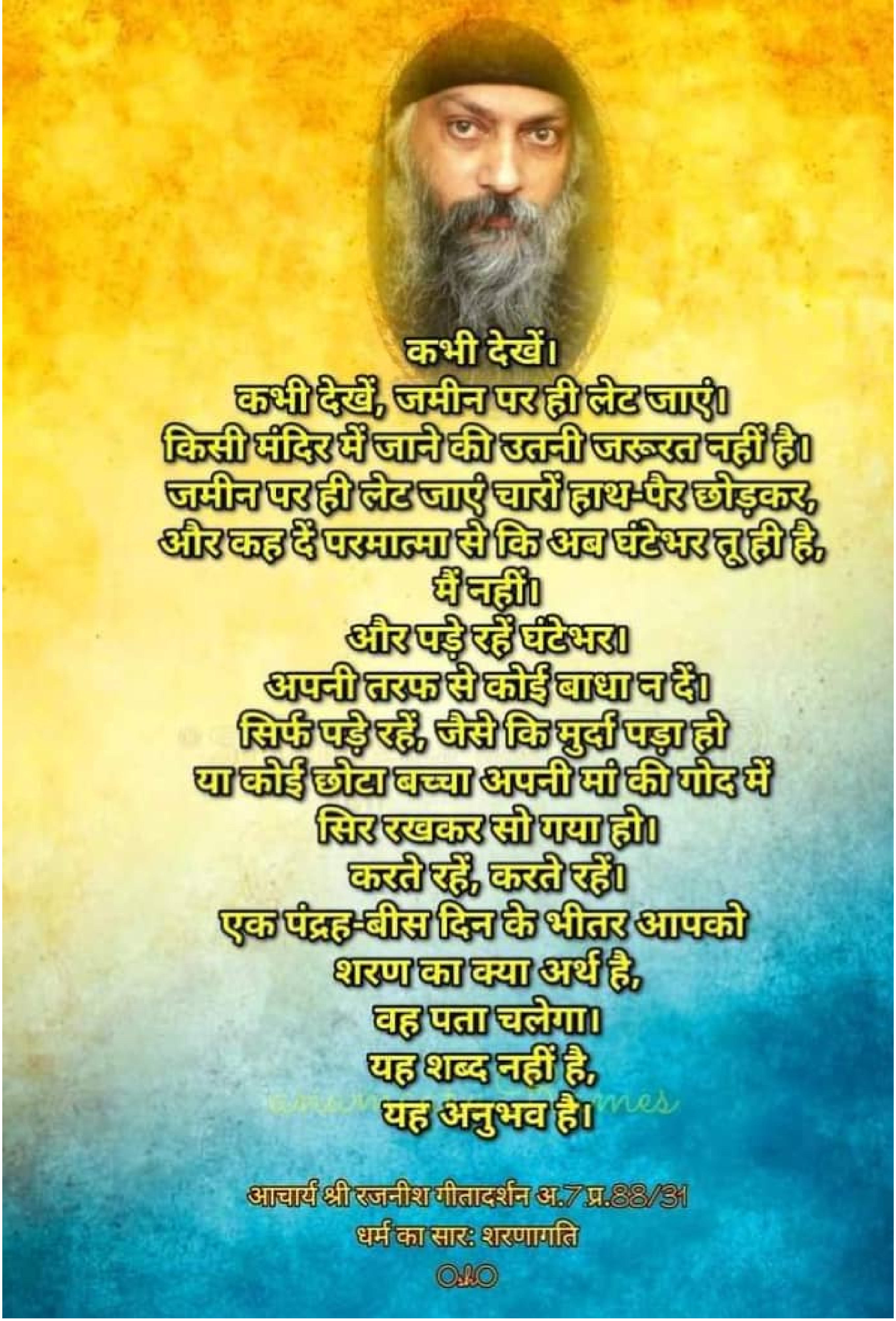
कभी देखें।
कभी देखें, जमीन पर ही लेट जाएं।
किसी मंदिर में जाने की उतनी जरूरत नहीं है।
जमीन पर ही लेट जाएं चारों हाथ-पैर छोड़कर,
और कह दें परमात्मा से कि अब घंटेभर तू ही है,
मैं नहीं।
और पड़े रहें घंटेभर।
अपनी तरफ से कोई बाधा न दें।
सिर्फ पड़े रहें, जैसे कि मुर्दा पड़ा हो
या कोई छोटा बच्चा अपनी मां की गोद में
सिर रखकर सो गया हो।
करते रहें, करते रहें।
एक पंद्रह-बीस दिन के भीतर आपको
शरण का क्या अर्थ है,
वह पता चलेगा।
यह शब्द नहीं है,
यह अनुभव है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.88/31
धर्म का सारः शरणागति
OSHO

CamScanner

10:46 pm 2 KB/s VoLTE 4G 59%

बासी। कोई गायत्री दोहरा रहा है, कोई कुरान की आयत पढ़ रहा है, कोई नमोकार-मंत्र का उच्चारण कर रहा है। प्रार्थना भी अपनी नहीं, भाव भी अपने नहीं, इतने उधार--परमात्मा पत्थर का, फूल वृक्षों के, पूजा उधार, प्रार्थना बासी, दीया भी अपने चैतन्य का नहीं--फिर कैसे होगा?

कुछ तो प्रामाणिक लाओ!

...........................................................

दीये बनो! भीतर का दीया जलाओ। उसे ही मैं ध्यान कह रहा हूं। भीतर का दीया जलाओ। उसे ही मैं प्रेम कह रहा हूं। फूल खिलाओ चेतना के, करुणा के, आनंद के, अहोभाव के, कृतज्ञता के। इन फूलों को चढ़ाओ। और पत्थर की मूर्तियों को तलाश करने जाने की जरूरत नहीं है। वह सब तरफ मौजूद है। सब दिशाओं में भरा है। जिस दिशा में झुकोगे, उसी के चरण हैं। जिस चरण में झुकोगे, उसी के चरण हैं। और प्रार्थना अपनी उठने दो! कम से कम प्रार्थना तो निज की हो। तुतलाती ही हो, तो भी चलेगा। तुतलाती प्रार्थनाएं भी पहुंच जाएंगी और गायत्री के शुद्धतम मंत्र भी नहीं पहुंचेंगे। यह प्रश्न मंत्रों का नहीं है, ध्वनियों का नहीं है, मात्राओं का नहीं है, व्याकरण, भाषा का नहीं है, यह प्रश्न तो प्रीति का है।

छोटे से बच्चे को देखा है जब पहली दफे तुतलाता है? तो मां कितनी आनंदित हो जाती है! यही बच्चा एक दिन विश्वविद्यालय से लौटेगा पीएच.डी. लेकर, बड़ी सुंदर भाषा बोलेगा, अलंकृत, मगर मां फिर वैसी प्रसन्न कभी नहीं होगी! इसकी पीएच.डी. की उपाधि भी अब कुछ अर्थ न रखेगी। वह जो पहली बार यह तुतलाया था--कुछ बोला नहीं था, ऐसे ही आवाज की थी...मम्-मम्... लेकिन मां आनंदित हो गई थी। उस पहली आवाज में निसर्ग था, स्वभाव था। अब शिक्षा है, संस्कार है--मगर सब उधार है। वह पहली आवाज इसके प्राणों से उठी थी।

ऐसी ही आवाज परमात्मा तक पहुंचती है, खयाल रखना!

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -8 "

CamScanner

10:46 pm 59%

तुम्हारी प्रार्थना शुभ है। पर प्रार्थना के अनुकूल तुम्हें स्वयं भी होना होगा। तुम्हारी पूजा शुभ है। लेकिन जो दीये तुमने जलाए हैं पूजा के थाल में, वे तुम्हारी आत्मा के दीये नहीं हैं। तुम जो फूल चढ़ाने ले आए हो परमात्मा के चरणों में, वे तुम्हारी आत्मा के फूल नहीं हैं, वे तुम्हारी चेतना के फूल नहीं हैं। तोड़ लाए हो किन्हीं वृक्षों से--गुलाब है और चंपा है और चमेली है--और उनके फूल चढ़ा दिए हैं तुमने पत्थर की एक मूर्ति पर।

सब झूठा है। पत्थर की मूर्ति झूठी--आदमी की बनाई हुई। फूल उधार--किन्हीं वृक्षों से ले आए। ज्योति भी अपनी नहीं। प्रार्थना-पूजा भी बासी। कोई गायत्री दोहरा रहा है, कोई कुरान की आयत पढ़ रहा है, कोई नमोकार-मंत्र का उच्चारण कर रहा है। प्रार्थना भी अपनी नहीं, भाव भी अपने नहीं, इतने उधार--परमात्मा पत्थर का, फूल वृक्षों के, पूजा उधार, प्रार्थना बासी, दीया भी अपने चैतन्य का नहीं--फिर कैसे होगा?

कुछ तो प्रामाणिक लाओ!

..........................................................

दीये बनो! भीतर का दीया जलाओ। उसे ही मैं ध्यान कह रहा हूं। भीतर का दीया जलाओ। उसे ही मैं प्रेम कह रहा हूं। फूल खिलाओ चेतना के, करुणा के, आनंद के, अहोभाव के, कृतज्ञता के। इन फूलों को चढ़ाओ। और पत्थर की मूर्तियों को तलाश करने जाने की जरूरत नहीं है। वह सब तरफ मौजूद है। सब दिशाओं में भरा है। जिस दिशा में झुकोगे, उसी के चरण हैं। जिस चरण में झुकोगे, उसी के चरण हैं। और प्रार्थना अपनी उठने दो! कम से कम प्रार्थना तो निज की हो। तुतलाती ही हो, तो भी चलेगा। तुतलाती प्रार्थनाएं भी पहुंच जाएंगी और गायत्री के शुद्धतम मंत्र भी नहीं पहुंचेंगे। यह प्रश्न मंत्रों का नहीं है, ध्वनियों का नहीं है, मात्राओं का नहीं है, व्याकरण, भाषा का नहीं है, यह प्रश्न तो प्रीति का है।

छोटे से बच्चे को देखा है जब पहली दफे तुतलाता है? तो मां कितनी आनंदित हो जाती है! यही बच्चा एक दिन विश्वविद्यालय से लौटेगा पीएच.डी. लेकर, बड़ी सुंदर भाषा बोलेगा, अलंकृत, मगर मां फिर वैसी प्रसन्न कभी नहीं होगी। इसकी पीएच.डी. की उपाधि भी अब कुछ अर्थ

CamScanner

CS CamScanner

7:53 am 4 KB/s VoLTE 4G 98%

**Swami Lokeshanand**
48m ·

जीभ मनुष्य शरीर का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। लगभग शेष सभी इन्द्रियाँ दो हुआ करती हैं पर काम एक ही करती हैं, जैसे आँखें दो हैं, पर केवल देखती है। नाक यद्यपि एक ही होती है, पर उसमें छिद्र दो हैं। कान, हाथ, पैर भी दो दो हैं। पर जीभ एक होते हुए भी काम दो करती है, स्वाद लेना और बोलना।

शेष सभी इन्द्रियाँ बाह्य परिस्थिति सापेक्ष हैं। जो कुछ होगा, वही देखा, सूंघा या छुआ जा सकता है। आप घड़े को घड़ा, चंदन की सुगंध को चंदन की सुगंध ही जानेंगे। पर जीभ बुद्धि सापेक्ष है। बुद्धि अनुकूल हो तो दुर्गंधयुक्त पदार्थ भी स्वादिष्ट लगता है, और बुद्धि अनुकूल न हो तो सुस्वादु भोजन भी अरुचिकर लगने लगता है। यों जीभ सबसे विचित्र इंद्री है।

यह बिना हड्डी की जीभ जरा हिल जाए, तो हंसते खेलते परिवार टूट जाएँ। न सम्पत्ति बंटे, न जमीन कटे, न लाठी या तलवार चलें, बस जीभ चल जाए, तो अभी सिर फूट जाएँ। इसीलिए जीभ का उपयोग विचारपूर्वक ही करना चाहिए।

अब कुछ साधकोपयोगी सुझाव-

अधिकतर रोगों का ईलाज औषधालय से पहले भोजनालय में खोजो।

जितना आवश्यक हो उतना ही भोजन करना है। और जितना आवश्यक भोजन करना है, उतना ही सुबह जल पीना, व्यायाम करना और टहलना है।

महीने में एक एकादशी व्रत करो। सप्ताह में एक दिन मीठा और एक दिन नमक न खाओ।

याद रखो कि भोजन जीवन के लिए है, स्वाद के लिए नहीं। भोजन तो भजन का साधन मात्र है।

खड़े होकर भोजन न करो और भोजन से एक घंटा पहले या एक घंटा बाद ही जल पीओ।

दो भोजन के बीच में कम से कम पाँच घंटों का अंतराल अवश्य रखो।

हो सके तो बोलो ही मत। बोलना ही पड़े तो तभी बोलो जब अति आवश्यक हो।

बहुत विचार करके ही बोलो। सत्य बोलो, प्रिय बोलो, कम बोलो, हित के वचन बोलो।

CamScanner

जीभ को जितना हो सके
उतना नाम जप और
भगवान के गुणानुवाद
में लगा कर रखो।
-लोकेशानन्द
411 जीभ का सदुपयोग

CamScanner

7:53 am 0 KB/s VoLTE 4G 98%

भोजन करना है, उतना ही सुबह जल पीना, व्यायाम करना और टहलना है।
महीने में एक एकादशी व्रत करो। सप्ताह में एक दिन मीठा और एक दिन नमक न खाओ।
याद रखो कि भोजन जीवन के लिए है, स्वाद के लिए नहीं। भोजन तो भजन का साधन मात्र है।
खड़े होकर भोजन न करो और भोजन से एक घंटा पहले या एक घंटा बाद ही जल पीओ।
दो भोजन के बीच में कम से कम पाँच घंटों का अंतराल अवश्य रखो।
हो सके तो बोलो ही मत। बोलना ही पड़े तो तभी बोलो जब अति आवश्यक हो।
बहुत विचार करके ही बोलो। सत्य बोलो, प्रिय बोलो, कम बोलो, हित के वचन बोलो।
किसी से काम हो तो उसे मत बुलाओ, उसके पास जाकर निवेदन करो।
कोई दोष लगाए तो मौन हो जाओ। यदि तुम निर्दोष हो तब तो मौन रहो ही, यदि तुम्हारा दोष हो तो भी मौन रहकर दोष सुधारो।
बहुत से व्याख्यानदाताओं के बीच में व्याख्यान मत दो। जब तक विशेष तौर पर आपसे न पूछा गया हो, प्रश्न का उत्तर मत दो।
और लोकेशानन्द का अंतिम सुझाव है कि जीभ को जितना हो सके उतना नाम जप और भगवान के गुणानुवाद में लगा कर रखो।

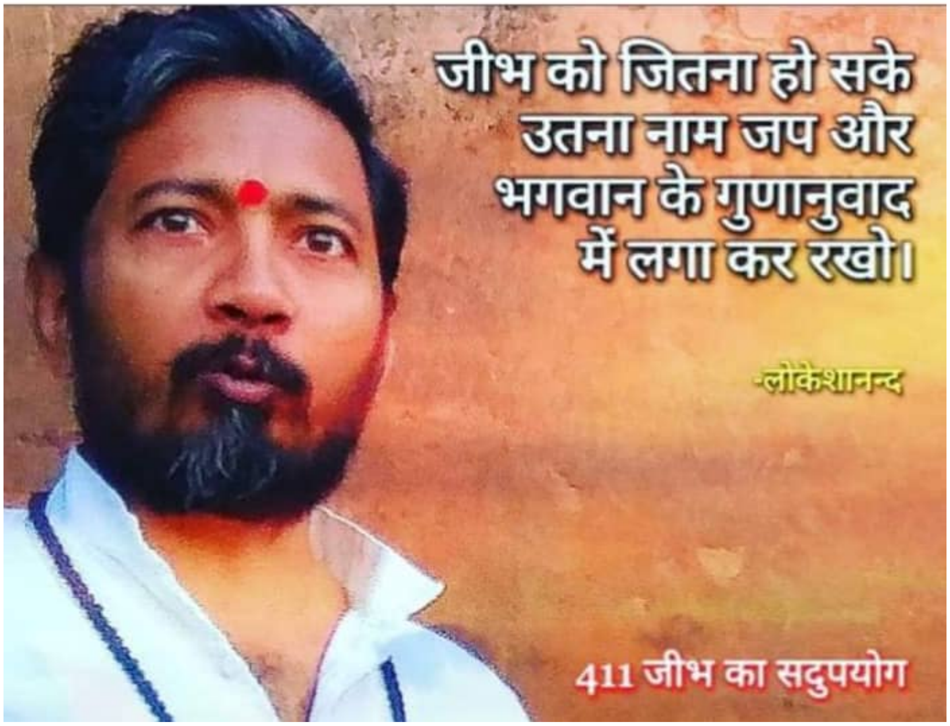


CamScanner

7:54 am 0 KB/s VoLTE 4G 98%
Like Send Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**
Rahul Kumar Ojha · 2h ·

तीन बातों की मैंने चर्चा की—

सम्यक आहार की, सम्यक व्यायाम की, सम्यक निद्रा की।

वे तीनों ही शरीर से संबंधित हैं। शरीर एक भूमिका है साधक की लेकिन अकेली भूमिका नहीं है। उसके और भीतर प्रवेश करें, तो उसका एक भाव जगत भी है। और भीतर प्रवेश करें, उसका एक विचार जगत भी है।

शरीर के तल पर तीन बातें कहीं ऐसी ही तीन बातें भाव के तल पर और ऐसी ही तीन बातें विचार के तल पर और आपको मुझे कहनी हैं। अभी रात्रि में, मैं भाव के तल पर कौन सी तीन बातें हैं जो भूमिका बनेंगी उनकी थोड़ी चर्चा कर लूं और फिर ध्यान के लिए हम बैठेंगे।

सबसे पहले तो हमारे बाहर जो जगत है उसके प्रति एक भाव। उसके बाद हमारे कर्मों का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। और सबसे अंत में हमारी संवेदनाओं का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। हमारे बाहर तीन जगत हमें घेरे हुए हैं। एक तो वस्तुओं और व्यक्तियों का जगत है, जो हमसे चारों तरफ फैला हुआ है। उसके बाद हम जो कर्म करते हैं उनकी एक पर्त है, उनका एक जगत है, वह हमें घेरे हुए है। उसके बाद जो सुख-दुख की संवेदनाएं हमें छूती हैं, स्पर्श करती हैं, उनका एक जगत है, वह हमें अंत में घेरे हुए है। ऐसी तीन पर्तें हमें घेरे हुए हैं। इन तीनों पर्तों के लिए तीन भावनाएं ध्यान के लिए सहयोगी हैं।...

- ओशो,
समाधि कमल, प्रवचन - 5

CamScanner

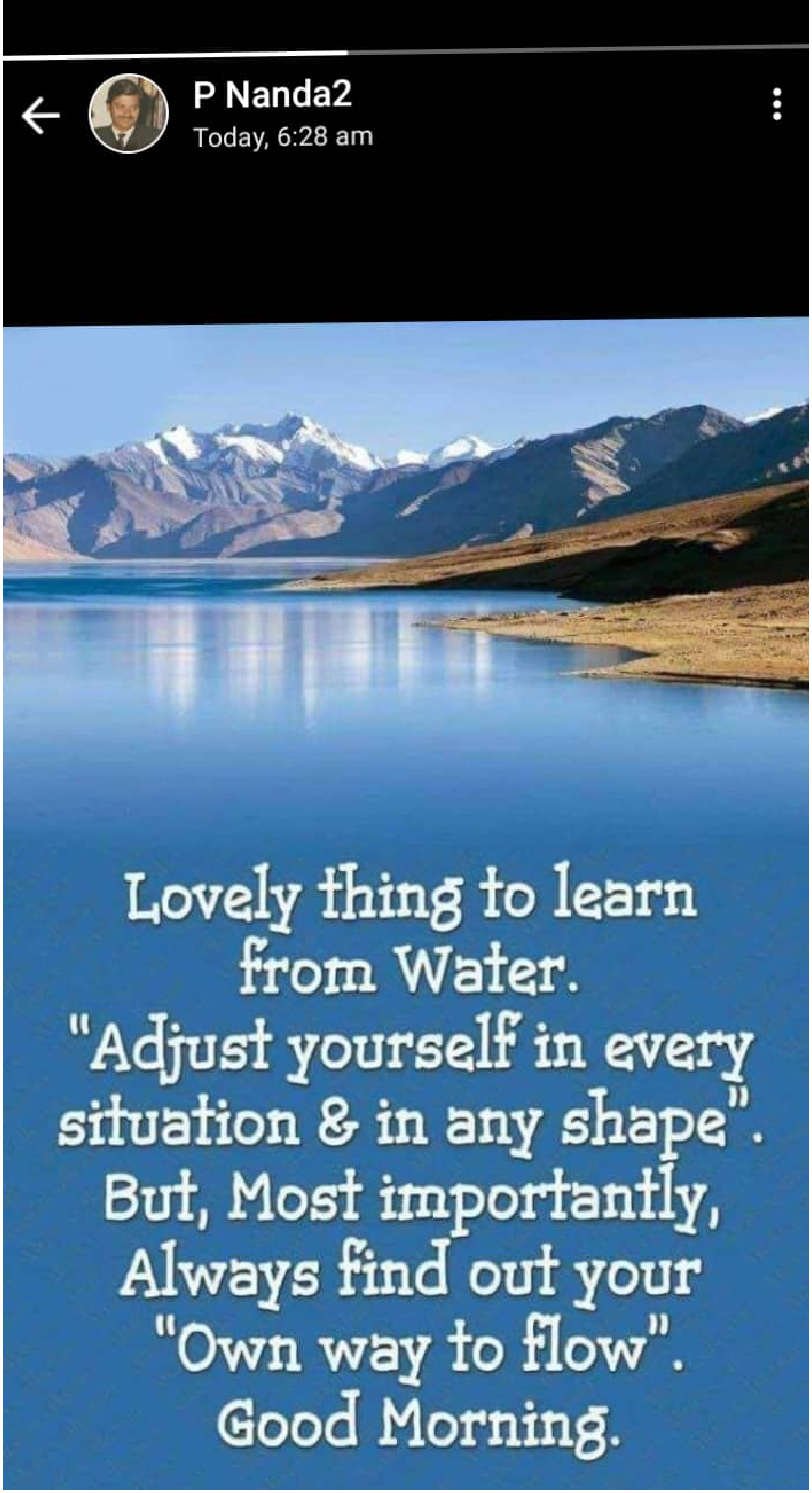
P Nanda2
Today, 6:28 am
Lovely thing to learn from Water.
"Adjust yourself in every situation & in any shape".
But, Most importantly, Always find out your "Own way to flow".
Good Morning.

CamScanner

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 24 Oct ·

इस सदी में परमात्मा से आस्था उठ जाने का कारण यही है: लोग प्रार्थना की कला भूल गए हैं। उस कला का पहला सूत्र है: मांगना मत, देना। परमात्मा से क्या मांगना है? उसने इतना दिया है! जीवन दिया है, और क्या चाहिए? चैतन्य दिया है, और क्या चाहिए? प्रेम दिया है, प्रेम की क्षमता दी है, और क्या चाहिए? इतना सौंदर्य दिया है, इतना सुंदर विश्व दिया है!

प्रार्थना अगर मांग बनी तो उसका अर्थ हुआ: शिकायत; इतना काफी नहीं है, कुछ और चाहिए। प्रार्थना होनी चाहिए धन्यवाद, कि जो दिया है वह मेरी पात्रता से ज्यादा है। कोई मेरी पात्रता तो नहीं थी कि मुझे जीवन मिले। कोई मेरी पात्रता तो नहीं थी कि इतने फूल मेरे जीवन में झरें, इतने गीत मेरे जीवन में लगें! यह मेरी कमाई तो नहीं थी, कि चांदत्तारों से भरा हुआ यह आकाश मुझे उपलब्ध हो! यह हृदय प्रेम-पगा! यह प्राणों का संगीत! यह ध्यान की अनाहत ध्वनि! ये चैतन्य के कमल, ये मेरे भीतर खिलें--ऐसी मेरी कोई कमाई तो न थी। न मालूम किन अनजान हाथों का प्रसाद है!

कृतज्ञता में झुक जाने का नाम प्रार्थना है। धन्यवाद में झुक जाने का नाम प्रार्थना है।

🙏ओशो 🙏

प्रीतम छवि नैनन बसी 🌹 10 🌹

CamScanner

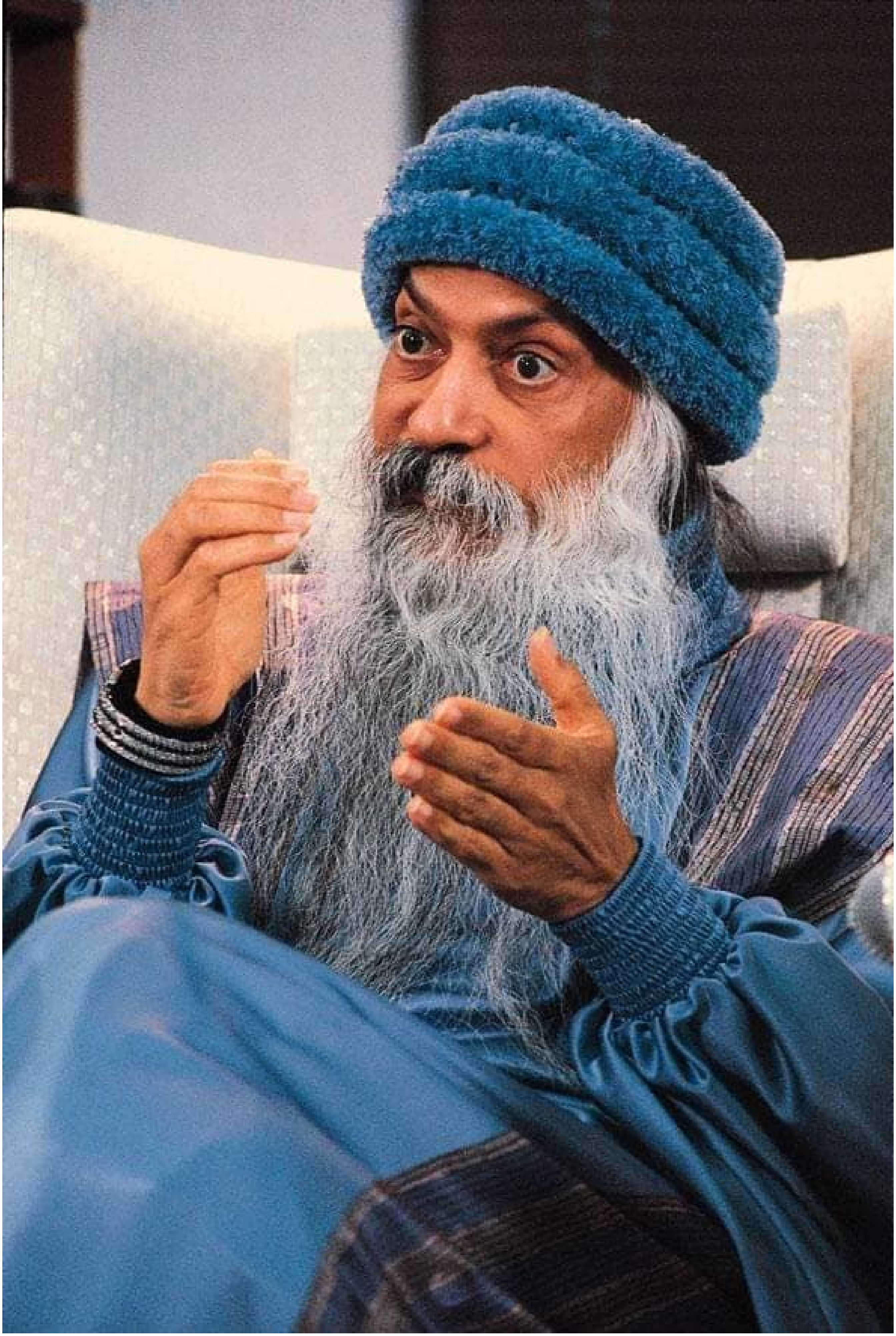

CamScanner

*लेकिन जीवन के सत्य के संबंध में भी, वह चार मुल्कों वाली हालत सारी दुनिया की है।*
*या तो अविश्वासी हैं, जिन्होंने तय कर रखा है कि अविश्वास ही उनका धर्म है*,

*या विश्वासी हैं जिन्होंने तय कर रखा हैं कि आंख बंद करके विश्वास करेंगे*,

*या तथाकथित वैज्ञानिक हैं, जो कहते हैं कि हमारी प्रयोगशाला में जो सिद्ध होगा वही सत्य है बाकी कुछ भी सत्य नहीं।*

*या दार्शनिक हैं, लाजिसियंश हैं, वे कहते हैं, हम किताबें पढ़ेंगे और व्याख्या करेंगे, उसी में से जीवन के सत्य को निकाल लेंगे*।
*लेकिन इन चारों लोगों में से कोई भी जीवन के सत्य को नहीं निकाल पाता है।*

*जीवन के सत्य को तो वह निकालता है, जो जीवन की प्याली से जीवन के रस को पीता है*। और कौन पीएगा जीवन की प्याली को?
*वे लोग नहीं पी सकते जो अंध परंपरा के विश्वासी हैं। वे लोग नहीं पी सकते जो कि व्यर्थ ही प्रत्येक चीज के विरोधी हैं।*
वे लोग नहीं पी सकते, जिन्होंने कि प्रयोगशाला के और पदार्थवादी दृष्टि पर ही सब कुछ रोक रखा है।
*वे लोग भी नहीं पी सकते जो केवल तर्क करते हैं, केवल विचार करते हैं, आर्ग्यु करते हैं और चुप हो जाते हैं।*

*कौन पीएगा जीवन के सत्य को? जीवन के सौंदर्य को कौन पीएगा?*

इन चार से जो बच सकता है, वह जीवन के सत्य को पीने में समर्थ हो सकता है..✍❤💻

❤ओशो❤

Write a comment...

CamScanner

तर्कशील अड्डा

माटी का नाग बनाके पुजे लोग
लुगाया।
जिंदा नाग जब घर में निकले
ले लाठी धमकाया।।
जिंदा बाप कोई ना पूजे मरे
बाद पुजवाया।
मुट्ठी भर चावल लेके कौवे को
बाप बनाया।।

संत कबीर • तर्कशील अड्डा

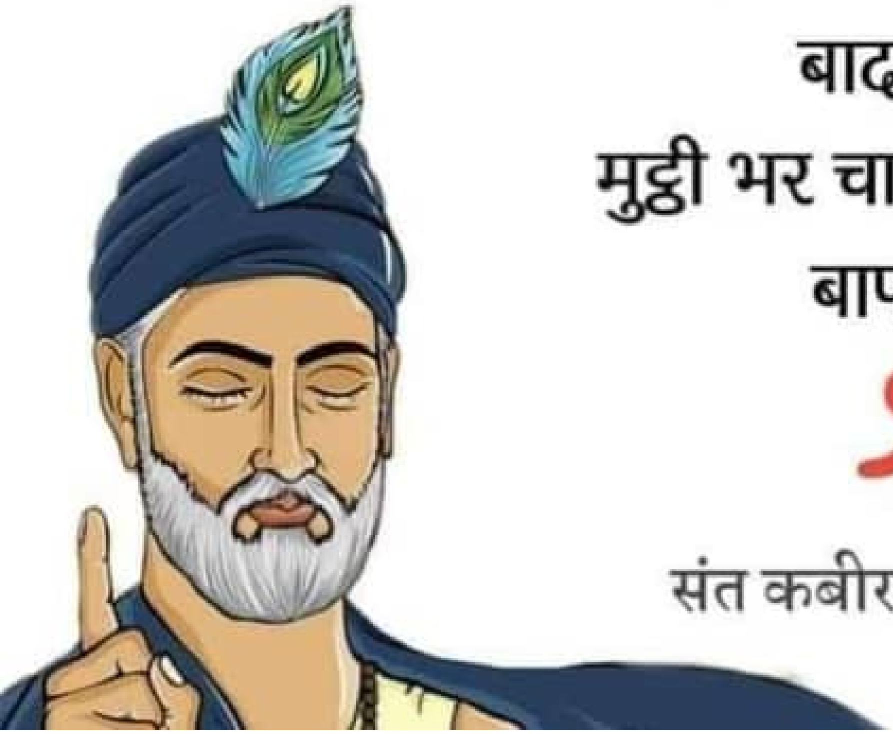

CamScanner

11:20 am 84%

अहोभाव
11h ·

अहोभाव

तुम जहां हो आनन्द
वहीं पर है।
मछली का आनंद
जल में है।
पक्षियों का आनंद
आकाश में है।
मनुष्य का आनंद
पृथ्वी पर है।
दूसरों का आनंद
तुम्हारा आनंद
नहीं हो सकेगा!!!
ओशो

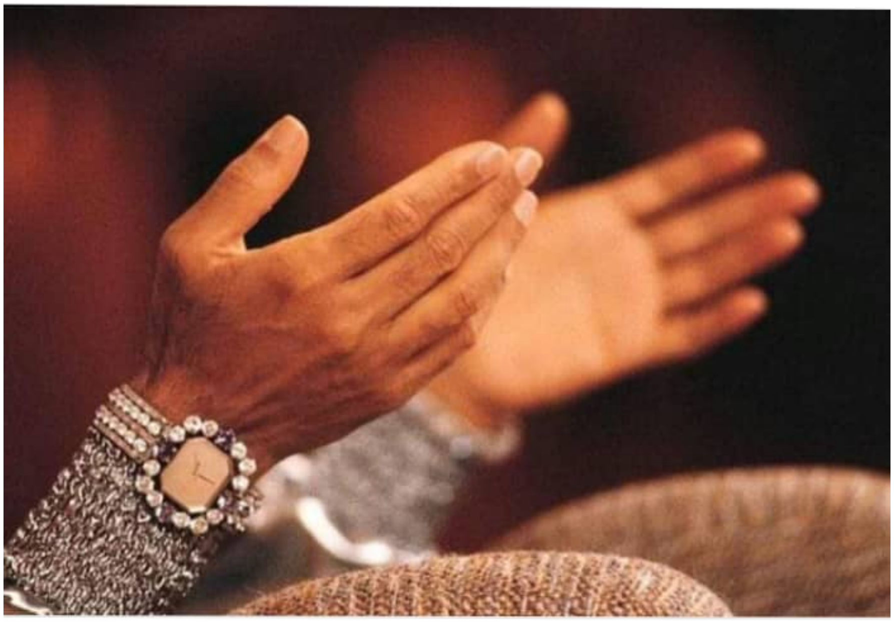

7 2 comments

Like Send Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

CamScanner

निर्वस्त्र आये थे, निर्वस्त्र ही जायेंगे... कमज़ोर आये थे, कमज़ोर ही जायेंगे... बिना धन-संपदा के आये थे, बिना धन-संपदा के ही जायेंगे। पहला स्नान भी हमने स्वंय नहीं किया ,अंतिम स्नान भी हम स्वंय नहीं कर पायेंगे। यही सच्चाई है।
#Beautifullife

CamScanner

11:17 am 84%

Write a comment...

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

S P Rathod · 30m ·

"प्रेम" अहंकार से भी बड़ी बीमारी है।

6 5 comments

Like Comment Send Share

Write a comment...

**Art of Living Programs**

CamScanner

11:17 am 84%

You and 8 others 1 comment

Like Comment Send Share

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

Parshotam Rai · 2h ·

हरि ॐ 🙏

9 1 comment • 3 shares

Like Comment Send Share

Fantasy Cricket App

CamScanner

11:16 am 84%

**Oshovaaniwithneeraj**

13m ·

ओशो कहते हैं- यदि शिष्य तैयार हो तो मृत गुरु भी जीवित हो सकता है। यदि शिष्य तैयार नहीं है तो जीवित गुरु भी कुछ नहीं कर सकता। यह सब शिष्य पर निर्भर करता है।

8

Like Comment Send Share

To return to your call, open Meet

CamScanner

11:09 am 86%

Osho international
1h ·

पहले तुम पा लो फिर दूसरों की चिंता करना!
✨✨✨✨✨✨✨✨✨✨✨✨तुमने कोई ठेका लिया है सारे लोगों की फिकर का? तुम कौन हो उनकी चिंता करने वाले? पहले तुम तो पा लो!

और तुम यह नहीं पूछते कि शास्त्रीय संगीत सबके लिए है या नहीं! और तुम यह नही पूछते कि शेक्सपीयर के नाटक, और कालिदास के शास्त्र, और भवभूति की रचनाएं, और रवींद्रनाथ के गीत सबके लिए हैं या नही! तब तुम यह नहीं कहते कि कोई सस्ते कालिदास क्यों पैदा नहीं किये जाते? जो सर्वसुलभ हों! धर्म के लिए ही क्यों यह आग्रह है तुम्हारा?

धर्म को लोगों ने समझ रखा है-दो कौड़ी की चीज होनी चाहिए! सस्ती होनी चाहिए! सर्वसुलभ होनी चाहिए! और धर्म इस जीवन में सबसे कीमती चीज है; सबसे बहुमूल्य। यह तो जीवन का परम शिखर है। यहां कालिदास, भवभूति, रवींद्रनाथ, शेक्सपीयर और मिल्टन जैसे लोगों की भी पहुंच मुश्किल से हो पाती है। यहा आइंस्टीन और न्यूटन और एडिंग्टन जैसे वैज्ञानिकों तक की पहुंच नहीं हो पाती। सर्व साधारण की तो बात ही तुम छोड़ दो। यहां तो कोई बुद्ध, कोई महावीर, कोई कृष्ण, कोई जीसस-अंगुली पर इने-गिने लोग पहुंच पाए। मैं क्या करूं! नियम यह है: एस धम्मो सनंतनो!

धर्म तो परम शिखर है। इसके लिए तो प्रतिभा चाहिए। इसके लिए तो बड़ी प्रखर प्रतिभा चाहिए, क्योंकि यह जीवन के आखिरी तत्व को खोज लेना है।

तुम्हारा प्रश्न सोचने जैसा है। और पहले प्रश्न के संदर्भ में इसको लेना, तो आसान हो जाएगा समझना।

कहते हो: 'आप कहते हैं कि नृत्य में डूबो, उत्सव मनाओ, गीत गाओ-यही धर्म है।'

CamScanner

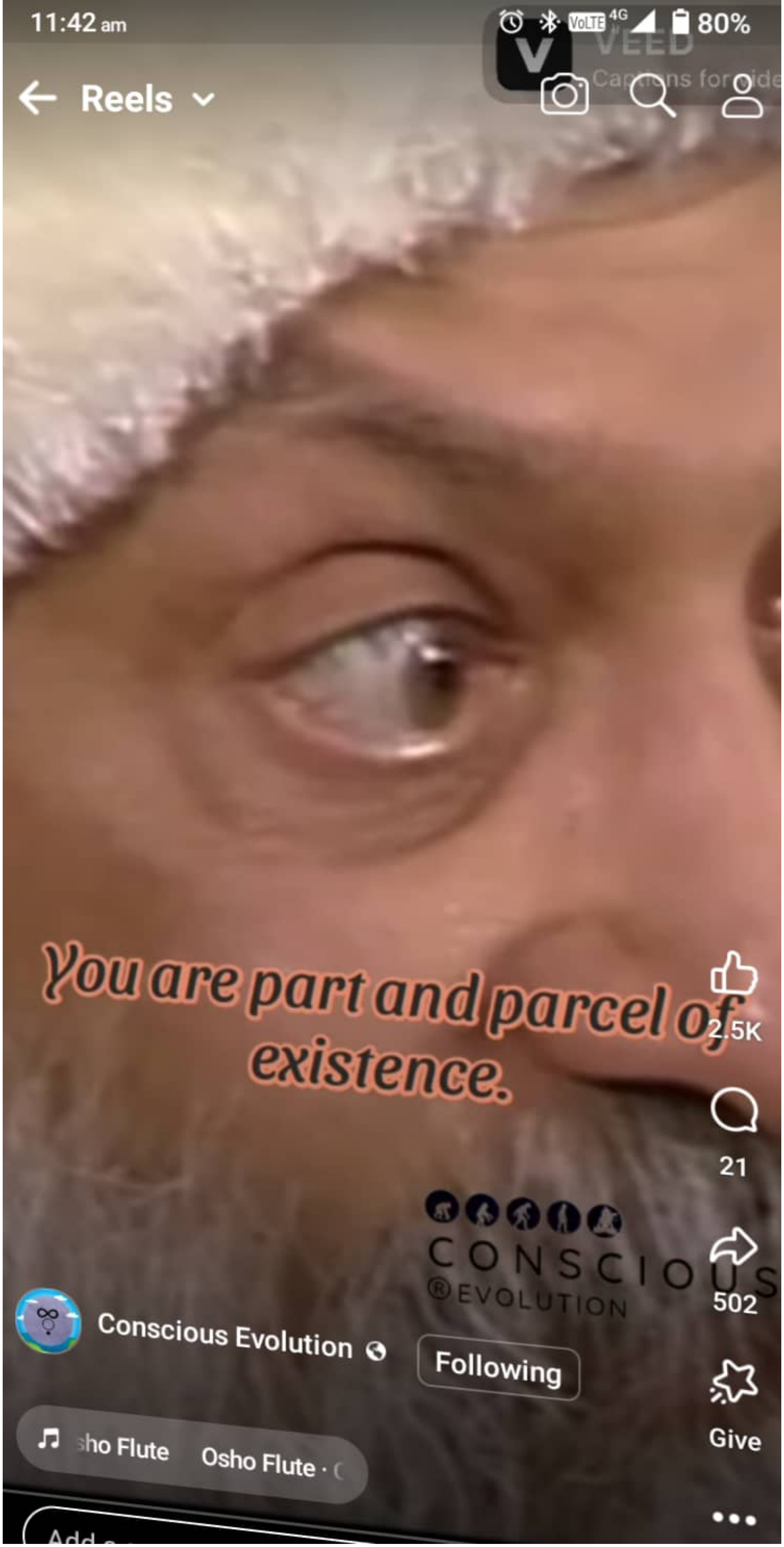
11:42 am
80%
Reels
You are part and parcel of existence.
2.5K
21
502
Give
CONSCIOUS
EVOLUTION
Conscious Evolution
Following
Osho Flute · 

CamScanner

**सर्वज्ञ गुरुकुल - सर्व जगाचा ज्ञाता**

Sponsored ·

21वीं सदी शारीरिक शक्ति की नहीं, बल्कि मस्तिष्क ( Brain) की एकाग्रता ( Concentration ) और आत्मविश्वासकी ( Confidence) द्रुढ़ शक्ति की है। हमारे सनातन धर्म में कम समय में अपने गुरुजनो से अंतर्ज्ञान ( Intution) के माध्यम से सारे विश्व का ज्ञान आत्मसाथ करते थे। आज हमारे स्कूलों ने हमें कभी भी वास्तविक दुनिया के लिए तैयार नहीं किया। उन्होंने आपको यह नहीं सिखाया कि कैसे सीखना है - उन्होंने केवल यह सिखाया कि क्या सीखना है। लेकिन हमारी दुनिया तेजी से बदल रही है...और आपने 5, 10 या 20 साल पहले जो सीखा वह आज बिल्कुल भी प्रासंगिक नहीं है।

यदि आपके पास एकाग्रता, आत्मविश्वास, याद करने, पढ़ने, सोचने और तेजी से सीखने का कौशल है तो आप प्रतिभाशाली व्यक्ति होंगे। यह आपको आपके करियर, पेशे, शैक्षिक गतिविधियों, रिश्तों और जीवन में सच्चा लाभ देगा।

मेरे पास आपके लिए एक अच्छी खबर है: आप सीख सकते हैं कि कैसे एकाग्रता और आत्मविश्वास से
सीखना है। आप अधिक होशियार और प्रतिभाशाली बन सकते हैं। और ये सीखने योग्य कौशल हैं। यदि आप ये कौशल सीखते हैं तो आप आधुनिक दुनिया में जीवित रहने, आगे बढ़ने और सफल होने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे।

अविस्मरणीय बनने और अपने प्रतिभाशाली मस्तिष्क को सुसज्जित करने की आपकी यात्रा आपका इंतजार कर रही है। सर्वज्ञ गुरुकुल से जुड़ें और मैं वादा करता हूं कि आपको खुशी होगी कि आपने ऐसा किया।

अविस्मरणीय बनने के लिए कृपया नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

Write a comment...

CamScanner

॥ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

पैसा कमानेवाला यह नहीं देखता कि यहाँ कोई आदर करता है या नहीं, सुविधा मिलती है या नहीं। वह तो अनादर सहकर, कष्ट सहकर भी पैसा कमाता है। इसी तरह साधक सब कुछ सहकर भी साधन, सत्संग करता रहे। अपनी दृष्टी सत्संग लाभपर रखे।

•स्वामी रामसुखदासजी महाराज•

गीताप्रेस गोरखपुर

CS CamScanner

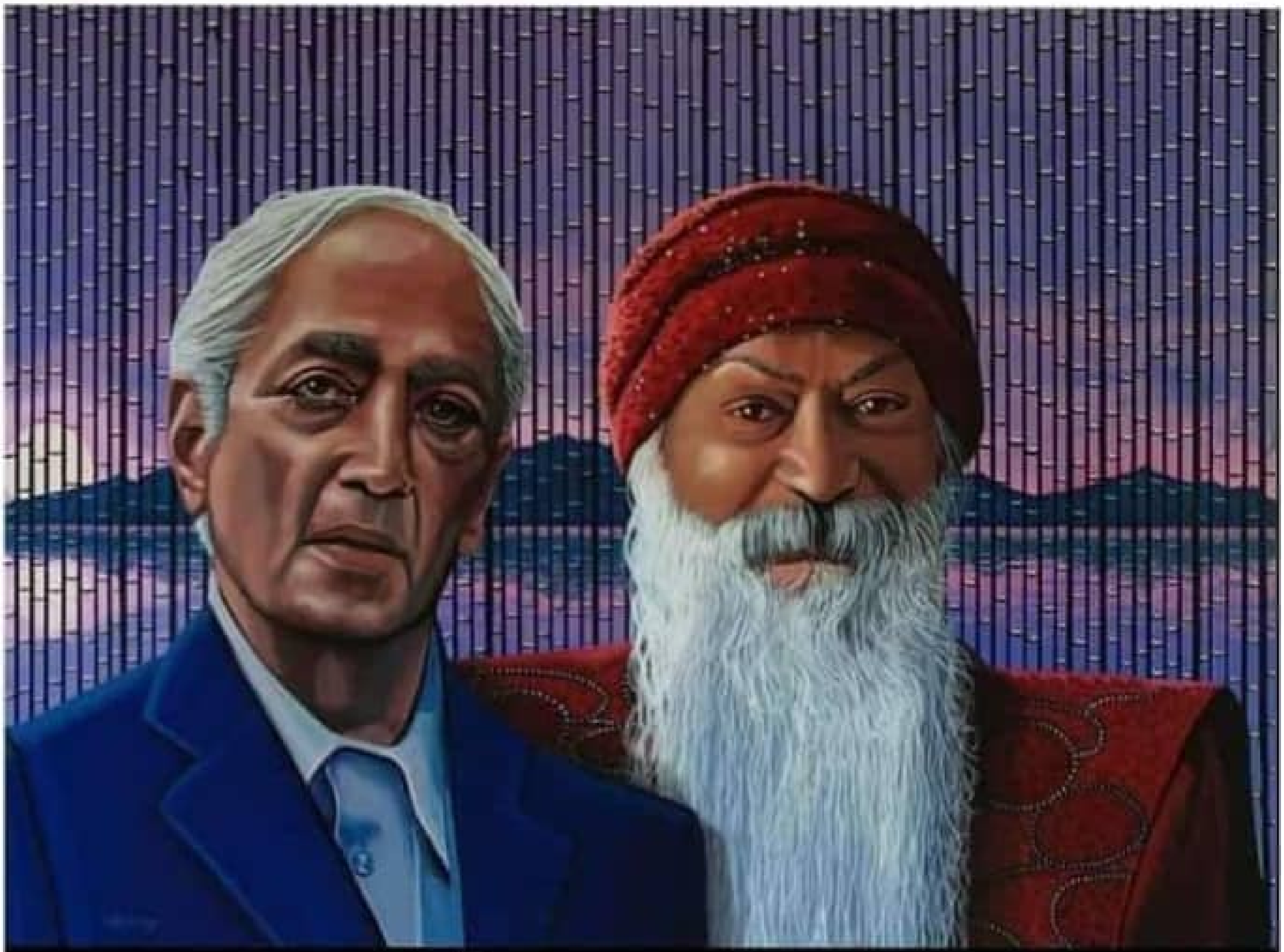

दो महाशून्य
फ़ाईन आर्ट्स अमेरिका द्वारा
बनाई गई एक दुर्लभ पेंटिंग
ओशो
और
जे कृष्णमूर्ति

CS CamScanner

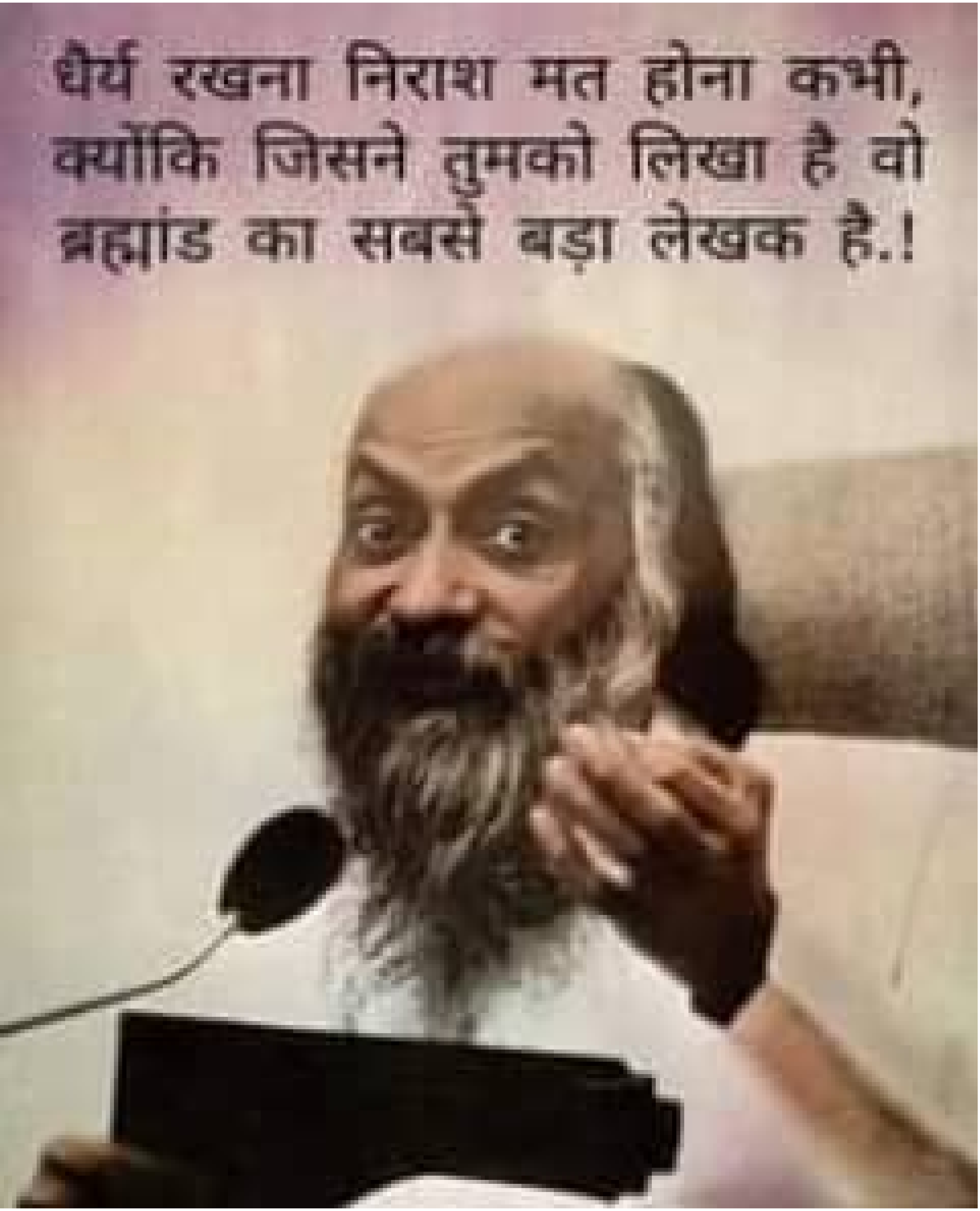


CamScanner

4:40 pm 30%

मानवता की पूरी समस्या यह है कि मानवता जानती है और जानने के कारण, अस्तित्व को अनावश्यक रूप से भुला दिया जाता है।

ध्यान यह है कि ज्ञान को कैसे छोड़ा जाए। ध्यान का अर्थ है कि फिर से अज्ञानी कैसे बनें। ध्यान का अर्थ है कि फिर से एक बच्चा, एक गुलाब की झाड़ी, एक चट्टान कैसे बनें। ध्यान का अर्थ है सिर्फ होना और सोचना नहीं।

जब मैं आपसे कहता हूं कि आप स्वयं बनें, तो मेरा मतलब है ध्यान करें। किसी और जैसा बनने की कोशिश मत करो. आप नहीं हो सकते। आप कोशिश कर सकते हैं और आप खुद को धोखा दे सकते हैं और आप खुद से वादा कर सकते हैं, और आप उम्मीद कर सकते हैं कि किसी दिन आप कोई और बन जाएंगे, लेकिन आप नहीं बन सकते। ये केवल भ्रम हैं जिन्हें आप पाले रह सकते हैं। ये सपने हैं. वे कभी भी वास्तविकता नहीं बनने वाले हैं। आप जो भी करेंगे आप आप ही रहेंगे।

आराम क्यों नहीं? अंकल डुडले, अपना पूरा वजन हवाई जहाज पर डालें। आराम करना। विश्राम में, अचानक आप अपने अस्तित्व का आनंद लेना शुरू कर देंगे और किसी और जैसा बनने का प्रयास बंद हो जाएगा। यही आपकी चिंता है, कोई और कैसे बनें, किसी और जैसा कैसे बनें, बुद्ध जैसा कैसे बनें, पतंजलि जैसा कैसे बनें। आप केवल आप ही हो सकते हैं. इसे स्वीकार करो, इसमें आनंद मनाओ, इसमें प्रसन्न रहो। आराम करना।

ज़ेन गुरु अपने शिष्यों से कहते हैं, "बुद्ध से सावधान रहें। यदि वह तुम्हें रास्ते में मिले तो उसे तुरंत मार डालो।" उनका क्या मतलब है? उनका मतलब है कि इंसान में नकल करने की प्रवृत्ति होती है। अंग्रेजी भाषा में एक किताब है, *इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट* । इससे पहले और बाद में कभी किसी किताब को इतना घटिया शीर्षक नहीं दिया गया। नकल? लेकिन एक तरह से वह शीर्षक बहुत प्रतीकात्मक है. यह मानवता के संपूर्ण मन को दर्शाता है। लोग नकल करने, कोई और बनने की कोशिश कर रहे हैं।



यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

CamScanner

4:25 pm 33%

उन्होंने कहा, "और फिर?" वह व्यक्ति बहुत दुखी हुआ और बोला, "मेरा शरीर कहता है, 'कौन, मैं?'"

याद रखें, आप शरीर और चेतना दोनों हैं। आप दोनों आयामों में फैले हुए हैं। आप पृथ्वी और आकाश, अनुग्रह और गुरुत्वाकर्षण का मिलन बिंदु हैं। इसमें कुछ भी पागलपन जैसा नहीं है. यह बिल्कुल सत्य है.

और कभी-कभी यह संभव है - क्योंकि यह घटित हो चुका है और आपको इसके बारे में जागरूक करना बेहतर है... कभी-कभी यह संभव है कि वास्तव में आपका शरीर थोड़ा ऊपर उठ जाता है। बवेरिया में एक महिला है जो ध्यान करते समय चार फीट ऊंची उठ जाती है। उसे वैज्ञानिक निगरानी में रखा गया है और पाया गया है कि वह किसी भी तरह से धोखा नहीं दे रही है। वह कुछ मिनट, चार, पांच मिनट तक, चार फीट ऊपर हवा में लटकी रहती है। यह योगियों के सबसे पुराने अनुभवों में से एक है। ऐसा कम ही होता है, लेकिन कभी-कभी अतीत में ऐसा हुआ है। अब भी कभी-कभी ऐसा होता है. कभी-कभी आपमें से कुछ लोगों के साथ ऐसा हो सकता है।

यदि कृपा का खिंचाव बहुत अधिक हो जाए और संतुलन खो जाए, तो ऐसा होता है। यह कोई बहुत अच्छी बात नहीं है. कोशिश मत करो और इसके लिए मत पूछो. यह एक असंतुलन है और यह जीवन के लिए खतरनाक है।' जब अनुग्रह का खिंचाव बहुत अधिक हो जाता है और गुरुत्वाकर्षण का खिंचाव कम हो जाता है, तो ऐसा होता है; शरीर ऊँचा उठ सकता है। फिर भी अपने आप को पागल मत समझिए और ऐसा महसूस मत करने लगिए कि आपके साथ पागलपन जैसा कुछ घटित हो रहा है।

न्यूटन पूरा सच नहीं है. न्यूटन से भी महान सत्य हैं। और गुरुत्वाकर्षण ही एकमात्र आयाम नहीं है, और भी कई आयाम हैं।

« < 7 8 9 10 11 > »

यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

4:21 pm 33%

आयाम म चल गए।

इन दो बातों को समझना होगा: गुरुत्वाकर्षण वह नियम है जो आपको नीचे खींचता है, अनुग्रह वह नियम है जो आपको ऊपर खींचता है। विज्ञान अभी तक दूसरे नियम की खोज नहीं कर सका है - शायद वह कभी भी इसकी खोज नहीं कर पाएगा। इसने एक नियम की खोज की है. आपने कहानी तो सुनी होगी - ऐसा हुआ या नहीं, यह बात नहीं है - कि न्यूटन एक बगीचे में बैठा था और एक सेब गिर गया। उस सेब को गिरते देख न्यूटन सोचने लगे, “सेब पृथ्वी की ओर क्यों गिरता है? सीधे पृथ्वी की ओर क्यों? पार्श्व में क्यों नहीं? यह ऊपर की ओर क्यों नहीं उड़ने लगता?” गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज की गई, कि पृथ्वी में खिंचाव है और वह हर चीज़ को अपनी ओर खींचती है।

लेकिन न्यूटन ने फल को गिरते हुए देखा, पेड़ को ऊपर उठते नहीं देखा। यही वह जगह है जहां मैंने हमेशा... जब भी मैंने कहानी पढ़ी है। मैंने हमेशा महसूस किया है कि उसने छोटे फल को धरती की ओर गिरते देखा है, उसने पेड़ को ऊपर की ओर उठते नहीं देखा। तुम एक पत्थर फेंको. यह सच है कि यह वापस गिरता है, लेकिन एक पेड़ ऊँचा और ऊँचा उठता चला जाता है। कोई चीज़ पेड़ को ऊपर खींच रही है। पत्थर मर गया है, पेड़ जीवित है। जीवन उच्चतर और उच्चतर और उच्चतर होता जाता है।

मनुष्य, अपनी चेतना में, इस धरती पर उच्चतम बिंदु तक पहुँच गया है। जब आप दुनिया के प्रति अपनी आंखें बंद कर लेते हैं, जब आप गहरे ध्यान की स्थिति में होते हैं, प्रार्थनापूर्ण, आनंदित, आनंदित होते हैं, तो अचानक शरीर वहां नहीं होता है। आप जीवन के आंतरिक वृक्ष के प्रति जागरूक हो गए हैं और यह ऊपर और ऊपर जा रहा है, और अचानक आपको लगता है कि आप उड़ सकते हैं।

« < 6 7 8 9 10 > »

यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

व्यक्तिगत बातचीत

ऑडियोबुक श्रृंखला

CamScanner

4:20 pm 33%
osho.com/osho-online-lil



यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

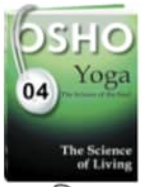


व्यक्तिगत बातचीत

ऑडियोबुक श्रृंखला

4. तुम एक बीज हो

« < 6 7 8 9 10 > »

और जब तक तुम बहुत सतर्क नहीं हो, तुम कभी भी स्वतंत्र रूप से नहीं चल पाओगे। ज्यादा से ज्यादा, आप जेलें बदल सकते हैं। एक जेल से आप दूसरी जेल में जा सकते हैं और दोनों के बीच की सैर का आनंद ले सकते हैं। दुनिया में यही हो रहा है. एक कैथोलिक कम्युनिस्ट बन जाता है, एक हिंदू ईसाई बन जाता है, एक मुसलमान हिंदू बन जाता है और वे बीच में चलने का आनंद लेते हैं - हां, जब वे जेलें बदल रहे होते हैं, एक जेल से दूसरे जेल में, तो थोड़ी सी आजादी महसूस होती है। उन्हें अच्छा लगता है. वे फिर से एक अलग नाम से उसी जाल में फंस गए हैं।

सभी विचारधाराएं कारागार हैं। मैं तुम्हें उनसे सावधान रहना सिखाता हूं, जिसमें मेरी विचारधारा भी शामिल है।

चौथा प्रश्न:

*ओशो,*
*हाल ही में कुछ बार मुझे*
*महसूस हुआ कि मैं उड़*
*सकता हूं, उत्सुकता से*
*गुरुत्वाकर्षण से मुक्ति*
*महसूस की और अपने शरीर*

English Hindi

CamScanner

4:20 pm 33%

ध्यान करो तो यही होगा. कई बार गहरे ध्यान में आप अचानक जागरूक हो जाएंगे - जैसे कि गुरुत्वाकर्षण गायब हो गया हो - कि अब कुछ भी आपको रोक नहीं पाता है, कि अब यह आपको तय करना है कि उड़ना है या नहीं, कि अब यह आप पर निर्भर है। यदि तुम चाहो तो बस आकाश में उड़ सकते हो और पूरा आकाश तुम्हारा है। लेकिन जब तुम आंखें खोलते हो, अचानक शरीर वहां होता है, पृथ्वी वहां होती है, गुरुत्वाकर्षण वहां होता है। जब आप आंखें बंद करके ध्यान कर रहे थे तो आप अपने शरीर को भूल गए। आप एक अलग आयाम, अनुग्रह के आयाम में चले गए।

इन दो बातों को समझना होगा: गुरुत्वाकर्षण वह नियम है जो आपको नीचे खींचता है, अनुग्रह वह नियम है जो आपको ऊपर खींचता है। विज्ञान अभी तक दूसरे नियम की खोज नहीं कर सका है - शायद वह कभी भी इसकी खोज नहीं कर पाएगा। इसने एक नियम की खोज की है. आपने कहानी तो सुनी होगी - ऐसा हुआ या नहीं, यह बात नहीं है - कि न्यूटन एक बगीचे में बैठा था और एक सेब गिर गया। उस सेब को गिरते देख न्यूटन सोचने लगे, "सेब पृथ्वी की ओर क्यों गिरता है? सीधे पृथ्वी की ओर क्यों? पार्श्व में क्यों नहीं? यह ऊपर की ओर क्यों नहीं उड़ने लगता?" गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज की गई, कि पृथ्वी में खिंचाव है और वह हर चीज़ को अपनी ओर खींचती है।

लेकिन न्यूटन ने फल को गिरते हुए देखा, पेड़ को ऊपर उठते नहीं देखा। यही वह जगह है जहां मैंने हमेशा... जब भी मैंने कहानी पढ़ी है। मैंने हमेशा महसूस किया है कि उसने छोटे फल को धरती की ओर गिरते देखा है, उसने पेड़ को ऊपर की ओर उठते नहीं देखा। तुम एक पत्थर फेंको. यह सच है कि यह वापस गिरता है, लेकिन एक पेड़ ऊँचा और ऊँचा उठता चला जाता है। कोई चीज़ पेड़ को ऊपर खींच रही है। पत्थर मर गया है, पेड़ जीवित है। जीवन उच्चतर और उच्चतर और उच्चतर होता जाता है।

मनुष्य, अपनी चेतना में, इस धरती पर उच्चतम बिंदु तक पहुँच गया है। जब आप दुनिया के प्रति अपनी आंखें बंद कर लेते हैं, जब आप गहरे ध्यान की स्थिति में होते हैं, प्रार्थनापूर्ण, आनंदित, आनंदित होते हैं, तो अचानक शरीर वहां नहीं होता है। आप जीवन के आंतरिक वृक्ष के प्रति जागरूक हो गए हैं और यह ऊपर और ऊपर जा रहा है, और अचानक आपको लगता है कि आप उड़ सकते हैं।

CamScanner

4:18 pm 34%

आपको जीवन का एक पैटर्न, एक अनुशासन, एक शैली, एक जीवन जीने का तरीका दूं।

मेरे जैसे व्यक्तियों को हमेशा गलत समझा गया है। एक लाओ त्ज़ु, एक जरथुस्त्र, एक एपिकुरस, को हमेशा गलत समझा गया है। अधिकांश धार्मिक लोगों को अधार्मिक माना जाता था क्योंकि यदि कोई वास्तव में धार्मिक है, तो वह तुम्हें स्वतंत्रता सिखाएगा, वह तुम्हें प्रेम सिखाएगा। वह तुम्हें कानून नहीं सिखाएगा, वह तुम्हें प्रेम सिखाएगा। वह तुम्हें जीवन का एक मृत स्वरूप नहीं सिखाएगा। वह तुम्हें एक अराजकता, एक अराजकता सिखाएगा, क्योंकि तारे अराजकता से ही पैदा होते हैं। वह तुम्हें सिखाएगा कि कैसे पूरी तरह से मुक्त हुआ जाए।

मैं जानता हूं कि डर है, आजादी का डर है, नहीं तो दुनिया भर में इतनी सारी जेलें क्यों होतीं? लोगों को अपने जीवन में लगातार अदृश्य जेलों को क्यों ढोना चाहिए? कैदी दो ही तरह के होते हैं. मैंने कुछ लोगों को देखा है जो दृश्य जेल में रहते हैं और बाकी लोग अदृश्य जेल में रहते हैं। वे अंतरात्मा के नाम पर, नैतिकता के नाम पर, परंपरा के नाम पर, इस या उस के नाम पर अपनी जेल अपने चारों ओर लेकर चलते हैं।

हज़ार नाम हैं बंधन और गुलामी के। आज़ादी का कोई नाम नहीं होता. आज़ादी कई प्रकार की नहीं होती, आज़ादी एक प्रकार की होती है। क्या आपने कभी देखा है? सत्य एक है. झूठ लाखों हो सकते हैं. आप लाखों तरीकों से झूठ बोल सकते हैं, आप लाखों तरीकों से सच नहीं बोल सकते। सत्य सरल है, एक ही रास्ता काफी है। प्यार एक है, कानून लाखों हैं। आज़ादी एक है, जेलें अनेक हैं।

« < 5 6 7 8 9 > »

यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

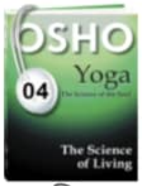

व्यक्तिगत बातचीत

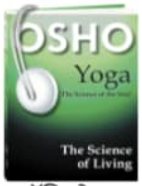

ऑडियोबुक श्रृंखला

शेयर करना

4:16 pm VoLTE 4G 34%

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं, "हमें रास्ता दिखाओ।" मैं उनसे कहता हूं, "ऐसा मत पूछो।" मैं तुम्हें केवल यह बता सकता हूं कि कैसे चलना है, मैं तुम्हें रास्ता नहीं दिखा सकता। कृपया अंतर देखने का प्रयास करें। मैं तुम्हें केवल यह बता सकता हूं कि कैसे चलना है और साहसपूर्वक कैसे चलना है। मैं तुम्हें रास्ता नहीं दिखा सकता क्योंकि रास्ता कायरों के लिए है। जो लोग चलना नहीं जानते, पंगु हैं, उनके लिए रास्ता मौजूद है। जो लोग चलना जानते हैं... वे जंगल में चले जाते हैं और केवल चलकर ही अपना रास्ता बनाते हैं।

और हर कोई अलग-अलग तरीके से भगवान तक पहुंचता है। आप जनसमूह के रूप में नहीं पहुंच सकते और आप भीड़ के रूप में नहीं पहुंच सकते। तुम अकेले पहुंचते हो, बिल्कुल अकेले।

भगवान जंगली है. वह अभी तक सभ्य नहीं हुआ है और मुझे आशा है कि वह कभी भी सभ्य नहीं होगा। वह अभी भी सहज हैं और उन्हें सहजता पसंद है। इसलिए यदि आपकी आंतरिक प्रकृति समुद्र तट पर जाने और आराम करने के लिए कहती है, तो ऐसा करें। वहीं से आपका ईश्वर आपको बुला रहा है।

मैं तुम्हें केवल स्वयं बने रहना सिखाता हूं, और कुछ नहीं। मुझे समझना बहुत कठिन है क्योंकि अपने डर के कारण आप चाहते हैं कि मैं आपको जीवन का एक पैटर्न, एक अनुशासन, एक शैली, एक जीवन जीने का तरीका दूं।

मेरे जैसे व्यक्तियों को हमेशा गलत समझा गया है। एक लाओ त्ज़ु, एक जरथुस्त्र, एक एपिकुरस, को हमेशा गलत समझा गया है। अधिकांश धार्मिक लोगों को अधार्मिक माना जाता था क्योंकि यदि कोई वास्तव में धार्मिक है, तो वह तुम्हें स्वतंत्रता सिखाएगा, वह तुम्हें प्रेम सिखाएगा। वह तुम्हें कानून नहीं सिखाएगा, वह तुम्हें प्रेम सिखाएगा। वह तुम्हें जीवन का एक मृत स्वरूप नहीं सिखाएगा। वह तुम्हें एक अराजकता, एक अराजकता सिखाएगा, क्योंकि तारे अराजकता से ही पैदा होते हैं। वह तुम्हें सिखाएगा कि कैसे पूरी तरह से मुक्त हुआ जाए।

मैं जानता हूं कि डर है, आजादी का डर है, नहीं तो दुनिया भर में इतनी सारी जेलें क्यों होतीं? लोगों को अपने जीवन में लगातार अदृश्य जेलों को क्यों ढोना चाहिए? कैदी दो ही तरह के होते हैं. मैंने कुछ लोगों

CamScanner

2:38 pm 54%

बनो। तुम एक बीज हो ईश्वर तुम्हारे भीतर छिपा है। लेकिन कहीं और मत जाना।”

जरथुस्त्र का धर्म सबसे स्वाभाविक धर्मों में से एक है, जीवन जैसा है उसे वैसे ही स्वीकार करना, जीवन जैसा है वैसे ही जीना। असंभव मत पूछो. आराम से लो। चारों ओर देखो. सत्य मौजूद है, केवल तुम अनुपस्थित हो। यह किनारा ही दूसरा किनारा है, कोई किनारा नहीं है। ये जिंदगी ही जिंदगी है, कोई दूसरी जिंदगी नहीं.

लेकिन आप इस जीवन को दो तरह से जी सकते हैं, न्यूनतम स्तर पर या अधिकतम स्तर पर। यदि तुम न्यूनतम पर जीते हो, तो तुम एक बीज की तरह जीते हो। यदि आप फूल की तरह जीते हैं, तो आप सर्वोत्तम जीवन जीते हैं। अपने बीज को फूल बनने दो। बीज ही फूल बनेगा। यह तुम ही हो जो दूसरा किनारा बन जाओगे। तुम ही हो जो सत्य बनोगे।

यह याद रखना। यदि आप इसे याद रख सकते हैं, तो स्वाभाविक रूप से, आपने वह सब समझ लिया है जो बुनियादी है, वह सब जो मौलिक है, वह सब जो समझने के लिए आवश्यक है।

दूसरा प्रश्न:

*ओशो,*
*ज़ज़ेन-ज़ेन और पतंजलि के*
*ध्यान में क्या अंतर है?*



यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

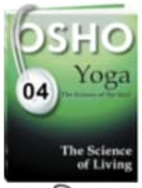

व्यक्तिगत बातचीत

ऑडियोबुक श्रृंखला

**शेयर करना**

CamScanner

वस्तुतः यह किनारा ही दूसरा किनारा है। कहीं जाने की जरूरत नहीं है. आपको बस अपने भीतर जाने की जरूरत है। आपको बस अपने अस्तित्व में छलांग लगाने की, अपने साथ तालमेल बिठाने की जरूरत है। लाओत्से कोई रास्ता नहीं बताएगा कि दूसरे किनारे पर कैसे जाया जाए।

हम कहानी को अलग तरीके से प्रबंधित कर सकते हैं। तीन व्यक्ति हों: पतंजलि, बुद्ध, लाओत्से। पतंजलि पानी की सतह पर चलने की कोशिश करेंगे - वह कर सकते हैं। वह चेतना के आंतरिक जगत के महान वैज्ञानिक हैं। वह जानता है कि गुरुत्वाकर्षण को कैसे चुनौती देनी है। बुद्ध वही कहेंगे जो यात्री कहानी में कहता है। बुद्ध कहते, "यह धारा को पार करने का कोई तरीका नहीं है। आओ मैं तुम्हें ऐसी जगह दिखाता हूं जहां इतनी मेहनत करने की जरूरत नहीं है. आसान है रास्ता. धारा उथली है; आपको बस कुछ सौ गज चलना होगा और आप उथली धारा में चल सकते हैं। उस महान कला को सीखने की कोई जरूरत नहीं है. यह बहुत आसानी से किया जा सकता है।" बुद्ध ऐसा कहेंगे.

और लाओ त्ज़ु? वह हँसेगा और वह बुद्ध और पतंजलि से कहेगा, "आप क्या कर रहे हैं? यदि तुम इस किनारे को छोड़ोगे तो तुम भटक जाओगे क्योंकि यह दूसरा किनारा है। यहां, इसी क्षण, सब कुछ वैसा ही है जैसा होना चाहिए। कहीं जाना नहीं है. सत्य के खोजी, किसी भी रास्ते का अनुसरण न करें क्योंकि सभी रास्ते कहीं न कहीं ले जाते हैं। सच्चाई यहाँ है।"

« < 1 2 3 4 5 > »

यह वार्ता सुनने और/या पढ़ने के लिए ओशो शॉप पर उपलब्ध है:

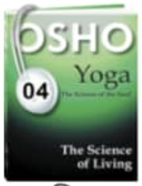

व्यक्तिगत बातचीत

ऑडियोबुक श्रृंखला

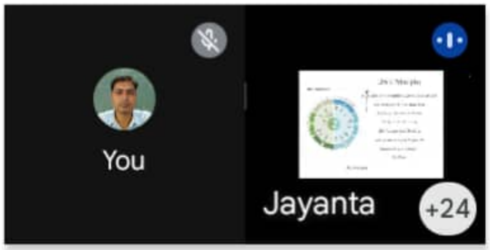


CamScanner

1:27 pm 61%

*कुछ ही दिनों में वे जरथुस्त्र के बगीचे में आये। उनकी एकमात्र पुस्तक प्रकृति की महान पुस्तक थी और उन्होंने अपने शिष्यों को इसे पढ़ना सिखाया। दोनों आगंतुकों ने जरथुस्त्र के बगीचे में एक और महान सत्य सीखा, कि जीवन और कार्य, अवकाश और अध्ययन, एक ही हैं, कि जीने का सही तरीका एक सरल, प्राकृतिक जीवन है - एक रचनात्मक जीवन जिसके भीतर व्यक्तिगत विकास होता है, कुल गतिशीलता. उन्होंने प्रकृति की विशाल पुस्तक से अस्तित्व और जीवन के नियमों को पढ़ना सीखते हुए, बगीचे में एक वर्ष बिताया। उस समय के अंत में, राजा अपने शहर लौट आए और जरथुस्त्र से अपने महान शिक्षण का सार व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने को कहा। जरथुस्त्र ने ऐसा ही किया और इसका परिणाम पारसियों की महान पुस्तक ज़ेंड-अवेस्ता के रूप में सामने आया।*

यह लंबी कहानी पूरी कहानी है कि कैसे एक आदमी भगवान बन जाता है, कैसे वह जो आप अपने भीतर छिपा रहे हैं वह प्रकट हो सकता है। बीज बनो. आप हैं, लेकिन हो सकता है कि आप अभी भी सोने के बक्से में कैद हों। उस धरती में गिरो जहां तुम हो और धरती में समा जाने के लिए तैयार रहो। मरने से मत डरो क्योंकि जो लोग मौत से डरते हैं वे खुद को जीवन से रोक रहे हैं। मृत्यु और कुछ नहीं बल्कि जीवन का द्वार है। जीवन से पहला परिचय मृत्यु है, इसलिए जो लोग मृत्यु से डरते हैं वे स्वयं को जीवन के विरुद्ध रोक रहे हैं। तब वे सोने की पेटी में सुरक्षित रहेंगे, परन्तु तब उनका विकास नहीं होगा। मृत्यु के भय से वे स्वयं को पुनर्जीवित नहीं कर पायेंगे। वास्तव में, सोने के बक्से में उनका जीवन वस्तुतः मृत्यु के अलावा कुछ नहीं होगा।

मिट्टी में, धरती में मृत्यु महज़ एक शुरुआत है, अंत नहीं, बल्कि सोने के डिब्बे में रहना ही अंत है। इसमें कोई शुरुआत नहीं है. तुम एक बीज हो कहीं जाने की जरूरत नहीं है. आपको जो कुछ भी चाहिए वह आपके पास आने के लिए तैयार है, लेकिन बीज के खोल को तोड़ने की जरूरत है। अहंकार को मिट्टी में मिल जाना है, अहंकार को मिट्टी में मिल जाना

1:26 pm 61%

*"इसी प्रकार, यदि आप ज्ञान और समझ में वृद्धि करना चाहते हैं, तो आपको अपना कृत्रिम जीवन छोड़ना होगा और वहां जाना होगा जहां आप प्रकृति और ब्रह्मांड की सभी शक्तियों, सभी चीजों के कुल के करीब होंगे। जिस प्रकार ऊर्जा के अटूट स्रोत धरती में बोए गए अनाज की ओर निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं, उसी प्रकार ज्ञान के असंख्य स्रोत खुलेंगे और आपकी ओर तब तक प्रवाहित होते रहेंगे जब तक आप प्रकृति और जैविक ब्रह्मांड के साथ एक नहीं हो जाते। यदि आप अनाज के इस बीज के विकास को देखेंगे तो पाएंगे कि इसमें एक अविनाशी और रहस्यमय शक्ति है, जीवन की शक्ति। अनाज गायब हो जाता है और उस गायब होने में मृत्यु पर विजय मिलती है।"*

*राजा ने उत्तर दिया, "आप जो कुछ भी कहते हैं वह सत्य है, फिर भी अंत में पौधा सूख जाएगा और मर जाएगा और पृथ्वी में विलीन हो जाएगा।"*

*"लेकिन नहीं," दार्शनिक ने कहा, "जब तक यह सृजन का कार्य नहीं कर लेता और खुद को सैकड़ों अनाजों में नहीं बदल लेता, जिनमें से प्रत्येक पहले की तरह होता है। वह छोटा सा दाना पौधे के रूप में विकसित होते ही गायब हो गया, और आपको भी बड़े होकर स्वयं को कुछ और किसी और में बदलना होगा। जीवन हमेशा अधिक जीवन बनाता है, सत्य अधिक प्रचुर सत्य बनाता है, बीज अधिक प्रचुर बीज बनाता है। एकमात्र कला जिसे जानने की आवश्यकता है वह है मरने की कला। तब व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है। मेरा प्रस्ताव है कि हम स्वयं जरथुस्त्र की यात्रा करें ताकि वह हमें इन चीजों के बारे में और अधिक सिखा सकें।*

*कुछ ही दिनों में वे जरथुस्त्र के बगीचे में आये। उनकी*

CamScanner

1:25 pm 4G 61%

*तब राजा ने गेहूँ के दाने से भरा सुनहरा बक्सा लिया और उत्तर दिया, "मैंने जरथुस्त्र से मुझे सिखाने के लिए कहा। देखो, उसने मुझे यही भेजा है। यहां वह शिक्षक है जो मुझे ब्रह्मांड के नियम और प्रकृति की शक्तियां सिखाएगा। क्या यह हास्यास्पद नहीं है?"*

*दार्शनिक ने गेहूं के दाने को देर तक देखा और ध्यान करते समय महल में सन्नाटा छा गया। अंत में उन्होंने कहा, "मुझे अपनी कई महीनों की यात्रा पर कोई अफसोस नहीं है, क्योंकि अब मैं जानता हूं कि जरथुस्त्र वास्तव में महान शिक्षक हैं और मैं लंबे समय से उन्हें मानता रहा हूं। गेहूं का यह छोटा सा दाना वास्तव में हमें ब्रह्मांड के नियमों और प्रकृति की शक्तियों को सिखा सकता है, क्योंकि यह उन्हें अभी अपने आप में समाहित करता है। तुम्हें गेहूँ का दाना सोने के डिब्बे में नहीं रखना चाहिए। आप पूरी बात भूल रहे हैं. यदि आप इस छोटे से अनाज को उस धरती पर, जहाँ वह है, रोपेंगे, मिट्टी, बारिश, हवा, धूप और चंद्रमा और सितारों की रोशनी के संपर्क में, तो यह अपने आप में एक ब्रह्मांड की तरह बड़ा होना शुरू हो जाएगा और बड़ा.*

*"इसी प्रकार, यदि आप ज्ञान और समझ में वृद्धि करना चाहते हैं, तो आपको अपना कृत्रिम जीवन छोड़ना होगा और वहां जाना होगा जहां आप प्रकृति और ब्रह्मांड की सभी शक्तियों, सभी चीजों के कुल के करीब होंगे। जिस प्रकार ऊर्जा के अटूट स्रोत धरती में बोए गए अनाज की ओर निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं, उसी प्रकार ज्ञान के असंख्य स्रोत खुलेंगे और आपकी ओर तब तक प्रवाहित होते रहेंगे जब तक आप प्रकृति और जैविक ब्रह्मांड के साथ एक नहीं हो जाते। यदि आप अनाज के इस बीज के विकास को देखेंगे तो पाएंगे कि इसमें एक अविनाशी और रहस्यमय शक्ति है, जीवन की शक्ति। अनाज*

CamScanner

1:24 pm 62%

*राजा ने उसे खोला और फिर वही अनाज पाया, गेहूं का वही दाना जो जरथुस्त्र ने उसे पहले दिया था। उसने सोचा कि इसमें जरूर कुछ रहस्यमय और जादुई चीज़ होगी, इसलिए उसने इसे एक सोने के बक्से में रख दिया और अपने खजाने के बीच छिपा दिया। लगभग हर दिन वह इसे इस उम्मीद में देखता था कि कोई चमत्कार होगा, जैसे कि गेहूं के दाने का किसी ऐसी चीज़ में बदलना या कोई ऐसा व्यक्ति जो उसे वह सब सिखा देगा जो वह जानना चाहता था।*

*महीने बीत गए और फिर साल, लेकिन कुछ नहीं हुआ। आख़िरकार राजा ने धैर्य खो दिया और कहा, "ऐसा लगता है कि जरथुस्त्र ने मुझे फिर से धोखा दिया है। या तो वह मेरा मज़ाक उड़ा रहा है या फिर वह मेरे सवालों के जवाब नहीं जानता, लेकिन मैं उसे दिखा दूँगा कि मैं उसकी मदद के बिना भी जवाब पा सकता हूँ।" इसलिए राजा ने एक महान भारतीय रहस्यवादी, त्शेनग्रेंगाचा के पास एक कारवां भेजा, जिसके पास दुनिया भर से शिष्य आए थे। कारवां के साथ वही दूत और वही खजाना गया जो उसने कभी जरथुस्त्र के पास भेजा था।*

*कई महीनों के बाद दूत दार्शनिक को लेकर भारत से लौटे। लेकिन दार्शनिक ने उससे कहा, "मैं आपका शिक्षक होने पर सम्मानित महसूस कर रहा हूं, लेकिन ईमानदारी से आपको बता दूं कि मैं मुख्य रूप से आपके देश में महान जरथुस्त्र से मिलने के लिए आया हूं।"*

*तब राजा ने गेहूँ के दाने से भरा सुनहरा बक्सा लिया और उत्तर दिया, "मैंने जरथुस्त्र से मुझे सिखाने के लिए कहा। देखो, उसने मुझे यही भेजा है। यहां वह शिक्षक है जो मुझे ब्रह्मांड के नियम और प्रकृति की शक्तियां सिखाएगा। क्या यह हास्यास्पद नहीं है?"*

CamScanner

1:23 pm 62%

महल में कोई भी इन सवालों का जवाब नहीं दे सका, लेकिन इस बीच, जरथुस्त्र की प्रसिद्धि बढ़ गई। इसलिए अपने अभिमान को एक तरफ रखकर, उसने जरथुस्त्र के पास खजाने का एक बड़ा कारवां भेजा और इसके साथ एक निमंत्रण और एक अनुरोध भी भेजा। "मुझे अफसोस है।" उन्होंने लिखा, "जब मैं अपनी युवावस्था में अधीर और विचारहीन था, तो मैंने आपसे अस्तित्व की बड़ी समस्याओं को कुछ ही मिनटों में समझाने के लिए कहा। मैं बदल गया हूं और अब असंभव नहीं चाहता, लेकिन मुझे अभी भी ब्रह्मांड के नियमों और प्रकृति की शक्तियों को जानने में गहरी दिलचस्पी है, उस समय की तुलना में भी अधिक जब मैं एक युवा व्यक्ति था। मेरे महल में आओ, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। या यदि यह संभव नहीं है, तो अपने सबसे अच्छे शिष्यों को मेरे पास भेजो ताकि वह मुझे इन प्रश्नों के बारे में वह सब कुछ सिखा सके जो वह दे सकता है।

कुछ अंतराल के बाद कारवां और दूत वापस लौट आये। उन्होंने राजा को बताया कि उन्हें जरथुस्त्र मिल गया है, जिन्होंने उन्हें शुभकामनाएँ भेजीं, लेकिन प्रस्तावित खजाना वापस कर दिया। जरथुस्त्र ने कहा था कि खजाना उनके किसी काम का नहीं है क्योंकि उन्हें परम खजाना मिल गया है। इसके अलावा, जरथुस्त्र ने राजा को एक पत्ते में लपेटकर एक उपहार भेजा था और दूतों से उसे यह बताने के लिए कहा था कि यही वह शिक्षक है जो उसे सब कुछ सिखा सकता है।

राजा ने उसे खोला और फिर वही अनाज पाया, गेहूं का वही दाना जो जरथुस्त्र ने उसे पहले दिया था। उसने सोचा कि इसमें जरूर कुछ रहस्यमय और जादुई चीज़ होगी, इसलिए उसने इसे एक सोने के

एक बार जब फारस का राजा विष्टस्पा विजयी अभियान से लौट रहा था, तो वह उस स्थान के निकट आया जहाँ जरथुस्त्र रहता था। उसने फकीर से मिलने का फैसला किया। राजा ने जरथुस्त्र से कहा। "मैं इसलिए आया हूं कि आप मुझे प्रकृति और ब्रह्मांड के नियम समझाएं। मैं देर नहीं कर सकता क्योंकि मैं युद्ध से घर जा रहा हूं और राज्य के महत्वपूर्ण मामले मेरे महल में मेरा इंतजार कर रहे हैं।"

राजा की ओर देखकर जरथुस्त्र मुस्कुराए और धरती से गेहूँ का एक दाना उठाकर उन्हें दे दिया। "गेहूं के इस छोटे से दाने में," उन्होंने घोषणा की, "ब्रह्मांड के सभी नियम और प्रकृति की शक्तियां समाहित हैं।"

राजा इस उत्तर से बहुत चकित हुआ, उसे कुछ समझ नहीं आया। और जब उसने अपने आस-पास के लोगों के चेहरों पर मुस्कान देखी, तो वह क्रोधित हो गया और उसने यह सोचकर अनाज जमीन पर फेंक दिया कि उसका मजाक उड़ाया जा रहा है। उन्होंने जरथुस्त्र से कहा, "मैं आपसे मिलने के लिए यहां आकर अपना समय बर्बाद करने में मूर्ख था।"

इतने वर्ष बीत गए। राजा एक शासक और योद्धा के रूप में सफल थे और उन्होंने विलासिता और स्पष्ट संतुष्टि का जीवन व्यतीत किया। लेकिन रात को जब वह बिस्तर पर गया, तो उसके मन में अजीब विचार आए और उसे परेशान किया: "मैं इस शानदार महल में विलासिता और प्रचुरता से रहता हूं, लेकिन मैं कब तक इसका आनंद उठाऊंगा - इस प्रचुरता, इस शक्ति, इस धन - और क्या?" जब मैं मर जाऊँगा तो क्या मेरे साथ ऐसा होगा? क्या मेरी शक्ति और मेरी दौलत मुझे बीमारी और मौत से बचा सकती है? क्या मृत्यु के आते ही सब कुछ नष्ट हो जाता है?"

CamScanner

*Lao Tzu and led him*
*to a place where the*
*water was shallow,*
*and they waded*
*across together.*

This is from Yatri. The story is true, but Yatri, you have missed the most important point in it. Let me tell you the whole story again.

I have heard…

Patanjali and Lao Tzu came to a stream. Patanjali began to cross the stream by walking on the surface of the water. Lao Tzu stood on the bank and called him to come back.

"What's the matter?" Patanjali inquired.

Said Lao Tzu, "There is no need to cross the stream because this shore is the other shore."

That's the whole emphasis of Lao Tzu: There is no need to go anywhere, the other shore is here. There is no need to do anything. The only need is just to be. Effort is irrelevant because you are already that which you can ever be. Go nowhere. Follow no path. Seek nothing. Wherever you go, the very going is missing the point because everything is already available here.

I will tell you another story, one of the most important stories in the world of human consciousness. The story is concerned with Zarathustra, another Lao Tzu who believed in being natural, who believed in being easy, who believed in being just to be:



This talk is available from the OSHO Shop for listening

CamScanner

1:14 pm 63%

Buddha's flower cannot be given to everybody and anybody – a Mahakashyapa is needed. In fact, it can be given only to someone who does not need it. Mahakashyapa is one who does not need it. It can be given only to one who does not need it. Zarathustra's seed can be given to those who need it. And what he said... He simply said, "Become a seed. You are a seed. God is hidden within you. But don't go anywhere else."

Zarathustra's religion is one of the most natural religions, to accept life as it is, to live life as it is. Don't ask the impossible. Take it easy. Look all around. The truth is present, only you are absent. This shore is the other shore, there is no other shore. This life is the life, there is no other life.

But you can live this life in two ways, at the minimum, or at the optimum. If you live at the minimum, you live like a seed. If you live like a flower, you live at the optimum. Let your seed become the flower. It is the seed itself who will become the flower. It is you who will become the other shore. It is you who will become the truth.

Remember this. If you can remember this, just to be natural, you have understood all that is basic, all that is fundamental, all that is essential to be understood.

The second question:

*Osho,*
*What is the*
*difference between*
*zazen-zen and*
*Patanjali's dhyana?*

CamScanner

1:09 pm 64%
achhikhabar.com/2012/(

*Related:* *Suicide करना है तो हमेशा के लिए करो- ओशो का प्रेरणादायक लेख*

| | |
|---|---|
| Name | Osho (Bhagwan Shree Rajneesh) / ओशो (भगवान श्री रजनीश) |
| Born | 11 December 1931, Kuchwada, Bhopal State, British India (modern day Madhya Pradesh, India) |
| Died | 19 January 1990 (aged 58),Poona, Maharashtra, India |
| Nationality | Indian |
| Field | Spirituality |
| Achievement | He was an Indian mystic, guru, and spiritual teacher who garnered an international following. |

## ओशो के अनमोल विचार

Top

CamScanner

1:07 pm 65%

**#35-** खुद में जीवन का कोई अर्थ नहीं. जीवन अर्थ बनाने का अवसर है.

**#36-**

**#37-** शामिल करो और बढ़ो. शामिल करो और विस्तार करो.

**#38-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:07 pm 65%

**#31-** प्रेम एक आध्यात्मिक घटना है, वासना भौतिक. अहंकार मनोवैज्ञानिक है, प्रेम आध्यात्मिक.

**#32-**

**#33-** अपने मन में जाओ, अपने मन का विश्लेषण करो. कहीं न कहीं तुमने खुद को धोखा दिया है.

**#34-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:07 pm 65%

**#27-** जो 'जानता' है वो जानता है कि बताने की कोई ज़रूरत नहीं. जानना काफ़ी है.

**#28-**

**#29-** तनाव का अर्थ है कि आप कुछ और होना चाहते हैं जो कि आप नहीं हैं.

**#30-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:07 pm 65%

**#23-** इससे पहले कि तुम चीजों की इच्छा करो, थोड़ा सोच लो. हर संभावना है कि इच्छा पूरी हो जाए, और फिर तुम कष्ट भुगतो.

**#24-**

**#25-** कैद के अलावा कुछ भी दु:ख नहीं है.

**#26-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:07 pm 65%

**#19-** जितनी ज़्यादा ग़लतियां हो सकें उतनी ज़्यादा ग़लतियां करो. बस एक बात याद रखना: फिर से वही ग़लती मत करना. और देखना, तुम प्रगति कर रहे होगे.

**#20-**

**#21-** तलाशो मत, पूछो मत, ढूंढो मत, खटखटाओ मत, मांगो मत – शांत हो जाओ. तुम शांत हो जाओगे – वो आ जाएगा. तुम शांत हो जाओगे – उसे यहीं पाओगे. तुम शांत हो जाओगे तो अपने को उसके साथ झूलते हुए पाओगे.

**#22-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:07 pm 65%

**#15-** जब भी कभी तुम्हें डर लगे, तलाशने का प्रयास करो. और तुमको पीछे छिपी हुई मृत्यु मिलेगी. सभी भय मृत्यु के हैं. मृत्यु एकमात्र भय-स्रोत है.

**#16-**

**#17-** एक भीड़, एक राष्ट्र, एक धर्म, एक जाति का नहीं पूरे अस्तित्व का हिस्सा बनो. अपने को छोटी चीज़ों के लिए क्यों सीमित करना सब संपूर्ण उपलब्ध है?

**#18-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:06 pm 65%

**#11-** कोई विचार नहीं, कोई बात नहीं, कोई विकल्प नहीं – शांत रहो, अपने आप से जुड़ो.

**#12-**

**#13-** तुम्हें अगर कुछ हानिकारक करना हो तभी ताकत की जरूरत पड़ेगी वरना तो प्रेम पर्याप्त है, करुणा पर्याप्त है.

**#14-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

1:06 pm 65%

**#7-** अनुशासन क्या है? अनुशासन का मतलब आपके भीतर एक व्यवस्था निर्मित करना है. तुम तो एक अव्यवस्था, एक केऑस हो.

**#8-**

**#9-** तुम जीवन में तभी अर्थ पा सकते हो जब तुम इसे निर्मित करते हो. जीवन एक कविता है जिसे लिखा जाना चाहिए. यह गाया जाने वाला गीत, किया जाने वाला नृत्य है.

**#10-**

होम पढ़िए देखिए सुनिए शो

CamScanner

राजस्थान में ED अफसर को धरा, कांग्रेस ने मोदी सरकार से क्या पूछ लिया?

लिए', ED के दावों पर
बोले?

ADVERTISEMENT

**#4-**

**#5-** किसी के साथ किसी भी प्रतियोगिता की कोई ज़रूरत नहीं है. तुम जैसे हो अच्छे हो. अपने आप को स्वीकार करो.

**#6-**



CamScanner

**#1-** जो कुछ भी महान है, उस पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता. और यह सबसे मूर्ख बातों में से एक है जो मनुष्य करता है - मनुष्य अधिकार चाहता है.

ADVERTISEMENT

**#2-**

**#3-** अंधेरा, प्रकाश की अनुपस्थिति है. अहंकार, जागरूकता की अनुपस्थिति है.

## Related Articles

CamScanner

**विश्वास नहीं, संदेह करो :** ओशो कहते हैं कि धर्म या विज्ञान के रेडीमेड सत्यों से काम नहीं चलेगा। मैं संशय (दुविधा) की बात नहीं कर रहा हूं। मैं संदेह की बात कर रहा हूं। संदेह करोगे तभी सत्य तक पहुंच सकते हो। श्रद्धा और विश्वास बांधते हैं, संदेह मुक्त करता है।

दुनियाभर के धर्म तुम्हें विश्वास करना सिखाते हैं। यह धर्मों की चालाकियां हैं। सभी तरह की शिक्षा चित्त को बूढ़ा करती है। यह चित्त को जगाती नहीं, भरती है और भरने से चित्त बूढ़ा होता है। विचार भरने से चित्त थकता, बोझिल होता और बूढ़ा होता है! विचार देना, स्मृति को भरना है। वह विचार या विवेक का जागरण नहीं है। स्मृति विवेक नहीं है। स्मृति तो यांत्रिक है। विवेक है चैतन्य। विचार नहीं देना है, विचार को जगाना है। विचार जहां जागृत है, वहां चित्त सदा युवा है। और जहां चित्त युवा है, वहां जीवन का सतत संघर्ष है, वहां चेतन के द्वार खुले हैं और वहां सुबह की ताजी हवाएं भी आती हैं और नए उगते सूरज का प्रकाश भी आता है। व्यक्ति जब दूसरों के विचारों और शब्दों की कैद में हो जाता है, तो सत्य के आकाश में उसकी स्वयं की उड़ने की क्षमता ही नष्ट हो जाती है।

दुनिया के सारे धर्म इस चित्त पर ही कब्जा करना चाहते हैं इसलिए उन्होंने तरह-तरह के नियम, क्रिया-कांड, ग्रह-नक्षत्र, किताब और ईश्वर के प्रति भय को उत्पन्न कर लोगों को अपने-अपने धर्म से जकड़े रखा है। दुनिया के तमाम धर्म 'विश्वास' सिखाते हैं, लेकिन वे जो विश्वास सिखाते हैं उस पर कभी कोई सवाल नहीं उठाता। धर्मों

CamScanner

1:04 pm 65%
google.com/amp/s/m-hi

**संभोग से समाधि की ओर** : 'संभोग से समाधि की ओर' उनकी बहुचर्चित पुस्तक है, लेकिन इससे कहीं ज्यादा अधिक सेक्स के संबंध में अन्य दूसरी पुस्तकों में उन्होंने सेक्स को एक अनिवार्य और नैसर्गिक कृत्य बताकर इसका समर्थन किया है। जबकि आमतौर पर दुनियाभर के धर्म सेक्स का विरोध करते हैं। संन्यास लेना हो या किसी भी संप्रदाय का संत बनना हो तो पहली शर्त ही यह है कि ब्रह्मचर्य का पालन करें, लेकिन ओशो के संन्यास की शुरुआत ही भोग से तृप्त होकर मुक्त होने के बाद होती है।

सेक्स का दमन ना करें: ओशो

ओशो के सेक्स संबंधी विचारों का विश्वभर के लोगों ने उनके काल में घोर विरोध किया था और आज भी करते हैं। ओशो कहते हैं कि सेक्स पहली सीढ़ी है और समाधि अंतिम। संभोग से समाधि की ओर, युवक और योनि व क्रांतिसूत्र, तंत्र सूत्र, विज्ञान भैरव तंत्र आदि कई किताबों के माध्यम से ओशो ने सेक्स, युवक, विद्रोह, प्रेम विवाह, तलाक आदि पर अपने बेबाक विचार रखे।

वे कहते हैं कि यदि विवाह करना हो तो उसमें कई तरह की कानूनी बाधा खड़ी करो और तलाक के लिए कानून आसान बनाए। अभी इसका ठीक उल्टा है। विवाह करना आसान है लेकिन तलाक लेना कठिन।

क्रांतिसूत्र में ओशो ने किसी भी तरह के वाद, पब्लिक ओपिनियन और दमन से मुक्ति की जोरदार वकालत की

CamScanner

1:04 pm 65%
google.com/amp/s/m-hi

**एक विश्व शासन :** ओशो कहते हैं कि सरहदों की कोई जरूरत नहीं। अब यह पागलपन समाप्त होना चाहिए। दूसरे विश्वयुद्ध के पहले राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस) ने एक विश्व शासन का प्रयोग करके देखा था लेकिन वह सफल नहीं हो सका। वह एक वाद-विवाद का क्लब बनकर रह गया। दूसरे विश्वयुद्ध ने राष्ट्र संघ की विश्वसनीयता ही खत्म कर दी, लेकिन उसकी जरूरत अभी भी थी इसलिए उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ निर्मित करना पड़ा। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ उतना ही असफल रहा जितना कि राष्ट्र संघ। फिर से वह एक वाद-विवाद क्लब बन गया है, क्योंकि उसके हाथ में कोई ताकत नहीं है। वह कुछ भी कार्यान्वित नहीं कर सकता। वह सिर्फ एक औपचारिक चर्चा करने का क्लब है। अभी संयुक्त राष्ट्र संघ का जो तरीका है- कुछ देशों को वीटो करने का अधिकार है- उसे विसर्जित कर देना चाहिए।

वह भी (संयुक्त राष्ट्र संघ) एक सत्ता की दौड़ है। और यह कई उपद्रवों का कारण बना है: एक अकेला शासन सारी दुनिया के लिए कुछ भी वीटो (इंकार) कर सकता है। इसकी जगह विभिन्न देशों के एक-एक राष्ट्रपति को मतदान करने का अधिकार होगा, जो कि उस देश की मैट्रिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुई जनसंख्या पर निर्भर होगा। इससे पूरी दुनिया का सत्ता का ढांचा बदल जाएगा। उसके बाद उसकी बारीकियों पर सोच-विचार करना बड़ा सरल है।

उसे सफल बनाने का सरल उपाय यह होगा कि उसे विश्व शासन बना दें। सभी देशों को चाहिए कि वे अपनी

CamScanner

1:04 pm 65%
google.com/amp/s/m-hi

**समाजवाद से सावधान** : ओशो कहते हैं कि समाजवाद से सावधान। यह जीवन-विरोधी विचारधारा है। समाजवाद और साम्यवाद दोनों ही जीवन की व्यवस्था को राज्य के हाथों में दे देने का उपाय है। जिसे आज पूंजीवाद कहते हैं, वह पीपुल्स कैपिटलिज्म है, वह जन-पूंजीवाद है। और जिसे समाजवाद और साम्यवाद कहा जाता है, वह स्टेट कैपिटलिज्म यानी राज्य-पूंजीवाद है। और कोई फर्क नहीं है...।

ओशो रजनीश की दो किताबें हैं- समाजवाद से सावधान और नए समाज की खोज। दोनों ही में उन्होंने समाजवाद या कम्युनिज्म का विरोध किया है। ओशो कहते हैं कि पूंजीवाद ठीक से विकसित हो तो समाजवाद उसका सहज परिणाम है। नौ महीने का गर्भ हो तो बच्चा सहज और चुपचाप पैदा हो जाता है। पूंजीवाद ठीक से विकसित न हो तो समाजवाद की बात सुसाइडल है, आत्मघाती है।

ओशो कहते हैं कि समाजवाद हो या साम्यवाद हो, सोशलिज्म हो या कम्युनिज्म हो, एक बात पक्की है कि व्यक्ति की हैसियत को मिटा देना है, व्यक्ति को पोंछ डालना है, व्यक्ति की स्वतंत्रता को समाप्त कर देना है, संपत्ति का व्यक्तिगत अधिकार छीन लेना है और देश की सारी जीवन-व्यवस्था राज्य के हाथ में केंद्रित कर देनी है। लेकिन हमारे जैसे मुल्क में, जहां कि राज्य निकम्मे से निकम्मा सिद्ध हो रहा है, वहां अगर हमने देश की सारी व्यवस्था राज्य के हाथ में सौंप दी, तो सिवाय देश के और गहरी गरीबी और गहरी बीमारी में गिरने के कोई

CamScanner

1:03 pm 65%
google.com/amp/s/m-hi
m-hindi.webdunia.com

**ईश्वर नहीं है :** ओशो कहते हैं कि ईश्वर है तो उसके साथ सभी तरह का पाखंड जुड़ा रहेगा- पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, अवतारवाद, पैगम्बर, पूजा-पाठ, धर्मांतरण, धर्मग्रंथ, मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि सभी तरह के पाखंड जुड़े रहेंगे। प्रॉफेट और धर्मग्रंथों के बगैर ईश्वर की कल्पना मुश्किल है।

ओशो ने ईश्वरवादी और ईश्वर-विरोधी दोनों ही विचारधाराओं का विरोध किया। ईश्वरवादी मंदिर, मस्जिद, चर्च, सिनेगॉग आदि जगहों पर जाकर ईश्वर से चूक गए और ईश्वर-विरोधी इनसे लड़कर चूक गया।

CamScanner

**धर्मों की कोई जरूरत नहीं :** ओशो कहते हैं कि 'सदियों से आदमी को विश्वास, सिद्धांत, मत बेचे गए हैं, जो कि एकदम मिथ्या हैं, झूठे हैं, जो केवल तुम्हारी महत्वाकांक्षाओं, तुम्हारे आलस्य का प्रमाण हैं। तुम करना कुछ चाहते नहीं, और पहुंचना स्वर्ग चाहते हो।'

धर्म की साख पर अधर्म का व्यापार:ओशो
सदियों से तुम्हें झूठे विश्वास बेचे गए हैं: ओशो

परंतु कोई पंडित-पुरोहित या तथाकथित धर्म नहीं चाहते कि तुम स्वयं तक पहुंचो, क्योंकि जैसे ही तुम स्वयं की खोज पर निकलते हो, तुम सभी तथाकथित धर्मों- हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के बंधनों से बाहर आ जाते हो। उस सभी के बाहर आ जाते हो, जो मूढ़तापूर्ण और निरर्थक हैं, क्योंकि तुमने स्वयं का सत्य पा लिया होता है।

धर्म तुम्हें भयभीत कर विश्वास करना सिखाता है ताकि तुम उनके ग्रंथों पर सवाल खड़े न करो। प्रॉफेटों पर सवाल खड़े न करो। सदियों से धर्मों ने यही किया है।

CamScanner

1:03 pm 66%
google.com/amp/s/m-hi

दिखाई पड़ने वाले चेहरे हैं। घर के भीतर के चेहरे बहुत आंसुओं से भरे हुए है। चौबीस घंटे कलह और संघर्ष में जीवन बीत रहा है। फिर इस कलह और संघर्ष के परिणाम भी होंगे ही।

**विवाह :** हमने सारे परिवार को विवाह के केंद्र पर खड़ा कर दिया है, प्रेम के केंद्र पर नहीं। हमने यह मान रखा है कि विवाह कर देने से दो व्यक्ति प्रेम की दुनिया में उतर जाएंगे। अद्भुत झूठी बात है, और पांच हजार वर्षों में भी हमको इसका ख्याल नहीं आ सका है। हम अद्भुत अंधे हैं। दो आदमियों के हाथ बांध देने से प्रेम के पैदा हो जाने की कोई जरूरत नहीं है। कोई अनिवार्यता नहीं है बल्कि सच्चाई यह है कि जो लोग बंधा हुआ अनुभव करते हैं, वे आपस में प्रेम कभी नहीं कर सकते।

प्रेम का जन्म होता है स्वतंत्रता में। प्रेम का जन्म होता है स्वतंत्रता की भूमि में- जहां कोई बंधन नहीं, कोई मजबूरी नहीं है। किंतु हम अविवाहित स्त्री या पुरुष के मन में युवक ओर युवती के मन में उस प्रेम की पहली किरण का गला घोंटकर हत्या कर देते हैं। फिर हम कहते हैं कि विवाह से प्रेम पैदा होना चाहिए।

**अगले पन्ने पर पांचवां विवादित विचार...**

**धर्मों की कोई जरूरत नहीं :** ओशो कहते हैं कि 'सदियों से आदमी को विश्वास, सिद्धांत, मत बेचे गए हैं, जो कि एकदम मिथ्या हैं, झूठे हैं, जो केवल तुम्हारी महत्वाकांक्षाओं, तुम्हारे आलस्य का प्रमाण हैं। तुम करना कुछ चाहते नहीं, और पहुंचना स्वर्ग चाहते हो।'

CamScanner

1:03 pm 66%
google.com/amp/s/m-hi
m-hindi.webdunia.com

खड़ा होता जाता है। स्वभावत: तब मुझे खयाल आता है कि मेरा कुछ शोषण हो रहा है। और मेरे पास कुछ भी नहीं था उसका शोषण हुआ।

**अगले पन्ने पर चौथा विवादित विचार...**

**परिवार की कोई जरूरत नहीं :** ओशो का सबसे विवादित विचार है परिवार की परंपरा को समाप्त कर कम्यून की अवधारणा को स्थापित करना। ओशो की नजर में जब परिवार की जरूरत नहीं तो विवाह गौण हो जाता है।

परिवार : ओशो कहते हैं कि एक-एक परिवार में कलह है। जिसको हम गृहस्थी कहते हैं, वह संघर्ष, कलह, द्वेष, ईर्ष्या और चौबीसों घंटे उपद्रव का अड्डा बनी हुई है। लेकिन न मालूम हम कैसे अंधे हैं कि देखने की कोशिश भी नहीं करते। बाहर जब हम निकलते हैं तो मुस्कराते हुए निकलते हैं। घर के सब आंसू पोंछकर बाहर जाते है- पत्नी भी हंसती हुई मालूम पड़ती है। पति भी हंसता हुआ मालूम पड़ता है। ये चेहरे झूठे हैं। ये दूसरों को दिखाई पड़ने वाले चेहरे हैं। घर के भीतर के चेहरे बहुत आंसुओं से भरे हुए है। चौबीस घंटे कलह और संघर्ष में जीवन बीत रहा है। फिर इस कलह और संघर्ष के परिणाम भी होंगे ही।

**विवाह :** हमने सारे परिवार को विवाह के केंद्र पर खड़ा कर दिया है, प्रेम के केंद्र पर नहीं। हमने यह मान रखा है कि विवाह कर देने से दो व्यक्ति प्रेम की दुनिया में उतर

CamScanner

1:02 pm 66%
google.com/amp/s/m-hi

**जोरबा टू बुद्ध :** ओशो कहते हैं कि 'जोरबा' का अर्थ होता है- एक भोग-विलास में पूरी तरह से डूबा हुआ व्यक्ति और 'बुद्धा' का अर्थ निर्वाण पाया हुआ। जोरबा केवल शुरुआत है। यदि तुम अपने जोरबा को पूर्णरूपेण अभिव्यक्त होने की स्वीकृति देते हो, तो तुम्हें कुछ बेहतर, कुछ उच्चतर, कुछ महत्तर सोचने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। वह मात्र वैचारिक चिंतन से पैदा नहीं हो सकता, वह तुम्हारे अनुभव से जन्मेगा, क्योंकि वे छोटे-छोटे, क्षुद्र अनुभव उकताने वाले हो जाएंगे। गौतम बुद्ध स्वयं इसीलिए बुद्ध हो पाए, क्योंकि वे जोरबा की जिंदगी खूब अच्छी तरह जी चुके थे। पूरब ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि 29 वर्षों तक बुद्ध इस तरह जीए, जैसा कोई जोरबा कभी न जीया होगा।

ओशो कहते हैं कि दरिद्र को 'नारायण' कहने से ही इस देश में दरिद्रता फैल गई है। यदि आप दरिद्रता और गरीबी को सम्मान देंगे तो आप कभी भी उससे मुक्त नहीं हो सकते। मेरा संन्यासी ऐसा होना चाहिए कि वह पहले धन पर ध्यान दे फिर ध्यान की चिंता करे।

ओशो पर आरोप हैं कि वे सिर्फ अमीरों के गुरु हैं। उन्होंने पूंजीवाद को बढ़ावा दिया। उनके पास लगभग 100 रॉल्स रॉयस कारें थीं। वे कभी गरीबों और गरीबी का पक्ष नहीं लेते थे। ओशो कहते हैं कि दुखवादी नहीं, सुखवादी बनो। सुखी रहने के सूत्र ढूंढो तो समृद्धि स्वत: ही आने लगेगी।

ओशो कहते हैं कि किसी गांव में दस हजार गरीब हो

CamScanner

1:02 pm 66%
google.com/amp/s/m-hi
m-hindi.webdunia.com

लोग संसार से भागने की अथवा संसार को त्यागने की हिम्मत न जुटा सके, मोह में बंधे रहे, उन्हें त्याग का यह कृत्य बहुत महान लगने लगा।

'जीवन को आत्म-अज्ञान के बिंदु से देखना संसार है; आत्म-ज्ञान के बिंदु से देखना संन्यास है। इसलिए जब कोई कहता है कि मैंने संन्यास लिया है, तो मुझे बात बड़ी असत्य मालूम होती है। यह लिया हुआ संन्यास ही संसार के विरोध की भ्रांति पैदा कर देता है। संन्यास भी क्या लिया जा सकता है? क्या कोई कहेगा कि ज्ञान मैंने लिया है? लिया हुआ ज्ञान भी क्या कोई ज्ञान होगा?

ऐसा ही लिया हुआ संन्यास भी, संन्यास नहीं होता है। सत्य ओढ़े नहीं जाते हैं। उन्हें तुम्हारे भीतर जगाना होता है। संन्यास का जन्म होता है। वह समझ से आता है। उस समझ से हम परिवर्तित होते जाते हैं। जैसे-जैसे हमारी समझ बदलती है, हमारी दृष्टि बदलती है और अनायास ही आचरण भी बदल जाता है। संसार जहां का तहां होता है, पर हमारे भीतर संन्यास का जन्म होता जाता है।

संन्यास का अर्थ है : यह बोध कि मैं शरीर ही नहीं हूं, आत्मा हूं। इस बोध के साथ ही भीतर आसक्ति और अज्ञान नहीं रह जाता है। संसार बाहर था, अब भी वह बाहर होगा, पर भीतर उसके प्रति राग-शून्यता होगी, या यूं कहें कि संसार अब भीतर नहीं होगा।' -ओशो, साधना पथ, प्रवचन 3

CamScanner

**नव संन्यास :** वर्ष 1970 में मनाली के एक ध्यान शिविर में, 'श्रीकृष्ण मेरी दृष्टि में' प्रवचनमाला के साथ-साथ ओशो के 'नव-संन्यास' आंदोलन का सूत्रपात हुआ। इस दौरान उन्होंने दुनियाभर के धर्मों में प्रचलित संन्यास से भिन्न एक नए तरह का संन्यासी होने का कॉन्सेप्ट रखा।

ओशो ने एक हंसते-खेलते अभिनव संन्यास की प्रस्तावना की। इस संन्यास में कोई त्याग और पलायन नहीं है, बल्कि ध्यान द्वारा स्वयं को रूपांतरित करके जीवन को और सुंदर व सृजनात्मक बनाने की भावना है। संसार में रहते हुए संसार का न होना, कमलवत जीना, अतीत की स्मृतियों और भविष्य की कल्पनाओं से निर्भय होकर क्षण-क्षण होश में जीना ओशो का नव-संन्यास है।

इस नव-संन्यास में संन्यासी को कोई भगवा या गेरुए वस्त्र पहनने की जरूरत नहीं। माला और नियमों का पालन करने की जरूरत नहीं। पूजा-पाठ, ईश्वर-प्रार्थना आदि करने की जरूरत नहीं। बस प्रतिदिन ध्यान करने की शर्त है। ओशो की नजर में संन्यासी वह है, जो अपने घर-संसार, पत्नी और बच्चों के साथ रहकर पारिवारिक, सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए ध्यान और सत्संग का जीवन जिए। उनकी दृष्टि में यह एक संन्यास है, जो इस देश में हजारों वर्षों से प्रचलित है।

ओशो कहते हैं कि आपने घर-परिवार छोड़ दिया, भगवे वस्त्र पहन लिए, चल पड़े जंगल की ओर। वह संन्यास

CamScanner

1:02 pm 66%
google.com/amp/s/m-hi

ओशो कहते हैं, 'गांधी गीता को माता कहते हैं, लेकिन गीता को आत्मसात नहीं कर सके, क्योंकि गांधी की अहिंसा युद्ध की संभावनाओं को कहां रखेगी? तो गांधी उपाय खोजते हैं, वे कहते हैं कि यह जो युद्ध है, यह सिर्फ रूपक है, यह कभी हुआ नहीं।'

कृष्ण की बात गांधी की पकड़ में कैसे आ सकती है? क्योंकि कृष्ण उसे समझाते हैं कि तू लड़। और लड़ने के लिए जो-जो तर्क देते हैं, वह ऐसा अनूठा है, जो कि इसके पहले कभी भी नहीं दिया गया था। परम अहिंसक ही दे सकता है, उस तर्क को। ओशो कहते हैं, मेरी दृष्टि में कृष्ण अहिंसक हैं और गांधी हिंसक। दो तरह के लोग होते हैं, एक वे जो दूसरों के साथ हिंसा करें और दूसरे वे जो खुद के साथ हिंसा करें। गांधी दूसरी किस्म के व्यक्ति थे। ओशो की एक किताब है : 'अस्वीकृति में उठा हाथ'। यह किताब पूर्णत: गांधी पर केंद्रित है।

ओशो कहते हैं कि महात्मा गांधी सोचते थे कि यदि चरखे के बाद मनुष्य और उसकी बुद्धि द्वारा विकसित सारे विज्ञान और टेक्नोलॉजी को समुद्र में डुबो दिया जाए, तब सारी समस्याएं हल हो जाएंगी। और मजेदार बात इस देश ने उनका विश्वास कर लिया! और न केवल इस देश ने बल्कि दुनिया में लाखों लोगों ने उनका विश्वास कर लिया कि चरखा सारी समस्याओं का समाधान कर देगा।

**अगले पन्ने पर दूसरा विचार...**

CamScanner

अब पन्तजी की उत्सुकता बहुत बढ़ गया था।

उन्होंने कहा : और अगर मात्र पांच की सूची बनानी पड़े?

ओशो ने यह सूची उन्हें दी : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, गोरख।

कारण बताया कि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। गोरख मूल हैं। गोरख को नहीं छोड़ा जा सकता। और शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। कृष्ण के ही एक अंग की व्याख्या हैं.

पन्त जी ने कहा : अगर चार ही रखने हों तो?

ओशो ने उन्हें सूची दी. कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, गोरख।

अब पन्त जी कहने लगे : बस एक बार और...। आप तीन व्यक्ति चुनें।

ओशो ने कहा : अब असंभव है। अब इन चार में से मैं किसी को भी छोड़ न सकूंगा। ऐसे तो सब एक ही है, लेकिन उस एक की चार भुजाएं हैं। अब इनमें से कुछ छोड़ना तो हाथ काटने जैसा होगा। यह मैं न कर सकूंगा।

पंत ने प्रश्न पूछा कि आप महावीर को छोड़ सके, गोरख को नहीं?

गोरख को नहीं छोड़ सकता हूं क्योंकि गोरख से इस देश में एक नया ही सूत्रपात हुआ, महावीर से कोई नया सूत्रपात नहीं हुआ। उनके पहले जो तेईस जैन तीर्थंकर कह चुके थे, उसकी ही पुनरुक्ति हैं। वे किसी यात्रा का प्रारंभ नहीं हैं

गोरख एक शृंखला का आरंभ हैं उसकी पहली कड़ी हैं।
उनसे एक नये प्रकार के धर्म का जन्म हुआ, आविर्भाव हुआ।

गोरख के बिना न तो कबीर हो सकते हैं, न नानक हो सकते हैं, न दादू न वाजिद, न फरीद, न मीरा—गोरख के बिना ये कोई भी न हो सकेंगे।

इन सब के मौलिक आधार गोरख में हैं...अन्य कोई नींव के पत्थर से ज्यादा मूल्यवान नहीं हो सकते। और नींव के पत्थर किसी को दिखाई भी नहीं पड़ते, मगर उन्हीं पत्थरों पर टिकी होती है सारी व्यवस्था, सारी भित्तिया, सारे शिखर...।

नोट: संत गोरखनाथ भगवान शिव के अवतार हैं। चूँकि नाथपंथ के नियम बहुत कडे हैं, इनको निभाना सबके बस की बात नहीं है। सत्य के मार्ग पर चलना बहुत कठिन होता है। इसी नाथपंथ के हैं MYogiAdityanath

- शनीस अघोर

CamScanner

राष्ट्रदेव

महाकवि सुमित्रानंदन पंत ने एक बार ओशो से पूछा कि भारत के धर्माकाश में वे कौन बारह लोग हैं—ओशो की दृष्टि में—जो सबसे चमकते हुए सितारे हैं?

ओशो ने उन्हें यह सूची दी : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, नागार्जुन, शंकर, गोरख, कबीर, नानक, मीरा, रामकृष्ण, कृष्णमूर्ति।

सूची बनानी आसान भी नहीं है, क्योंकि भारत का आकाश बड़े नक्षत्रों से भरा है! किसे छोड़ो, किसे गिनो.

उन्होंने फिर ओशो से पूछा : तो फिर ऐसा करें, इसमे से केवल सात नाम मुझे दें।

अब बात और कठिन हो गयी थी।

ओशो ने उन्हें यह सात नाम दिये : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, शंकर, गोरख, कबीर।

उन्होंने कहा : आपने जो पांच छोड़े, अब किस आधार पर छोड़े हैं?

ओशो ने कहा : नागार्जुन बुद्ध में समाहित हैं। जो बुद्ध में बीज—रूप था, उसी को नागार्जुन ने प्रगट किया है। नागार्जुन छोड़े जा सकते हैं। और जब बचाने की बात हो तो वृक्ष छोड़े जा सकते हैं, बीज नहीं छोड़े जा सकते। क्योंकि बीजों से फिर वृक्ष हो जायेंगे, नये वृक्ष हो जायेंगे।
जहा बुद्ध पैदा होंगे वहा सैकड़ों नागार्जुन पैदा हो जायेंगे, लेकिन कोई नागार्जुन बुद्ध को पैदा नहीं कर सकता। ऐसे ही कृष्णमूर्ति भी बुद्ध में समा जाते हैं।

इसी तरह उन्होंने रामकृष्ण, मीरा, नानक, कबीर को छोड़ने के कारण बताये.

अब पन्तजी की उत्सुकता बहुत बढ़ गयी थी।

उन्होंने कहा : और अगर मात्र पांच की सूची बनानी पड़े?

ओशो ने यह सूची उन्हें दी : कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, महावीर, गोरख।

कारण बताया कि कबीर को गोरख में लीन किया जा सकता है। गोरख मूल हैं। गोरख को नहीं छोड़ा जा सकता। और शंकर तो कृष्ण में सरलता से लीन हो जाते हैं। कृष्ण के ही एक अंग की व्याख्या हैं.

पन्त जी ने कहा : अगर चार ही रखने हों तो?

ओशो ने उन्हें सूची दी. कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध, गोरख।

CamScanner

ओशो कहते हैं- यदि शिष्य तैयार हो तो मृत गुरु भी जीवित हो सकता है। यदि शिष्य तैयार नहीं है तो जीवित गुरु भी कुछ नहीं कर सकता। यह सब शिष्य पर निर्भर करता है। अहोभाव

CamScanner

7:38 pm 54%

दरवाजा था। तो उसने देखा – शायद वह बगीचे में गई है। हां, वह जरूर गई होगी क्योंकि रास्ते में पैरों के निशान थे। इसलिए उसने पदचिन्हों का अनुसरण किया। वह लगभग एक मील चला। बगीचा समाप्त हो गया और अब वह एक सुंदर नदी के किनारे खड़ा था – लेकिन वह युवती नहीं थी। पैरों के निशान भी गायब हो गए। वहां युवती के केवल दो जूते, सुनहरे जूते थे।

अब वह हैरान था। क्या हुआ है? उसने पीछे मुड़कर देखा – न कोई बगीचा था, न घर, न माता-पिता, कुछ भी नहीं। सब गायब हो गया था। उसने फिर देखा। जूते चले गए, नदी चली गई। अब वहां सिर्फ खालीपन था – और एक गूंजती हुई बड़ी हँसी थी।

और वह भी हँसा। उसका विवाह हो गया।

यह एक सुंदर बौद्ध कथा है। उसने शून्य से विवाह किया। यह वह विवाह है जिसकी खोज सभी महान संत करते रहे हैं। यही वह क्षण है जब आप मसीह की दुल्हन या कृष्ण की गोपी बन जाते हैं।

लेकिन सब कुछ मिट जाता है – रास्ता, बाग, घर, स्त्री, यहां तक कि पैरों के निशान भी। सब कुछ गायब हो जाता है। बस एक हंसी है, एक हंसी है जो ब्रह्मांड के पेट से ही पैदा होती है।

लेकिन जब यह पहली बार होता है, यदि आपको धीरे-धीरे आगे नहीं बढ़ाया गया है, तो आप पागल हो जाएंगे।

यह बौद्ध कथा कहती है कि उनका नेतृत्व धीरे-धीरे किया गया। वह युवती गुरु की प्रतीक है। उसने उसे धीरे-धीरे आगे बढ़ाया।
सबसे पहले सूत्र का पाठ करें; दूसरा, बौद्धिक रूप से समझें; तीसरा, एक संकेत दें कि आप इसे जी चुके हैं। ये तीन चरण हैं। फिर वह उसे शून्य में ले गई।

गुरु तुम्हें धीरे-धीरे ले जाता है,
वह तुम्हें धीरे-धीरे तैयार करता है।

CamScanner

7:36 pm 54%

**Anamcara Rames**
5d ·

तीन महीने आधा घंटा रोज आंख बंद करके यही केवल सोचें कि मेरी सीमा कहां है?

आज सोचेंगे तो आपको शरीर ही अपनी सीमा मालूम पड़ेगी। लेकिन पंद्रह दिन से ज्यादा नहीं लगेगा कि आपको एक अदभुत अनुभव होना शुरू हो जाएगा। कभी शरीर बहुत बड़ा होता हुआ मालूम पड़ेगा, कभी बहुत छोटा होता हुआ मालूम पड़ेगा, सिर्फ पंद्रह दिन के भीतर। कभी लगेगा, शरीर पहाड़ जैसा हो गया और सीमा बड़ी हो गई। और कभी लगेगा, शरीर चींटी जैसा हो गया, सीमा बड़ी छोटी हो गई। घबड़ा मत जाना, क्योंकि बहुत घबड़ाहट का अनुभव होता है।

जब पहली दफा सीमा का भाव टूटता है, तो फ्लक्चुएशन होता है। कभी लगता है, बहुत बड़ा हो गया; कभी लगता है, बिलकुल छोटा हो गया। अगर आप पीछे पड़े ही रहे, तो एक महीना पूरा होते-होते अचानक कभी-कभी ऐसे क्षण आ जाएंगे, जब लगेगा कि शरीर है ही नहीं—न छोटा, न बड़ा। और तब आपको पहली दफा पता चलेगा कि मेरी कोई सीमा नहीं। मैं हूं, और सीमा कोई भी नहीं है। अपने ही भीतर अगर तीन महीने इस प्रयोग को करें, तो आप असीम की और निराकार की छोटी-सी झलक को पा लेंगे।

और जिस दिन आप अपने भीतर जान लेंगे, उस दिन आप दूसरे के भीतर भी जान लेंगे। क्योंकि हम दूसरे के भीतर जो भी जानते हैं, वह अनुमान है, इनफरेंस है। ज्ञान तो अपने भीतर होता है, दूसरे की तरफ तो अनुमान होता है।

🏹🏹
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.87/30
कामना और प्रार्थना
anamcaraRames
OshO

CamScanner

माया कोहरे जैसी
होती है।
उसकी अपनी कोई
हस्ती नहीं होती।
पर सत्य को ढ़कने
का काम वो बख़ूबी
करती है।

CamScanner

और तभी एक बूढ़े आदमी ने आकर राजा को कहा, मैं यह जूता आपके लिए बना लाया हूं, इसे पहन लें, कांटा फिर आपको न गड़ेगा और हमारा जीवन भी बच जाएगा।

राजा हैरान हुआ। इतना सरल उपाय भी हो सकता था क्या? पैर ढंके देखकर वह चकित हो गया। क्या कोई इतना बुद्धिमान मनुष्य भी था जिसने इतनी सरलता से बात हल कर दी, जिसे लाखों विद्वान हल न कर सके! करोड़ों रुपया खर्च हुआ, हजारों लोग परेशान हुए--इतनी सरल बात थी।

और सारे पंडित, सारे विद्वान क्रोध औरर् ईर्ष्या से भर गए--यह बूढ़ा आदमी खतरनाक था। इस सब के प्रति, इस बूढ़े आदमी के प्रति, उन सबके मन में तीव्र रोष भर गया। उन्होंने कहा, जरूर इस आदमी को शैतान ने ही सहायता दी होगी। क्योंकि हम इतने विचारशील लोग नहीं खोज पाए जो बात, इसने खोज ली है! जरूर इसमें कोई खतरा है।

राजा को उन्होंने समझाया। यह जूता खतरनाक सिद्ध होगा, शैतान का हाथ इसमें होना चाहिए। क्योंकि हमारी सारी बुद्धिमत्ता जो नहीं खोज सकी, यह बूढ़ा आदमी कैसे खोज लेगा? राजा को उन्होंने भड़काया, समझाया। राजा भयभीत हो गया। उस बूढ़े आदमी को सूली दे दी गई। वह पहला समझदार आदमी सूली पर चढ़ा। और उसके बाद जितने लोगों ने यह सलाह दी है कि कृपा करें, पृथ्वी को परेशान न करें, अपने पैर ढंक लें, उन सभी को सूली दी जाती रही है।

इतनी सीधी युक्ति है, लेकिन इस जमीन पर दस-पांच ही ऐसे लोग हुए हैं, जिन्होंने अपने पैर ढंके हों। अधिक लोग पृथ्वी को ही बदलने की कोशिश करते रहे हैं। और ये अधिक लोग, जितनी इन्होंने कोशिश की है, जमीन को ढंक देने की, धूल-कांटों से अलग कर देने की, उतनी ही जमीन मुश्किल में पड़ती चली गई। इन सभी सुधारकों के कारण ही मनुष्य जाति इतनी पीड़ाओं में उलझ गई है कि आज कोई छुटकारा भी दिखाई नहीं पड़ता है।

ओशो; असंभव क्रांति

CamScanner

6:51 pm 55%

ओशो का हिन्दी साहित्य

**Rahul Kumar Ojha**
Moderator · 13h

तीन बातों की मैंने चर्चा की—

सम्यक आहार की, सम्यक व्यायाम की, सम्यक निद्रा की।

वे तीनों ही शरीर से संबंधित हैं। शरीर एक भूमिका है साधक की लेकिन अकेली भूमिका नहीं है। उसके और भीतर प्रवेश करें, तो उसका एक भाव जगत भी है। और भीतर प्रवेश करें, उसका एक विचार जगत भी है।

शरीर के तल पर तीन बातें कहीं ऐसी ही तीन बातें भाव के तल पर और ऐसी ही तीन बातें विचार के तल पर और आपको मुझे कहनी हैं। अभी रात्रि में, मैं भाव के तल पर कौन सी तीन बातें हैं जो भूमिका बनेंगी उनकी थोड़ी चर्चा कर लूं और फिर ध्यान के लिए हम बैठेंगे।

सबसे पहले तो हमारे बाहर जो जगत है उसके प्रति एक भाव। उसके बाद हमारे कर्मों का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। और सबसे अंत में हमारी संवेदनाओं का जो जगत है उसके प्रति एक भाव। हमारे बाहर तीन जगत हमें घेरे हुए हैं। एक तो वस्तुओं और व्यक्तियों का जगत है, जो हमसे चारों तरफ फैला हुआ है। उसके बाद हम जो कर्म करते हैं उनकी एक पर्त है, उनका एक जगत है, वह हमें घेरे हुए है। उसके बाद जो सुख-दुख की संवेदनाएं हमें छूती हैं, स्पर्श करती हैं, उनका एक जगत है, वह हमें अंत में घेरे हुए है। ऐसी तीन पर्तें हमें घेरे हुए हैं। इन तीनों पर्तों के लिए तीन भावनाएं ध्यान के लिए सहयोगी हैं।...

- ओशो,
समाधि कमल, प्रवचन - 5

CamScanner

6:51 pm 55%

ओशो का हिन्दी साहित्य

**Chetna Kanchan Bhagat**

Top contributor · 10h ·

जो आप दुनिया को देंगे! वही आप यहाँ से ले जा सकेंगे!!
◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

आनंद की सुगंध लुटाते हुए सदा
सबके दिलो में प्रेम का रस घोलते हुए।"
यही तुम भी करो।
घोलो प्रेम जितना घोल सको जीवन में।
दिन तो चार मिले है;
आज हो कल नहीं हो जाओगे।
जितना मीठा कर सको,
अस्तित्व को कर जाओ।
जितना माधुर्य भर सको,
भर जाओ।
यहाँ से कुछ ले जा तो नहीं सकते,
इसलिए ले जाने की,
इकठ्ठा करने की फिक्र मत करो।
हां, कुछ दे जा सकते हो।
और दे जाओ तो कुछ ले जाने में समर्थ हो गए।
तुम जो दे जाओगे वही ले जा सकोगे।

ओशो

CamScanner

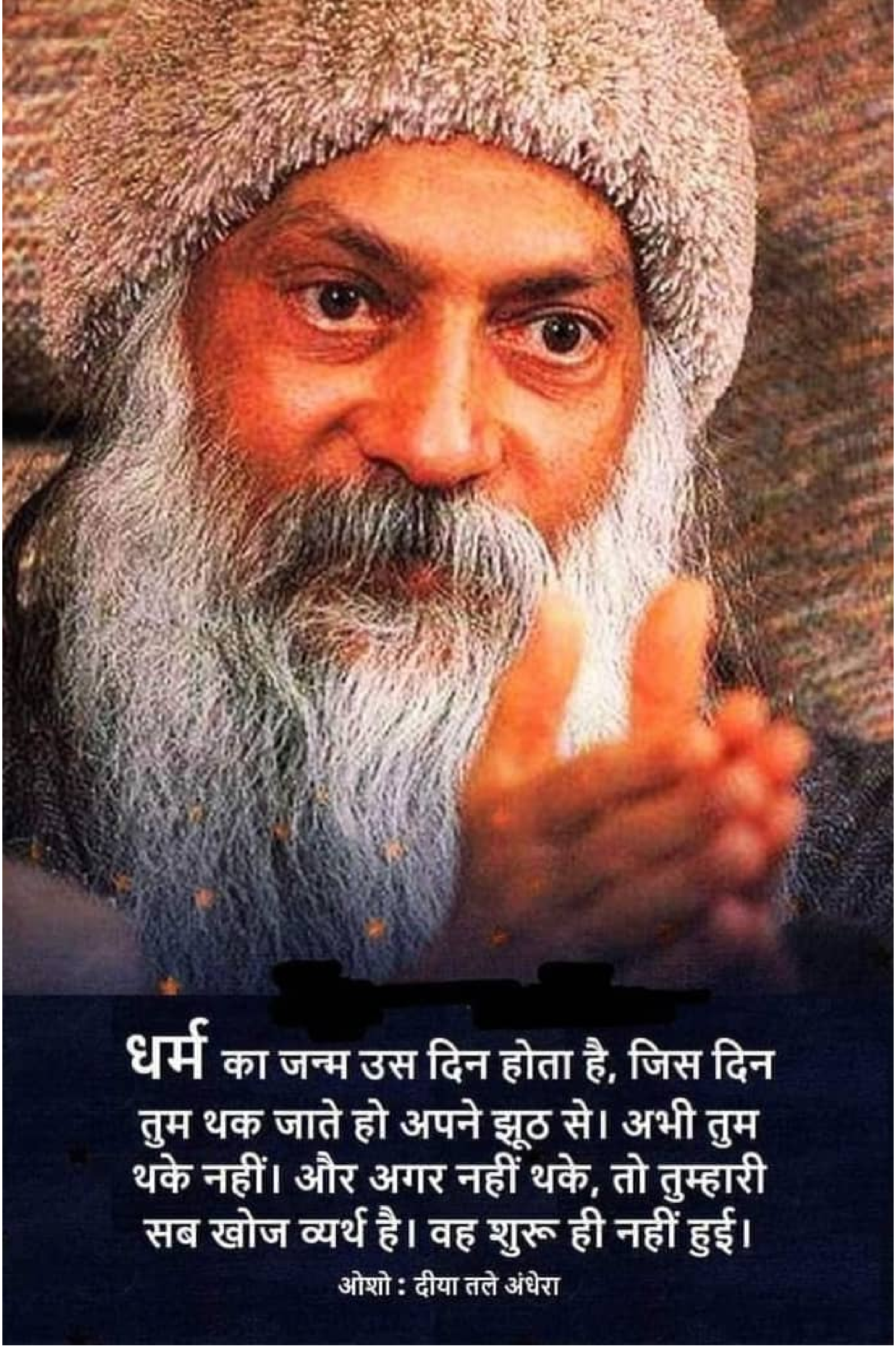
[redacted]
धर्म का जन्म उस दिन होता है, जिस दिन
तुम थक जाते हो अपने झूठ से। अभी तुम
थके नहीं। और अगर नहीं थके, तो तुम्हारी
सब खोज व्यर्थ है। वह शुरू ही नहीं हुई।
ओशो : दीया तले अंधेरा

CamScanner

OSHO

Contact Us

हिन्दी (Hindi)

Welcome Rajesh | My Account | Logout

MENU

OSHO हिंदी लाइब्रेरी | OSHO English Library

पुस्तके | लाइब्रेरी खोज | पसंदीदा | शॉप

**OSHO ऑनलाइन लाइब्रेरी में आपका स्वागत है। 200 से अधि ओशो पुस्तकों को पढ़ने और खोजने का आनंद लें।**

सभी अ आ ई उ ए क ग च ज झ
ढ त द ध न प फ ब भ म य
र ल व श स ह

**सॉर्ट करें: अ से ह** **सॉर्ट करें: बोले गए क्रम से: प्रारंभिक / नवीनतम**

**शीर्षक**

**संतो, मगन भया मन मेरा**

रज्जब-वाणी पर प्रश्नोत्तर सहित पुणे में हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं बीस OSHO Talks

CamScanner

**सत्य की प्यास**

'सत्य की खोज' पर जूनागढ़ में प्रश्नोत्तर सहित हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं पांच OSHO Talks

**सपना यह संसार**

पलटू-वाणी पर प्रश्नोत्तर सहित पुणे में हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं बीस OSHO Talks

**सबै सयाने एक मत**

दादू-वाणी पर प्रश्नोत्तर सहित पुणे में हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं दस OSHO Talks

**संभावनाओं की आहट**

ध्यान साधना शिविर, माथेरान में ध्यान-प्रयोगों एवं प्रश्नोत्तर सहित हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं सात OSHO Talks

**संभोग से समाधि की ओर**

जीवन-ऊर्जा रूपांतरण के विज्ञान पर मुंबई में हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं पांच OSHO Talks

**समाधि कमल**

ध्यान साधना शिविर, माथेरान में ध्यान-प्रयोगों एवं प्रश्नोत्तर सहित दी गईं आठ OSHO Talks का संग्रह

**समाधि के तीन चरण**

ध्यान साधना पर अहमदनगर में हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं चार OSHO Talks

**समाधि के द्वार पर**

ध्यान साधना पर पुणे में ध्यान-प्रयोगों एवं प्रश्नोत्तर सहित हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं छह OSHO Talks

**समाधि के सप्त द्वार**

ध्यान साधना शिविर, आनंदशिला अंबरनाथ में मैडम ब्लावट्स्की की पुस्तक 'सेवन पोर्टल्स ऑफ समाधि' पर हुई सीरीज के अंतर्गत दी गईं सत्रह OSHO

CamScanner

9:45 pm 43%

सीरीज के अंतर्गत दी गई आठ OSHO Talks

---

**सांच सांच सो सांच**

प्रश्नोत्तर सीरीज के अंतर्गत पुणे में दी गई ग्यारह OSHO Talks

---

**साधना-पथ**

ध्यान साधना शिविर, मुछाला महावीर में ध्यान-प्रयोगों एवं प्रश्नोत्तर सहित हुई सीरीज के अंतर्गत दी गई चौदह OSHO Talks

---

**साधना-सूत्र**

ध्यान साधना शिविर, माउंट आबू में मैबल कॉलिन्स की पुस्तक 'लाइट आन दि पाथ' पर हुई सीरीज के अंतर्गत दी गई सत्रह OSHO Talks

---

**साहेब मिल साहेब भये**

प्रश्नोत्तर सीरीज के अंतर्गत पुणे में दी गई दस OSHO Talks

---



CamScanner

The ***Lotus Sūtra*** (Sanskrit: *Saddharma Puṇḍarīka Sūtram*, Sūtra on the White Lotus of the True Dharma, Chinese: 妙法蓮華經)[1] is one of the most influential and venerated Buddhist Mahāyāna sūtras. It is the main scripture on which the Tiantai, Tendai, Cheontae, and Nichiren schools of Buddhism were established. It is also influential for other East Asian Buddhist schools, such as Zen. According to the British Buddhologist Paul Williams, "For many Buddhists in East Asia since early times, the *Lotus Sūtra* contains the final teaching of Shakyamuni Buddha—complete and sufficient for salvation."[2] The American Buddhologist Donald S. Lopez Jr. writes that the *Lotus Sūtra* "is arguably the most famous of all Buddhist texts," presenting "a radical re-vision of both the Buddhist path and of the person of the Buddha."[3]

CamScanner

9:00 pm 49%

This is a beautiful Buddhist story. He got married to emptiness, got married to nothingness. This is the marriage for which all the great saints have been searching. This is the moment when you become a bride of Christ or a *gopi* of Krishna.

But everything disappears – the path, the garden, the house, the woman, even the footprints. Everything disappears. There is just a laughter, a laughter that arises from the very belly of the universe.

But when it happens for the first time, if you have not been led slowly, slowly, you will go mad.

This Buddhist story says that he was led slowly, slowly. The woman was the Master. The woman is symbolic of the Master. She led him slowly, slowly. First, recite the sutra; second, understand intellectually; third, give a sign that you have lived it. These are the three stages. Then she led him into nothingness.

The Master leads you slowly, slowly; makes you by and by ready.

Osho, *Tao: The Pathless Path – Talks on extracts from 'The Book of Lieh Tzu'*, Vol 2, Ch 9 (excerpt)

*Series compiled by Shanti*

CamScanner

और वह भी हंसा. उसका विवाह हो गया।

यह एक सुंदर बौद्ध कहानी है. उन्होंने शून्यता से विवाह कर लिया, शून्यता से विवाह कर लिया। यह वह विवाह है जिसकी खोज सभी महान संत कर रहे हैं। यही वह क्षण है जब आप ईसा मसीह की दुल्हन या कृष्ण की *गोपी बन जाती हैं।*

लेकिन सब कुछ गायब हो जाता है - रास्ता, बगीचा, घर, महिला, यहाँ तक कि पैरों के निशान भी। सब कुछ गायब हो जाता है. बस एक हँसी है, एक हँसी जो ब्रह्माण्ड के गर्भ से उठती है।

लेकिन जब यह पहली बार होता है, यदि आपको धीरे-धीरे, धीरे-धीरे आगे नहीं बढ़ाया गया है, तो आप पागल हो जाएंगे।

यह बौद्ध कहानी कहती है कि उनका नेतृत्व धीरे-धीरे, धीरे-धीरे किया गया। महिला मास्टर थी. स्त्री गुरु का प्रतीक है। वह उसे धीरे-धीरे, धीरे-धीरे ले गई। सबसे पहले, सूत्र का पाठ करें; दूसरा, बौद्धिक रूप से समझें; तीसरा, एक संकेत दें कि आपने इसे जी लिया है। ये तीन चरण हैं. फिर वह उसे शून्यता की ओर ले गई।

गुरु तुम्हें धीरे-धीरे, धीरे-धीरे ले जाता है; तुम्हें धीरे-धीरे तैयार करता है।

ओशो , *ताओ: द पाथलेस पाथ* - '*द बुक ऑफ लीह त्ज़ु*', खंड 2, अध्याय 9 (अंश) से उद्धरणों पर बातचीत

*शांति इमेज द्वारा संकलित श्रृंखला*

*: लोटस सूत्र हैंड्सक्रॉल, कामाकुरा काल, सी।* 1257

8:59 pm 49%

# कमल सूत्र

मास्टर द्वारा बताई गई 1001 कहानियाँ

3 अक्टूबर 2017

*"सबसे पहले, सूत्र का पाठ करें; दूसरा, बौद्धिक रूप से समझें; तीसरा, एक संकेत दें कि आपने इसे जी लिया है। ओशो कहते हैं, ये तीन चरण हैं। शांति द्वारा संकलित हमारी शृंखला 1001 कहानियाँ से।*

चीन में एक खूबसूरत बौद्ध कहानी है.

> किसी नगर में अचानक एक अत्यंत सुन्दर युवती आ पहुँची। कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ से आयी है; उसका ठिकाना पूरी तरह से अज्ञात था। लेकिन वह इतनी सुंदर, इतनी मनमोहक सुंदर थी कि किसी ने सोचा भी नहीं कि वह कहां से आई है। लोग इकट्ठे हो गये, सारा नगर इकट्ठा हो गया--और सभी युवक, लगभग तीन सौ युवक, उस स्त्री से विवाह करना चाहते थे।

> स्त्री ने कहा, 'देखो, मैं एक हूं और तुम तीन सौ हो। मेरी शादी

CamScanner

8:57 pm 49%

Quora ऐप में खोलें

ओशो का एक शिष्य · 5 अग॰

*माउंट आबू में ध्यान शिविर के दौरान मेबिल कालिन्स की छोटी सी पुस्तिका 'लाइट ऑन दि पाथ' पर सदगुरु ओशो ने 17 प्रवचन दिए हैं।* ***किताब को शीर्षक दिया है--साधना सूत्र।***

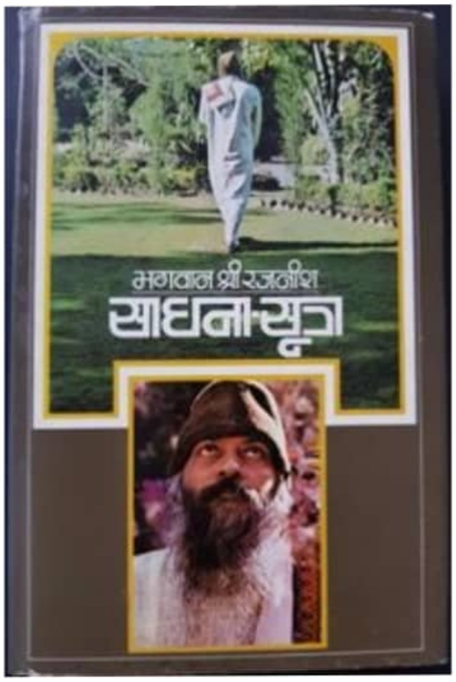


**इसमें एक से एक अनूठे सूत्र हैं। जैसे: अपनी अंतरात्मा का पूर्णरूप से सम्मान करो। तुम्हारे हृदय के द्वारा वह प्रकाश प्राप्त होता है, जो जीवन को आलोकित कर सकता है।** ज्यों-ज्यों तुम उसका निरीक्षण करते जाओगे, प्रकाश स्थिर गति से बढ़ता जाएगा। उस धीमे प्रकाश पर अपनी दृष्टि रखो। इस आंतरिक प्रकाश के रहस्य में डूबने के लिए आपका स्वागत है। ओशो फ्रेगरेंस के शिविर में भाग लेने हेतु संपर्क कीजिए: 9890341020 अप्राप्य को प्राप्त करने हेतु, अदृश्य का दर्शन करने के लिए सप्रेम आमंत्रण।

**मेबिल कालिन्स कहती है--तुम्हारे भीतर समस्त संसार का प्रकाश है, वही प्रकाश जो साधना-पथ को प्रकाशित कर सकता है।** यदि तुम उसे अपने भीतर नहीं देख सकते, तो उसे कहीं और ढूंढ़ना व्यर्थ है। वह प्रकाश अप्राप्य है। यद्यपि तुम प्रकाश में प्रवेश करोगे, किंतु ज्योति को स्पर्श कदापि न कर सकोगे।

अपवोट करें · 11 1

CamScanner

**इसमें एक से एक अनूठे सूत्र हैं। जैसे: अपनी अंतरात्मा का पूर्णरूप से सम्मान करो। तुम्हारे हृदय के द्वारा वह प्रकाश प्राप्त होता है, जो जीवन को आलोकित कर सकता है।** ज्यों-ज्यों तुम उसका निरीक्षण करते जाओगे, प्रकाश स्थिर गति से बढ़ता जाएगा। उस धीमे प्रकाश पर अपनी दृष्टि रखो। इस आंतरिक प्रकाश के रहस्य में डूबने के लिए आपका स्वागत है। ओशो फ्रेगरेंस के शिविर में भाग लेने हेतु संपर्क कीजिए: 9890341020 अप्राप्य को प्राप्त करने हेतु, अदृश्य का दर्शन करने के लिए सप्रेम आमंत्रण।

**मेबिल कालिन्स कहती है--तुम्हारे भीतर समस्त संसार का प्रकाश है, वही प्रकाश जो साधना-पथ को प्रकाशित कर सकता है।** यदि तुम उसे अपने भीतर नहीं देख सकते, तो उसे कहीं और ढूंढ़ना व्यर्थ है। वह प्रकाश अप्राप्य है। यद्यपि तुम प्रकाश में प्रवेश करोगे, किंतु ज्योति को स्पर्श कदापि न कर सकोगे।

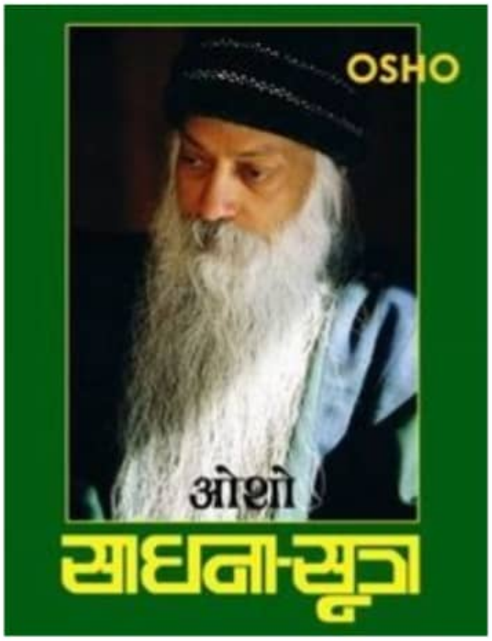


***किताब और आडियो हेतु निशुल्क लिंक--***

https://www.oshofragrance.org/db/books/files/Osho_Rajneesh_Sadhana-Sutra.pdf

अपवोट करें · 11 1

विज्ञान और अध्यात्म दोनों को आश्चर्य में डाल देने वाली पुस्तक का नाम **द हिडेन मैसेज इन वाटर** है। इसका अर्थ है जल के छिपे संदेश।

इस पुस्तक के लेखक **डा. इमोटो** है जो जपान के रहने वाले है।

# उन्होंने अलग-अलग परखनालियों में जल की बराबर मात्रा ली,, फ़िर उनके सामने अलग-अलग अच्छे और बुरे शब्द कहा..

# फ़िर उस जल जमाकर उसके आंतरिक संरचनाओं का माईक्रोस्कोप से विधिवत अध्ययन किया और पाया कि अच्छे शब्दों और भगवान के नाम पर एक सुंदर आकृति बनती है और बुरे शब्द वाले परखनली में खराब आकृति बनती है।

# उन्होंने बताया है कि जल हमारी आवाज और भावनाओ को समझता है,

शायद इसलिए ही जल को लेकर संकल्प लेने की परम्परा रही हो।

# आप इस बात को ऑनलाइन जाँच कर सकते है। यह पुस्तक ऑनलाइन है।

CS CamScanner

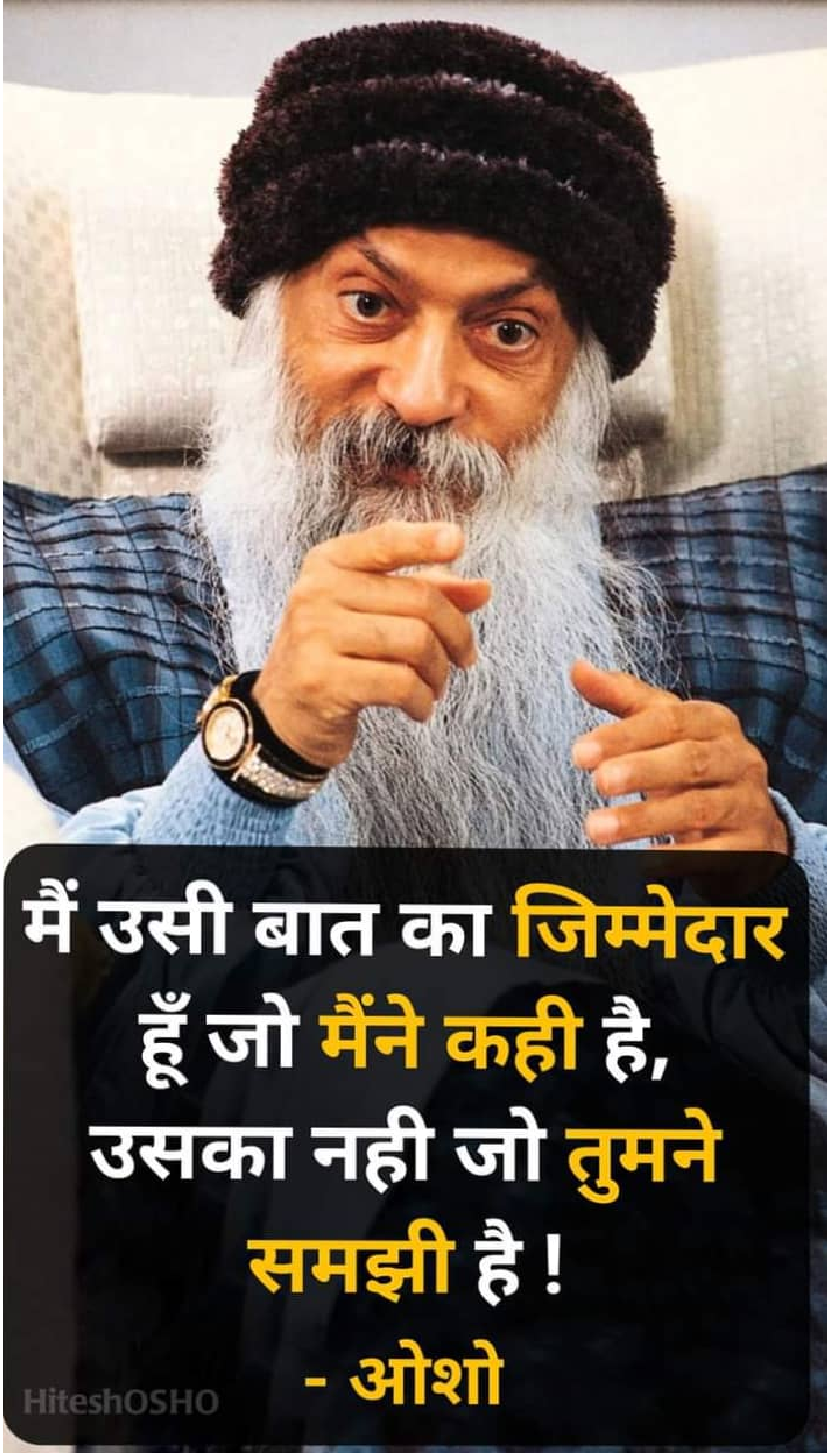


CamScanner

8:53 pm 50%

**Anamcara Rames**
3d ·

संन्यास का
सरल सा अर्थ है कि
उन्होंने ध्यान का मार्ग
और उल्लास का जीवन
तथा उल्लास मनाना स्वीकार किया है।

यह तुम्हारे जीवन को
आनंदपूर्ण बनाना स्वीकार करना है।
अतः संन्यास
एक बिलकुल अलग बात है।
संन्यासी रहेंगे।

मैंने संन्यासियों के
सभी बाहरी प्रतीक गिरा दिए हैं।
यदि वे इन्हें रखना चाहते हैं
-यह उन पर है।

अपनी ओर से मैंने गिरा दिया है।
उनको किसी माला की जरूरत नहीं है।
उनको लाल वस्त्रों की आवश्यकता नहीं है।
मैं सब मिला कर इतना ही पसंद करूंगा...

मेरा उन्हें परामर्श,
कि तुम एक संन्यासी हो,
केवल ध्यान ही आवश्यक चीज है
जिसका तुम्हें पालन करना है।

आचार्य श्री रजनीश
The Last Testament, भाग 3, प्रवचन 13

CamScanner

CamScanner

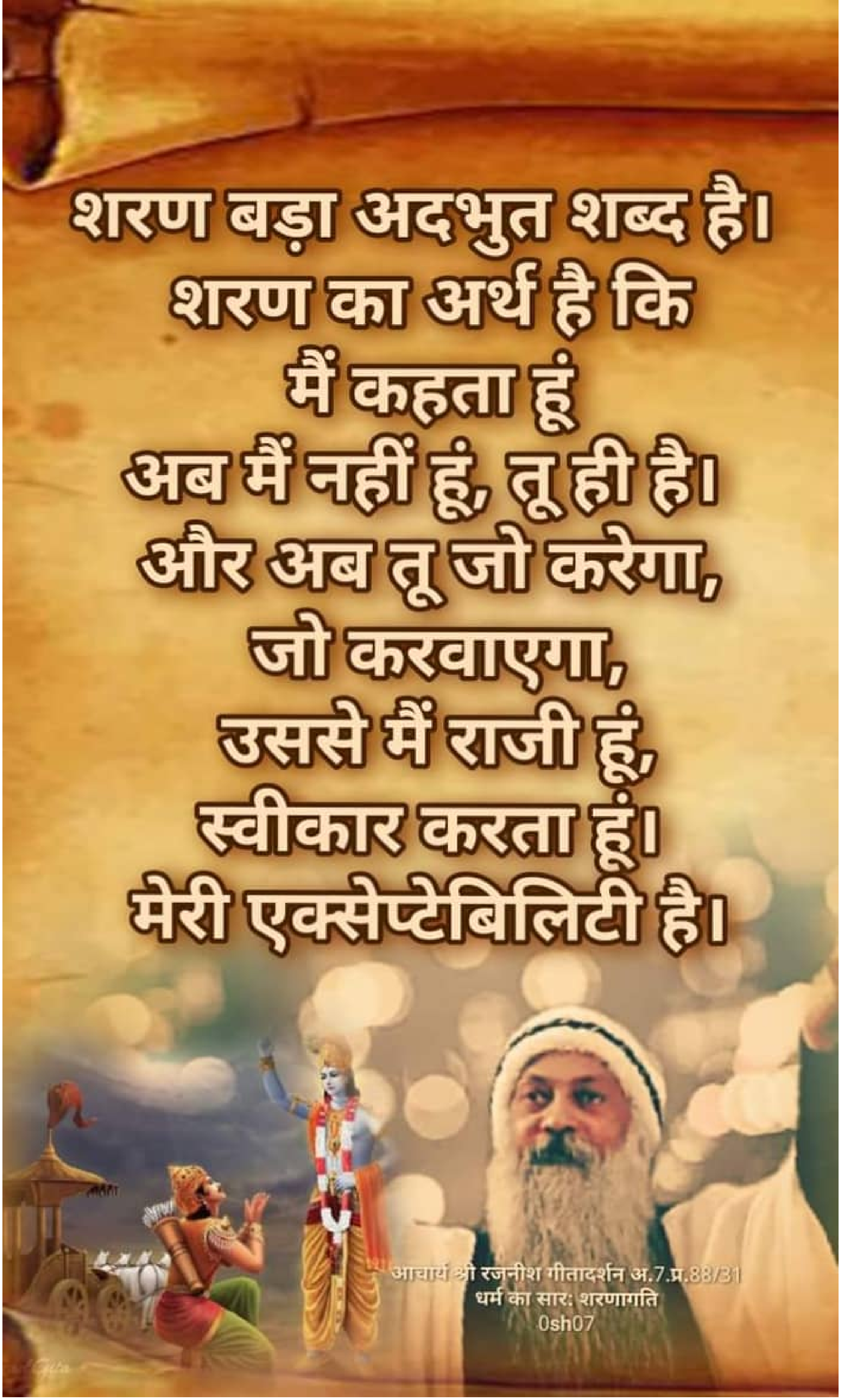
शरण बड़ा अदभुत शब्द है।
शरण का अर्थ है कि
मैं कहता हूं
अब मैं नहीं हूं, तू ही है।
और अब तू जो करेगा,
जो करवाएगा,
उससे मैं राजी हूं,
स्वीकार करता हूं।
मेरी एक्सेप्टेबिलिटी है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.88/31
धर्म का सार: शरणागति
0sh07

CamScanner

8:49 pm 4G 50%

मैं अँग्रेजी स्कूल में भर्ती हुआ था और गणित के हमारे शिक्षक थे , वे बड़े पक्के गणित के आदमी थे...मेरी उनसे अक्सर झंझट हो जाती थी और अक्सर मुझे उनकी कक्षा में क्लास के बाहर ही खड़ा रहना होता था...जैसे ही मैं खड़ा होता , वे कहते तुम बाहर जाओ , तुम सब समय खराब कर दोगे...तुम जब शांत बैठना हो तो भीतर आ जाना...

वे नाराज हुए मुझसे एक बात से कि उन्होंने कहा कि एक मकान को दस मजदूर तीन महीने में बना पाते हैं तो बीस मजदूर तो बीस मजदूर कितने दिनों में बना पाएंगे ?...मैंने उनसे कहा कि सवाल से जाहिर है कि आप सोचते हैं कि बीस मजदूर डेढ़ महीने में बना पाएंगे और चालीस मजदूर और आधे दिन में , अस्सी मजदूर और आधे दिन में , एक सौ साठ मजदूर और आधे दिन में...इसका तो मतलब यह हुआ कि अगर लाख दो लाख मजदूर हों तो दो मिनट में बना देंगे..
बस वे नाराज हो गए , उन्होंने कहा तुम बाहर निकलो. ..
मैंने उनसे कहा कि लाख मजदूर हों तो सालों लग जाएंगे. .यह गणित बुनियादी रूप से गलत है , आप पूछ ही गलत रहे हो...बस उन्होंने कहा तुम बाहर निकलो, तुमको पता ही नहीं कि गणित क्या चीज है ...मैंने कहा कि सीधी सीधी बात है , जिंदगी ऐसे गणित से नहीं चलती..

एक और ढंग भी सुनने का है कि तुम मुझे सुनो सिर्फ. ..इस भाँति मत सोचो कि जो मैं कह रहा हूं उसका साधन बनाना है कि कितनी जल्दी मोक्ष मिल जाएगा, यह तुम सोचो ही मत. .तुम सिर्फ मुझे सुन लो मन भर कर..मैं तुम्हें कोई विधियां नहीं बता रहा हूं कहीं जाने की. ..सिर्फ अपना गीत गा रहा हूं , तुम ऐसे सुनो कि मोक्ष में बैठे हैं और किसी का गीत सुन रहे हैं. .
गणित के हटते ही , यह पाने की दौड़ हटते ही तुम पाओगे तृप्ति की वर्षा हो गई , ऐसी वर्षा जैसी तुमने कभी नहीं जानी थी. ..रोआं रोआं पुलकित हो गया. .धड़कन धड़कन नाच उठी. .तुम इसी क्षण किसी और लोक में प्रवेश कर गए. ..

ओशो. ..अष्टावक्र महागीता (72)

37 3 comments • 7 shares

CamScanner

CamScanner

CamScanner

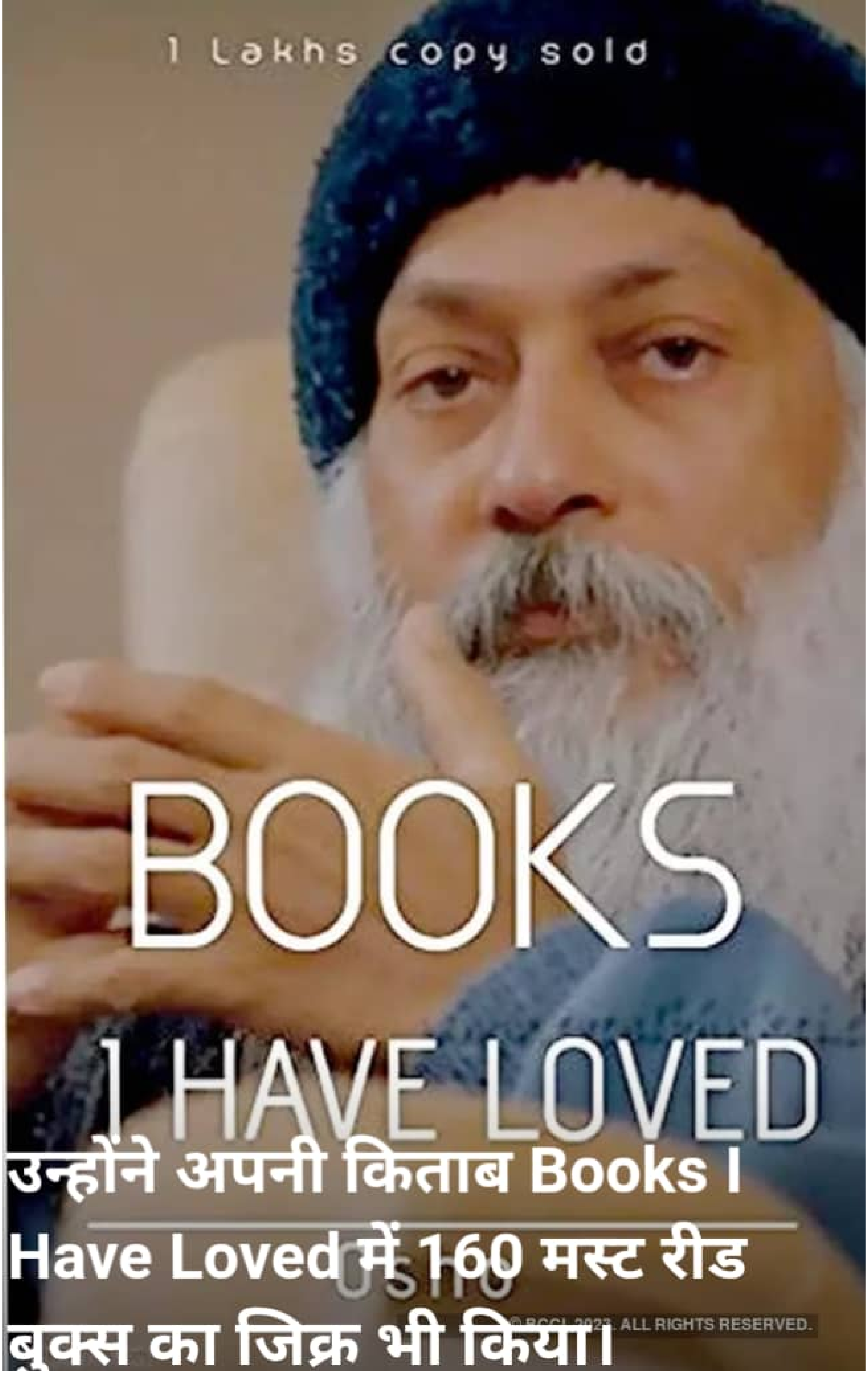
1 Lakhs copy sold
BOOKS
I HAVE LOVED
उन्होंने अपनी किताब Books I Have Loved में 160 मस्ट रीड बुक्स का जिक्र भी किया।
Osho
© BCCL 2023. ALL RIGHTS RESERVED.

CamScanner

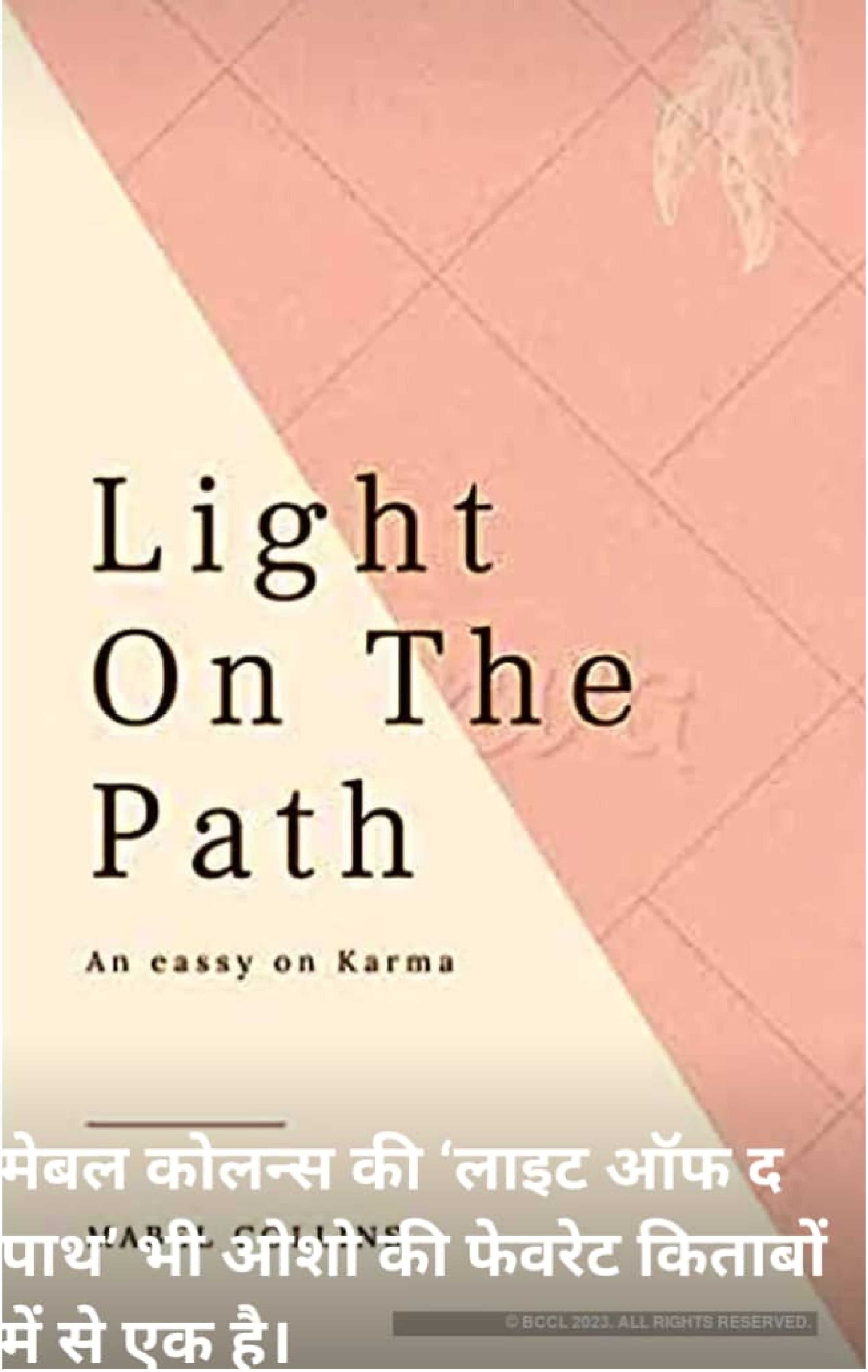


मेबल कोलन्स की 'लाइट ऑफ द पाथ' भी ओशो की फेवरेट किताबों में से एक है।

CS CamScanner

11:53 am 85%

google.com/amp/story/

ओशो को लाओत्सु की 'ताओ ती चिंग' और उमर खय्याम की 'रुबाईयत' अच्छी लगी।

BCCL 2023. ALL RIGHTS RESERVED.

Image Source: BCCL

न navbharattimes.indiatimes.com

CamScanner

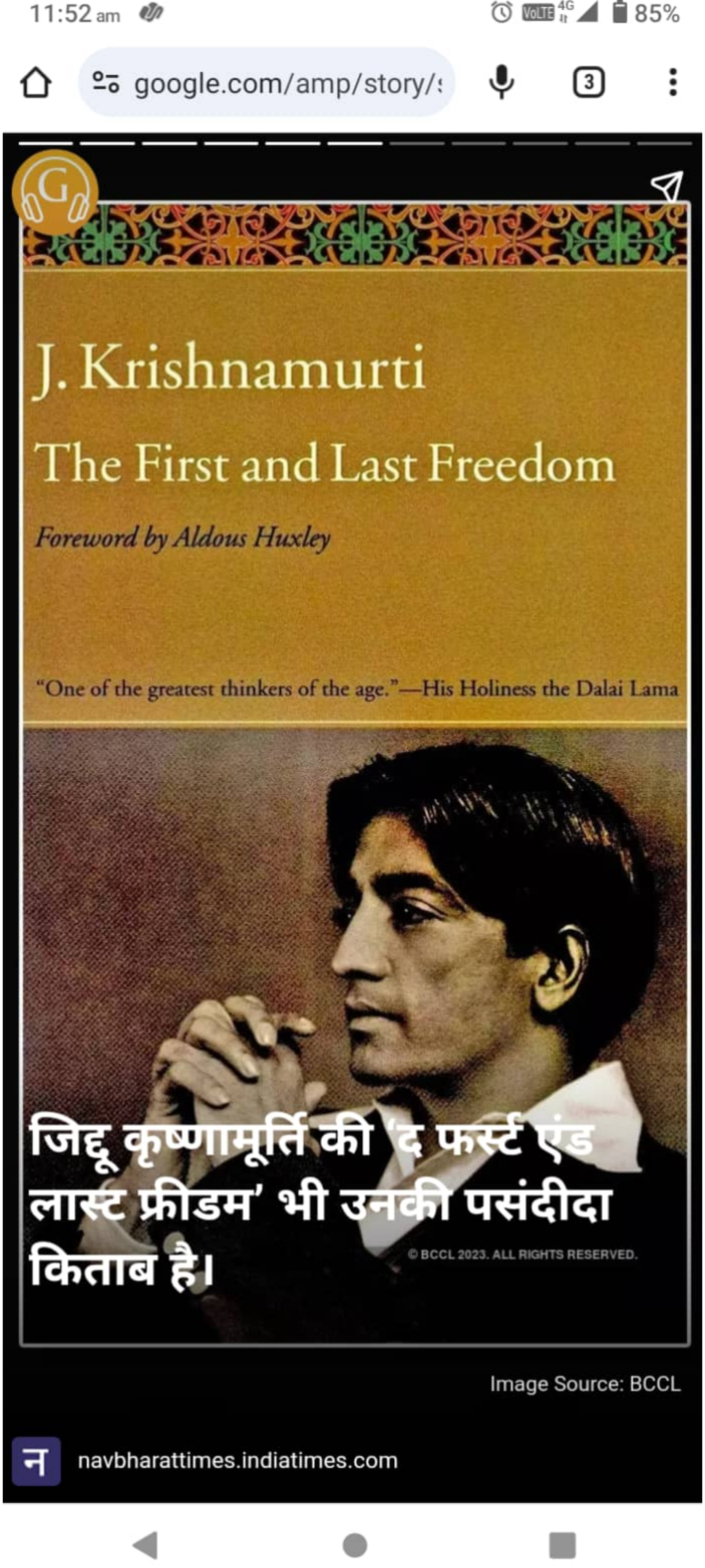
11:52 am
85%
google.com/amp/story/
J. Krishnamurti
The First and Last Freedom
Foreword by Aldous Huxley
"One of the greatest thinkers of the age."—His Holiness the Dalai Lama
जिद्दू कृष्णामूर्ति की 'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम' भी उनकी पसंदीदा किताब है।
© BCCL 2023. ALL RIGHTS RESERVED.
Image Source: BCCL
navbharattimes.indiatimes.com

CamScanner

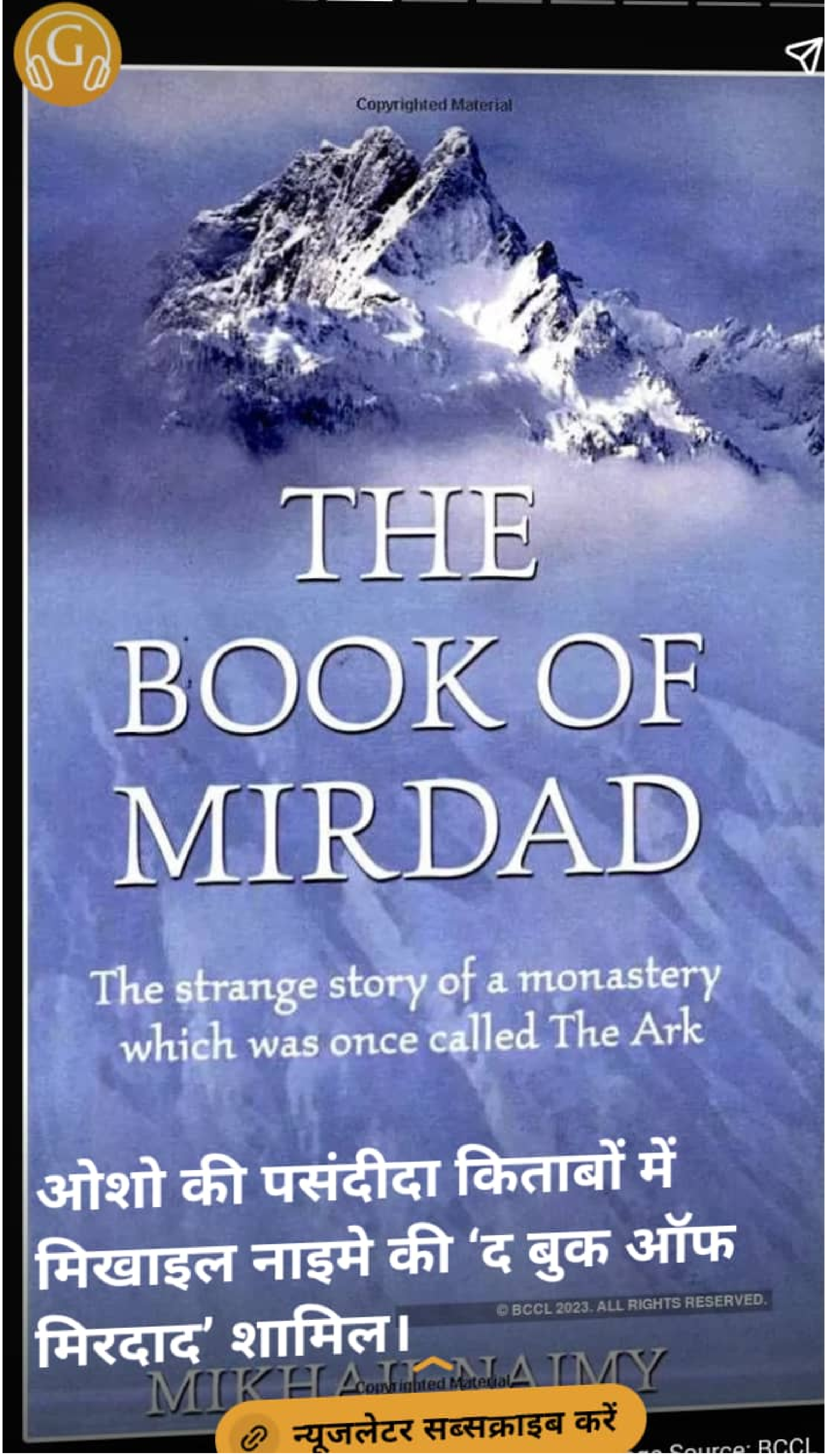
Copyrighted Material
THE
BOOK OF
MIRDAD
The strange story of a monastery
which was once called The Ark
ओशो की पसंदीदा किताबों में
मिखाइल नाइमे की 'द बुक ऑफ
मिरदाद' शामिल।
© BCCL 2023. ALL RIGHTS RESERVED.
Copyrighted Material
न्यूजलेटर सब्सक्राइब करें

CamScanner

11:30 am 4G 87%
Quora ऐप में खोलें



ओशो का एक शिष्य · 5 अग॰

संबंधित **ओशो की किताब 'पथ के प्रदीप' के संबंध में विशेष बात क्या है?**

*सन 1965 में, माथेरान नामक पर्वतीय स्थल पर आयोजित ध्यान शिविर के समापन पर जब ओशो विदा लेने लगे तब उनकी एक शिष्या, मां योग सोहन बहुत रोने लगीं।*

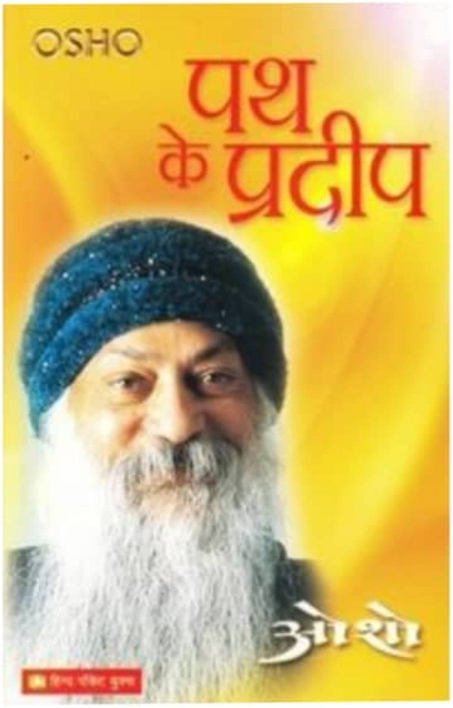


ओशो ने कहा कि ***तुम्हारे आंसुओं के बदले, मेरे पास देने को कुछ भी नहीं है, किंतु मैं रोज एक पत्र तुम्हें लिखूंगा।***

*फिर उन्होंने अपना वादा निभाया। ये पत्र सामान्य तरीके से लिखे और पोस्ट नहीं किए गए। ओशो प्रतिदिन लिखते रहते, और समय-समय पर उन्हें पत्रों का एक गुच्छा पोस्ट करते। फिर भविष्य में प्रकाशन के लिए उन्हें संरक्षित करने का सुझाव भी दिया।*

**इन्हीं सौ अनूठे पत्रों का संकलन है यह पुस्तक--'पथ के प्रदीप'।** हर साधक के अंधेरे जीवन पथ को प्रकाशित कर सकती है।

ओशो ने देह त्यागने से पहले इस किताब के नए संस्करण में एक उपशीर्षक

अपवोट करें · 16 2

CamScanner

Bsb Pt. Sachin☺️

Yesterday, 8:55 pm

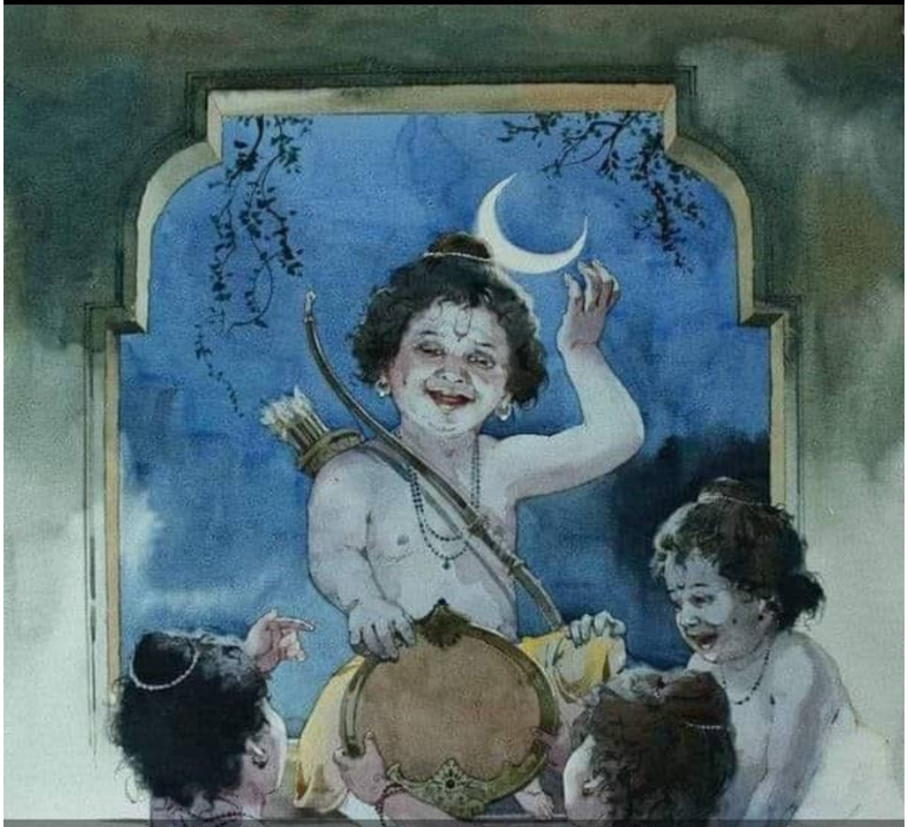

नाम रामायण में प्रभु का एकनाम है - राकाचन्द्रसमानन राम 🙏🌸 अर्थात मैं उन श्री राम की शरण लेता हूं, जिनका चेहरा पूर्ण चंद्रमा की तरह है ..। तेषामपि महातेजा रामस्सत्यपराक्रम:॥ इष्टस्सर्वस्य लोकस्य शशाङ्क इव निर्मल:। (वाल्मीकीय रामायण) चारों राजकुमारों में श्रीराम महातेजस्वी एवं सत्यपराक्रमी थे। वे निर्मल चन्द्रमा के समान सबके इष्ट थे। चंद्रमा जिनके मन से उत्पन्न हुआ - चंद्रमा मनसो जातः (पुरुष सूक्त - अथर्ववेद) वही श्रीपति विराट पुरुष सूर्यवंश मणि रामभद्र जब चंद्रमा को पाने का हठ करते हैं तब उनके छोटे भाई उनको शीशे में चंद्रमा के दर्शन करवाते हैं 🙏🌹🚩

Reply

CamScanner

उन्होंने कहा भले वमन हो जाए, उसकी फिक्र नही है,पर टोकरी पूरी खाली करनी है। नही तो डंडा है मेरे पास। आज हालात उसकी उलट हो गयी है। रोज डंडा फल न खाने के लिए था,की फल खाया की डंडा पड़ा। लेंकिन आज डंडा फल खाने के लिए था।

उसका मन भागने लगा है,वह फल खा रहा है,लेकिन फल बेस्वाद लगने लगा है। वह फल खाएं जा रहा है, लेकिन अब फल तिक्त हो गया है। लेकिन वह फल फिर भी खाए जा रहा है,अब तो हालात उल्टी जैसे हो गए है। और दादा है कि डंडा हिला रहे है। कि तू इस टोकरी को पूरा कर। किसी तरह उसके दादा ने टोकरी पूरी करवा दी।

गुरजिएफ ने लिखा के फिर मैं सत्तर साल जिया। फिर कभी भूल से वह फल मुझे दिखाई भी पड़ जाये तो मेरे पेट मे दर्द होता,वमन होता था, दस्त लग जाते थे। कोई आठ दिन तकलीफ रहती थी, बुखार रहता था। लेकिन उस फल से छुटकारा हो गया।

तुम्हे जीवन से ऊब नही आई है। अभी भी रस कायम है। अभी भी आशा बनी है। अभी भी तुम सोचते हो मिल जाएगा सुख यहां। अब तक नही मिल पाया,क्योंकि तुमने ठीक से कोशिश नही की है। अब तक नही मिल पाया क्योंकि तुम धीमे धीमे चल रहे हो। अब तक नही मिल पाया कि दूसरे लोग चालक है,वे तो पा रहे है। तुम सीधे साढ़े हो,तुम नही पा रहे हो। अभी तुम्हे यह नही दिखाई पड़ा कि वहां रस ही नहीं है। चाहे तुम तेज चलो चाहे तुम धीमे,चाहे तुम चालाकी करो,चाहे मत करो। वहां रस नही है,वहां रस पाया ही नही जा सकता। तुम रेत से तेल न निकाल पाओगे। तुम आकाश- -कुसुम की तलाश में हो जो की वह फूल कहि है ही नही।

लेकिन यह तुम्हे कैसे दिखाई पड़े? यह मेरे कहने से दिखाई पडता तो बड़ी आसान बात थी। जिंदगी इतने सस्ते आसान रास्ते नही जानती। वह तुम्हे अनुभव से देखना पड़ेगा। तुम्हे पीड़ा से गुजरना ही होगा। तुम्हे उस सिमा तक जाना होगा। जहाँ तुम्हारे सब सुख दुख हो जाये।

ओशो

CamScanner

10:59 am 94%
amarthgurusiddharth.org

spirituality rather than rituals.

The core vision of Oshodhara is to establish Scientific Spirituality based on 'Spiritual Science' given by Samarthguru Siddharth Aulia. Oshodhara is based on 4 pillars namely,

1. Meditation
2. Sakshi
3. Samadhi
4. Sumiran

The organisation aims to change the entire paradigm of common people's lives by transforming it from living in a state of Complaint to a state of Gratitude. From looking for fleeting happiness in the external world to finding the source of eternal joy and bliss within.

CamScanner

Osho

ओशो ने जिन डेढ़ लाख किताबों को पढ़ा, उनमें से हिंदी मे
लेखी सिर्फ एक किताब शामिल है और वह है
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की 'नदी के द्वीप।'
भले ही उन्होंने हिंदी की एक किताब चुनी हो, लेकिन
इसकी तारीफ के इतने पुल बांध दिए हैं कि इसे टॉलस्टाय
और चेखव के उपन्यासों से बेहतर बताया। ओशो ने 'नदी
के द्वीप' के बारे में जो कहा, वह इस तरह है 'इस हिंदी
उपन्यास का अब तक अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। यह
अजीब है कि मेरे जैसा आदमी इसका जिक्र कर रहा है।

इसका हिंदी टाइटल नदी के द्वीप है। यह अंग्रेजी में
आईलैंड्स ऑफ अ रिवर बाय सच्चिदानंद हीरानंद' नाम
से हो सकता है। यह किताब उनके लिए है, जो ध्यान
करना चाहते हैं। यह योगियों की किताब है। इसकी तुलना
न तो टॉलस्टाय के किसी उपन्यास से हो सकती है और न
ही चेखव के। इसका दुर्भाग्य यही है कि इसे हिंदी में लिखा
गया है। यह इतनी बेहतरीन है कि इसके बारे में कुछ कहने
से अधिक इसे पढ़कर इसका आनंद लेना उचित होगा।
इतनी गहराई में जाकर बात करना बहुत मुश्किल है।'

Osho

आप सोच रहे होंगे कि आखिर इस किताब में ऐसा है
क्या? इतनी तारीफ करने के बाद यह सवाल जायज है।
दअरसल, उपन्यास में चार मुख्य किरदार हैं भुवन, रेखा,

CamScanner

ओशो अपने अध्ययन वाली किताबों में उपनिषदों से शुरू होते हैं और कॉलिन विल्सन की 'द आउटसाइडर' पर आकर रुकते हैं। उनकी प्रिय किताबों में मिखाइल नाइमे की 'द बुक ऑफ मिरदाद', जिद्दू कृष्णामूर्ति की 'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम', लाओत्सु की ताओ ती चिंग, उमर ख़य्याम की 'रुबाईयत', मेबल कोलन्स की 'लाइट ऑफ द पाथ' आदि हैं। ओशो ने प्लेटो, नीत्शे, फ्रायड, अरस्तू, दोस्तोयेव्स्की, फ्रेडरिक, सुकरात, शोपेनहावर, कबीर, गुरु नानक, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी सबको पढ़ा है।

ओशो ने अपनी पढ़ी किताबों पर एक किताब ही लिख दी जिसका नाम है 'बुक्स आई हैव लव्ड'। इसे उन्होंने खुद नहीं लिखा था, बल्कि बोलकर अपने उस डेंटिस्ट से लिखवाया था, जिसके पास उनका इलाज चल रहा था। इसमें ओशो ने ऐसी 160 मस्ट रीड किताबों का जिक्र किया है, जिन्होंने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया। एक-एक किताब के बारे में डिटेल में लिखा है। एक और ख़ास बात, ओशो ने सबका लिखा पढ़ा, लेकिन खुद कभी एक शब्द भी अपने हाथ से नहीं लिखा। अपना सारा ज्ञान उन्होंने रिकॉर्ड करवाया। आप ओशो की जितनी भी किताबें देखते हैं, वे सब रिकॉर्डेड ऑडियो के आधार पर लिखी गई हैं।

Osho

ओशो ने जिन डेढ़ लाख किताबों को पढ़ा, उनमें से हिंदी मे

10:26 am 100%

Did you mean: ओशो के पसंदीदा ***पुस्तक*** कौन सी थी ***वो*** ओशो पढ़ा करते थे

हिंदी में खोजें ओशो के पसंदीदा पुस्तके कौन सी थी ...

इसे सुनें

ओशो अपने अध्ययन वाली किताबों में उपनिषदों से शुरू होते हैं और कॉलिन विल्सन की 'द आउटसाइडर' पर आकर रुकते हैं। उनकी प्रिय किताबों में मिखाइल नाइमे की 'द बुक ऑफ मिरदाद', जिद्दू कृष्णामूर्ति की 'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम', लाओत्सु की ताओ ती चिंग, उमर खय्याम की 'रुबाईयत', मेबल कोलन्स की 'लाइट ऑफ द पाथ'आदि हैं।

न https://navbharattimes.indiatimes.com › ...

Osho Rajneesh: ओशो ने 160 'मस्ट रीड बुक्स' चुनी थीं, इनमें हिंदी की बस एक

About featured snippets Feedback

Quora
https://hi.quora.com › ओशो-की-...

ओशो की प्रिय पुस्तकें कौन सी थी?

ओशो की प्रिय पुस्तकें कौन सी थी?

2 votes

वैसे तो कई पुस्तकें हैं जो ओशो की प्रि ... More

49 votes

हिन्दी और अंग्रेजी में सद्गुरु ... More

CamScanner

11:28 pm
VoLTE 4G 35%
chat.openai.com/c/f663
New chat

1. Tripitaka (Pali Canon): Also known as the "Three Baskets," this is the primary canon of Theravada Buddhism and contains the teachings attributed to Gautama Buddha. It is divided into three sections: Vinaya Pitaka (rules for monastic discipline), Sutta Pitaka (discourses of the Buddha), and Abhidhamma Pitaka (philosophical and doctrinal analysis).
2. Mahayana Sutras: These are a diverse collection of texts specific to Mahayana Buddhism. They include the Lotus Sutra, Heart Sutra, Diamond Sutra, and many others. These texts emphasize compassion, the bodhisattva path, and the idea of multiple Buddhas.
3. Tibetan Buddhist Texts: Tibetan Buddhism has its own set of sacred texts, including the Kangyur (translated words of the Buddha) and the Tengyur (commentaries by Indian and Tibetan scholars).
4. Zen Teachings: In Zen Buddhism, there is a focus on direct experience and meditation.

Send a message
ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.
CamScanner

Buddhism. The Tipitaka and the paracanonical Pali texts (commentaries, chronicles, etc.) together constitute the complete body of classical Theravada texts.

The Pali canon is a vast body of literature: in English translation the texts add up to thousands of printed pages. Most (but not all) of the Canon has already been published in English over the years. Although only a small fraction of these texts are available on this website, this collection can be a good place to start.

The three divisions of the Tipitaka are:

### Vinaya Pitaka

The collection of texts concerning the rules of conduct governing the daily affairs within the Sangha — the community of *bhikkhus* (ordained monks) and *bhikkhunis* (ordained nuns). Far more than merely a list of rules, the Vinaya Pitaka also includes the stories behind the origin of each rule, providing a detailed account of the Buddha's solution to the question of how to maintain communal harmony within a large and diverse spiritual community.

### Sutta Pitaka

The collection of suttas, or discourses, attributed to the Buddha and a few of his closest disciples, containing all the central teachings of Theravada Buddhism. (More than one thousand sutta translations are available on this website.) The suttas are divided among five *nikayas* (collections):

- Digha Nikaya — the "long collection"
- Majjhima Nikaya — the "middle-length collection"
- Samyutta Nikaya — the "grouped collection"
- Anguttara Nikaya — the "further-factored collection"
- Khuddaka Nikaya — the "collection of little texts":
  - Khuddakapatha
  - Dhammapada
  - Udana
  - Itivuttaka
  - Sutta Nipata
  - Vimanavatthu
  - Petavatthu
  - Theragatha
  - Therigatha
  - Jataka
  - Niddesa
  - Patisambhidamagga
  - Apadana
  - Buddhavamsa
  - Cariyapitaka
  - Nettippakarana (included only in the Burmese edition of the Tipitaka)
  - Petakopadesa ( " " )
  - Milindapañha ( " " )

### Abhidhamma Pitaka

The collection of texts in which the underlying doctrinal principles presented in the Sutta Pitaka are reworked and reorganized into a systematic framework that can be applied to an investigation into the nature of mind and matter.

CS CamScanner

11:24 pm ✓ VoLTE 4G 35%
quora.com/How-should-I
Quora Open in App
1 4 2

Jahnavi · Follow
Lives in Hyderabad, Telangana, India · 4y

Related **In Buddhism, what is tripitaka?**

Tripitaka literally mean Three Baskets. Tripitakas of Buddhism codified the teachings of Buddha which were originally written in Pali language. They are SUTTA PITAKA, VINAYA PITAKA and ABIDHAMMA PITAKA.

- THE SUTTA PITAKA …… it means the basket of DISCOURCES. It also deals with the first buddhist council. It also presents us with a comprehensive exposition of buddhist ethics , meditational practices and philosophy….
- THE VINAYA PITAKA……. It means the basket of DISCIPLINE. It deals with the history of gradual growth of samgha, the monastic rules and regulations.
- THE ABHIDHAMMA PITAKA ….. It means the basket of ultimate things. Analytical study of mind received great attension . It also deals with philosophy, psycology and meta physics…

985 views · View 9 upvotes 1 of 3 answers

Upvote · 9

Sponsored by Haier Washing Machine

**Buy Haier Top Load Washing Machine | Get up to 20% cashback!**

In built water heater, removes 106 stains and get 99% germ free and Hygenic Wash.

CamScanner

For other uses, see Osho (disambiguation).

***Oshō*** (和尚) is a Buddhist priest (in charge of a temple);[1] honorific title of preceptor or high priest (especially in Zen or Pure Land Buddhism). The same kanji are also pronounced ***kashō*** as an honorific title of preceptor or high priest in Tendai or Kegon Buddhism and ***wajō*** as an honorific title of preceptor or high priest in Shingon, Hossō, Ritsu, or Shin Buddhism.

## Etymology

*Oshō* is the Japanese reading of the Chinese *hé shang* (和尚), meaning a high-ranking Buddhist monk or highly virtuous Buddhist monk. It is also a respectful designation for Buddhist monks in general and may be used with the suffix *-san*.

According to the Kōjien Japanese dictionary and the Kanjigen dictionary of Chinese character source meanings, it is originally derived from the Sanskrit *upadhyaya*, meaning "master" in the sense of "teacher".[2][3]

The literal meaning is "self-taught Buddhist monk/teacher"[web 1] The Chinese term "he-shang" is derived from the Sanskrit word upadhyaya or acharya:

> As the new Buddhist students and

11:00 pm 37%

google.com/search?q=o:

About featured snippets Feedback

## People also ask

**What is the meaning of name Osho?**

It means who is one with the God. Osho means the enlightened one.

https://www.quora.com › What-is-t...

What is the meaning of name Osho? - Quora

MORE RESULTS

**What is Osho famous for?**

**Who gave the name Osho?**

**ओशो नाम का मतलब क्या होता है?**

इसका मतलब है कि जो ईश्वर के साथ एक है। ओशो का अर्थ है प्रबुद्ध व्यक्ति।

https://www.quora.com › What-is-t...

ओशो नाम का मतलब क्या है ? - Quora

Translated by Google (English → हिन्दी)
See original

CamScanner

10:59 pm 37%

google.com/search?q=o:

Google

osho meaning

All Images Videos Books News Maps Sho

हिंदी में खोजें ओशो मीनिंग

हिन्दी में In English

The word 'Osho' has been described to have many meanings. The meanings include "**dissolving into the whole of human existence**", "the blessed one on whom the sky showers flowers", "great gratitude and respect for one who expands consciousness", and "a revered teacher of meditation".[9] His health continued to weaken.

https://www.ncbi.nlm.nih.gov › pmc

Osho - Insights on sex - PMC - NCBI

About featured snippets Feedback

## People also ask

What is the meaning of name Osho?

CamScanner

10:59 pm 37%

google.com/search?q=e:

Google

es dhammo sanantano meaning

All Images Videos Books News Maps Sho

हिंदी में खोजें एस धम्मो सनांटानो अर्थ

हिन्दी में In English

Aes dhammo sanantano — this is the eternal, inexhaustible law: your nature is to become God. Man is a potential god — a bodhisattva. Man is meant to become a god.

https://o-meditation.com › tag › aes...

Tag: Aes dhammo sanantano - Sat Sangha Salon

About featured snippets Feedback

## People also ask

What is the meaning of Dhammo?

What are the three golden paths of Buddha?

CamScanner

6:25 pm 60%
facebook

ओंठ मुस्कुराते हैं, लेकिन कोई उनमें गहरे देखे तो वहां भी आंसू छिपे हैं। तुम चलते हो लेकिन ऐसे, जैसे न मालूम कितनी जंजीरें तुम्हारे पैरों में बंधी हों। नृत्य नहीं है वहां। तुम नाच तो सकते ही नहीं; क्योंकि नाच तो वही सकता है, जिसे भीतर की परम स्वतंत्रता का अनुभव हुआ हो। नृत्य तो एक उत्सव है, एक धन्यवाद है। मीरा ने कहा है, 'पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।' लेकिन पैरों में घुंघरू तभी बांधे जा सकते हैं, जब आत्मा की भनक पड़ी हो। उसके बिना कोई गीत नहीं। उसके बिना जीवन एक बोझ है, एक संताप, एक दुख, एक...एक दुखस्वप्न है; और बड़ा लंबा दुखस्वप्न है। जिससे जागने का कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ता; जिससे हटने का कोई मार्ग नहीं दिखाई पड़ता।

पक्षी ने गीत गाया।

खुला आकाश सामने था, पंख पास थे। गीत गाने में और चाहिए क्या? पंख हों और खुला आकाश हो। अंतहीन आकाश हो और अंतहीन उड़ने की क्षमता हो; और गीत के लिए चाहिए क्या? तुम्हारे भीतर भी गीत उस दिन उठेगा, जिस दिन तुम भी पंख फैलाओगे और खुले आकाश में उड़ जाओगे।

कभी तुमने देखा है सांझ को, आकाश में उड़ते हुए अबाबील? उड़ते भी नहीं, पंखों तक को ठहराकर तिरते हैं। उनके तिरने में ही ध्यान है। सांझ को आज देखना, जब अबाबील अपनी ऊंचाइयों से उतरने लगें, तब वे तैरते तक नहीं; तब वे उड़ते ही नहीं। तब श्रम बिलकुल नहीं है, सिर्फ हवा पर पंख फैलाकर ठहरे होते हैं। उस क्षण में, जिसको गीता स्थितप्रज्ञ कहती है, वैसी उनकी चित्त-दशा होती होगी।

जिस दिन तुम भी खुले आकाश में बिना किसी प्रयत्न के उड़ पाओगे, उस दिन नृत्य पैदा होगा। उस दिन गीत का जन्म होगा। उस दिन तुम धन्यवाद दे सकोगे।

बिन बाती बिन तेल

CamScanner

6:23 pm 60%

Rahul Kumar Ojha · 35m ·

बुद्ध रोज बोलते रहे। जो उन्होंने रोज बोला, वही उन्होंने इस सुबह के प्रवचन में भी बोला। आकर बैठे। सुननेवाले लोग आये थे। एक पक्षी वातायन पर आकर बैठ गया। उसने पंख फड़फड़ाये। उसने गीत गुनगुनाया और उड़ गया। बुद्ध उस पक्षी को देखते रहे–बैठते, फड़फड़ाते, गीत गाते, उड़ जाते। और फिर उन्होंने कहा, 'आज का प्रवचन पूरा हुआ।' उस दिन वे कुछ भी न बोले। पर उन्होंने कहा कि 'आज का प्रवचन पूरा हुआ।'

और यह उनके गहरे से गहरे प्रवचनों में से एक है। इतना ही तो बुद्ध कहते हैं कि संसार तुम्हारा वातायन है। उस पर तुम बैठो, पर उसे तुम घर मत बना लो। वहां तुम थोड़ी देर विश्राम कर लो, लेकिन वह मंजिल नहीं है। बैठकर कहीं पंखों का फड़फड़ाना मत भूल जाना, नहीं तो खुला आकाश सदा के लिये खो जाएगा। पक्षी भी बहुत देर बैठा रह जाए, तो पंखों की क्षमता खो जाती है। पक्षी भी बहुत देर बैठा रह जाए, तो शायद भूल ही जाए कि उसके पास पंख भी हैं। क्योंकि क्षमताएं हमें वही याद रहती हैं, जिनका हम उपयोग करते हैं।

जिनका हम उपयोग नहीं करते, वे विस्मरण हो जाती हैं। और जिनका हम उपयोग नहीं करते, वे धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाती हैं। और उनकी क्षमता खो जाती है। तुम अगर चलो न, थोड़े ही दिन में पैर पंगु हो जाएंगे। तुम अगर अंधेरी कोठरीयों में ही रहो और देखो न, तो आंखें जल्दी ही अंधी हो जाएंगी। तुम अगर शब्द ही न सुनो, अगर तुम्हारे कान पर कोई ध्वनि तरंगित ही न हो, तो जल्दी ही तुम बहरे हो जाओगे। तुम जो नहीं करोगे, उसकी करने की क्षमता खो जाएगी।

कितने जन्म हुए, जब से तुम उड़े नहीं! तुमने पंख नहीं फड़फड़ाए। कितना समय बीता, जब से तुम खिड़की पर बैठे हो और तुमने खिड़की को घर समझा; जब से तुम द्वार को ही महल समझकर रुक गए! पड़ाव के लिए रुके थे इस वृक्ष के नीचे, लेकिन कितना समय बीता, तब से तुमने इसे ही घर मान लिया है! पंख फड़फड़ाओ। अगर बुद्धों के पास तुम पंख फड़फड़ाना न सीखो तो और कुछ सीखने को वहां है भी नहीं।

यही तो प्रवचन है; यही उनका संदेश है, कि तुम उड़ सकते हो मुक्त

CamScanner

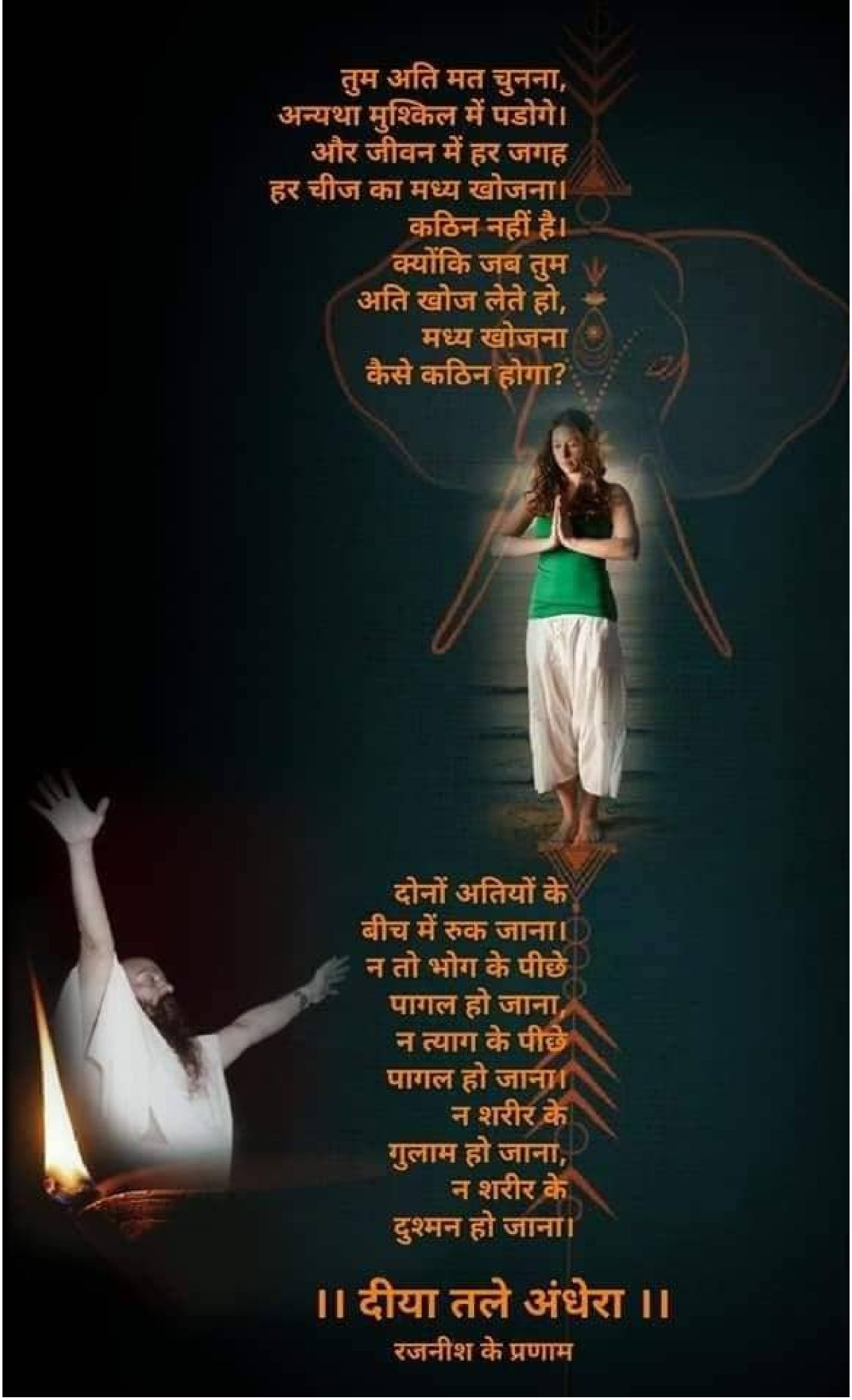
तुम अति मत चुनना,
अन्यथा मुश्किल में पडोगे।
और जीवन में हर जगह
हर चीज का मध्य खोजना।
कठिन नहीं है।
क्योंकि जब तुम
अति खोज लेते हो,
मध्य खोजना
कैसे कठिन होगा?
दोनों अतियों के
बीच में रुक जाना।
न तो भोग के पीछे
पागल हो जाना,
न त्याग के पीछे
पागल हो जाना।
न शरीर के
गुलाम हो जाना,
न शरीर के
दुश्मन हो जाना।
।। दीया तले अंधेरा ।।
रजनीश के प्रणाम

CamScanner

4:18 pm 73%

देती है।
भीतर जाओ ताकि समृद्ध होओ और गरीब ना बने रहो। और हमेशा याद रखो कि जब कभी तुम थक जाते हो, ऊर्जा का स्रोत भीतर है। अपनी आंखें बंद कर लो और भीतर जाओ। बाहरी रिश्ते बनाओ; निश्चित ही वे बाहरी रिश्ते होंगे-- तुम दुनिया में रहोगे, व्यावसायिक संबंध भी होंगे--लेकिन वे सब कुछ नहीं हो जाने चाहिए। खेल के वे भी हिस्से हैं, लेकिन वहां कुछ बहुत ही गोपनीय और निजी भी हों, कुछ जिसे तुम स्वयं का अपना कह सको। भीतरी रिश्ता भी बनाओ। मर्लिन मनरो में यही कमी रह गई। वह सार्वजनिक स्त्री थी--सफल, पर पूरी तरह से असफल। वह अपनी सफलता और प्रसिद्धि के शिखर पर थी जब उसने आत्महत्या की। उसके पास वह सब था जिसके लिए जीया जा सके, तुम उससे अधिक प्रसिद्धी, अधिक सफलता, अधिक करिश्मा, अधिक सुंदरता, अधिक स्वास्थ्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। सब कुछ उसके पास था, उससे अधिक कुछ नहीं हो सकता था, और तब भी कुछ कमी थी। भीतर, अंतस खाली था।

ओशो

CamScanner

4:15 pm 74%

बिल्ली ने आंख खोली। उसने कहा कि सब खराब कर दिया। अरे मैं एक सपना देख रही थी कि आकाश से चूहों की वर्षा हो रही है! मूसलाधार वर्षा हो रही है! चूहे ही चूहे गिर रहे हैं!

कुत्ते ने कहा: अरे मूरख, शास्त्र का ज्ञान है? शास्त्रों में साफ लिखा है कि कभी-कभी चमत्कार होते हैं, और जब चमत्कार होते हैं तो आकाश से हड्डियों की वर्षा होती है, चूहों की नहीं। चूहों का शास्त्रों में उल्लेख ही नहीं है। मूरख कहीं की! शास्त्रज्ञान है नहीं, कौड़ी भर संस्कृत जानती नहीं। चली है सपना देखने!

कुत्तों के शास्त्र में स्वभावत: चूहों की वर्षा नहीं हो सकती। बिल्लियों के शास्त्र में चूहों की ही वर्षा होगी। हड्डियों की वर्षा बिल्लियां क्या करेंगी! और आदमियों के शास्त्र में न चूहे बरसेंगे, न हड्डियां बरसेंगी। आदमियों के शास्त्र में तो हीरे-जवाहरात बरसेंगे, सोना-चांदी बरसेगा। इतनी कल्पनाएं हैं सारे जगत में। जितनी चेतनाएं हैं, उतने मन हैं, उतने माया के विस्तार हैं। जगत तो कोरा पर्दा है। यह पर्दा तुम्हें नहीं डुबा सकता। हां, तुम अपनी कल्पना में जितना चाहो डुबकी खाना, खाओ, मजे से खाओ। फिर भी डूबोगे करोगे नहीं, यह खयाल रखना। कोई कभी डूबा ही नहीं।

मैं इस झंझट में भी नहीं पड़ूंगा। तुमको डूबता भी देखूं तो भी किनारे पर बैठा रहूंगा। तो भी दौड़ कर तुमको बचाने वाला नहीं। क्योंकि मैं जानता हूं कि नदी है ही नहीं, तुम सिर्फ खाम-खयाली में हो। सो तुम्हारी मौज है। तुम लाख चिल्लाओ कि बचाओ-बचाओ! कोई बुद्धू दौड़े, मैं दौड़ने वाला नहीं। बचाने की बात ही फिजूल है। बचाना किससे है?

तुम्हें होश की जरूरत है। नदी वगैरह नहीं है जो तुम्हें डुबा रही है। लोग कहते हैं: भवसागर में डूबे जा रहे हैं। लोग अपने सब दोष बाहर थोप देते हैं। और सब दोष भीतर हैं। कहां का भवसागर? कहां की माया? मगर इससे राहत मिलती है कि हम क्या करें, यह माया का जाल ऐसा है! हम करें भी तो क्या करें? अवश हैं, परवश हैं। यह परमात्मा ने माया ऐसी बनाई—महाठगिनी!

रहिमन धागा प्रेम का-(प्रवचन-02)

CS CamScanner

CamScanner

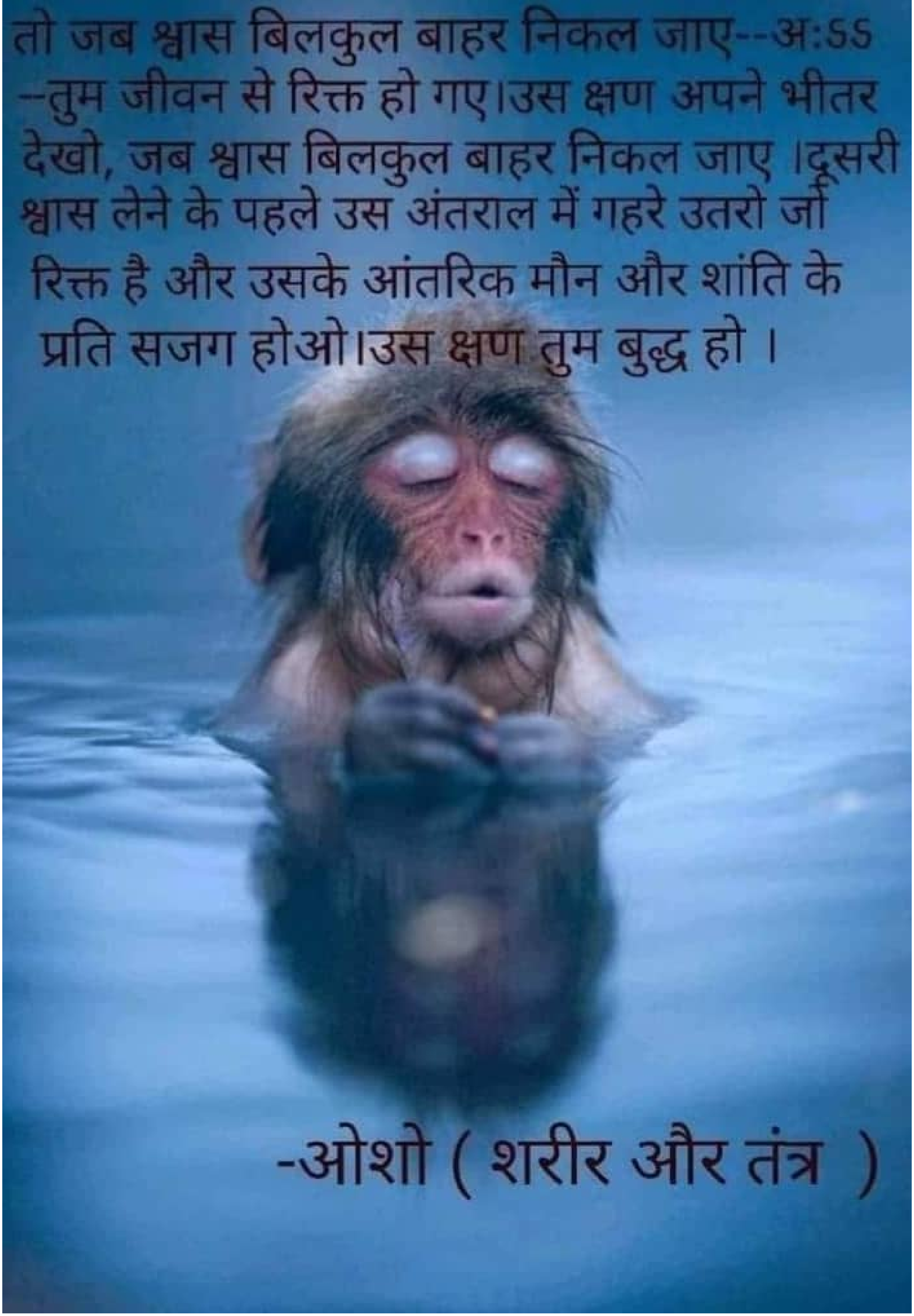
तो जब श्वास बिलकुल बाहर निकल जाए--अ:ऽऽ
--तुम जीवन से रिक्त हो गए।उस क्षण अपने भीतर
देखो, जब श्वास बिलकुल बाहर निकल जाए ।दूसरी
श्वास लेने के पहले उस अंतराल में गहरे उतरो जो
रिक्त है और उसके आंतरिक मौन और शांति के
प्रति सजग होओ।उस क्षण तुम बुद्ध हो ।
-ओशो ( शरीर और तंत्र )

CamScanner

शरीर से प्रेम हैं तो आसन करें, साँस से प्रेम है तो प्राणायाम करें, आत्मा से प्रेम है तो ध्यान करें, और परमात्मा से प्रेम है तो समर्पण करें।

CamScanner

4:11 pm 75%

तो पहली बात, रंजन, तू कहती है: 'आश्रम में रह कर बहुत आनंदित हूं; पर कभी-कभी अचानक उदास हो जाती हूं। यह उदासी क्या है, जो आती है और चली जाती है?'

उस आनंद की छाया है। उस आनंद का दूसरा पहलू है। आनंद को भी स्वीकार करो और उदासी को भी स्वीकार करो। तुम्हारी स्वीकृति में जरा भी भेद न हो। तुम चुनावरहित स्वीकार करो। आनंद आए तो आनंद और उदासी आए तो उदासी। तुम यह मत कहना कि आनंद आए तो रुके, जाए न; और तुम यह मत कहना कि उदासी आई है तो चली जाए, रुके न। आनंद आए तो आनंद मेहमान बने। स्वागत करना। और उदासी आए तो उदासी का स्वागत करना--उतना ही जितना आनंद का किया है। तब तुम्हारे जीवन में एक क्रांति घट जाएगी।

कैसी क्रांति? कौन सी क्रांति?

तुम्हारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण घटना घटेगी! और वह घटना यह है कि तुम्हारे भीतर साक्षी का जन्म हो जाएगा। तुम आनंद को भी आते देखोगी, उदासी को भी आते देखोगी; आनंद को जाते देखोगी, उदासी को जाते देखोगी। और तुम्हारे भीतर एक बात स्पष्ट हो जाएगी कि मैं न तो आनंद हूं और न उदासी। मैं दोनों का द्रष्टा, साक्षी। मेरे सामने दोनों आते हैं, नाचते हैं, विदा हो जाते हैं। मैं अछूता, दर्पण की भांति।

इस साक्षीभाव को अनुभव कर लेना ही समस्त धर्मों का सार है।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -7 "

CamScanner

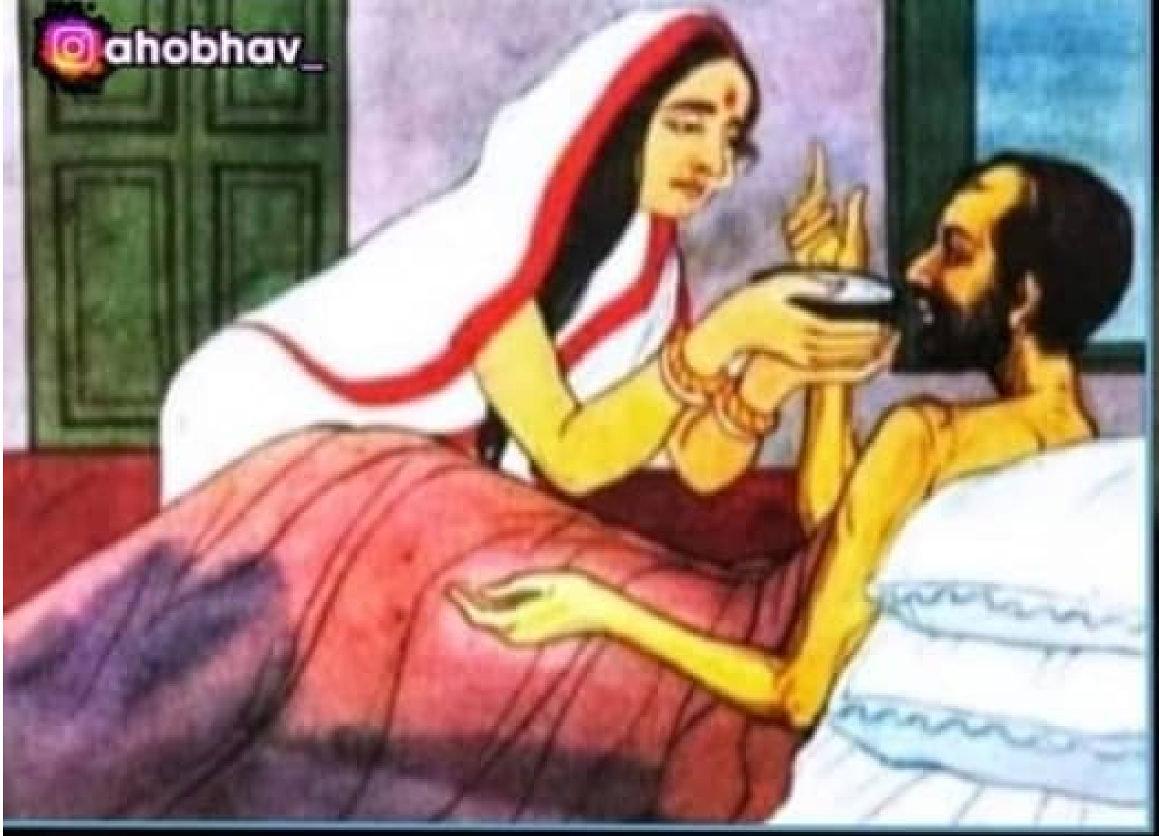

रामकृष्ण मरणशय्या पर थे।
उनकी पत्नी शारदा रोने लगी और उसने पूछा कि
परमहंस देव! आप तो जा रहे है, मेरा क्या होगा?

उन्होंने आंख खोली और कहा कि जा रहा हूं!
पागल, कहां जाऊंगा? जाने को कोई जगह कहां है?
यहीं था, यहीं रहूंगा। अभी देह मे था,
अब बिना देह के रहूंगा।
ओशो अहोभाव

CamScanner

**Shashi Shubhangee**
7h ·

परमात्मा को खोजने कोई सात समंदर पार नहीं जाना है। परमात्मा को खोजना कोई कैलाश, काशी और काबा नहीं जाना है। परमात्मा वहां है जहां कोई सद्गुरु है; जहां साधुओं की संगति है। परमात्मा वहां है जहां दीवाने बैठकर उसके रस को पी रहे हैं। जहां भंवरे इकट्ठे हुए हैं और परमात्मा को पीकर गीत गा रहे हैं, गुंजार कर रहे हैं। जहां किसी एक जले हुए दीए के पास और दीए सरक सरककर जलने शुरू हो है। जहां एक दीए के आसपास और बहुत दीए गए जल उठे हैं। जहां दीपावली हो गई है। गुरु परताप साध की संगति ! ऐसा द्वार मिले तो हां प्रवेश कर जाना, ऐसा द्वार मिल जाए तो छोड़ना ही मत कीमत जो भी चु ।कानी हो चुका देना। क्योंकि हमारे पास चुकाने को भी क्या है? खाली हैं, नंगे हैं । हमारी गर्दन भी ले ली जाए तो हमारा खोता क्या है? गर्दन तो आज नहीं कल मौत ले ही लेगी और बदले में कुछ भी न देगी। गर्दन की कीमत ही क्या है

जिस क्षण शिष्य गुरु को पा जाता है, उसी क्षण अनन्य हो जाता है, अद्वितीय हो जाता है। जिस क्षण शिष्य गुरु को पा जाता है, उसने परमात्मा का द्वार पा लिया । गुरु को पा लिया तो परमात्मा को पा लिया। अब दूरी न रही। अब फासला न रहा। पहुंच ही गए। एक कदम और बस एक कदम और....। इसीलिए गुरु को सदियों सदियों से हमने भगवान कहा है। कारण है उसका। क्योंकि गुरु आखिरी पड़ाव हैं, उसके बाद बस परमात्मा है। भीखा ने पाया तुम भी पा सकते हो। भीखा ने अपनी झोली फैलायी, इसलिए भीखा' कहलाया। तुम भी अपनी झोली फैलाओ। भीखा की झोली भरी और सम्राट हो गया। तुम्हारी भी झोली भर सकती है। तुम भी सम्राट हो सकते हो।
भीखा भूखा कोई नहीं सबकी गठरी लाल
गिरह खोल ना जानसी ताते भए कंगाल

यह गिरह गुरु के अलावा कोई नहीं खोल सकता इतना जान लो बस।

ओशो
"गुरु परताप साध की संगति ! "

CamScanner

मुझे उतारोगे। फैसला! खतम करो! देर दार की जरूरत नहीं, चौबीस घंटे का मामला है, चौबीस घंटे में सब कर लेना है। सब दरबारियों वगैरह को जेल में डाल दिया। सेनापति बदल डाले, अपने आदमी बिठा दिए। चौबीस घंटे का था मामला, लेकिन सदा के लिए बनने की योजना कर ली। चौबीस मिनट में भी यह हो सकता था।

अगर गुलाम कभी मालिक बन जाए तो बहुत खतरनाक सिद्ध होता है। क्योंकि वह जानता है कि मैं हूं तो गुलाम और यह जो थोड़ी सी घड़ियां मुझे मिल गयी हैं, अगर इनका उपयोग न कर लिया तो फिर का फिर गुलाम हो जाऊंगा। नौकर अगर मालिक जन्मों तक रहा हो, तब तो बहुत कठिन है उसे हटा देना। और वही स्थिति है मन की।

तो जब कोई साधक अपने अंतिम शिखर पर पहुंचता साधना के, तो मन आखिरी जद्दोजहद करता है, आखिरी संघर्ष होता है कुरुक्षेत्र। अंतिम निर्णायक युद्ध होता है। उस निर्णायक युद्ध को अनेक अनेक प्रतीकों से कहा गया है।

मुसलमान कहते हैं शैतान हमला करता है। वह शैतान मन है। ईसाई कहते हैं डेविल, बीलझेबब हमला करता है। वह बीलझेबब कोई और नहीं, मन है। हिंदू कहते हैं कामदेव। और स्वभावत: हिंदुओं के पास सबसे श्रेष्ठ कथाएं हैं। क्योंकि उन्होंने खूब परिमार्जित किया है। दस हजार साल तक परिमार्जन किया है। .'गैरें की कथाएं नयी नयी हैं, उनमें कई भूल चूके मिल जाएंगी, लेकिन हिंदुओं ने तो खूब परिमार्जन किया है। इसके पहले कि हिंदुओं की कथाएं लिखी गयीं, हजारों साल तक वे कथाएं बुद्धिमानों के हाथ से गुजरती रहीं, उन पर परिमार्जन होता रहा।

Only community admins can send messages
CamScanner

तो हिंदुओं की कामदेव की कथा बड़ी अदभुत है, उसमें पहली तो बात यह कि वह अनंग हैं, उनकी कोई देह नहीं। यही तो मन है। मन की कोई देह थोड़े ही है। मन अदेही है। इसीलिए तो मन को कहीं भी जाने में देर नहीं लगती। तुम्हें दिल्ली जाना, समय लगे, कलकत्ता जाना, समय लगे, मन, यह गया। अदेही है, न कोई ट्रेन, न मोटर, न हवाई जहाज, किसी की कोई जरूरत नहीं। सोचा नहीं कि गया नहीं। क्षण भी बीच में टूटता नहीं समय नहीं लगता। देह अगर मन की होती तो समय लगता।

हिंदुओं की कथा अदभुत है कि शिव को काम ने बहुत ज्यादा पीड़ित किया, परेशान किया तो वह नाराज हो गए और उन्होंने आंख अपनी, तीसरा नेत्र खोल दिया। उस तीसरे नेत्र के कारण जलकर भस्म होकर काम का जो शरीर था वह गिर गया। तब से वह अनंग है। उसके पास देह नहीं है।

यह कथा भी प्यारी है कि तीसरे नेत्र के खोलने से काम जल गया। तीसरे नेत्र के खुलने पर ही काम जलता है। तीसरे नेत्र के खुलने का अर्थ है, अंतर्दृष्टि उपलब्ध हो गयी, भीतर की आंख खुल गयी। जब तक भीतर की आंख बंद है, तभी तक काम का तुम पर प्रभाव है। भीतर की आंख खुल गयी, काम का प्रभाव समाप्त हो गया। भीतर तुम सोए हो, इसलिए काम तुम्हें फुसला लेता है, राजी कर लेता है। भीतर जाग गए, फिर तुम्हें कोई राजी न कर सकेगा।

एस धम्मो सनंतनो

ओशो

12:35 pm

CamScanner

I AM THE REBELLION
मैं कोई उद्धारक,
मसीहा या पैंगबर नहीं हूं।
मेरे पास तुम्हें देने को परमात्मा नहीं है,
मैं केवल तुम्हें
स्वयं को जानने का विज्ञान दे सकता हूं।
अतः तुम्हें सिर्फ समझना होगा कि
मैं केवल एक मित्र हूं,
उससे अधिक कुछ नहीं। मैं तुममें से एक हूं,
इसलिए किसी पूजा की आवश्यकता नहीं है
और अपने को
किसी समूह का हिस्सा समझने की जरूरत नहीं है।
तुम सभी वैयक्तिक इकाई हो।
आचार्य श्री रजनीश
The Last Testament, भाग 3, प्रवचन 14

CamScanner

10:55 pm

जीसस का सूली पर चढ़ना और फिर तीन दिन बाद पुनरुज्जीवित हो जाना। ऐतिहासिक तथ्य की तरह शायद इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि ऐसा हुआ हो। जैसे जीसस का कुंआरी मां से पैदा होना। ऐतिहासिक तथ्य की तरह प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि कुंआरी लड़की से कोई पैदा हो सकता है, जिसका पुरुष से कोई संपर्क न हुआ हो।

बाहर की दुनिया की यह घटना ही नहीं है। बाहर की दुनिया में तो कुंआरी लड़की से कोई लड़का कैसे पैदा होगा? लेकिन जिन्होंने इस पर जोर दिया है उनकी दृष्टि बहुत गहरी है। यह भीतर की घटना को ही वे कह रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जीसस जैसा बेटा अत्यंत कुंआरी आत्मा से ही जन्म ले सकता है। अत्यंत इनोसेंट। कुंआरा शरीर नहीं, कुंआरी आत्मा, कुंआरे चित्त से।

और यह भी हो सकता है कि शरीर बिलकुल कुंआरा हो और चित्त बिलकुल कुंआरा न हो। इससे उलटा भी हो सकता है कि शरीर कुंआरा न हो और चित्त बिलकुल कुंआरा हो।

जीसस जैसे व्यक्ति का जन्म वर्जिन गर्ल से ही हो सकता है, कुंआरी लड़की से ही हो सकता है।

यह इतिहास तो नहीं है, लेकिन इतिहास अगर सिद्ध भी कर दे, तो नुकसान ही पहुंचाएगा। यानी मैं मानूंगा कि यह बात प्रमाणित ही रहनी चाहिए कि जीसस जैसे व्यक्ति का जन्म एक कुंआरे मन से होता है। और अगर किसी मां को जीसस जैसे बेटे को जन्म देना हो, तो उसके चित्त का अत्यंत कुंआरा होना जरूरी है। और कुंआरेपन का कोई संबंध शरीर से है ही नहीं। वर्जिनिटी का कोई संबंध शरीर से नहीं है। शरीर तो यंत्र है, कुंआरापन तो आंतरिक मनोदशा है।

ओशो

CamScanner

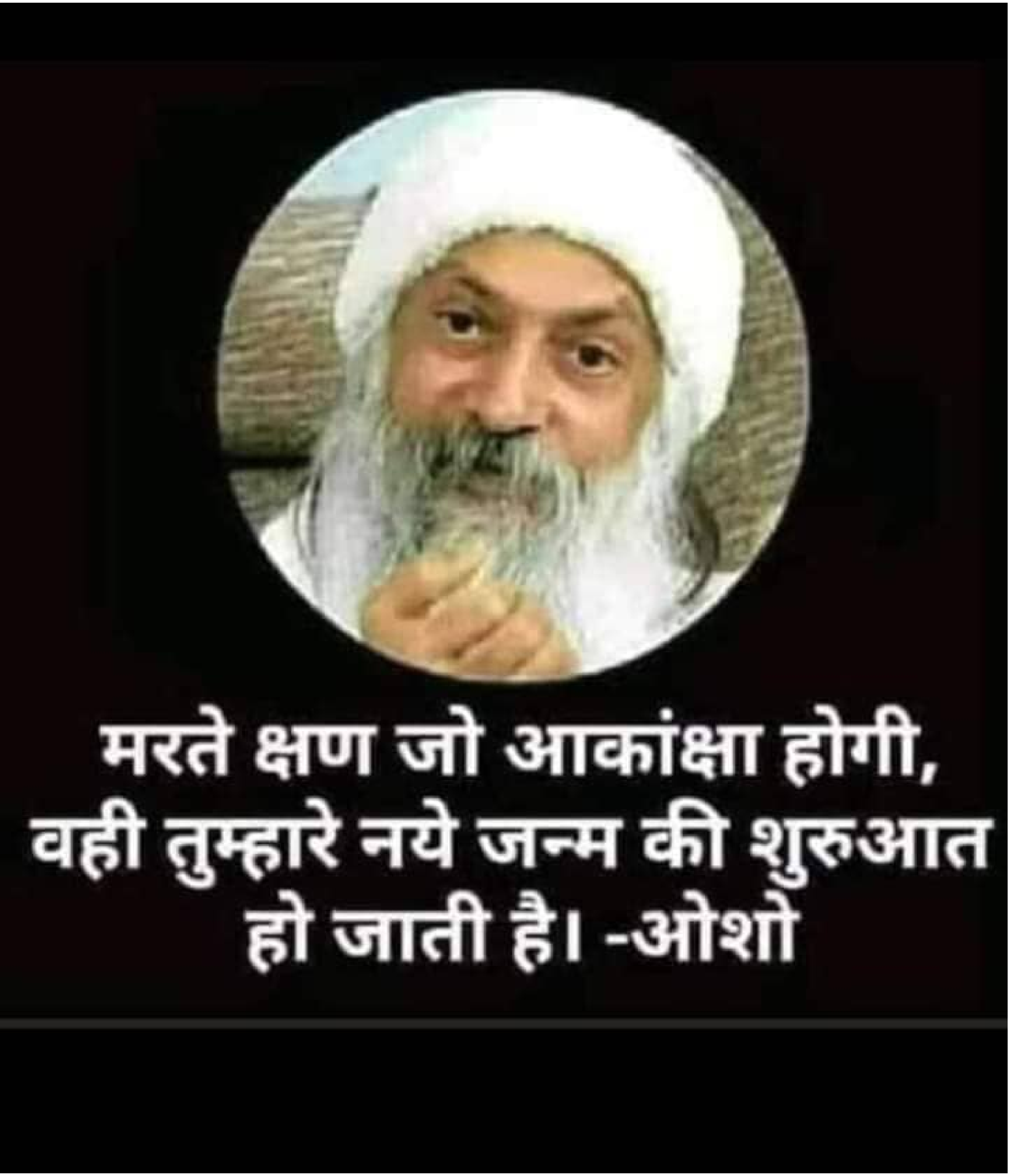


CS CamScanner

10:54 pm 32%

विलास कुछ भी नहीं। ईश्वर को जानना सबसे बड़ा विलास है, क्योंकि वह परम ऐश्वर्य की अनुभूति है। और उस परम ऐश्वर्य की अनुभूति के लिए पहले तुम्हें ऊर्जा को बचाना होगा, संगृहीत करना होगा।

और तुम व्यर्थ गंवा रहे हो! तुम्हारी निन्यानबे प्रतिशत ऊर्जा कचरेघर में जा रही है। फूल उगें तो कैसे उगें? ज्योति जगे तो कैसे जगे? नृत्य हो तो कहां से हो? थके-मांदे तुम क्या नाचोगे? टूटे-फूटे तुम क्या नाचोगे? और जब नाच नहीं पाते, तो बहाने खोजते हो। कहते हो, आंगन टेढ़ा! नाच न आवे आंगन टेढ़ा! अब आंगन के टेढ़े होने से कुछ नाचने में बाधा पड़ सकती है? अरे, जिसको नाचना है, आंगन टेढ़ा हो कि सीधा हो, नाचेगा। अगर नाच है, तो आंगन को ही सीधा होना पड़ेगा। नाचने वाले की ऊर्जा आंगन को सीधा कर देगी। आंगन का तिरछा होना कहीं नाचने वाले को रोक सकता है? लेकिन क्या-क्या बहाने हम खोजते हैं!

ऊर्जा की कमी है; पूछते फिरते हैं कि जीवन में दुख क्यों है? दुख का कारण सिर्फ इतना है कि सुख होता है ऊर्जा के अतिरेक से; महाअतिरेक से आनंद होता है। और तुम्हारे जीवन में बूंद-बूंद कर सब चुका जा रहा है। और खयाल रखना, बूंद-बूंद गिरता है, लेकिन गागर ही नहीं, सागर भी खाली हो जाता है। बूंद-बूंद गिरता रहे, तुमसे अलग होता रहे; बूंद-बूंद टपकती रहे, तो गागर तो खाली होगी ही, सागर भी खाली हो जाता है।

और तुम किस-किस तरह से अपनी ऊर्जा को व्यर्थ कर रहे हो! तुम्हारे पास जितनी इंद्रियां हैं, उन सबसे तुम दो तरह के काम ले सकते हो। एक तो ऊर्जा को भीतर ले जाने का; और दूसरा ऊर्जा को बाहर फेंकने का। यही अंतर्मुखी और बहिर्मुखी का भेद है। बहिर्मुखी मूढ़ है। दरवाजा तो एक ही होता है। उसी दरवाजे पर एक तरफ लिखा होता है: प्रवेश, एन्टें्रस; उसी दरवाजे पर दूसरी तरफ लिखा होता है: एक्झिट। उसी से तुम भीतर आते, उसी से बाहर जाते। कोई दो दरवाजों की जरूरत नहीं होती। एक ही दरवाजा काफी होता है। तुम्हारी आंख से तुम्हारे देखने की ऊर्जा बाहर भी जाती है और भीतर भी आती है। जो समझदार है, वह आंख से ऊर्जा को इकट्ठा करता है। और जो नासमझ है, वह गंवाता है। जो नासमझ है, आंख उसके लिए छेद हो जाती है। और जो समझदार है, आंख उसके लिए संग्राहक हो जाती है।

🌷ओशो 🌷

आनहद में विसराम-

(प्रश्नोत्तर)-प्रवचन-07

CamScanner

10:52 pm ✓ 4G 32%
bhajanganga.com/mobil 2

# भजन गंगा

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे, पीड़ पराई जाने रे |
पर दुख्खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आने रे ||

सकल लोक मान सहने वन्दे, निंदा न करे केनी रे |
वाच काछ मन निश्छल राखे, धन धन जननी तेनी रे ||

सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे |
जिव्हा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाली हाथ रे ||

मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ वैराग्य जेना मन मा रे |
राम नाम शून ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मान रे ||

वन लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्य रे |
भने नरसैय्यो तेनुं दर्शन करत, कुल एकोतेर तार्य रे ||

स्वर : लता मंगेशकर
श्रेणी : गुरुदेव भजन

download bhajan lyrics (2680 downloads)

CamScanner

vaishnav jan to tene kahiye je
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
par dukhe upkaar kare toye
man abhimaan na aane re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net

shakal lok maa sone vande
nindaa na kare keni re
shakal lok maa sone vande
nindaa na kare keni re
vaach kaachh man nishchal raakhe
dhan dhan janani teni re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

sam drishti ne trishna tyaagi
par stree jene maat re
sam drishti ne trishna tyaagi
par stree jene maat re
jivha thakhi asatya na bole
par dhan nav jhaalee haath re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net

moh maaya vyaape nahi jene
dridh vairaagya jena man maan re
moh maaya vyaape nahi jene
dridh vairaagya jena man maan re
ram naam shoon taali laagi
sakal tirath tena tan maan re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

van lobhi ne kapat rahit chhe
kaam krodh nivaarya re
van lobhi ne kapat rahit chhe
kaam krodh nivaarya re
bhane narsaiyo tenun darshan karta
kul ekoter taarya re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net www.hindigeetmala.net

par dukhe upkaar kare toye
man abhimaan na aane re
vaishnav jan to tene kahiye je
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye
peed paraayi jaane re
vaishnav jan to tene kahiye

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आन दे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

शक्ल लोक माँ सोणे वंदे
निंदा ना करे केनी रे
शक्ल लोक माँ सोणे वंदे
निंदा ना करे केनी रे
वाच काच मन निश्चल राखे
धन धन जननी तेनी रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी
पर स्त्री जेने मात रे
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी
पर स्त्री जेने मात रे
जिव्हा तीखी असत्य ना बोले
पर धन नव झाली हाथ रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

मोह माया व्यापे नहीं जेने
दृढ़ वैराग्य जे ना मन मान रे
मोह माया व्यापे नहीं जेने
दृढ़ वैराग्य जे ना मन मान रे
राम नाम शुन ताली लागी
शक्ल तीरथ तेना तन मा रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

वन लोभी ने कपट रहित छे
कामक्रोध निवारया रे
वन लोभी ने कपट रहित छे
कामक्रोध निवारया रे
बने नरसैयो तेनुं दर्शन करता
कुल एकोतर तारया रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

पर दुःखे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आन दे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये
पीड़ पराई जान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

http://www.hindigeetmala.net

CS CamScanner

10:51 pm 32%

Lyrics पण्डित

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ परायी जाणे रे
पर दुख्खे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आणे रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे ...

सकळ लोक मान सहुने वंदे
नींदा न करे केनी रे
वाच काछ मन निश्चळ राखे
धन धन जननी तेनी रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे ...

सम दृष्टी ने तृष्णा त्यागी
पर स्त्री जेने मात रे
जिह्वा थकी असत्य ना बोले
पर धन नव झाली हाथ रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे ...

मोह माया व्यापे नही जेने
द्रिढ़ वैराग्य जेना मन मान रे
राम नाम सुन ताळी लागी
सकळ तिरथ तेना तन मान रे
वैष्णव जन तो तेने कहिये जे ...

वण लोभी ने कपट- रहित छे
काम क्रोध निवार्या रे

एक टिप्पणी भेजें

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे

CamScanner

10:51 pm 4G 32%
bharatdiscovery.org
Ad

# वैष्णव जन तो तेने कहिये

**वैष्णव जन तो तेने कहिये** गुजरात के संत कवि नरसी मेहता द्वारा रचित भजन है जो महात्मा गाँधी को बहुत प्रिय था।

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।

पर दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।।
सकल लोक माँ सहुने वन्दे, निन्दा न करे केनी रे ।।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेरी रे ।।

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे ।।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, पर धन नव झाले हाथ रे ।।
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना तन मा रे ।।
राम नामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मा रे ।।
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे ।।
भणे नर सैयों तेनु दरसन करता, कुळ एको तेर तार्या रे ।।

वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीर पराई जाणे रे ।2।

पन्ने की प्रगति अवस्था

आधार प्रारम्भिक माध्यमिक पूर्णता शोध

# टीका टिप्पणी और संदर्भ

CamScanner

10:49 pm 33%

For the 1982 Indian film, see Narsinh Mehta (film).

**Narsinh Mehta**, also known as **Narsinh Bhagat**, was a 15th-century poet-saint of Gujarat, India, honored as the first poet, or *Adi Kavi*, of the Gujarati language. Narsinh Mehta is member of Nagar Brahman community. Narsinh became a devotee of Krishna, and dedicated his life to composing poetic works described as *bhakti*, or devotion towards Krishna. His *bhajans* have remained popular in Gujarat and Rajasthan for over 5 centuries. Most notably, his composition *Vaishnav Jan To* was Mahatma Gandhi's favorite and became popular with freedom fighters across India.[1]

| Narsinh Mehta | |
|---|---|
| **Born** | Early 15th century<br>Talaja, Bhavnagar, Gujarat under Delhi Sultanate |
| **Died** | Late 15th century<br>Mangrol, Saurashtra, Gujarat Sultanate |
| **Honors** | Gujarat's Adi Kavi (First Poet) |
| **Notes** | |
| No consensus on dates among scholars except living in 15th century | |

CS CamScanner

10:47 pm 33%

में, वह विवेकानंद के सामने नाचेगी—तो विवेकानंद ने जाने से इनकार कर दिया: कि मैं नहीं जाऊंगा। मैं संन्यासी हूं, वेश्या का नृत्य देखूं! पास ही शामियाना था जहां विवेकानंद ठहरे थे, जहां उत्सव होनेवाला था। लेकिन राजा तो राजा, राजा ने कहा अब नहीं आते तो न आएं, उत्सव तो चलेगा ही। अब वेश्या भी आ गयी, मेहमान भी आ गए, शराब भी आ गयी, अब जलसा तो बंद नहीं हो सकता; तो उनके बिना चलेगा।

जलसा शुरू हुआ। लेकिन उस वेश्या ने बड़ा अद्भुत गीत गाया। उसने नरसी मेहता का एक भजन गाया। पास ही था शामियाना, विवेकानंद को सुनायी पड़ने लगा नरसी मेहता के भजन उस वेश्या के टपकते आंसू और नरसी मेहता का भजन! नरसी मेहता के भजन में यह कहा गया है कि पारस पत्थर को इस बात की चिंता नहीं होती कि जो लोहा वह छू रहा है, वह पूजागृह में रखा जानेवाला लोहा है या कसाई के घर जिस लोहे से जानवरों की हत्या की जाती है, वह लोहा है। पारस पत्थर तो दोनों लोहों को छूकर सोना बना देता है। तो वह वेश्या अपने गीत में कहने लगी कि तुम कैसे पारस हो? तुम्हें अभी वेश्या दिखायी पड़ती है! मैं तो कितने भाव लेकर आई थी, मैं तो कितने भजन संजोकर आई थी —वेश्या सच में भजन संजोकर आयी थी। सोचा वेश्या ने कि विवेकानंद, संन्यासी के सामने नृत्य करना, गीत गाने हैं, तो मीरां के भजन लायी थी, नरसी मेहता के भजन लाई थी; जीवन को धन्य समझा था, कि आज मेरा नृत्य भी सार्थक होगा।

विवेकानंद को बहुत चोट लगी जब उन्होंने सुना यह नरसी मेहता का भजन। उठे और पहुंच गए समारोह में और वेश्या से क्षमा मांगी और कहा, मुझसे भूल हो गयी। मेरी गलती। मैं ही अभी पारस नहीं हूं, इसीलिए यह विचार किया कि कौन लोहा पात्र, कौन लोहा अपात्र। विवेकानंद ने कहा है कि उस दिन मेरी आंख खुल गयी। उस दिन से मैंने भेद करने छोड़ दिए पात्र—अपात्र के। वह पुरानी आदत उस वेश्या ने छुड़ा दी। वह वेश्या मेरी गुरु हो गयी।

जीवन बहुत अनूठा है। रहस्यपूर्ण है। कहां से द्वार खुलेगा परमात्मा का, कहना मुश्किल है।

राम दुवारे जो मरै-(प्रवचन-04)

CamScanner

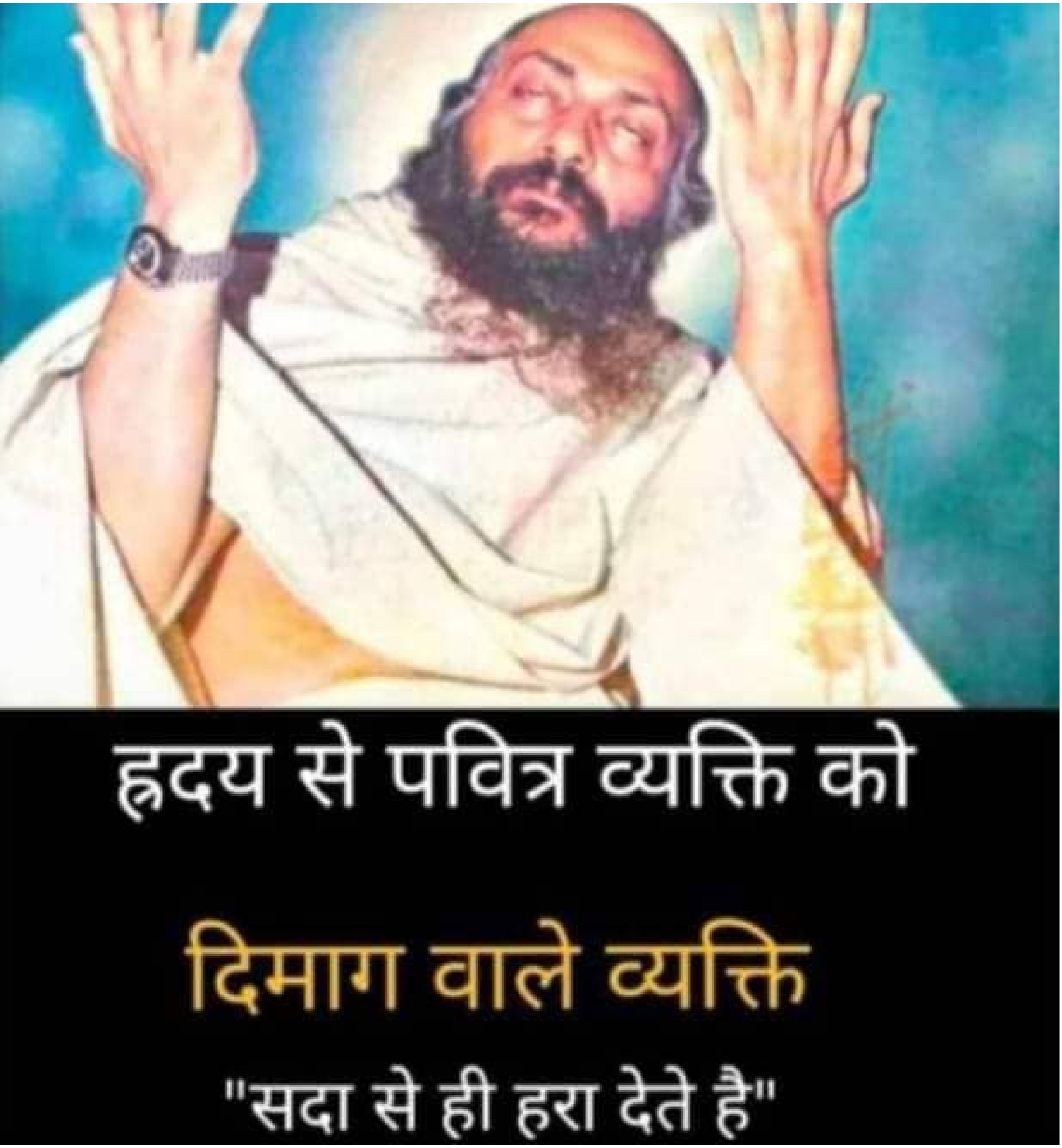


CamScanner

ता ही हो तुम, चोरी की या नहीं, इससे थोड़ी ही कोई चोर होता है! चोर होना तुम्हारी चेतना की दशा है।

मुल्ला नसरुद्दीन एक ट्रेन में सफर करता था। उस डिब्बे में दो ही थे, वह था और एक सुंदर स्त्री थी। उसने सुंदर स्त्री को कहा कि अगर मैं हजार रुपए दूं तो रात मेरे साथ सोओगी? उस स्त्री ने कहा, तुमने मुझे समझा क्या है? चेन खींच दूंगी, पुलिस को बुलाऊंगी। उसने कहा, नाराज न होओ, मैं तो सिर्फ एक निवेदन किया। अगर दस हजार दूं तो? स्त्री शांत हो गयी, फिर उाने नहीं चिल्लाया। उसने कहा कि पुलिस को बुलाऊंगी और चेन खींच दूंगी, मुल्ला ने कहा, दस हजार? तो उसने कहा, दस हजार के लिए मैं राजी हो सकती हूं; मुल्ला ने कहा, ठीक, और अगर दस रुपया दूं? तब तो वह स्त्री एकदम खड़ी हो गयी, उसने कहा, अभी चेन खींचती हूं;अभी पुलिस को बुलाती हूं। पर मुल्ला ने कहा, यह क्या बात हुई? उस स्त्री ने कहा, आप जानते नहीं मैं कौन हूं? मुल्ला ने कहा, मैं समझ गया तुम कौन हो, अब तो हम मोल– भाव कर रहे हैं। दस हजार में जब तुम सोने को राजी हो तो यह तो मैं जान ही गया कि तुम कौन हो, अब तो सिर्फ मोल– भाव की बात है –तो मैं व्यापारी आदमी हूं! वह तो मैंने दस हजार इसीलिए कहे थे कि पहचान लूं कि तुम हो कौन। वह बात खतम हो गयी, वह निर्णय हो चुका, अब नाहक चेन वगैरह न खींचो, बैठो;अब तो मोल– भाव कर लें बैठकर, जो भी तय हो जाए, ठीक है।

तुम भी सोच लेना, तुम्हारी जीवन–दशा तुम्हारी चोरी करने से चोर की नहीं होती, चोरी की वृत्ति! उस वृत्ति के कारण तुम दुख पाते हो। और हो सकता है चोर अगर सुख पा रहा है तो जरूर उसमें कुछ होगा, कुछ होगा जिससे सुख आता है–साहस होगा, बल होगा, दाव पर लगाने की हिम्मत होगी, निश्चित मन होगा कि हो जो हो। दुनिया क्या कहती है, इसकी फिकर न करता होगा। थोड़ी बगावती दशा होगी। कुछ होगा उसके भीतर, कुछ गुण होगा जिसके कारण सुख मिलता है।....ओशो

CS CamScanner

10:40 pm 34%

तुम्हारी नाभि में तुम्हारे जीवन का सारा राज छिपा है ।
इसलिए कबीर ने ' कस्तूरी कुंडल बसै ' यह प्रतीक
चुना है ।

और घटना वही घट रही है जो मृग के साथ घटती है ।
मृग बिलकुल पागल हो जाता है , टकरा लेता है सिर को
जगह-जगह , लहूलुहान हो जाता है ।
और इतनी मादक गंध आती है , रुक भी नहीं सकता ;
खोजना चाहता है , कहां से गंध आती है ।
जितना भागता है उतना ही व्याकुल होता है ।
और जितना भागता है उतनी ही जगह उसकी गंध
व्याप्त हो जाती है । उतना ही और भी दिग्भ्रम पैदा होने
लगता है कि कहां से आ रही है , कि पूरब से कि
पश्चिम से कि दक्षिण से । क्या करे यह मृग ?
इस मृग को कैसे समझायें कि तू बैठ जा ,
आंख बंद कर ले , भीतर उतर -- तेरे भीतर ही गंध का
राज छिपा है !

तुम भी आनंद की तलाश में कहां-कहां नहीं घूम
लिए हो । कितने चांद-तारों पर नहीं घूम लिए हो ।
कितनी पृथ्वियां नहीं तुमने नाप डाली हैं ।
कितने जन्मों की लम्बी यात्रा है ।
हिंदू कहते हैं, चौरासी करोड़ योनियों में तुम एक ही
चीज को खोज रहे हो कि गंध कहां से आ रही है ?
आनंद कहां से मिलेगा ?
जीवन का राज कहां छिपा है । परमात्मा कहां है ?

और कबीर कहते हैं ,
' कस्तूरी कुंडल बसै ।
तेरा साईं तुज्झ में, जागि सकै तो जाग । '

ओशो : घूंघट के पट खोल--प्रवचन -04

CamScanner

10:39 pm VoLTE 4G 34%

पश्चिम में लोग मजाक करते हैं ।
पूरब के योगियों को कहते हैं , ' वे लोग जो अपने नाभि में टकटकी लगाकर देखते रहते हैं । '
वहां क्या रखा है ? वहीं सब कुछ रखा है ।
तुम्हें शायद पता नहीं कि
मां के गर्भ में तुम नाभि से ही मां से जुड़े थे ।
नाभि तुम्हारे जीवन का केन्द्र है ।
वहीं से मां की जीवन-ऊर्जा तुम्हारे जीवन में प्रवाहित हो रही थी । फिर तुम तैयार हो गये ,
मां की जीवन-ऊर्जा की जरूरत न रही ,
तो नाल काट दी गई । तुम मां के गर्भ से बाहर आ गये ।
लेकिन तुम्हारी नाभि से एक अदृश्य नाल अभी भी परमात्मा से जुडी़ है । एक रजतरेखा तुम्हें जोड़े हुए है अस्तित्व से । तुम नाभि से ही जुड़े हो ।
नाभि में ही तुम्हारी जड़ है ।
न केवल शरीर के अर्थों में तुम नाभि से जुड़े हो ।
आत्मा के अर्थों में भी तुम नाभि से ही जुड़े हो ।

जिन लोगों को कभी शरीर के बाहर जाने का अनुभव हुआ है -- कई बार हो जाता है , कभी तो दुर्घटना में हो जाता है कि कोई आदमी ट्रेन से गिर पडा़ और उस झटके में उसकी आत्मा शरीर के बाहर निकल गई -- तो जिन लोगों को भी ऐसा अनुभव हुआ है दुर्घटना में , या योग की साधना में , या जान-बूझकर जो प्रयोग कर रहे थे शरीर के बाहर जाने का , उन सभी को एक बात दिखाई पडी़ है , और वह यह कि उनकी आत्मा कितनी ही दूर चली जाए , एक रजतरेखा नाभि से जुडी़ ही रहती है । अगर वह टूट जाये , फिर वापस शरीर में लौटने का उपाय नहीं रह जाता । वह कितनी ही ऊंचाई पर उड़ जाये , लेकिन वह रजत-रेखा बडी़ लोचपूर्ण है , वह खिंचती जाती है । वह कोई पदार्थ नहीं है ;
वह सिर्फ शुद्ध विद्युत-ऊर्जा है , इसलिए शुभ्र चांदी की भांति दिखाई पड़ती है ।

CamScanner

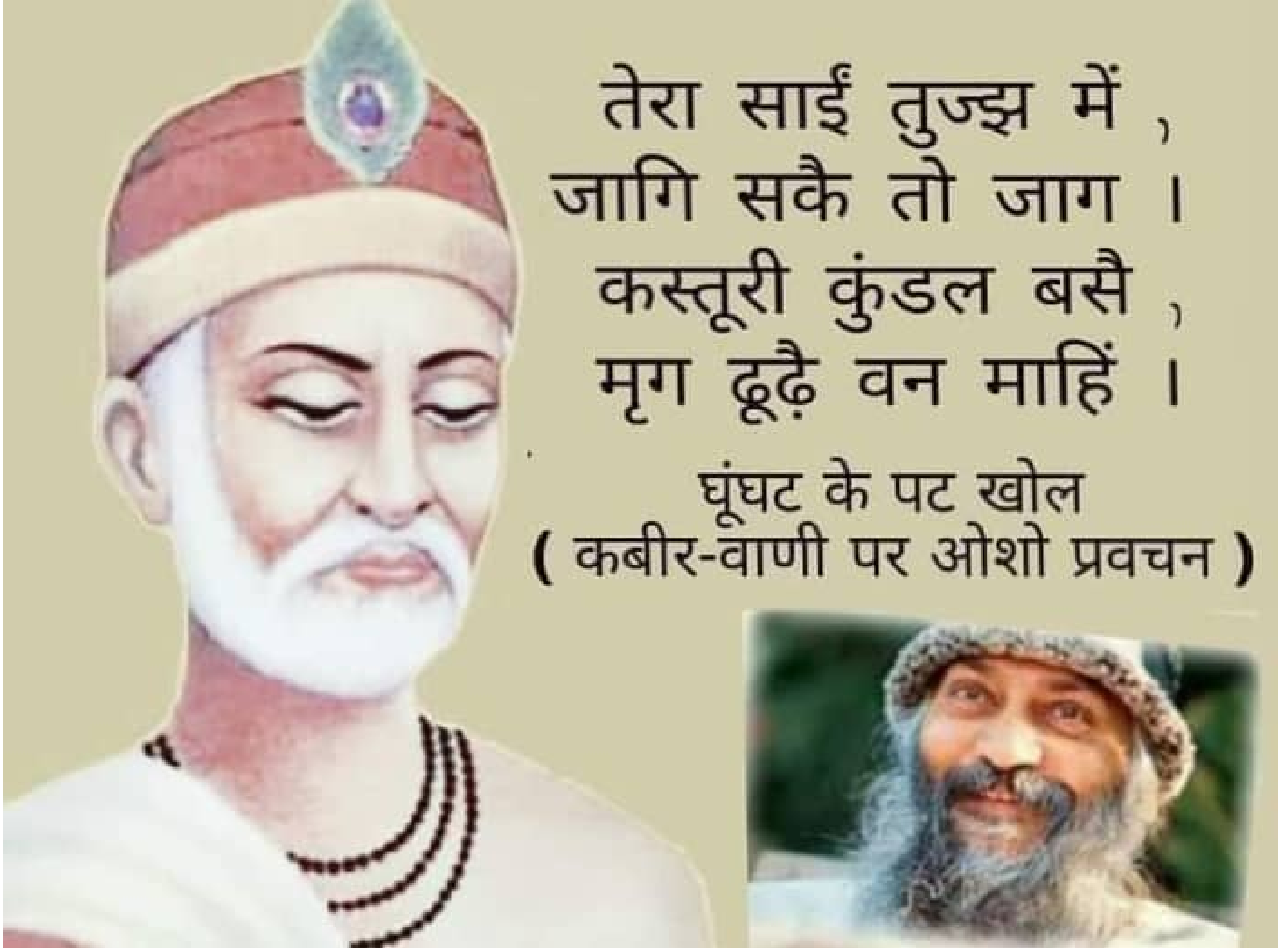

तेरा साईं तुज्झ में ,
जागि सकै तो जाग ।
कस्तूरी कुंडल बसै ,
मृग ढूढ़ै वन माहिं ।
घूंघट के पट खोल
( कबीर-वाणी पर ओशो प्रवचन )


CamScanner

10:35 pm 34%

#Zarathustra

All Videos Posts People Groups Reels E

और #दरिया कहते हैं: लोग कुछ भी मानते रहें, दरिया झूठ सो झूठ है, सांच सो सांच!

विश्वासों से मुक्त होना है और अनुभव की तलाश करनी है। सिद्धांतों से मुक्त होना है और स्वानुभूति में उतरना है। चित्त को निर्विचार करना है। ये विचार के चश्मे हैं, जो हर चीज को रंग देते हैं और हमारी देखने की क्षमता ही खो जाती है। जब चित्त निर्विचार होता है तो वह नजर पैदा होती है जो आर-पार देख लेती है। और तब सत्य के सिवाय कुछ भी नहीं बचता है। तब तुम जानते हो कालातीत को, समयातीत को। और जिसने समयातीत को जाना, वह समयातीत हो जाता है। जिसने कालातीत को जाना वह कालातीत हो जाता है। वह अमृत को उपलब्ध हो जाता है। वेद कहते हैं: अमृतस्य पुत्र:! तुम अमृत के पुत्र हो।

मगर मृत्यु को तुमने अपना सब कुछ मान रखा है, क्योंकि परिवर्तनशील को पकड़ कर बैठे हो। परिवर्तनशील को छोड़ो और अपने भीतर उसको तलाशो जो कभी नहीं बदलता। तुम्हारे भीतर क्या है जो नहीं बदलता? शरीर तो रोज बदलता है, मन तो प्रतिपल बदलता है। हृदय तो और भी जल्दी बदलता है। ये तीन तुम्हारी पर्तें हैं। और इन तीन के पार तुम्हारा जाग्रत चैतन्य है, तुम्हारा होश है। वह होश कभी नहीं बदलता। तुम जब बच्चे थे, तब भी वही होश था। फिर तुम जवान हुए, तब भी वही होश है। बूढ़े हो जाओगे, तब भी वही होश है। जीते जी भी वही होश है; और काश तुम मरते क्षण भी उस होश को सम्हाले रहो, फिर तुम्हारी कोई मृत्यु नहीं है। फिर तुम उस सूत्र को पकड़ लिए, जो मिटता ही नहीं।

एक ही चीज शाश्वत है, वह चैतन्य है। वही है #सच्चिदानंद। उसकी ही तलाश करनी है। उसकी ही तलाश में सारा जीवन लगा देना है।

– ओशो

सांच सांच सो सांच
प्रवचन - ०१
हे कोई शंख टटाई

CamScanner

# जरथुस्त्र से मुझे प्रेम हैं!

जरथुस्त्र से मुझे प्रेम है, क्योंकि जरथुस्त्र जैसा कोई व्यक्ति पृथ्वी पर शायद दूसरा नहीं हुआ। बुद्ध में कुछ न कुछ जीवन-निषेध है महावीर में तो बहुत कुछ जीवन-निषेध है। जीवन का इनकार कहीं न कहीं है। लेकिन जरथुस्त्र में जीवन की परम विधायकता है, जीवन का परिपूर्ण स्वीकार है। जीवन ही ढंग से जीने का नाम धर्म है। इसलिए जरथुस्त्र ने जो काम किया है, वह मेरे काम से बहुत मिलता-जुलता है।

**ओशो**

सांच सांच सो सांच - १

CS CamScanner

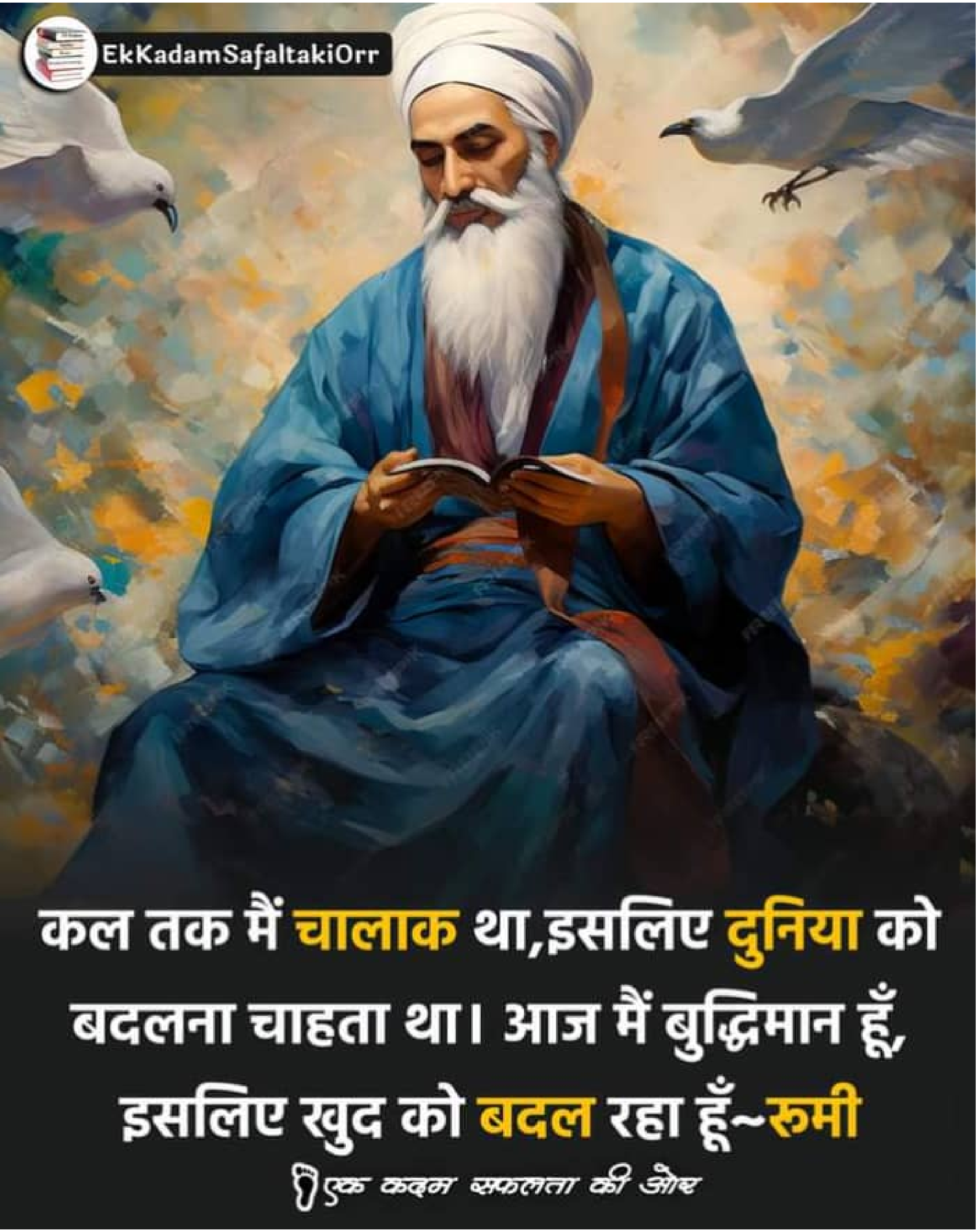
EkKadamSafaltakiOrr
कल तक मैं चालाक था,इसलिए दुनिया को
बदलना चाहता था। आज मैं बुद्धिमान हूँ,
इसलिए खुद को बदल रहा हूँ~रुमी
एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

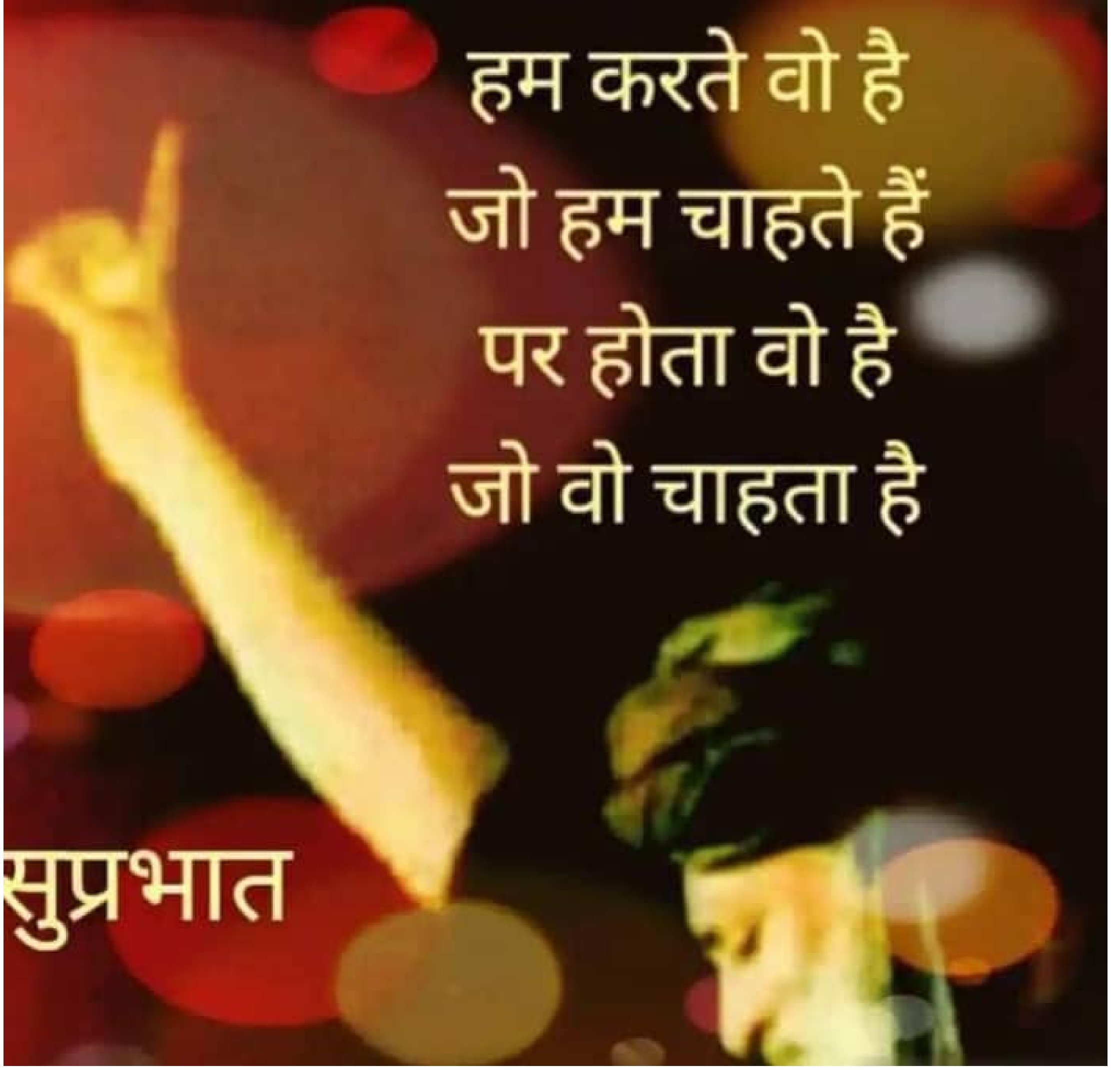


CamScanner

11:28 pm 27%

22h ·

हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है। तुमने कभी समझा, क्यों? दो कारणों से। एक तो हंस सार को असार से अलग कर लेता है। और दूसरा, हंस सभी दिशाओं में गतिवान है। वह जल में तैर सकता है, जमीन पर चल सकता है, आकाश में उड़ सकता है। उसके स्वातंत्र्य पर कहीं कोई सीमा नहीं है। जमीन हो तो चल लेता है। सागर हो तो तैर लेता है। आकाश हो तो उड़ लेता है। तीनों आयामों में, तीनों डायमेंशन्स में उसके लिए कहीं कोई रुकावट नहीं है। जिस दिन तुम सार और असार को पहचानने लगोगे, उस दिन तुम्हारा स्वातंत्र्य भी इतना ही अपरिसीम हो जाएगा जैसा हंस का। इसलिए हमने ज्ञानियों को परमहंस कहा है।

न जानने से ही बंधे हो। जमीन पर ही ठीक से रहना नहीं आता, पानी पर चलने की तो बात अलग! आकाश में उड़ना तो बहुत दूर! शरीर में ही ठीक से रहना नहीं आता, मन की तो बात अलग, आत्मा की तो बात बहुत दूर!

शरीर यानी जमीन। मन यानी जल। आत्मा यानी आकाश। इसलिए मन जल की तरह तरंगायित। शरीर थिर है पृथ्वी की तरह। सत्तर साल तक डटा रहता है। गिर जाता है उसी पृथ्वी में जिससे बनता है। मन बिलकुल पानी की तरह है। पारे की तरह कहो। छितर-छितर जाता है। आत्मा आकाश की तरह निर्मल है। कितने ही बादल घिरे, कोई बादल धुएं की एक रेखा भी पीछे नहीं छोड़ गया। कितनी ही पृथ्वियां बनीं और खो गयीं। कितने ही चांद-तारे निर्मित हुए और विलीन हो गए। आकाश कूटस्थ है, अपनी जगह, हिलता-डुलता नहीं।

शरीर में ही रहना तुमसे नहीं हो पाता, मन की तो बात अलग। मन में जाते ही चिंता पकड़ती है। विचारों का ऊहापोह पकड़ता है। आत्मा तो फिर बहुत दूर है। क्योंकि आत्मा यानी निर्विचार ध्यान, आत्मा यानी समाधि-आकाश, मुक्त, असीम।

🌺आचार्य रजनीश ओशो🌺

एस धम्मो संनतनो--( भाग 2)

CamScanner

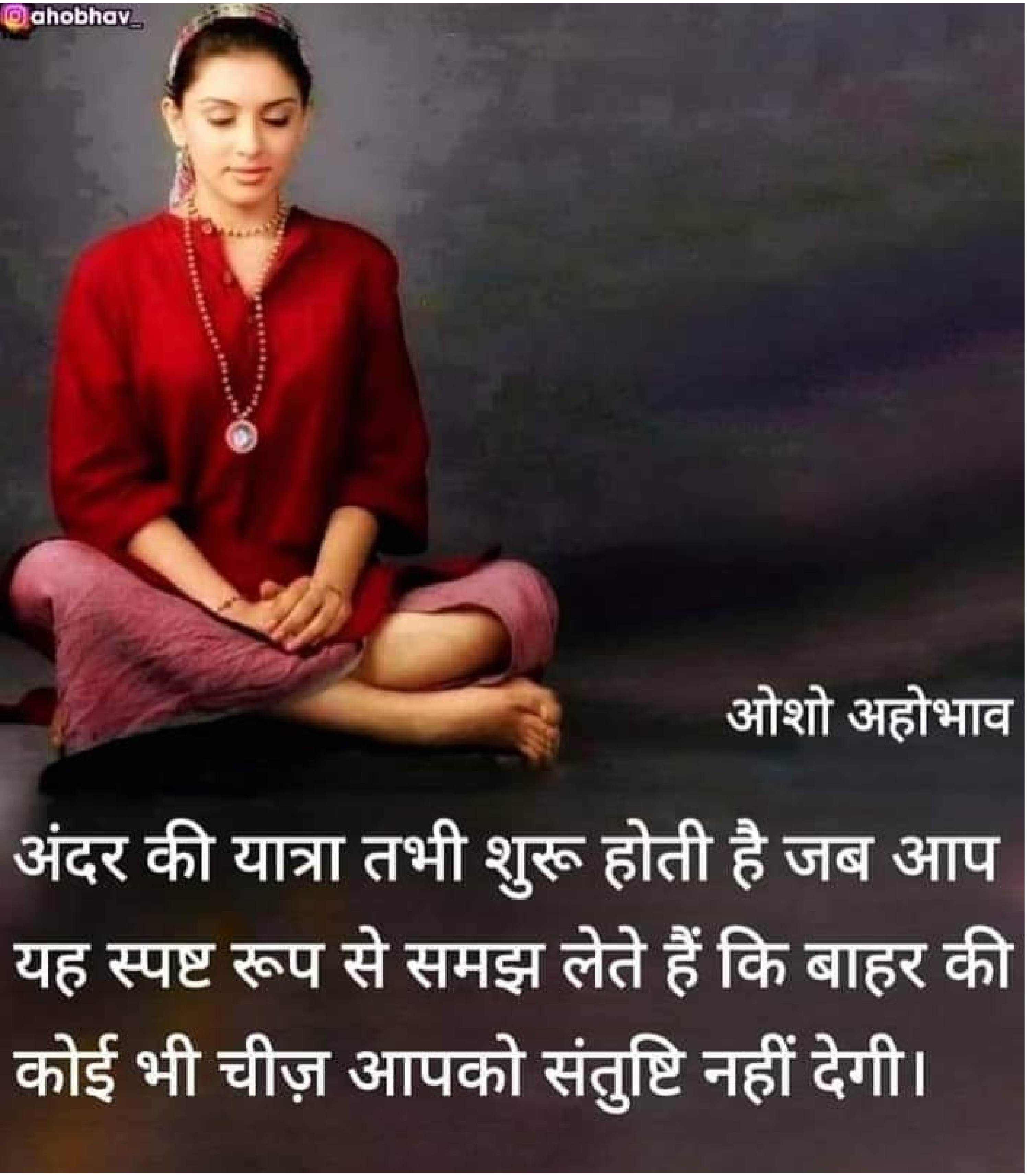
ahobhav_
ओशो अहोभाव
अंदर की यात्रा तभी शुरू होती है जब आप
यह स्पष्ट रूप से समझ लेते हैं कि बाहर की
कोई भी चीज़ आपको संतुष्टि नहीं देगी।

CamScanner

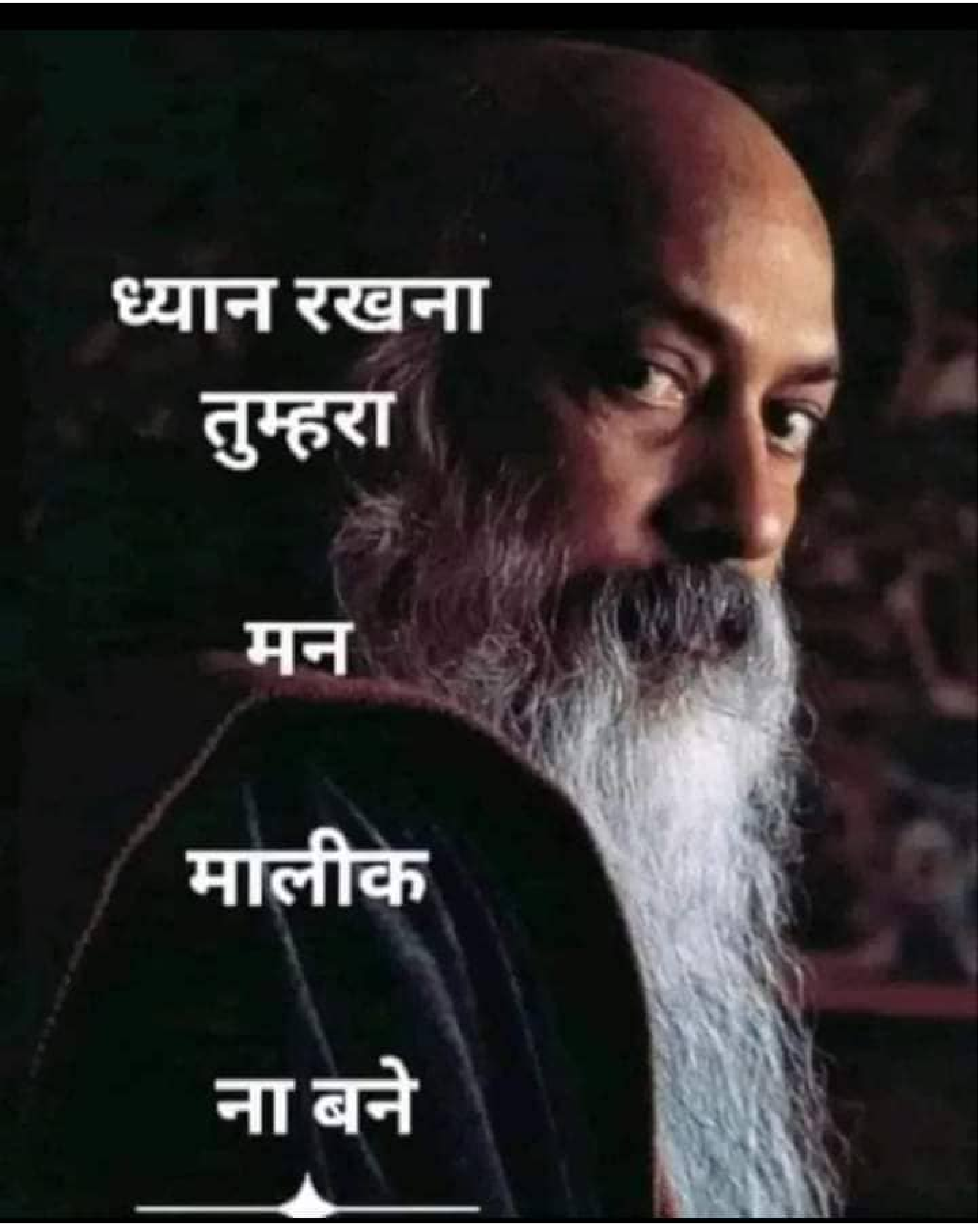


CamScanner

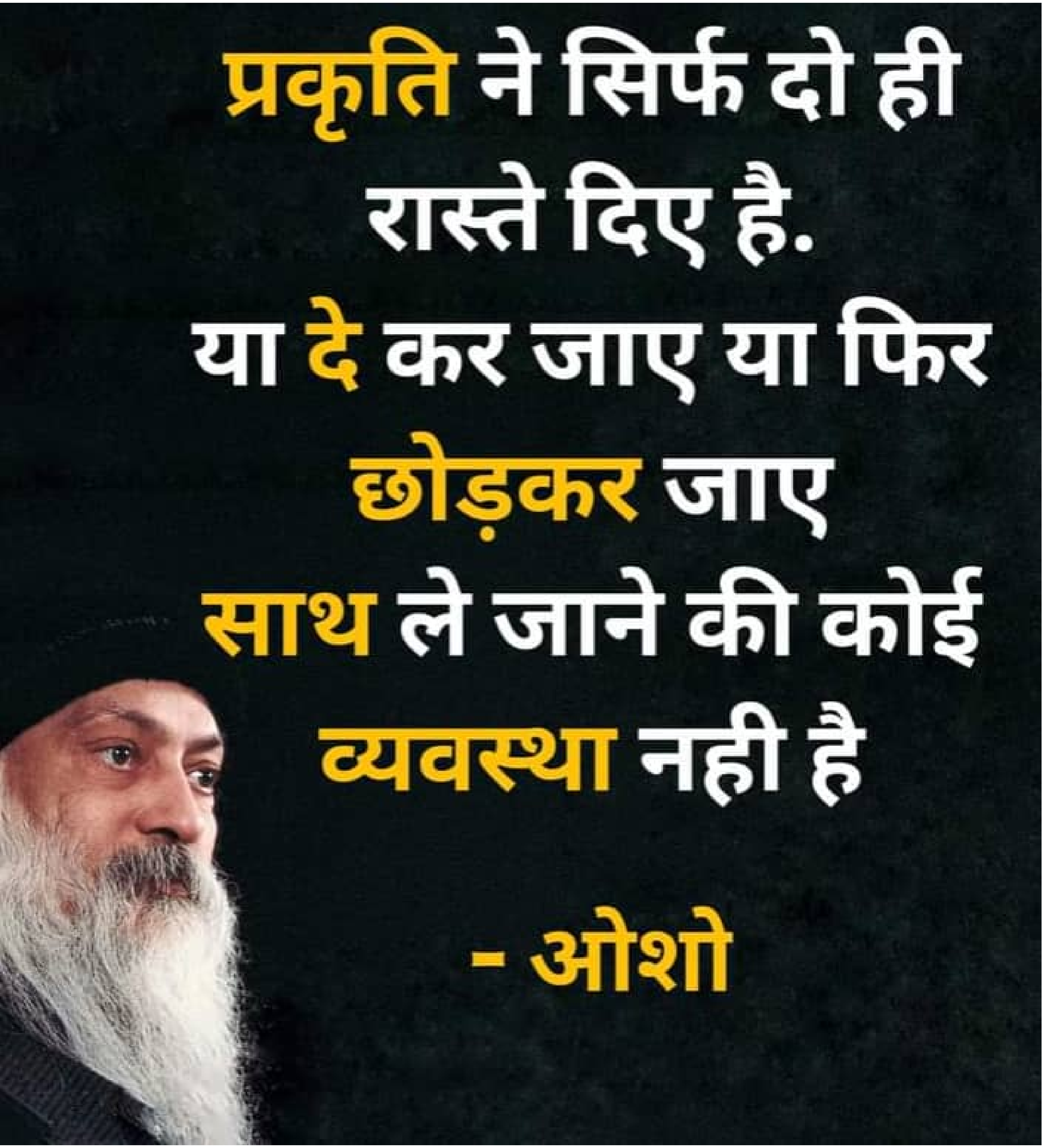


CamScanner

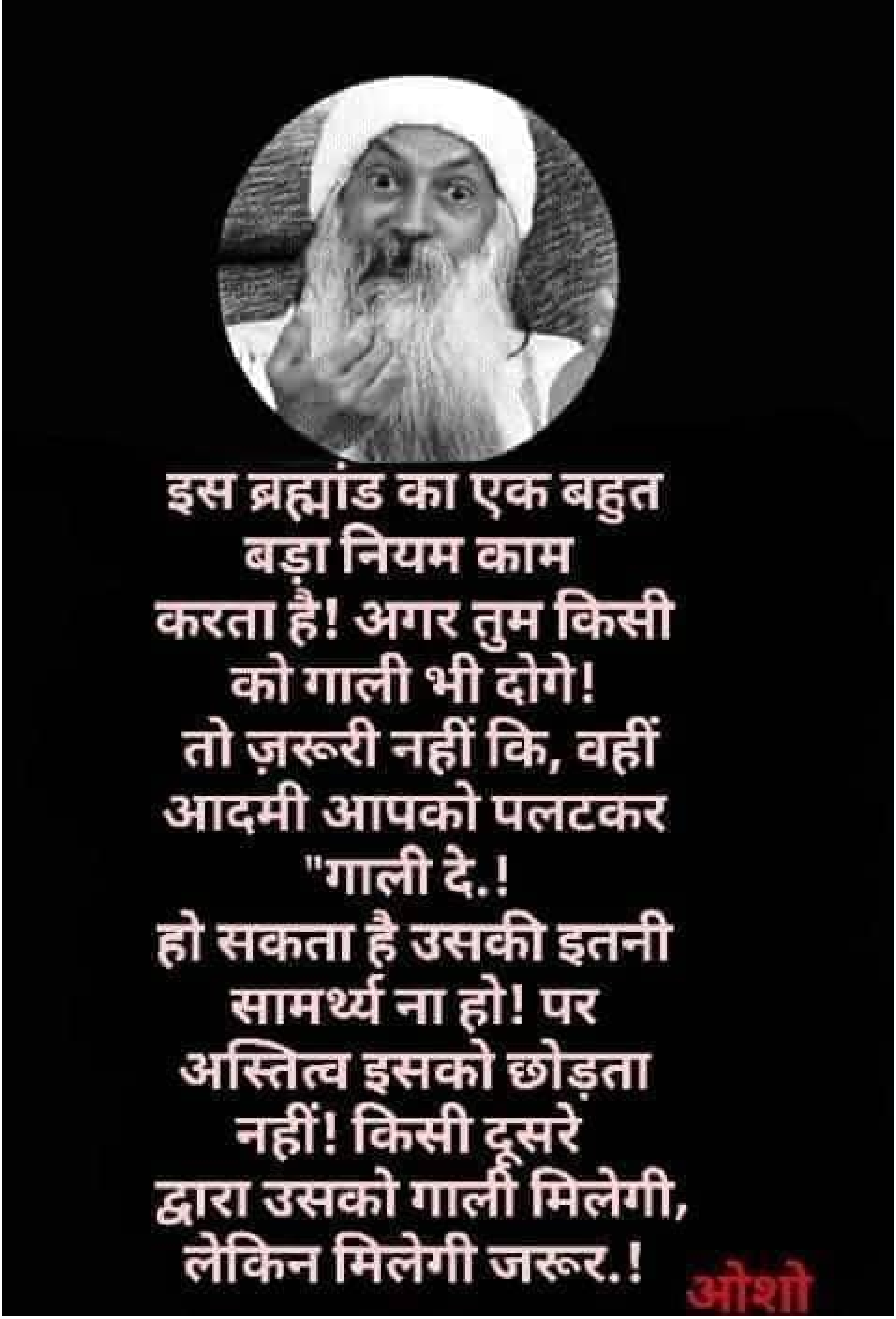
इस ब्रह्मांड का एक बहुत
बड़ा नियम काम
करता है! अगर तुम किसी
को गाली भी दोगे!
तो ज़रूरी नहीं कि, वहीं
आदमी आपको पलटकर
"गाली दे.!
हो सकता है उसकी इतनी
सामर्थ्य ना हो! पर
अस्तित्व इसको छोड़ता
नहीं! किसी दूसरे
द्वारा उसको गाली मिलेगी,
लेकिन मिलेगी जरूर.!
ओशो

CamScanner

CamScanner

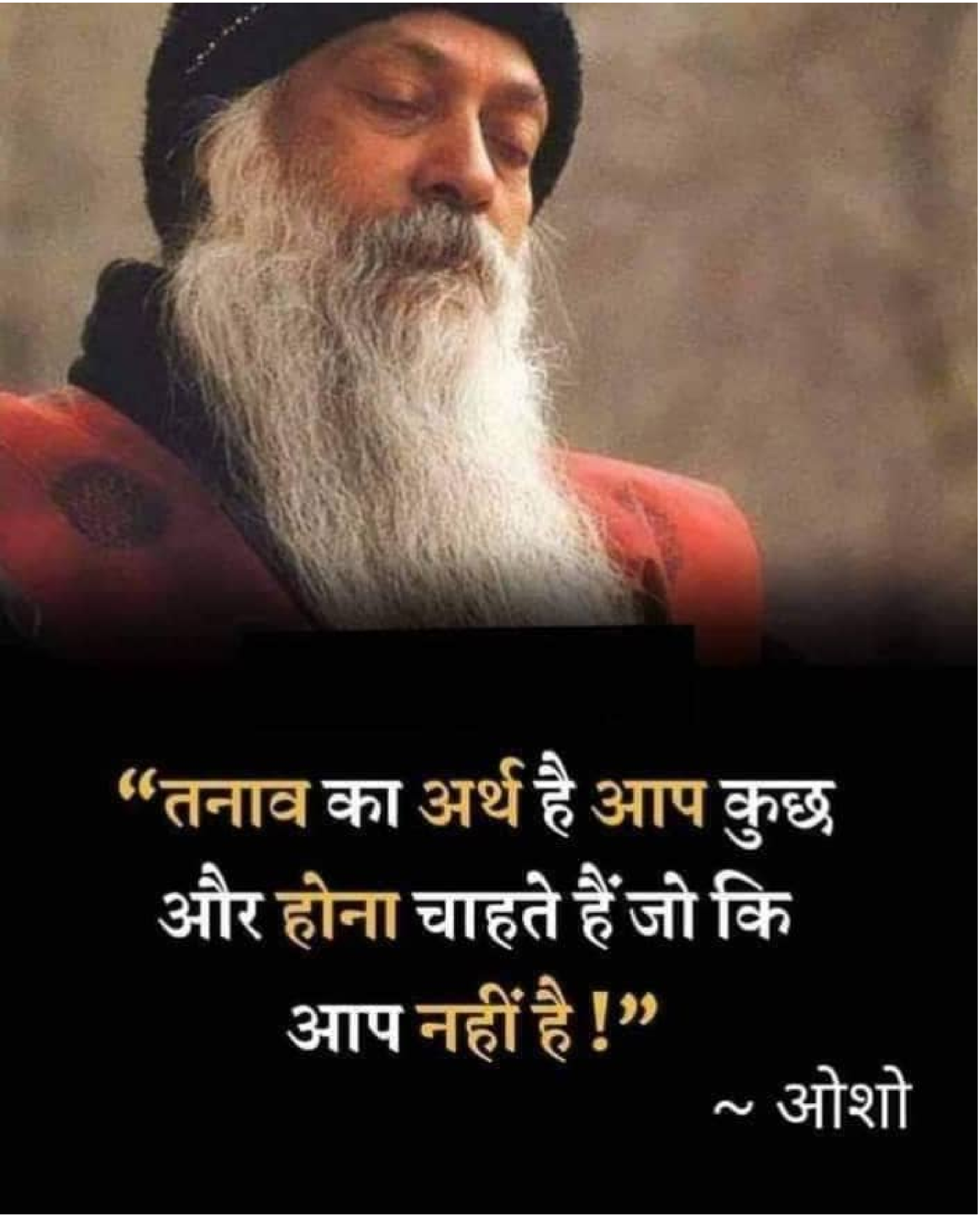


CamScanner

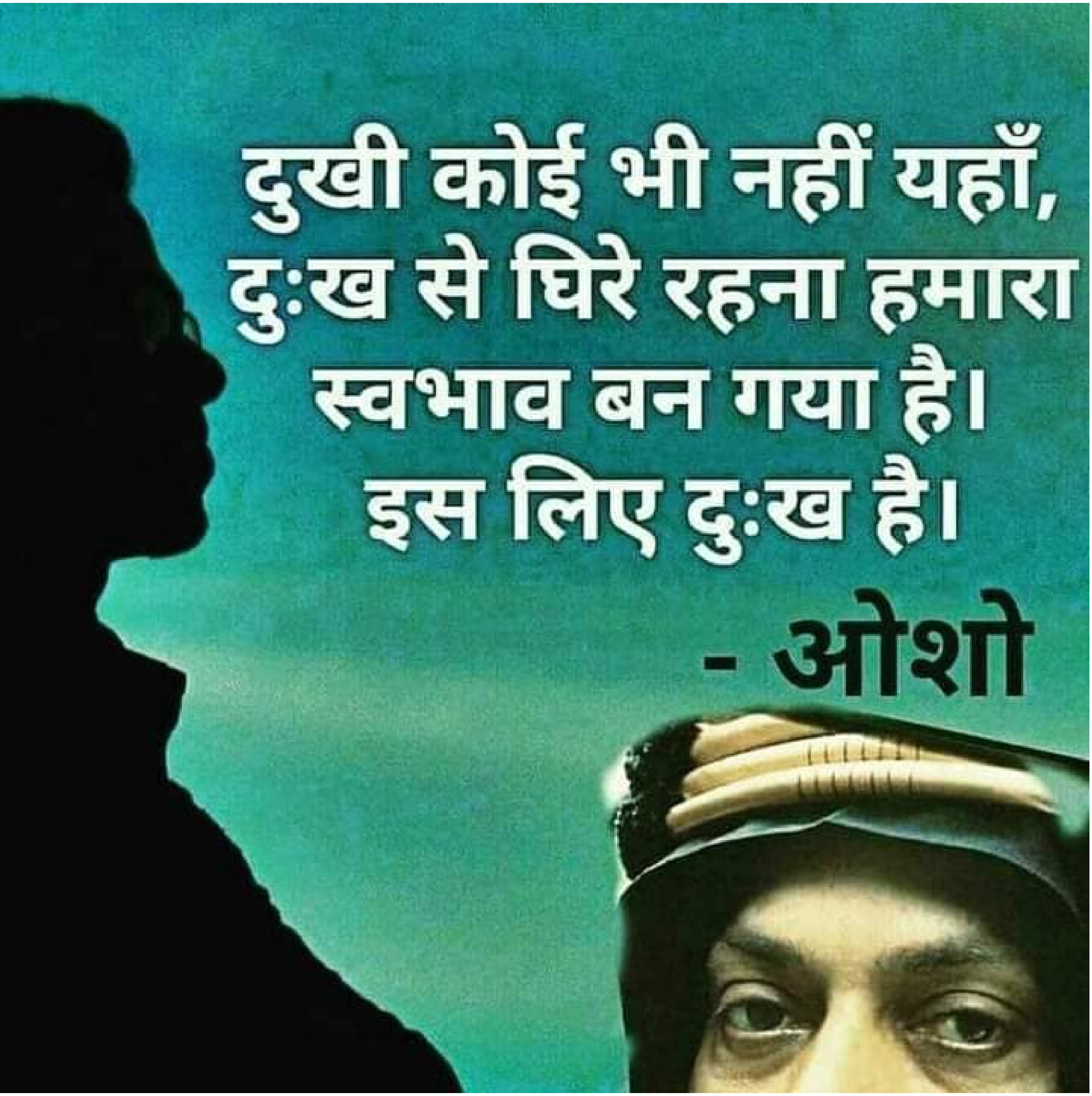


CamScanner

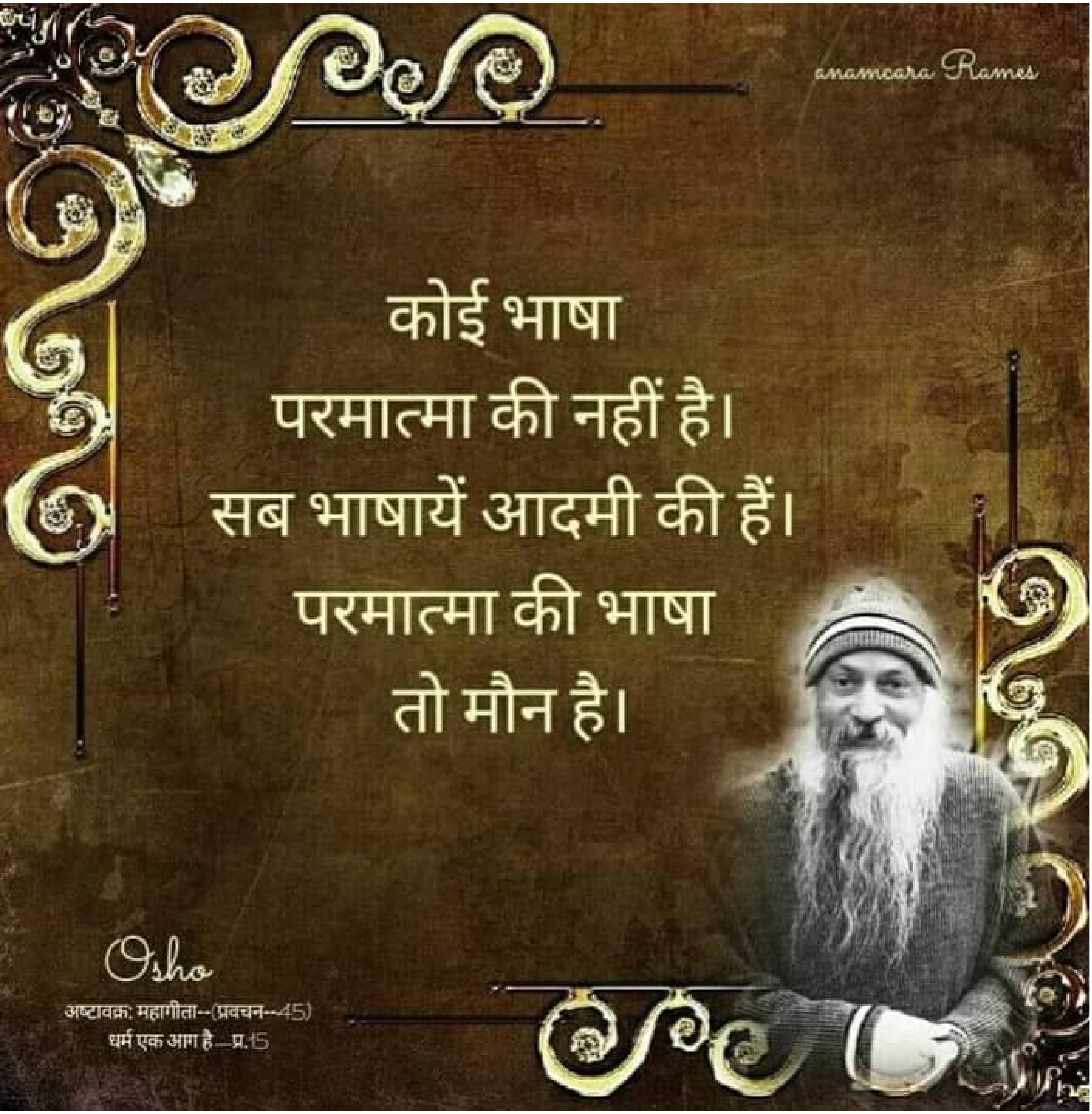
anamcara Rames
कोई भाषा
परमात्मा की नहीं है।
सब भाषायें आदमी की हैं।
परमात्मा की भाषा
तो मौन है।
Osho
अष्टावक्र: महागीता--(प्रवचन--45)
धर्म एक आग है—प्र.15

CamScanner

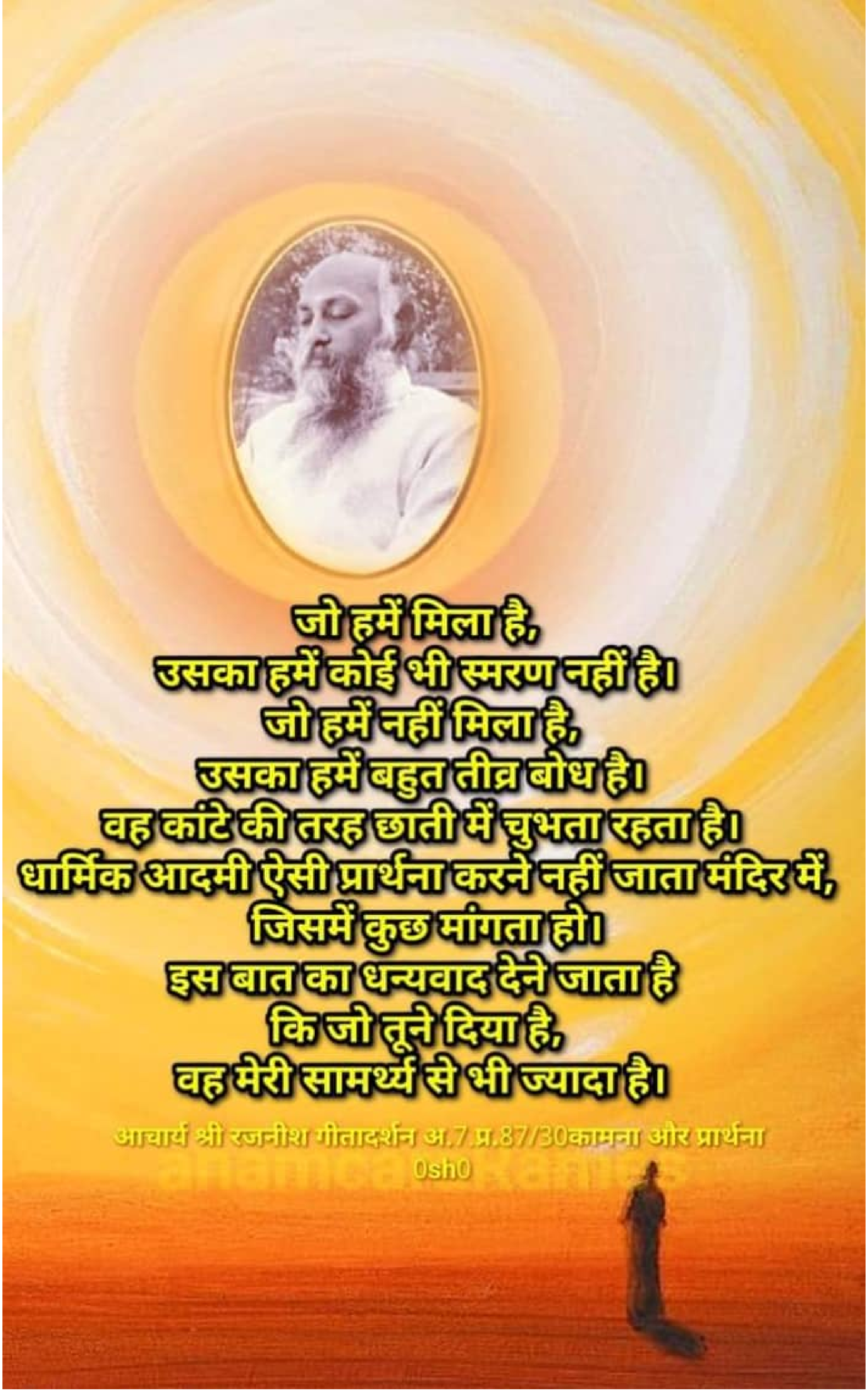
जो हमें मिला है,
उसका हमें कोई भी स्मरण नहीं है।
जो हमें नहीं मिला है,
उसका हमें बहुत तीव्र बोध है।
वह कांटे की तरह छाती में चुभता रहता है।
धार्मिक आदमी ऐसी प्रार्थना करने नहीं जाता मंदिर में,
जिसमें कुछ मांगता हो।
इस बात का धन्यवाद देने जाता है
कि जो तूने दिया है,
वह मेरी सामर्थ्य से भी ज्यादा है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.87/30कामना और प्रार्थना
0sh0

CamScanner

# नथनी

एक बार कबीरदास जी हरि भजन करते एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रही थीं। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुरालवालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार-बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये ख़ास उन्होंने मेरे लिए भेजी है। बार बार बस नथनी की ही बात।

उनके पीछे चल रहे कबीरजी के कान में सारी बातें पड़ रही थीं। तेजी से कदम बढ़ते कबीर उनके पास से निकले और कहा-

**नथनी दीनी यार ने, तो चिंतन बारम्बार,**
**नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार।**

सोचो यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहां पहनती ! यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है परंतु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और इस देह से संबंधित सारी वस्तुऐं, सभी रिश्ते-नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता ।

CS CamScanner

लाखों लोग पीड़ित हैं:
वे प्यार पाना चाहते हैं।
लेकिन वे नहीं जानते कि
प्यार कैसे करें। और प्रेम
एकालाप के रूप में मौजूद
नहीं हो सकता; यह एक
संवाद है, बहुत सामंजस्यपूर्ण
संवाद है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

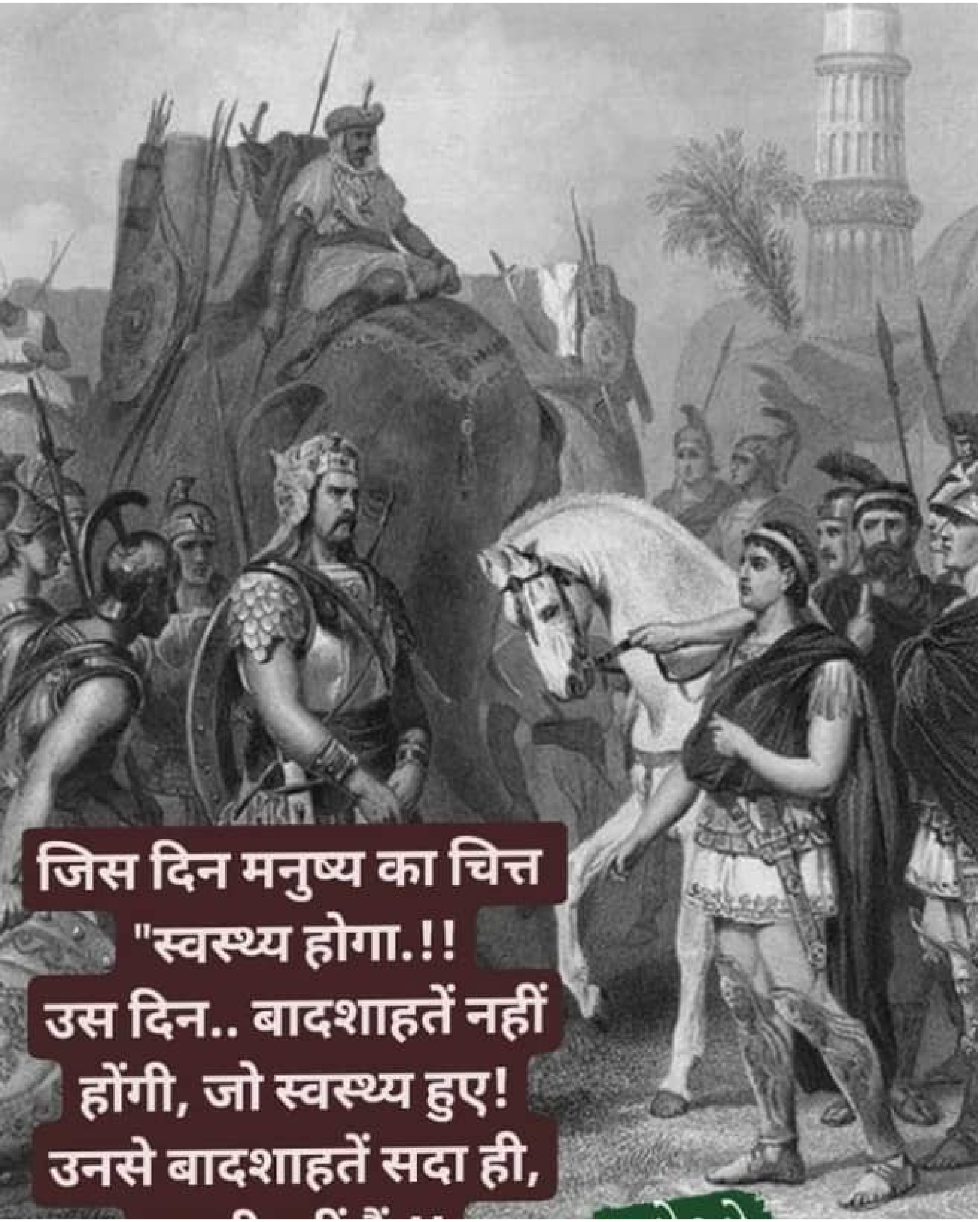
जिस दिन मनुष्य का चित्त
"स्वस्थ्य होगा.!!
उस दिन.. बादशाहतें नहीं
होंगी, जो स्वस्थ्य हुए!
उनसे बादशाहतें सदा ही,

CamScanner

11:21 pm 28%

Like Comment Send Share

**ओशो - जीवन-मृत्यु**

दिनेश कौशिक · 13h ·

एक बार तैमूर और बैजद के बीच भयंकर युद्ध हुआ! उनके बीच हुई एक चर्चा मुझे स्मरण आती है।

सुलतान बैजद युद्ध में हार गया था! और विजेता तैमूर के समक्ष बंदी बनाकर लाया गया था। उसे देख कर अनायास ही तैमूर जोर से हंसने लगा था। इस पर अपमानित बैजद ने बडे अभिमान से सर उठा कर कहा था: "जंग में फतह पाकर इतना गर्व मत करो तैमूर, याद रखो कि दूसरे की शिकस्त पर हंसने वाला एक दिन खुद अपनी शिकस्त पर आंसू बहाता है!"

सुलतान बैजद काना था और तैमूर लंगडा। काने बैजद की बात सुन कर लंगडा तैमूर और दुगनी तेजी से हंसने लगा और बोला: "मैं इतना बेवकूफ नहीं कि इस छोटी सी जीत पर हंसूं! मुझे तो अपनी और तुम्हारी स्थिति पर हंसी आ रही है! देखो न, तुम काने और मैं लंगडा! मैं तो यह सोच कर हंसा कि खुदावंद हम-तुम जैसे लंगडों-कानों को क्यों बादशाहतें देता है? "

मैं कब्र में सोए तैमूर से कहना चाहता हूं: "यह दोष खुदावंद का नहीं है। वस्तुत: लंगडों-कानों के अतिरिक्त और कोई बादशाहतें पाने को उत्सुक ही नहीं होता है।"

क्या यह सत्य नहीं है कि जिस दिन मनुष्य-चित्त स्वस्थ होगा, उस दिन बादशाहतें नहीं होंगी? क्या यह सत्य नहीं है कि जो स्वस्थ हुए हैं, उनसे बादशाहतें सदा ही छूटती रही हैं?

ओशो..✍️

CamScanner

11:19 pm 28%
248 3 comments • 20 shares
Like Comment Send Share

**Osho Human Being To Be.In.God**
12m ·

जीवन में जो भी सुंदर है वह अकेले में ही खिलता है, फूलता है, सुगंधित होता है। जीवन में जो भी श्रेष्ठ है वह सब अकेले में पैदा हुआ है। भीड़ ने कुछ भी महान को जन्म नहीं दिया--न कोई गीत, न कोई सौंदर्य, न कोई सत्य, न कोई समाधि। नहीं, भीड़ में कुछ भी पैदा नहीं हुआ। जो भी जन्मा है, एकांत में, अकेले में जन्मा है।

लेकिन हम अकेले होते ही नहीं। हम सदा भीड़ में घिरे हैं। या तो बाहर की भीड़ से घिरे हैं या भीतर की भी भीड़ से घिरे हैं। भीड़ से हम छूटते ही नहीं। क्षण भर को अकेले नहीं होते। इसलिए जो भी महत्वपूर्ण है जीवन में, वह चूक जाता है।

समाधि में तो केवल वे ही जा सकते हैं, जो बाहर की ही भीड़ से नहीं, भीतर की भीड़ से भी मुक्त हो जाते हैं, बस अकेले रह जाते हैं। निपट अकेले, टोटली अलोन, कुछ है ही नहीं, बस अकेला हूं, अकेला हूं, अकेला हूं। सत्य भी यही है। अकेले ही जन्मते हैं, अकेले ही मरते हैं, अकेले ही होते हैं, लेकिन भीड़ का भ्रम पैदा कर लेते हैं कि चारों तरफ भीड़ है। उस भीड़ के बीच इस भांति खो जाते हैं कि कभी पता ही नहीं चलता कि मैं कौन हूं।

आचार्य रजनीश ओशो

*समाधि के द्वार पर*

CamScanner

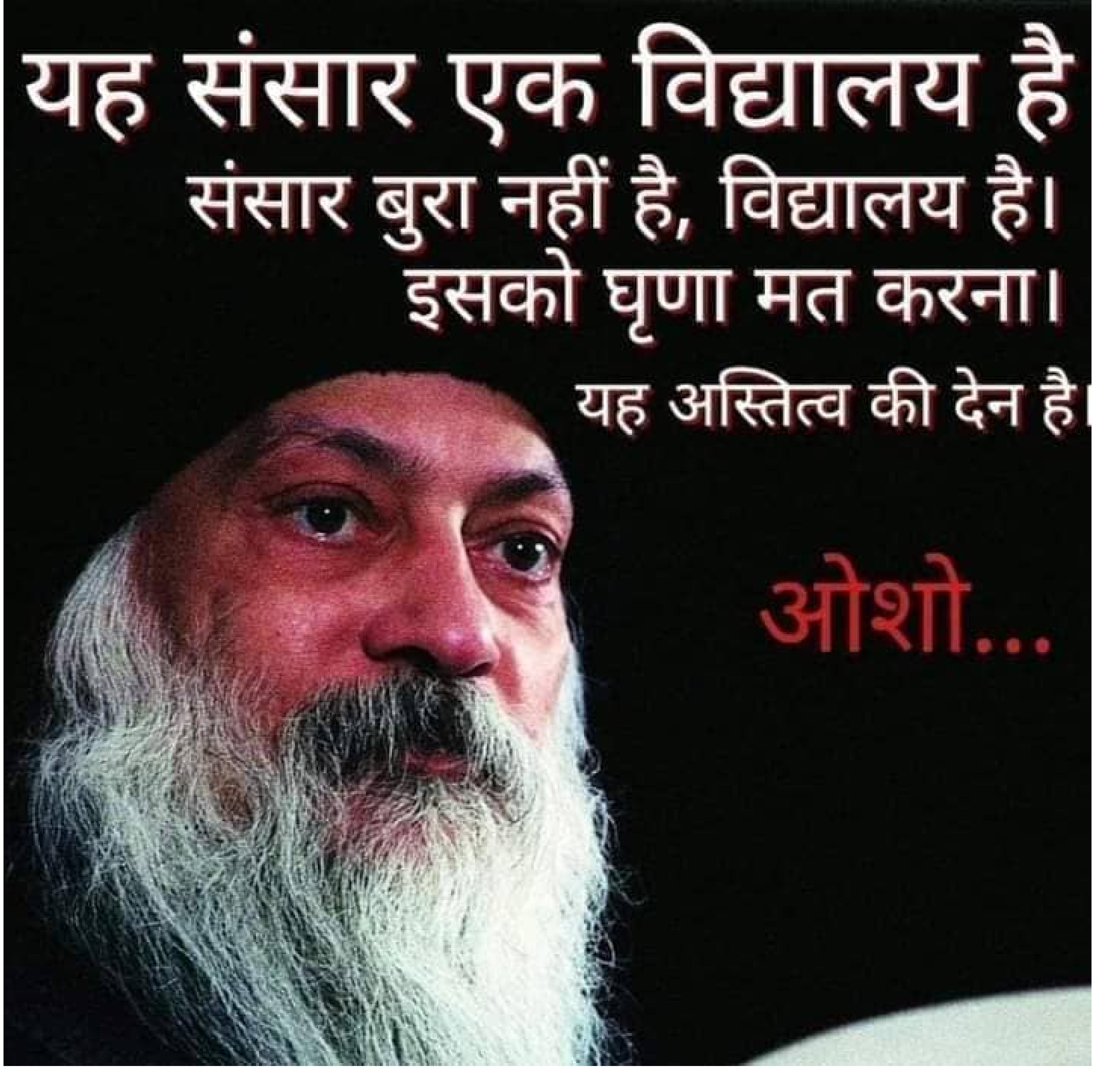
यह संसार एक विद्यालय है
संसार बुरा नहीं है, विद्यालय है।
इसको घृणा मत करना।
यह अस्तित्व की देन है।
ओशो...

CamScanner

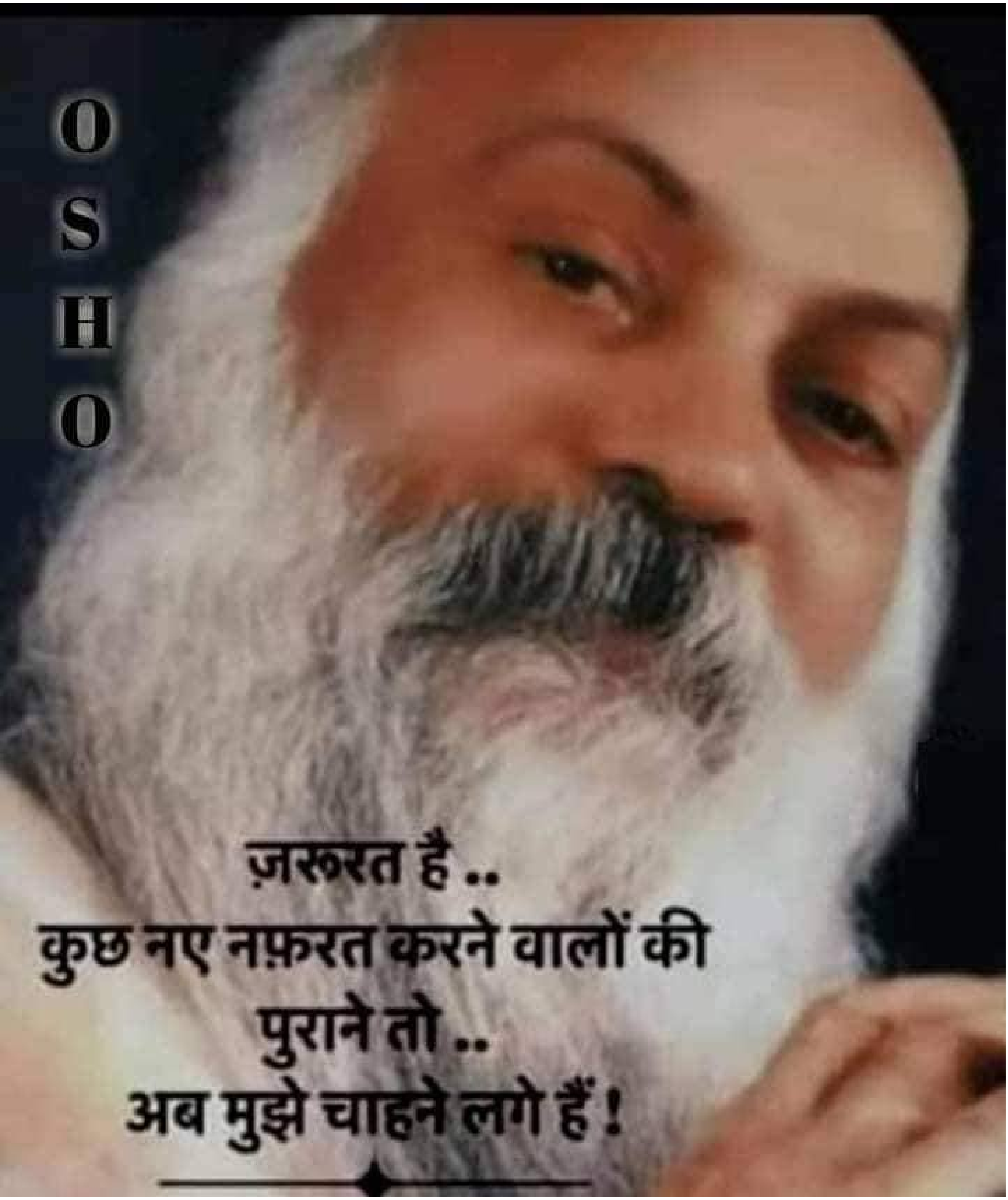


CamScanner

11:18 pm 28%

अमेय विक्रमा · 1d ·

तीसरा नेत्र (third I) कोई नेत्र नहीं जो इसे नाम दे दीया गया तीसरी आंख का यह वही परमात्मा है जो सभी के ही भीतर विद्यमान है !

और आपके संपर्क में आने वाले को पहले ही पहचान जाता है की इसकी वास्तविकता क्या है !

सामने वाला व्यक्ति अपने आप को लाख छुपा ले और आपसे जिस भी बनावटी प्रयोजन सहित ही क्यों ना आया हो !
आपके भीतर का यही परम तत्त्व सामने वाले को पहचान लेगा जिसे ही दिव्या दृष्टी का भी नाम दिया गया है , यह सत्य भी है ! यह वही परम चेतना है जिसे आपने जाग्रत कर लिया है और वह अपना कार्य करने लगा जब यह परम् चेतना जागृत होती है आप कम से कम लोगों की संगति में होने लगते हैं आपको हर किसी का संग या बात करना पसंद नहीं आयेगा !
ज़रुरी नहीं की आप जिससे पहले इतने घुले मिलन सार थे अब भी वैसे ही उसके साथ रहें ,
दृष्टी का कार्य किसी को पास लाना या दूर करना नहीं है यह वही चेतना शक्ति है जो जाग्रत होने पर
आपके फायदे नुकसान दोनों को ही आपके संपर्क में आने से पहले ही आपको चेता देती है ,!

और आप सतर्क हो जाते हैं , इसे केवल दृष्टी नहीं समझें दृष्टी का कार्य केवल देखना होता है, उसे देख कर समझने का कार्य वह दृष्टी नहीं आपकी बुध्दि ही करेगी इसीलिए आप ज्यादातर लोगों के संपर्क से कटना सुरु हो जाते हैं , क्योंकि यह आपको निगेटिव परसन के संपर्क में रहने ही नहीं देगी क्योंकि यह वही परम शक्ति है परम् चेतना है !

जिसे आपने जाग्रत कर लिया है यह आपका आगे का मार्ग दर्शक दिव्य प्रकाश के रूप में आपके हर क्षण आपके साथ होगा 😊🌹🙏

॥ ❤️ हर हर महादेव ❤️॥

CamScanner

11:17 pm 28%

लेकिन इस बात को मन हर एक इंसान को कहते देखा है.

लेकिन वो परमात्मा कोन है कैसा है कोई नही जानता.
बस मानने को मानते है.

कहते है वो सबके अंदर होता है.
लेकिन वो कैसे सबके अंदर होता है.
वो क्या है ये भी नही पता
बस मानने को मानते है.

तो इसे देखते हुए कुछ मेरे जैसे लोग जो स्वयं विचार रखते है.
काफी सोचा ऊस परमात्मा को
कैसे पता चलता है.
मैं क्या करता हू
मै क्या सोचता हु
ये जरूर पास मे ही होना चाहिए.
पास मे क्या अंदर ही होना चाहिए,
वर्णा मैं कैसे जानता हू.
कोण मेरे बारे मे किस तरह की सोच रखता है.

अगर कोई मेरे बारे मे बुरा भी सोचता होगा, तो पता नहीं हम लोग ऊस व्यक्ती से दूर रहणे लगते है.

भले ही उस व्यक्ती ने हमे कभी ना बोला हो लेकीन हमे फिर भी पता चल जाता है
सामने वला आदमी किस तरह का है.

वैसे ही सामने वाले को भी पता चल जाता है हम किस तरह के व्यक्ती है .

इस लिए किसी के बारे मे बूरा सोचने से पहले
अंदर ही एक बार सोच लीजिये परमात्मा सब जाणता है
वो सामने वाला भी एक दिन जान जायेगा.

#आपका_मित्र_वैभव

CamScanner

गौतम बुद्ध ने कहा था-
जिस दिन हम ये समझ जायेंगे कि
सामने वाला गलत नहीं है
सिर्फ उसकी सोच हमसे अलग है,
उस दिन जीवन से सब दुःख
समाप्त हो जायेंगे...

CamScanner

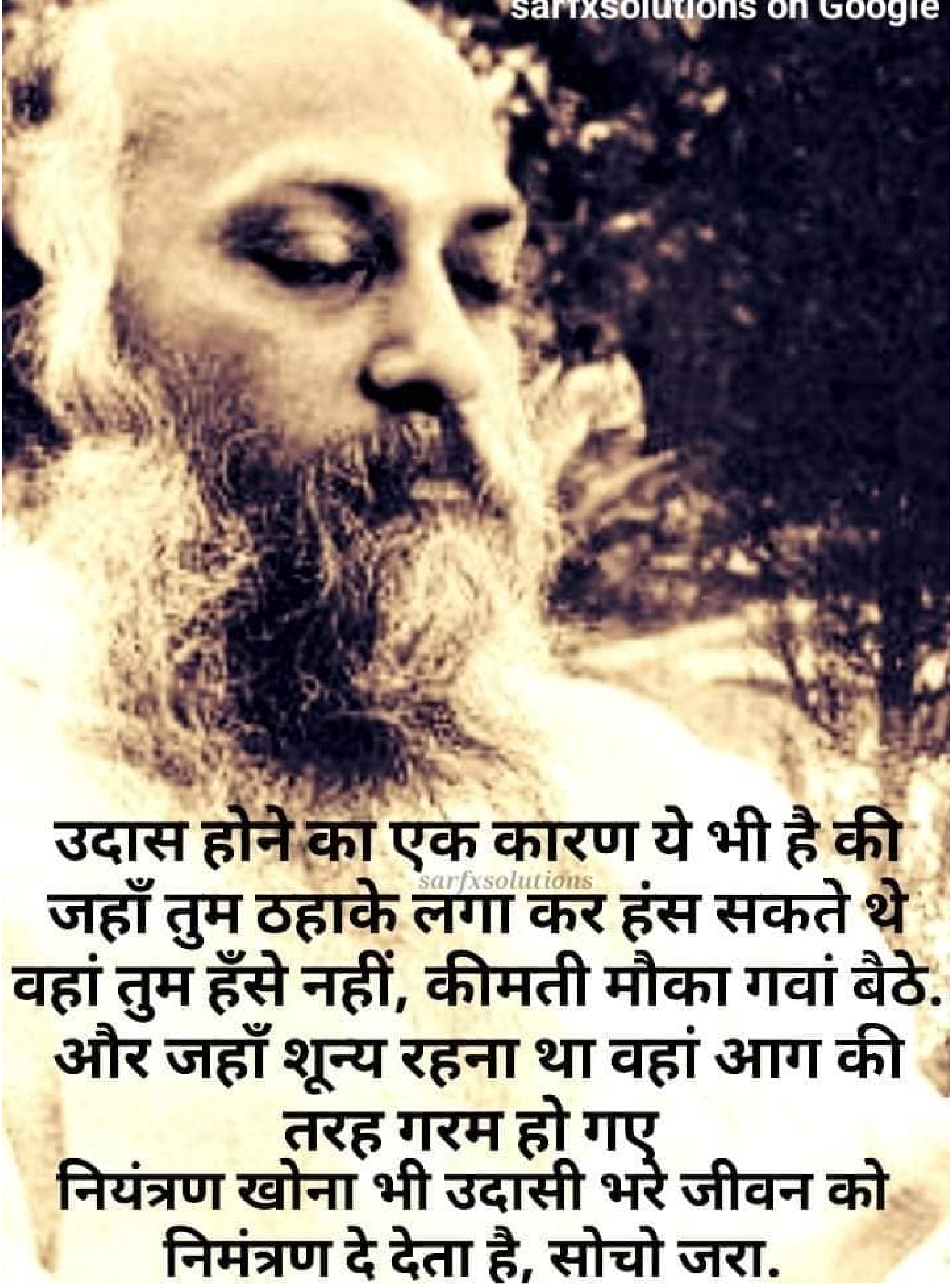


CS CamScanner

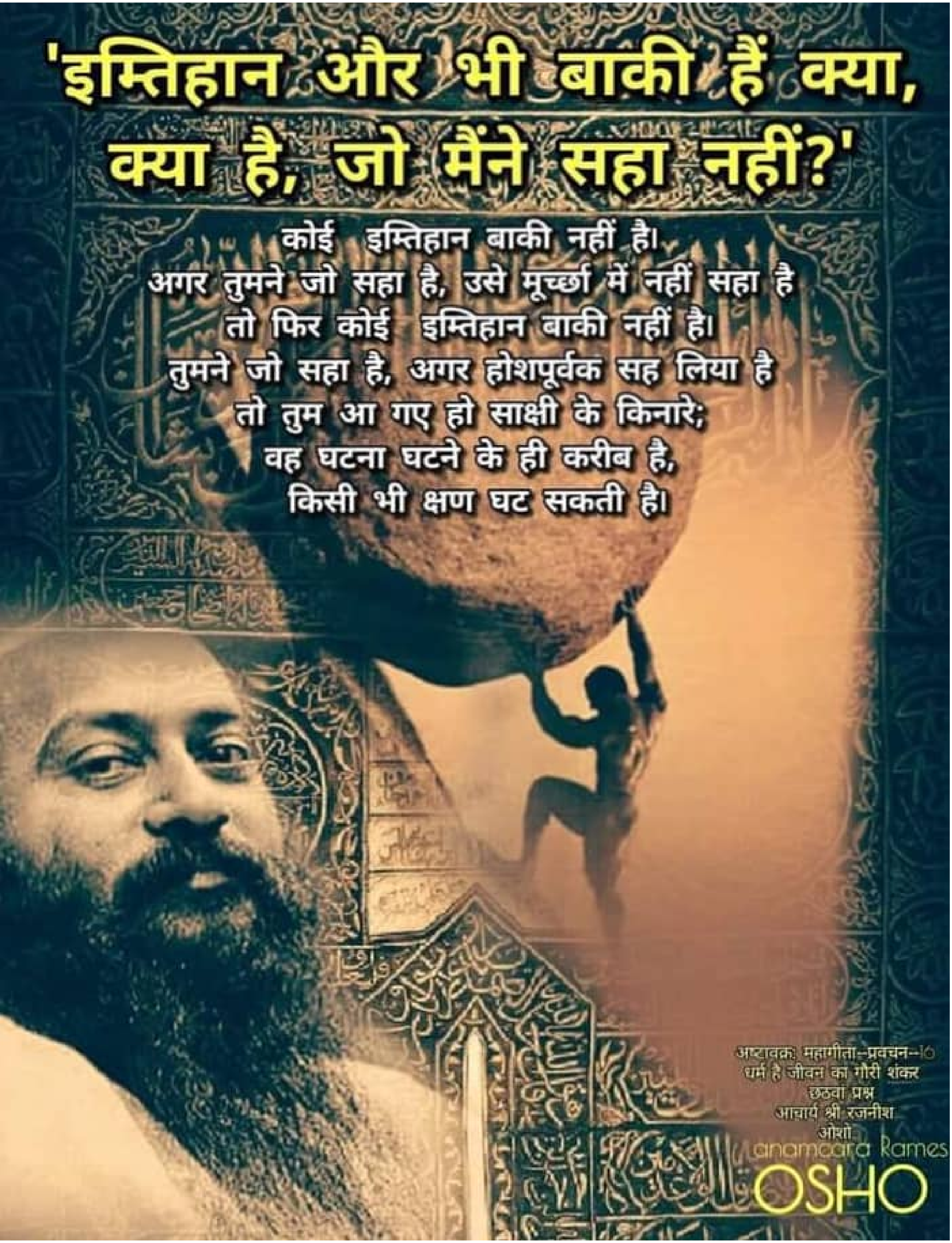
'इम्तिहान और भी बाकी हैं क्या,
क्या है, जो मैंने सहा नहीं?'
कोई इम्तिहान बाकी नहीं है।
अगर तुमने जो सहा है, उसे मूर्च्छा में नहीं सहा है
तो फिर कोई इम्तिहान बाकी नहीं है।
तुमने जो सहा है, अगर होशपूर्वक सह लिया है
तो तुम आ गए हो साक्षी के किनारे;
वह घटना घटने के ही करीब है,
किसी भी क्षण घट सकती है।
अष्टावक्र: महागीता-प्रवचन-16
धर्म है जीवन का गौरी शंकर
छठवां प्रश्न
आचार्य श्री रजनीश
ओशो
anamcara Rames
OSHO

CamScanner

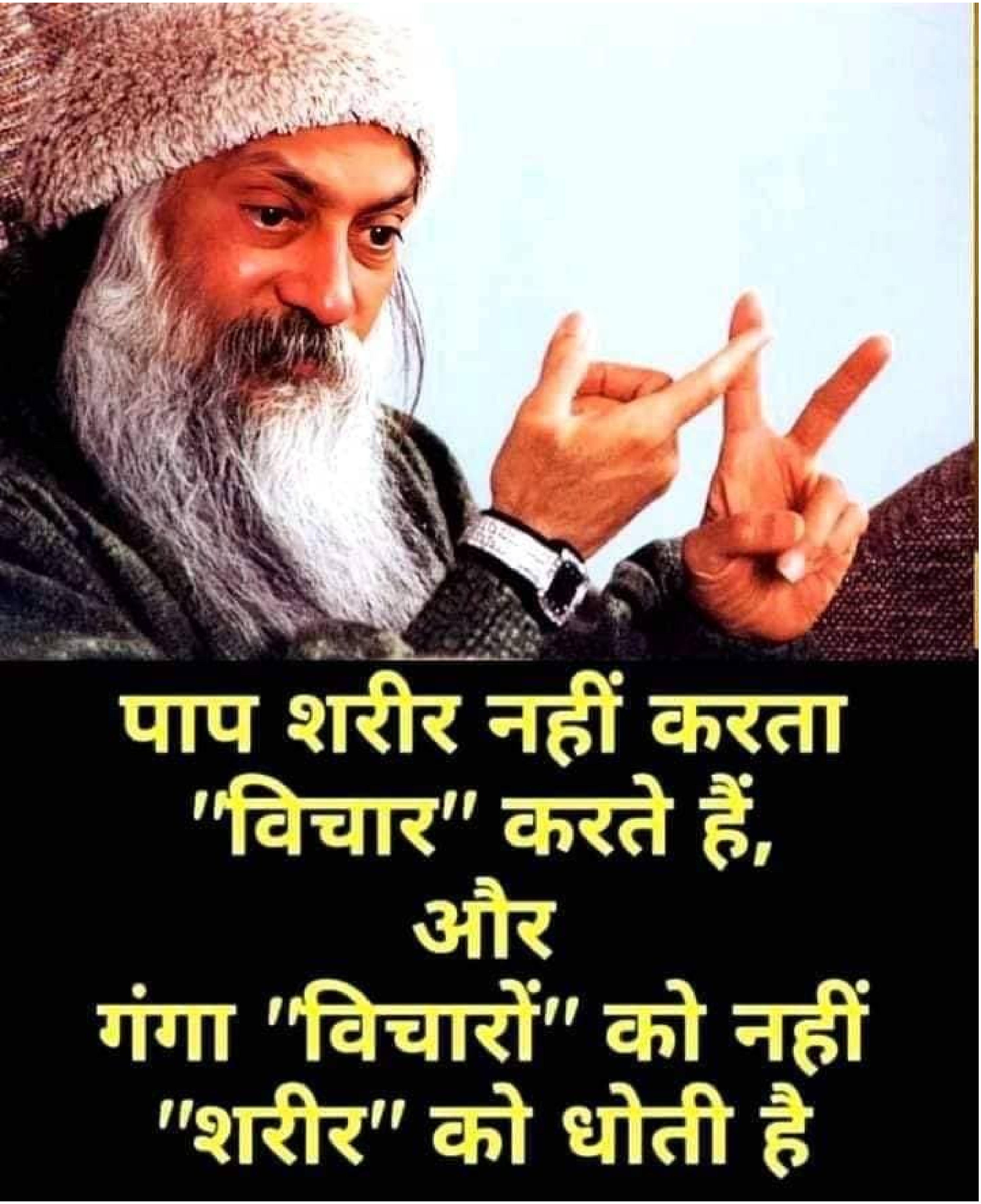


CamScanner

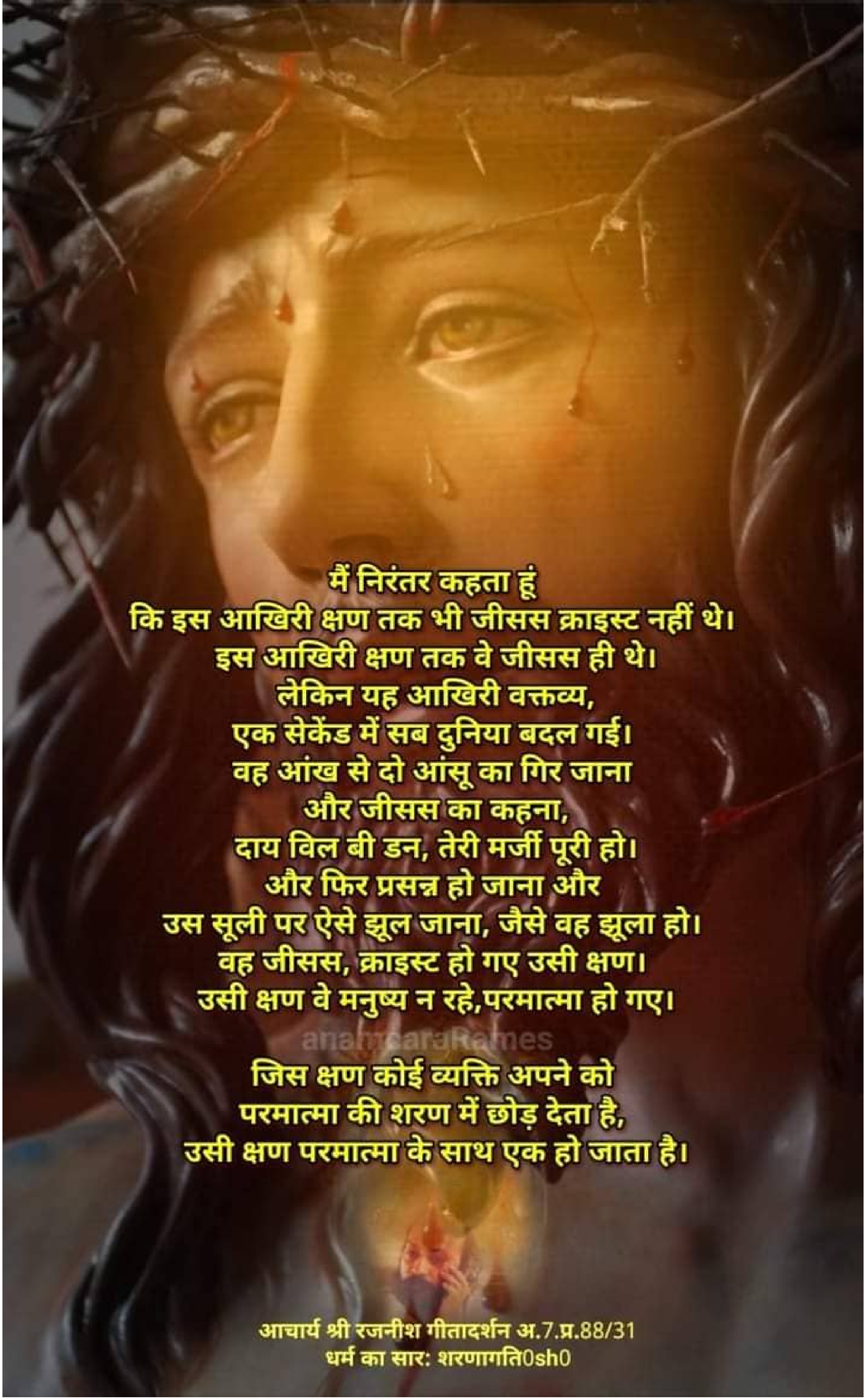
मैं निरंतर कहता हूं
कि इस आखिरी क्षण तक भी जीसस क्राइस्ट नहीं थे।
इस आखिरी क्षण तक वे जीसस ही थे।
लेकिन यह आखिरी वक्तव्य,
एक सेकेंड में सब दुनिया बदल गई।
वह आंख से दो आंसू का गिर जाना
और जीसस का कहना,
दाय विल बी डन, तेरी मर्जी पूरी हो।
और फिर प्रसन्न हो जाना और
उस सूली पर ऐसे झूल जाना, जैसे वह झूला हो।
वह जीसस, क्राइस्ट हो गए उसी क्षण।
उसी क्षण वे मनुष्य न रहे,परमात्मा हो गए।
जिस क्षण कोई व्यक्ति अपने को
परमात्मा की शरण में छोड़ देता है,
उसी क्षण परमात्मा के साथ एक हो जाता है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.88/31
धर्म का सार: शरणागति0sh0

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

11:05 pm VoLTE 4G 30%

बोधिधर्म ने कहा जल्द ही पता चल जाएगा। मेरे लोगों से मिलो तो बस इतना कह देना की हम हमेशा के लिए हिमालय में जा रहे हैं।

अधिकारी जितनी जल्दी हो सके तुरंत पहुंच गया, पहाड़ पर मठ जहां बोधिधर्म रह रहा था। और वहां उसने सुना कि उसे ज़हर दिया गया था और वह मर गया था.... और वहां कब्र थी। अधिकारी ने इसके बारे में नहीं सुना था, क्योंकि वह साम्राज्य की सीमा रेखाओं पर तैनात था। उसने कहा, हे मेरे भगवान, लेकिन मैंने उसे देखा है, और मैंने उसे देखा है, और मैं धोखा नहीं खा सकता क्योंकि मैंने उसे पहले भी कई बार देखा है। वह वही आदमी था, वही घोर आंखें, वही उग्र और जंगली नजरिया, और ऊपर से एक चप्पल, अपनी लाठी लेकर बैठा था।

शिष्य अपनी जिज्ञासा को रोक न सके, और उन्होंने कब्र खोल दी। वह जो भी पा सकते थें वह केवल एक चप्पल थी। और फिर अधिकारी समझ गया कि उसने क्यों कहा था, इसका मतलब पता चल जाएगा जल्द पता चल जाएगा।

हमने जीजस के पुनरुत्थान के बारे में बहुत सुना है। लेकिन किसी ने भी बोधिधर्म के पुनरुत्थान के बारे में ज्यादा बात नहीं कि है। शायद वह कोमा में ही था जब उन्होंने उसे दफनाया, और वह फिर होश में आया, कब्र से निकल गया, एक चप्पल वहां छोड़ दिया और दूसरी चप्पल अपने लाठी पर डाल ली, और योजना के मुताबिक, वह चला गया।

वह हिमालय की अनन्त बर्फों में मरना चाहता था। वह चाहता था कि उनकी न समाधि हो, न मंदिर हो, न मूर्ति हो। वह नहीं चाहता था कि कोई पदचिह्न अपने पिछे छोड़कर कर पूजने के लिए; जो उसे चाहते हैं वह अपने वजूद में उतर जाये- मैं नहीं पूजने वाला"

और वह लगभग पतली हवा में गायब हो गया। उनके बारे में किसी ने कुछ नहीं सुना--क्या हुआ, कहां मर गया। उसे कहीं तो हिमालय की अनन्त बर्फों में दफनाया गया होगा।

ओशो; बोधिधर्म : महानतम झेन मास्टर

CS CamScanner

11:03 pm 4G 30%

था एक चट्टान पर। सांझ का वक्त, और पास ही सिंह दहाड़ रहे थे। मगर वह बैठा था शांत, जैसे कुछ भी नहीं हो रहा है। दूसरा फकीर आया, तो सिंहों की दहाड़ सुनकर कंपने लगा, दूसरा फकीर कंपने लगा। निर्भय हो गया फकीर बोला: तो अरे, तो तुम्हें अभी भी भय लगता है! तुम अभी भी भयभीत हो! फिर क्या खाक साधना की, क्या ध्यान साधा, क्या समाधि पाई! कंप रहे हो सिंह की आवाज से, तो अभी अमृत का तुम्हें दर्शन नहीं हुआ, अभी मृत्यु तुम्हें पकड़े हुए है! उस कंपते फकीर ने कहा कि मुझे बड़ी जोर की प्यास लगी है, पहले पानी, फिर बात हो सके। मेरा कंठ सूख रहा है, मैं बोल न सकूंगा।
निर्भय हो गया फकीर अपनी गुफा में गया पानी लेने। जब तक वह भीतर गया, उस दूसरे फकीर ने, जहां बैठा था निर्भय फकीर, उस पत्थर पर लिख दिया बड़े–बड़े अक्षरों में: नमो बुद्धाय–बुद्ध को हो नमस्कार। आया फकीर पानी लेकर। जैसे ही उसने पैर रखा चट्टान पर, देखा नमो बुद्धाय पर पैर पड़ गया, मंत्र पर पैर पड़ गया; झिझक गया एक क्षण। आगंतुक फकीर हंसने लगा और उसने कहा: डर तो अभी तुम्हारे भीतर भी है। सिंह से न डरते होओ, लेकिन पत्थर पर मैंने एक शब्द लिख दिया–नमो बुद्धाय, इस पर पैर रखने से तुम कंप गए! भय तो अभी तुम्हें भी है। भय ने सिर्फ रूप बदला है, बाहर से भीतर जा छिपा है, चेतन से अचेतन हो गया है। भय कहीं गया नहीं है।
निर्भय आदमी में भय नहीं जाता, सिर्फ भय नए रूप ले लेता है, निर्भयता का आवरण ओढ़ लेता है। जो व्यक्ति समाधिस्थ होता है, न तो भयभीत होता है, न निर्भय होता है। निर्भय होने के लिए भी भय का होना जरूरी है, नहीं तो निर्भय कैसे होओगे? विरक्त होने के लिए आसक्ति का होना जरूरी है, नहीं तो विरक्त कैसे होओगे?

ओशो

CamScanner

**Ramana Hridayam**
2d ·

Shut your eyes. Do not observe thought. Observe awareness. Awareness observing awareness is empty. There is no thing to observe there. Don't complicate it by thinking there is more to it. Awareness is subtle. In awareness observing awareness, there is only being-awareness. It is simple. Remain in awareness becoming aware of itself. (edited)

- Michael Langford

393. One who has wisely chosen the straight path of Self-inquiry
can never go astray;
for like the bright, clear Sun,
the Self-Awareness reveals itself to whomever turns towards it.

451. The deeper into the Heart one dives,
the greater grows the bliss enjoyed,
the intense bliss of the sole Self-Awareness,
which once appeared in various forms.

- Bhagavan in Guru Vachaka Kovai

> अपनी आँखें बंद करो। विचार मत करो। जागरूकता का पालन करें। जागरूकता पालन जागरूकता खाली है। वहाँ देखने के लिए कोई चीज नहीं है। यह सोचकर इसे जटिल मत बनाओ कि इसमें और भी कुछ है। जागरूकता सूक्ष्म है। जागरूकता में ही जागरूकता-जागरूकता है। यह सरल है। स्वयं जागरूक होकर जागरूक बने रहें। (संपादित)

Write a comment...

CS CamScanner

12:36 pm 76%

एक कंकड़ जैसा
दूसरा कंकड़ भी पूरी पृथ्वी पर खोजना कठिन है, एक जड़ कंकड़ जैसा-यहां हर चीज यूनिक है, हर चीज अद्वितीय है। और जब तक हम प्रत्येक की अद्वितीय प्रतिभा को सम्मान नहीं देंगे तब तक दुनिया में प्रतियोगिता रहेगी, प्रतिस्पर्धा रहेगी, तब तक दुनिया में मार-काट रहेगी, तब तक दुनिया में हिंसा रहेगी, तब तक दुनिया में सब बेईमानी के उपाय करके आदमी आगे होना चाहेगा, दूसरे जैसा होना चाहेगा। और जब हर आदमी दूसरे जैसा होना चाहता है तो क्या फल होता है?

फल यह होता है-अगर एक बगीचे में सब फूलों का दिमाग फिर जाए या बड़े-बड़े आदर्शवादी नेता वहां पहुंच जाएं या बड़े-बड़े शिक्षक वहां पहुंच जाएं और उनको समझाएं कि देखो, चमेली का फूल चंपा जैसा हो जाए, चमेली का फूल चंपा जैसा, चंपा का फूल जुही जैसा, क्योंकि देखो, जुही कितनी सुंदर है...और सब फूलों को अगर पागलपन आ जाए, हालांकि आ नहीं सकता! क्योंकि आदमी से पागल फूल नहीं है। आदमी से ज्यादा जड़ता उनमें नहीं है कि वे चक्कर में पड़ जाएं। शिक्षकों के, उपदेशकों के, संन्यासियों के, साधुओं के, आदर्शवादियों केचक्कर में कोई फूल नहीं पड़ेगा। लेकिन फिर भी समझ लें, कल्पना कर लें कि कोई आदमी पहुंच जाए और समझाए उनको और वे चक्कर में आ जाएं और चमेली का फूल चंपा का फूल होने लगे तो क्या होगा उस बगिया में। उस बगिया में फूल फिर पैदा नहीं होंगे, उस बगिया में फिर फूल पैदा ही नहीं हो सकते। उस बगिया में फिर पौधे मुरझा जाएंगे, मर जाएंगे। क्यों?

क्योंकि चंपा लाख
उपाय करे तो चमेली नहीं हो सकती, वह उसके स्वभाव

CamScanner

12:36 pm 76%

दो व्यक्तियों की तुलना न करें

___________________________

जब तक दुनिया में हम एक आदमी को दूसरे आदमी से कम्पेयर करेंगे, तुलना करेंगे तब तक हम एक गलत रास्ते पर चले जाएंगे। वह गलत रास्ता यह होगा कि हम हर आदमी में दूसरे आदमी जैसा बनने की इच्छा पैदा करते हैं; जब कि कोई आदमी किसी दूसरे जैसा न बना है और न बन सकता है।

राम को मरे कितने दिन हो गए, या क्राइस्ट को मरे कितने दिन हो गए? दूसरा क्राइस्ट क्यों नहीं बन पाता और हजारों-हजारों क्रिश्चिएन कोशिश में तो चौबीस घंटे लगे हैं कि क्राइस्ट बन जाएं। और हजारों हिंदु राम बनने की कोशिश में हैं, हजारों जैन, बुद्ध, महावीर बनने की कोशिश में लगे हैं, बनते क्यों नहीं एकाध? एकाध दूसरा क्राइस्ट और दूसरा महावीर पैदा क्यों नहीं होता?

क्या इससे आंख नहीं खुल सकती आपकी? मैं रामलीला के रामों की बात नहीं कह रहा हूं, जो रामलीला में बनते हैं राम। न आप समझ लें कि उनकी चर्चा कर रहा हूं, कई लोग राम बन जाते हैं। वैसे तो कई लोग बन जाते हैं, कई लोग बुद्ध जैसे कपड़े लपेट लेते हैं और बुद्ध बन जाते हैं। कोई महावीर जैसा कपड़ा लपेट लेता है या नंगा हो जाता है और महावीर बन जाता है। उनकी बात नहीं कर रहा। वे सब रामलीला के राम हैं, उनको छोड़ दें। लेकिन राम कोई दूसरा पैदा होता है? यह आपको जिंदगी में भी पता चलता है कि ठीक एक आदमी जैसा दूसरा आदमी कहीं हो सकता है?

एक कंकड़ जैसा दूसरा कंकड़ भी पूरी पृथ्वी पर खोजना कठिन है, एक

CamScanner

12:34 pm 76%

Satish Purohit · 4h ·

एक सा पात्र दो दशाएं

एक आदमी रास्ते पर भीख मांग रहा है, बुद्ध ने भी भीख मांगी। बुद्ध भी रास्ते पर भीख मांग रहे हैं। दोनों भिखारी हैं, लेकिन फर्क करोगे या नहीं? दोनों के हाथ में भिक्षापात्र है माना, लेकिन दोनों का अंतरबोध बड़ा भिन्न है।

एक भिखारी है, सिर्फ भिखारी है। और एक ऐसा भिखारी है, जो सम्राट था। एक ऐसा भिखारी है, जिसने व्यर्थता जानी है सबकी। और एक ऐसा भिखारी है, जो अभी भी कौड़ी—कौड़ी इकट्ठा करके सम्राट होने की चेष्टा में लगा है। दोनों एक से मालूम पड़ते हैं।

यह हालत ऐसी ही है, जैसे कि तुम सीढ़ियों से जा रहे हो, बीस सीढ़ियां हैं, तुम दसवीं सीढ़ी पर पहुंच गए हो। और कोई सीढ़ियों से उतर रहा है, बीस सीढ़िया हैं, और वह भी दसवीं सीढ़ी पर आ गया है। तुम दोनों एक ही सीढ़ी पर खड़े हो, लेकिन एक उतर रहा है, एक चढ़ रहा है। एक ही सीढ़ी पर खड़े होने से भ्रम में मत पड़ जाना कि तुम एक ही जगह हो। एक उतर रहा है, एक चढ़ रहा है।

बुद्ध उतर आए हैं सिंहासन से, भिखारी चढ़ने की कोशिश कर रहा है। जन्म—जन्म लगेंगे उसे, शायद कभी चढ़ पाए। दोनों भिक्षा के पात्र लिए खड़े हैं एक ही जगह। बड़ी भिन्न है उनकी दशा। बुद्ध जाग गए हैं, सिंहासन की व्यर्थता दिखाई पड़ गई है। यह भिखारी अभी सोया हुआ है। अभी यह सिंहासन बनाने के सपने देख रहा है।

-ओशो.
एस धम्मो सनंतनो--(प्रवचन--028)
*संकलन-रामजी*🙏🌹🌹

9 1 comment • 4 shares
Like Comment Send Share
To return to your call, open Meet
Vk Bhesaniya
CamScanner

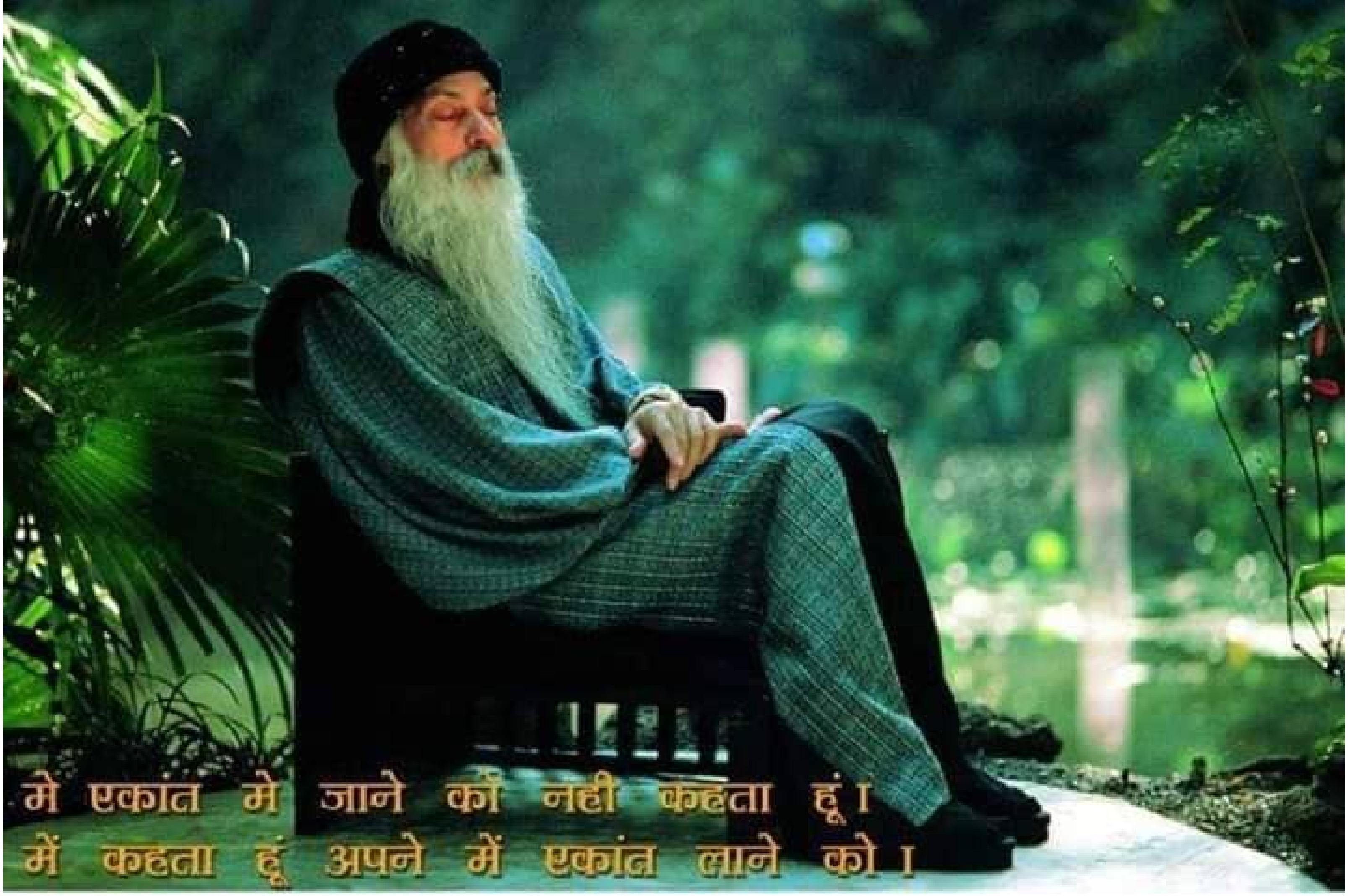


CamScanner

12:23 pm 79%

उसकी हालत मरणासन्न जैसी हो गयी। बार—बार सातवें दिन पूछता था —सूरज के डूबने में और कितनी देर है? आवाज भी मुश्किल से निकलती थी। घर में रोआ—गायी मची थी। मेहमान इकट्ठे हो गये थे। दूर —दूर से प्रियजन आ गये थे अंतिम विदा देने।

और सूरज डूबने के ठीक पहले एकनाथ ने द्वार पर दस्तक दी। एकनाथ भीतर आये। एकनाथ उसके पास गये। वह तो आंख बंद किये पड़ा था। हाथ से उसकी आंखें खोलीं और कहा कि एक बात तुझे बताने आया हूं। यह तू क्या कर रहा है, ऐसा क्यों पड़ा है?

उसने कहा: और क्या करू? सूरज डूबने में कितनी देर है? ये सात दिन मैंने इतना नर्क भोगा है जितना कभी नहीं। अब तो ऐसा लगता है मर ही जाऊं तो झंझट कटे।

एकनाथ ने कहा कि मैं तुझे तेरे प्रश्न का उत्तर देने आया हूं। वह तूने मुझसे पूछा था न कि आपके मन में पाप कभी उठता है। मैं पूछने आया हूं तुझसे कि सात दिन में तेरे मन में कोई पाप उठा? उस आदमी ने कहा: कहां की बातें कर रहे हो! कैसा पाप, कैसा पुण्य? सात दिन तो कोई विचार ही नहीं उठा, बस एक ही विचार ही था—मौत,मौत, मौत; एक दिन गया, दो दिन गये, तीन दिन गये, चार दिन गये, यह घड़ी—घड़ी बीती जा रही है, पल—पल चूका जा रहा है। सातवां दिन दूर नहीं है, सूरज के डूबते ही सब जाएगा। मौत थी और भी न था। इन सात दिनों में अंधकार था अमावस का और कुछ भी न था। कहां का पाप, कहां का पुण्य?

एकनाथ ने कहा: तो उठ, अभी तुझे मरना नहीं है। तेरी हाथ की रेखा अभी काफी लंबी है। यह तो मैंने सिर्फ तेरे प्रश्न का उत्तर दिया था। ऐसे ही जिस दिन से मुझे मौत दिखाई पड़ गयी है, पाप नहीं उठा। जिसको मौत दिखाई पड़ जाती है पाप नहीं उठता, एकनाथ ने कहा।

ऐसा उत्तर कोई सद्गुरु ही दे सकता है। मगर ऐसे उत्तर महंगे तो हैं। यह सौदा सस्ता तो नहीं है।

ओशो; गुरू प्रताप साध की संगति

CamScanner

**ओशो का हिन्दी साहित्य**
Seema Mangal · 3d

एकनाथ के जीवन में ऐसा उल्लेख है। एक युवक एकनाथ के पास आता था। जब भी आता था तो वह बड़ी ऊंची ज्ञान की बातें करता था। एकनाथ को दिखाई पड़ता था, वे ज्ञान की बातें सिर्फ अज्ञान को छिपाने के लिए हैं। एक दिन उसने एकनाथ को पूछा सुबह—सुबह कि एक संदेह मेरे मन में सदा आपके प्रति उठता है। आपका जीवन ऐसा ज्योतिर्मय, ऐसा निष्कलुष, ऐसी कमल की पंखडियों जैसा निर्दोष क्वांरा, लेकिन कभी तो आपके जीवन में भी पाप उठे होंगे? कभी तो अंधेरे ने भी आपको घेरा होगा? कभी आपकी जिंदगी में भी कल्मष घटा होगा? ऐसा तो नहीं हो सकता कि पाप से आप बिलकुल अपरिचित हों! मैं यही पूछना चाहता हूं। आज यही सवाल लेकर आया हूं, ओर चूंकि और कोई मौजूद नहीं है, आज आपको अकेला ही मिल गया हूं, इसलिए निस्संकोच पूछता हूं कि आपके मन में पाप उठता है कभी या नहीं; उठा है। कभी या है नहीं?

एकनाथ ने कहा; यह तो मैं पीछे बताऊं; इससे भी ज्यादा जरूरी बात पहले बतानी है कि कहीं मैं भूल न जाऊं, बातचीत में कहीं अटक न जाऊं, कहीं भूल ही न जाऊं, जरूरी बात चूक न जाए! कल अचानक जब तू जा रहा था तेरे हाथ पर मेरी नजर पड़ी तो मैं दंग रह गया; तेरे उम्र की रेखा समाप्त हो गयी है। सात दिन और जिएगा तू। बस, सातवें दिन सूरज के डूबने के साथ तेरा डूब जाना है। अब तू पूछ क्या पूछता था।

वह युवक तो उठकर खड़ा हो गया। अब कोई पूछने की बात, अब कोई समस्या समाधान, अब कोई जिज्ञासा, अब कोई दार्शनिक मीमांसा...वह तो उठकर खड़ा हो गया, उसने कहा: मुझे कुछ नहीं पूछना है। मुझे घर जाने दो।

एकनाथ ने कहा: बैठो भी, अभी आये, अभी चले, इतनी जल्दी क्या है?

सत्संग होगा चर्चा होगी, तत्व विचार होगा, रोज की ज्ञान की बातें—ब्रह्म, मोक्ष कैवल्य...।

CamScanner

CamScanner

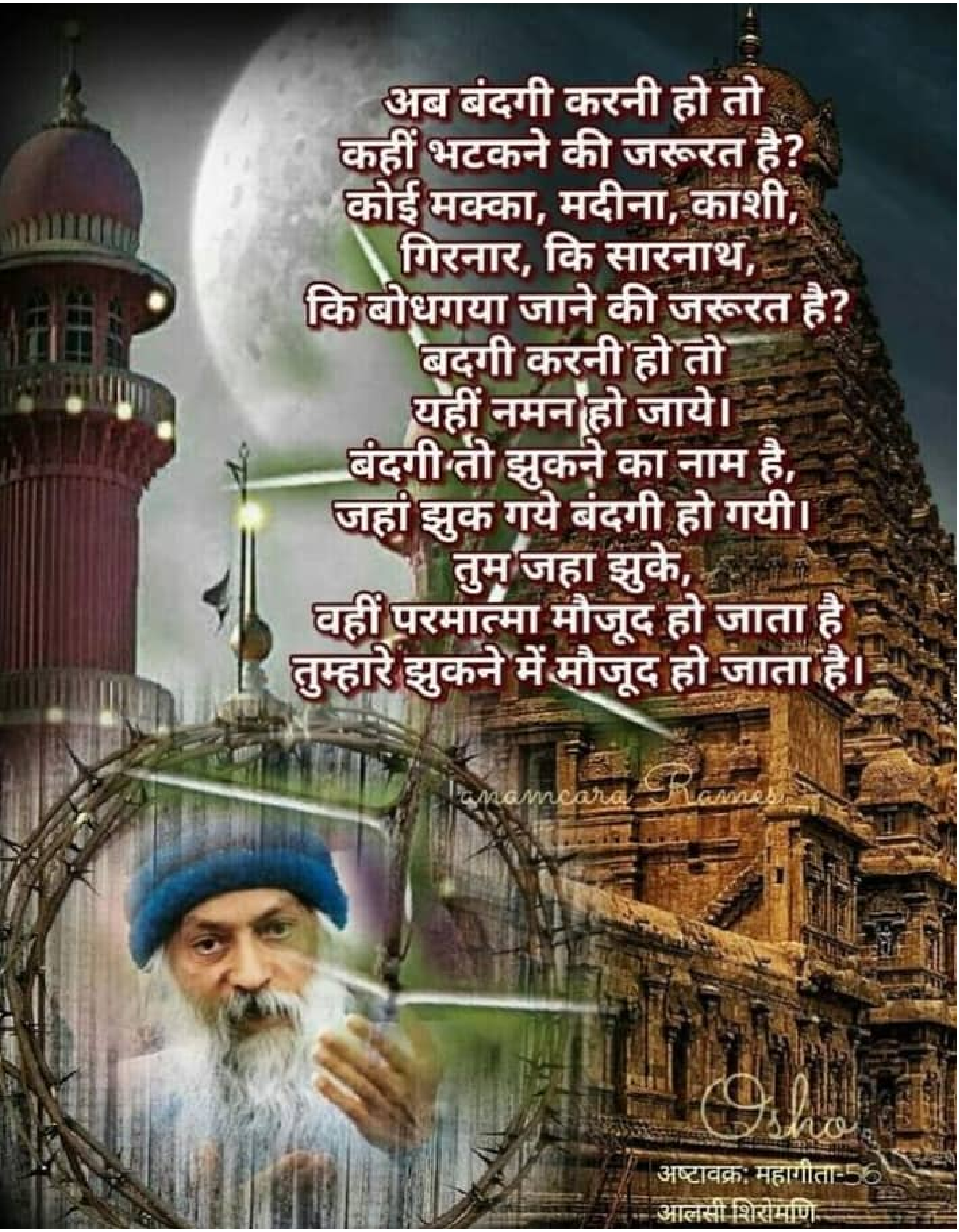
अब बंदगी करनी हो तो
कहीं भटकने की जरूरत है?
कोई मक्का, मदीना, काशी,
गिरनार, कि सारनाथ,
कि बोधगया जाने की जरूरत है?
बदगी करनी हो तो
यहीं नमन हो जाये।
बंदगी तो झुकने का नाम है,
जहां झुक गये बंदगी हो गयी।
तुम जहा झुके,
वहीं परमात्मा मौजूद हो जाता है
तुम्हारे झुकने में मौजूद हो जाता है।
Osho
अष्टावक्र: महागीता-56
आलसी शिरोमणि

CamScanner

12:17 pm 80%

में, वह विवेकानंद के सामने नाचेगी—तो विवेकानंद ने जाने से इनकार कर दिया: कि मैं नहीं जाऊंगा। मैं संन्यासी हूं, वेश्या का नृत्य देखूं! पास ही शामियाना था जहां विवेकानंद ठहरे थे, जहां उत्सव होनेवाला था। लेकिन राजा तो राजा, राजा ने कहा अब नहीं आते तो न आएं, उत्सव तो चलेगा ही। अब वेश्या भी आ गयी, मेहमान भी आ गए, शराब भी आ गयी, अब जलसा तो बंद नहीं हो सकता; तो उनके बिना चलेगा।

जलसा शुरू हुआ। लेकिन उस वेश्या ने बड़ा अद्भुत गीत गाया। उसने नरसी मेहता का एक भजन गाया। पास ही था शामियाना, विवेकानंद को सुनायी पड़ने लगा नरसी मेहता के भजन उस वेश्या के टपकते आंसू और नरसी मेहता का भजन! नरसी मेहता के भजन में यह कहा गया है कि पारस पत्थर को इस बात की चिंता नहीं होती कि जो लोहा वह छू रहा है, वह पूजागृह में रखा जानेवाला लोहा है या कसाई के घर जिस लोहे से जानवरों की हत्या की जाती है, वह लोहा है। पारस पत्थर तो दोनों लोहों को छूकर सोना बना देता है। तो वह वेश्या अपने गीत में कहने लगी कि तुम कैसे पारस हो? तुम्हें अभी वेश्या दिखायी पड़ती है! मैं तो कितने भाव लेकर आई थी, मैं तो कितने भजन संजोकर आई थी —वेश्या सच में भजन संजोकर आयी थी। सोचा वेश्या ने कि विवेकानंद, संन्यासी के सामने नृत्य करना, गीत गाने हैं, तो मीरां के भजन लायी थी, नरसी मेहता के भजन लाई थी; जीवन को धन्य समझा था, कि आज मेरा नृत्य भी सार्थक होगा।

विवेकानंद को बहुत चोट लगी जब उन्होंने सुना यह नरसी मेहता का भजन। उठे और पहुंच गए समारोह में और वेश्या से क्षमा मांगी और कहा, मुझसे भूल हो गयी। मेरी गलती। मैं ही अभी पारस नहीं हूं, इसीलिए यह विचार किया कि कौन लोहा पात्र, कौन लोहा अपात्र। विवेकानंद ने कहा है कि उस दिन मेरी आंख खुल गयी। उस दिन से मैंने भेद करने छोड़ दिए पात्र—अपात्र के। वह पुरानी आदत उस वेश्या ने छुड़ा दी। वह वेश्या मेरी गुरु हो गयी।

जीवन बहुत अनूठा है। रहस्यपूर्ण है। कहां से द्वार खुलेगा परमात्मा का, कहना मुश्किल है।

राम दुवारे जो मरै-(प्रवचन-04)

CamScanner

23

Top comments

**अमित कुमार**
घड़ी घोड़ा के तरह यत्र नहीं दौड़ता होता है फिर भी एक स्थान पर स्थिर होकर निरंतर चलायमान रहता है उसी प्रकार मन को अन्यत्र न दौड़ा कर आत्मा मे हीं स्थिर रख कर चलायमान रखना चाहिए।

श्रीराधा 🙏

2d Like Reply 1

**Vishnu Srivastava**
आत्मा के ज्ञान के लिए मन से ज्यादा अवरोध बुद्धि द्वारा उत्पन्न किया जाता है।

2d Like Reply 1

Rules

Write a public comment...

CamScanner

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]** ••• ✕

Babulal N Prajapati · 2d ·

मन , न रुकने वाला मायावी यन्त्र है ।
आरम्भ (सदीयो) से इस की गति को रोकने के लिये कोशिश हो रही है । जिन्होंने जाना है उनका कहना है मन कभी रुक सकता ही नही । असम्भव है इसका रुकना । इसकी प्रकृति ही चलायमान रहना है ।

फिर क्या उपाय है आत्मा को जानने का । क्यों कि ऐसा कहा गया है कि मन न रहे तब आत्मा को जाना जाता है ।
विवेक से इस गूढ़ रहस्य को समझने की कोशिश करे तो समझ सकते है ।

( 1 ) मन , सच के साथ नही रह सकता ।
( 2 ) सभी मान्यतायें मन को जिन्दा रखती है ।
(3 ) स्वयं पर ओढ़े सभी झूठे आवरण , मन को जिन्दा रखने का भोजन है ।
( 4 ) मन , अभी इसी क्षण में नही रहता ।

एक बात समझ ले कि मन कभी मरता नही है । सत्य बोलने , सत्य जीने से मन समझ जाता है कि अब मेरा वजूद केवल यन्त्र मात्र का है । लम्बे अन्तराल में मन निर्मल होकर आत्मा मे समर्पित हो उसी की शक्ति के रूप मे कार्य करने लगता है या कहें कि आत्मा ही हो जाता है।।।
परमशांति।। ((राज)

23 2 comments • 4 shares

Like Comment Send Share

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]** ••• ✕

अमेय विक्रमा · 1h ·

CamScanner

ओशो-Life with Osho

प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट भाग्य के साथ इस दुनिया में आता है – उसके पास जो कुछ है उसे परिपूर्ण करना पड़ता है, कुछ सन्देश दुनिया को देना होता है – कुछ कार्य जिन्हें पूरा करना पड़ता है. आप यहाँ संयोगवश नहीं हो – आपकी यहाँ सार्थकता है. आप के पीछे एक उद्देश्य है. सृष्टि आपके माध्यम से कुछ कराना चाहती है.

– ओशो.

CamScanner

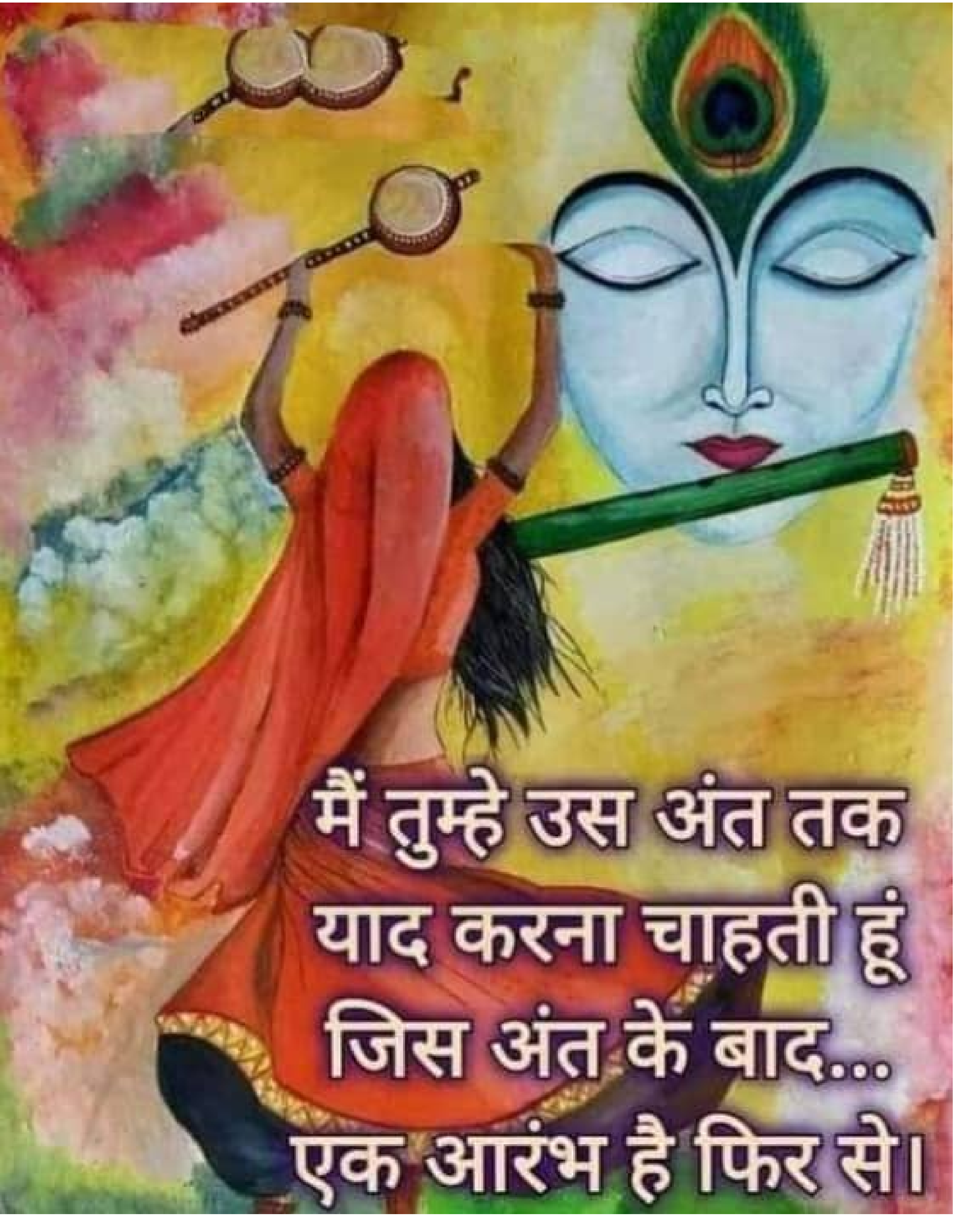


CamScanner

CS CamScanner

अगर
प्रभु के द्वार
पर ही जाना हो,
तो क्षुद्र वासना लेकर मत जाना।
वासना पूरी भी हो जाए,
तो भी कुछ हाथ नहीं लगने वाला है।
प्रभु के द्वार पर तो
खाली होकर जाना,
बिना कोई वासना लिए।
प्रभु से तो
यही कहते जाना कि
जो तूने दिया है,
वह जरूरत से ज्यादा है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शनअ.7 प्र.87/30
कामना और प्रार्थना

CamScanner

19 >

**Parveen Kumar** Manoj Vyas जी गिना था शरीर का एक...

**Ashish Verma**
Sriman ji,suna hua hi bata sakte hain ,112 chakra sukshm shareer me hain aur 2 chakra us se oopar ke karan shareer ke h.hindu dharm 7 chakra ko mukhya manta h.jain dharm 24 chakra aur bauddh dharm 12 chakra mante hain.

2d Like Reply

**Parveen Kumar** Ashish Verma जी सहमत हैं हम आपसे...

**View 1 more reply...**

**Ashish Verma**
सर जिस प्रकार पैसेंजर ट्रेन सभी स्टेशनों पर रूकती है उसी प्रकार के ये ११२ चक्र हैं ।लेकिन मुख्या ट्रेन केवल इम्पोर्टेन्ट स्टेशन पर ह रूकती है।तो ये ७ स्टेशन हि मुख्या हैं।

2d Like Reply 1

**Anil Alate**
Yes

2d Like Reply

**अभिलव चतुर्वेदी**
Ida pingla or sushumna nadi ke meeting point ko chakra kaha jata hai

2d Like Reply

**Chandan Kumar Pandey Mk**
Dhogi pal ke chela kabhi padte nahi dhogi ke chakr me pade hai

2d Like Reply

Write a comment...

CS CamScanner

12:09 pm 82%

**Osho Osho**

22h ·

फूँक मार कर हम दीये को बुझा सकते हैं
पर अगरबत्ती को नहीं, क्यों कि
जो महक़ता है उसे कौन बुझा सकता है
और जो जलता है वह ख़ुद बुझ जाता है !

Osho Osho and 18 others 3 comments • 3 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

12:08 pm 82%

और ध्यान रखना, बस एक ही बात ध्यान में रखना है, उस ज्योति को खोज लेना है, जो बिना ईंधन के जलती है।

आज इतना ही।

- मृण्मय घट में चिन्मय दीप, (बिन बाती बिन तेल -01)
OSHO.. 🙏🌹

CamScanner

एक युवक, एक ईसाई युवक एक झेन फकीर के पास गया और उसने झेन फकीर से कहा कि मैं यह बाइबिल लाया हूं, मेरी आस्था बाइबिल में है। तुमने कभी बाइबिल पढ़ी? उस फकीर ने कहा कि नहीं, पढ़ने की फुरसत नहीं मिली। अपने को ही पढ़ने में सारी शक्ति लगी जा रही है। फिर भी तुम ले आए हो तो कुछ पढ़कर सुना सकते हो। ईसाई युवक आया ही इसलिये था कि झेन फकीर को ईसाई बना ले। तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने 'सरमन आन द माउन्ट', 'पर्वत-प्रवचन' के कुछ हिस्से पढ़कर सुनाए कि: 'धन्य हैं वे, जो निर्बल हैं क्योंकि परमात्मा का राज्य उन्हीं का होगा।'

'धन्य हैं वे, जो विनम्र हैं और अंतिम खड़े हैं क्योंकि मेरे राज्य में वे ही प्रथम खड़े होंगे; वे ही सर्वोपरि होंगे।'

उस फकीर ने कहा, कि बस रुक जाओ। मुझे पता नहीं किसने ये वचन कहे हैं, लेकिन जिसने भी ये वचन कहे हैं उसने भीतर की लौ पहचान ली थी। और जिसने भी ये वचन कहे, वह बुद्ध था।

उस युवक ने कहा कि अभी और आगे वचन हैं।

उसने कहा, बस! सागर का एक घूंट काफी है नमकीनपन को जान लेने के लिए। अब तुम किताब बंद करो। एक बूंद चख ली, पूरा सागर चख लिया। जिसने भी ये वचन कहे, यह आदमी बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया था। इसने भीतर की पहचान कर ली थी। और यह मैं तुमसे कहता हूं–उस फकीर ने कहा–इसलिये नहीं कि ये वचन बड़े मधुर हैं, लेकिन इसलिये कि यही मेरी भी पहचान है, ऐसा ही मैंने भी जाना।

वेद अर्थहीन हैं, जब तक तुम गवाही न दे सको। गीता कचरा है, जब तक तुम अपने अनुभव का सहारा न दे सको। तुम्हारे अनुभव के सहारे से गीता का स्वर्ण प्रगट होगा। तुम गवाह हो। वेद, बाइबिल, कुरान कुछ भी अर्थ नहीं रखते। तुम अर्थ डालोगे। लेकिन तुम अर्थ तभी डाल सकोगे, जब तुम्हारी अपनी अनुभूति, तुम्हारी अपनी प्रज्ञा, तुम्हारी अपनी ज्योति जलेगी–प्रखरता में, तीव्रता में, त्वरा में।

मैं तो एक दीवाना हूं।

तुम मुझे पागल कह लेना,

वह ज्यादा ठीक, लेकिन कभी महात्मा
मत कहना क्योंकि तुमने इतने गलत
लोगों को महात्मा कहा है, उस कतार में
मैं खड़े होने को राजी नहीं हूं।

ओशो कोपले फिर फूट आई

CamScanner

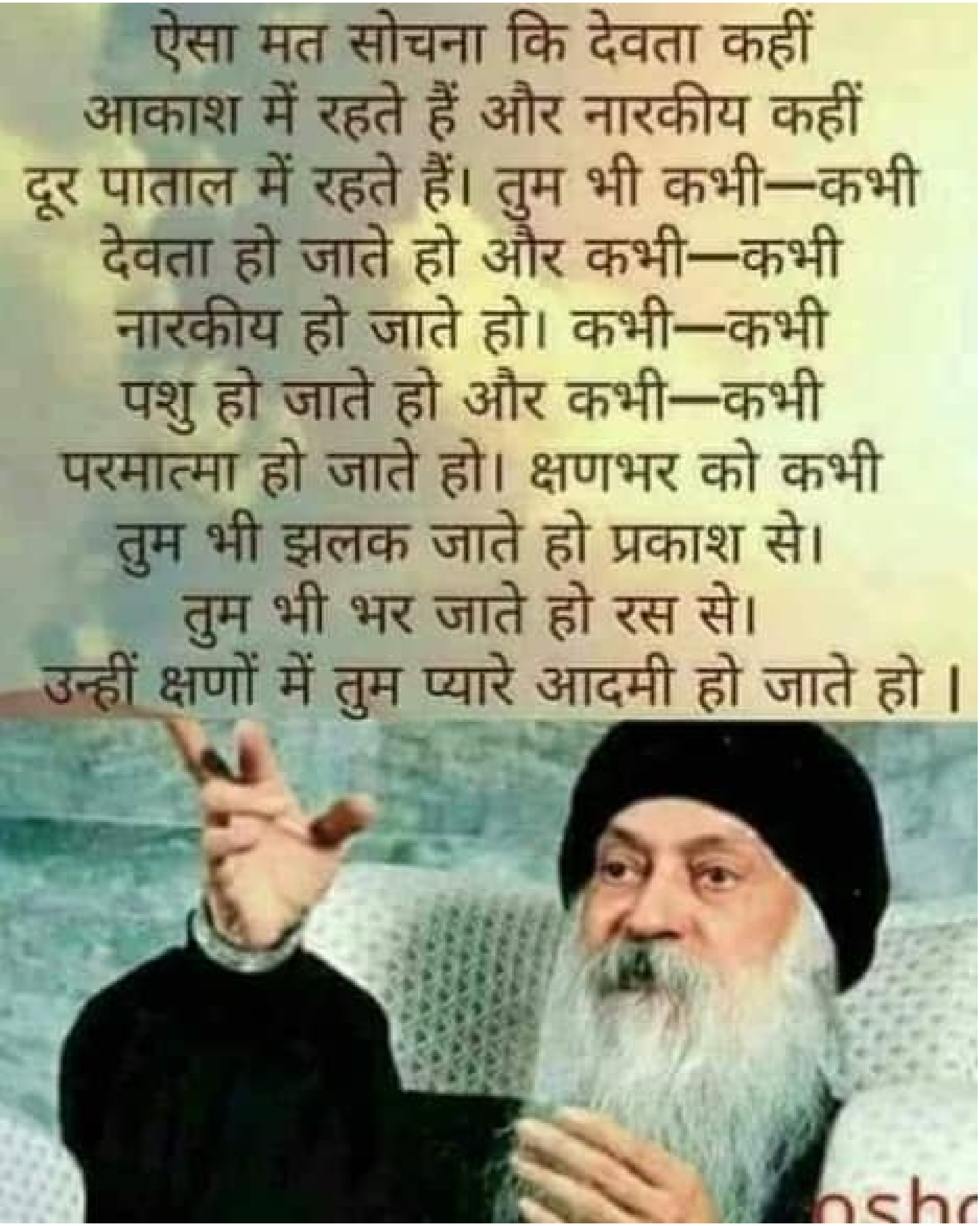
ऐसा मत सोचना कि देवता कहीं
आकाश में रहते हैं और नारकीय कहीं
दूर पाताल में रहते हैं। तुम भी कभी—कभी
देवता हो जाते हो और कभी—कभी
नारकीय हो जाते हो। कभी—कभी
पशु हो जाते हो और कभी—कभी
परमात्मा हो जाते हो। क्षणभर को कभी
तुम भी झलक जाते हो प्रकाश से।
तुम भी भर जाते हो रस से।
उन्हीं क्षणों में तुम प्यारे आदमी हो जाते हो।

CamScanner

मैं प्रकृति में ही परमात्मा को देखता हूं, प्रतिक्षण प्रति घड़ी उसका मुझे अनुभव हो रहा है।
एक श्वास भी ऐसी नहीं आती जाती है ,जब उससे मिलना ना हो जाता हो।
OshO

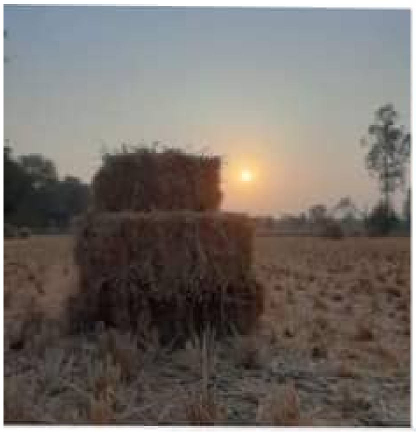

211 47 comments • 8 shares

Like Comment Send Share

**ओशो का हिन्दी साहित्य**
Roshni Verma · 2h ·

#photographychallenge

CamScanner

12:04 pm 83%

facebook

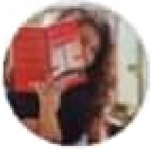

Osho Osho

1d ·

जिस भक्ति के प्राप्त होने पर मनुष्य न किसी वस्तु की इच्छा करता है, न द्वेष करता है, न आसक्त होता है और न उसे विषय-भोगों में उत्साह होता है।'

"इतिब्दा वो थी कि जीने के लिए मरता था मैं

इतिन्हा ये है कि मरने की भी हसरत न रही।

ऐसे भी दिन थे जब जीने के लिए ऐसी आतुरता थी कि मरने को भी तैयार हो जाता था। और आखिरी वक्त–इन्तिहा यह है–और आखिरी बात यह है, पहुंच जाने की बात यह है कि मरने की भी हसरत न रही। जीने की तो बात छोड़ो, मरने की भी आकांक्षा नहीं उठती।

ओशो

CS CamScanner

CamScanner

तुम पूछते हो: मनुष्य क्या है? निर-अहंकार होने की खोज। सीमाओं के पार जाने की कामना। अपना अतिक्रमण! इस जगत में मनुष्य के अतिरिक्त और कोई अपना अतिक्रमण नहीं कर सकता। इसलिए स्वात्म-अतिक्रमण मनुष्य की परिभाषा है। कोई आम का वृक्ष आम के वृक्ष के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता--आबद्ध है। नीम का वृक्ष नीम ही रहेगा, कुछ और होने का उपाय नहीं; अपना अतिक्रमण नहीं कर सकता, अपने से पार नहीं जा सकता। सिंह सिंह है, कुत्ता कुत्ता है। इससे पार जाने का कोई उपाय नहीं है। सिर्फ आदमी की क्षमता है कि आदमी के पार जा सकता है, बुद्धत्व को पा सकता है, भगवत्ता पा सकता है।

ओशो

CamScanner

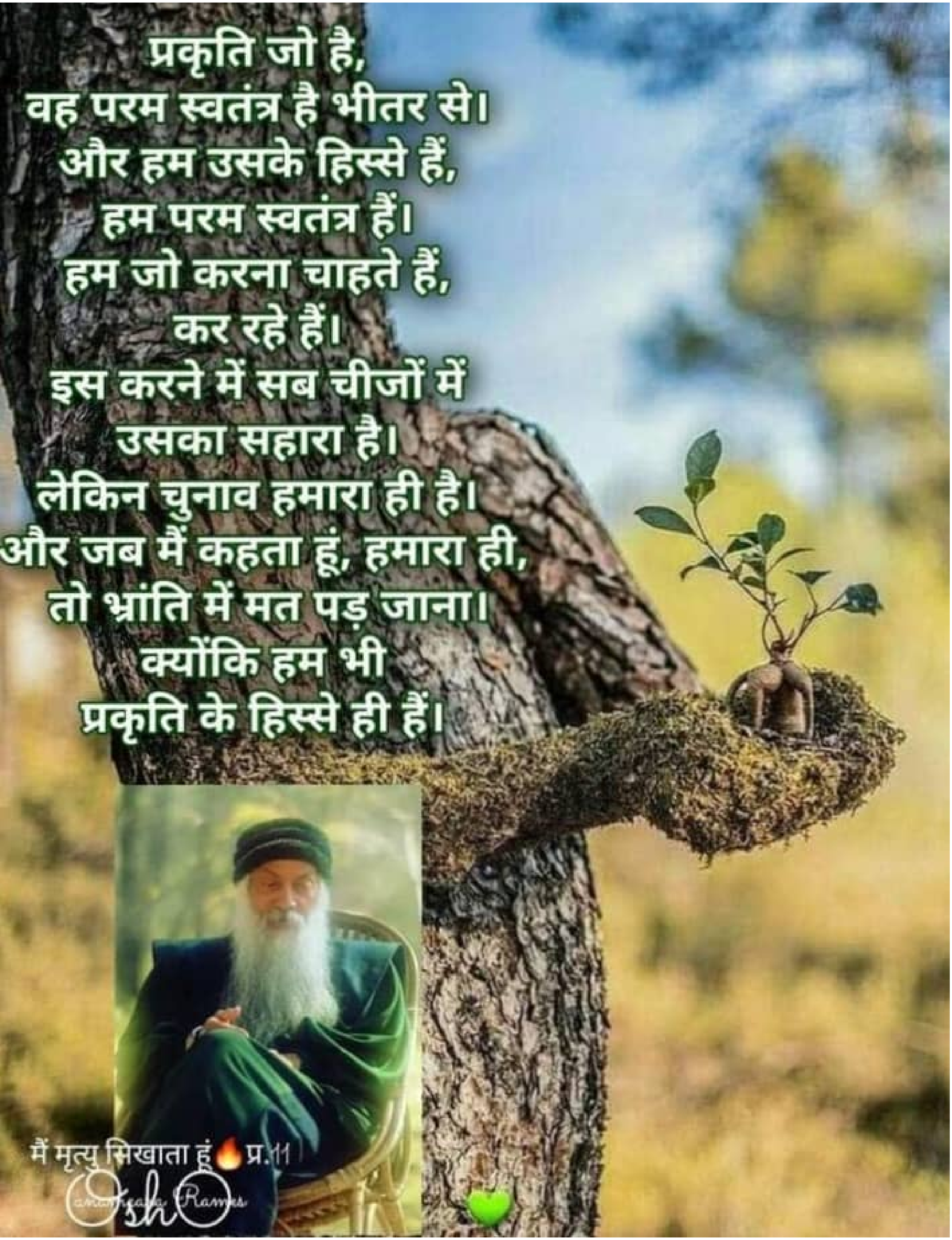
प्रकृति जो है,
वह परम स्वतंत्र है भीतर से।
और हम उसके हिस्से हैं,
हम परम स्वतंत्र हैं।
हम जो करना चाहते हैं,
कर रहे हैं।
इस करने में सब चीजों में
उसका सहारा है।
लेकिन चुनाव हमारा ही है।
और जब मैं कहता हूं, हमारा ही,
तो भ्रांति में मत पड़ जाना।
क्योंकि हम भी
प्रकृति के हिस्से ही हैं।
मैं मृत्यु सिखाता हूं प्र.11
Osho

CamScanner

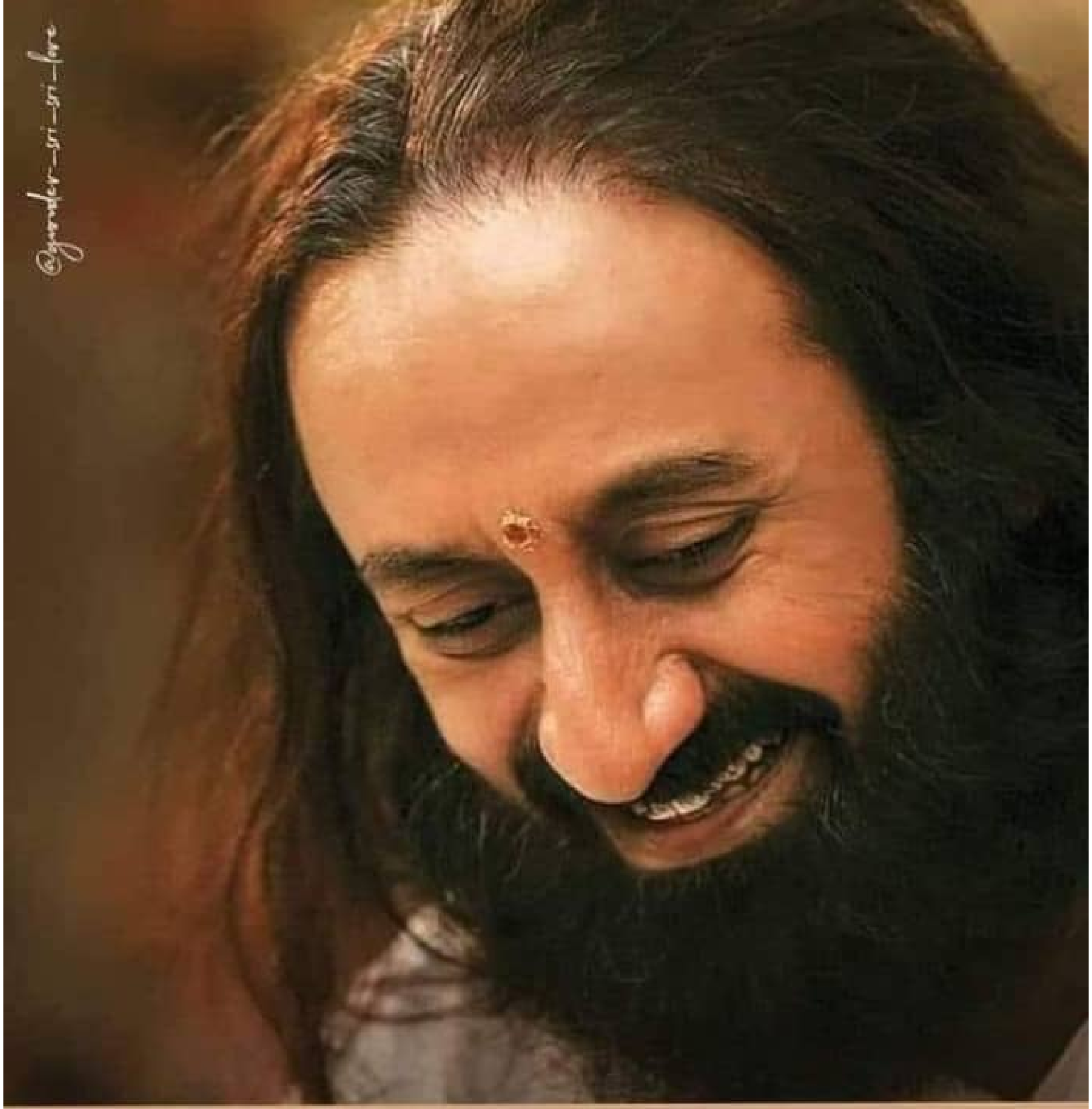

Words are very superficial.
Vibration speaks a lot and
silence speaks even more.

~ Gurudev Sri Sri Ravi Shankar

CamScanner

11:52 am 85%



**Maitreyi Nivi**
7 Jul 2022 ·

Ramana says, "keep quiet"
Poonja ji says, "keep quiet"
Mooji says, "keep quiet"
Osho says, "keep quiet"
Buddha says, "keep quiet"
Eckhart Tolle says,"keep quiet"
Robert Adams says, "keep quiet"

So many masters - I haven't mentioned all of them here - have one essence in their teachings: silence... Isn't it enough to know that silence/awareness is God, formless and everywhere, and we are in it and of it? So, all living beings - human beings, animals, birds, trees - everything is God and that alone is.

~ Maitreyi Nivi (Shoonya)

> रमण कहती है चुप रहो
> पूंजा जी कहते हैं चुप रहो
> मूजी कहते हैं चुप रहो
> ओशो कहते हैं, "चुप रहो"
> बुद्ध कहते हैं चुप रहो
> एकहार्ट टोले कहते हैं, "चुप रहो"
> रॉबर्ट एडम्स कहते हैं, "चुप रहो"
>
> इतने सारे स्वामी - मैंने उन सभी का यहां उल्लेख नहीं किया है - उनकी शिक्षाओं में एक सार है: मौन ...
> क्या यह जानना पर्याप्त नहीं है कि मौन/जागरूकता ईश्वर है, निराकार और हर जगह, और हम इसमें हैं और इसमें हैं? तो, सभी जीव-जंतु, मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष सब कुछ ईश्वर है और वही एकमात्र है।

Write a comment...

CamScanner

SEED CUM FERTILIZER DRILL
POTATO PLANTER
AG. ENGG.
2023 11 06 10:15

CamScanner

CamScanner

हाई-एंड ग्रुप में शामिल हों

1K 46 comments

Like Comment

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

S P Rathod · 12h

आप हर क्षण उस ब्रह्मांडीय शक्ति की निगरानी में है, जो बेहद करुणामयी है।

48 2 comments • 7 shares

Like Comment Send Share

**आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg**

CamScanner

CamScanner

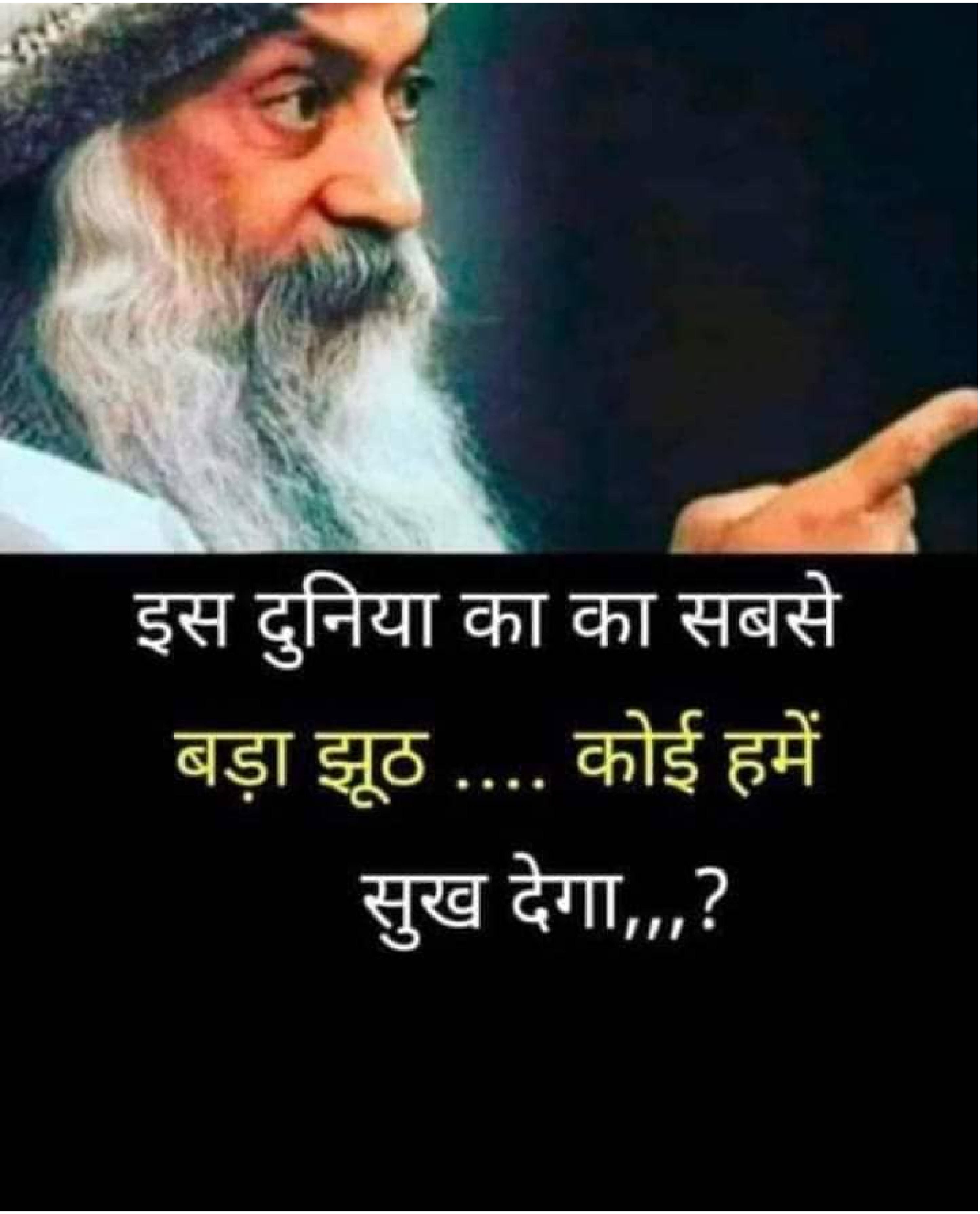


CamScanner

10:35 am 95%

Osho_Gyan
Reels · 13h ·

☯कोई कर्ता नही,क्रिया हो रही है। ओशो

54 53 shares • 3.1K views

Like Comment Send Share

CamScanner

आप अपने जीवन में जिस व्यक्ति से सबसे अधिक बच रहे हैं, वह आप ही हैं। आपका पूरा जीवन इस तरह से प्रबंधित किया जाता है। कि आप कभी भी आप से नहीं मिलते। ओशो अहोभाव

CamScanner

CamScanner

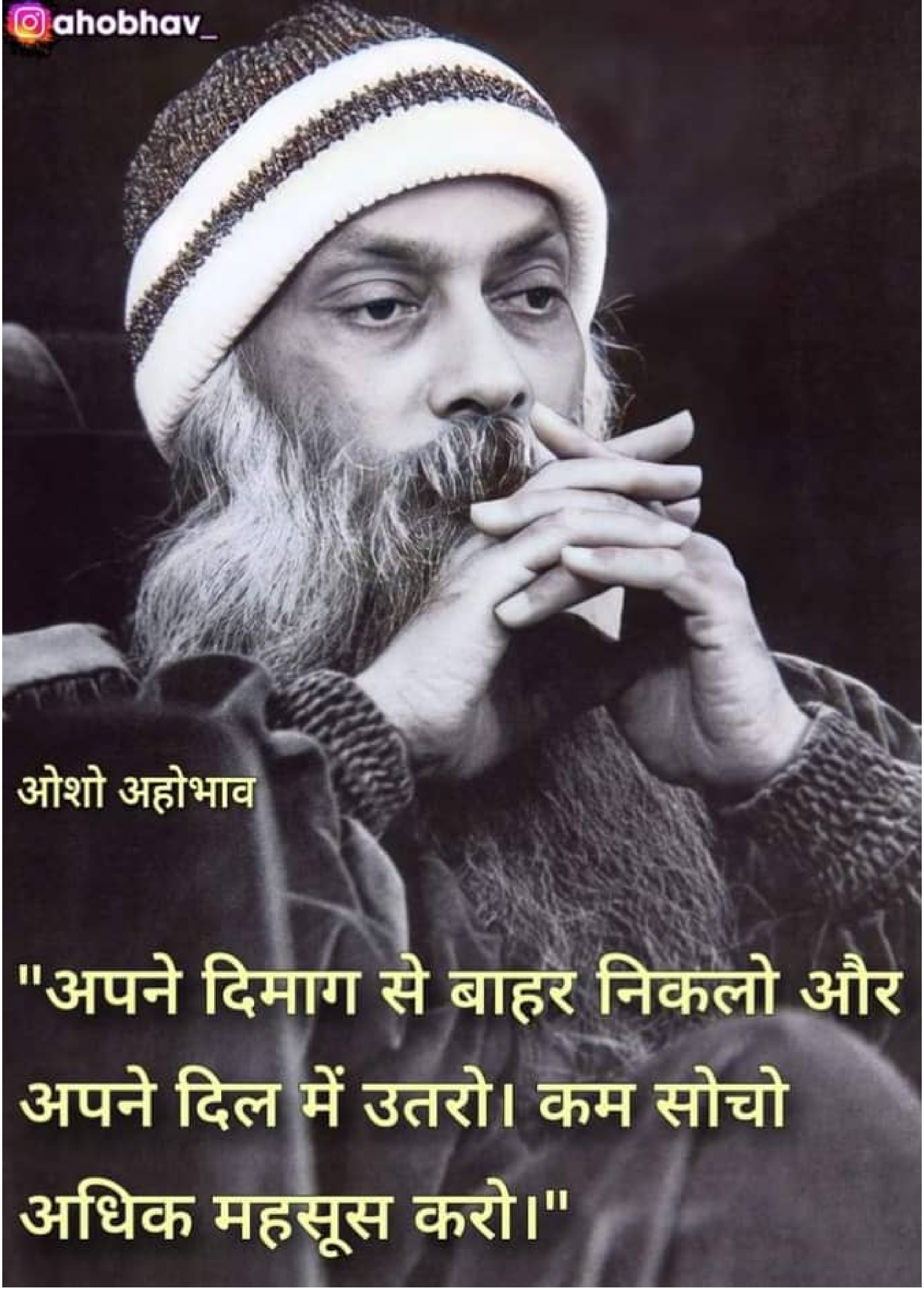
ahobhav_
ओशो अहोभाव
"अपने दिमाग से बाहर निकलो और
अपने दिल में उतरो। कम सोचो
अधिक महसूस करो।"

CamScanner

10:32 am 96%

ओ शो वाणी
Subhash Chandra · 34m

*मिल जाए तो मिट्टी, खो जाए तो सोना*

मुल्ला नसरुद्दीन एक शराबखाने में बैठा था। एक मित्र के साथ गपशप चल रही थी, पी रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने उस मित्र से पूछा कि बड़ी देर हो गई, आज घर नहीं जाना है? मित्र ने कहा, घर जाकर क्या करूं? घर है कौन? गैर शादी शुदा हूं। घर खाली और सूना है। मुल्ला नसरुद्दीन ने हाथ सिर से मार लिया; उसने कहा, हद्द हो गई! तुम इसलिए यहां बैठे हो? हम इसलिए बैठे हैं कि घर पत्नी है। घर जाएं तो कैसे जाएं! जितनी देर कट जाए उतना अच्छा है।

कल मैं एक गीत पढ़ रहा था:
दुनिया जिसे कहते हैं,जादू का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है,खो जाए तो सोना है।

जो मिल जाता है, वही मिट्टी हो जाता है। जिस स्त्री के पीछे दीवाने थे, मिल गई और मिट्टी हो गई। जिस पुरुष के पीछे पागल थे, मिल गया और मिट्टी हो गया। मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है। न मिले...मजनू सौभाग्यशाली था, लैला नहीं मिली, सोना बनी ही रही। इतने सौभाग्यशाली सभी मजनू नहीं होते। मजनुओं को लैला मिल जाती है। और तब गले में फांसी लग जाती है। मजनू कभी जाग ही न सका अपने स्वप्न से, क्योंकि लैला मिली ही नहीं। मिल जाती तब बच्चू को पता चलता ! तब फिर लैला लैला न करता।

कितनी बार तो सुख मिले! या तो खो गए और नहीं खो गए तो तुम्हारे हाथ में मिट्टी हो गए। और कितनी बार तो दुख मिले! या तो खो गए या धीरे धीरे तुम उनके आदी हो गए, वे तुम्हारी आदत बन गए। सुख और दुख के पार भी कुछ है, इसीलिए जीवन में अर्थ है, गरिमा है, महिमा है, परमात्मा है। सुख दुख के पार उठना है।
ओशो🌹❤️🙏

7 · 1 comment • 3 shares

CamScanner

EkKadamSafaltakiOrr

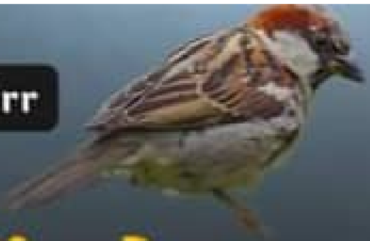

# सारी चिडियों को खत्म कर दो.!

1958 में चीनी सरकार ने फैसला किया-देश को आगे बढ़ाना है तो चिड़ियों को मार दो। क्योंकि चिड़िया किसी काम नहीं आती। वो हर साल करोडों रुपय का अनाज मुफ्त में खा जाती है। **करोड़ो की संख्या में चिड़िया,चूहे,मच्छर और मक्खी मारे गए।** सरकार इससे खुश हुई लेकीन, इसके 2 साल बाद बुरा परिणाम हुआ। चीन की फसलों में कीड़े लग गए। क्योंकि **चिड़ियाँ सिर्फ दाने नहीं कीड़े भी खाती थी।** सारी फसल खराब हो गई,चीन में अकाल पड़ा और 2.5 करोड़ लोग मारे गए। सीख-ईश्वर की व्यवस्था पर शक ना करें **जो आपको मिला हुआ है वो बेहतरीन है। उसे बदलने के प्रयास में आप मिट जाएंगे।**

एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

CamScanner

10:31 am 96%



ओशो प्रेम नमन 🙏💗🙏

🌻 विरह की पीड़ा प्रसव की पीड़ा है।🌻

लेकिन जितनी बड़ी पीड़ा है उतना ही बड़ा आनंद है वह तो जब एक बच्चा पैदा होता किसी स्त्री को और कोई स्त्री मां बनती है, तब बहुत बार उसके मन में भी आता है, जब बच्चा पैदा होता है कि यह तो अच्छा हुआ होता अगर मुझे पहले ही पता होता कि इतनी पीड़ा होनी थी, तो यह जन्म देने का उपद्रव हाथ में ही न लेते। नौ महीने तक बच्चे को गर्भ में ढोना, फिर पीड़ा उसके जन्म की..जैसे मौत आती हो, जैसे मरने-मरने को हो जाती हो।

कभी प्रसव-पीड़ा में किसी स्त्री को देखा? जैसे प्राणों की गहराई से रुदन उठता है! पूरा तन-प्राण कंप जाता है! उस वक्त उसके मन में न होता होगा कि अच्छा हुआ होता कि इस उपद्रव में ही न पड़े होते लेकिन फिर बच्चे का जन्म हो गया। फिर स्त्री के चेहरे पर आई हुई आनंद की आभा देखी है! फिर वह जिस शांति और प्रेम और लगन से बच्चे की तरफ देखती है! बच्चे का ही थोड़े जन्म होता है, उसी दिन मां का भी जन्म होता है उसके पहले वह मां न थी; उसके पहले एक साधारण स्त्री थी, अब मां है। मां की बात ही और है। मां का अर्थ है, अब वह सृजनदात्री है; अब उसने जन्म दिया जीवन को। अब वह ऐसी सीप है जिस में मोती पला। अब वह साधारण देह नहीं है; वह परमात्मा का धर बनी है; वह परमात्मा का माध्यम बनी।

स्त्री अपने परम सौंदर्य को उपलब्ध होती है मां बन कर। लेकिन प्रसव की बड़ी पीड़ा है। विरह की भी बड़ी पीड़ा है। उसी विरह की पीड़ा से गुजर कर, निखर कर, आग से छन कर व्यक्ति कुंदन बनता है, स्वर्ण बनता है। फिर मिलन का महासुख है।

अकथ कहानी प्रेम की-(प्रवचन-06)

CamScanner

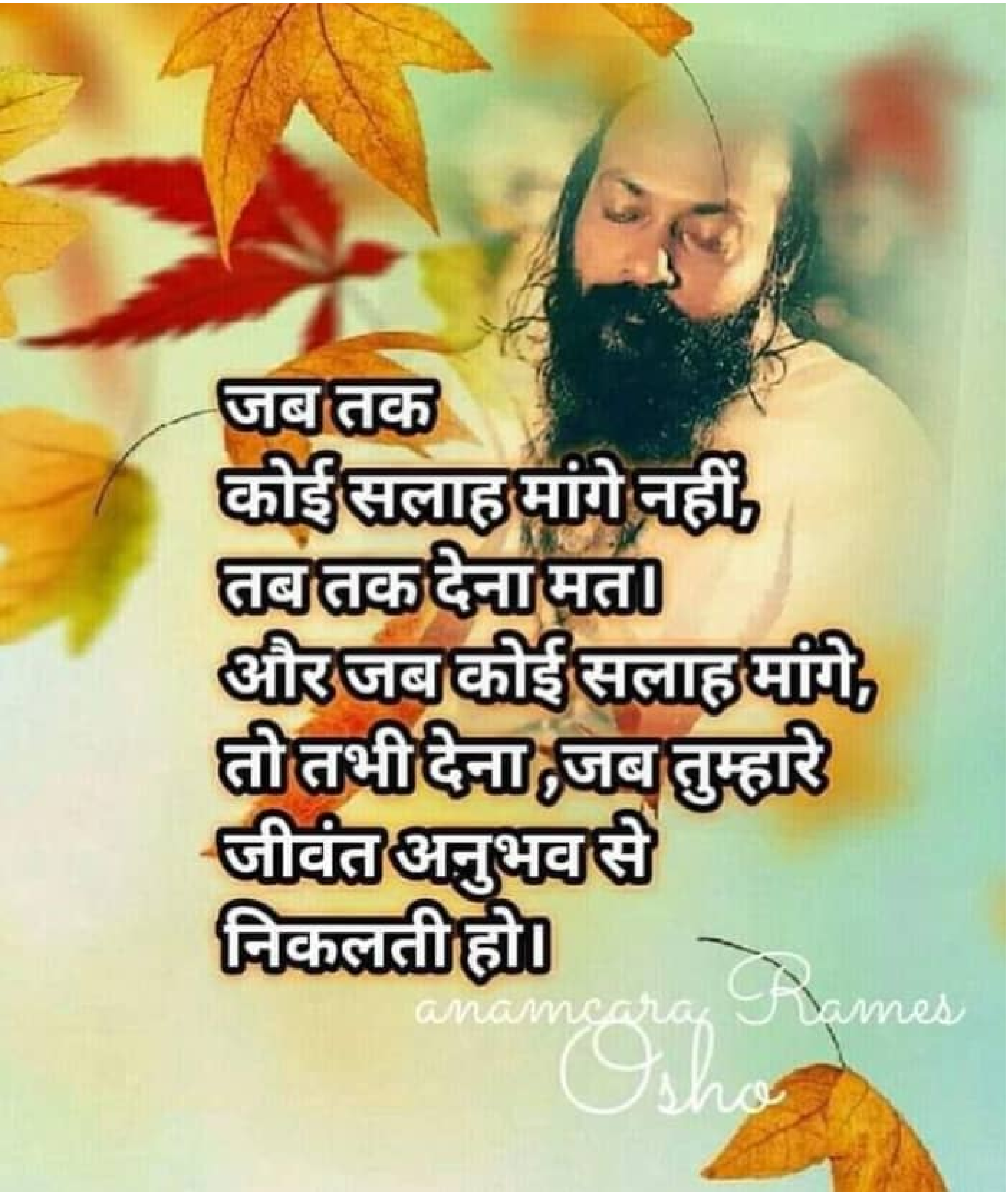
जब तक
कोई सलाह मांगे नहीं,
तब तक देना मत।
और जब कोई सलाह मांगे,
तो तभी देना ,जब तुम्हारे
जीवंत अनुभव से
निकलती हो।
anamcara Rames
Osho

CamScanner

10:29 am 96%

काम नहीं आएगी।
जब तक कोई सलाह मांगे नहीं, तब तक देना मत। और जब कोई सलाह मांगे, तो तभी देना जब तुम्हारे जीवंत अनुभव से निकलती हो। तो किसी के काम पड़े। तो किसी के जीवन में राह बने। तो किसी के अंधेरे में दीया जले।
ये दो कसौटी खयाल रख लेना। पहले तो बिन मांगी सलाह देना मत। क्योंकि बिन मांगी सलाह कोई पसंद नहीं करता, अपमानजनक है। बिन मांगी सलाह का मतलब होता है कि तुम दूसरे को अज्ञानी सिद्ध करने की कोशिश कर रहे हो। दूसरे के अहंकार को चोट लगती है। वह तुमसे बदला लेगा। तुम्हारी सलाह से उसे तो कोई लाभ न होगा, शायद तुम्हें हानि पहुंचाए। सलाह देने वालों को लोग माफ नहीं कर पाते।
तो पहले तो बिन मांगी सलाह देना मत। और सौ में निन्यानबे सलाहें बिन मांगी दी जाती हैं। फिर अगर कोई मांगे भी, तो विचार कर लेना कि तुम्हारी अपनी अनुभूइत क्या है। अपनी अनुशइत के विपरीत सलाह मत देना। अगर तुम ये दो बातें करने में सफल हो जाओ तो न तो तुम किसी को हानि पहुंचा सकोगे, न तुम किसी का अपमान करोगे, न तुम लोगों का मन व्यर्थ कचरे से भरोगे। यह कुशलता छोड़ो! यह कुशलता काम की नहीं है! यह गले में फांसी है तुम्हारे। और अगर ये दो बातें तुमने ध्यान में रखीं तो तुम्हारे जीवन में धीरे—धीरे निखार आएगा, क्योंकि तुम वही करोगे जो कहोगे, और वही कहोगे जो तुम करोगे।

जब किसी व्यक्ति के जीवन में कृत्य में और विचार में तालमेल हो जाता है तो परम संगीत पैदा होता है। नहीं तो ऐसा ही समझो कि तबला एक ढंग से बज रहा है और सितार एक ढंग से बज रहा है, दोनों में कोई तालमेल नहीं है। बेसुरापन है। ऐसे तुम्हारे विचार एक ढंग से चल रहे हैं और तुम्हारा जीवन एक ढंग से चल रहा है। दोनों में कोई तालमेल नहीं है। बैलगाड़ी में जुते बैल, एक इस तरफ को जा रहा है, एक उस तरफ को जा रहा है, और बैलगाड़ी की दुर्दशा हुई जा रही है। जीवन में संगीत तभी पैदा होता है, शांति तभी पैदा होती है, सुख तभी पैदा होता है, जब तुम्हारे विचार और जीवन में एक तालमेल होता है, एक सामंजस्य होता है, एक समन्वय होता है।

सोमवार, 17 अप्रैल 2017
एस धम्मो सनंतनो-(ओशो)-प्रवचन-095

CamScanner

10:28 am
VoLTE 4G 97%



लुकमान से किसी ने पूछा था, ऐसी कौन सी चीज है दुनिया में जिसे सभी देते हैं और कोई नहीं लेता? लुकमान ने कहा, सलाह। दी खूब जाती है, लेता कोई भी नहीं। तुम खुद ही अपनी सलाह मानने को तैयार नहीं हो, थोड़ा सोचो!

मैंने सुना है, एक सूफी फकीर के पास एक स्त्री अपने बेटे को लेकर आयी और उसने कहा कि इसे जरा समझा दें, मैं हार गयी, इसके पिता हार गए, इसके शिक्षक हार गए, हम सबसे समझवा चुके हैं, यह समझता नहीं, अब आप ही एकमात्र आशा हैं, यह बहुत गुड खाता है। फकीर ने कहा, सात दिन बाद आओ।
स्त्री तो समझी नहीं। इसमें सात दिन बाद आने की क्या बात थी? सात दिन बाद पहुंची बेटे को लेकर। फकीर ने कहा कि क्षमा करो, सात दिन और लगेंगे, सात दिन बाद आओ। ऐसा तीसरी बार भी कहा तो उस स्त्री ने कहा, बात क्या है? उसने कहा, बात तो मैं सात दिन बाद आओ तभी बताऊंगा।
इक्कीसवें दिन उस फकीर ने कहा, बेटा, गुड़ खाना बंद कर दे। स्त्री ने तो सिर से हाथ मार लिया कि इस सलाह के लिए इक्कीस दिन भटकाया! तीन बार बुलाया। उसने कहा, यह इतनी सी सलाह नहीं, मैं खुद ही गुड़ खाने का बहुत शौकीन हूं। इस छोटे से बच्चे को मैं कहूं कि गुड़ खाना छोड़ दे, बुरा है, इसके पहले मैं तो छोड़ दूं। इक्कीस दिन मुझे छोड़ने में लग गए। और इसे सलाह देता तो बेईमानी की होती, झूठी होती। उस बेटे ने फकीर की तरफ आंख उठाकर देखा, उसके चरणों में झुका और उसने कहा, तो मैं भी छोड़ देता हूं।

तुम्हारी सलाह में मूल्य तभी आता है जब तुम भी उसे करते हो। तुम्हारा जीवन अगर तुम्हारे विचार के विपरीत है, तो लोग तुम्हारा जीवन देखते हैं, तुम्हारा विचार थोड़े ही। विचार से कोई प्रभावित नहीं होता, लोग प्रभावित जीवन से होते हैं। तुम्हारे भीतर की अग्नि से होते हैं। बातें तुम आग की करो और तुम्हारे जीवन में राख ही राख हो। तुम्हारा जीवन तुम्हारे वचनों को झुठला देगा। बातें तो सभी अच्छी करते हैं। बातें अच्छी करने में क्या लगता है। हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाए। कुछ खर्च तो होता नहीं है बात करने में। लोग जानते हैं कि बातें तो कचरा हैं।

CamScanner

CamScanner

10:26 am 97%

यह पीड़ा तो तभी मिटेगी जब सांवलिया खुद वैद्य होकर आएगा, खुद प्रियतम वैद्य होगा। खुद परमात्मा ही जब हाथ रखेगा इस घाव पर, तभी यह भरेगा। किसी और हाथ से भर नहीं सकता। किसी और हाथ से भरे जाने की इच्छा भी नहीं है, संभावना भी नहीं है।

भक्त कहना भी नहीं चाहता और कभी कह उठता है, तो सिर्फ भीतर की आह के कारण। दर्द ही बोलता है। इसलिए। ये गीत मीरा ने गाए, ऐसा मत समझना, अन्यथा भूल हो जाएगी। वह जो मीरा का घाव है हरा, उसने गाए हैं। अन्यथा मीरा चुप रहती। कहने को क्या था? कहना किससे था? जिससे कहना था, उससे शब्दों में कहने की कोई जरूरत नहीं। और जिनकी समझ में शब्द आते हैं, उनसे कहने का कोई सार नहीं, क्योंकि वे समझ न सकेंगे।

घायल की गति घायल जाणे।

फिर भी मीरा रो रही है। ये कहे गए हैं शब्द। ये अनायास प्रकट हुए हैं। ये गहन पीड़ा से निकले हैं। इनको मीरा रोक नहीं सकी। जैसे घाव से खून बह गया है, ऐसे ये शब्द बहे हैं।

मिलन बहुत प्यारा है! विरह बहुत खारा है! और जिसने विरह के खारेपन को न सहा, उसे मिलन की मिठास भी नहीं मिलेगी। मिलन तो सभी चाहते हैं। विरह कोई भी नहीं झेलना चाहता। इसलिए मिलन नहीं हो पाता। विरह झेलना होगा। विरह की कसौटी से गुजरना होगा। वह परीक्षा देनी ही पड़ेगी। और परीक्षा कठिन है, बहुत कठिन है! क्योंकि तोड़ती ही चली जाती है। तोड़ती ही चली जाती है। जलाती ही चली जाती है। रोज—रोज पीड़ा सघन होती चली जाती है।

जैसे—जैसे परमात्मा के करीब आते हो, पीड़ा बढ़ती है, पीड़ा मिटती है जरूर, जब मिलन हो जाता है। तब बड़ा स्वाद है, बड़ी मिठास है, बड़ा माधुर्य है, बड़ी मदिरा है! लेकिन उसके पहले बड़ा खारापन है। सागर के सागर पी लेने पड़ते हैं, तब कहीं स्वाति की एक बूंद हाथ लगती है।

पद घुंघरू बांध-(प्रवचन-15)

CamScanner

10:26 am 97%

मीरा कहती है: हम कीचड़ में घसिट रहे हैं। और प्रभु विराजमान है गगन में। बड़ी दूरी है। किस विधि मिलना होइ? तड़फते हैं प्राण। हम इस पार, तुम उस पार। नाव का कुछ पता नहीं। कैसे हम उस पार आएं? कैसे तुम इस पार आओ? कैसे मिलना हो? और जब तक मिलना न हो तब तक कैसी सांत्वना, कैसी शांति, कैसा विश्राम?

सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विधि होइ।

गगन मंडल पे सेज पिया की, किस विधि मिलना होइ।

दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोइ।

वैद्य मिल भी नहीं सकता। यह बीमारी ऐसी नहीं कि जिसकी चिकित्सा हो जाए। यह तो परम वैद्य मिलेगा, तो ही बीमारी जाएगी।

दरद की मारी बन बन डोलूं...

मीरा कहती है: घूमती हूं—इस कोने से उस कोने, इस नगर से उस नगर, इस वन से उस वन। पुकारती फिरती हूं। सब तरफ आवाज देती हूं। सब द्वार खटखटाती हूं—इस मंदिर के, उस मंदिर के—लेकिन कहीं कोई वैद्य नहीं मिलता। कहीं कोई नहीं मिलता जो इस बाण को खींच ले, घाव को भर दे। नहीं कोई वैद्य मिल सकता। और अच्छा ही है कि वैद्य नहीं मिल सकता। उस वैद्य का उपाय ही नहीं किया है परमात्मा ने। जिसको भक्ति का घाव लगा, वह फिर भरने वाला नहीं है; वह बढ़ता ही चला जाता है।

भक्त एक दिन पूरा का पूरा घाव हो जाता है, पूरा प्यास हो जाता है। उस दिन मिलन है। उसके पहले मिलन नहीं। यह कीमत चुकानी पड़ती है।

मीरा की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद सांवलिया होइ।

यह पीड़ा तो तभी मिटेगी जब सांवलिया खुद वैद्य होकर आएगा, खुद प्रियतम वैद्य होगा। खुद परमात्मा ही जब हाथ रखेगा इस घाव पर, तभी यह भरेगा। किसी और हाथ से भर नहीं सकता। किसी और हाथ से भरे जाने की इच्छा भी नहीं है, संभावना भी नहीं है।

CamScanner

10:23 am 98%

---

कुछ लोग अपना सारा जीवन इसमें ही व्यतीत करते हैं कि उनके बच्चे बड़े हों, उनके बच्चे शिक्षित हों, उनके बच्चे विवाहित हों, उनके बच्चे व्यवस्थित हो जाएं। उनसे कोई पूछे कि यही तुम्हारे पिता कर रहे थे तुम्हारे लिए, यही तुम्हारे बच्चे उनके बच्चों के लिए करेंगे, यह गोरखधंधा किसलिए है? तुम्हारे पिता इसलिए जिए कि तुम बड़े हो जाओ, शिक्षित हो जाओ, व्यवस्थित हो जाओ; तुम इसलिए जी रहे हो कि तुम्हारे बच्चे बड़े हो जाएं; तुम्हारे बच्चे भी इसलिए जिएंगे। इस जीने का प्रयोजन क्या है?

कहीं ऐसा तो नहीं कि जीने का ढंग समझ में नहीं आता है, इसलिए कहीं भी लगाकर मन को व्यस्त रख लेते हैं? बच्चों में लगाकर व्यस्त रख लेते हैं। जिनके बच्चे हैं, वे परेशान हैं कि इनकी वजह से जी नहीं पाते; जिनके बच्चे नहीं हैं, वे परेशान हैं कि जिएं कैसे, बच्चे हैं ही नहीं?

ऐसा मालूम पड़ता है कि हमें पता ही नहीं कि जीवन की रसधार कहां है। और ऐसा नहीं है कि जो जीवन की रसधार को पा लेगा, वह धन नहीं कमाएगा। और ऐसा भी नहीं है कि जो जीवन की रसधार को पा लेगा, वह अपने बच्चों की फिक्र न करेगा। लेकिन उसकी फिक्र बदल जाएगी। उसके धन' के कमाने का सारा आधार बदल जाएगा। जिसने जीवन की रसधार पा ली है, वह भी अपने बच्चों के लिए फिकिर करेगा, लेकिन अब यह फिकिर उसकी व्यस्तता नहीं है और पोस्टपोनमेंट नहीं है। यह वह स्थगित नहीं कर रहा है अपना जीवन। वह यह नहीं कह रहा है कि मैं तुम्हारे लिए जिऊंगा।
लेकिन कोई किसी के लिए जी सकता है।

जिसने अपने जीवन की रसधार पायी, वह स्वयं जिएगा; उसके जीवन से उसके बच्चों को भी जीवन मिलेगा, यह बिलकुल दूसरी बात है। लेकिन अपने जीवन को बच्चों के कंधों पर रखकर नहीं वह जिएगा कि इनके द्वारा मैं जी लूंगा। ऐसे तो हर व्यक्ति एक—दूसरे पर स्थगित करता चला जाता है और कोई भी नहीं जी पाता।

ओशो

CamScanner

तुम्हारे ही हृदय की असंख्य
विषय वासनाओं के सिवा
और कौन तुम्हें
कष्ट दे सकता है?
-लोकेशानन्द
413 विषयों का संग

CamScanner

10:22 am 98%

**Swami Lokeshanand**
3h ·

"यह जगत रज्जुसर्पवत् केवल अध्यारोपित है। जैसे सर्प है ही नहीं, कल्पना मात्र है। ऐसे ही जगत है ही नहीं, कोरी कल्पना है। वास्तव में इसकी न उत्पति है, न विनाश। तो जब जगत ही नहीं है, तब न कोई बद्ध है, न मुक्त। न कोई साधक है, न मुमुक्षु, न विषयी ही है।" बस इतना ही कुल परमार्थ तत्व है।

पर जैसे पैदा हुआ बालक रमण सुख नहीं समझ सकता, विषयी को परमार्थ तत्व कैसे समझ आए? यह परमार्थ तत्व संबंधी उपदेश, साधन से शुद्ध हुए अन्तःकरण वाले साधक के कान में पड़ते ही, उसे वैसे ही सम्यक बोध हो जाता है, जैसे सूखी घास, चिंगारी मात्र पड़ने से राख हो जाती है। लेकिन जैसे खिड़की दरवाजे बंद होने पर, प्रचण्ड सूर्य भी अंधकार का विनाश नहीं कर पाता, विषयों से अशुद्ध अन्तःकरण वाले को तो समस्त शास्त्र घोट कर पिला देना भी व्यर्थ चला जाता है।

देखो! साँप डसे, बिच्छू काटे, हाथी कुचल दे, आग जला दे, पानी डुबाए, पहाड़ से गिरना पड़े, तो भी हानि नहीं है। हानि तो विषयों के संग से है। जल में डूबा तो एक बार बच भी सकता है, विषयों का संग करने वाला कभी नहीं बचता।

तुम्हारे जीवन में जितने भी कष्ट हैं, सब का एकमात्र कारण विषयों का संग ही है। आखिर तुम्हारे ही हृदय की असंख्य विषय वासनाओं के सिवा और कौन तुम्हें कष्ट दे सकता है?

विषयों का संग छोड़ो! शास्त्र पढ़ते रहो, नाम जपते रहो, मौन-शांत रहो, वस्त्र रंग लो, गेरुए हो जाओ, माला हाथ में ले लो, व्यवहारिक जगत ही में रहते हुए, भगवान के गुण गा-गाकर मस्त हो रहो। श्रद्धा से भर कर, अपना मन पृथ्वी जैसा बना लो, कि कोई विष्ठा भी डाले, तो भी अन्न ही उपजे।

देर मत करो। अपनी आयु पर श्रद्धा मत करो। विचार करो कि कहाँ गए वो राजा? उनकी सभा, सेना, ताज कहाँ गए? उनकी वो चन्द्रमुखी स्त्रियाँ कहाँ गईं? आँखें खोलो! पत्थर-लकड़ी-मिट्टी से बनी चीजों की फिर भी कोई उम्र तो है, तुम्हारी? सूर्य चंद्रमा भी काल की इच्छा के गुलाम हैं, फिर तुम किस गिनति में हो?

जोश मत खाओ! देखो कितने दरिया चढ़-चढ़ कर उतर गए। कितने जंगल सूख गए। काल, संसार रूपी चौपड़ पर,

CamScanner

10:21 am 98%

करे ?

भरे हुए आदमी ही शांति से मर सकते हैं। हां, बुद्ध विदा होते हैं शांति से, उल्लास से, उमंग से; जैसे किसी प्यारी यात्रा पर जाते हों! ज़रा भी क्षण-भर को भी, कण-भर को भी मोह नहीं होता इस तट से बंधे रहने का। छोड़ देते अपनी नाव उस पार जाने को। खोल देते अपने पंख। विराट की पुकार आ गई, आवाज आ गई, संदेश आ गया। रुकना कैसा? फिर इस तट को खूब जी लिया, मन भर कर जी लिया जी भरकर जी लिया! इस तट के गीत भी सुन लिए, इस तट का गीत भी गा लिया। इस तट के नृत्य भी देख लिए, इस तट का नाच भी नाच लिया। इस तट पर जो भी सुंदर था, जो भी मूल्यवान था, सबका स्वाद ले लिया। जाने की घड़ी आ ही गई। अब और तटों पर होंगे। अब और नृत्य और गीत उठेंगे। अब और दीए जलेंगे। एक उल्लास है। एक जाने की तत्परता है। अगर गीत न गाया गया हो तो मुश्किल खड़ी होती है।

मृत्यु पीड़ा है, क्योंकि गीत गाया नहीं गया है। गीत गाने की तो बात दूर, साज भी टूट गया है। वीणा के तार भी उखड़ गए हैं। वाद्य भी विकृत हो गया है। आवाज भी मर गई है। यह आवाज जो गीत गाने को दी गई थी, गालियां देते-देते मर गई है। ये प्राण जो प्रार्थना के लिए दिए थे, इनका प्रार्थना से तो कोई संबंध ही न जुड़ा; ये तो पद-प्रतिष्ठा की आपा-धापी में ही टूट गए हैं, उखड़ गए हैं। ये धड़कनें जो परमात्मा के साथ नाचने के लिए थीं, इन्हें तो बड़े सस्ते में बाजार में बेच आए हो।

आत्मा बेच कर मरते हैं लोग, तो रोते हुए मरते हैं। अपना गीत तो निश्चित गाना है। और यह गीत तुम्हारे गाए नहीं गाया जा सकता। तुम्हें राह देनी है कि परमात्मा गा सके। और यह गीत जब गाया जाता है तो पता चलता है अपना है न पराया है, उसका है।
ज्योति से ज्योति जले
ओशो नमन प्रेम नम

CamScanner

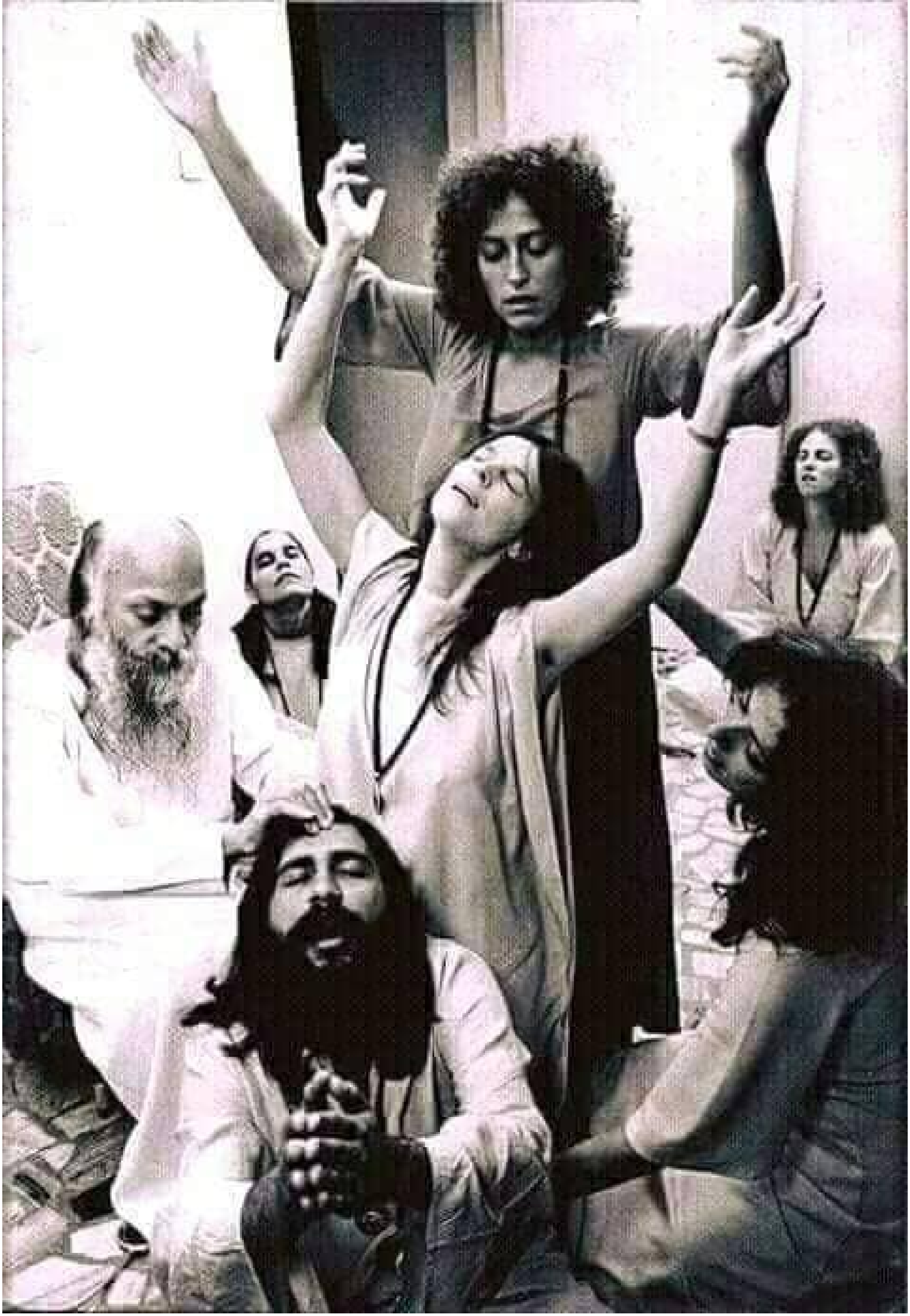

CamScanner

10:19 am 99%

मृत्यु के क्षण में लोग तड़फते क्यों हैं?

तुमने किसी पक्षी को मरते देखा ? ऐसे सरल, ऐसे सहज, चुपचाप विदा हो जाता है! पंख भी नहीं फड़फड़ाता। शोरगुल भी नहीं मचाता। पक्षी तो इतने चुपचाप विदा हो जाते हैं, इतनी सरलता से विदा हो जाते हैं! ज़रा नोच-खचोंट नहीं। ज़रा शोरगुल नहीं। तुमने पशुओं को मरते देखा? मौत में भी एक अपूर्व शांति होती है।

आदमी को मरते देखो--कितना उपद्रव मचाता है, कितना रोकने की अपने को चेष्टा करता है! क्या होगा कारण? कारण है: जिंदगी व्यर्थ गई और मौत आ गई। अब आगे कोई समय न बचा। खाली आए खाली गए, कुछ भराव नहीं और यह मौत आ गई। तड़फे न आदमी तो क्या करे ?

भरे हुए आदमी ही शांति से मर सकते हैं। हां, बुद्ध विदा होते हैं शांति से, उल्लास से, उमंग से; जैसे किसी प्यारी यात्रा पर जाते हों! ज़रा भी क्षण-भर को भी, कण-भर को भी मोह नहीं होता इस तट से बंधे रहने का। छोड़ देते अपनी नाव उस पार जाने को। खोल देते अपने पंख। विराट की पुकार आ गई, आवाज आ गई, संदेश आ गया। रुकना कैसा? फिर इस तट को खूब जी लिया, मन भर कर जी लिया जी भरकर जी लिया! इस तट के गीत भी सुन लिए, इस तट का गीत भी गा लिया। इस तट के नृत्य भी देख लिए, इस तट का नाच भी नाच लिया। इस तट पर जो भी सुंदर था, जो भी मूल्यवान था, सबका स्वाद ले लिया। जाने की घड़ी आ ही गई। अब और तटों पर होंगे। अब और नृत्य और गीत उठेंगे। अब और दीए जलेंगे। एक उल्लास है। एक जाने की तत्परता है। अगर गीत न गाया गया हो तो मुश्किल खड़ी होती है।

मृत्यु पीड़ा है, क्योंकि गीत गाया नहीं गया है। गीत गाने की तो बात दूर, साज भी टूट गया है। वीणा के तार भी उखड़ गए हैं। वाद्य भी विकृत हो गया है। आवाज भी मर गई है। यह आवाज जो गीत गाने को दी गई थी, गालियां देते-देते मर गई है। ये प्राण जो प्रार्थना के लिए दिए थे, इनका प्रार्थना से तो कोई संबंध ही न जुड़ा; ये तो पद-प्रतिष्ठा की आपा-धापी में ही टूट गए हैं, उखड़ गए हैं। ये धड़कनें जो परमात्मा के साथ नाचने के

CamScanner

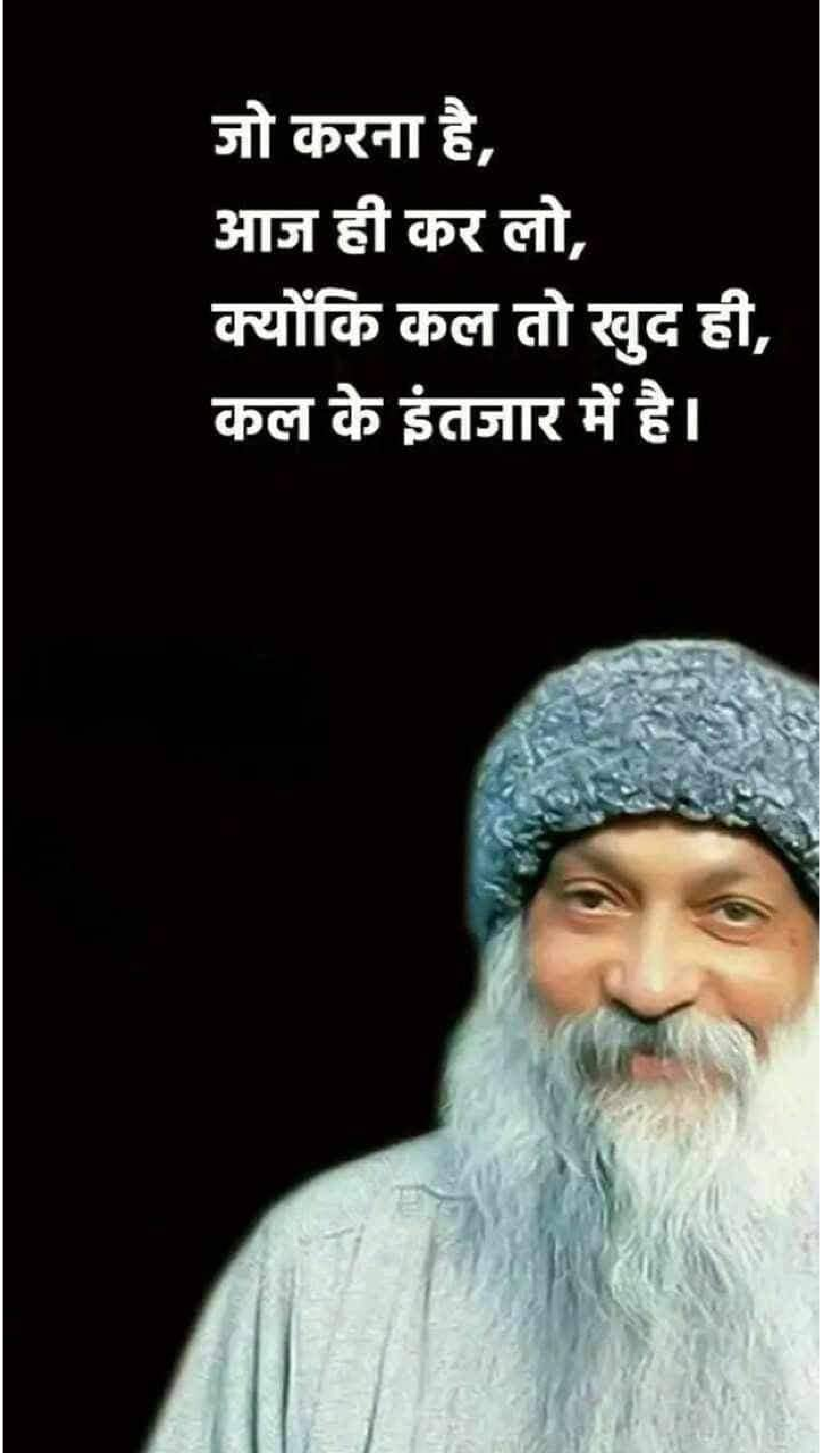


CamScanner

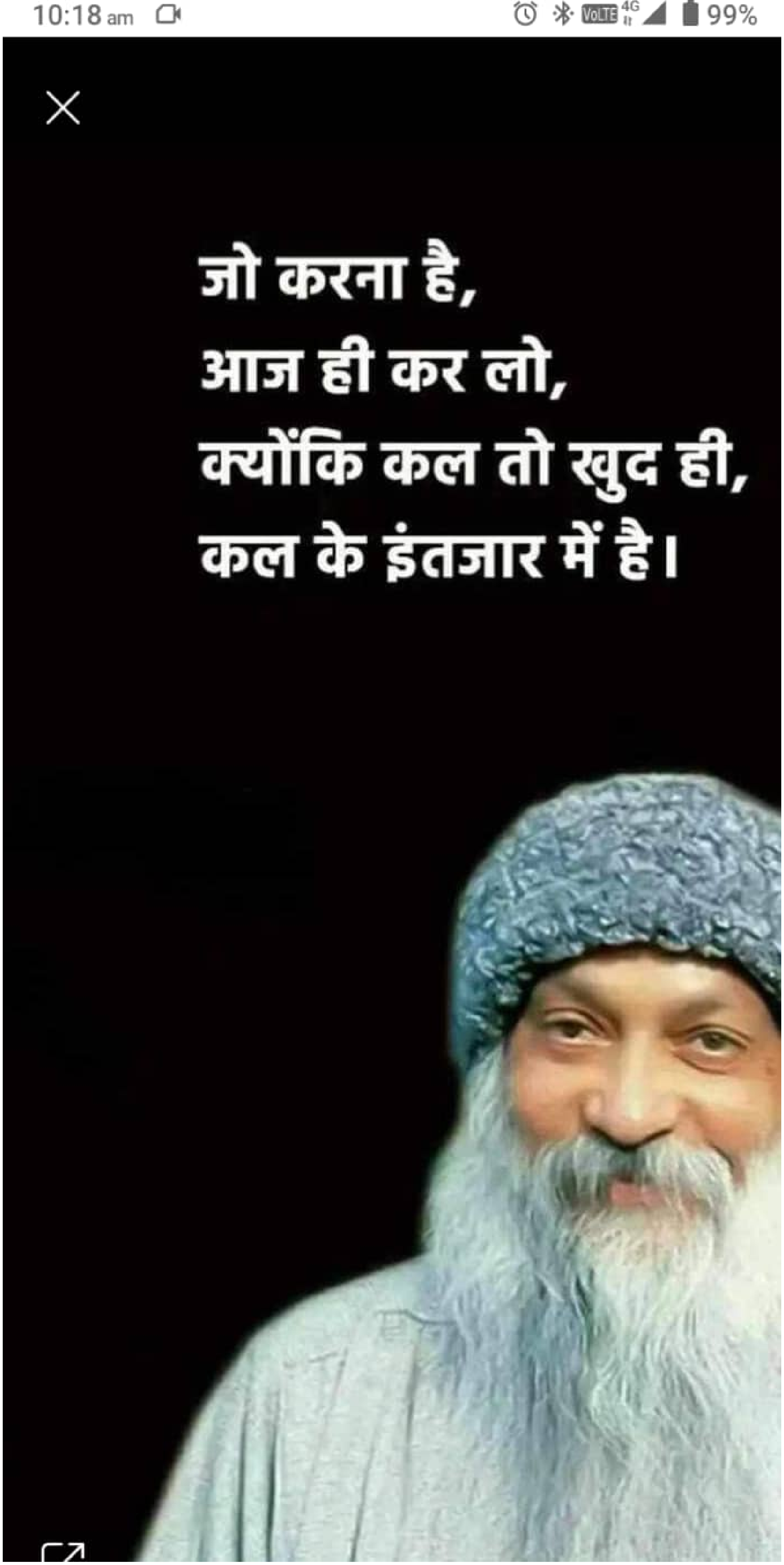


CS CamScanner

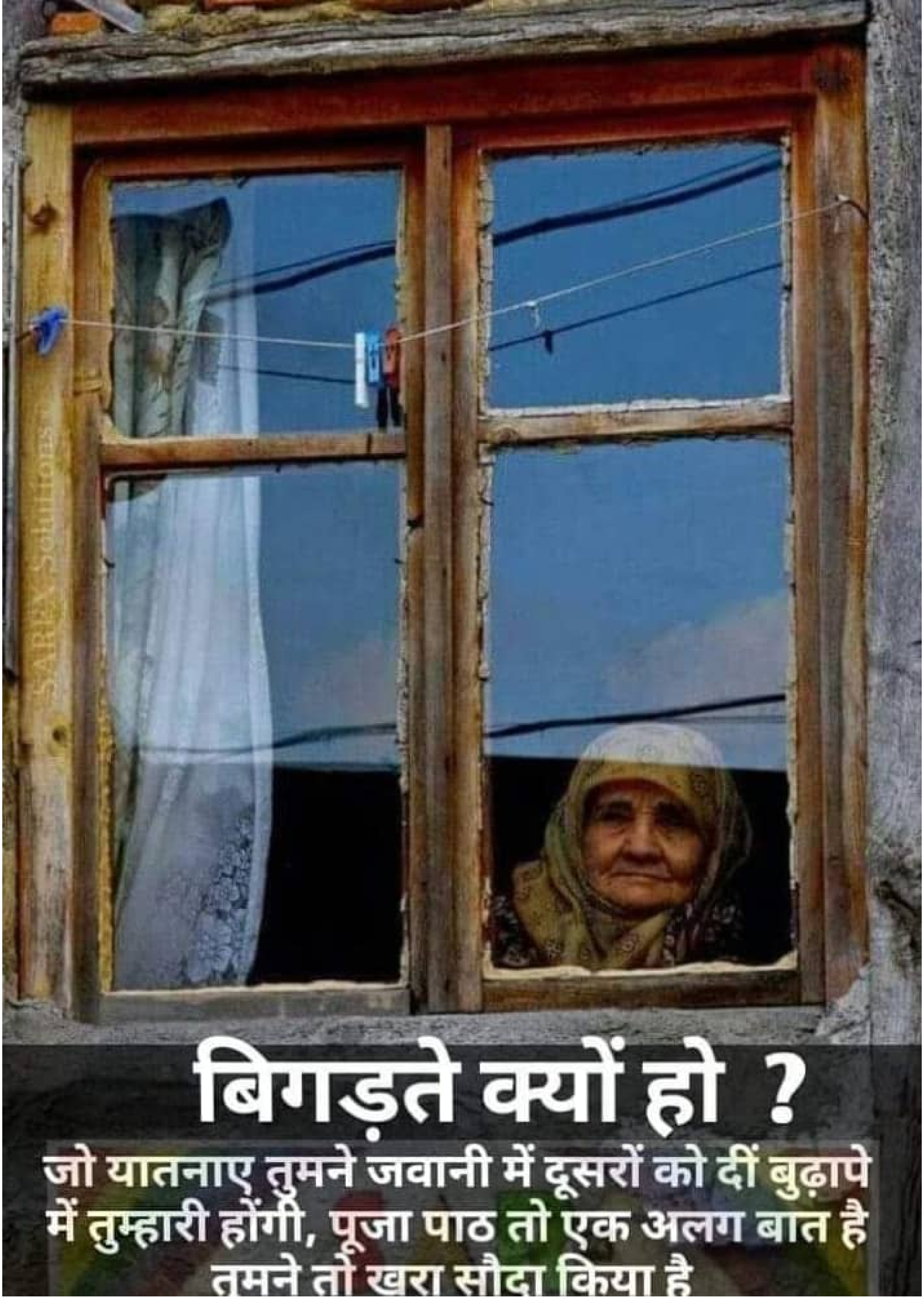
बिगड़ते क्यों हो ?
जो यातनाए तुमने जवानी में दूसरों को दीं बुढ़ापे
में तुम्हारी होंगी, पूजा पाठ तो एक अलग बात है
तुमने तो खरा सौदा किया है

CamScanner

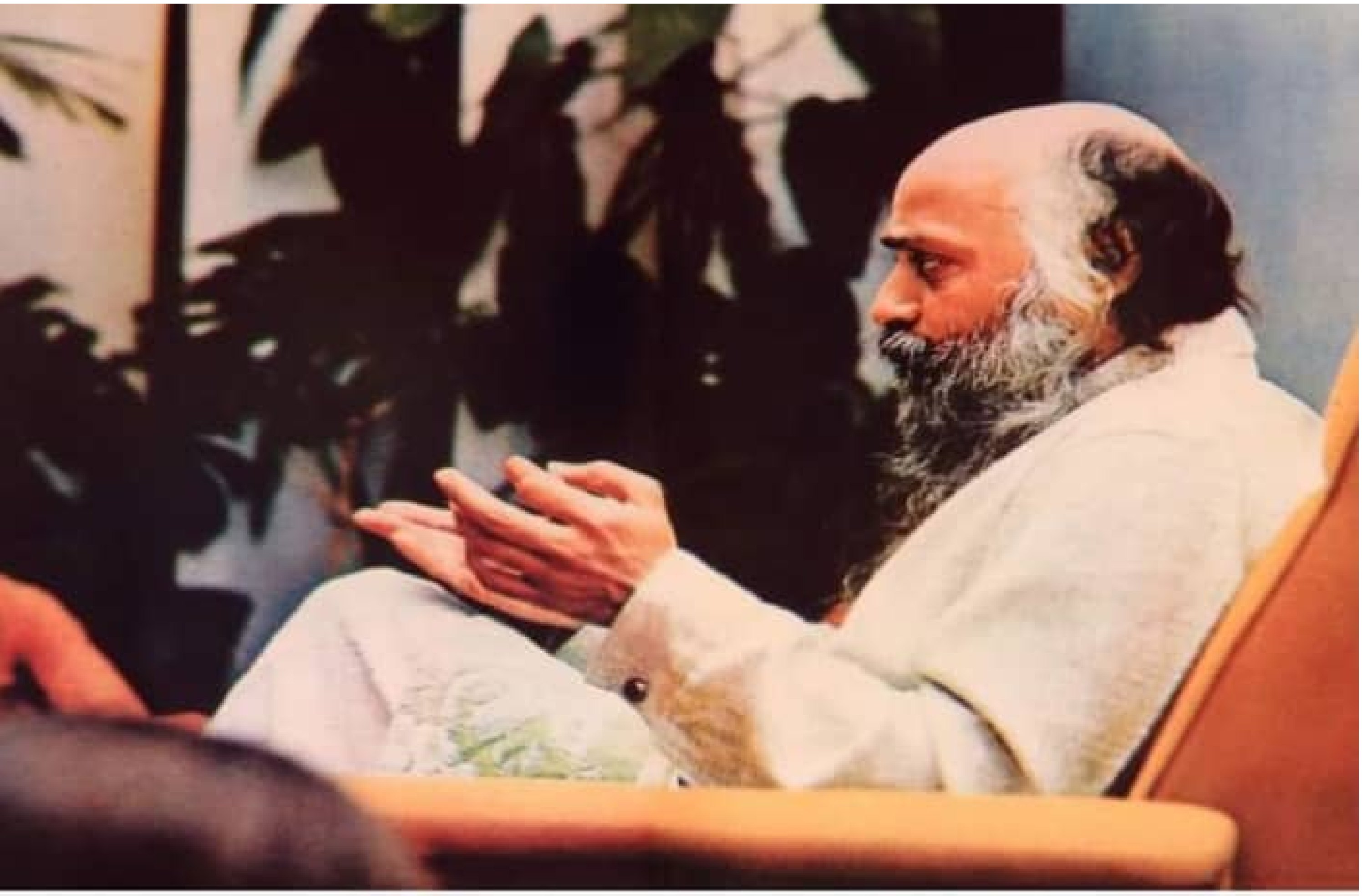

रंग भी, ध्वनि भी, गंध भी, स्वाद भी, स्पर्श भी, सबका चुनाव करना होगा, तब ऊपर की यात्रा शुरू होती है। और हम सब कंफ्यूज्ड हैं, क्योंकि हम सब अनर्गल, असंगत चुनाव करते रहते हैं। अनेक तरह की नाव पर सवार हो जाते हैं। फिर जीवन टूटता है, जीवन नष्ट होता है और हम कहीं पहुंच नहीं पाते हैं।
~ओशो, ज्यो की त्यों धरि दीन्ही चदरिया।

CS CamScanner

9:58 am 100%
facebook

हीरे-जवाहरातों से भर दो।
उसके पास तिजोरियां थीं अकूत, उसके पास धन था जो कभी गिना नहीं जा सका, उसके पास दौलत थी जिसका कोई हिसाब न था, उसका राज्य था जिसकी कोई सीमाएं न थीं।
सोचा कि क्या, भिक्षापात्र ही जब कोई भिक्षु लेकर आ गया है और पूरे भरने की मांग की है तो क्या अनाज के दानों से भरूं।
तो उसने भर दिया पूरा भिक्षापात्र, भरने की कोशिश की। उसी कोशिश में सांझ हो गई थी। उसकी सारी तिजोरियां खाली होती गईं। वह भिक्षापात्र बड़ा अजीब था, वह भरता ही न था। धीरे-धीरे उसके अकूत खजाने खाली हो गए।
और संध्या की जब उदासी उतरने लगी नगर पर तब राजा के महल में भी घनघोर अंधकार छा गया। वह भिक्षापात्र भरता ही न था।
सुबह से सांझ हो गई थी। जितनी संपत्ति राजा के पास थी वह डाल चुका था। और वह भिक्षु खड़ा था। और राजधानी के लोग इकट्ठे होते चले गए थे। अजीब थी बात। भिक्षुक बड़ा साबित हो रहा था सम्राट से। हमेशा ही ऐसा हुआ है। भिक्षुक हमेशा सम्राट से बड़ा है। सम्राट चुक जाए लेकिन भिक्षुक का मन कभी भरता नहीं। वह भिक्षु का पात्र भी नहीं भरता था। आखिर राजा ने कहा: क्षमा कर दो, भूल हो गई।
भिक्षुक ने कहा: पहले ही कह देते तो इतनी देर मुझे क्यों खड़ा रहने पड़ता? इतना ही तो कहना था कि नहीं भर सकूंगा, मैं चला जाता।
राजा ने कहा: लेकिन जाते समय इतना बता जाओ कि यह पात्र कैसा है?
यह कैसा मैजिक, यह कैसा जादू का पात्र है, यह भरता क्यों नहीं?
उस भिक्षु ने कहा: इसमें कुछ रहस्य नहीं, एक मनुष्य की खोपड़ी से इसे मैंने बनाया है। इसमें कोई जादू नहीं।
मरघट से खोपड़ी खोद लाया हूं, उसी से इसे बनाया है।
अब इसे दुनिया में कोई भी भर नहीं सकता है।

|| ओशो. ||
|| " अज्ञात की ओर " ||
-(प्रवचन-01.

CamScanner

8:41 am 97%

वह सब कुछ ले लिया है
जो उन्हें भिन्न बनाता है।
मैंने उन्हें बता दिया है
कि
अब लाल वस्त्र पहनना आवश्यक नहीं है।

सभी रंग हमारे हैं।

मेरे फोटो वाली
माला पहनने की
आवश्यकता नहीं है,
क्योंकि
मैं कोई उद्धारक,
मसीहा या पैंगबर नहीं हूं।

मेरे पास तुम्हें देने को परमात्मा नहीं है,
मैं केवल तुम्हें स्वयं को
जानने का विज्ञान दे सकता हूं।

अतः
तुम्हें सिर्फ समझना होगा
कि मैं केवल एक मित्र हूं,
उससे अधिक कुछ नहीं।

मैं तुममें से एक हूं,
इसलिए किसी
पूजा की आवश्यकता नहीं है
और अपने को
किसी समूह का हिस्सा समझने की
जरूरत नहीं है।

तुम सभी
वैयक्तिक इकाई हो।

आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

8:41 am
97%
facebook

डिसएपायस। भय तो तभी तक रहता है जब मृत्यु अनिश्चित होती है। रसोइए की मृत्यु तो निश्चित थी। तलवार उठाकर उलटे–सीधे हाथ चलाने उसने शुरू कर दिए।

समुराई तो घबड़ाया, क्योंकि नियम के विपरीत तलवार चला रहा था वह! वह डरा, क्योंकि वह लड़ा था सदा–नियम थे, मर्यादाएं थीं, ढंग थे–जानता था कि दूसरा आदमी क्या वार करेगा। एक–एक वार परिचित था। लेकिन यह रसोइया तो ऐसे वार करने लगा, जो तलवार के शास्त्र में कहीं लिखे ही नहीं हैं। और समुराई के लिए तो जीवन अभी शेष था। रसोइए का जीवन समाप्त हो गया था। समुराई बड़ा बहादुर लड़ाका था, लेकिन भय भीतर था। क्योंकि मौत निश्चित न थी। रसोइया सिर्फ, रसोइया था, लेकिन मौत इतनी निश्चित थी कि भय का कोई कारण न था।

थोड़ी ही देर में रसोइए ने समुराई को दीवार से टिका दिया। छाती पर तलवार रख दी। समुराई ने कहा, माफ कर। मगर तू ऐसा लड़ाका है, यह मैंने कभी सोचा भी न था! उसने कहा, लड़ाका मैं बिलकुल नहीं हूं। यह तो मौत के सुनिश्चित हो जाने से हुआ है।

संन्यासी जानता है, मौत सुनिश्चित है, भय कैसा! भय का कोई अर्थ ही नहीं है। इरेंलेवेंट, असंगत है। जो होना ही है, वह एक अर्थ में हो ही गया। अब भय कैसा!

मोह को हम फैलाते हैं क्यों? क्योंकि अकेले हम काफी नहीं हैं। दूसरा हो साथ, तीसरा हो साथ, अपने लोग हों, तो भरे–भरे लगते हैं। लेकिन संन्यासी जानता है कि अकेला होना नियति है, टु बी। अलोन इज द डेस्टिनी, कोई उपाय नहीं है दूसरे के साथ होने का। है ही नहीं उपाय। चाहे पत्नी बनाओ चाहे पति बनाओ, चाहे मित्र बनाओ, पिता, बेटा, दूसरा-दूसरा ही रहेगा। कोई उपाय नहीं, कोई मार्ग नहीं है। अकेले–अकेले हैं। अकेला होना नियति है। धोखा दे सकते हैं दूसरे को साथ रखकर कि नहीं अकेले नहीं हैं।

CamScanner

सुनिश्चित हो, तो भय मिट जाता है। व्हेन डेथ इज डेफिनिट, फियर डिसएपीयर्स। भय तो तभी तक रहता है जब मृत्यु अनिश्चित होती है। रसोइए की मृत्यु तो निश्चित थी। तलवार उठाकर उलटे—सीधे हाथ चलाने उसने शुरू कर दिए।

समुराई तो घबड़ाया, क्योंकि नियम के विपरीत तलवार चला रहा था वह! वह डरा, क्योंकि वह लड़ा था सदा—नियम थे, मर्यादाएं थीं, ढंग थे—जानता था कि दूसरा आदमी क्या वार करेगा। एक—एक वार परिचित था। लेकिन यह रसोइया तो ऐसे वार करने लगा, जो तलवार के शास्त्र में कहीं लिखे ही नहीं हैं। और समुराई के लिए तो जीवन अभी शेष था। रसोइए का जीवन समाप्त हो गया था। समुराई बड़ा बहादुर लड़ाका था, लेकिन भय भीतर था। क्योंकि मौत निश्चित न थी। रसोइया सिर्फ, रसोइया था, लेकिन मौत इतनी निश्चित थी कि भय का कोई कारण न था।

थोड़ी ही देर में रसोइए ने समुराई को दीवार से टिका दिया। छाती पर तलवार रख दी। समुराई ने कहा, माफ कर। मगर तू ऐसा लड़ाका है, यह मैंने कभी सोचा भी न था! उसने कहा, लड़ाका मैं बिलकुल नहीं हूं। यह तो मौत के सुनिश्चित हो जाने से हुआ है।

संन्यासी जानता है, मौत सुनिश्चित है, भय कैसा! भय का कोई अर्थ ही नहीं है। इरेंलेवेंट, असंगत है। जो होना ही है, वह एक अर्थ में हो ही गया। अब भय कैसा!

मोह को हम फैलाते हैं क्यों? क्योंकि अकेले हम काफी नहीं हैं। दूसरा हो साथ, तीसरा हो साथ, अपने लोग हों, तो भरे—भरे लगते हैं। लेकिन संन्यासी जानता है कि अकेला होना नियति है, टु बी। अलोन इज द डेस्टिनी, कोई उपाय नहीं है दूसरे के साथ होने का। है ही नहीं उपाय। चाहे पत्नी बनाओ चाहे पति बनाओ, चाहे मित्र बनाओ, पिता, बेटा, दूसरा-दूसरा ही रहेगा। कोई उपाय नहीं, कोई मार्ग नहीं है। अकेले—अकेले हैं। अकेला होना नियति है। धोखा दे सकते हैं दूसरे को साथ रखकर कि नहीं अकेले नहीं हैं।

🌹ओशो🌹 🙏🙏💕

CS CamScanner

8:36 am 97%

13 19 comments

Like Comment Send

**Naye bharat ke khoj**
2h ·

सात सौ वर्ष पहले, पिछला मेरा जो जन्म था, उसमे मरने के पहले इक्कीस दिन के एक अनुष्ठान की व्यवस्था थी। इक्कीस दिन पूर्ण उपवास में रहकर मैं वह शरीर छोड़ दूंगा। उसके कुछ प्रयोजन थे। लेकिन वह वे इक्कीस दिन पूरे नहीं हो सके। तीन दिन बाकी रह गए। वे तीन दिन इस बार पूरे करने पड़े।

एक आदमी ने मेरी हत्या कर दी, वह हत्या कीमती हो गई। वे तीन दिन जो।चूक गए, मृत्यु के क्षण में, उस जीवन की।पूरी साधना के बाद वे तीन दिन जो कर सकते थे, इस जन्म में इक्कीस वर्षो में पूरा हो पाया। एक एक दिन के लिए सात सात वर्ष चुकाने पड़े।

तो उस जन्म से पूरा ज्ञान लेकर मैं नहीं आया करीब - करीब । पर्दा उठ सकता था, लेकिन तब एक जन्म होता। अभी एक जन्म और ले सकता हूं। एक जन्म की संभावना और है। लेकिन वह इस पर निर्भर करेगा कि कुछ उपयोग हो सकेगा कि नहीं। इस जन्म पूरी मेहनत कर लेने से पता चलेगा कि कुछ उपयोग हो सकता है तो ठीक है, अन्यथा वह बात समाप्त हो जाती है, उसका कोई प्रयोजन नहीं है।

ओशो।

CamScanner

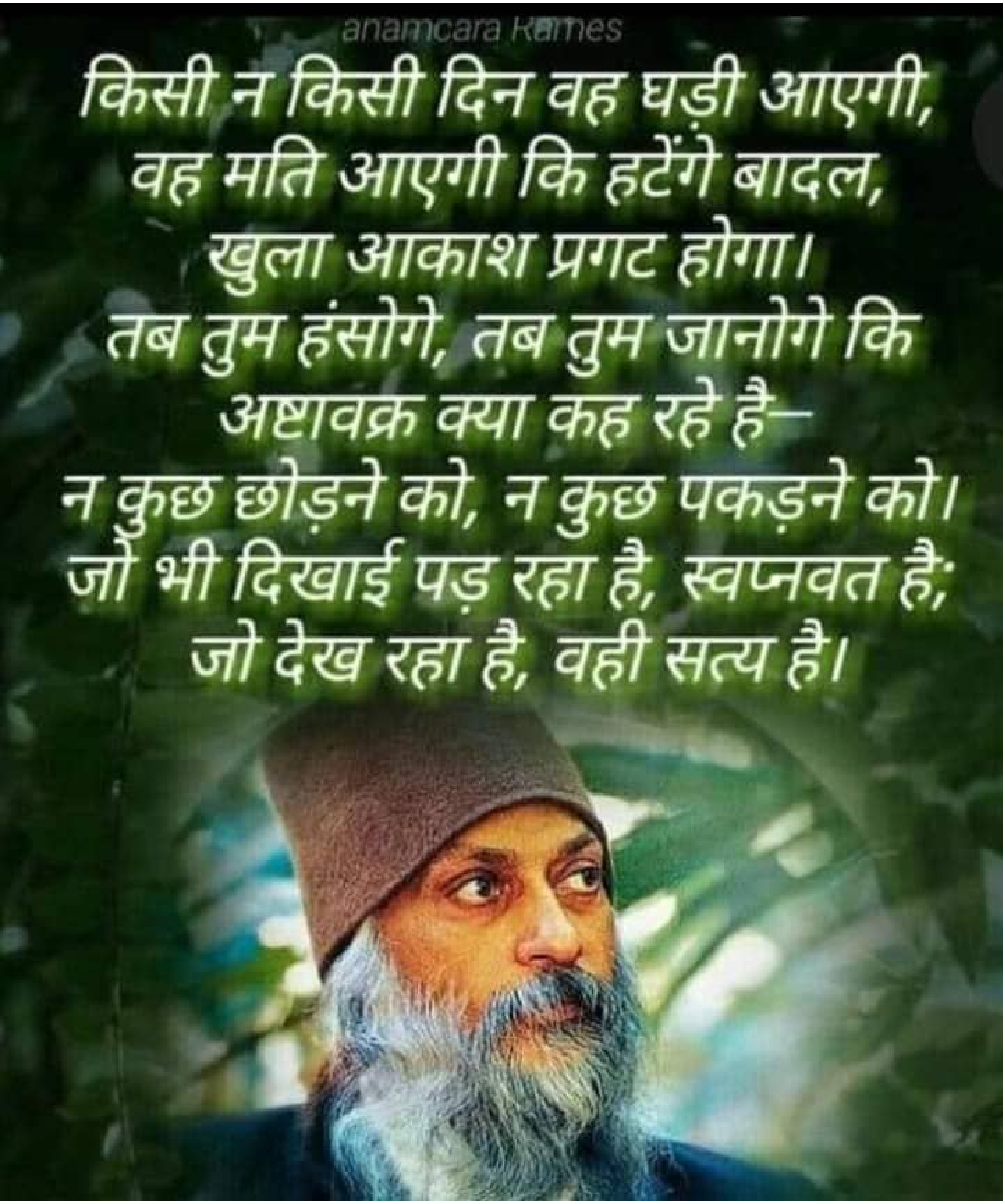
anamcara Rames
किसी न किसी दिन वह घड़ी आएगी,
वह मति आएगी कि हटेंगे बादल,
खुला आकाश प्रगट होगा।
तब तुम हंसोगे, तब तुम जानोगे कि
अष्टावक्र क्या कह रहे है—
न कुछ छोड़ने को, न कुछ पकड़ने को।
जो भी दिखाई पड़ रहा है, स्वप्नवत है;
जो देख रहा है, वही सत्य है।

CamScanner

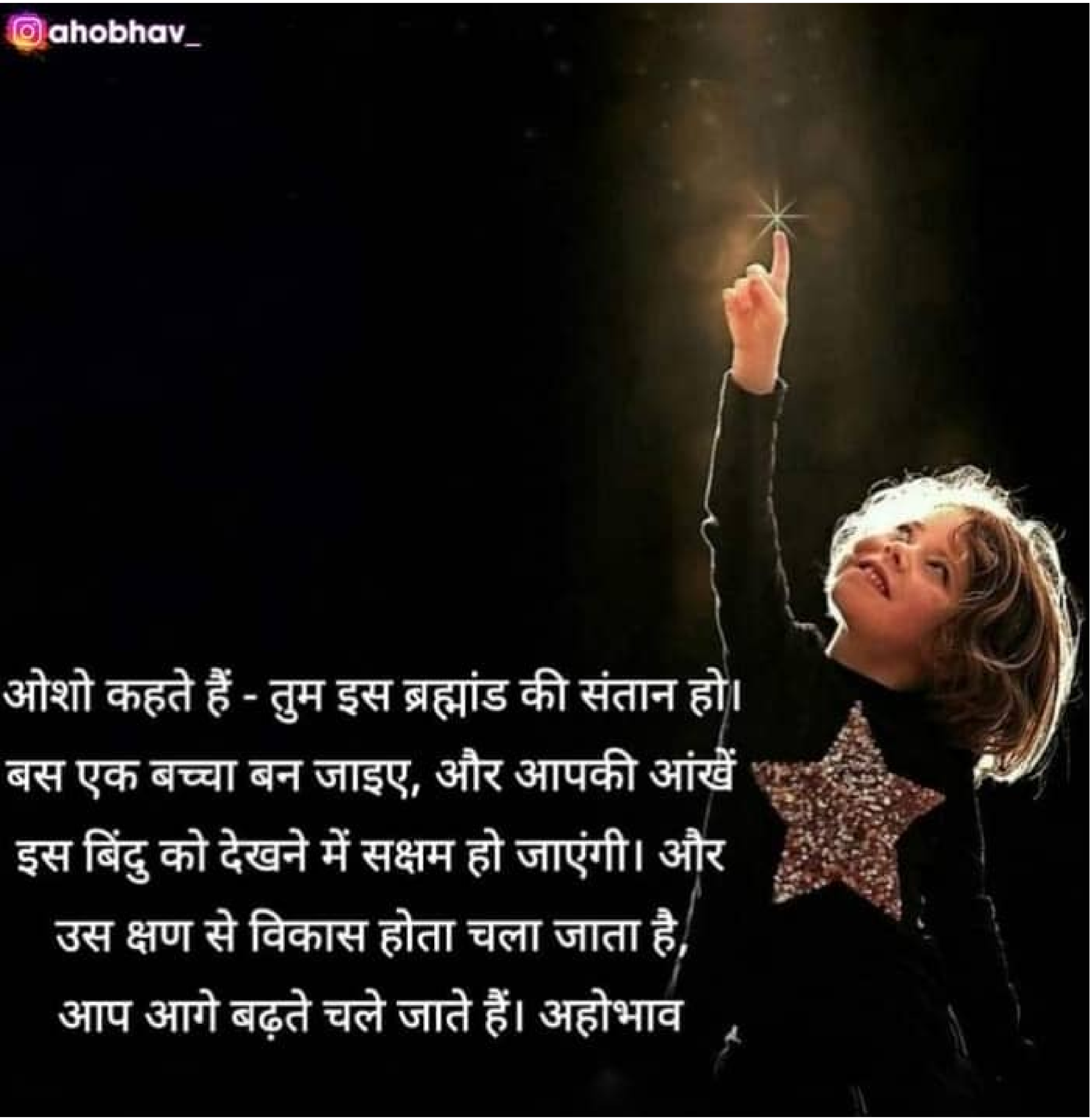
ahobhav_
ओशो कहते हैं - तुम इस ब्रह्मांड की संतान हो।
बस एक बच्चा बन जाइए, और आपकी आंखें
इस बिंदु को देखने में सक्षम हो जाएंगी। और
उस क्षण से विकास होता चला जाता है,
आप आगे बढ़ते चले जाते हैं। अहोभाव

CamScanner

होगा कि वे देवताओं की बराबरी नहीं कर सकते | ब्रह्मा ने असुरों के राजा से कहा – " मुझे प्रसन्नता होगी | यदि आप देवताओं के समान बन जाये, उनसे पीछे न रहे |"

" हम तो पहले ही उनसे बहुत आगे हैं |" असुरों के राजा ने अकड़कर कहा |

" बुरा ना माने तो, मैं आपकी परीक्षा ले लूं |" ब्रह्मा ने पूछा |

" ठीक है | हो जाये परीक्षा |" दानवों के राजा ने कहा |

रात के भोजन में ब्रह्मा ने देवताओं दानवो सबके हाथों पर उंगलियों तक डंडे बधवा दिये | जिससे दोनों हाथ मूड़ न सके | सबसे पहले ब्रह्मा ने असुरों के आगे लड्डूओ के बड़े-बड़े थाल परोसे और कहा कि " जो अधिक लड्डू खायेगा | वही श्रेष्ठ होगा |" दानवों ने लड्डू उठा तो लिये; किंतु हाथ में डंडे बंधे होने के कारण वे लड्डूओं को अपने मुंह तक नहीं ले जा सके | यह एक विकट समस्या उत्पन्न हो गयी | बहुत प्रयास करने के पश्चात भी कोई भी दानव लड्डू खाने में सफल नहीं हो सका | सभी उठ गये |

अब देवताओं की बारी आयी | उनके हाथ पर भी उसी प्रकार डंडे बांधे गये | उनके हाथ भी मूड नहीं सकते थे | पंक्ति में बैठे सभी देवताओं के सम्मुख लड्डू परोसे गये | देवताओं ने दो-दो जोड़ी बना ली | एक देवता दूसरे देवता को लड्डू खिला रहा था | सभी दानव यह तमाशा देख रहे थे | उन्हें मानना पड़ा कि वास्तव में देवता दानवों से श्रेष्ठ है |

राजा को मंत्री की कहानी बहुत पसंद आयी | वह मान गया कि वास्तव में एकता द्वारा कुछ भी कार्य किया जा सकता है । 🙏
हरिओम 🙏

17 1 comment • 6 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

2:32 pm 4G 58%

एक बार ब्रह्मा ने देवता तथा असुरों की एक सभा बुलवायी | सभी देवता तथा दानव ब्रह्मा के दरबार में उपस्थित हुये | ब्रह्मा ने वैसे तो दोनों ही समुदाय की बड़ी आवभगत की, लेकिन देवताओं के प्रति उनके मन में अधिक श्रद्धा तथा सम्मान था |

दानवों ने इस बात को भाप लिया की, ब्रह्मा के मन में देवताओं के प्रति अधिक मान-सम्मान है | दिखाने के लिए वे बराबर का बर्ताव कर रहे हैं | दानवों ने राजा से कहा – " ब्रह्मा जी! देखिये आप देवताओं को अधिक महत्व दे रहे हैं | उनके प्रति आपके ह्रदय में अधिक सम्मान है | अगर ऐसा ही है, तो फिर हमें यहां क्यों बुलवाया |"

ब्रह्मा ने बहुत समझाया बुझाया; किंतु दानवों का क्रोध कम नहीं हुआ | अब तो ब्रह्मा ने संकल्प लिया कि दानवों को इस बात का बोध कराना ही होगा कि वे देवताओं की बराबरी नहीं कर सकते | ब्रह्मा ने असुरों के राजा से कहा – " मुझे प्रसन्नता होगी | यदि आप देवताओं के समान बन जाये, उनसे पीछे न रहे |"

" हम तो पहले ही उनसे बहुत आगे हैं |" असुरों के राजा ने अकड़कर कहा |

" बुरा ना माने तो, मैं आपकी परीक्षा ले लूं |" ब्रह्मा ने पूछा |

" ठीक है | हो जाये परीक्षा |" दानवों के राजा ने कहा |

रात के भोजन में ब्रह्मा ने देवताओं दानवो सबके हाथों पर उंगलियों तक डंडे बधवा दिये | जिससे दोनों हाथ मूड़ न सके | सबसे पहले ब्रह्मा ने असुरों के आगे लड्डूओ के बड़े-बड़े थाल परोसे और कहा कि " जो अधिक लड्डू खायेगा | वही श्रेष्ठ होगा |" दानवों ने लड्डू उठा तो लिये; किंतु हाथ में डंडे बंधे होने के कारण वे लड्डूओं को अपने मुंह तक नहीं ले जा सके | यह एक विकट समस्या उत्पन्न हो गयी | बहुत प्रयास करने के पश्चात भी कोई भी दानव लड्डू खाने में सफल नहीं हो सका | सभी उठ गये |

अब देवताओं की बारी आयी | उनके हाथ पर भी उसी प्रकार डंडे बांधे

CamScanner

2:30 pm 58%

*"जानवर देवता तथा दानव"*

एक राजा था | उसका मंत्री बहुत बुद्धिमान था | एक बार राजा ने अपने मंत्री से प्रश्न किया – “ मंत्री जी! भेड़ों और कुत्तों की पैदा होने कि दर में तो कुत्ते भेड़ों से बहुत आगे हैं, लेकिन भेड़ों के झुंड के झुंड देखने में आते हैं और कुत्ते कहीं-कहीं एक आध ही नजर आते है | इसका क्या कारण हो सकता है ?”

मंत्री बोला – “ महाराज! इस प्रश्न का उत्तर आपको कल सुबह मिल जायेगा |”

राजा के सामने उसी दिन शाम को मंत्री ने एक कोठे में बीस कुत्ते बंद करवा दिये और उनके बीच रोटियों से भरी एक टोकरी रखवा दी |”

दूसरे कोठे में बीस भेड़े बंद करवा दी और चारे की एक टोकरी उनके बीच में रखवा दी | दोनों कोठों को बाहर से बंद करवाकर, वे दोनों लौट गये |

सुबह होने पर मंत्री राजा को साथ लेकर वहां आया | उसने पहले कुत्तों वाला कोठा खुलवाया | राजा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बीसो कुत्ते आपस में लड़-लड़कर अपनी जान दे चुके हैं और रोटियों की टोकरी ज्यों की त्यों रखी है | कोई कुत्ता एक भी रोटी नहीं खा सका था |

इसके पश्चात मंत्री राजा के साथ भेड़ों वाले कोठे में पहुंचा | कोठा खोलने के पश्चात राजा ने देखा कि बीसो भेड़े एक दूसरे के गले पर मुंह रखकर बड़े ही आराम से सो रही थी और उनकी चारे की टोकरी एकदम खाली थी |

मंत्री राजा से बोला – “ महाराज! कुत्ते एक भी रोटी नहीं खा सके तथा आपस में लड़-लड़कर मर गये | उधर भेड़ों ने बड़े ही प्रेम से मिलकर चारा खाया और एक दूसरे के गले लगकर सो गयी | यही कारण है, कि भेड़ों के वंश में  वृद्धि है | समृद्धि है | उधर कुत्ते हैं, जो एक-दूसरे को सहन नहीं कर सकते | जिस बिरादरी में इतनी घृणा तथा द्वेष होगा | उसकी वृद्धि भला कैसे हो सकती है |”

CamScanner

मशहूर मनोविज्ञानिक ने एक अरबपती का सच्चा किस्सा सुनाया, अरबपती मनोवैज्ञानिक के पास आता था और जोर जोर से रोता,था मनोवैज्ञानिक उसका कारण पूछता था तो वो अरबपती बताता था कि " मेरा अपनी सेक्रेटरी के साथ संबंध है क्योंकि मेरी बीवी 40 पार कर गयी है और मेरी सेक्रेटरी अभी 19 की है, वो मुझे अनंत शारीरिक भोग दे रही है" अब मनोवैज्ञानिक ने कहा की "तो क्या अब आप बुरा महसूस कर रहे है की आपने अपनी बीवी के साथ घोर धोका किया? "

इसपर अरबपती का जवाब था " नहीं बस इस बात का दुख मुझे खाये जा रहा है की मेरी बीवी को जब मेरे इस संबंध के बारे में पता चला तो उसने भी मेरी ही सेक्रेटरी के छोटे भाई जो की मात्र 17 साल का है उसके साथ संबंध बनाने शुरु कर दिये हैं और अब वो मेरी तरफ देखती भी नहीं"

अब बताओ दुनियाँ का कौन सा महोवैज्ञानिक ऐसे लोगों का मन संभाल पाएगा..

अपनी ही गलती से हुए नुक्सान का कोई एहसास नहीं लोगों को,अपना सुख बड़ा प्रिय है, वही सुख दुसरे को मिलने पर रो देते हे लोग..

SARFX © Solutions

अपनी गलती का कोई एहसास नहीं, पर दुसरे की गलती पर विद्वान बन कर खडे हो जाते है..

CamScanner

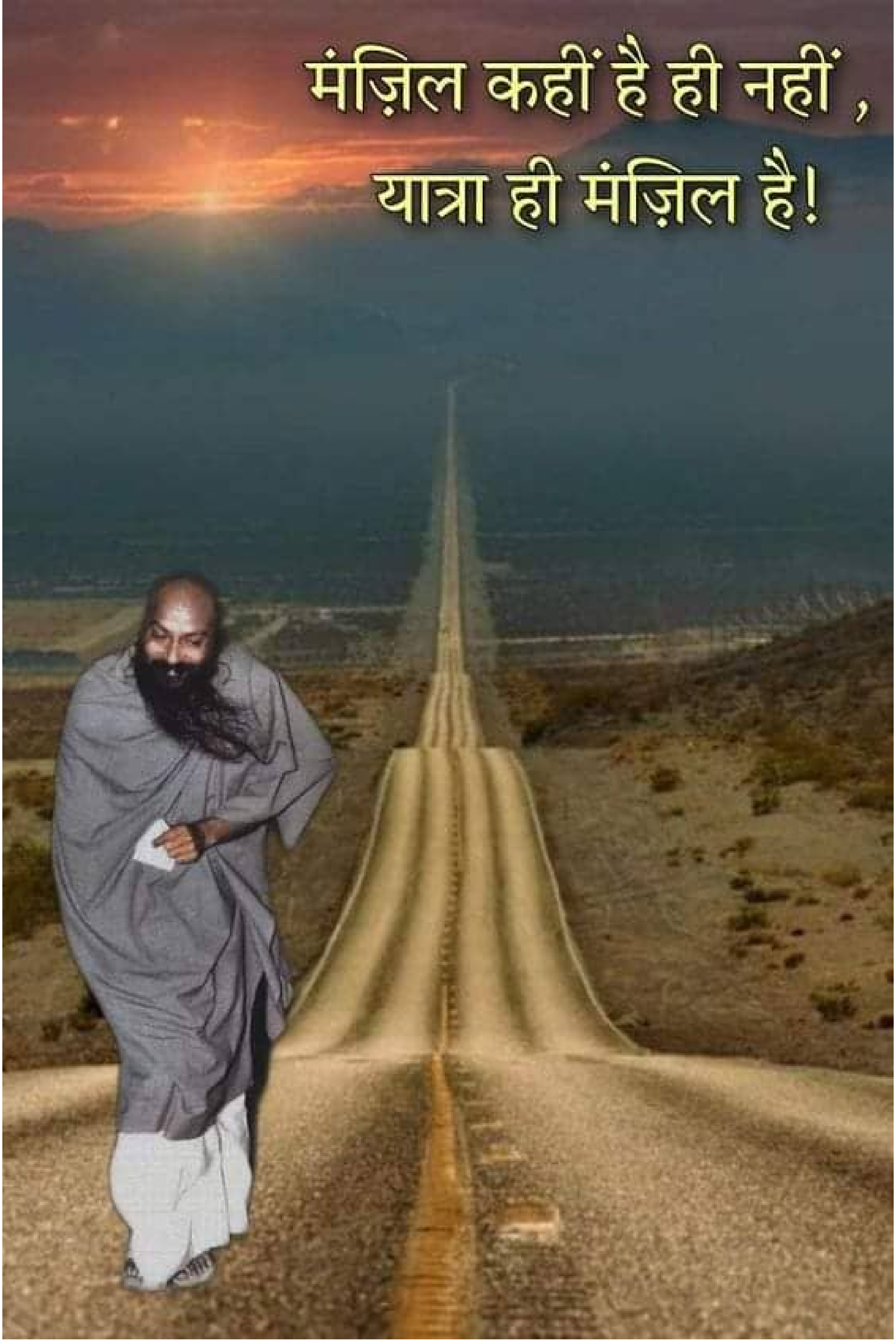


CamScanner

2:27 pm 59%
facebook

अहोभाव
1d ·

अहोभाव

सात्विक व्यक्ति उपवास करता है। उपवास का अर्थ है, उसके पास होना, आत्मा के पास होना या परमात्मा के पास होना। शब्द का भी वही अर्थ है। उसका भूखे मरने से कोई लेना—देना नहीं है सीधा। लेकिन जब सात्विक व्यक्ति उसके निकट होता है, तो शरीर को भूल जाता है। कुछ घड़ियों के लिए न भूख लगती है, न प्यास लगती है। भीतर ऐसी धुन बजने लगती है। जैसे तुम भी कभी—कभी नृत्य देखने बैठे हो, कोई सुंदर नर्तक नाच रहा है; या कोई गीत गा रहा है, और गीत ऐसा प्यारा है कि धुन बंध गई, तारी लग गई; तो तीन घंटे तुम्हें न भूख लगती है, न प्यास लगती है। तुम सब भूल ही जाते हो। जब संगीत बंद होता है, अचानक तुम्हें पता चलता है कि पेट में तो हाहाकार मचा है, भूख लगी है, कंठ सूख रहा है। इतनी देर तक पता क्यों न चला! ध्यान लीन था।

सात्विक व्यक्ति का उपवास ऐसा है कि उसका ध्यान इतना भीतर परमात्मा में लीन होता है कि वह भूल ही जाता है, प्यास लगी है, भूख लगी है। जब लौटता है अपने ध्यान से, तब भूख और प्यास का पता चलता है। इसलिए उसका नाम उपवास है, परमात्मा के निकट वास।

गीता दर्शन

ओशो

CamScanner

उपवास का अर्थ है, उसके पास होना, आत्मा के पास होना या परमात्मा के पास होना।

गीता दर्शन

ओशो अहोभाव

CamScanner

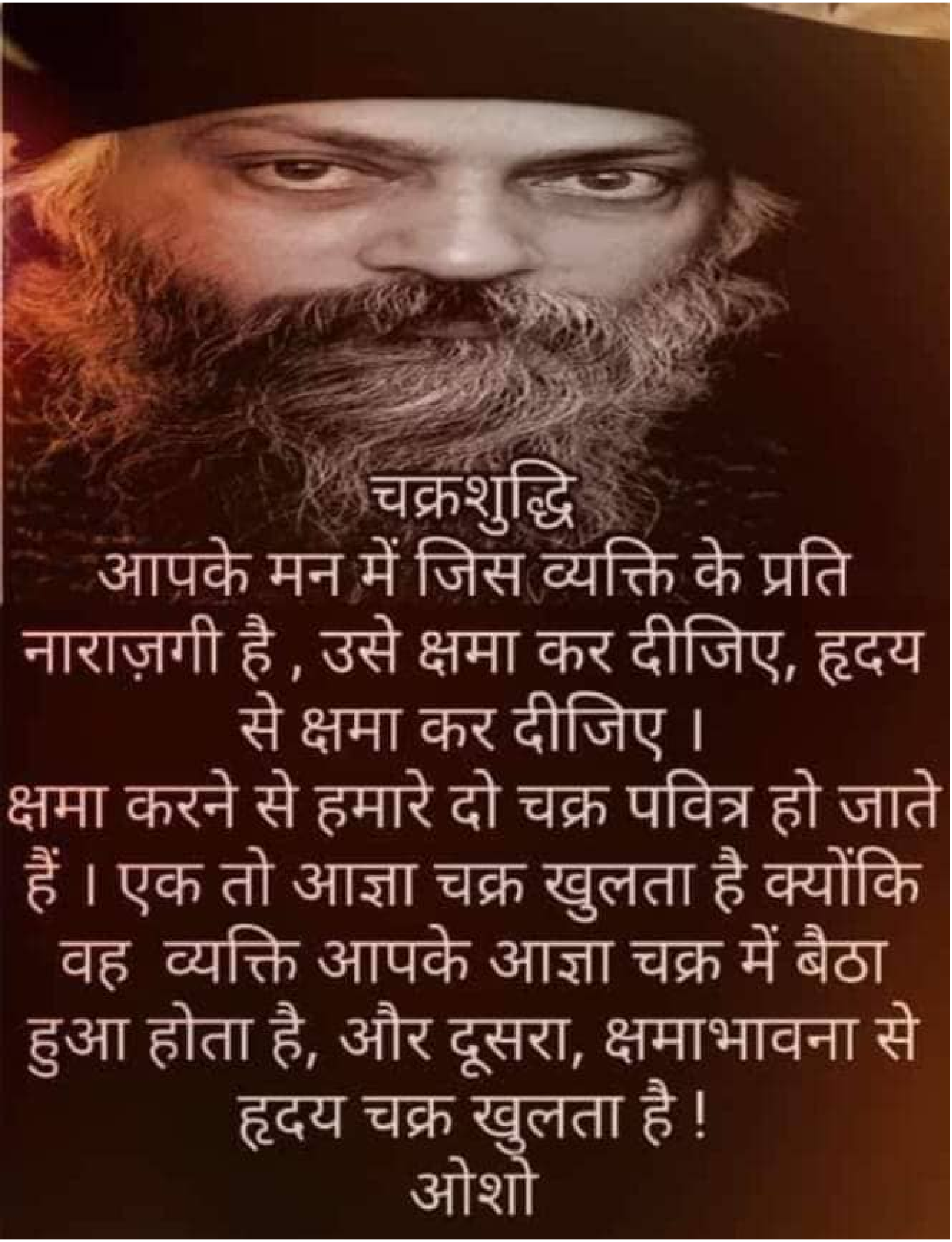
चक्रशुद्धि
आपके मन में जिस व्यक्ति के प्रति
नाराज़गी है , उसे क्षमा कर दीजिए, हृदय
से क्षमा कर दीजिए ।
क्षमा करने से हमारे दो चक्र पवित्र हो जाते
हैं । एक तो आज्ञा चक्र खुलता है क्योंकि
वह  व्यक्ति आपके आज्ञा चक्र में बैठा
हुआ होता है, और दूसरा, क्षमाभावना से
हृदय चक्र खुलता है !
ओशो

CamScanner

“ जब तक व्यक्ति अकेलेपन से बच रहा है, तब तक भगवान की पूजा और शराब की लत में कोई बुनियादी अंतर नहीं है। सामाजिक तौर पर मतभेद हो सकता है; लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से, जो व्यक्ति स्वयं से, अपनी शून्यता से भागता है, जिसका पलायन ईश्वर की खोज है, वह शराबी के समान स्तर पर है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति, प्यार और अकेलेपन पर

CS CamScanner

**Awakening Souls**
Maitreyi Nivi · 1h ·

The extent to which one can bow down with single minded devotion, going beyond the ego (one) gains energy and
happiness accordingly.

If you cannot do anything else, pay one obeisance each in the morning and evening, submitting your mind and body and with a repentant heart.

Like inverting a pitcher full of water and pouring it out, offer all the feelings of your mind and heart to the revered one.

~ Sri Anandamayi Ma

जिस हद तक एक मन भक्ति से झुक सकता है, अहंकार से परे जाकर (एक) ऊर्जा प्राप्त होती है और
तदनुसार खुशी।

और कुछ कर न सके तो सुबह शाम एक एक प्रणाम करो, तन मन को अर्पित कर पश्चाताप मन से करो।

जैसे पानी भरा घड़ा डालकर उगल दो, वैसे ही अपने मन और हृदय की सभी भावना पूज्य को अर्पित करो।

~ श्री आनंदमयी माँ

· Rate this translation

CamScanner

**Awakening Souls**

Maitreyi Nivi · 1h ·

The extent to which one can bow down with single minded devotion, going beyond the ego (one) gains energy and
happiness accordingly.

If you cannot do anything else, pay one obeisance each in the morning and evening, submitting your mind and body and with a repentant heart.

Like inverting a pitcher full of water and pouring it out, offer all the feelings of your mind and heart to the revered one.

~ Sri Anandamayi Ma

See translation

CamScanner

विजय – आद्याशक्ति के दर्शन और ब्रह्मज्ञान ये कैसे हों?

श्रीरामकृष्ण – हृदय के विकल होकर उनसे प्रार्थना करो और रोओ। चित्त शुद्ध हो जायेगा। निर्मल पानी में सूर्य का बिम्ब दिखायी देगा। भक्त के 'मैं' रूपी आईने में उस सगुण ब्रह्म – आद्याशक्ति के दर्शन होंगे; परन्तु आईने को खूब साफ रखना चाहिए।

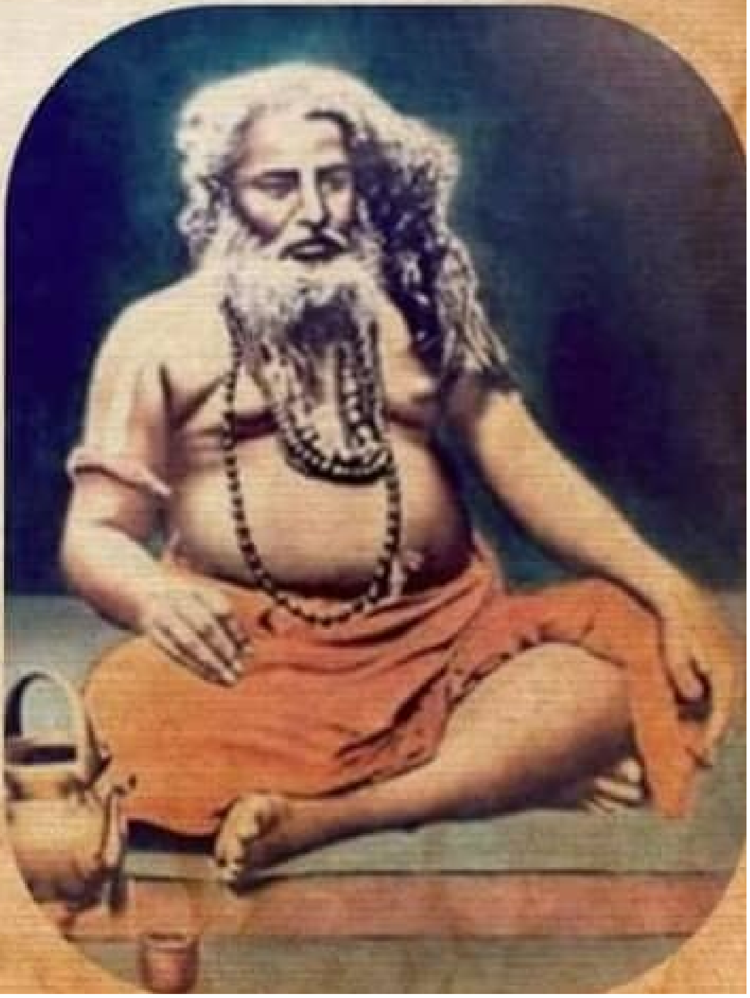

CamScanner

2:02 pm 63%

Like Comment Send Share

**आध्यात्मिक सफ़र [spiritual journey]**

S P Rathod · 1h ·

जो सभी प्रश्नों के उत्तर अपने भीतर खोजता है, गुरु भी ऐसे ही व्यक्ति को शिष्य बनाना पसंद करते है।

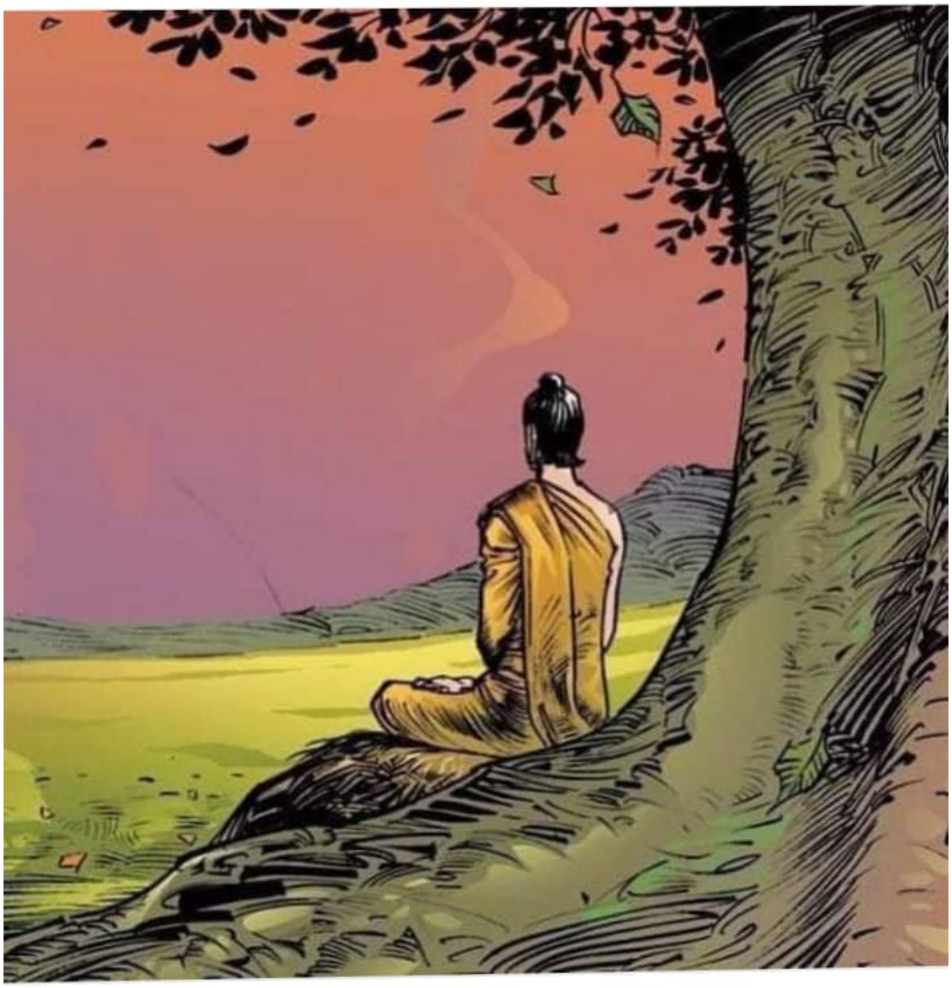

16 2 comments • 1 share

Like Comment Send Share

**Anamcara Rames** commented.

**Anamcara Rames**

5d ·

CamScanner

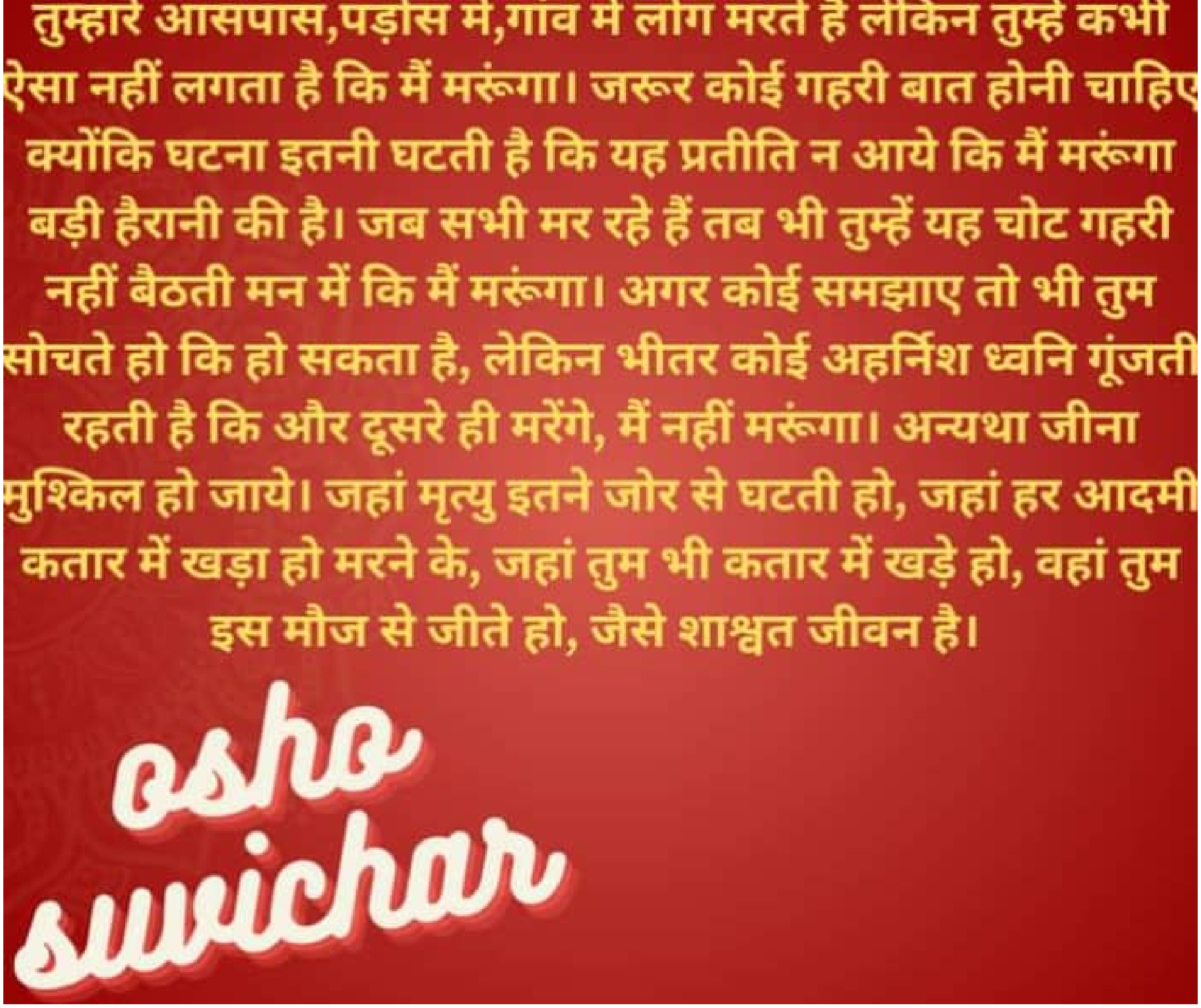
तुम्हारे आसपास,पड़ोस में,गांव में लोग मरते हैं लेकिन तुम्हें कभी
ऐसा नहीं लगता है कि मैं मरूंगा। जरूर कोई गहरी बात होनी चाहिए
क्योंकि घटना इतनी घटती है कि यह प्रतीति न आये कि मैं मरूंगा
बड़ी हैरानी की है। जब सभी मर रहे हैं तब भी तुम्हें यह चोट गहरी
नहीं बैठती मन में कि मैं मरूंगा। अगर कोई समझाए तो भी तुम
सोचते हो कि हो सकता है, लेकिन भीतर कोई अहर्निश ध्वनि गूंजती
रहती है कि और दूसरे ही मरेंगे, मैं नहीं मरूंगा। अन्यथा जीना
मुश्किल हो जाये। जहां मृत्यु इतने जोर से घटती हो, जहां हर आदमी
कतार में खड़ा हो मरने के, जहां तुम भी कतार में खड़े हो, वहां तुम
इस मौज से जीते हो, जैसे शाश्वत जीवन है।
osho
suvichar

CamScanner

तुमने बड़ी शराब पी रखी है, बहुत जन्मों से लेकिन फिर भी इतनी शराब कभी नहीं हो पाती कि तुम्हारे होश को पूरा डूबा दे। तुम्हारा होश उभर-उभरकर बाहर आ जाता है। कहीं तुम जानते ही हो कि भीतर कि तुम न मरोगे। सब तथ्य कहते हैं कि मृत्यु घटेगी फिर भी तुम भरोसा किये जाते हो कि मैं न मरूंगा। तुम ऐसे ही जैसे सदा यहां जीना है। इसलिए बहुत सी भूलें होती हैं। मजबूत मकान बनाते हो जैसे सदा यहाँ रहना है। तुम्हारी भूलों में भी कहीं न कहीं कोई सच्चाई की झलक होगी ही, नहीं तो ये भूलें बन्द हो जाती। तुम्हें पता ही नहीं है कि कल मर जाना है और सब मरते हैं, तुम भी मरोगे,यह सीधा साफ गणित है लेकिन फिर भी भीतर कोई शाश्वत है, इसलिए तुम्हारी हर स्थिति में उस शाश्वत की झलक पड़ती है।

osho suvichar

CamScanner

शरीर तुम्हारा है, तुम नहीं। शरीर में तुम हो लेकिन शरीर ही तुम नहीं हो। शरीर पहली परत है जिससे तादात्म्य हो गया है। उसके साथ तुम बहुत दिन तक रहे हो, जोड़ हो गया है, जुड़वा हो, साथ- साथ पैदा हुए हो। इसलिए तुम्हें भी भूल हो जाती है कौन कौन है, शक्ल पहचान नहीं पाते। और इस भूल को साथ मिलता है क्योंकि बाहर से देखने वाले केवल तुम्हारे शरीर को देखते हैं, तुम्हें नहीं देखते हैं। वे तुम्हारे शरीर के चेहरे को तुम्हारा चेहरा मानते हैं, वे तुम्हारे शरीर की आकृति को तुम्हारी आकृति मानते हैं। और वे बहुत हैं तुम अकेले हो। वे सभी तुम्हारे शरीर को ही तुम्हें मानते हैं। उन सब की प्रतीति भी तुम्हें प्रभावित करती है। उनमें से कोई भी तुम्हारी आत्मा को नहीं देखता है।

osho suvichar

CamScanner

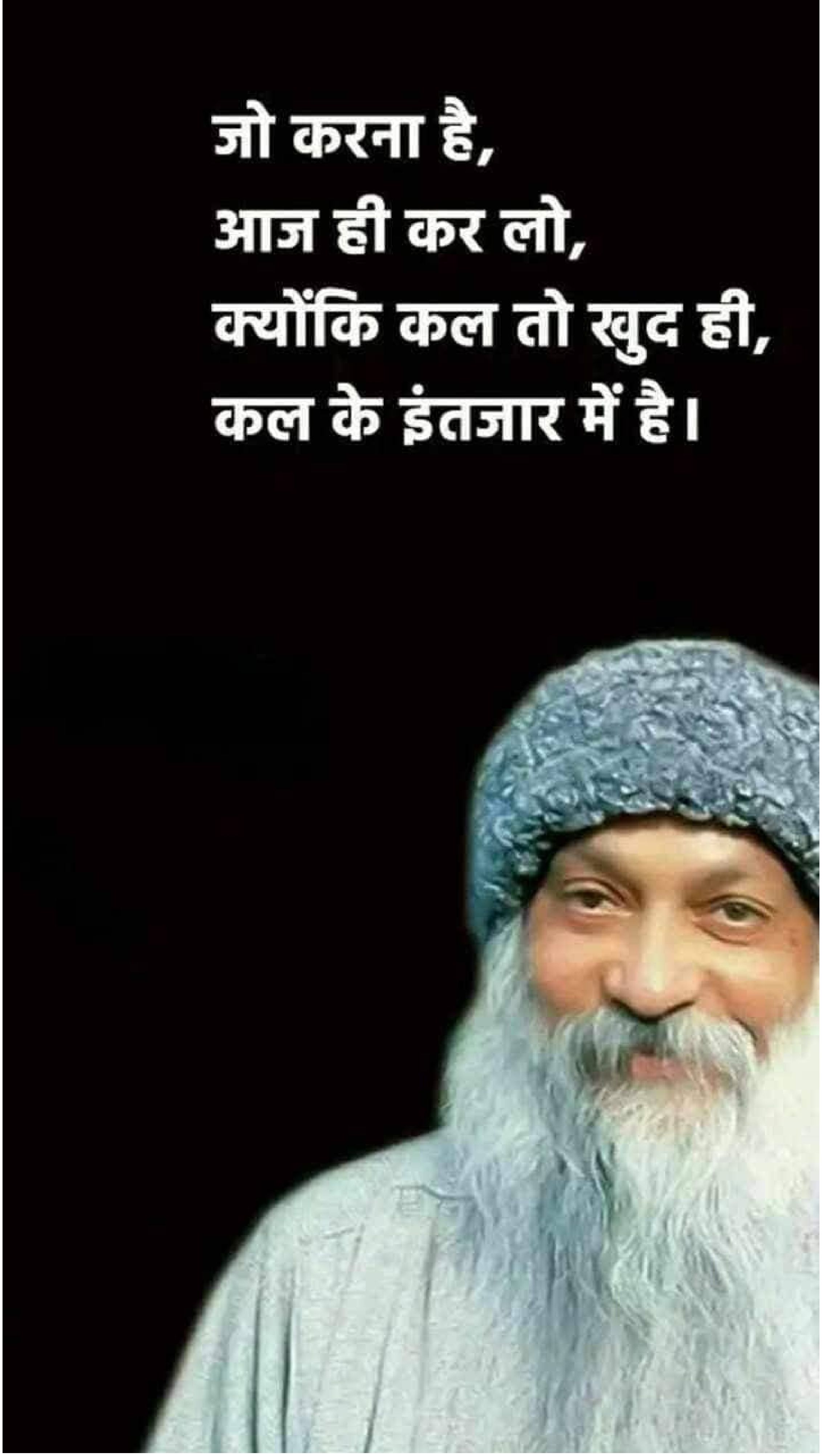


CS CamScanner

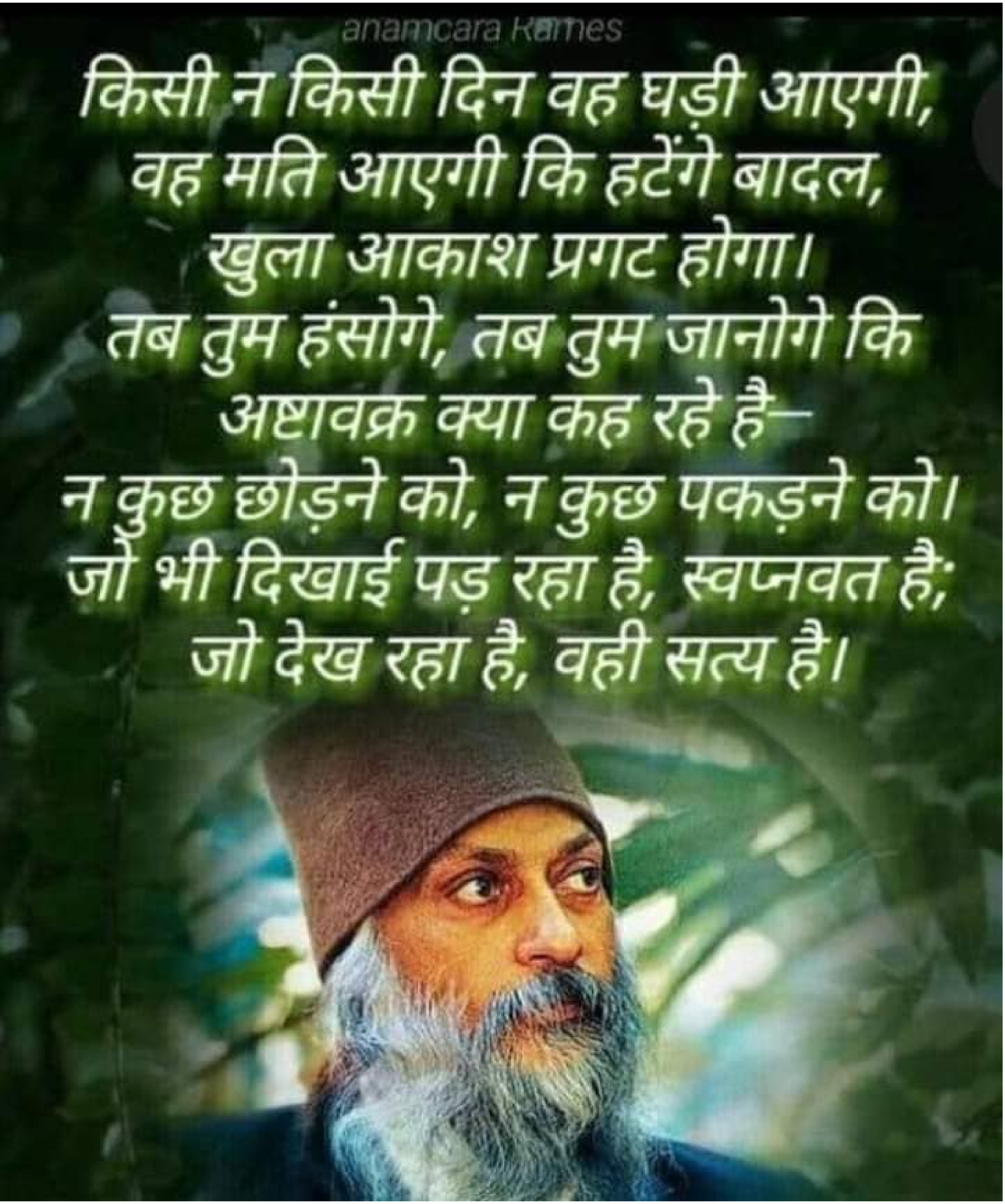
anamcara Rames
किसी न किसी दिन वह घड़ी आएगी,
वह मति आएगी कि हटेंगे बादल,
खुला आकाश प्रगट होगा।
तब तुम हंसोगे, तब तुम जानोगे कि
अष्टावक्र क्या कह रहे है—
न कुछ छोड़ने को, न कुछ पकड़ने को।
जो भी दिखाई पड़ रहा है, स्वप्नवत है;
जो देख रहा है, वही सत्य है।

CamScanner

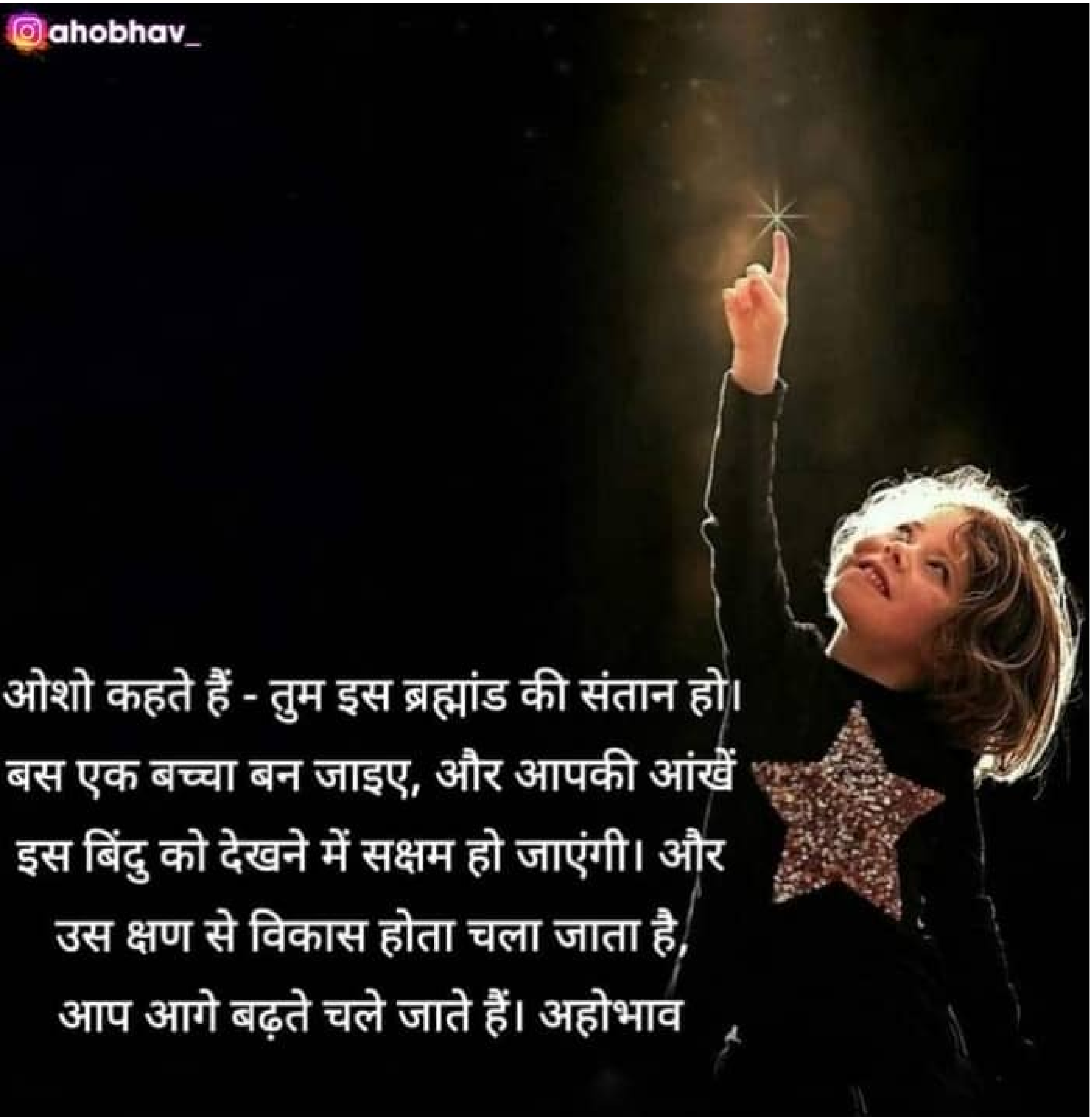
@ahobhav_
ओशो कहते हैं - तुम इस ब्रह्मांड की संतान हो।
बस एक बच्चा बन जाइए, और आपकी आंखें
इस बिंदु को देखने में सक्षम हो जाएंगी। और
उस क्षण से विकास होता चला जाता है,
आप आगे बढ़ते चले जाते हैं। अहोभाव

CamScanner

2:32 pm 58%
facebook

राजा से कहा – " मुझे प्रसन्नता होगी | यदि आप देवताओं के समान बन जाये, उनसे पीछे न रहे |"

" हम तो पहले ही उनसे बहुत आगे हैं |" असुरों के राजा ने अकड़कर कहा |

" बुरा ना माने तो, मैं आपकी परीक्षा ले लूं |" ब्रह्मा ने पूछा |

" ठीक है | हो जाये परीक्षा |" दानवों के राजा ने कहा |

रात के भोजन में ब्रह्मा ने देवताओं दानवो सबके हाथों पर उंगलियों तक डंडे बधवा दिये | जिससे दोनों हाथ मूड़ न सके | सबसे पहले ब्रह्मा ने असुरों के आगे लड्डूओ के बड़े-बड़े थाल परोसे और कहा कि " जो अधिक लड्डू खायेगा | वही श्रेष्ठ होगा |" दानवों ने लड्डू उठा तो लिये; किंतु हाथ में डंडे बंधे होने के कारण वे लड्डूओं को अपने मुंह तक नहीं ले जा सके | यह एक विकट समस्या उत्पन्न हो गयी | बहुत प्रयास करने के पश्चात भी कोई भी दानव लड्डू खाने में सफल नहीं हो सका | सभी उठ गये |

अब देवताओं की बारी आयी | उनके हाथ पर भी उसी प्रकार डंडे बांधे गये | उनके हाथ भी मूड नहीं सकते थे | पंक्ति में बैठे सभी देवताओं के सम्मुख लड्डू परोसे गये | देवताओं ने दो-दो जोड़ी बना ली | एक देवता दूसरे देवता को लड्डू खिला रहा था | सभी दानव यह तमाशा देख रहे थे | उन्हें मानना पड़ा कि वास्तव में देवता दानवों से श्रेष्ठ है |

राजा को मंत्री की कहानी बहुत पसंद आयी | वह मान गया कि वास्तव में एकता द्वारा कुछ भी कार्य किया जा सकता है । 🙏
हरिओम 🙏

17 1 comment • 6 shares
Like Comment Send Share
CamScanner

2:32 pm 58%

एक बार ब्रह्मा ने देवता तथा असुरों की एक सभा बुलवायी | सभी देवता तथा दानव ब्रह्मा के दरबार में उपस्थित हुये | ब्रह्मा ने वैसे तो दोनों ही समुदाय की बड़ी आवभगत की, लेकिन देवताओं के प्रति उनके मन में अधिक श्रद्धा तथा सम्मान था |

दानवों ने इस बात को भाप लिया की, ब्रह्मा के मन में देवताओं के प्रति अधिक मान-सम्मान है | दिखाने के लिए वे बराबर का बर्ताव कर रहे हैं | दानवों ने राजा से कहा – " ब्रह्मा जी! देखिये आप देवताओं को अधिक महत्व दे रहे हैं | उनके प्रति आपके ह्रदय में अधिक सम्मान है | अगर ऐसा ही है, तो फिर हमें यहां क्यों बुलवाया |"

ब्रह्मा ने बहुत समझाया बुझाया; किंतु दानवों का क्रोध कम नहीं हुआ | अब तो ब्रह्मा ने संकल्प लिया कि दानवों को इस बात का बोध कराना ही होगा कि वे देवताओं की बराबरी नहीं कर सकते | ब्रह्मा ने असुरों के राजा से कहा – " मुझे प्रसन्नता होगी | यदि आप देवताओं के समान बन जाये, उनसे पीछे न रहे |"

" हम तो पहले ही उनसे बहुत आगे हैं |" असुरों के राजा ने अकड़कर कहा |

" बुरा ना माने तो, मैं आपकी परीक्षा ले लूं |" ब्रह्मा ने पूछा |

" ठीक है | हो जाये परीक्षा |" दानवों के राजा ने कहा |

रात के भोजन में ब्रह्मा ने देवताओं दानवो सबके हाथों पर उंगलियों तक डंडे बधवा दिये | जिससे दोनों हाथ मूड़ न सके | सबसे पहले ब्रह्मा ने असुरों के आगे लड्डूओ के बड़े-बड़े थाल परोसे और कहा कि " जो अधिक लड्डू खायेगा | वही श्रेष्ठ होगा |" दानवों ने लड्डू उठा तो लिये; किंतु हाथ में डंडे बंधे होने के कारण वे लड्डूओं को अपने मुंह तक नहीं ले जा सके | यह एक विकट समस्या उत्पन्न हो गयी | बहुत प्रयास करने के पश्चात भी कोई भी दानव लड्डू खाने में सफल नहीं हो सका | सभी उठ गये |

अब देवताओं की बारी आयी | उनके हाथ पर भी उसी प्रकार डंडे बांधे

CamScanner

2:30 pm 58%

*"जानवर देवता तथा दानव"*

एक राजा था | उसका मंत्री बहुत बुद्धिमान था | एक बार राजा ने अपने मंत्री से प्रश्न किया – " मंत्री जी! भेड़ों और कुत्तों की पैदा होने कि दर में तो कुत्ते भेड़ों से बहुत आगे हैं, लेकिन भेड़ों के झुंड के झुंड देखने में आते हैं और कुत्ते कहीं-कहीं एक आध ही नजर आते है | इसका क्या कारण हो सकता है ?"

मंत्री बोला – " महाराज! इस प्रश्न का उत्तर आपको कल सुबह मिल जायेगा |"

राजा के सामने उसी दिन शाम को मंत्री ने एक कोठे में बीस कुत्ते बंद करवा दिये और उनके बीच रोटियों से भरी एक टोकरी रखवा दी |"

दूसरे कोठे में बीस भेड़े बंद करवा दी और चारे की एक टोकरी उनके बीच में रखवा दी | दोनों कोठों को बाहर से बंद करवाकर, वे दोनों लौट गये |

सुबह होने पर मंत्री राजा को साथ लेकर वहां आया | उसने पहले कुत्तों वाला कोठा खुलवाया | राजा को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बीसो कुत्ते आपस में लड़-लड़कर अपनी जान दे चुके हैं और रोटियों की टोकरी ज्यों की त्यों रखी है | कोई कुत्ता एक भी रोटी नहीं खा सका था |

इसके पश्चात मंत्री राजा के साथ भेड़ों वाले कोठे में पहुंचा | कोठा खोलने के पश्चात राजा ने देखा कि बीसो भेड़े एक दूसरे के गले पर मुंह रखकर बड़े ही आराम से सो रही थी और उनकी चारे की टोकरी एकदम खाली थी |

मंत्री राजा से बोला – " महाराज! कुत्ते एक भी रोटी नहीं खा सके तथा आपस में लड़-लड़कर मर गये | उधर भेड़ों ने बड़े ही प्रेम से मिलकर चारा खाया और एक दूसरे के गले लगकर सो गयी | यही कारण है, कि भेड़ों के वंश में वृद्धि है | समृद्धि है | उधर कुत्ते हैं, जो एक-दूसरे को सहन नहीं कर सकते | जिस बिरादरी में इतनी घृणा तथा द्वेष होगा | उसकी वृद्धि भला कैसे हो सकती है |"

CamScanner

मशहूर मनोविज्ञानिक ने एक अरबपती का सच्चा किस्सा सुनाया, अरबपती मनोवैज्ञानिक के पास आता था और जोर जोर से रोता,था मनोवैज्ञानिक उसका कारण पूछता था तो वो अरबपती बताता था कि " मेरा अपनी सेक्रेटरी के साथ संबंध है क्योंकि मेरी बीवी 40 पार कर गयी है और मेरी सेक्रेटरी अभी 19 की है, वो मुझे अनंत शारीरिक भोग दे रही है" अब मनोवैज्ञानिक ने कहा की "तो क्या अब आप बुरा महसूस कर रहे है की आपने अपनी बीवी के साथ घोर धोका किया? "
इसपर अरबपती का जवाब था " नहीं बस इस बात का दुख मुझे खाये जा रहा है की मेरी बीवी को जब मेरे इस संबंध के बारे में पता चला तो उसने भी मेरी ही सेक्रेटरी के छोटे भाई जो की मात्र 17 साल का है उसके साथ संबंध बनाने शुरु कर दिये हैं और अब वो मेरी तरफ देखती भी नहीं"
अब बताओ दुनियाँ का कौन सा महोवैज्ञानिक ऐसे लोगों का मन संभाल पाएगा..
अपनी ही गलती से हुए नुक्सान का कोई एहसास नहीं लोगों को,अपना सुख बड़ा प्रिय है, वही सुख दुसरे को मिलने पर रो देते हे लोग..
अपनी गलती का कोई एहसास नहीं, पर दुसरे की गलती पर विद्वान बन कर खडे हो जाते है..

SARFX © Solutions

CamScanner

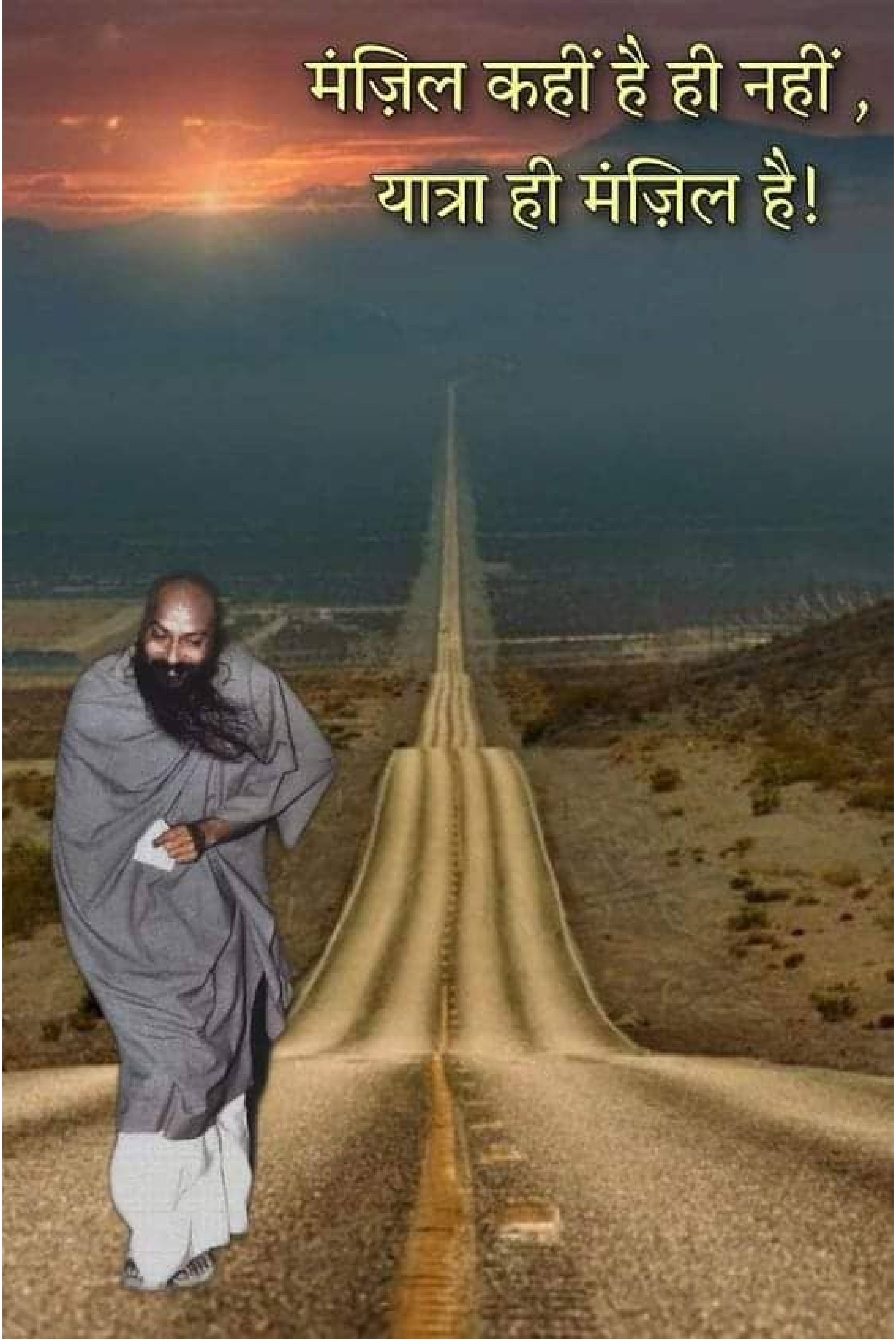


CamScanner

2:27 pm 59%
facebook



अहोभाव

सात्विक व्यक्ति उपवास करता है। उपवास का अर्थ है, उसके पास होना, आत्मा के पास होना या परमात्मा के पास होना। शब्द का भी वही अर्थ है। उसका भूखे मरने से कोई लेना—देना नहीं है सीधा। लेकिन जब सात्विक व्यक्ति उसके निकट होता है, तो शरीर को भूल जाता है। कुछ घड़ियों के लिए न भूख लगती है, न प्यास लगती है। भीतर ऐसी धुन बजने लगती है। जैसे तुम भी कभी—कभी नृत्य देखने बैठे हो, कोई सुंदर नर्तक नाच रहा है; या कोई गीत गा रहा है, और गीत ऐसा प्यारा है कि धुन बंध गई, तारी लग गई; तो तीन घंटे तुम्हें न भूख लगती है, न प्यास लगती है। तुम सब भूल ही जाते हो। जब संगीत बंद होता है, अचानक तुम्हें पता चलता है कि पेट में तो हाहाकार मचा है, भूख लगी है, कंठ सूख रहा है। इतनी देर तक पता क्यों न चला! ध्यान लीन था।

सात्विक व्यक्ति का उपवास ऐसा है कि उसका ध्यान इतना भीतर परमात्मा में लीन होता है कि वह भूल ही जाता है, प्यास लगी है, भूख लगी है। जब लौटता है अपने ध्यान से, तब भूख और प्यास का पता चलता है। इसलिए उसका नाम उपवास है, परमात्मा के निकट वास।

गीता दर्शन

ओशो

CamScanner

उपवास का अर्थ है, उसके पास होना, आत्मा के पास होना या परमात्मा के पास होना।

गीता दर्शन

ओशो अहोभाव

CamScanner

चक्रशुद्धि

आपके मन में जिस व्यक्ति के प्रति नाराज़गी है , उसे क्षमा कर दीजिए, हृदय से क्षमा कर दीजिए ।

क्षमा करने से हमारे दो चक्र पवित्र हो जाते हैं । एक तो आज्ञा चक्र खुलता है क्योंकि वह  व्यक्ति आपके आज्ञा चक्र में बैठा हुआ होता है, और दूसरा, क्षमाभावना से हृदय चक्र खुलता है !

ओशो

CS CamScanner

“ जब तक व्यक्ति अकेलेपन से बच रहा है, तब तक भगवान की पूजा और शराब की लत में कोई बुनियादी अंतर नहीं है। सामाजिक तौर पर मतभेद हो सकता है; लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से, जो व्यक्ति स्वयं से, अपनी शून्यता से भागता है, जिसका पलायन ईश्वर की खोज है, वह शराबी के समान स्तर पर है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति, प्यार और अकेलेपन पर

CamScanner

**Awakening Souls**
Maitreyi Nivi · 1h ·

The extent to which one can bow down with single minded devotion, going beyond the ego (one) gains energy and
happiness accordingly.

If you cannot do anything else, pay one obeisance each in the morning and evening, submitting your mind and body and with a repentant heart.

Like inverting a pitcher full of water and pouring it out, offer all the feelings of your mind and heart to the revered one.

~ Sri Anandamayi Ma

जिस हद तक एक मन भक्ति से झुक सकता है, अहंकार से परे जाकर (एक) ऊर्जा प्राप्त होती है और
तदनुसार खुशी।

और कुछ कर न सके तो सुबह शाम एक एक प्रणाम करो, तन मन को अर्पित कर पश्चाताप मन से करो।

जैसे पानी भरा घड़ा डालकर उगल दो, वैसे ही अपने मन और हृदय की सभी भावना पूज्य को अर्पित करो।

~ श्री आनंदमयी माँ

· Rate this translation

CamScanner

**Awakening Souls**
Maitreyi Nivi · 1h ·

The extent to which one can bow down with single minded devotion, going beyond the ego (one) gains energy and
happiness accordingly.

If you cannot do anything else, pay one obeisance each in the morning and evening, submitting your mind and body and with a repentant heart.

Like inverting a pitcher full of water and pouring it out, offer all the feelings of your mind and heart to the revered one.

~ Sri Anandamayi Ma

See translation

CamScanner

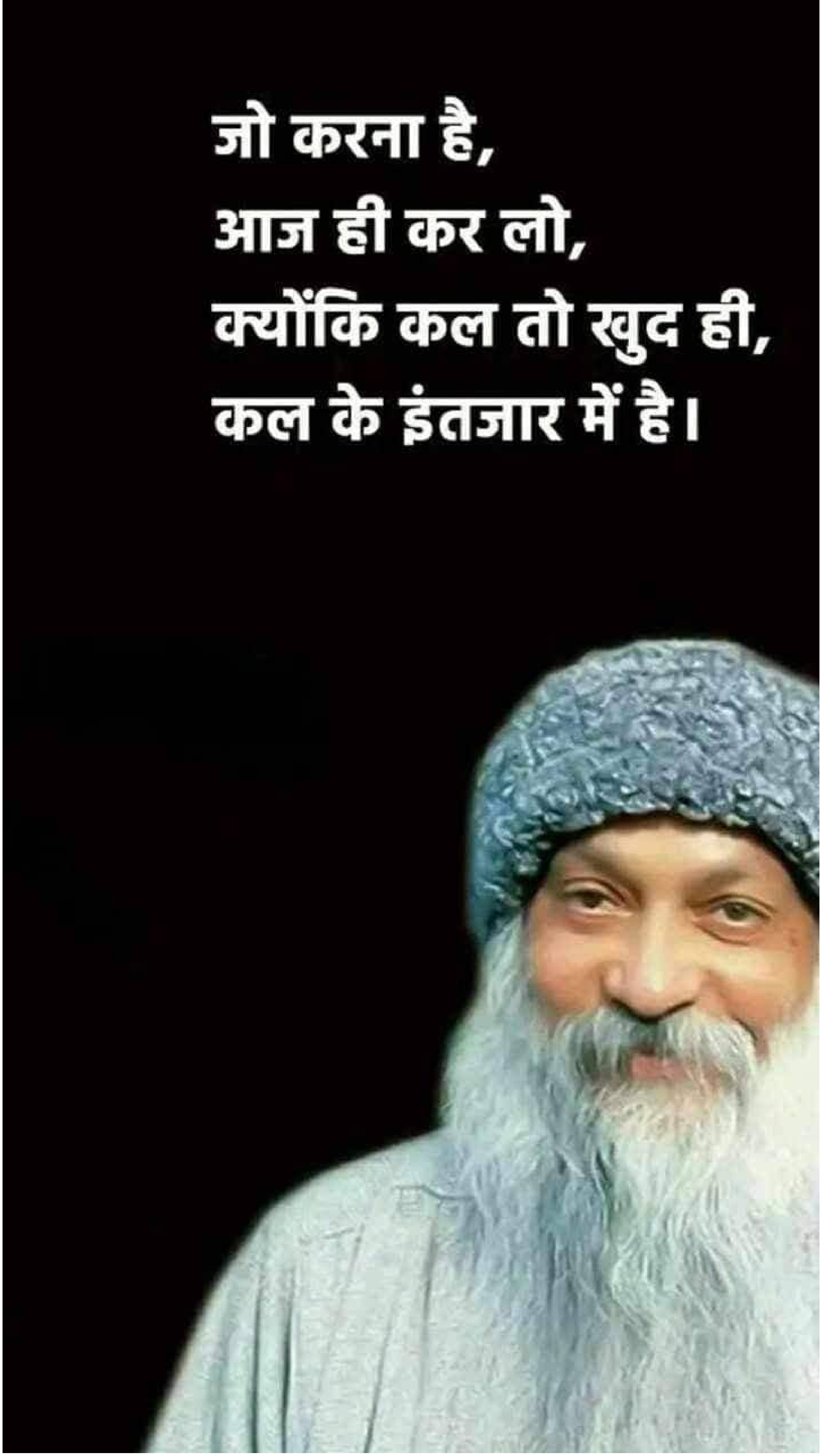


CamScanner

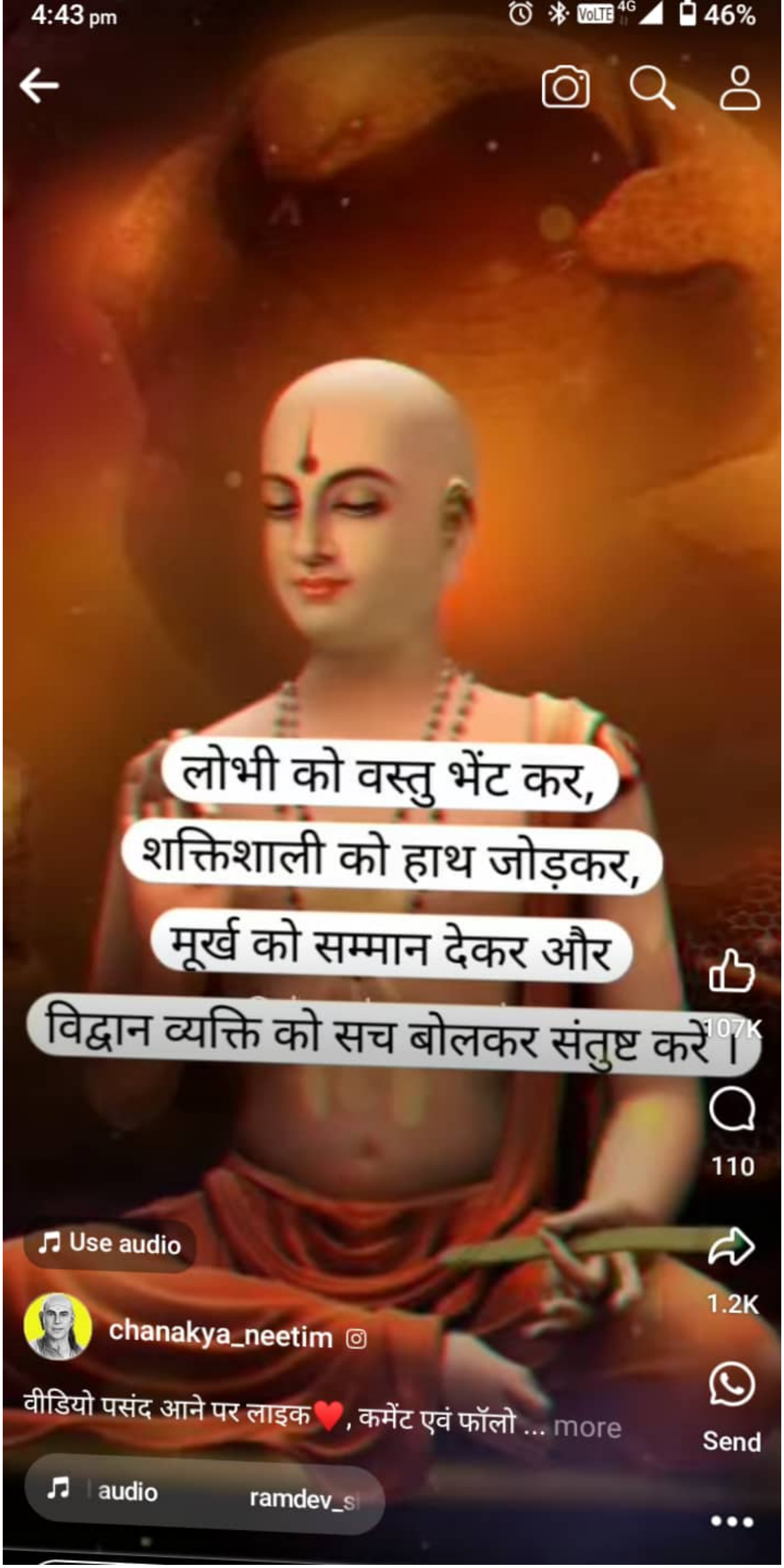
4:43 pm
46%
लोभी को वस्तु भेंट कर,
शक्तिशाली को हाथ जोड़कर,
मूर्ख को सम्मान देकर और
विद्वान व्यक्ति को सच बोलकर संतुष्ट करें।
107K
110
Use audio
1.2K
chanakya_neetim
वीडियो पसंद आने पर लाइक, कमेंट एवं फॉलो ... more
Send
audio

CamScanner

4:36 pm
47%
मैत्रेय
बुद्ध कहते हैं: परम त्याग तो तब है,
जब त्याग भी छूट जाए।
709
7
152
Give
Osho Jeevan Darshan
Following
मैत्रेय बुद्ध ... ♥🙏🙏... more
audio
Osho Jee
Add a comment...

CamScanner

@Kishan_Surage
@the_best_motivation_14
तुम्हारे भीतर जो सांस
चल रही है, यही सबसे
बड़ा उपहार है।

CamScanner

3:12 pm 52%
hindwi.org/pad/he-ri-mai
खोजिए

# हे री मैं तो प्रेम दिवानी

मीरा

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय।
गगन मंडल पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय॥
घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।
जौहरी की गति जौहरी जाने, कि जिन लागी होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ वैद मिल्यो नहीं कोय।
मीरां की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलया होय॥

जश्न-ए-रेख़्ता (2023) उर्दू भाषा का सबसे बड़ा उत्सव।
Roman
CamScanner

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय।
गगन मंडल पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय॥
घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।
जौहरी की गति जौहरी जाने, कि जिन लागी होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ वैद मिल्यो नहीं कोय।
मीरां की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलया होय॥

## व्याख्या

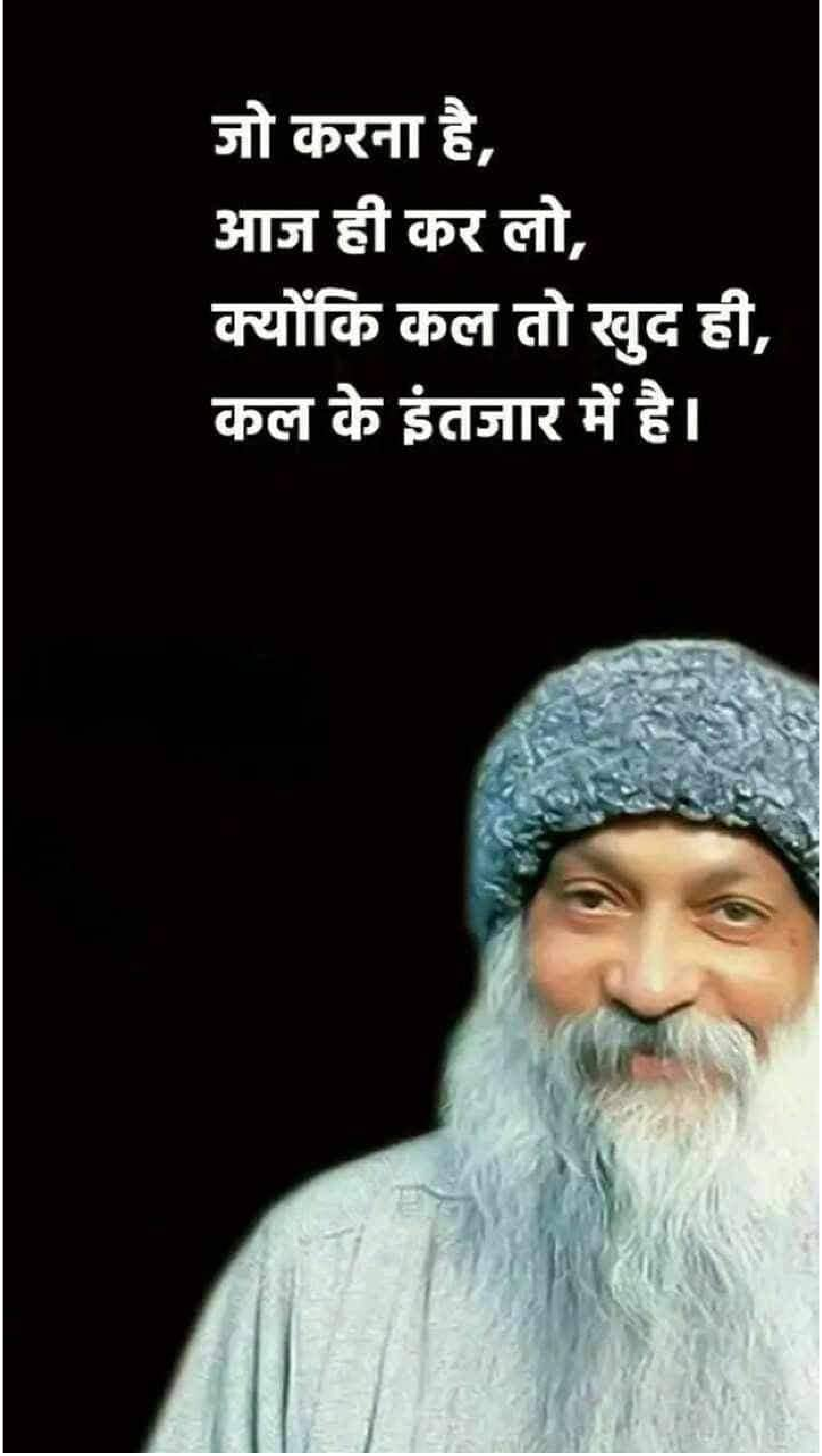


CS CamScanner

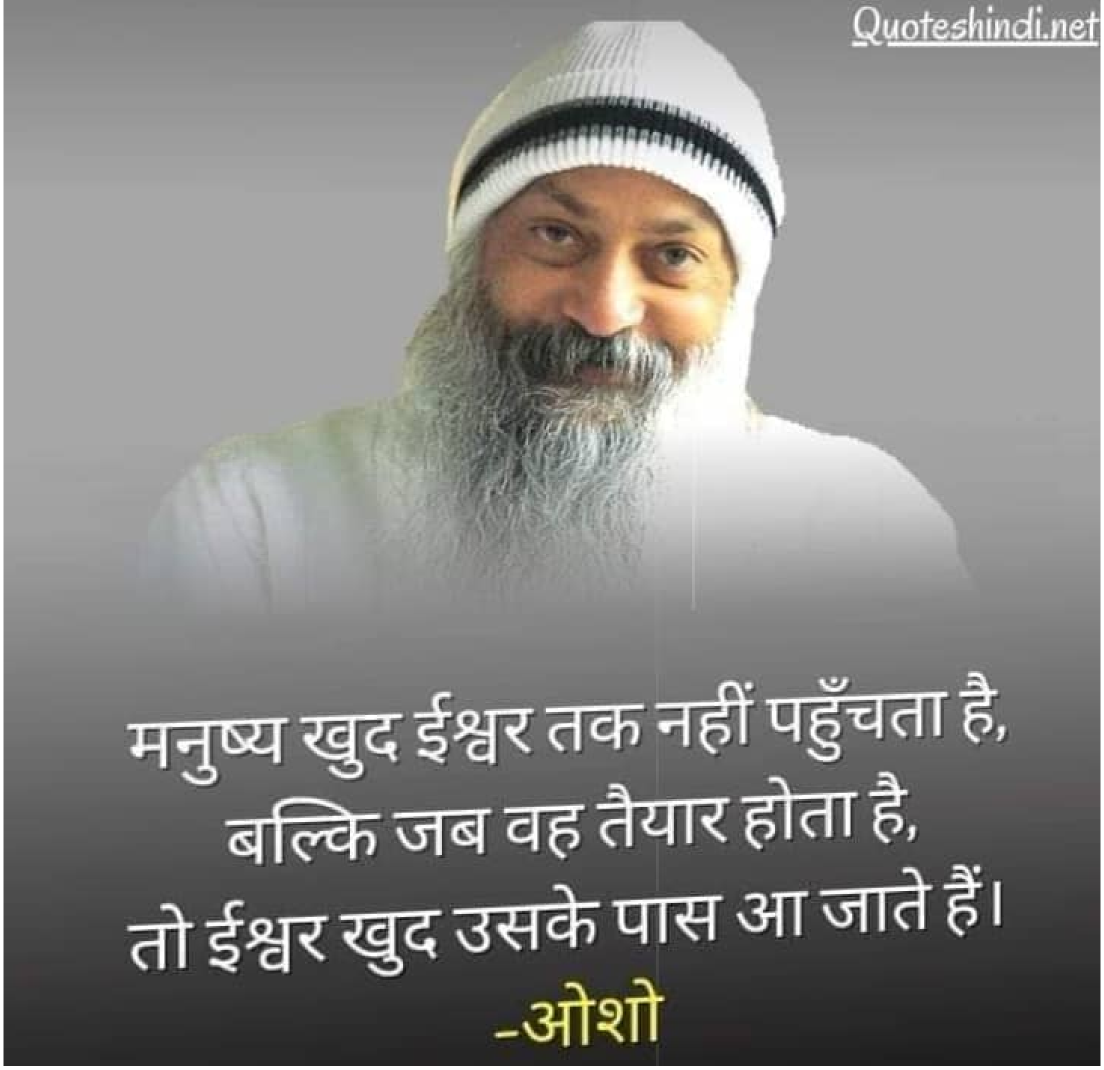
Quoteshindi.net
मनुष्य खुद ईश्वर तक नहीं पहुँचता है,
बल्कि जब वह तैयार होता है,
तो ईश्वर खुद उसके पास आ जाते हैं।
-ओशो

CamScanner

5:40 pm 41%

subscription.readersdigest.in
Subscribe to enjoy hours of good reading!
Subscribe

95 4 comments • 4 shares

Like Comment Share

**OSHO FRAGRANCE FRIENDS**

Anil Bharti · 9h ·

तुम्हें देखा

तो भीतर एक प्यास जगी

फिर हर कहीं हर एक में बस तुम्हें देखा.......!!

CamScanner

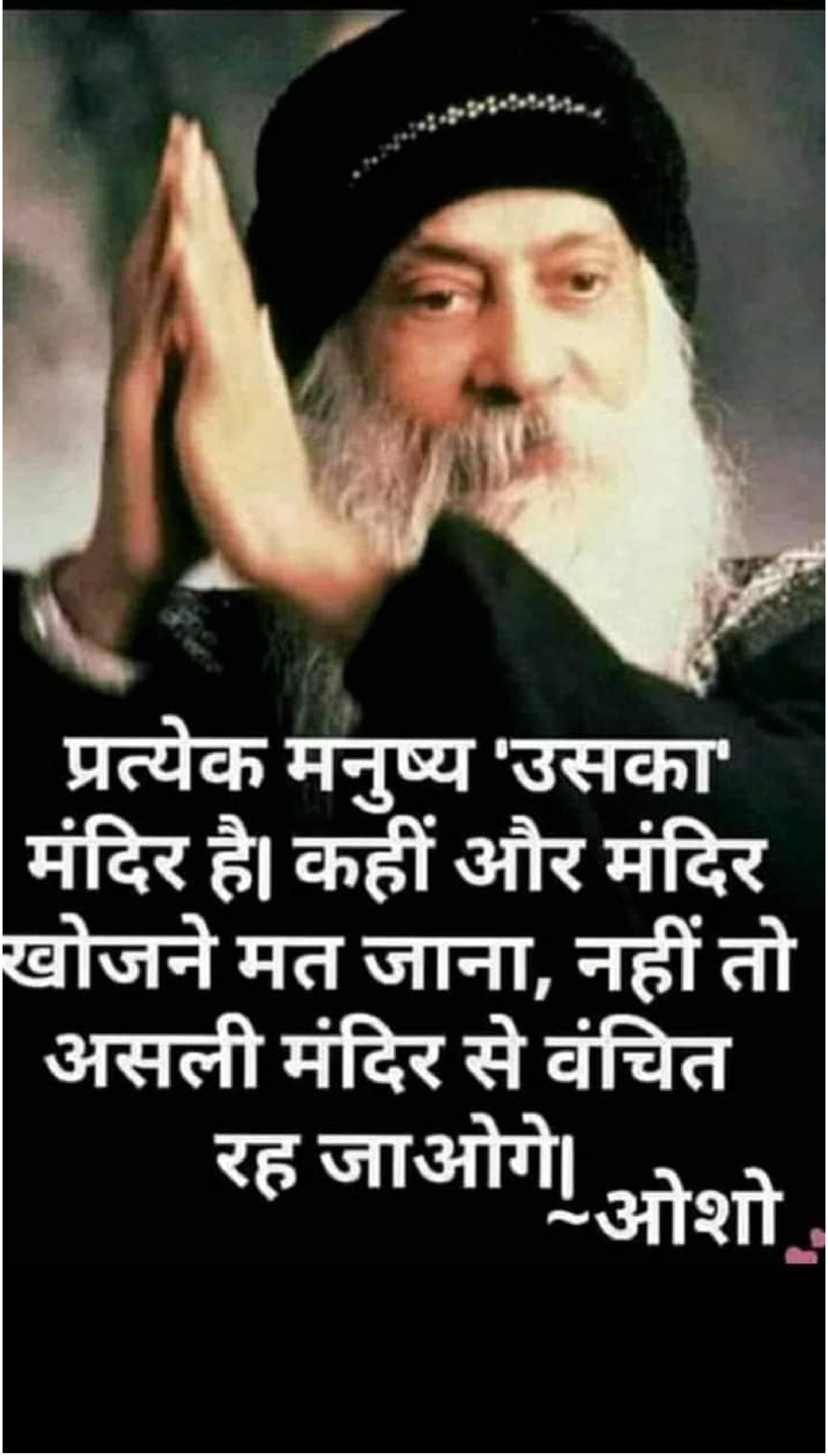
प्रत्येक मनुष्य 'उसका'
मंदिर है। कहीं और मंदिर
खोजने मत जाना, नहीं तो
असली मंदिर से वंचित
रह जाओगे।
~ओशो

CamScanner

5:40 pm 41%

2.3K 53 comments
Like Comment Share

**ओशो अंनत की अंतर्यात्रा**

Vagisha Verma · 7h ·

*मनस्विद कहते हैं कि व्यक्ति वैसा ही हो जाता है, जैसा वह स्वयं को मानता है। मान्यता ही धीरे-धीरे जीवन बन जाती है।* मनस्विद कहते हैं कि अगर आदमी बुरा भी हो तो भी उसे बुरा मत कहना। क्योंकि बुरा कहने से, बार-बार पुनरुक्त करने से--कि तुम बुरे हो, तुम बुरे हो--यह मंत्र बन जाता है। और *अगर सब तरफ सभी लोग दोहराते हों कि तुम बुरे हो, तो वह व्यक्ति भी भीतर दोहराने लगता है कि मैं बुरा हूं। न केवल वह दोहराता है, बल्कि जो सबकी अपेक्षा है, उसको सिद्ध करने की कोशिश भी करता है।* धीरे-धीरे बुराई में आबद्ध हो जाता है।

*शायद धर्म के जगत में खोज करने वाले लोग इस सत्य को बहुत पहले पहचान लिए थे। उन्होंने तुम्हें जीवन की परम सत्ता को मंत्र बनाने को कहा है: आत्मा चित्तम्। तुम परमात्मा हो। तुम्हारी आत्मा ही तुम्हारा मन है।* यह बड़ी से बड़ी बात है, जो तुम्हारे संबंध में कही जा सकती है। और अगर यह तुम्हारा मंत्र बन जाए; और यह तुम्हारे जीवन में ओत-प्रोत हो जाए; तुम्हारे रोएं-रोएं में समा जाए इसकी झंकार, *तो तुम धीरे-धीरे पाओगे कि जो तुमने सोचा, वह तुम होने लगे हो;* जो तुमने धुना भीतर, वह तुम्हारे जीवन में आना शुरू हो गया है।

CamScanner

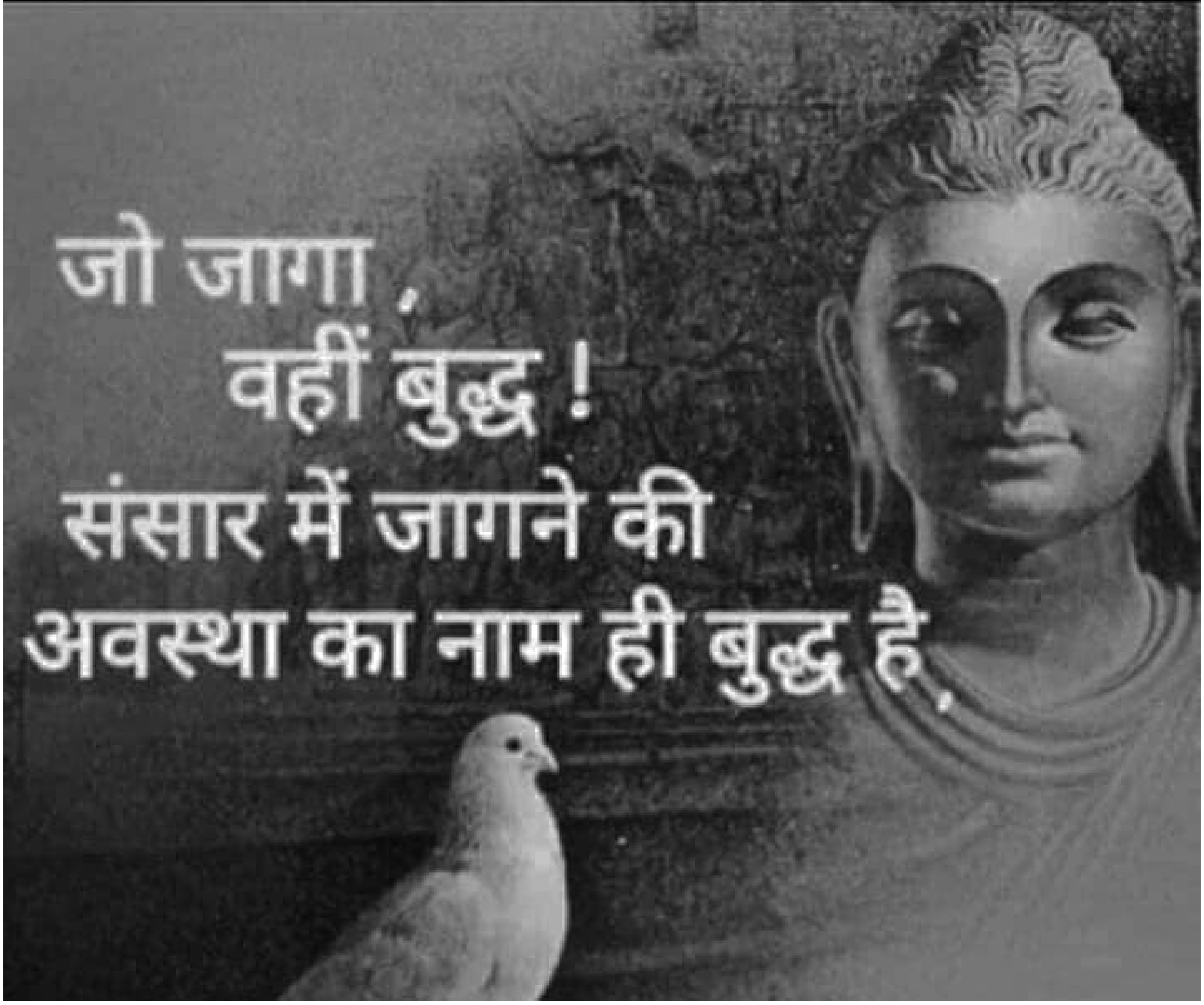


CamScanner

CamScanner

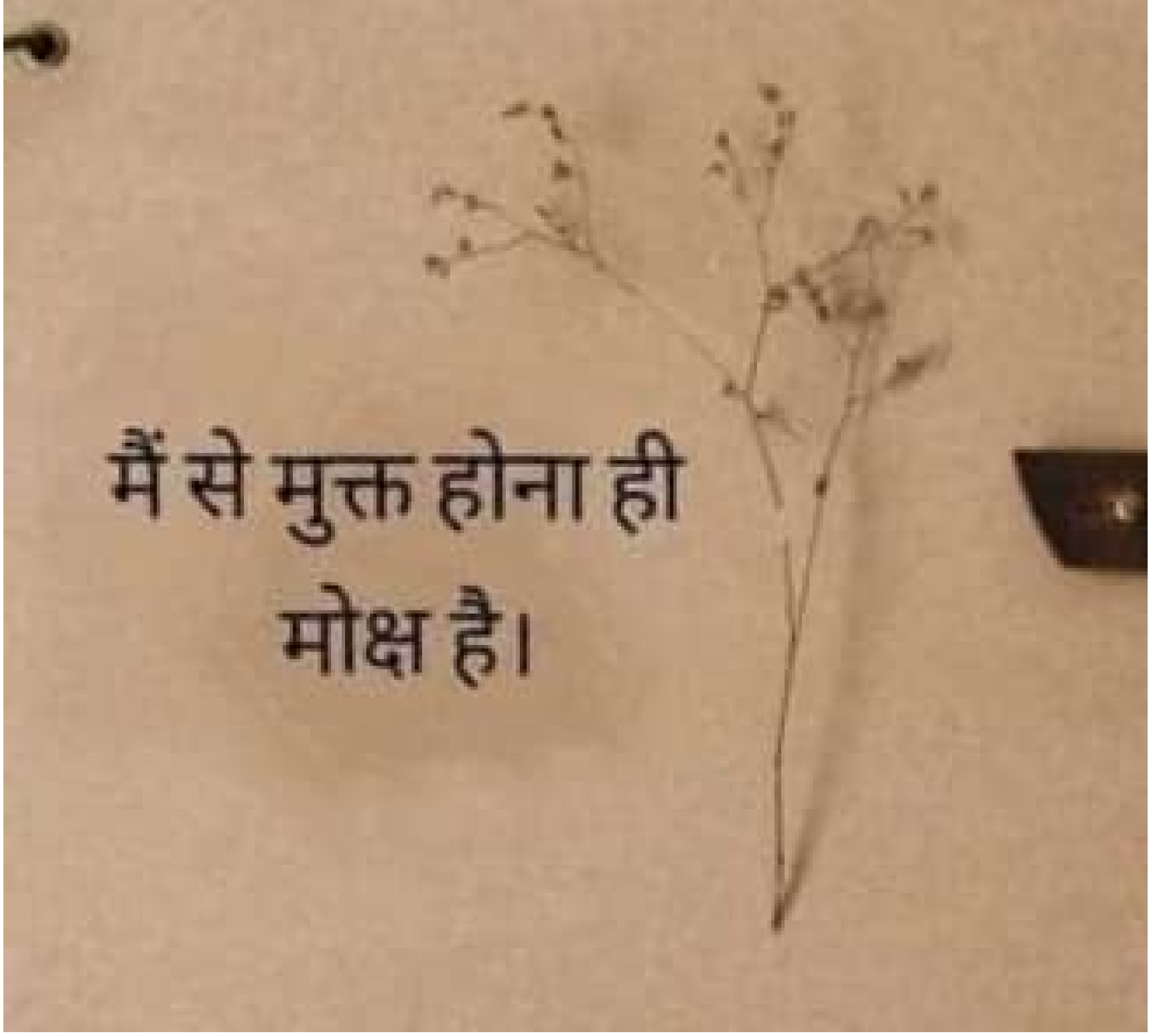


CamScanner

मनुष्य के हाथ में धर्म के नाम पर संप्रदायों
के बुझे दीयों के अतिरिक्त और कुछ भी
नहीं है। धर्म के नाम पर मनुष्य के हाथ में
बुझी हुई किताबों के अतिरिक्त और कुछ
भी नहीं है। धर्म के नाम पर परमात्मा तो
बिलकुल नहीं है। लेकिन पुरोहित जरूर है,
मंदिर हैं, प्रार्थनाएं हैं, और सब बुझी हुई,
सब राख, उनमें कोई रौशनी नहीं,
कोई प्रकाश नहीं है।

OSHO

CamScanner

5:33 pm 4G 42%

यह छोटा-छोटा गलियों वाला एक छोटा सा गांव था जिससे सूफ़ी
भली-भांति परिचित थे। और वह अमीर आदमी कभी भागा नहीं था। वह सूफ़ी गुरु के पीछे चिल्लाते हुए दौड़ा, "मुझे धोखा दिया गया है! यह आदमी कोई साधु नहीं है. वह पागल नहीं है, वह बहुत चालाक है।"
लेकिन वह सूफी को पकड़ नहीं सका क्योंकि वह इतनी तेजी से जा रहा था और गांव में कई मोड़ ले रहा था। बूढ़ा आदमी मोटा था - फूल रहा था, फूल रहा था, पसीना आ रहा था, रो रहा था - और पूरी भीड़ हँस रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये लोग क्यों हंस रहे हैं और कोई मदद नहीं कर रहा! लेकिन गाँव जानता था कि वह आदमी पागल नहीं था - वह अति-पागल था। उनके अपने तरीके थे.
आख़िरकार वह अमीर आदमी उसी पेड़ के पास पहुँच गया। सूफी बहुत आगे पहुँच गये थे; वह वहां बैग लेकर बैठा था। और वह अमीर आदमी चिल्ला रहा था, गालियाँ दे रहा था।
सूफ़ी ने कहा, "यह सब बकवास बंद करो! यह थैला ले लो।" उस आदमी ने तुरंत बैग ले लिया और सूफी ने पूछा, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"
उन्होंने कहा, "मुझे बहुत शांति महसूस हो रही है."
सूफ़ी ने कहा, "वही तो मैं तुमसे कह रहा था। यदि तुम तैयार हो तो मैं तुम्हें तुरंत शांति दे सकता हूं। आपको यह मिल गया क्या?"
उन्होंने कहा, "मुझे मिल गया!"
"फिर कभी किसी से इसके बारे में न पूछें!" आपने अपनी सारी दौलत को हल्के में लेना शुरू कर दिया है। मैंने तुम्हें उन्हें खोने का मौका दिया, और अचानक तुम वही बन गए जो तुम वास्तव में हो - एक भिखारी। और ये बहुमूल्य पत्थर, जो आपके लिए अपना मूल्य खो चुके हैं, फिर से बहुमूल्य हैं।" लेकिन ऐसा होता है. जो लोग महलों में रहते हैं वे उन महलों को तुच्छ समझने लगते हैं; जो लोग अमीर हैं वे कभी गरीबी के दुखों के बारे में नहीं सोचते। जिन लोगों को गुरु मिल जाता है वे उसे हल्के में लेने लगते हैं - कि कुछ करने को नहीं है; आपको केवल प्रश्न पूछना है और आपका गुरु इसका उत्तर देने के लिए वहां मौजूद है।

ओशो-
स्वर्णिम भविष्य

CS CamScanner

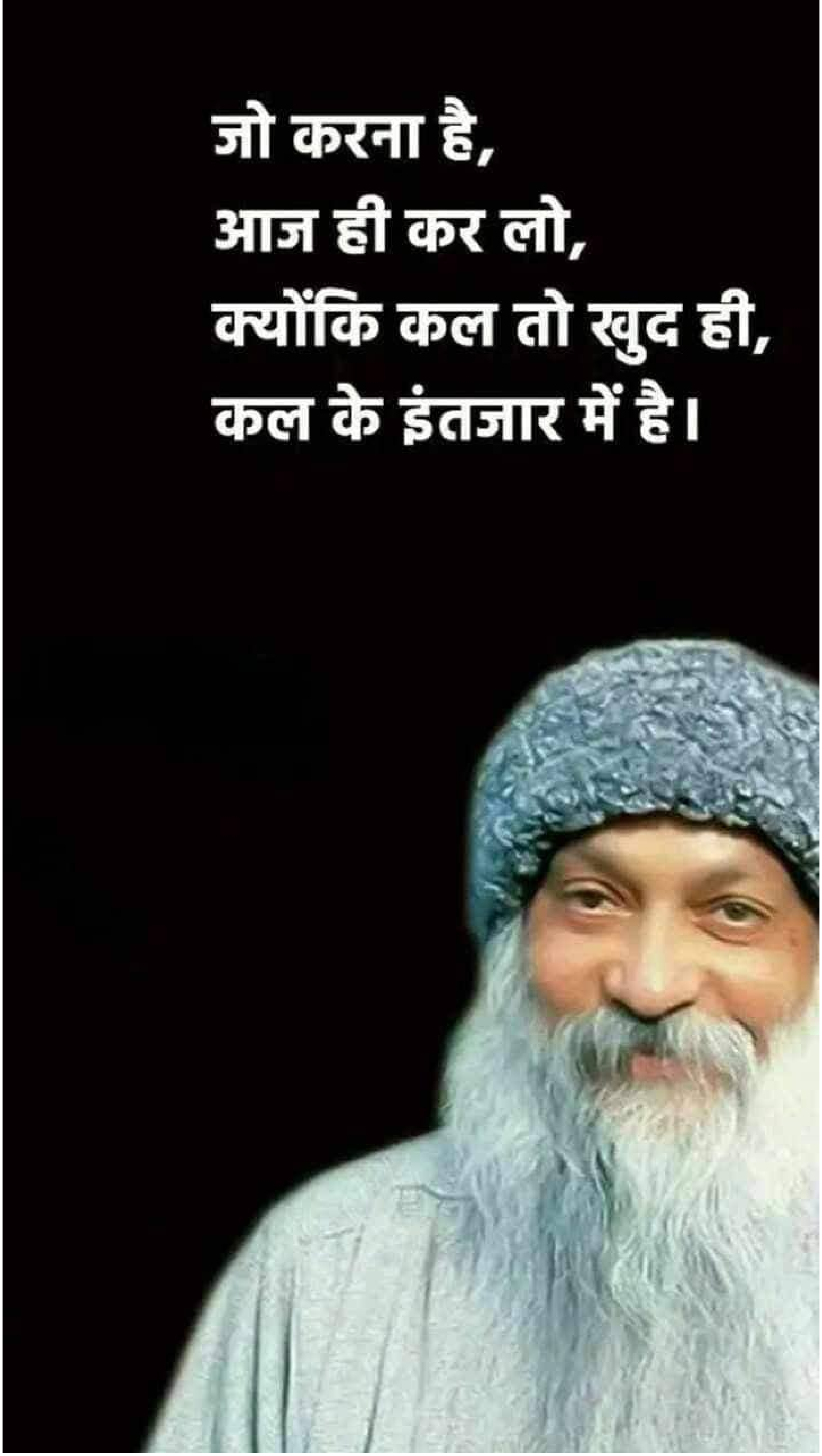


CamScanner

5:57 pm 29%

*टॉन्सिल और मौन* .... *अपेंडिक्स और outbody experience*

*एक बात साफ है कि परमात्मा ने तुम्हारे भीतर कुछ भी अकारण पैदा नहीं किया है।* जैसे मेरे अनुभव में कुछ बातें हैं जो मैं तुम्हें कहूं। वे शायद कभी चिकित्सकों के काम पड़ जाएं। क्योंकि, कभी न कभी चिकित्साशास्त्र, सर्जरी, मनुष्य के अंतरतमों का भी स्पर्श करेगी।
जहां तक बोलने का और साधारण आदमी की चेतना का संबंध है, टांसिल्स का कोई उपयोग नहीं मालूम होता। लेकिन जहां तक मौन का संबंध है, टांसिल्स का उपयोग है। और जिस व्यक्ति के टांसिल्स निकल गए हैं, उसे मौन होना मुश्किल हो जाता है, यह मेरा अनुभव है। वह चुप नहीं हो सकता। शायद बोल ज्यादा अच्छी तरह से सकता है, क्योंकि टांसिल्स के अवरोध बोलने में बाधा बनते हैं। सर्दी-जुकाम पकड़ता है, टांसिल करीब आ जाते हैं, एक-दूसरे से रगड़ खाते हैं, सूजन हो जाती है, बोलने में कष्ट होता है।
लेकिन ठीक इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति मौन में उतरता है तो जिसके टांसिल नहीं है उसको मैंने मौन में उतरते नहीं देखा। जरूर कहीं कुछ गहरे संबंध है कि टांसिल मौन में सहायता देते हैं। और जो व्यक्ति वर्षों तक मौन रहते हैं, उनके टांसिल बिलकुल करीब आ जाते हैं। इतने करीब आ जाते हैं कि अगर वे बोलते होते तो बोलना मुश्किल हो जाता--जैसे मेहरबाबा।
कोई व्यक्ति तीन वर्ष तक अगर मौन रह जाए, बिलकुल मौन, तो टांसिल्स बिलकुल करीब आ जाते हैं। और जो बोलने की ऊर्जा है, जो विचार का प्रवाह है, फिर ऊपर की तरफ नहीं जाता वही बोलने की ऊर्जा हृदय की तरफ गिरने लगती है और टांसिल उसके गिर में सहयोगी होते हैं। किसी दिन शायद सर्जरी जान सके।
जिन लोगों की अपेंडिक्स निकल गई है...और डाक्टर तो बड़े तत्पर रहते हैं निकालने में...।
मैंने सुना है कि एक सर्जन की, बड़े प्रख्यात सर्जन की पत्नी ने एक दिन सुबह उठकर देखा कि उसकी अंग्रेजी की किताब के पन्ने किसी ने फाड़ लिए हैं। तो उसने अपने पति को पूछा कि यहां कोई आया भी नहीं, किसने ये पन्ने फाड़े? उसने कहा: अरे, मुझे क्षमा करना! मैंने देखा, उन पर लिखा है अपेंडिक्स। मैंने जल्दी से बाहर निकाल लिये। खयाल ही न रहा।

CamScanner

5:57 pm 29%

सुबह उठकर देखा कि उसकी अंग्रेजी की किताब के पन्ने किसी ने फाड़ लिए हैं। तो उसने अपने पति को पूछा कि यहां कोई आया भी नहीं, किसने ये पन्ने फाड़े? उसने कहा: अरे, मुझे क्षमा करना! मैंने देखा, उन पर लिखा है अपेंडिक्स। मैंने जल्दी से बाहर निकाल लिये। खयाल ही न रहा।

डाक्टर तो एकदम तत्पर हैं!

जो लोग, जिनकी अपेंडिक्स निकाल ली गई है, कुछ बातों में उनको कठिनाई शुरू होती है। एक:उनकी आत्मा को शरीर के बाहर ले जाना बड़ा कठिन हो जाता है, जिसको आध्यात्मिक लोग एस्ट्रल--प्रोजेक्शन कहते हैं--शरीर के बाहर निकल कर यात्रा करना। वह अपेंडिक्स जिसकी निकल गई। उसको मुश्किल हो जाता है। वह शरीर के बाहर नहीं निकल पाता। जिसकी अपेंडिक्स स्वस्थ है, वह शरीर के बाहर सुविधा से निकल पाता है। जैसे अपेंडिक्स सूक्ष्म शरीर को बाहर भीतर ले जाने में सहयोगी होती है।

ये सिर्फ संकेत दे रहा हूं, क्योंकि इस संबंध में कुछ बहुत खोजबीन कभी की नहीं गई है। लेकिन मेरे अनुभव में जिनकी अपेंडिक्स निकल गई है, हजारों लोगों ने मेरे करीब ध्यान किया है, उनमें से अनेक लोगों को शरीर के बाहर जाने का अनुभव होता है। जब भी किसी को शरीर के बाहर जाने का अनुभव होता है तब मैं निश्चित पूछता हूं कि उसकी अपेंडिक्स की क्या हालत है? तो मैंने सदा पाया, जिनकी निकल गई, उनको बाहर जाने का अनुभव कभी नहीं होता; जिनकी नहीं निकली है और स्वस्थ है, उनको ही बाहर जाने का अनुभव होता है।

और यह एक बड़ा मूल्यवान अनुभव है। शरीर के बाहर जा कर जो अपने शरीर को पड़ा हुआ देख लेता है, उसकी शरीर-मूर्च्छा सदा के लिए टूट जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि अपेंडिक्स सेतु है, जोड़ है, और उस जोड़ के गिर जाने पर सूक्ष्म शरीर का बाहर निकलना, भीतर आना कठिन हो जाता है। इसलिए योग भी शरीर के किसी अंग को काटने के पक्ष में नहीं है।

कहै कबीर दीवाना-(ओशो) प्रवचन--06

जोगी जग थैं न्यारा—(प्रवचन—छठवां)

दिनांक 16 मई, 1975, प्रापत:,
ओशो आश्रम, पूना

CamScanner

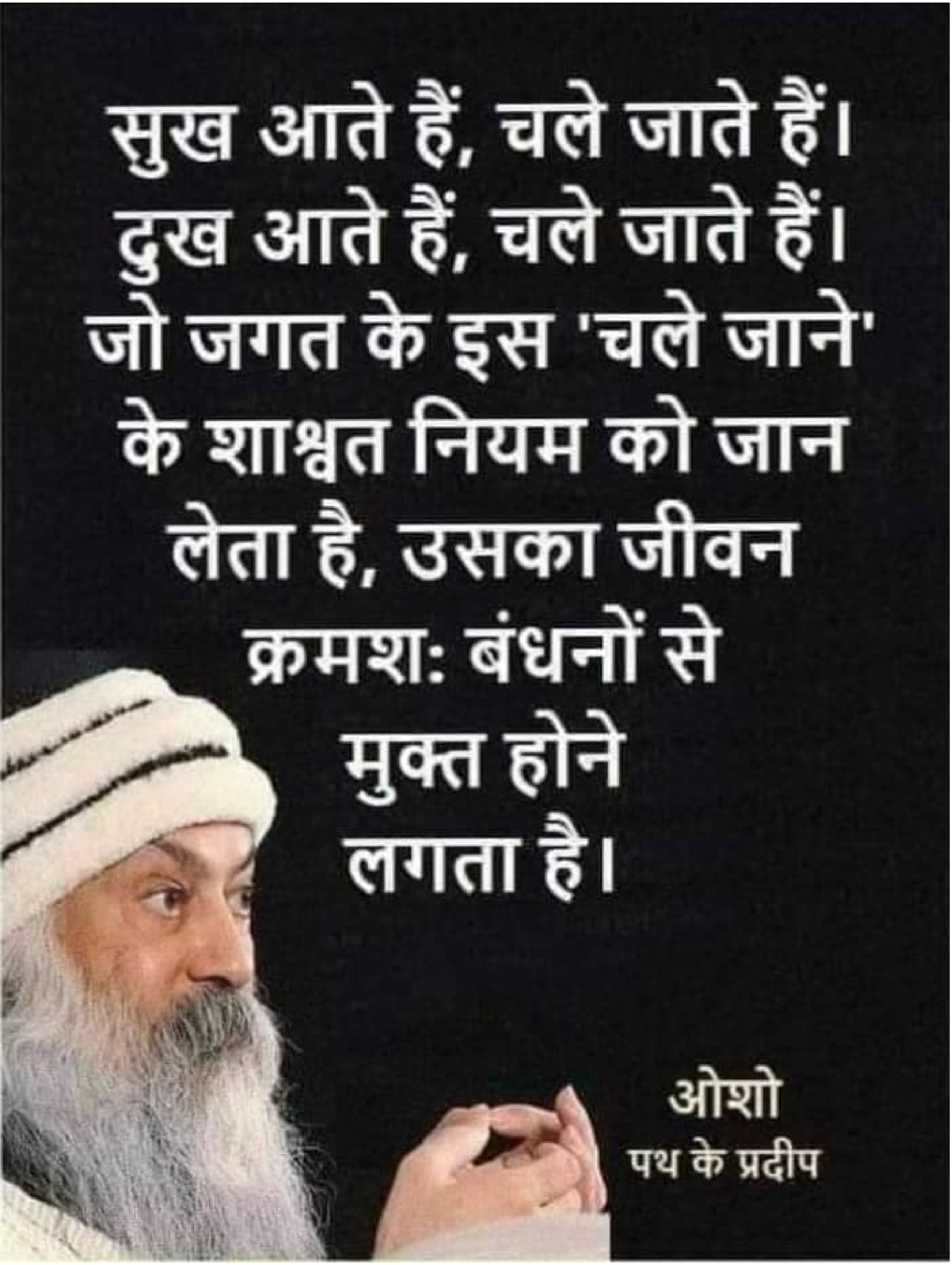


CS CamScanner

5:53 pm

VoLTE 4G 29%

अगर मैं ऊंट पर भी सवार होकर पहुंच जाता तो भी वे मुझसे नहीं पूछ सकते थे कि तुम ऊंट पर सवार क्यों हो? क्योंकि पता नहीं इसमें से क्या मामला निकले, फिर पीछे झंझट खड़ी हो!

तुम पूछ रहे हो अमरनाथ सिंह, कि संत बाल और दाढ़ी क्यों बढ़ाए रहते हैं?
संत बेचारे सहज स्वाभाविक लोग, जो परमातमा करता है, करने देते हैं, बाधा नहीं डालते कि बैठे हैं उस्तरा लिए और बाधा डाल रहे हैं। परमा९त०मा जो करता है, उसे सहज स्वीकार करते हैं। और यह पुरुष का लक्षण है। यह पुरुष के शरीर का हिस्सा है। यह बिलकुल नैसर्गिक है। यह तो बिलकुल पागलपन है कि दाढ़ी-मूंछ सफा करके बैठे हुए हो। यह शोभा नहीं देता। इससे तुम्हारे पुरुषतव में थोड़ी सी कमी पड़ जाती है।

तुम्हारे चेहरों में और स्त्रियों के चेहरों में जितना फासला हो उतना अच्छा, जितना भेद हो उतना अच्छा, उतना आकर्षण होता है। लेकिन पीछे कारण हैं कि लोगों ने क्यों दाढ़ी-मूंछ कटानी शुरू की। पुरुष को स्त्री का चेहरा सुंदर लगता है, सो उसने सोचा कि इसी तरह का चेहरा मैं बना लूं तो सुंदर लगेगा। यह गलत बात है। स्त्रियों से भी तो पूछो कि तुम्हें कौन का चेहरा सुंदर लगता है! स्त्रियों को स्त्रियों के चेहरे सुंदर लगते हैं? स्त्रियों को तो हैरानी होती है यह सोच कर कि पुरुष मरे जाते हैं स्त्रियों पर, किसलिए? पुरुषों का चेहरा सुंदर लगता है।

और तुमने देखा, दाढ़ी-मूंछ के साथ पुरुष के चेहरे पर एक गरिमा आ जाती है, भराव आ जाता है, एक व्यक्ति९त०व आ जाता है! दाढ़ी-मूंछ से रहित पुरुष के चेहरे से कुछ खो जाता है, कुछ खालीपन हो जाता है, कुछ रिक्त हो जाता है।

अच्छी दुनिया होगी और लोग सहज स्वाभाविक जीएंगे, तो यह बिलकुल स्वाभाविक होगा कि लोग दाढ़ी-मूंछ बढ़ाएं। इसमें कुछ आध्यातिमक रहस्य खोजने की कोशिश न करो। मगर लोग हर चीज में कुछ न कुछ आध्यातिमक रहस्य खोजने में लगे रहते हैं।

ओशो

CamScanner

भक्ति भी तब तक पूरी नहीं होती, जब तक भक्त भगवान ही न हो जाए।

ओशो अहोभाव

CamScanner

5:48 pm 30%

जाएगा, लेकिन खिलौने से जो प्रेम का अनुभव हुआ, वह साथ चल पड़ेगा। खिलौने से जो प्रेम का नाता बना, जो संबंध बना, जो प्रतीति हुई, जो अनुभव हुआ, प्रेम का जो द्वार खुला, वह साथ रह जाएगा। खिलौना तो कल पड़ा रह जाएगा किसी कोने में। यह खिलौना फिर कभी इसे याद भी न आएगा। लेकिन जब भी यह किसी और को भी प्रेम करेगा, तो ध्यान रखें, उस खिलौने का भी दान उस प्रेम में रहेगा। लेकिन, हो सकता है यह बच्चा—बच्चा तो न रह जाए शरीर से, लेकिन मन से फिर भी बच्चा रह जाए। फिर किसी व्यक्ति से प्रेम करने लगे और तब फिर उस व्यक्ति के लिए भी वैसा ही रोने लगे जैसे खिलौने के लिए कभी रोया था। और बिलकुल भूल जाए कि जिसके लिए इतना रोया था, उसे भी एक दिन छोड़ दिया, और फिर याद भी नहीं आयी उसकी कि वह खिलौना कहां है! अब उसका कोई पता भी नहीं है। लेकिन अगर यह बच्चा भीतर से भी बड़ा हो जाए, शरीर से ही नहीं मन से भी बड़ा हो जाए, एक भीतरी प्रौढ़ता भी इसकी आए, तो एक दिन यह बाहर का खिलौना भी ऐसा ही भूल जाएगा।

लेकिन तब भी इस बाहर के व्यक्ति से भी जो प्रेम का नाता बना था, जो संबंध बना था, जो रस पाया था, वह और सघन होकर भीतर भर जाएगा। यह प्रेम भक्ति बनेगा और जिस दिन यह प्रेम भक्ति बनेगा और भगवान की तरफ बढ़ेगा, उस दिन याद भी न आएगी उन प्रेमियों की, उन खिलौनों की—चाहे बचपन के, चाहे बड़ेपन के; लेकिन उनका भी दान होगा। लेकिन भक्ति भी तब तक पूरी नहीं होती, जब तक भक्त भगवान ही न हो जाए।
और एक दिन आखिरी खिलौना भगवान का भी छूट जाता है। और तब वही शेष रह जाता है, जो बचा इन सब अनुभवों में—प्रेम! सब खिलौने छूट जाते हैं। लेकिन खिलौनों से जिसको पाने में सहायता मिली थी वह बच जाता है। सब रूप छूट जाते है, लेकिन वह जो अरूप प्रेम है वह धीरे— धीरे संग्रहीत होता जाता है, संग्रहीत होता जाता है। एक दिन ऐसा आता है कि भक्त सिर्फ प्रेम ही रह जाता है। प्रेमी तक खो जाता है। उस दिन वह भगवान हो जाता है।
ओशो

CamScanner

5:47 pm
VoLTE 4G 30%

**अहोभाव**

3h ·

अहोभाव

दो बातें खयाल में लेने जैसी हैं। ब्रह्म तो अरूप है, ब्रह्म का तो कोई रूप नहीं हैं। ब्रह्म का तो कोई आकार नहीं है। ब्रह्म की तो हम कोई धारणा भी न कर पाएंगे। कोई रेखा भी न खींच पाएंगे उसके आसपास। कोई परिभाषा भी न कर पायेंगे। ब्रह्म तो निराकार है। अस्तित्व तो निराकार है। लेकिन जिन रहस्यवादियों ने उस निराकार के आसपास भी रेखाएं खींची हैं, रेखाएं उसके आसपास खिंच नहीं पातीं। और रेखाएं खींचने से कोई ब्रह्म के रहस्य का हल भी नहीं होता—लेकिन वे रेखाएं खींच कर ही हम उन लोगों को जो केवल रेखाओं को ही समझते हैं, उस रेखा—शून्य की तरफ ले जाने का उपयोग कर सकते हैं। जो उस निराकार को सीधा नहीं समझ सकते हैं, उनके हाथ में हम आकार दे सकते हैं और आकार से धीरे—धीरे निराकार की यात्रा पर ले जा सकते हैं। आकार देकर धीरे—धीरे आकार छीने जा सकते हैं।

एक छोटे बच्चे को हम खेलने के लिए एक खिलौना दे देते हैं। खिलौने से प्रेम हो जाता है सघन। वह बच्चा उस खिलौने के बिना मत सो भी नहीं सकता। रात नींद भी खुल जाए और खिलौना न मिले तो वैसी ही बेचैनी होती है जैसा किसी भी प्रेमी को प्रेमी के बिछुड़ जाने पर हो। लेकिन शीघ्र ही वह दिन आएगा, जब यह खिलौना किसी कोने में पड़ा रह जाएगा। लेकिन एक मजे की बात है। खिलौना तो कोने में पड़ा रह जाएगा, लेकिन खिलौने से जो प्रेम का अनुभव हुआ, वह साथ चल पड़ेगा। खिलौने से जो प्रेम का नाता बना, जो संबंध बना, जो प्रतीति हुई, जो अनुभव हुआ, प्रेम का जो द्वार खुला, वह साथ रह जाएगा। खिलौना तो कल पड़ा रह जाएगा किसी कोने में। यह खिलौना फिर कभी इसे याद भी न आएगा। लेकिन जब भी यह किसी और को भी प्रेम करेगा, तो ध्यान रखें, उस खिलौने का भी दान उस प्रेम में रहेगा। लेकिन, हो सकता है यह बच्चा—बच्चा तो न रह जाए शरीर से, लेकिन मन से फिर भी बच्चा रह जाए। फिर किसी व्यक्ति से प्रेम करने लगे और तब फिर उस व्यक्ति के लिए भी वैसा ही रोने लगे जैसे खिलौने के लिए कभी रोया था। और बिलकुल भूल जाए कि जिसके लिए इतना रोया था,

CamScanner

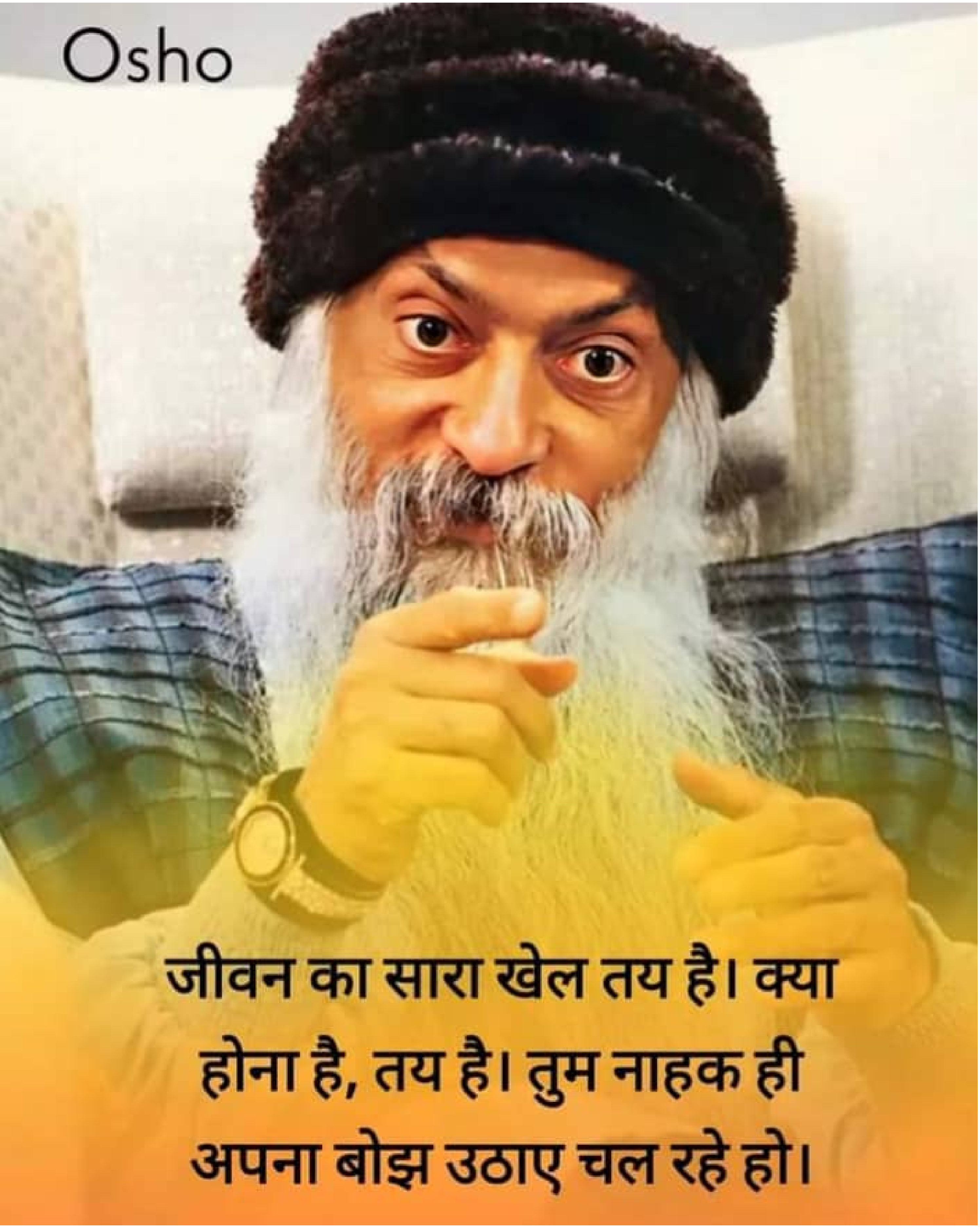


CamScanner

लाओत्से कहता है कि तुम्हें
खयाल ही नहीं है कि,
चीजें अपने आप हो रही हैं!
तुम्हारे करने से क्या
होता है.?
तुम करने से बिगाड़ ही
सकते हो.! इसलिए कर्मठ
लोगों से ज्यादा..
उपद्रवी लोग! तुम्हें कहीं भी
नहीं मिलेंगे.!!

**ओशो**

CS CamScanner

CamScanner

5:40 pm 32%

के लिए एक निमित्त माना है। यह तुम चकित होओगे जानकर, उल्टी हो गयी बात। आम-तौर से लोग सोचते हैं कि ध्यान कारण है, परमात्मा कार्य; ध्यान निमित्त है, परमात्मा उसका लक्ष्य। पतंजलि ने कहा है कि परमात्मा ध्यान करने में सिर्फ एक आलंबन है, एक निमित्त। कुछ लोग हैं जो बिना परमात्मा के ध्यान नहीं कर सकते, तो चलो भाई, मान लो परमात्मा को और ध्यान तो करो। चलो इसीलिए ध्यान करो कि ध्यान करने से परमात्मा मिलेगा। हालांकि ध्यान करने से परमात्मा के मिलने का कोई संबंध नहीं है। ध्यान तुम करोगे तो तुम खुलोगे, तुम प्रगट होओगे। तुम्हारी कली जो बंद -बंद है, विकसित होगी, कमल बनेगा। और उस कमल की अनुभूति का नाम ही भगवत्ता है। भगवान व्यक्ति नहीं है-खुले हुए कमल की अभिव्यक्ति। वह आनंद जो फूल के खिलने पर उपलब्ध होता है, जै तुम्हारी चेतना का कमल खुलेगा तो उस आनंद का नाम भगवत्ता है।

कार्य -कारण का कोई संबंध नहीं है। औचित्य की कोई बात नहीं है। ध्यान तो एक दीवानगी है। यहां लाभ -हानि का हिसाब, इतनी होशियारी से नहीं चलेगा। पहले पक्का हो जाए कि क्या मिलेगा, तब ध्यान करोगे, तो कभी ध्यान ही न कर सकेंगे।

जीवन में कुछ तो रहने दो जो औचित्य के पार हो! जीवन में कुछ तो बचने दो जो साधन न हो, कारण न हो। जीवन में कुछ तो बचने दो जो बस अपने - आप में अपना साध्य हो। नाचने का मजा अपने में है। नाचना क्या अपने में काफी नहीं? है।, जो न नाच सकते हों, बिलकुल ही पंगु हों, लकवा खा गये हों, उनके लिये जरूरत हो तो भगवान की धारणा को बना लें। पहले कृष्ण की मूर्ति खड़ी कर लें, फिर नाचे। अगर तुम नाच सकते हो तो कृष्ण के आसपास नाचने का सवाल नहीं है; जहां तुम नाचोगे, कृष्ण आसपास होंगे। नाचोगे तो कृष्ण को आसपास होना ही है। नृत्य की भाव - भंगिमा भगवत्ता है।

जब तुम शून्य होकर बैठ जाओगे तो परमात्मा नहीं तो और कौन होगा? जब तुम मिट जाओगे तो जो बचेगा उसका नाम परमात्मा है।...:::!!!

हंसा तो मोती चूने-(लाल नाथ)--प्रवचन--03

।।।··· ओशो ···।।।

CamScanner

ध्यान का कोई औचित्य नहीं है। उचित - अनुचित की भाषा बहुत पीछे छूट जाती है। ध्यान उचित - अनुचित का अतिक्रमण है। उचित और अनुचित तो मन के विचार हैं; और ध्यान अ-मन की अवस्था है। उचित - अनुचित तो बाजार की बातें हैं; ध्यान तो अंतर्यात्रा है। उचित - अनुचित तो व्यवहार है; ध्यान तो अंतर्दशा है।

लेकिन मैं तुम्हारा प्रश्न समझा। तुम यह पूछ रहे हो कि ईश्वर -प्राप्ति में कार्य -कार नहीं। निश्चित ही ईश्वर -प्राप्ति में कोई कारण नहीं है। तुम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते जिससे ईश्वर जाया जा सके। तुम कुछ कर सके तो कारण होता।

तुम्हारे किये ईश्वर मिलता तो कुछ कारण होता। ईश्वर पाने में कोई भी कारण काम नहीं आता। इसीलिए तो ईश्वर वितान का अंग नहीं है, इसीलिए तो विज्ञान ईश्वर को अंगीकार नहीं कर पाता। क्योंकि विज्ञान का एक मौलिक आधार है और वह है कार्य -कारण का सिद्धांत। जो चीज कार्य -कारण के सिद्धांत के भीतर है वह विज्ञान स्वीकार करेगा। सौ डिग्री तक पानी गर्म करो, भाप बनता है; फिर सौ डिग्री तक गर्म चाहे मस्जिद में करे चाहे मंदिर में, चाहे गुरुद्वारा में, चाहे चर्च में, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि मंदिर में निन्यानबे डिग्री पर बन जाएगा भाप और मस्जिद में थोड़ा देर लगाएगा कि यह मांसाहारियों की जगह है।

सौ डिग्री पर ही बनेगा, चाहे मस्जिद हो चाहे मंदिर हो, हिंदू -मुसलमान का कोई भेद न करेगा। फिर चाहे भारत हो और चाहे पाकिस्तान हो और चाहे चीन हो चाहे जापान हो, सौ डिग्री पर ही भाप बनेगा। सौ डिग्री गर्मी कारण है। जैसे ही कारण पूरा हुआ, पानी को भाप बनन ही पड़ेगा। लेकिन इसका एक अर्थ हुआ कि पानी गुलाम है। सौ डिग्री तक तुमने गर्मी पैदा कर दी तो अब पानी मालिक नहीं है कि कह सके कि आज दिल नहीं, कि आज भाप न बनेंगे, कि आज उमंग ही नहीं हो रही, आज आकाश में उड़ने का इरादा ही नहीं है, फिर कभी देखेंगे, कि आज चित्त बहुत खिन्न है। पानी कुछ भी न कह सकेगा। पानी की कोई स्वतंत्रता नहीं है।

CamScanner

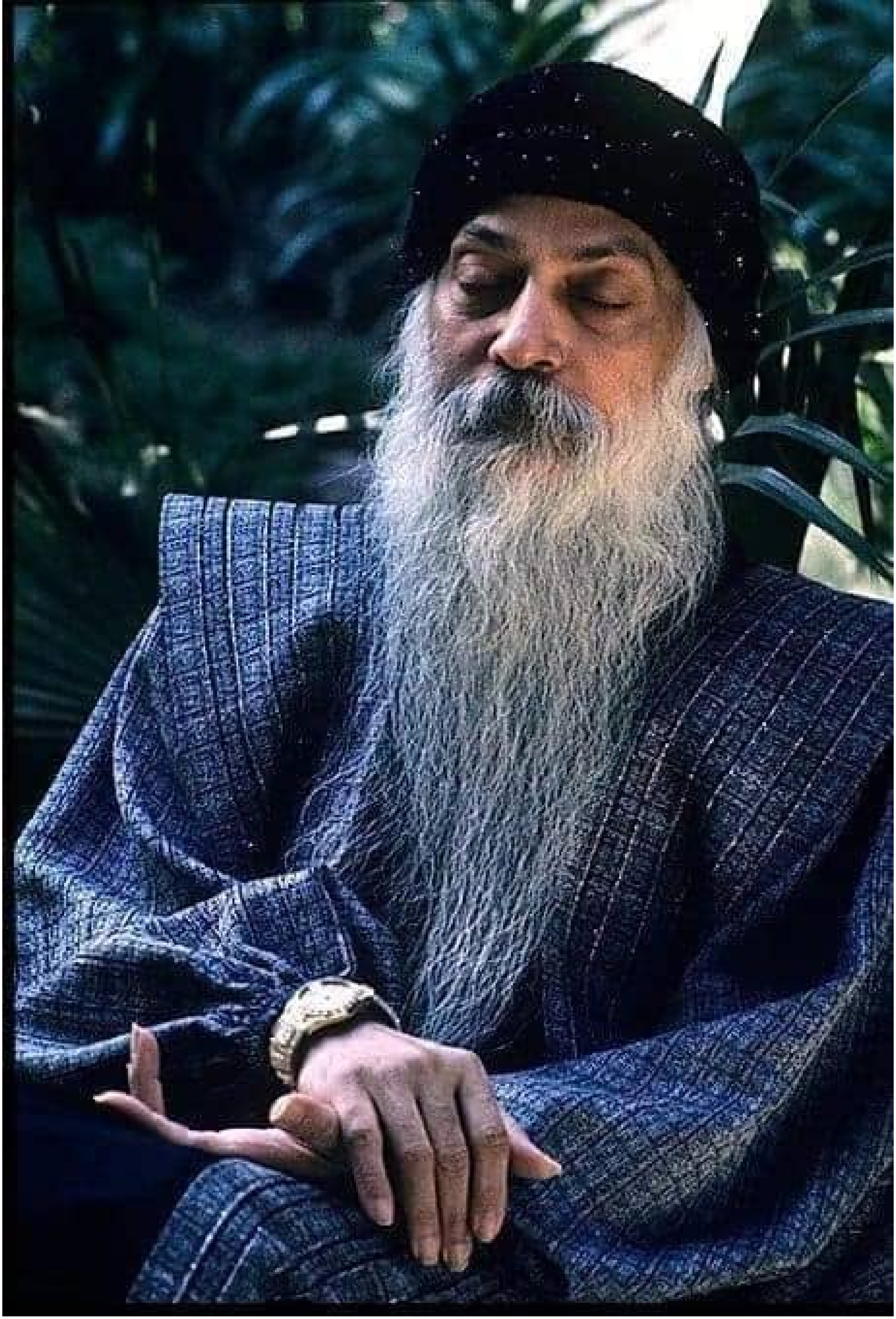

CamScanner

5:36 pm 33%

के अतिरिक्त कोई भी उन्हें पहचान सकता है, लेकिन हिंदू उन्हें नहीं पहचान सकते। हमारी आंख अतीत के प्रति इतने व्यामोह से घिरी है कि वर्तमान को कभी भी नहीं देख पाती। यह झूठा है आपका खयाल कि अतीत के प्रति आदर, महापुरुषों के प्रति आदर है। महापुरुषों के प्रति नहीं; मुर्दों के प्रति, मृत के प्रति, जो बीत गया। मृत के प्रति हम क्यों आदर देते हैं? उसके पीछे भी कारण है। मृत के हम पूरे मालिक हो सकते हैं, ओनरशिप हो सकती है। जीवित के हम मालिक नहीं हो सकते। अगर राम जिंदा हैं, तो हम कुछ भी नहीं कह सकते कि राम क्या करेंगे और क्या नहीं करेंगे? लेकिन मरे हुए राम क्या करेंगे और क्या नहीं करेंगे, हम उसकी व्याख्या कर सकते हैं, निर्णय कर सकते हैं। मरे हुए राम हमारे विरोध में कुछ भी नहीं कह सकते, मरे हुए राम हमारे हाथ की कठपुतली हैं। सब मृत महापुरुषों को हमने हाथ की कठपुतली बनाया हुआ है। जिंदा छोटा सा आदमी भी हाथ की कठपुतली नहीं हो सकता, महापुरुष तो हाथ की कठपुतली कैसे हो सकते हैं? इसलिए मृत को हम आदर दे पाते हैं, क्योंकि वह हमारे हाथ में होता है, पूरे हमारे शिकंजे में होता है। वह कैसे उठे, कैसे बैठे, हम सब निर्णय कर सकते हैं। वह क्या बोले और क्या न बोले, इसका हम निर्णय कर सकते हैं। वह कपड़े पहने या न पहने, इसका हम निर्णय कर सकते हैं। हम सब निर्णय कर सकते हैं मृत के बाबत, क्योंकि मृत विरोध करने को नहीं आ सकता। लेकिन जीवित के बाबत हम कुछ भी निर्णय नहीं कर सकते और जितना जीवंत व्यक्ति होगा, उतना ही अनिर्णीत होता है। उसके बाबत हम कोई घोषणा नहीं कर सकते। यह महापुरुषों के प्रति आदर नहीं, यह अपने अहंकार की तृप्ति है। उनको हम अपनी मुट्ठी में बंद करके बैठ जाते हैं और वे बेचारे कोई विरोध नहीं कर सकते, क्योंकि जीवित होते तो विरोध करते। हम बदला ले रहे हैं महापुरुषों से। जब वे जीवित थे, तब हम उनको अपने हाथों में बंद नहीं कर सके, उनको अपना गुलाम नहीं बना पाए, उन पर हम जंजीरें नहीं पहना पाए। जब से वे मर जाते हैं, तब से हम उनके मालिक हो जाते हैं। और हम हर तरह की जंजीरें और हम हर तरह की गुलामी लेकर पूरा बदला चुका देते हैं। यह महापुरुषों के प्रति आदर नहीं, रिवेंज है, बदला है।

आचार्य रजनीश ओशो
माटी कहै कुम्हार से

CamScanner

**ओशो का हिन्दी साहित्य**

Rahul Kumar Ojha · 15m ·

दोस्तोवस्की ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। उसने लिखा है, जीसस क्राइस्ट ने अठारह सौ वर्ष बाद सोचा कि अब तो करीब-करीब एक तिहाई दुनिया ईसाई हो गई है। अब मैं वापस जाऊं। अब तो मेरा स्वागत हो सकेगा, अब तो लोग मेरी बात सुन सकेंगे। अब तो वे पुरोहित न रहे, जिन्होंने मुझे फांसी दी थी। अब तो वे लोग न रहे जो हंसे थे और मजाक उड़ाया था। अब तो वे लोग न रहे, जिनके सामने मैं असफल हो गया और मेरी मृत्यु के सिवाय कुछ भी फलित न हुआ था। मैं जाऊं। जेरुसलम में एक सुबह, रविवार के दिन, जब कि लोग चर्च से वापस लौट रहे हैं, जीसस क्राइस्ट एक झाड़ के नीचे उतर कर खड़े हो गए। चर्च से लौटते हुए लोग, जो चर्च में जीसस क्राइस्ट की प्रार्थना करके आ रहे हैं, उन्होंने जीसस क्राइस्ट को खड़े देखा, तो भीड़ लगा ली और वे हंसने लगे और वे कहने लगे, कोई अभिनेता मालूम होता है, बिलकुल जीसस क्राइस्ट बन कर खड़ा हुआ है। जीसस क्राइस्ट ने कहा, मैं अभिनेता नहीं, मैं कोई एक्टर नहीं, मैं खुद जीसस क्राइस्ट हूं। वे लोग हंसने लगे, उन्होंने कहा कि ऐसे पागलपन की बातें मत करो। जीसस क्राइस्ट सिर्फ एक बार हुए हैं और हो चुके हैं। अब दुबारा नहीं हो सकते। जीसस क्राइस्ट ने कहा, मैं खुद कह रहा हूं कि मैं जीसस क्राइस्ट हूं। तुम नहीं मानते? उन्होंने कहा, कहां लिखा है बाइबिल में कि तुम दुबारा आओगे, और इस तारीखों में आओगे। किस शास्त्र में लिखा है, तुम्हारे आने की खबर, जरूर कोई धोखेबाज आदमी मालूम होता है। जीसस क्राइस्ट तो मन में बहुत घबड़ाने लगे। यह तो वही की वही बातें हैं, जो अठारह सौ वर्ष पहले उनसे लोगों ने कहीं। लेकिन तब तो पुरोहित दूसरों के थे, मंदिर दूसरों के थे, शास्त्र दूसरों के थे। अब तो पुरोहित मेरे हैं, शास्त्र मेरे हैं, ये लोग मेरे हैं, ये भी मुझसे वही बातें कह रहे हैं! जीसस क्राइस्ट को पता नहीं था, जिंदा आदमी के साथ हमेशा वही बातें कही जाती हैं। और तभी चर्च का पादरी भीड़ लगी देख कर बाहर आ गया। लोगों ने जीसस क्राइस्ट को तो कोई आदर नहीं दिया, लेकिन झुक-झुक कर उस पादरी को वे नमस्कार करने लगे, जो जीसस क्राइस्ट का पादरी है, जो उनका क्रास अपने गले पर लटकाए हुए है। लोग झुक-झुक कर नमस्कार करने लगे। जीसस को बड़ी हैरानी हुई कि मैं स्वयं मौजूद हूं

CS CamScanner

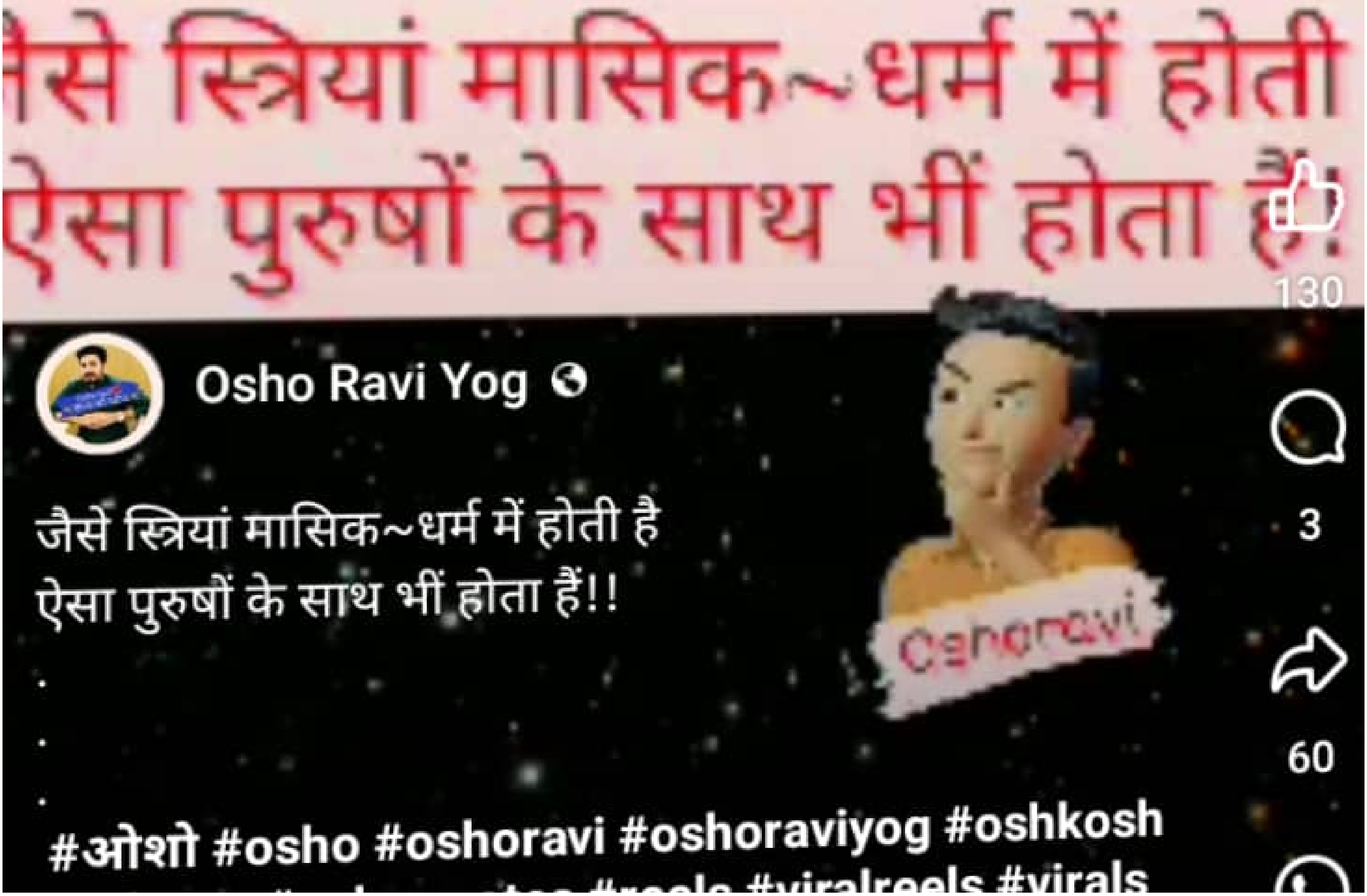

जैसे स्त्रियां मासिक~धर्म में होती
ऐसा पुरुषों के साथ भीं होता है!
130
Osho Ravi Yog
जैसे स्त्रियां मासिक~धर्म में होती है
ऐसा पुरुषों के साथ भीं होता हैं!!
Oshoravi
3
60
#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #oshkosh


CamScanner

CS CamScanner

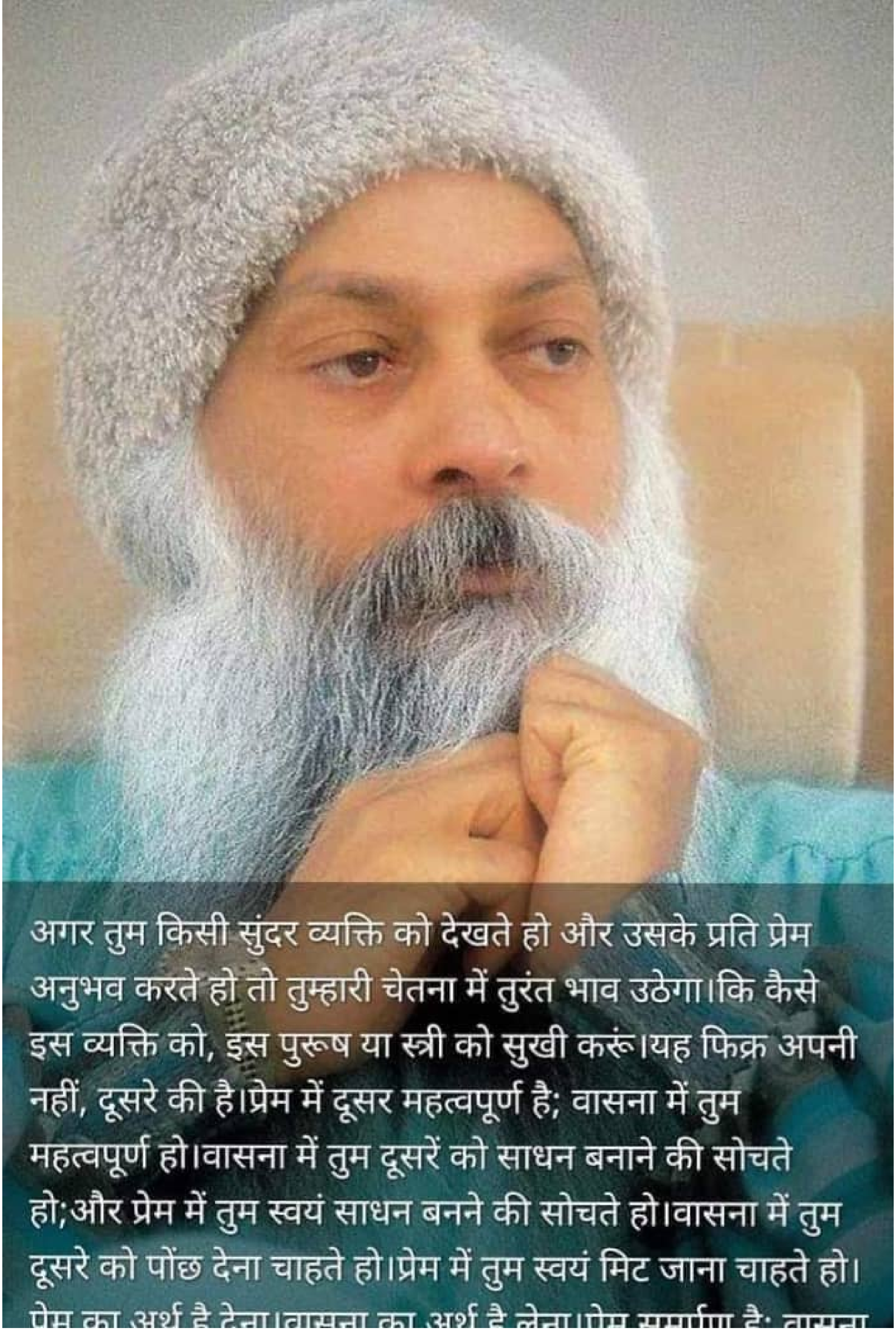
अगर तुम किसी सुंदर व्यक्ति को देखते हो और उसके प्रति प्रेम
अनुभव करते हो तो तुम्हारी चेतना में तुरंत भाव उठेगा।कि कैसे
इस व्यक्ति को, इस पुरूष या स्त्री को सुखी करूं।यह फिक्र अपनी
नहीं, दूसरे की है।प्रेम में दूसर महत्वपूर्ण है; वासना में तुम
महत्वपूर्ण हो।वासना में तुम दूसरें को साधन बनाने की सोचते
हो;और प्रेम में तुम स्वयं साधन बनने की सोचते हो।वासना में तुम
दूसरे को पोंछ देना चाहते हो।प्रेम में तुम स्वयं मिट जाना चाहते हो।

CamScanner

CamScanner

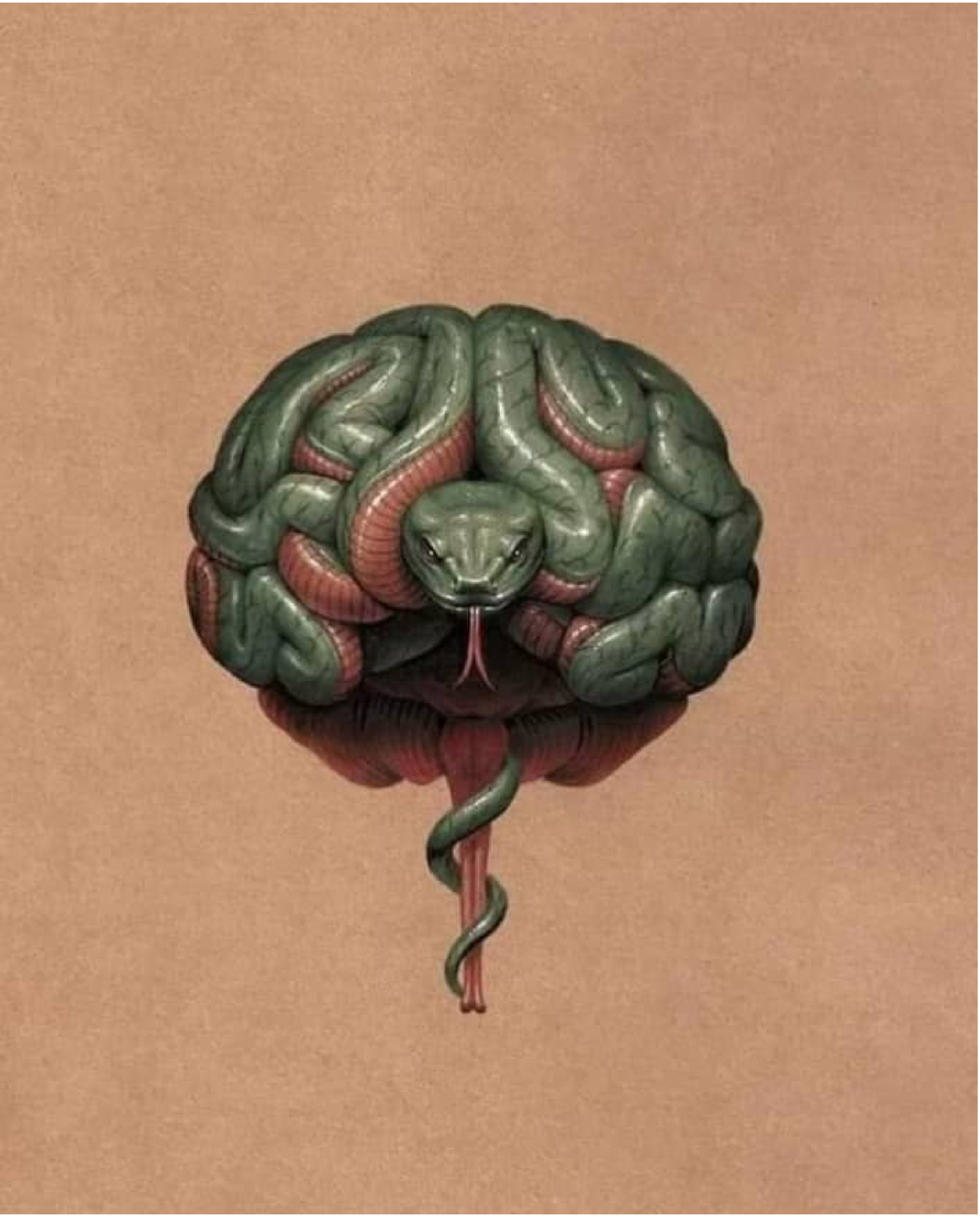

CamScanner

CamScanner

CamScanner

10:17 am 95%

की और चला। मार्ग में फकीर ने उससे कहा,कुछ बाते पहले से ही तय कर लेना आवश्यक है,त कि बादशाह के सामने झंझट ना हो। वह बादशाह ऐसा है कि उसे जो चीज पसन्द आ जाए फिर वह उसे किसी भी मूल्य पर छोड़ता नहीं। इसीलिए यह भी जान लेना जरुरि की क्या तुम उस चीज को बेचने के लिए राजी भी हो या नही?

वह युवक बोला कौनसा खजाना? कौनसी चीजे? फकिर ने कहा जैसे कि तुम्हारी आंखे। इनका क्या मूल्य लोगे? मैं पचास हजार तक बादशाह से दिलवा सकता हूँ। क्या यह रकम पर्याप्त नही है? या जैसे तुम्हारा ह्रदय,मस्तिष्क इसके तो एक एक लाख तक मिल सकते है। वह युवक हैरान हुआ और समझा की फकीर पागल है। और बोला,की क्या आप पागल हो गए है?आंखे,ह्रदय,मस्तिक्ष यह आप क्या कह रहे हो? मैं इन्हें किसी भी मूल्य पर नही बेच सकता। और मैं ही क्यों कोई भी इसे नही बेच सकता। फकीर हंसने लगा और बोला"मैं पागल हुँ या तू?" जब तेरे पास इतनी बहुमूल्य चीजे है। जिसे कोई लाखो में भी नही बेच सकता। तो झूठमूठ निर्धन क्यो बना बैठा है?इनका उपयोग कर। जो खजाना उपयोग में नही आता वह भरा भी खाली है,और जो उपयोग में आता है वह खाली भी हो तो भर जाता है। परमात्मा खजाने
देताहै-अकूत
खजाने देता है, लेकिन उसे
खोजना और खोदना स्वयं को ही पड़ता है। जीवन से बड़ी कोई सम्पदा नही है। जो उसमे ही सम्पदा नही देखता वह सम्पदा को और कहा पा सकता है?

रात्रि आधी से ज्यादा बित चूकी थी। मैं उठा और मैने उस युवक से कहा"जाओ और सो जाओ" सुबह वह युवक दूसरे ही व्यक्ति की भांति उठा। जीवन वैसा ही है, जैसा हम उसे बनाते है। वह मनुष्य की अपनी सृष्टि है । उसे हम मृत्यु भी बना सकते है,और अमृत भी। सब कुछ स्वयं के अतिरिक्त किसी और पर निर्भर नही है। फिर मृत्यु तो अपने आप आ जायेगी। उसे बुलावा देने की कोई आवश्यकता नहीं है। बुलाओ अमृत को। पुकारो परम् जीवन को। वह तो श्रम से,शक्ति से, साधना से,और संकल्प से ही मिल सकता है।

ओशो।

CamScanner

10:14 am 95%

नपुंसकता मान लिया है, वे भी परमात्मा को उपलब्ध नहीं होते। ऊर्जा का गहन प्रवाह चाहिए, उद्दाम वेग चाहिए, नदी जैसे बाढ़ में हो ऐसे वीर्य की संपदा चाहिए--तभी तुम ऊपर उठ सकोगे। जो नीचे तक नहीं जा सकता, वह ऊपर तक कैसे जाएगा, थोड़ा सोचो।

नीचे जाने में बहुत शक्ति की जरूरत नहीं है। जैसे पहाड़ से पत्थर को छोड़ दो वह अपने आप गिरता चला आता है जमीन की तरफ। कोई नीचे आने के लिए शक्ति लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। जो नीचे तक जाने में समर्थ नहीं है, नपुंसक है, वह ऊपर कैसे जा सकेगा? नीचे तक जाने में उसे कठिनाई मालूम पड़ती है, उतनी ऊर्जा भी नहीं है तो प्रगाढ़ और उद्दाम वेग, उत्तुंग लहरें कामवासना की, जिन पर सवार होकर ऊपर जाना है, वह कैसे जा सकेगा?

इसलिए अगर तुम मेरी बात समझ सको तो ब्रह्मचर्य बड़ी विपरीत बात है नपुंसकता से। परम वीर्य की उपलब्धि से ब्रह्मचर्य फलित होती है। काटने-दबाने से शरीर को मिटाने से कोई कहीं नहीं पहुंचता। शरीर को जितना तुम स्वस्थ, सम्यक, संतुलित शांत, ओजपूर्ण, ऊर्जा से भरा हुआ, परिपूर्ण बना सको, उतनी ही सुगमता होगी। उतने ही तुम ऊपर जा सकोगे।

जैसे मैंने कल तुमसे कहा कि जब भी कामवासना उठे, तब जोर से श्वास को बाहर फेंकना, पेट को भीतर जाने देना--मूलबंध लग जाएगा, मूलाधार सिकुड़ जाएगा। मूलाधार के ऊपर शून्य होने से ऊर्जा शून्य में उठ जाएगी। इसे अगर निरंतर करते रहे, अगर इसे तुमने एक सतत साधना बना ली--और इसका कोई पता किसी को नहीं चलता; तुम इसे बाजार में खड़े हुए कर सकते हो, किसी को पता भी नहीं चलेगा; तुम दुकान पर बैठे हुए कर सकते हो, किसी को पता भी न चलेगा।

अगर एक व्यक्ति दिन में कम से कम तीन सौ बार, क्षण भर को भी मूलबंध लगा ले, कुछ ही महीनों के बाद पाएगा, कामवासना हो गई। कामऊर्जा रह गई, वासना तिरोहित हो गई। और तीन सौ बार करना बहुत कठिन नहीं है। यह मैं सुगमतम मार्ग कह रहा हूं, ब्रह्मचर्य की उपलब्धि का हो सकता है।

कहै कबीर दीवाना-(ओशो) प्रवचन--06

जोगी जग थैं न्यारा—(प्रवचन—छठवां)

CamScanner

**Naye bharat ke khoj**
5h ·

*तुमने कभी सुना है कि कोई नपुंसक आदमी ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध हुआ हो?*

और जो बात सच है शरीर के संबंध में, उससे भी ज्यादा सच वही बात है मन के संबंध में।
तुमने कभी सुना है कि कोई नपुंसक आदमी ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध हुआ हो? मनुष्य जाति का इतिहास लंबा है। कम से कम हजार साल का तो बिलकुल सुनिश्चित ज्ञात है। इन पांच हजारों सालों में एक भी इंपोटेंट, नपुंसक आदमी परमात्मा को उपलब्ध नहीं हुआ। इसका क्या अर्थ है, काम और वीर्य ऊर्जा परमात्मा की उपलब्धि में अनिवार्य है। उसके बिना नहीं हो सकेगा?
इसलिए नपुंसक से ज्यादा दीन कोई आदमी नहीं है। उसकी दीनता इतनी ही नहीं है कि वह संभोग न कर सकेगा, उसकी गहरी दीनता यह है कि समाधि को उपलब्ध न हो सकेगा। लेकिन सौभाग्य की बात है कि नपुंसक साधारणतया होते ही हनीं। अगर हजार आदमियों को खयाल हो कि वे नपुंसक हैं तो उनमें से सिर्फ एक नपुंसक होता है, बाकी को सिर्फ खयाल होता है, वहम होता है।
मगर फिर भी नपुंसक होते हैं और वे उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। ऊर्जा ही नहीं है जिसके सहारे यात्रा हो सके। कीचड़ ही नहीं है, कमल कैसे पैदा हो? दीया ही नहीं है, ज्योति कहां टिके, कहां ठहरे, कहां आवास करे, कहां घर बनाएं?
और मैं तुमसे कहता हूं कि जिन लोगों ने ब्रह्मचर्य को एक तरह की नपुंसकता मान लिया है, वे भी परमात्मा को उपलब्ध नहीं होते। ऊर्जा का गहन प्रवाह चाहिए, उद्दाम वेग चाहिए, नदी जैसे बाढ़ में हो ऐसे वीर्य की संपदा चाहिए--तभी तुम ऊपर उठ सकोगे। जो नीचे तक नहीं जा सकता, वह ऊपर तक कैसे जाएगा, थोड़ा सोचो।
नीचे जाने में बहुत शक्ति की जरूरत नहीं है। जैसे पहाड़ से पत्थर को छोड़ दो वह अपने आप गिरता चला आता है जमीन की तरफ। कोई नीचे आने के लिए शक्ति लगाने की जरूरत नहीं पड़ती। जो नीचे तक जाने में समर्थ नहीं है, नपुंसक है, वह ऊपर कैसे जा सकेगा? नीचे तक जाने में उसे कठिनाई मालूम पड़ती है, उतनी ऊर्जा भी नहीं है तो

CamScanner

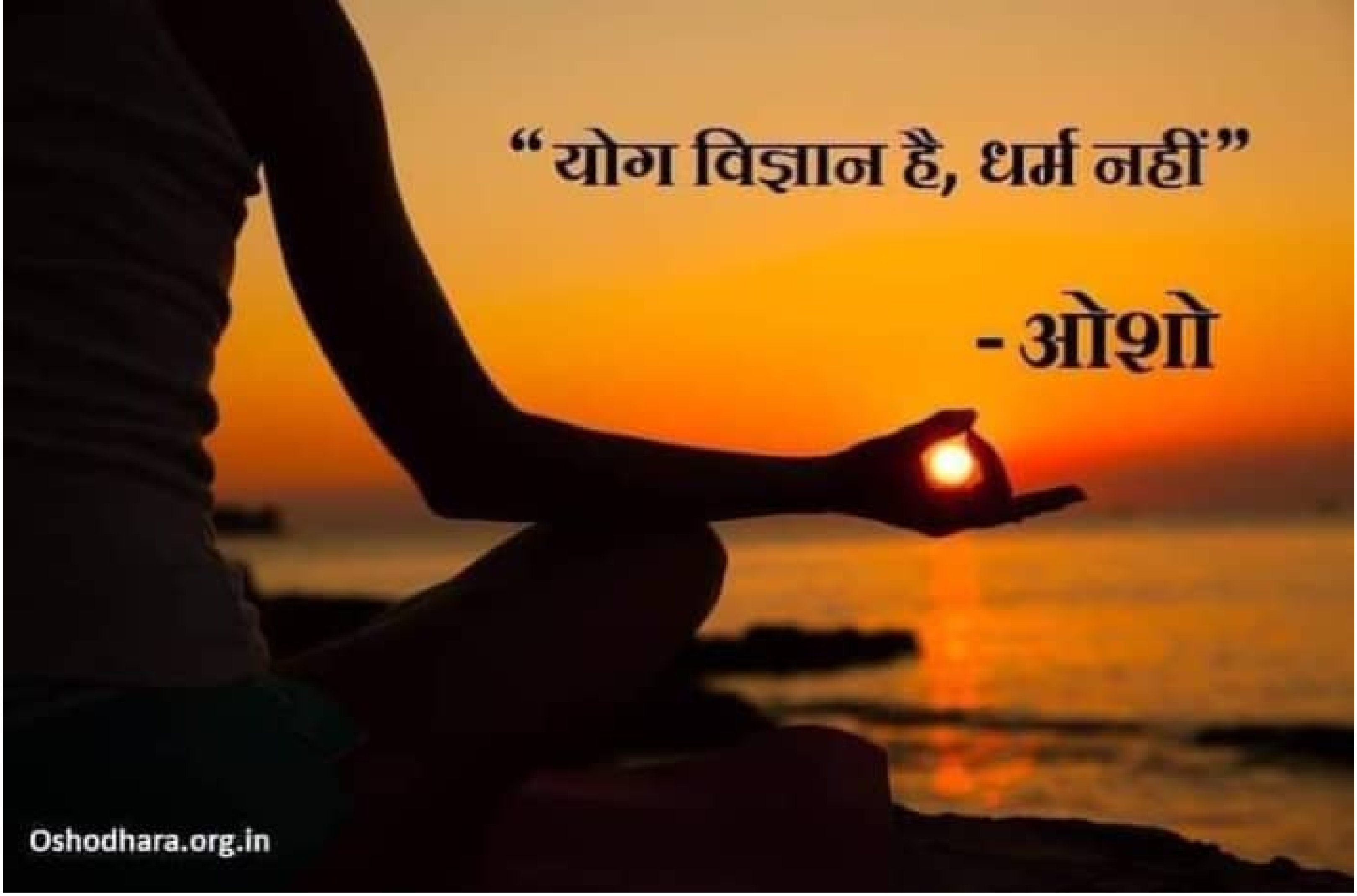


CamScanner

Doha Glassdoor | Doha Translated into English
अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारी निहारी।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि॥
संत कबीर
Doha Glassdoor

CamScanner

जिसका समय आ गया वह चला गया,

तुम्हारी निन्दा, प्रसन्नता से कुछ फर्क नहीं पड़ता 🙏

CS CamScanner

10:12 am 96%

समाधि में पहुंचने में उतनी ही मुश्किल अनुभव करता है। अगर कभी हम अकेले छूट भी जाएं सौभाग्य से, तो जल्दी से अपने को भर लेते हैं। रेडियो खोल लेंगे, अखबार पढ़ने लगेंगे--कुछ न कुछ करने लगेंगे--सिगरेट पीने लगेंगे। ये सिर्फ अकेलेपन से बचने के उपाय हैं। यहां तक कि लोग अकेले हैं, बैठ कर ताश खेलने लगेंगे, अकेला ही आदमी दोनों तरफ से बाजियां चलने लगेगा, दूसरे को कल्पित कर लेगा कि कोई है।
अकेले होने से हम इतने भयभीत हैं, तो फिर हम समाधि में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। और अकेले होने का सौंदर्य अदभुत है। मेरा मतलब यह नहीं है कि कोई समाज से भाग जाए। समाज से जो लोग भाग जाते हैं, वे भी अकेले नहीं हैं। क्योंकि जिसे वे छोड़ कर भागते हैं, वह उनके मन में साथ चला जाता है। वे जंगल-पहाड़ पर बैठ कर आपकी ही याद कर रहे हैं। क्योंकि अगर आपको वे भूल सकते, तो यहीं भूल सकते थे जंगल-पहाड़ जाने की कोई भी जरूरत न थी।

अकेले होने का मतलब भाग जाना नहीं है। अकेले होने का मतलब इस सत्य को जानना कि मैं अकेला हूं, अकेला आता हूं, अकेला हूं, अकेला जाऊंगा। साथी हैं, संगी हैं--रास्ते पर राहगीर की तरह मिले हुए मित्र हैं, साथ थोड़ी देर हम हैं, और विदा हो जाएंगे। साथ होना बुरा नहीं है। लेकिन इतना साथ हो जाना कि अपने होने का बोध ही मिट जाए, महंगा है। साथ जरूर हों--पत्नी हों, पति हों, बेटे हों, मित्र हों, समाज हो--यह सवाल नहीं है; लेकिन सबके बीच निरंतर अपने को अकेला जाना जा सके, पहचाना जा सके, तो फिर भीड़ में भी अकेले हो सकते हैं। और अगर अकेले होने की कला मालूम न हो, तो जंगल में भी अकेले नहीं हो सकते हैं, वहां भी भीड़ मौजूद रहेगी।

यह अकेले होने का भाव जितना गहरा होगा उतना मैं अपने निकट आऊंगा। जब तक मैं दूसरे को खोज रहा हूं तब तक अपने से दूर जा रहा हूं। तो समाधि का दूसरा चरण, मृत्यु का भी दूसरा चरण है--अकेलेपन का बोध।

🧘‍♀️❣️🦋 ओशो 🦋❣️🧘‍♀️
आठो पहर यूं झूमिये-
(प्रवचन-07)

CamScanner

10:11 am 96%

मृत्यु का भी दूसरा अनुभव जो है वह अकेले का अनुभव है। इसलिए मृत्यु हमें बहुत डराती है। क्योंकि जिंदगी भर हम अकेले न थे, और मृत्यु अकेला कर देगी। असल में मृत्यु का डर नहीं है, डर है अकेले होने का।

अभी भी अकेले होकर हम डरते हैं। कोई साथ हो तो डर नहीं है। और मजा यह है कि दो आदमी साथ हैं, वे दोनों अकेले में डरते हैं, दोनों मिल जाएंगे तो डर दुगुना होगा कि आधा होगा? दो आदमी, दोनों अकेले में डरते हैं, लेकिन दोनों मिल कर सोचते हैं कि दूसरा है, डर नहीं है। दूसरा भी सोचता है: दूसरा है, डर नहीं है।

डर सिर्फ दुगुना हो गया है। लेकिन एक-दूसरे के साथ हम सोच लेते हैं। आदमी अंधेरी गली में से निकलता है तो डरता है, तो जोर से गीत गाने लगता है, भगवान का नाम लेने लगता है। अपनी ही आवाज सुन कर भी ऐसा लगता है कोई है। अकेले का भय है। लेकिन जो अकेले होने को राजी नहीं,टोटलीअलोन, वह समाधि में नहीं जा सकता। क्योंकि समाधि में कौन साथ देगा? पत्नी कैसे समाधि में साथ देगी? बेटा कैसे साथ जाएगा?पति कैसे साथ जाएगा? गुरु कैसे साथ जाएगा? दोस्त कैसे साथ जाएगा? समाधि में तो कोई भी नहीं जाएगा। समाधि में तो बिलकुल अकेले जाना होगा।

इसलिए जो जितना एक्सट्रोवर्ट है, जो अपने से बाहर के लोगों से जितना जोड़े रखता है अपने को, कभी अकेला नहीं होता, वह आदमी समाधि में पहुंचने में उतनी ही मुश्किल अनुभव करता है। अगर कभी हम अकेले छूट भी जाएं सौभाग्य से, तो जल्दी से अपने को भर लेते हैं। रेडियो खोल लेंगे, अखबार पढ़ने लगेंगे--कुछ न कुछ करने लगेंगे--सिगरेट पीने लगेंगे। ये सिर्फ अकेलेपन से बचने के उपाय हैं। यहां तक कि लोग अकेले हैं, बैठ कर ताश खेलने लगेंगे, अकेला ही आदमी दोनों तरफ से बाजियां चलने लगेगा, दूसरे को कल्पित कर लेगा कि कोई है।
अकेले होने से हम इतने भयभीत हैं, तो फिर हम समाधि में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। और अकेले होने का सौंदर्य अदभुत है। मेरा मतलब यह नहीं है कि कोई समाज से भाग जाए। समाज से जो लोग भाग जाते हैं, वे भी अकेले नहीं हैं। क्योंकि जिसे वे छोड़ कर भागते हैं, वह उनके मन में साथ चला जाता है। वे जंगल-पहाड़ पर बैठ कर आपकी ही याद कर

CamScanner

Osho Osho
11h ·

समाधि की पहली सीढ़ी है अंधकार का बोध। जब कोई मरता है तो गहन अंधकार में चारों ओर से घिर जाता है। मृत्यु के पहले चरण पर अंधकार घेर लेता है। वह सारा जगत जो दिखाई पड़ता था, खो जाता है। वे सब प्रियजन, मित्र, अपने, पराये, वे जो चारों तरफ थे, सब खो जाते हैं और एक अंधकार का पर्दा चारों तरफ से घेर लेता है। लेकिन हम अंधकार से इतना डरते हैं कि उस डर के कारण बेहोश हो जाते हैं। काश हम अंधकार को भी प्रेम कर पाएं, तो फिर मृत्यु में बेहोश होने की जरूरत न रह जाए। और समाधि में जिन्हें जाना है उन्हें अंधकार को प्रेम करना सीखना पड़े, अंधकार को आलिंगन करना सीखना पड़े, अंधकार में डूबने की तैयारी दिखानी पड़े।

अब दूसरी बात समझ लेनी चाहिए। मृत्यु का या समाधि का दूसरा चरण है: एकाकीपन का बोध, मैं अकेला हूं। मृत्यु के दूसरे चरण में अंधकार के घिरते ही पता चलता है कि मैं अकेला हूं। कोई भी मेरा नहीं, कोई भी संगी नहीं, कोई भी साथी नहीं। लेकिन जीवन भर हम इसी ढंग से जीते हैं कि लगता है--सब हैं मेरे--मित्र हैं, प्रियजन हैं, अपने हैं। अकेला हूं, इसका कभी खयाल भी नहीं आता। अगर खयाल आए भी तो जल्दी किसी को अपना बनाने निकल पड़ता हूं, ताकि अकेलेपन का खयाल न आए। बहुत कम लोग, बहुत कम क्षणों पर, अकेले होने का अनुभव कर पाते हैं। और जो मनुष्य अकेले होने का अनुभव नहीं कर पाता, वह अपना अनुभव भी नहीं कर पाएगा। जो व्यक्ति निरंतर ऐसा ही सोचता है कि दूसरों से जुड़ा हूं, दूसरों से जुड़ा हूं--दूसरे हैं, संगी हैं, साथी हैं--उसकी नजर कभी अपने पर नहीं जा पाती है।

मृत्यु का भी दूसरा अनुभव जो है वह अकेले का अनुभव है। इसलिए मृत्यु हमें बहुत डराती है। क्योंकि जिंदगी भर हम अकेले न थे, और मृत्यु अकेला कर देगी। असल में मृत्यु का डर नहीं है, डर है अकेले होने का।

अभी भी अकेले होकर हम डरते हैं। कोई साथ हो तो डर नहीं है। और मजा यह है कि दो आदमी साथ हैं, वे दोनों अकेले में डरते हैं, दोनों मिल जाएंगे तो डर दुगुना होगा कि आधा होगा? दो आदमी, दोनों अकेले में

CamScanner

CamScanner

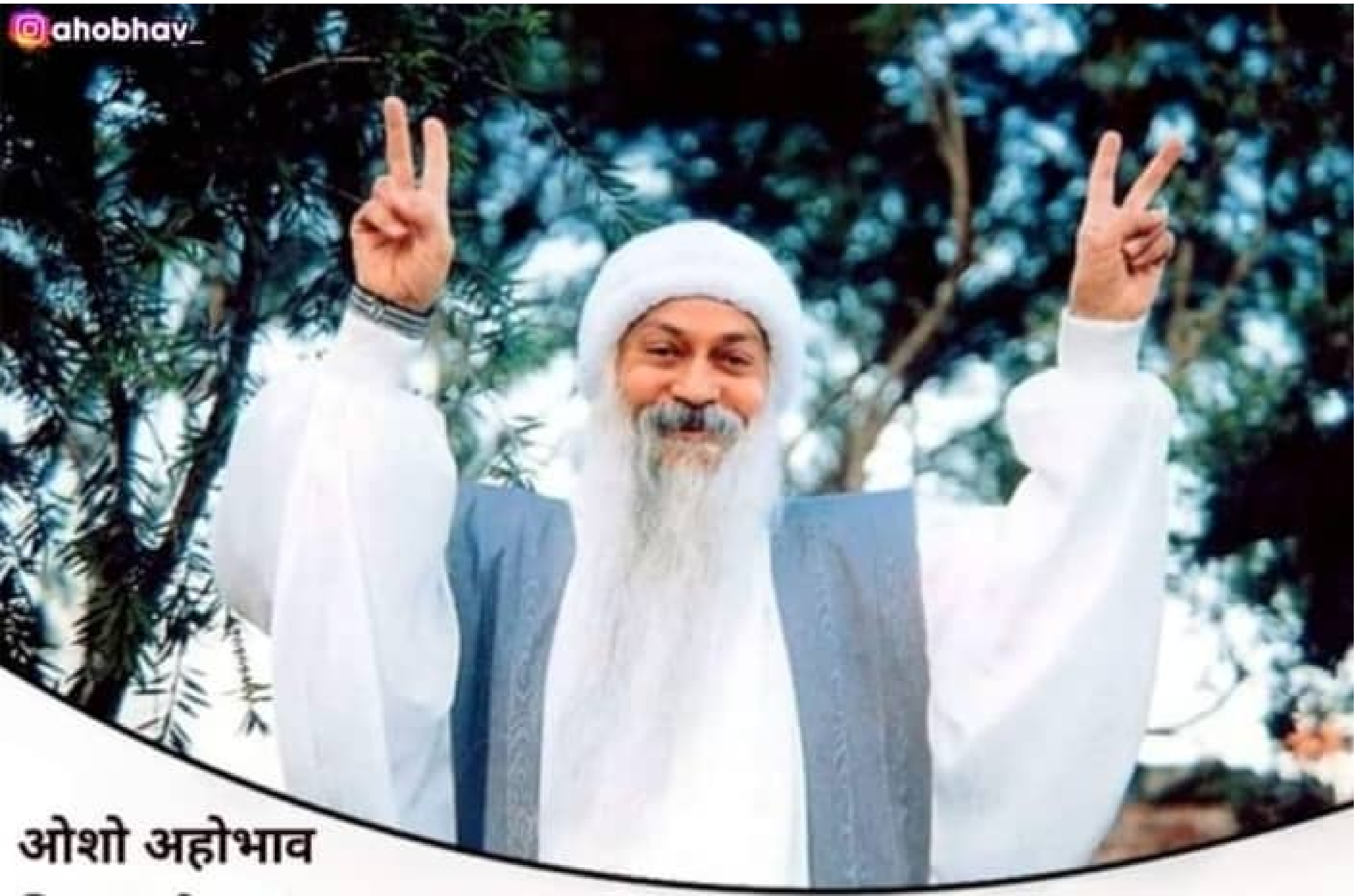


ओशो अहोभाव
विज्ञान भैरव तंत्र

हर आदमी दूसरे आदमी जैसा है। जो वासनाएं तुम्हारे भीतर चक्कर लगा रही है वे ही दूसरों के भीतर घूम रही है। लेकिन तुम अपनी कामवासना को प्रेम कहते हो और दूसरों के प्रेम को कामवासना कहते हो।

CamScanner

10:43 pm 28%

Happy Diwali to All
Connect with the people who light up your life on Facebook. Go to Facebook. Facebook
Visit Site

Table of Contents

1. 1. The Prophet by Kahlil Gibran
2. 2. Thus Spoke Zarathustra by Friedrich Nietzsche
3. 3. Brothers Karamazov by Fyodor Dostoyevsky
4. 4. The Book of Miradad by Mikhail Naimy
5. 5. Siddhartha by Hermann Hesse
6. 6. Jonathan Livingston Seagull by Richard Bach
7. 7. Alice in Wonderland by Jane Carruth (Adapted By)
8. 8. The Rubiyat by Omar Khayyam
9. 9. Tao Te Ching (or The Book of the Way) by Lao Tzu
10. 10. Gitanjali by Rabindranath Tagore
11. 11. Mulla Nasruddin by Michael Günther (Editor)
12. 12. Meetings With Remarkable Men by G.I. Gurdjieff
13. 13. Zorba the Greek by Nikos Kazantzakis
14. 14. The Dhammapada by Anonymous
15. 15. The First and Last Freedom by Jiddu Krishnamurti
16. More Titles That Were Very Close To Osho's Heart-

# 1. The Prophet by

CamScanner

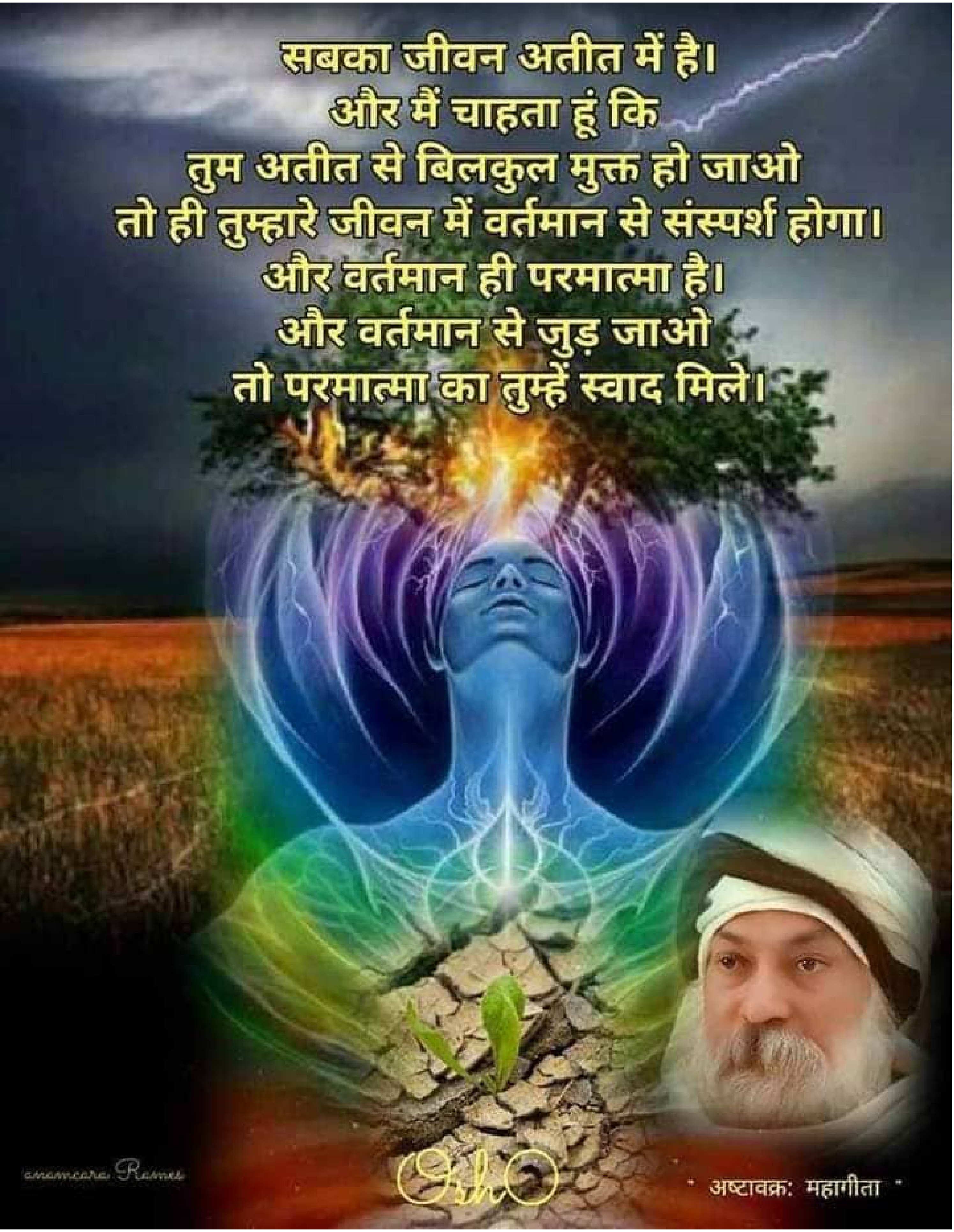


CS CamScanner

12:28 pm 86%

षोड़स भानु हंस को रूपा, बीना सत धुन बजै अनूपा।
हंसा करत चंवर सिर भूपा, सत्त पुरुष दरबारा है ॥25॥

कोटिन भानु उदय जो होई, एते ही पुनि चंद्र लखोई।
पुरुष रोम सम एक न होई, ऐसा पुरुष दीदारा है ॥26॥

आगे अलख लोक है भाई, अलख पुरुष की तहं ठकुराई।
अरबन सूर रोम सम नाहीं, ऐसा अलख निहारा है ॥27॥

ता पर अगम महल इक साजा, अगम पुरुष ताहि को
राजा।

खरबन सूर रोम इक लाजा, ऐसा अगम अपारा है ॥28॥

ता पर अकह लोक हैं भाई, पुरुष अनामी तहां रहाई।
जो पहुँचा जानेगा वाही, कहन सुनन से न्यारा है ॥29॥

काया भेद किया निर्बारा, यह सब रचना पिंड मंझारा।
माया अवगति जाल पसारा, सो कारीगर भारा है ॥30॥

आदि माया कीन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिंड दिखाई।
अवगति रचन रची अंड माहीं, ता का प्रतिबिंब डारा है ॥
31॥

सब्द बिहंगम चाल हमारी, कहैं कबीर सतगुर दइ तारी।
खुले कपाट सब्द झुनकारी, पिंड अंड के पार सो देस
हमारा है ॥32॥

CamScanner

12:28 pm 86%

आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि अन्हाई ।
हंसन मिल हंसा होइ जाई, मिलै जो अमी अहारा है ॥
17॥

किंगरी सारंग बजै सितारा, अच्छर ब्रह्म सुन्न दरबारा ।
द्वादस भानु हंस उजियारा, खट दल कंवल मंझार सब्द
रारंकारा है ॥18॥

महासुन्न सिंध बिषमी घाटी, बिन सतगुर पावै नाही बाटी ।
ब्याघर सिंह सरप बहु काटी, तहं सहज अचिंत पसारा है
॥19॥

अष्ट दल कंवल पारब्रह्म भाई, दाहिने द्वादस अचिंत रहाई
।
बायें दस दल सहज समाई, यूं कंवलन निरवारा है ॥20॥

पांच ब्रह्म पांचों अंड बीनो, पांच ब्रह्म निःअक्षर चीन्हो ।
चार मुकाम गुप्त तहं कीन्हो, जा मध बंदीवान पुरुष
दरबारा है ॥21॥

दो पर्बत के संध निहारो, भंवर गुफा ते संत पुकारो ।
हंसा करते केल अपारो, तहां गुरन दरबारा है ॥22॥

सहस अठासी दीप रचाये, हीरे पन्ने महल जड़ाये ।
मुरली बजत अखंड सदाये, तहं सोहं झुनकारा है ॥23॥

सोहं हद्द तजी जब भाई, सत्त लोक की हद पुनि आई ।
उठत सुगंध महा अधिकाई, जा को वार न पारा है ॥24॥

CamScanner

12:28 pm 86%

आंख कान मुख बंद कराओ अनहद झिंगा सब्द सुनाओ ।
दोनों तिल इकतार मिलाओ, तब देखो गुलजारा है ॥10॥

चंद सूर एकै घर लाओ, सुषमन सेती ध्यान लगाओ ।
तिरबेनी के संघ समाओ, भोर उतर चल पारा है ॥11॥

घंटा संख सुनो धुन दोई सहस कँवल दल जगमग होई ।
ता मध करता निरखो सोई, बंकनाल धस पारा है ॥12॥

डाकिन साकिनी बहु किलकारें, जम किंकर धर्म दूत हकारें ।
सत्तनाम सुन भागें सारे, जब सतगुरु नाम उचारा है ॥13॥

गगन मंडल विच उर्धमुख कुइआ, गुरुमुख साधू भर भर पीया ।
निगुरे प्यास मरे बिन कीया, जा के हिये अंधियारा है ॥14॥

त्रिकुटी महल में विद्या सारा, घनहर गरजें बजे नगारा ।
लाला बरन सूरज उजियारा, चतुर कंवल मंझार सब्द ओंकारा है ॥15॥

साध सोई जिन यह गढ़ लीना, नौ दरवाजे परगट चीन्हा ।
दसवां खोल जाय जिन दीन्हा, जहां कुंफुल रहा मारा है ॥16॥

आगे सेत सुन्न है भाई, मानसरोवर पैठि अन्हाई ।

CamScanner

12:27 pm 86%

धोती नेती वस्ती पाओ, आसन पद्म जुगत से लाओ ।
कुंभक कर रेचक करवाओ, पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है ॥2॥

मूल कँवल दल चतुर बखानो, कलिंग जाप लाल रंग मानो ।
देव गनेस तह रोपा थानो, रिध सिध चँवर ढुलारा है ॥3॥

स्वाद चक्र षट्दल बिस्तारो, ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो ।
उलटि नागिनी का सिर मारो, तहां शब्द ओंकारा है ॥4॥

नाभी अष्टकँवल दल साजा, सेत सिंहासन बिस्नु बिराजा ।
हिरिंग जाप तासु मुख गाजा, लछमी सिव आधारा है ॥5॥

द्वादस कँवल हृदय के माहीं, जंग गौर सिव ध्यान लगाई ।
सोहं शब्द तहां धुन छाई, गन करै जैजैकारा है ॥6॥

षोड़श दल कँवल कंठ के माहीं, तेहि मध बसे अविद्या बाई ।
हरि हर ब्रह्मा चँवर ढुराई, जहं शारिंग नाम उचारा है ॥7॥

ता पर कंज कँवल है भाई, बग भौरा दुह रूप लखाई ।
निज मन करत तहां ठुकराई, सौ नैनन पिछवारा है ॥8॥

कंवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा ।
सतसंग कर सतगुरु सिर धारा, वह सतनाम उचारा है ॥9॥

CamScanner

12:27 pm 86%

NIRGUN | KABIR DAS

# कर नैनो दीदार महल में प्यारा है

By ManageLife Solution Team • August 20, 2022

***ये तो सर्वविदित है की कबीर दास जी के हर एक शब्द में कुछ न कुछ ज्ञान की बातें छुपी रहती है। इस लिए उनके हर पद्य रहस्यवाद से ओत-प्रोत होता है। ये रचना कबीर दास जी द्वारा समझाई गई ब्रह्माण्ड की एक अनोखी रचना हैं, जो की मनुष्य रूपी इस श्रष्टी में बसी हैं। हमारा शरीर इस श्रष्टी की प्रतिक हैं। सब कुछ यही हैं बाहर कही जाने की जरुरत नही हैं। समझना हैं तो पहले खुद को समझो। साहिब जी ने अपनी इन पंक्तियों में श्रष्टी का पूर्ण रूप से वर्णन किया हैं। अंड, पिंड, ब्रह्माण्ड से लेकर सचखंड तक का पूरा बखान किया हैं, जो की हमारे अन्दर से दिखते हैं और हम उन्हें बाहर खोजते फिरते हैं। और तो और अलख लोक और अगम लोक के बारे में भी यहाँ बताया गया हैं।***

कर नैनो दीदार महल में प्यारा है ॥

काम क्रोध मद लोभ बिसारो, सील संतोष छिमा सत धारो
।
मद्य मांस मिथ्या तजि डारो, हो ज्ञान घोड़े असवार, भरम से न्यारा है ॥1॥

CamScanner

12:25 pm 86%

**अन्य मुद्राएं : (1)**सुरभी मुद्रा, (2)ब्रह्ममुद्रा, (3)अभयमुद्रा, (4)भूमि मुद्रा, (5)भूमि स्पर्शमुद्रा, (6)धर्मचक्रमुद्रा, (7)वज्रमुद्रा, (8)वितर्कमुद्रा, (9)जनाना मुद्रा, (10)कर्णमुद्रा, (11)शरणागतमुद्रा, (12)ध्यान मुद्रा, (13)सुची मुद्रा,(14)ओम मुद्रा, (15)जनाना और चीन मुद्रा, (16)अंगुलियां मुद्रा (17)महात्रिक मुद्रा, (18)कुबेर मुद्रा, (19)चीन मुद्रा, (20)वरद मुद्रा, (21)मकर मुद्रा, (22)शंख मुद्रा, (23)रुद्र मुद्रा, (24)पुष्पपूत मुद्रा (25)वज्र मुद्रा, (26)हास्य बुद्धा मुद्रा, (27) प्रणाम मुद्रा, (28)गणेश मुद्रा (29)मातंगी मुद्रा, (30)गरुड़ मुद्रा, (31)कुंडलिनी मुद्रा, (32)शिव लिंग मुद्रा, (33)ब्रह्मा मुद्रा, (34)मुकुल मुद्रा (35)महर्षि मुद्रा, (36)योनी मुद्रा, (37)पुशन मुद्रा, (38)कालेश्वर मुद्रा, (39)गूढ़ मुद्रा, (40)बतख मुद्रा, (40)कमल मुद्रा, (41) योग मुद्रा, (42)विषहरण मुद्रा, (43)आकाश मुद्रा, (44)हृदय मुद्रा, (45)जाल मुद्रा, (46) पाचन मुद्रा, (47). शाम्भवी मुद्रा (48) अश्विनी मुद्रा आदि।

**मुद्राओं के लाभ :** कुंडलिनी या ऊर्जा स्रोत को जाग्रत करने के लिए मुद्रओं का अभ्यास सहायक सिद्धि होता है। कुछ मुद्रओं के अभ्यास से आरोग्य और दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है। इससे योगानुसार अष्ट सिद्धियों और नौ निधियों की प्राप्ति संभव है। यह संपूर्ण योग का सार स्वरूप है।

**-अनिरुद्ध जोशी 'शतायु'**

संबंधित जानकारी

**मुख्यत: 5 बंध : 1.**मूलबंध, 2.उड्डीयानबंध, 3.जालंधर बंध, 4.बंधत्रय और 5.महाबंध।

**मुख्यत: 6 आसन मुद्राएं हैं- 1.**व्रक्त मुद्रा, 2.अश्विनी मुद्रा, 3.महामुद्रा, 4.योग मुद्रा, 5.विपरीत करणी मुद्रा, 6.शोभवनी मुद्रा। जगतगुरु रामानंद स्वामी पंच मुद्राओं को भी राजयोग का साधन मानते हैं, ये है- 1.चाचरी, 2.खेचरी, 3.भोचरी, 4.अगोचरी, 5.उन्न्युनी मुद्रा।

**मुख्यत: दस हस्त मुद्राएं :** उक्त के अलावा हस्त मुद्राओं में प्रमुख दस मुद्राओं का महत्व है जो निम्न है: -(1)ज्ञान मुद्रा, (2)पृथवि मुद्रा, (3)वरुण मुद्रा, (4)वायु मुद्रा, (5)शून्य मुद्रा, (6)सूर्य मुद्रा, (7) प्राण मुद्रा, (8) अपान मुद्रा, (9)अपान वायु मुद्रा, (10) लिंग मुद्रा।

**अन्य मुद्राएं : (1)**सुरभी मुद्रा, (2)ब्रह्ममुद्रा, (3)अभयमुद्रा, (4)भूमि मुद्रा, (5)भूमि स्पर्शमुद्रा, (6)धर्मचक्रमुद्रा, (7)वज्रमुद्रा, (8)वितर्कमुद्रा, (9)जनाना मुद्रा, (10)कर्णमुद्रा, (11)शरणागतमुद्रा, (12)ध्यान मुद्रा, (13)सुची मुद्रा,(14)ओम मुद्रा, (15)जनाना और चीन मुद्रा, (16)अंगुलियां मुद्रा (17)महात्रिक मुद्रा, (18)कुबेर मुद्रा, (19)चीन मुद्रा, (20)वरद मुद्रा, (21)मकर मुद्रा, (22)शंख मुद्रा, (23)रुद्र मुद्रा, (24)पुष्पपूत मुद्रा (25)वज्र मुद्रा, (26)हास्य बुद्धा मुद्रा, (27) प्रणाम मुद्रा, (28)गणेश मुद्रा (29)मातंगी मुद्रा, (30)गरुड़ मुद्रा,

12:25 pm 86%

FILE

**घेरंड ने 25 मुद्राओं एवं बंध का उपदेश दिया है और भी अनेक मुद्राओं का उल्लेख अन्य ग्रंथों में मिलता है। मुद्राओं के अभ्यास से गंभीर से गंभीर रोग भी समाप्त हो सकता है। मुद्राओं से सभी तरह के रोग और शोक मिटकर जीवन में शांति मिलती है।**

हठयोग प्रदीपिका में 10 मुद्राओं का उल्लेख कर उनके अभ्यास पर जोर दिया गया है। ये हैं- महामुद्रा महाबंधो महावेधश्च खेचरी। उड्यानं मूलबंधश्च बंधो जालंधराभिश्च:।। करणी विपरीताख्या वज्रोली शक्तिशालनम। इंद हि मुद्रादशकं जराभरणनाशनम।।

**अर्थात-** महामुद्रा, महाबंध, महावेधश्च, खेचरी, उड्डीयान बंध, मूलबंध, जालंधर बंध, विपरीत करणी, वज्रोली, शक्ति, चालन- ये दस मुद्राएं जराकरण को नष्ट करने वाली एवं दिव्य ऐश्वर्यों को प्रदान करने वाली हैं। अर्थात 4 बंध और 6 मुद्राएं हुईं, लेकिन इसके अलावा भी अन्य कई बंध और मुद्राओं का उल्लेख मिलता है।

इसके अलावा अलग-अलग ग्रंथों के अनुसार अलग-अलग मुद्राएं और बंध होते हैं। योगमुद्रा को कुछ योगाचार्यों ने 'मुद्रा' के और कुछ ने 'आसनों' के समूह में रखा है। दो मुद्राओं को विशेष रूप से कुंडलिनी जागरण में उपयोगी माना गया है- सांभवी मुद्रा, खेचरी मुद्रा।

**मुख्यत: 5 बंध : 1.**मूलबंध, 2.उड्डीयानबंध,

CamScanner

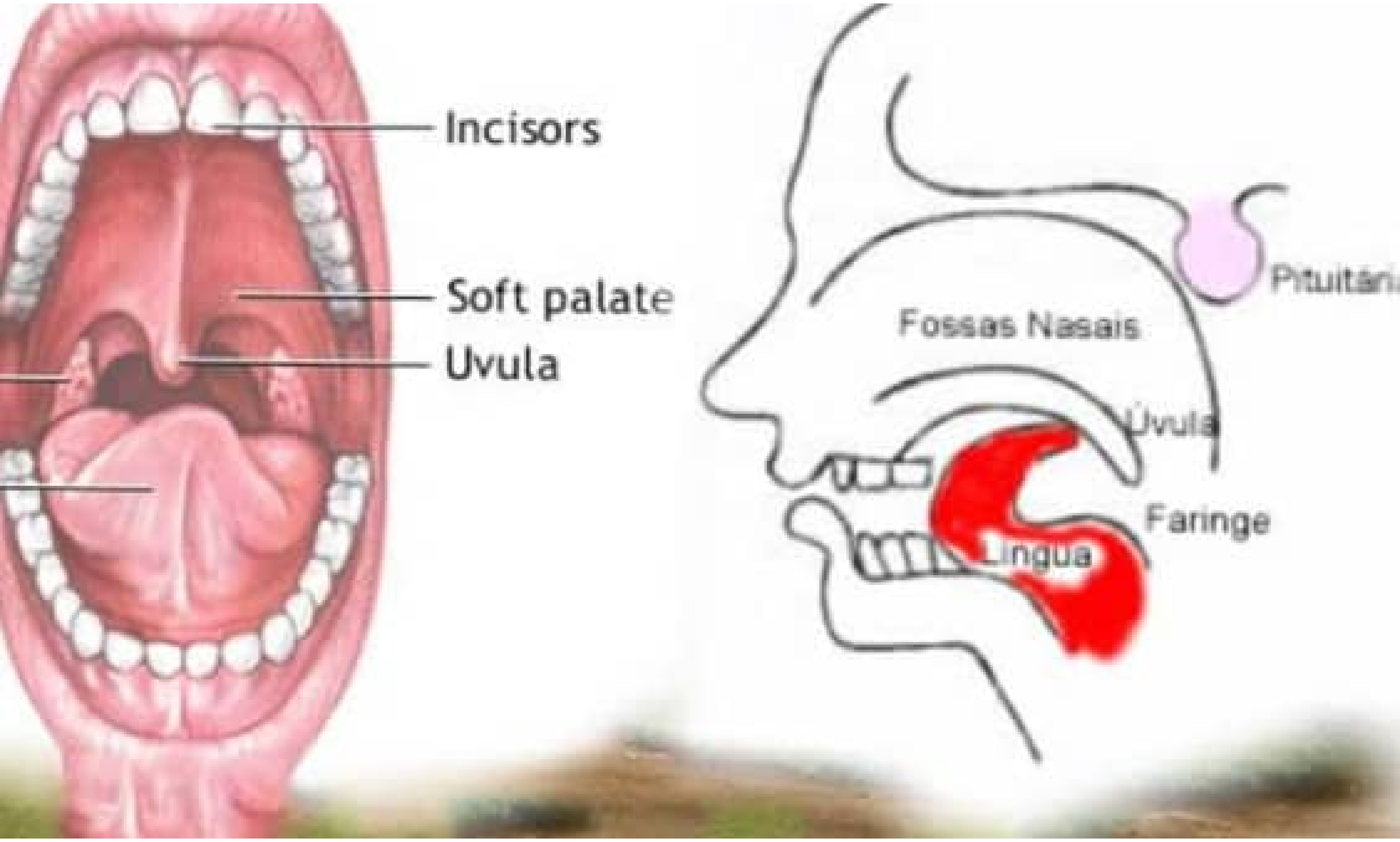
Incisors
Soft palate
Uvula
Fossas Nasais
Uvula
Faringe
Lingua

CamScanner

12:11 pm 4G 88%

है और अणिमा आदि सिद्धियों का अधिकारी बनता है।

धेरण्ड संहिता में खेचरी मुद्रा का प्रतिफल इस प्रकार बताया गया है-

न च मूर्च्छा क्षुधा तृष्णा नैव लस्यं प्रजायते। न च रोगो जरा मृत्युर्देव देह: स जायते॥

खेचरी मुद्रा की निष्णात देव देह को मूर्च्छा, क्षुधा, तृष्णा, आलस्य, रोग, जरा, मृत्यु का भय नहीं रहता।

लवण्यं च भवेद्गात्रे समाधि जयिते ध्रुवम। कपाल वक्त्र संयोगे रसना रस माप्नुयात-धेरण्ड

शरीर सौंदर्यवान बनता है। समाधि का आनन्द मिलता है। रसों की अनुभूति होती है। खेचरी मुद्रा का प्रकार श्रेयस्कर है।

ज्रामृत्युगदध्नो य: खेचरी वेत्ति भूतले। ग्रन्थतश्चार्थतश्चैव तदभ्यास प्रयोगत:॥ तं मुने सर्वभावेन गुरु गत्वा समाश्रयेत्-योगकुन्डल्युपनिषद

जो महापुरुष ग्रन्थ से, अर्थ से और अभ्यास प्रयोग से इस जरा मृत्यु व्याधि-निवारक खेचरी विद्या को जानने वाला है, उसी गुरु के पास सर्वभाव से आश्रय ग्रहण कर इस विद्या का अभ्यास करना चाहिए।

खेचरी मुद्रा से अनेकों शारीरिक, मानसिक, साँसारिक एवं आध्यात्मिक लाभों के उपलब्ध होने का शास्त्रों में वर्णन है। इससे सामान्य दीखने वाली इस महान् साधना का महत्त्व समझा जा सकता है। स्मरणीय इतना ही है कि इस मुद्रा के साथ साथ भाव सम्वेदनाओं की अनुभूति अधिकतम गहरी एवं श्रद्धा सिक्त होनी चाहिए।

**shri krishan modi**
2014-05-05 04:35:45
to know khechari vidya

Name [Your Name]

Email Address [Center email]

Comment [comment]

Security Image:

Submit

piritual | Life Management | Others
ायत्री शुरुआत कैसे करे | सभी समस्याओ का समाधान | अखंड ज्योति क्या है ?
मारी ऋषि परंपरा | रिश्तो में आनंद ऐसे पाये |
| सफलता के सूत्र |

CamScanner

12:11 pm 4G 88%

धृत, दूध, दही, द्राक्षारस, पीयूष, जल जैसे रसों की अनुभूति होती है।

अमृतास्वादनाछेहो योगिनो दिव्यतामियात्। जरारोगविनिर्मुक्तश्चिर जीवति भूतले-योग रसायनम्

भावनात्मक अमृतोपम स्वाद मिलने पर योगी के शरीर में दिव्यता आ जाती है और वह रोग तथा जीर्णता से मुक्त होकर दीर्घकाल तक जीवित रहता है।

एक योग सूत्र में खेचरी मुद्रा से अणिमादि सिद्धियों की प्राप्ति का उल्लेख है-

तालु मूलोर्ध्वभागे महज्ज्योति विद्यतें तद्दशनाद् अणिमादि सिद्धिः।

तालु के ऊर्ध्व भाग में महा ज्योति स्थित है, उसके दर्शन से अणिमादि सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

ब्रह्मरन्ध्र साधना की खेचरी मुद्रा प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में शिव संहिता में इस प्रकार उल्लेख मिलता है-

ब्रह्मरंध्रे मनोदत्वा क्षणार्ध मदि तिष्ठति । सर्व पाप विनिर्युक्त स याति परमाँ गतिम्॥

अस्मिल्लीन मनोयस्य स योगी मयि लीयते। अणिमादि गुणान् भुक्तवा स्वेच्छया पुरुषोत्तमः॥

एतद् रन्ध्रज्ञान मात्रेण मर्त्यः स्सारेऽस्मिन् बल्लभो के भवेत् सः। पपान् जित्वा मुक्तिमार्गाधिकारी ज्ञानं दत्वा तारयेदद्भुतं वै॥

अर्थात्-ब्रह्मरन्ध्र में मन लगाकर खेचरी मुद्रा की साधना करने वाला योगी आत्मनिष्ठ हो जाता है। पाप मुक्त होकर परम गति को प्राप्त करता है। इस साधना में मनोलय होने पर साधक ब्रह्मलीन हो जाता है और अणिमा आदि सिद्धियों का अधिकारी बनता है।

धेरण्ड संहिता में खेचरी मुद्रा का प्रतिफल इस प्रकार बताया गया है-

न च मूर्च्छा क्षुधा तृष्णा नैव लस्यं प्रजायते। न च रोगो जरा मृत्युर्देव देहः स जायते॥

खेचरी मुद्रा की निष्णात देव देह को मूर्च्छा, क्षुधा, तृष्णा, आलस्य, रोग, जरा, मृत्यु का भय नहीं रहता।

लवण्यं च भवेद्गात्रे समाधि जयिते ध्रुवम। कपाल वक्त्र संयोगे रसना रस माप्नुयात-धेरण्ड

शरीर सौंदर्यवान बनता है। समाधि का आनन्द मिलता है। रसों की अनुभूति होती है। खेचरी मुद्रा का प्रकार श्रेयस्कर है।

CamScanner

12:11 pm 88%

की मूल उपलब्धि है।

देवी भागवत् पुराण में महाशक्ति की वन्दना करते हुए उसे कुण्डलिनी और खेचरी मुद्रा से सम्बन्धित बताया गया है-

तालुस्था त्वं सदाधारा विंदुस्था विंदुमालिनी। मूले कुण्डलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा॥

-देवी भागवत्

अमृतधारा सोम स्राविनी खेचरी रूप तालु में, भ्रू मध्य भाग आज्ञाचक्र में बिन्दु माला और मूलाधार चक्र में कुण्डलिनी बनकर आप ही निवास करती है और प्रत्येक रोम कूप में विद्यमान् है।

शिव संहिता में प्रसुप्त कुंडलिनी का जागरण करने के लिए खेचरी मुद्रा का अभ्यास आवश्यक बताते हुए कहा गया है-

तस्मार्त्सवप्रयत्नेन प्रबोधपितुमीश्वरीम्। ब्रह्मरन्ध्रमुखे सुप्ताँ मुद्राभ्यासं समाचरेत्-शिव संहिता

इसलिए साधक को ब्रह्मरन्ध्र के मुख में रास्ता रोके सोती पड़ी कुण्डलिनी को जागृत करने के लिए सर्व प्रकार से प्रयत्न करना चाहिए और खेचरी मुद्रा का अभ्यास करना चाहिए।

कभी कभी खेचरी मुद्रा के अभ्यास काल में कई प्रकार के रसों के आस्वादन जैसी झलक भी मिलती है। कई बार रोमांच जैसा होने लगता है, पर यह सब आवश्यक या अनिवार्य नहीं। मूल उद्देश्य तो भावानुभूति ही है।

अमृतास्वादनं पश्चाज्जिव्हाग्रं संप्रवर्तते। रोमाँचश्च तथानन्दः प्रकर्षेणोपजायते-योग रसायनम् 255

जिव्हा में अमृत-सा सुस्वाद अनुभव होता है और रोमांच तथा आनन्द उत्पन्न होता है।

प्रथमं लवण पश्चात् क्षारं क्षीरोपमं ततः। द्राक्षाररससमं पश्चात् सुधासारमयं ततः-योग रसायनम्

खेचरी मुद्रा के समय उस रस का स्वाद पहले लवण जैसा, फिर क्षार जैसा, फिर दूध जैसा, फिर द्राक्षारस जैसा और तदुपरान्त अनुपम सुधा, रस-सा अनुभव होता है।

आदौ लवण क्षारं च ततस्तिक्त कषायकम्। नवनीतं धृत क्षीर दधित क्रम धूनि च। द्राक्षा रसं च पीयूषं जप्यते रसनोदकम-घेरण्ड संहिता

खेचरी मुद्रा में जिव्हा को क्रमशः नमक, क्षार, तिक्त, कषाय, नवनीत, धृत, दूध, दही, द्राक्षारस, पीयूष, जल जैसे रसों की अनुभूति होती है।

12:10 pm 88%
web.archive.org/web/20

खेचरी मुद्रा और रसानुभूति

अखण्ड ज्योति Jun 1977 | Report Discrepancies

** Following Akhand Jyoti Unicode Text is under BETA testing. We appreciate your help on Stabilizing it by reporting discrepancies (e.g. omitted lines, incorrect text etc).

खेचरी मुद्रा की साधना के लिए हठयोगी जीभ को लम्बी करके 'काकं चंचु' तक पहुँचाने के लिए जिव्हा पर कालीमिर्च, शहद, धृत का लेपन करके उसे थन की तरह दुहते, खीचते हैं और लम्बी करने का प्रयत्न करते हैं। जीभ के नीचे वाली पतली त्वचा को काट कर भी अधिक पीछे तक मुड़ सकने योग्य उसे बनाया जाता है। यह दोनों ही क्रियाएँ सर्व साधारण के उपयुक्त नहीं है। इनमें तनिक भी भूल होने से जिव्हा तन्त्र ही नष्ट हो सकता है अथवा दूसरी विपत्तियाँ आ सकती है। अस्तु यदि सर्व जमीन एवं जोखिम रहित उपासनाएँ अभीष्ट हों तो शारीरिक अवयवों पर अनावश्यक दबाव न डालकर सारी प्रक्रिया को ध्यान परक-भावना मूलक ही रखना होगा।

खेचरी मुद्रा का भावपक्ष ही वस्तुतः उस प्रक्रिया का प्राण है। मस्तिष्क मध्य को-ब्रह्मरंध्र अवस्थित सहस्रार को-अमृत-कलश माना गया है और वहाँ से सोमरस स्रवित होते रहने का उल्लेख है। जिव्हा को जितना सरलतापूर्वक पीछे तालु से सटाकर जितना पीछे ले जा सकना सम्भव हो उतना पीछे ले जाना चाहिए। 'काक चंचु' से बिलकुल न सट सके कुछ फासले पर रह जावे तो भी हर्ज नहीं है। तालु और जिव्हा को इस प्रकार सटाने के उपरान्त ध्यान किया जाना चाहिए कि तालु छिद्र से सोम अमृत का-सूक्ष्म स्राव टपकता है और जिव्हा इन्द्रिय के गहन अन्तराल में रहने वाली रस तन्मात्रा द्वारा उसका पान किया जा रहा है। इसी सम्वेदना को अमृत पान पर सोमरस पास की अनुभूति कहते हैं। प्रत्यक्षतः कोई मीठी वस्तु खाने आदि जैसा कोई स्वाद तो नहीं आता, पर कई प्रकार के दिव्य रसास्वादन उस अवसर पर हो सकते हैं। यह इन्द्रिय अनुभूतियाँ मिलती हों तो हर्ज नहीं, पर वे आवश्यक या अनिवार्य नहीं है। मुख्य तो वह भावपक्ष है जो इस आस्वादन के बहाने गहन रस सम्वेदना से सिक्त रहता है। यही आनन्द और उल्लास की अनुभूति खेचरी मुद्रा की मूल उपलब्धि है।

देवी भागवत् पुराण में महाशक्ति की वन्दना करते हुए उसे कुण्डलिनी और खेचरी मुद्रा से सम्बन्धित बताया गया है-

तालुस्था त्वं सदाधारा विंदुस्था विंदुमालिनी। मूले कुण्डलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा॥

12:07 pm 88%

हटाकर करती है, ठीक उसी प्रकार खेचरी की शरण में रहने वाला साधक सदैव उसकी कृपा का पात्र बनता है। राजस्थान के पुष्कर निवासी योगीराज,परिव्राजक स्वामी श्री ब्रह्मानन्द जी के कथनानुसार -

"सुनो खेचरी बात साधो,सुनो खेचरी बात रे।।

सबसे बड़ी खेचरी मुद्रा,योगी जन की मात रे।

जो जन साधन करत निरन्तर,भव सागर तर जात रे।।

जीभ तले की नाड़ कटे जब,तब पीछे उलटात रे।

धीरे-धीरे गल के ऊपर,छेद मांही ठहरात रे।।

पीछे ध्यान धरे भृकुटी में,कांपे सब ही गात रे ।

ब्रह्मज्योति का दर्शन होवे,झरे सुधा दिन रात रे।।

दिन-दिन ध्यान करे जब योगी,काया सुध बिसरात रे ।

"ब्रह्मानन्द" स्वरूप समावे,फेर जन्म नहि आत रे।।"

को व्यक्त करते निम्नलिखित दो श्लोक इसे स्पष्ट कर देते है.....

१) "कपालकुहरे जिव्हा प्रविष्टा विपरितगा।

ध्यानं भ्रूमध्यदेशे च मुद्रा भवति खेचरी।।"

२) "खेचरियोगतो योगी शिरश्चंद्रादुपागतम्।

रसंदिव्यंपिबेन्नित्यं सर्वव्याधिविनाशनम्।।"

योग की इस महान क्रिया का साधक आज के इस युग में दुर्लभ है, योग की इस क्रिया को सदैव योगी,साधक गुरु के सानिध्य में ही सीखने का प्रयास करें।

## बाहरी कड़ियाँ

CamScanner

12:06 pm 88%

**खेचरी मुद्रा** योगसाधना की एक मुद्रा है। इस मुद्रा में चित्त एवं जिह्वा दोनों ही आकाश की ओर केंद्रित किए जाते हैं जिसके कारण इसका नाम 'खेचरी' पड़ा है (ख = आकाश, चरी = चरना, ले जाना, विचरण करना)। इस मुद्रा की साधना के लिए पद्मासन में बैठकर दृष्टि को दोनों भौहों के बीच स्थिर करके फिर जिह्वा को उलटकर तालु से सटाते हुए पीछे रंध्र में डालने का प्रयास किया जाता है। इस स्थिति में चित्त और जीभ दोनों ही 'आकाश' में स्थित रहते हैं, इसी लिये इसे 'खेचरी' मुद्रा कहते हैं । इसके साधन से मनुष्य को किसी प्रकार का रोग नहीं होता ।

इसके लिये जिह्वा को बढ़ाना आवश्यक होता है। जिह्वा को लोहे की शलाका से दबाकर बढ़ाने का विधान पाया जाता है। कौल मार्ग में खेचरी मुद्रा को प्रतीकात्मक रूप में 'गोमांस भक्षण' कहते हैं। 'गौ' का अर्थ इंद्रिय अथवा जिह्वा और उसे उलटकर तालू से लगाने को 'भक्षण' कहते हैं।

**योगमार्ग की एक महान क्रिया :-**

योगमार्ग में "खेचरी मुद्रा" को 'योगियों की माँ' कहकर सम्बोधित किया गया है। जिस प्रकार माँ अपनी सन्तान का पालन पोषण सभी संकट हटाकर करती है, ठीक उसी प्रकार खेचरी की शरण में रहने वाला साधक सदैव उसकी कृपा का पात्र बनता है। राजस्थान के पुष्कर निवासी योगीराज,परिव्राजक स्वामी श्री ब्रह्मानन्द जी के कथनानुसार -

"सुनो खेचरी बात साधो,सुनो खेचरी बात रे।।

सबसे बड़ी खेचरी मुद्रा,योगी जन की मात रे।

जो जन साधन करत निरन्तर,भव सागर तर जात रे।।

जीभ तले की नाड़ कटे जब,तब पीछे उलटात रे।

धीरे-धीरे गल के ऊपर,छेद मांही ठहरात रे।।

पीछे ध्यान धरे भृकुटी में,कांपे सब ही गात रे ।

CamScanner

## ज्ञान गुदरी का सार

• ज्ञान गुदारी कबीर दास जी द्वारा धर्मदास जी को बताया गया शरीर का ज्ञान है। ज्ञान गुदरी में धर्मदास, कबीर साहेब से शरीर (गुदरी) के बारे में पूंछ रहे हैं ताकि भक्त गण इसे जान कर और अभ्यास कर मुक्ति को प्राप्त कर सकें।

• इसमे धर्मदास जीवात्मा का प्रतीक है और कबीर दास परमात्मा का।

• जैसा कि आप सभी को पता है, कबीर दास बड़े ऊंचे स्तर के संत (=जो अपने पूरे संस्कार को खत्म कर लिया हो और मुक्त हो चूका हो) थे।

• अगर बहुत बारिकी से ज्ञान गुदरी पे विचार करे तो आप पाएंगे कि इसमें कबीर साहेब पहले इस शरीर (गुदरी) की बनवत के बारे में बताते हैं, फिर इससे संचलन के बारे में बताते हैं, इससे बाद में सफाई के बारे में और फिर उसे शुद्ध कैसे रखें के बारे में बताते हैं। और अंत में बताते हैं कि आप कैसे खुद के अंदर जाकर सभी आध्यात्मिक अनुभूति को अनुभव कर सकते हैं तथा मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

• इस लिये ज्ञान गुदरी का ज्ञान और अभ्यास अपने आप का साक्षातकार करने  का पूर्ण साधन है।

## ज्ञान गुदड़ी का अध्यात्मिक मतलब

CamScanner

12:04 pm 89%

मन को मारि गगन चढ़ी जाई, मान सरोवर पैठी नहाई |

अनहद नाद नाम की पूजा। ब्रह्म वैराग्य देव नही दूजा ||

छुट गए कशमल कर्मज लेखा, यहि नैनन साहब को देखा ||

अहंकार अभिमान विहारा, घाट का चौका कर उजियारा |

चित करू चन्दन तुलसी फूला, हित करू सम्पुट करि ले मूला ||

श्रद्धा चंवर प्रीति का धूपा, नूतन नाभ साहेब का रूपा |

गुदरी पहिरे आप आलेख, जिन यह प्रगट चलायो भेषा ||

साहब कबीर बख्श जब दीन्हा, सुर नर मुनि सब गुदरी लीन्हा |

ज्ञान गुदरी जो पढ़े प्रभाता, जनम जनम के पातक जाता ||

ज्ञान गुदरी जो पढ़े मध्याना, सो लखि पावै पद निर्बाना |

सन्ध्या सुमिरन जो नर करहि, जरा मरन भवसागर तरहि।

कहै कबीर सुनो धर्मदासा, ज्ञान गुदड़ी करहू प्रकाशा||

## ज्ञान गदरी का सार

CS CamScanner

12:03 pm 89%

युक्ति जंजीर बांधी जब लीन्हा, अगम अगोचर खिर की चीन्हा ||

वैराग त्याग विज्ञान निधाना, तत्व तिलक दीन्हों निर्वाना |

गुरु गम चकमक मनसा तूला, ब्रम्ह अग्नि प्रगट कर मूला ||

संशय शोक सकल भ्रम जारा, पाँच पचीसों प्रगटहि मारा |

दिल की दर्पण दुविधा खोई, सो वैरागी पक्का होई ||

शून्य महल में फेरी देई, अमृत रस की भिक्षा लेई |

दु:ख सुख मेला जग के भाऊ, त्रिवेणी के घाट नहाऊ ||

तन मन शोधि भया जब ज्ञाना, तब लखि पावैं पद निरवाना|

अष्ट कमल दल चक्कर सूझे, योगी आप-आप में बूझे ||

इंगला के घर पिंगला जाई, सुषमनी नारी रहै लौ लाई |

वोहं सोहं तत्व विचारा, बंक नाल में किया संभारा||

मन को मारि गगन चढ़ी जाई, मान सरोवर पैठी नहाई |

अनहद नाद नाम की पूजा | ब्रह्म वैराग्य देव नही दूजा ||

CamScanner

12:03 pm 89%

जिन गुदड़ी का किया विचारा, तिनको भेटे सिर्जन हारा ||

धीरज धुनी ध्यान धरू आसन, सत की टोपी सहज सिंहासन |

युक्ति कमण्डल कर गहि लीन्हा, प्रेम फावड़ी मुर्शिद चीन्हा ||

सेली के शील विवेक की माला, दया की टोपी तन धर्मशाला |

महरम तंगा मत बैशाखी, मृगछाला मनही को राखी ||

निश्चय धोती पवन जनेऊ, अजपा जपे सो जाने भेऊ |

रहे निरन्तर सद् गुरु दाया, साधु संगति करि सब कछु पाया ||

लव कर लकुटी हृदया झोरी, क्षमा खड़ाऊ पहिर बहोरी |

मुक्ति मेखला सुरति सुमरणनी, प्रेम पियाला पीवै मौनी ||

उदासी कुबरी कलह निवारी, ममता कुत्ती को ललकारी |

युक्ति जंजीर बांधी जब लीन्हा, अगम अगोचर खिर की चीन्हा ||

वैराग त्याग विज्ञान निधाना, तत्व तिलक दीन्हों निर्वाना |

CamScanner

12:03 pm 89%

# ज्ञान-गुदड़ी

धर्मदास विनवै कर जोरी, साहेब सुनिये विनती मोरी।

काया गुदड़ी कहो संदेशा, जासे जीव का मिटे अंदेशा।।

अलख पुरुष जब किया विचारा, लख चौरासी धागा डाला
|

पाँच तत्व से गुदड़ी बीनी, तीन गुनन से ठाढी कीन्ही ||

तामे जीव ब्रह्म अरु माया, समरथ ऐसा खेल बनाया |

जीवहिं पांच पचीसों लागे, काम क्रोध ममता मद पागा||

काया गुदड़ी का विस्तारा, देखो संतो अगम सिंगारा |

चाँद सूर्य दोउ पेवन लागे, गुरु प्रताप से सोवत जागे ||

शब्द की सुई सुरति कर धागा, ज्ञान टोप से सीयन लागा |

अब गुदड़ी की कर होशियारी, दाग न लागे देखू विचारी ||

सुमति की साबुन सिरजन धोई, कुमति मैल को डारो खोई
|

जिन गुदड़ी का किया विचारा, तिनको भेटे सिर्जन हारा ||

CS CamScanner

11:58 am 90%

कारण,जीवात्मा को कोई भी सांसारिक दु:ख (ताप) कष्ट नहीं पहुँचा सकता। फिर भी जीवात्मा इतना दु:खी क्यों है ?

इसका मतलब जीवात्मा उस परब्रह्म से भिन्न किसी और के प्रति (सांसारिक विषयों में) आसक्त है। इसके अतिरिक्त जीवात्मा के दु:खी होने का और क्या कारण हो सकता है ?

कबीर दास जी कहना है कि कमलदण्ड में स्थित जल (कुंडलिनी शक्ति) और सरोवर का जल (सहस्रार चक्र से झरता हुआ अमृत) का एकीकरण जो जानता है उसके लिए आत्मा और परमात्मा अभिन्न होते है। इस प्रकार के तत्व ज्ञानी लोग स्वयं को अजर-अमर मानते हुए, मृत्यु के भय से सदा मुक्त रहते हैं।

इसके लिए तत्व ज्ञानी को अंतर्मुखी होना पड़ता है। यह अंतर्मुखी ज्ञान एक बहुमूल्य दर्शन होता है, जिसको साधक शब्दों में समझा नहीं सकता, इसको सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है।

खेचरी मुद्रा के अभ्यास और तत्व के ज्ञान के द्वारा कोई भी साधक अपनी कुंडलिनी शक्ति को पूर्णता से जागृत कर इसे आपने आज्ञा चक्र से होते हुए जब सहस्रार चक्र तक ले जाता है, जब सहस्रार चक्र से जो अमृत तपकती है, उस अमृत को खेचरी मुद्रा के द्वारा पान कर लेता है और एक विशेष तरह की अनुभूति का अनुभव करता है।

इस प्रकार स्वयं को अजर-अमर मानते हुए, मृत्यु के भय से सदा मुक्त रहते हैं।

CamScanner

11:58 am 90%

# आध्यात्मिक अर्थ

ये तो सर्वविदित है की कबीर दास जी के हर एक शब्द में कुछ न कुछ ज्ञान की बातें छुपी रहती है। इस लिए उनके हर पद्य रहस्यवाद से ओत-प्रोत होता है।

इस पद्य के द्वारा कबीर दास जी, आत्मा और परमात्मा की एकता के सिद्धान्त पर बल दे रहे हैं। कबीर साहेब के मतानुसार आत्मा और परमात्मा एक ही है। सांसारिक विषयों के प्रभाव के कारण जीवात्मा (नलिनी) स्वयं को परमात्मा (जल) से भिन्न समझ बैठती है और स्वयं को नाशवान समझते हुए मृत्यु के भय से दु:खी रहती है।

अध्यात्म की दृष्टि से देखे तो जीवात्मा (कमलिनी) प्रतिपल परब्रह्म/ परमात्मा (पानी) के संपर्क में रहती है। परमात्मा से उत्पत्ति और उसके मध्य ही स्थित होने के कारण,जीवात्मा को कोई भी सांसारिक दु:ख (ताप) कष्ट नहीं पहुँचा सकता। फिर भी जीवात्मा इतना दु:खी क्यों है ?

इसका मतलब जीवात्मा उस परब्रह्म से भिन्न किसी और के प्रति (सांसारिक विषयों में) आसक्त है। इसके अतिरिक्त जीवात्मा के दु:खी होने का और क्या कारण हो सकता है ?

कबीर दास जी कहना है कि कमलदण्ड में स्थित जल (कुंडलिनी शक्ति) और सरोवर का जल (सहस्रार चक्र से झरता हुआ अमृत) का एकीकरण जो जानता है उसके लिए आत्मा और परमात्मा अभिन्न होते है। इस प्रकार के

CamScanner

11:51 am 90%

# काहे री नलिनी तूं कुम्हलानी

काहे री नलिनी तूं कुमिलानी ।
तेरे ही नालि सरोवर पानीं ॥
जल में उतपति जल में बास, जल में नलिनी तोर निवास ।
ना तलि तपति न ऊपरि आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि ॥
कहे 'कबीर' जे उदकि समान, ते नहिं मुए हमारे जान ।

# शब्दार्थ

सामान्य व्याख्या के रूप में देखे तो यहाँ पर कबीर दस जी कह रहे है की, अरी कमलिनी तू क्यों मुरझाई हुई है? तेरे नाल (यानी डंडी) तो तालाब के जल में विद्यमान है, फिर भी तेरे कुम्हलाने का क्या कारण है?

फिर कह रहे है, हे कमलिनी, तेरी उत्पत्ति जल में ही हुई है और तू जल में ही सदा निवास कर रही है और कभी इससे अलग नहीं हुई है, फिर तेरे मुरझाने का क्या कारण है।

न तो तेरा तला तप रहा है न ऊपर से कोई आग तुझे तपा रही है। ये बता कि कही तेरा किसी से प्रेम तो नहीं हो गया है। जिसके वियोग के दु:ख से तू मुरझा रही है।

फिर बाद में कबीर कहते हैं कि जो ज्ञानी पुरुष अपने भीतर के और बाहर के जल की एकता का ज्ञान रखते हैं, वे हमारे मतानुसार कभी मृत्यु के भय से पीड़ित नहीं होते, मतलब आत्मा की और परमात्मा की एकता जानने वाला कभी मृत्यु से भयभीत नहीं होता।

CamScanner

11:50 am 91%

करता है। क्योंकि इस तथ्य को गुप्त रखने में कोई लाभ नहीं, इस लिए निर्भय होकर प्रकट करना पड़ता है कि दुलहन आत्मा को ही इस विवाह में उत्सुकता, आतुरता थी। मन तो बंधन में बँधने से अन्त तक आना-कानी ही करता रहता है।

साधक के अन्दर का जो चित्त वृत्तियों से उत्तपन्न दोस और दुर्गुण है वह बाराती का प्रतिक है तथा प्रीति-भोज में जो भात परोसा जा रहा है वह आध्यात्मिक दिव्य उपलब्धि का प्रतिक है।अत: जब साधक साधना करने बैठता है तब साधक के अंदर का दोष-दुर्गुण, बाराती बनकर इस तमाशे को देखने तो आते है लेकिन इस विवाह के उपरांत जो आध्यात्मिक दिव्य उपलब्धि होती है वो दोष-दुर्गुणों को ही उलटकर खा जाते हैं और उनका सफाया हो जाता है। यहाँ अच्छा कुशल क्षेम निकली जिसमे बारातियो ने अपने अस्तित्व को ही गँवा बैठे।

पाणि ग्रहण संस्कार के समय केशों का शृंगार होता है और कुछ मिलने की आशा होती है, पर यहाँ बिलकुल ही उलटा हुआ। यहाँ पर सिर मूँडन का तात्पर्य त्याग और वैराग्य से है। मतलब जो कुछ कमाया हुआ था उसको भी गँवा देना पड़ता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में मन इड़ा और पिंगला नाड़ी से हट कर सुषुम्ना नाड़ी में प्रवेश कर जाती है, गम्भीर समाधि की अवस्था प्राप्त होती है और दूल्हा-दुलहन का जोड़ा मिलकर एकाकार हो गया। भक्त और भगवान का अन्तर समाप्त हो गया।

इसीलिए कबीर दास जी कहते है जो इस साधना विधि को जानता है और इसका अभ्यास करता है सचमुच में वो पंडित ज्ञानी है और सच्ची मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

CS CamScanner

11:49 am 91%

# आध्यात्मिक अर्थ

कबीर साहेब जी यहाँ आत्मा और परमात्मा के मध्य का द्वैत मिटाने के लिए एक रहस्यमयी विवाह का उल्लेख कर रहे हैं जिसके मंडप में चित्त को दो काम करना पड़ रहा है, एक समधी का और दूसरा चारण का। आध्यात्मिक पथ पे जब साधक साधना सुरू करता है उस समय समस्त चित्त वृत्तियों का उत्पादक उसका चित्त होता है, वह निग्रहित न होने पर अपने क्रिया-कलाप का ढिंढोरा भी पीटता फिरता है। जो काम उसे नहीं करने चाहिए, आश्चर्य है कि करता है। माता को पुत्र से ब्याह करना पड़ता है अर्थात् चित्त को मन के साथ गठजोड़ करना पड़ता है। दोनों का संग न सधे तो कोई प्रयोजन ही पूर्ण न हो। इसके लिए मन तो सहज सहमत नहीं होता पर चौक को लीप-पोत कर विवाह के लिए पुते चौक के नीचे बिठाना पड़ता है। वह समझदार है इसलिए बैठ जाती है। मन नासमझ है सो आना-कानी और उछल-कूद करता है। क्योंकि इस तथ्य को गुप्त रखने में कोई लाभ नहीं, इस लिए निर्भय होकर प्रकट करना पड़ता है कि दुलहन आत्मा को ही इस विवाह में उत्सुकता, आतुरता थी। मन तो बंधन में बँधने से अन्त तक आना-कानी ही करता रहता है।

साधक के अन्दर का जो चित्त वृत्तियों से उत्तपन्न दोस और दुर्गुण है वह बाराती का प्रतिक है तथा प्रीति-भोज में जो भात परोसा जा रहा है वह आध्यात्मिक दिव्य उपलब्धि का प्रतिक है।अत: जब साधक साधना करने बैठता है तब साधक के अंदर का दोष-दुर्गुण, बाराती बनकर इस तमाशे को देखने तो आते है लेकिन इस विवाह के उपरांत जो आध्यात्मिक दिव्य उपलब्धि होती है

CamScanner

11:47 am 91%
By ManageLife Solution Team • December 26, 2021

# मँड़ये के चारण समधी दीन्हा

मँड़ये के चारण समधी दीन्हा, पुत्र व्यहिल माता॥1॥

दुलहिन लीप चौक बैठारी। निर्भय पद परकासा॥2॥

भाते उलटि बरातिहिं खायो, भली बनी कुशलाता॥3॥

पाणिग्रहण भयो भौ मुँडन, सुषमनि सुरति समानी ॥4॥

कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञानी॥5॥

## शब्दार्थ

कबीर साहेब जी यहाँ जिस अनोखी विवाह का उल्लेख कर रहे हैं उसमें मँड़ये (मतलब मंडप, जो शादी-ब्याह में सबसे अहम होता है) के पास जाकर समधी (मतलब लड़के या लड़की के पिता) ने चारण (मतलब बंदीजन, भाट जाति का व्यक्ति जो गाना गाते है) का काम किया और पुत्र के साथ माता ने ब्याह करा रहें है। मण्डल के नीचे लीप, पोत कर दुलहन को बिठाया और यह बात छिपाकर नहीं रखी, वरन् निर्भय होकर सबसे कह दी। बरातियों के लिए जो भात बनीथि उसने बरातियों को ही खा डाला और यह अच्छा कुशल क्षेम हुआ। जिस समय पाणि ग्रहण होना चाहिए था उस समय मुण्डन हुआ (मतलब सिर मूड़ा गया) और सुषुम्ना-सुरति में समा गई। कबीर दास जी सन्तों को सुना कर कहते हैं कि जो इस पहेली को बूझे वह ज्ञानी पंडित है।

CamScanner

11:47 am 91%
managelifesolution.co.in

KABIR DAS

# मँड़ये के चारण समधी दीन्हा | पुत्र व्यहिल माता

By ManageLife Solution Team • December 26, 2021

## मँड़ये के चारण समधी दीन्हा

मँड़ये के चारण समधी दीन्हा, पुत्र व्यहिल माता॥1॥

दुलहिन लीप चौक बैठारी। निर्भय पद परकासा॥2॥

भाते उलटि बरातिहिं खायो, भली बनी कुशलाता॥3॥

पाणिग्रहण भयो भौ मुँडन, सुषमनि सुरति समानी ॥4॥

कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, बूझो पण्डित ज्ञानी॥5॥

## शब्दार्थ

CamScanner

11:46 am 91%

managelifesolution.co.in

- दूसरी चीज है – सहस्त्रार से टपकता हुआ अमृत रूपी जल
- तीसरी चीज है – मेरुदण्ड रुपी लकड़ी अर्थात सुषुम्ना
- चौथी चीज है – जिह्वा भक्षण (जिहवा भक्षण को गो-माँस भक्षण भी कहते है)
- पांचवी चीज है – दिव्य ज्ञान का दर्शन

ये पंचो बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ जब साधक गहन समाधि की अवस्था में होता है तभी प्राप्त होती है। जैसा की मैंने पहले भी कहा था, इस पद्य में कबीर दास जी एक दिव्या मुद्रा की बात कर रहे है जिसके पूर्णता होने पर उनके द्वारा मांगी गयी पांचो बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ सहज ही प्राप्त हो जाती है।

जब खेचरी मुद्रा सिद्ध होती है तब साधक सहस्त्रार से टपकते हुए अमृत का पान करने लगता है और तब उसका मन शांत होने लगता है, इस तरह साधक का मन सुषुम्ना में प्रवेश कर जाता है और केवल कुम्भक की अवस्था प्राप्त हो जाती है। अंततः साधक राग-द्वेष रूपी अन्न से मुक्त होने लगता है। ये राग-द्वेष ही मन को चारों तरफ भटकता रहता है।

इसके बाद मूलाधार में स्थित कुंडलिनी शक्ति मेरुदण्ड में स्थित सुषुम्ना में प्रवेश करते हुए सहस्त्रार में पहुँच जाता है और उसको दिव्य ज्ञान का अनुभव होने लगता है।

CamScanner

यहाँ पर कबीर दास जी 5 बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ लाने की बात कर रहे हैं।

- पहली वस्तु है – अन्न
- दूसरी चीज है – जल
- तीसरी चीज है – लकड़ी
- चैथी चीज है – मांस
- पांचवी चीज है – दर्शन

जंहा तक मैं समझता हूं इसका यौगिक मतलब है,

- पहली चीज है – राग-द्वेष रूपी अन्न
- दूसरी चीज है – सहस्त्रार से टपकता हुआ अमृत रूपी जल
- तीसरी चीज है – मेरुदण्ड रुपी लकड़ी अर्थात सुषुम्ना
- चौथी चीज है – जिह्वा भक्षण (जिहवा भक्षण को गो-माँस भक्षण भी कहते है)
- पांचवी चीज है – दिव्य ज्ञान का दर्शन

ये पंचो बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ जब साधक गहन समाधि की अवस्था में होता है तभी प्राप्त होती है। जैसा की मैंने पहले भी कहा था, इस पद्य में कबीर दास जी एक दिव्या मुद्रा की बात कर रहे है जिसके पूर्णता होने पर उनके द्वारा मांगी गयी पांचो बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ सहज ही प्राप्त हो जाती है।

जब खेचरी मुद्रा सिद्ध होती है तब साधक सहस्त्रार से टपकते हुए अमृत का पान करने लगता है और तब

CamScanner

दूसरी भिक्षा जल भर लाना, नदी कुँआ के पास न जाना।

गंदा ऊजला छोड के चेला, तूम्बी भरके लाना॥ 2 ॥

तीसरी भिक्षा लकडी लाना, हरे झाड के पास न जाना।

गीली सुखी छोड के चेला, गठ्ठर बँध के लाना॥ 3 ॥

चौथी भिक्षा मांस की लाना, जीव जंतु को नहीं सताना।

जिन्दा मुर्दा छोड के चेला, हंडी भर के लाना॥ 4 ॥

पाँचवीं भिक्षा दर्शन लाना, मंदिर मस्जिद के पास न जाना।

साधू सन्त को छोड के चेला, नैना भर के लाना॥ 5 ॥

कहत कबीर सुनो भई साधू ये पद है निर्वाना।

जो इस पद का अर्थ लगावे, वो नर चतुर सुजाना॥ 6 ॥

## शब्दार्थ

इन पंक्तियों में गुरु चेले की परीक्षा ले रहे हैं। यहाँ गुरु अपने चेले से कुछ एक बहुमूल्य या दुर्लभ पदार्थ लाने की

CamScanner

11:45 am 91%

KABIR DAS

# गुरु ने मँगाई चेला | एक न्यामत लाना रे

By ManageLife Solution Team • December 26, 2021

## गुरु ने मँगाई चेला | एक न्यामत लाना रे

गुरु ने मँगाई चेला, एक न्यामत लाना रे॥

पहली भिक्षा अन्न ले आना, गाँव नगर के पास न जाना।

चलती चक्की छोड के चेला, झोली भर के लाना॥ 1 ॥

दूसरी भिक्षा जल भर लाना, नदी कुँआ के पास न जाना।

गंदा ऊजला छोड के चेला, तूम्बी भरके लाना॥ 2 ॥

तीसरी भिक्षा लकडी लाना, हरे झाड के पास न जाना।

गीली सुखी छोड के चेला, गठ्ठर बँध के लाना॥ 3 ॥

CamScanner

11:34 am 92%
managelifesolution.co.in

***दास कबीर जतन करि ओढी, ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया***

इस लिए कबीर साहेब जी कहते हैं मैने जतन से ओढ़ी, बड़े सम्हाल कर ओढ़ी, और होश से ओढ़ी और ज्यों की त्यों परमात्मा को वापस कर दी। यहीं मोक्ष है, यहीं मुक्ति की अवस्था है।

**अब प्रश्न उठता है कैसे इस चादर को निर्दोष रखें?**

कबीर साहेब जी कहते इस चदरिया को बचा लेने की कला है: होश, विवेक और जाग्रत चेतना। करो, जो कर रहे हो, जो करना पड़ रहा है। जो नियति है, पूरा करो क्योंकि भागने से कुछ प्रयोजन नहीं। लेकिन करते समय न करता बनो न भोक्ता । सिर्फ साक्षी रहो, यहीं सम्हाल कर ओढ़ने की कुंजी है।

# सूचना

अगर आप लोगो को मेरा यह आध्यात्मिक व्याख्या अच्छा लगा हो तो आप इसको अधिक से अधिक लोगो तक पहूँचाने की कोशिश करें |

हम चाहते हैं की अधिक से अधिक लोग अपने अनुभव शेयर करें ताकी नए साधक को प्रेरणा मिल पाए|

CamScanner

***साईं को सियत मास दस लागे, ठोंक ठोंक कै बीनी चदरिया***

***सोई चादर सुर नर मुनि ओढी, ओढि कै मैली कीनी चदरिया***

यह शरीर पिंड, स्थूल और सूक्ष्म शरीर से बाना है जिसको बुनने (सियत का मतलब होता है सिलना या बुनना) में परमात्मा को दस महीने लग जाते हैं। और जिसको प्रकृति ने बड़े बारिकी से, ध्यान दे कर बनाया है। परमात्मा ने पूरा अस्तित्व बनाने में दस महीने तुम पर खर्च करता है लेकिन तुम इसका कोई मूल्य ही नहीं समझते।

कबीर साहेब जी कहते हैं कि प्रकृति द्वारा बनाए गए इस शरीर को सुर (स्वर्ग में रहनेवाला देवता), नर (साधारण मनुष्य), और मुनि (त्यागी जन), सबने ओढ़ी, और इन तीनों ने मैली कर दी। देवता भोग के कारण मैला कर देता है, मुनि त्याग के कारण मैला कर देते हैं। और बीच में जो मनुष्य है, वह खिचड़ी जैसा है। सुबह त्यागी, दोपहर भोगी; शाम त्यागी, रात भोगी। वह चौबीस घंटे में कई दफा बदलता है। भोगी का अर्थ है, वासनाओं के साथ जिसने अपने को इतना जोड़ लिया कि कोई फासला न रहा। देवता, भोगने के शुद्ध प्रतीक हैं। वे सिर्फ भोगते हैं। भोग से चादर मैली हो जाती है। भोगी और त्यागी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उनकी कामना एक ही है। एक को मिल गया है; दूसरे मिल जाए, इसकी आशा में जी तोड़ कर लेगा हुआ है। इसलिए त्यागी भी सपने तो भोग के ही देखता है। कबीर साहेब जी कहते हैं, त्यागी, भोगी दोनों

11:31 am 93%

chat.openai.com/c/320c

New chat

Default (GPT-3.5)

RA

आठ चक्र का द्वार है दस इंद्रियां (पांच कर्म-इंद्रियां, और पांच ज्ञान इंद्रियां

आठ चक्र (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, मनश्चक्र (बिन्दु या ललना चक्र), और सहस्त्रार)

पंचतत्व या पंच महाभूत माने आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से सम्पूर्ण सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ बना है।

प्रकृति के तीन गुण (सत्, रजस् और तमस्) बताए गए हैं। ये तीनों गुण सभी सजीव-निर्जीव, स्थूल-सूक्ष्म वस्तुओं में विद्यमान रहते हैं।

............
ऊपर दिए गए तथ्यों के हिसाब से
दस इंद्रियां (पांच कर्म, पांच ज्ञान) के नाम बताए?

‹ 2 / 2 ›

आपने सही तथ्य प्रस्तुत किए हैं। निम्नलिखित हैं दस इंद्रियां:

1. श्रवण (कर्म-इंद्रिय)
2. स्पर्श (कर्म-इंद्रिय)
3. दृष्टि (कर्म-इंद्रिय)
4. घ्राण (कर्म-इंद्रिय)

Send a message

ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.

CS CamScanner

# श्रीमद् भगवद्गीता

Script Devanagari Chapter 13 Shloka 6

‹‹ ‹ › ››

Audio

Translations and Commentaries

**मूल श्लोकः**

महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।

इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः।।13.6।।

## Hindi Commentary By Swami Ramsukhdas

।।13.6।। **व्याख्या -- अव्यक्तमेव च --** अव्यक्त नाम मूल प्रकृतिका है। मूल प्रकृति समष्टि बुद्धिका कारण होनेसे और स्वयं किसीका भी कार्य न होनेसे केवल प्रकृति ही है।**बुद्धिः --** यह पद समष्टि बुद्धि अर्थात् महत्तत्त्वका वाचक है। इस बुद्धिसे अहंकार पैदा

## Hindi Commentary By Swami Ramsukhdas

।।13.6।। **व्याख्या -- अव्यक्तमेव च --** अव्यक्त नाम मूल प्रकृतिका है। मूल प्रकृति समष्टि बुद्धिका कारण होनेसे और स्वयं किसीका भी कार्य न होनेसे केवल प्रकृति ही है।**बुद्धिः --** यह पद समष्टि बुद्धि अर्थात् महत्तत्त्वका वाचक है। इस बुद्धिसे अहंकार पैदा होता है? इसलिये यह प्रकृति है और मूल प्रकृतिका कार्य होनेसे यह विकृति है। तात्पर्य है कि यह बुद्धि प्रकृतिविकृति है।**अहंकारः --** यह पद समष्टि अहंकारका वाचक है। इसको अहंभाव भी कहते हैं। पञ्चमहाभूतका कारण होनेसे यह अहंकार प्रकृति है और बुद्धिका कार्य होनेसे यह विकृति है। तात्पर्य है कि यह अहंकार प्रकृतिविकृति है।**महाभूतानि --** पृथ्वी? जल? तेज? वायु और आकाश -- ये पाँच महाभूत हैं। महाभूत दो प्रकारके होते हैं -- पञ्चीकृत और अपञ्चीकृत। एकएक महाभूतके पाँच विभाग होकर जो मिश्रण होता है? उसको,पञ्चीकृत महाभूत कहते हैं **(टिप्पणी प॰ 673)**। इन पाँच महाभूतोंके विभाग न होनेपर इनको,अपञ्चीकृत महाभूत कहते हैं। यहाँ इन्हीं अपञ्चीकृत महाभूतोंका वाचक **महाभूतानि** पद है। इन महाभूतोंको पञ्चतन्मात्राएँ तथा सूक्ष्ममहाभूत भी कहते हैं।दस इन्द्रियाँ? एक मन और शब्दादि पाँच विषयोंके कारण होनेसे ये महाभूत प्रकृति हैं और अहंकारके कार्य होनेसे ये विकृति हैं। तात्पर्य है कि ये पञ्चमहाभूत प्रकृतिविकृति हैं।**इन्द्रियाणि दश --** श्रोत्र? त्वचा? नेत्र? रसना और घ्राण -- ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं तथा वाक्? पाणि? पाद? उपस्थ और पायु -- ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। ये दसों इन्द्रियाँ अपञ्चीकृत महाभूतोंसे पैदा होनेसे और स्वयं किसीका भी कारण न होनेसे केवल विकृति ही हैं।**एकं च --** अपञ्चीकृत महाभूतोंसे पैदा होनेसे और स्वयं किसीका भी कारण न होनेसे मन केवल,विकृति ही है।**पञ्च चेन्द्रियगोचराः --** शब्द? स्पर्श? रूप? रस और गन्ध -- ये (पाँच ज्ञानेन्द्रियोंके) पाँच विषय हैं। अपञ्चीकृत महाभूतोंसे पैदा होनेसे और स्वयं किसीके भी कारण न होनेसे ये पाँचों विषय केवल विकृति ही हैं।इन सबका निष्कर्ष यह निकला कि पाँच महाभूत? एक अहंकार और एक बुद्धि -- ये सात प्रकृतिविकृति हैं? मूल प्रकृति केवल प्रकृति है और दस इन्द्रियाँ? एक मन और पाँच ज्ञानेन्द्रियोंके विषय -- ये सोलह केवल विकृति हैं। इस तरह इन चौबीस तत्त्वोंके समुदायका नाम क्षेत्र है। इसीका एक तुच्छ अंश यह मनुष्यशरीर है? जिसको भगवान्ने पहले श्लोकमें **इदं शरीरम्** और तीसरे श्लोकमें **तत्क्षेत्रम्** पदसे कहा है।

## Hindi Translation Of Sri Shankaracharya's

- वाक् इन्द्रिय - वाणी का मोटर अंग (वाक् अंग)
- पानी इंद्रिया - पकड़ने या पकड़ने का मोटर अंग (हाथ)
- पाद इन्द्रिय - गति का मोटर अंग (पैर)
- पयु इंद्रिया - उत्सर्जन, शौच का मोटर अंग (गुदा और मलाशय)
- उपस्थ इंद्रिय - सेक्स का मोटर अंग (लिंग)

***उभय इन्द्रिय -***

उभय का अर्थ है दोनों। उभय इन्द्रिय क्रिया में संवेदी और मोटर दोनों है। यह संवेदी अंगों से जुड़ा होता है जब संवेदी धारणा हो रही होती है और मोटर अंगों के साथ जब मोटर गतिविधियां हो रही होती हैं। उभय इन्द्रिय संख्या में एक है। इसे मानस या मन कहा जाता है।

## बुद्धि इन्द्रियाँ

**बुद्धि इंद्रियां या ज्ञान इंद्रियां**

एक एक अधिक युक्तानि खादिनाम इंद्रियानि तु|
पज्च कर्मानुमयनि येभ्यो बुद्धिः प्रवर्तते||(ca.zA. 1/24)

चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, रसाना औ ... द्धि इंद्रियां कहा जाता है क्यों ... अंतर्निहित है। बुद्धि इंद्रियों को इसलिए ज्ञान इंद्रियां कहा जाता है ... तुओं के ज्ञान को समझने में मदद कर ... हैं)।

हमारे साथ चैट करें
EN
CamScanner

## इन्द्रियों का वर्गीकरण

इंद्रियों को 3 व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। वे हैं:

- बुद्धि इंद्रियां या ज्ञान इंद्रियां
- कर्म इंद्रियां
- उभय इंद्रियां

***बुद्धि इंद्रियां या ज्ञान इंद्रियां -***

बुद्धि इंद्रियां इंद्रियों से बनी होती हैं। इनकी संख्या 5 है. वे नीचे उल्लिखित हैं:

- चक्षु इंद्रिय - दृष्टि की इंद्रिय (नेत्र)
- श्रोत्र इंद्रिय - सुनने की इंद्रिय (कान)
- घ्राण इंद्रिय - गंध की इंद्रिय (नाक)
- रसना इंद्रिय - स्वाद की इंद्रिय (जीभ)
- त्वक इंद्रिय या स्पर्श इंद्रिय - स्पर्श की इंद्रिय (त्वचा)

***कर्म इन्द्रियास -***

कर्म का अर्थ है क्रिया। कार्यों और महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल इंद्रियों को कर्म इंद्रियां कहा जाता है। कर्म इन्द्रियाँ मोटर अंगों से बनी होती हैं। ये भी संख्

हमारे साथ चैट करें
EN

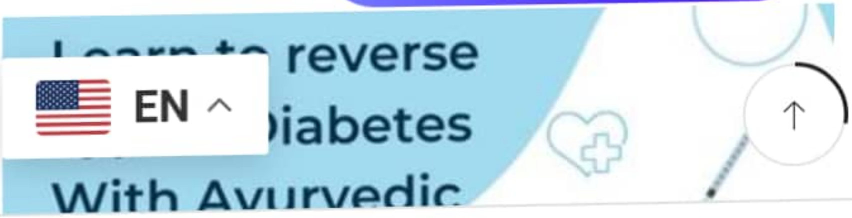

संतमत दर्शन के अनुसार इंद्रियां 14 हैं। **पांच ज्ञानेंद्रियां- आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा; पांच कर्मेंद्रियां- हाथ, पैर, मुंह, गुदा और लिंग और चार अंत:करण- मन बुद्धि चित्त और अहंकार**। (2) अंतरिंद्रिय - केवल मन (एक)। इनमें बाह्य इंद्रियाँ क्रमश: गंध, रस, रूप स्पर्श तथा शब्द की उपलब्धि मन के द्वारा होती हैं।

CamScanner

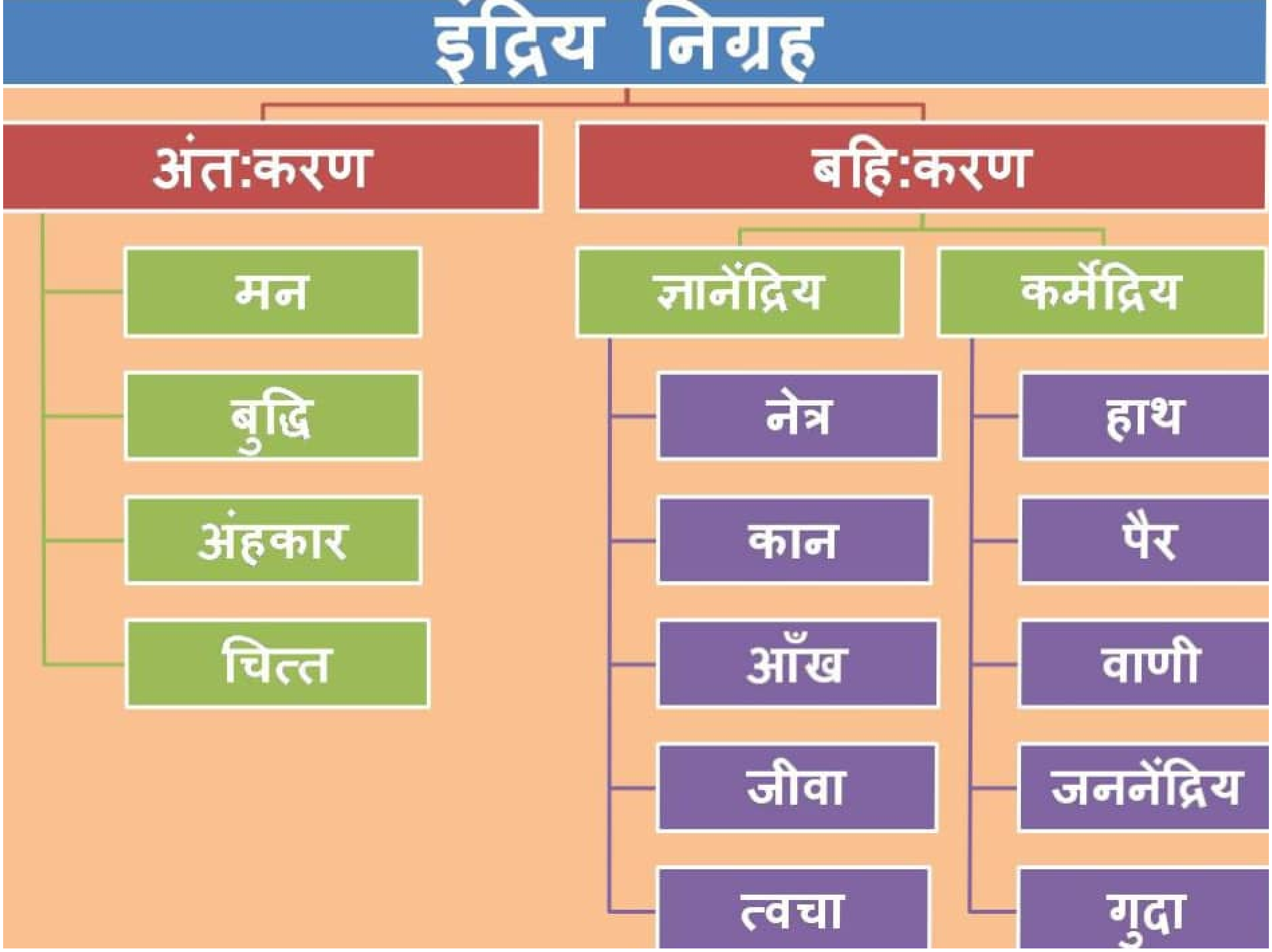
इंद्रिय निग्रह
अंत:करण
बहि:करण
मन
बुद्धि
अंहकार
चित्त
ज्ञानेंद्रिय
कर्मेंद्रिय
नेत्र
कान
आँख
जीवा
त्वचा
हाथ
पैर
वाणी
जननेंद्रिय
गुदा

CamScanner

11:17 am 95%

google.com/search?q=स

सही दस इंद्रियों के नाम हैं:

All Videos News Images Maps Shopping

हिंदी में खोजें सही दस इंद्रियों के नाम हैं श्रवण स्प...

इसे सुनें

संतमत दर्शन के अनुसार इंद्रियां 14 है। पांच ज्ञानेंद्रियां- आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा; पांच कर्मेंद्रियां- हाथ, पैर, मुंह, गुदा और लिंग और चार अंत:करण- मन बुद्धि चित्त और अहंकार। (2) अंतरिंद्रिय - केवल मन (एक)। इनमें बाह्य इंद्रियाँ क्रमश: गंध, रस, रूप स्पर्श तथा शब्द की उपलब्धि मन के द्वारा होती हैं।

https://hi.quora.com › दस-इन्द्र...

दस इन्द्रियों के नाम क्या हैं? - Quora

About featured snippets Feedback

Wikipedia
https://hi.m.wikipedia.org › wiki

इन्द्रिय

(1) बहिरिंद्रिय - घ्राण, रसना ... इसी को दृश्य, सुगंध, स्वाद, श्रवण और स्पर्श कहा जाता है।

Missing: ~~सही दृष्टि अन्न पायु वाक् पाद उपस्थ~~

CamScanner

11:05 am 97%

***आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया***

हमारे संत, महात्मा, ऋषि और मुनि ने शरीर को ही ब्रम्हाण्ड का सूक्ष्म मॉडल बताया है। इसमें 8 चक्र, 5 तत्व और तीन गुण हैं। ये आठ चक्र (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, मनश्चक्र (बिन्दु या ललना चक्र), और सहस्त्रार), हमारे शरीर से संबंधित तो हैं लेकिन इन्हें अपनी भैतिक इन्द्रियों द्वारा महसूस नहीं कर सकते हैं। परंतु इनसे निकलने वाली उर्जा ही शरीर को जीवन शक्ति देती है। पंचतत्व या पंच महाभूत माने आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से सम्पूर्ण सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ बना है। प्रकृति के तीन गुण (सत्, रजस् और तमस्) बताए गए हैं। ये तीनों गुण सभी सजीव-निर्जीव, स्थूल-सूक्ष्म वस्तुओं में विद्यमान रहते हैं। इन तीन गुणों के न्यूनाधिक प्रभाव के कारण ही किसी व्यक्ति का चरित्र निर्धारित होता है।

कबीर दास जी कहते हैं कि आठ कंवल, जिनको हम चक्र कहते हैं, उनको अगर ठीक से समझें तो यहाँ कंवल कहने का कारण है। यह तो सिर्फ प्रतीकात्मक है। यदि आपने कभी नदी में कोई भंवर पड़ते देखा है, तो वहां चक्र में पानी घूमता प्रतीत होता है! वैसे ही ऊर्जा आपके शरीर में बने चक्र में घूमती है और उन भंवरों का जो रूप है वह कमल से काफी मिलता -जुलता है मानो जैसे कमल घूम रहा हो।

इन आठ चक्र का द्वार है दस इंद्रियां (पांच कर्म-इंद्रियां, और पांच ज्ञान इंद्रियां) का चरखा है। जब व्यक्ति अज्ञानी

CamScanner

झीनापन देख पाओगे, उसकी बनावट की बारीकी उतने समझोगे।

***काहे कै ताना काहे कै भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया***

***इडा पिङ्गला ताना भरनी, सुखमन तार से बीनी चदरिया***

इस शरीर को बनाने के लिए किस ताना, भरनी और तार का इस्तेमाल किया गया है। ताना, भरनी और तार कपड़ा बुनने में इस्तेमाल किया जाता है। यह तुम्हारा दिखाई पड़ने वाला शरीर न दिखाई पड़ने वाले को छिपाये हुए है। इस चदरिया यानि शरीर, इंगला-पिंगला ताना भरनी, और सुषमन तार से बुना गया है। अगर इसको समझना चाहते हो तो स्वर शास्त्र की कुछ जानकारी होना जरूरी है।

स्वर शास्त्र के अनुसार इस शरीर में 7200 नाड़ी हैं। जिसमें १० नाड़ी को प्रमुख मानते हैं। और इनमें भी तीन ईड़ा, पिंगला और सुषुम्ना बहुत ही महत्व पूर्ण है जो मेरुदण्ड से जुड़े हैं। ईड़ा को चन्द्र नाड़ी और पिंगला को सूर्य नाड़ी कहा जाता है। सुषुम्ना नाड़ी मूलाधार से आरंभ हो कर सिर के सहस्रार तक अवस्थित है और सभी चक्र सुषुम्ना में ही विद्यमान हैं। अत: यहाँ पर कबीर साहेब इन 3 प्रमुख नाड़ी की बात कर रहे है जिससे ये शरीर रूपी चादर बिनी गयी है।

***आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया***

CamScanner

11:02 am 98%
managelifesolution.co.in

# झीनी-झीनी बीनी चदरिया | दास कबीर जतन करि ओढी

By ManageLife Solution Team • July 19, 2021

**झीनी-झीनी बीनी चदरिया ॥**

**काहे कै ताना काहे कै भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया ॥ १॥**

**इडा पिङ्गला ताना भरनी, सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥ २॥**

**आठ कँवल दल चरखा डोलै, पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया ॥ ३॥**

**साईं को सियत मास दस लागे, ठोंक ठोंक कै बीनी चदरिया ॥ ४॥**

**सो चादर सुर नर मुनि ओढी, ओढि कै मैली कीनी चदरिया ॥ ५॥**

**दास कबीर जतन करि ओढी, ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया ॥ ६॥**

इस पद्द में कबीर दास जी बड़ी कीमती बातें कही हैं,

CamScanner

10:58 am 98%
facebook

कबीर ने कहा है,
"खूब जतन से ओढ़ी कबीरा,
ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया"

जतन-खूब जतन से।
कितने होश से तुम जीवन को जीते हो,
कितने जतन से, उस पर ही निर्भर करेगा।

अगर दुखी हो, तो ध्यान रखना, जतन से नहीं जी रहे हो।
दुख बढ़ता जाता है, तो ध्यान रखना, गलत दिशा पकड़ ली है।
किसी और को दोष मत देना। क्योंकि किसी और को दोष देकर कोई कभी बदल न पाया। किसी और को दोष मत देना, क्योंकि किसी और को दोष देने का अर्थ, जीवन का रूपांतरण फिर कभी भी न हो पाएगा।
अगर आख में आंसू हों तो कारण अपने हृदय में खोजना।

कौन रोता है किसी और की खातिर ऐ दोस्त
सबको अपनी ही किसी बात पे रोना आया

अगर ओठों पर मुस्कुराहट हो,
तो भी कारण भीतर है। आंखों में आंसू हों, तो भी कारण भीतर है।
जिसने देखा कि कारण बाहर है, वही अधार्मिक है। जिसने यह बात समझ ली कि मेरी जिंदगी में जो भी घट रहा है वह मेरा ही कृत्य है, वह मेरे ही होश और जतन या बेहोशी और गैर-जतन का परिणाम है, वह व्यक्ति धार्मिक हो गया।

फिर दुख ज्यादा देर तुम्हारे पास न रह सकेगा।
फिर तुम अचानक पाओगे एक क्रांति शुरू हुई। कल तक जो एक मुफलिस की कबा थी, एक भिखारी का वस्त्र थी, वही एक सम्राट का स्वर्णिम वस्त्र बनने लगी। कल तक जहां सिवाय कंकड़-पत्थर के कुछ भी न मिला था,
वहीं हीरे-जवाहरात उपलब्ध होने लगे...

CamScanner

10:42 am 100%

Osho Human Being To Be.In.God

33m ·

रामकृष्ण कहते थे, एक बार बैठे थे मंदिर के बाहर दक्षिणेश्वर में, तो देखा कि एक चील मरे हुए चूहे को ले उड़ी है। अब चील कितने ही ऊपर उड़े, नजर तो उसकी नीचे कचरे-घर में लगी रहती है जहां मरे चूहे पड़े हों, मांस का टुकड़ा पड़ा हो, फेंकी गई मछली पड़ी हो। उड़ती है आकाश में, नजर तो घूरे पर लगी रहती है। तुम हिमालय पर बैठ जाओ। कोई फर्क न पड़ेगा। नजर घूरे पर लगी रहेगी दिल्ली में। नजर मरे चूहों पर लगी रहेगी। तुम अपने को तो साथ ही ले जाओगे। तुम ही तो तुम्हारे होने का ढंग हो।

रामकृष्ण ने देखा कि वह चील उड़ रही है चूहे को लेकर। और बहुत सी चीलें उस पर झपट्टा मार रही हैं। कौवे दौड़ गए हैं। बड़ा उत्पात मच गया है आकाश में। वह चील बचने की कोशिश कर रही है। लेकिन और गिद्ध आ गए हैं। और सब तरफ से उसको टोचे जा रहे हैं। वह भागती है, बचना चाहती है। उसके पैरों पर लहू आ गया है। तब क्रोध की अवस्था में वह भी किसी गिद्ध पर झपटी और मुंह से चूहा छूट गया। चूहे के छूटते ही सारा उपद्रव बंद हो गया। कोई वे चील के पीछे पड़ने ही थे। बाकी गिद्ध और चीलें और कौवे...वे चूहे के पीछे पड़े थे। जैसे ही चूहा छूटा, वे सब चले गए। वे चूहे की तरफ चले गए। अब वह थकी चील वृक्ष पर बैठ गई। रामकृष्ण कहते हैं कि मुझे लगा, शायद थोड़ी उसे समझ आई होगी। चूहा सारी भीड़ को ले आया था।

तुम्हारा मैं...तुम हिमालय चले जाओ, कोई फर्क न पड़ेगा। सब भीड़ आ जाएगी। तुम्हारा मैं भीड़ को खींचता है। तुम मैं को छोड़ दो। बाजार में बैठे रहो, वहीं हिमालय हो जाएगा। तुम्हारी दुकान तुम्हारी गुफा हो जाएगी तुम्हारा दफ्तर तुम्हारा मंदिर हो जाएगा। मैं का चूहा भर छूट जाए। फिर कोई चील हमला नहीं करती। फिर कोई सिद्ध तुम पर आकर हमला नहीं करता। तुमसे किसी का कुछ लेना-देना नहीं है। वह तुम्हारा मैं ही तुम्हारे उपद्रव का कारण है।

कहे कबीर दीवाना, प्रवचन-१०, ओशो

CamScanner

सपना देख रही थी कि आकाश से चूहों की वर्षा हो रही है! मूसलाधार वर्षा हो रही है! चूहे ही चूहे गिर रहे हैं!

कुत्ते ने कहा: अरे मूरख, शास्त्र का ज्ञान है? शास्त्रों में साफ लिखा है कि कभी-कभी चमत्कार होते हैं, और जब चमत्कार होते हैं तो आकाश से हड्डियों की वर्षा होती है, चूहों की नहीं। चूहों का शास्त्रों में उल्लेख ही नहीं है। मूरख कहीं की! शास्त्रज्ञान है नहीं, कौड़ी भर संस्कृत जानती नहीं। चली है सपना देखने!

कुत्तों के शास्त्र में स्वभावतः चूहों की वर्षा नहीं हो सकती। बिल्लियों के शास्त्र में चूहों की ही वर्षा होगी। हड्डियों की वर्षा बिल्लियां क्या करेंगी! और आदमियों के शास्त्र में न चूहे बरसेंगे, न हड्डियां बरसेंगी। आदमियों के शास्त्र में तो हीरे-जवाहरात बरसेंगे, सोना-चांदी बरसेगा। इतनी कल्पनाएं हैं सारे जगत में। जितनी चेतनाएं हैं, उतने मन हैं, उतने माया के विस्तार हैं। जगत तो कोरा पर्दा है। यह पर्दा तुम्हें नहीं डुबा सकता। हां, तुम अपनी कल्पना में जितना चाहो डुबकी खाना, खाओ, मजे से खाओ। फिर भी डूबोगे करोगे नहीं, यह खयाल रखना। कोई कभी डूबा ही नहीं।

मैं इस झंझट में भी नहीं पडूंगा। तुमको डूबता भी देखूं तो भी किनारे पर बैठा रहूंगा। तो भी दौड़ कर तुमको बचाने वाला नहीं। क्योंकि मैं जानता हूं कि नदी है ही नहीं, तुम सिर्फ खाम-खयाली में हो। सो तुम्हारी मौज है। तुम लाख चिल्लाओ कि बचाओ-बचाओ! कोई बुद्धू दौड़े, मैं दौड़ने वाला नहीं। बचाने की बात ही फिजूल है। बचाना किससे है?

तुम्हें होश की जरूरत है। नदी वगैरह नहीं है जो तुम्हें डुबा रही है। लोग कहते हैं: भवसागर में डूबे जा रहे हैं। लोग अपने सब दोष बाहर थोप देते हैं। और सब दोष भीतर हैं। कहां का भवसागर? कहां की माया? मगर इससे राहत मिलती है कि हम क्या करें, यह माया का जाल ऐसा है! हम करें भी तो क्या करें? अवश हैं, परवश हैं। यह परमात्मा ने माया ऐसी बनाई–महाठगिनी!

रहिमन धागा प्रेम का-(प्रवचन-02)

.

CamScanner

2:32 pm 4G 73%

प्राणों का कोई भी अनुभव नहीं हो पाता।

यह अनुभव होगा भी नहीं। क्योंकि अनुभव की शुरुआत जिस द्वार से हो सकती थी, वह यह है कि हम यह स्वीकार करते हैं, हम किसी तल पर यह अनुभव करते हैं कि मेरा होना है। मेरी कोई सत्ता है। मैं हूं। हम कहेंगे...मेरी बात को सुन कर आप कहेंगे हम तो अस्वीकार नहीं किए हुए हैं, हमें तो अनुभव होता है कि हम हैं। लेकिन कभी आपने खयाल किया है, यह अनुभव आपके होने का है या आपके आस-पास जो चीजें हैं, उनके होने का है? एक आदमी छोटे पद पर होता है, बड़े पद पर चला जाता है, तो उसे अनुभव होता है कि मैं हूं। उसे अनुभव होता है मैं कुछ हूं। यह कुछ होना उसकी सत्ता का अनुभव है या उसके बड़े पद का? एक आदमी के पास बहुत धन होता है, तो उसे अनुभव होता है कि मैं हूं, यह अनुभव उसकी सत्ता का है, या उसकी संपत्ति का?

अगर हम स्मरण करेंगे, तो हमें ज्ञात होगा, हमें अपने होने का कोई अनुभव नहीं होता, कुछ और चीजों के अनुभव होते हैं और उनको ही हम मान लेते हैं कि हमारे होने का अनुभव है। अगर आपसे आपकी सारी सम्पत्ति छीन ली जाए, आपके वंश का गौरव छीन लिया जाए, आपका धर्म छीन लिया जाए, आपके वस्त्र छीन लिए जाएं, आपकी उपाधियां छीन ली जाएं, जो ज्ञान आपको सिखाया गया है, वह छीन लिया जाए; प्रशंसा और निंदा जो आपको मिली है, वह छीन ली जाए, तो आपके पास क्या बच रहेगा? जो दूसरों ने दिया है अगर वह छीन लिया जाए, तो फिर आपके पास क्या बच रहेगा? आप एकदम खाली हो जाएंगे और लगेगा कि मर गए। आपके पास अपनी सत्ता का कोई अनुभव नहीं है, और जिसे हम कहते हैं मेरा होना, मुझे लगता है कि मैं हूं। यह होना मेरा नहीं है, बल्कि और लोगों ने जो मुझे दिया है, उसका ही संग्रह है। स्वयं का यह अनुभव नहीं है, बल्कि आस-पास से आई हुई प्रतिध्वनियों का संग्रह है। कोई मुझे आदर देता है, कोई सम्मान देता है, कोई निंदा करता है, कोई बड़े पद पर बैठाता है; इस सारी बातों को मैंने इकट्ठा कर लिया है, और इसी के संग्रह को मैं समझता हूं कि मैं हूं। यह मेरा होना नहीं है। यह मेरा बीइंग नहीं है, यही मेरा प्राण नहीं है, यह मेरी आत्मा नहीं है। लेकिन हम इसी को अपना होना समझे हुए हैं।

CamScanner

2:32 pm 73%



स्वयं की सत्ता-(विविध)-ओशो
पहला प्रवचन
मनुष्य को देखता हूं तो जो पहली बात मुझे खयाल में आती है कि उससे कहूं वह यह कि हम अपने ही हाथों से, अपने ही हाथों से वे सब द्वार बंद किए हुए हैं, जहां से प्रकाश आ सकता था और आनंद आ सकता था। हम अपने ही हाथों से उस ओर पीठ किए हुए खड़े हैं, जिस ओर से जीवन की ज्योति हमें जगा सकती थी और हमारे प्राणों को स्पंदन से और नृत्य से और संगीत से भर सकती थी। आपको भी देखता हूं, तो मुझे ऐसा ही लगता है कि आप भी द्वार बंद किए हुए हैं, और कैसे हम द्वार बंद किए हुए हैं? एक छोटी सी बात से सारे द्वार बंद हो गए हैं। जीवन में जो भी पाने जैसा है, वह नहीं पाया जा सकेगा अगर उस छोटी सी बात पर हमारा ध्यान न जाए। इस जमीन पर बहुत से आश्चर्य हैं, लेकिन उस छोटी से बात से बड़ा और कोई आश्चर्य नहीं है। और वह छोटी सी बात यह है कि हम अपने को अस्वीकार किए हुए खड़े हैं। हममें से बहुत कम लोग हैं, जिन्होंने अपने को स्वीकार किया हो। जिन्होंने माना हो कि वो हैं। मैं हूं यह बोध हमारा खो गया है। हम जीते हैं, हम काम करते हैं, हम उठते हैं, चलते हैं और मर जाते हैं। लेकिन होने का, एक्झिस्टेंस का, अपनी सत्ता का, अपनी आत्मा का अपने प्राणों का कोई भी अनुभव नहीं हो पाता।

यह अनुभव होगा भी नहीं। क्योंकि अनुभव की शुरुआत जिस द्वार से हो सकती थी, वह यह है कि हम यह स्वीकार करते हैं, हम किसी तल पर यह अनुभव करते हैं कि मेरा होना है। मेरी कोई सत्ता है। मैं हूं। हम कहेंगे...मेरी बात को सुन कर आप कहेंगे हम तो अस्वीकार नहीं किए हुए हैं, हमें तो अनुभव होता है कि हम हैं। लेकिन कभी आपने खयाल किया है, यह अनुभव आपके होने का है या आपके आस-पास जो चीजें हैं, उनके होने का है? एक आदमी छोटे पद पर होता है, बड़े पद पर चला जाता है, तो उसे अनुभव होता है कि मैं हूं। उसे अनुभव होता है मैं कुछ हूं। यह कुछ होना उसकी सत्ता का अनुभव है या उसके बड़े पद का? एक आदमी के पास बहुत धन होता है, तो उसे अनुभव होता है कि मैं हूं, यह अनुभव उसकी सत्ता का है, या उसकी संपत्ति का?

CamScanner

4:33 pm 55%

**Osho Human Being To Be.In.God**
6h ·

सफलता हो तो बहुत हंसो मत। सफलता में तो रो लो तो चलेगा। विफलता में हंसना है। जब जीत आ रही हो, हंसने की जरूरत नहीं। क्योंकि जीत के साथ हंसने से किसी को कोई लाभ कभी नहीं हुआ। तब रो लो तो चलेगा। जब फूलमालाएं गले में डाली जा रही हों तो सिर नीचे झुका लो तो चलेगा। तब उदास हो जाओ तो चलेगा।

मुझे आज साहिल पर रोने भी दो
कि तूफान में मुस्कुराना भी है!

किनारे पर रो लो तो चलेगा क्योंकि तूफान में हंसने की तैयारी करनी है। जो तूफान में हंसा वही हंसा। साहिल पर तो कोई भी हंस लेता है। किनारे पर हंसने में क्या लगता है? हलदी लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाए। कुछ लगता ही नहीं किनारे पर तो। किनारे पर तो मूढ़ भी हंस लेते हैं, कायर भी हंस लेते हैं। तूफान में हंसने की तैयारी करनी है।

मुझे आज साहिल पर रोने भी दो
कि तूफान में मुस्कुराना भी है!

सफलता में ऐसे खड़े रह जाओ, जैसे कुछ भी नहीं हुआ। तभी तुम विफलता में ऐसे खड़े रह सकोगे कि जैसे कुछ भी नहीं हुआ।

ओशो

CamScanner

CamScanner

4:29 pm 55%

अध्यात्म का सफर

**Seema Kaushik**

1d ·

🤗पकड़ लो हाथ बनवारी नहीं तो डूब जाएंगे।
🙆हमारा कुछ ना बिगड़ेगा तुम्हारी लाज जाएगी।
🤔धरी है पाप की गठरी हमारे सर पे ये भारी।
🙆वजन पापों का है भारी इसे कैसे उठाएंगे।
🤗पकड़ लो हाथ बनवारी नहीं तो डूब जाएंगे🙏
🤔हमारा कुछ ना बिगड़ेगा तुम्हारी लाज जाएगी😇
💠🙏 राधे_राधे_गोविंद_गोविंद_राधे❤️🙏
🥀🌳💐🌱🌺🌴🌴🌺🌱💐🌳🥀

CamScanner

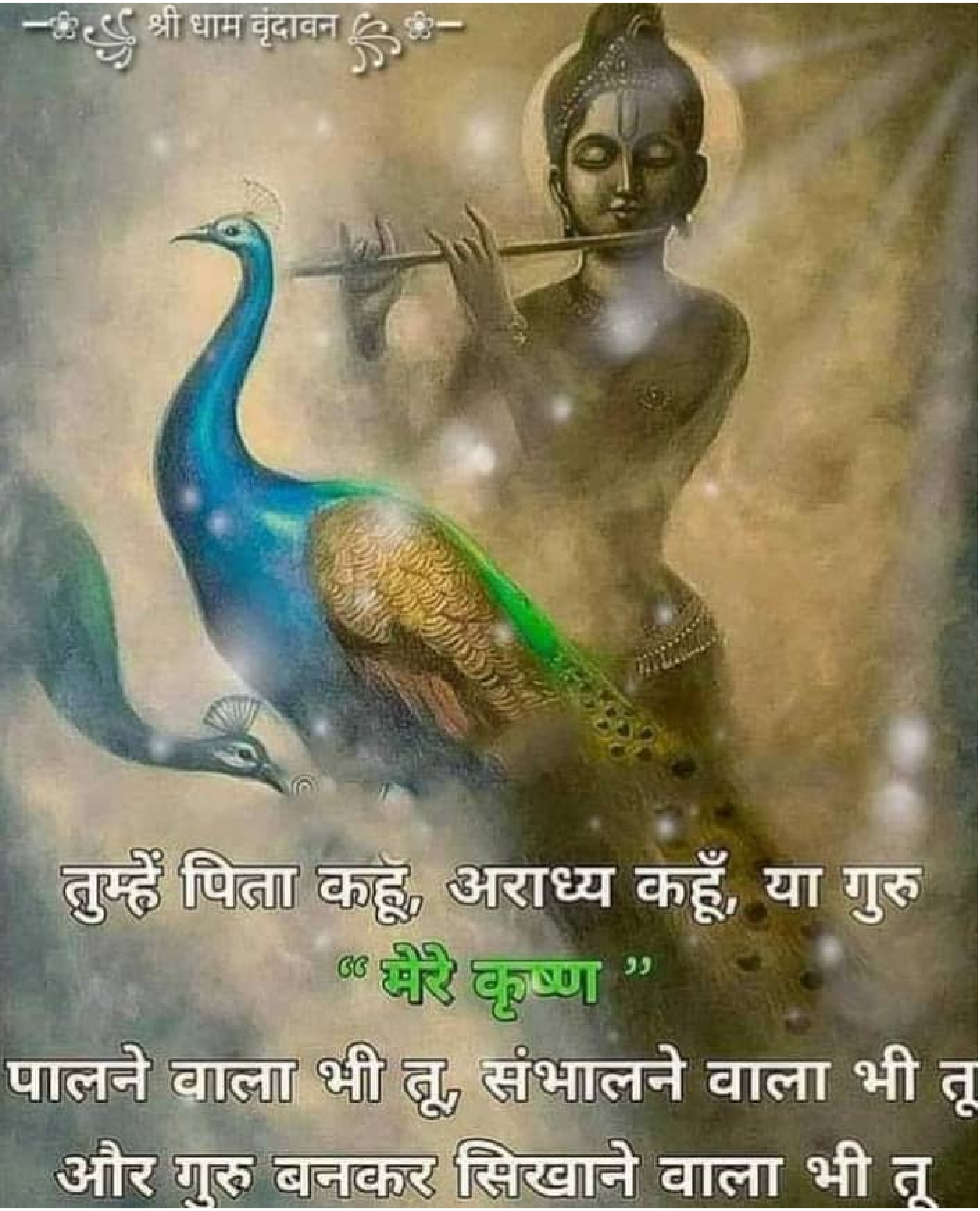
श्री धाम वृंदावन
तुम्हें पिता कहूं, अराध्य कहूँ, या गुरु
" मेरे कृष्ण "
पालने वाला भी तू, संभालने वाला भी तू
और गुरु बनकर सिखाने वाला भी तू

CamScanner

7:51 pm ✓ VoLTE 4G 48%
thecore.page/2017/02/b
'The Core' -National Monthly
ALL Cover Story

बुद्धवंश के अध्याय 27 में 28 बुद्धों की सूची में सिद्धार्थ तथा गौतम की गणना अलग-अलग की गई है, पर उनको एक ही मानकर सिद्धार्थ को ज्ञानप्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध माना जाता है। ज्ञान के बाद उनके बुद्ध होने का वर्णन है, पर गौतम बुद्ध होने का कहीं उल्लेख नहीं है। गौतम बुद्ध तथा उनके पूर्व के 27 बुद्धों के जीवन के बाद इसमें भविष्य के मैत्रेय बोधिसत्त्व का भी उल्लेख है। थेरावाद (स्थविर) मत के 3 मुख्य ग्रन्थों में सुत्तपिटक (सूत्र या सूत-पुराण क्रम) हैजिसके खुद्दकनिकाय (क्षुद्रक = प्रकीर्ण) का एक अंश है बुद्धवंश। इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध ने पिछले कल्प के कई अन्य बुद्धों का भी उल्लेख किया है। बुद्धवंश में वर्णित 28 बुद्धों की सूची इस प्रकार है : 1. तहँकर बुद्ध, 2. मेधंकर बुद्ध, 3. शरणंकर बुद्ध, 4. दीपङ्कर बुद्ध, 5. कोण्ड् बुद्ध, 6. मङ्गल बुद्ध, 7. सुमन बुद्ध, 8. रेवत बुद्ध, 9. सोभित बुद्ध, 10. अनोमदस्सी बुद्ध, 11. पदुम बुद्ध, 12. नारद बुद्ध, 13. पदुमुत्तर बुद्ध, 14. मेध बुद्ध, 15. सुजात बुद्ध, 16. पियदस्सी बुद्ध, 17. अत्थदस्सी बुद्ध, 18. धम्मदस्सी बुद्ध, 19. सिद्धत्थ बुद्ध, 20. तिस्स बुद्ध, 21. फुस्स बुद्ध, 22. विपस्सी बुद्ध, 23. सिख बुद्ध, 24. वेस्संभू बुद्ध, 25. ककुसन्ध बुद्ध, 26. कोणागमन बुद्ध, 27. कस्सप बुद्ध, 28. गोतम बुद्ध और 29. मैत्रेय बुद्ध (भविष्य में होंगे).

CamScanner

| | Sanskrit name | Caste |
|---|---|---|
| 1 | Tṛṣṇaṃkara | Kshatriya |
| 2 | Medhaṃkara | |
| 3 | Śaraṇaṃkara | |
| 4 | Dīpaṃkara | Brahmin |
| 5 | Kauṇḍinya | Kshatriya |
| 6 | Maṃgala | Brahmin |
| 7 | Sumanas | Kshatriya |
| 8 | Raivata | Brahmin |
| 9 | Śobhita | Kshatriya |
| 10 | Anavamadarśin | Brahmin |
| 11 | Padma | Kshatriya |
| 12 | Nārada | |
| 13 | Padmottara | Kshatriya |
| 14 | Sumedha | Kshatriya |
| 15 | Sujāta | |
| 16 | Priyadarśin | |
| 17 | Arthadarśin | Kshatriya |
| 18 | Dharmadarśin | Kshatriya |
| 19 | Siddhārtha | |
| 20 | Tiṣya | |
| 21 | Puṣya | Kshatriya |
| 22 | Vipaśyin | Kshatriya |
| 23 | Śikhin | Kshatriya |
| 24 | Viśvabhū | Kshatriya |
| 25 | Krakucchanda | Brahmin |
| 26 | Kanakamuni | Brahmin |
| 27 | Kāśyapa | Brahmin |
| 28 | Gautama (Current) | Kshatriya |
| 29 | Maitreya (Future) | Brahmin |

CamScanner

7:49 pm 49%

28 बुद्धों की ऐतिहासिकता... - Samrat Ash...

प्रसिद्ध है, एक साथ सात बुद्धों की मूर्तियां सारनाथ के भग्नावशेषों में भी मिलती हैं (Seven Buddhas —Vipassī Buddha, Sikhī Buddha, Vessabhū Buddha, Kakusandha Buddha, Koṇāgamana Buddha and Kassapa Buddha with the current Buddha, Gotama Buddha). पालि साहित्यों में भी 28 बुद्धों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है. इसके अतिरिक्त चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग ने भी 2-3 बुद्धों के स्तूपों का उल्लेख अपने यात्रा वृतांतों में किया है. इस प्रकार बुद्धों के होने को झुठलाया नहीं जा सकता है. पुरातात्विक और साहित्यिक दोनों ही साक्ष्य साक्यमुनि बुद्ध से पहले के बुद्धों के होने की पुष्टि करते हैं.

Name of 28 Buddhas (28 बुद्धों के नाम)

1) Taṇhaṅkara Buddha (तण्हन्कर बुद्ध)
2) Medhaṅkara Buddha (मेधन्कर बुद्ध)
3) Saraṇkara Buddha (सरंणकर बुद्ध)
4) Dīpankara Buddha (दीपंकर बुद्ध)
5) Koṇḍañña Buddha (कोण्डिन्य बुद्ध)
6) Maṅgala Buddha (मङ्गल बुद्ध)
7) Sumana Buddha (सुमन बुद्ध)
😎 Revata Buddha (रेवत बुद्ध)
9) Sobhita Buddha (सोभित बुद्ध)
10) Anomadassi Buddha (अनोमदस्सी बुद्ध)
11) Paduma Buddha (पदुम बुद्ध)
12) Nārada Buddha (नारद बुद्ध)
13) Padumuttara Buddha (पदमुत्तर बुद्ध)
14) Sumedha Buddha (सुमेध बुद्ध)
15) Sujāta Buddha (सुजात बुद्ध)
16) Piyadassi Buddha (पियदस्सी बुद्ध)
17) Atthadassi Buddha (अत्थदस्सी बुद्ध)
18) Dhammadassī Buddha (धम्मदस्सी बुद्ध)
19) Siddhattha Buddha (सिद्धत्थ बुद्ध)
20) Tissa Buddha (तिस्स बुद्ध)
21) Phussa Buddha (फुस्स बुद्ध)
22) Vipassī Buddha (विपस्सी बुद्ध)
23) Sikhī Buddha (सिखी बुद्ध)
24) Vessabhū Buddha (वेस्सभू बुद्ध)
25) Kakusandha Buddha (ककुसंध बुद्ध)
26) Koṇāgamana Buddha (कोणागमन बुद्ध)
27) Kassapa Buddha (कस्सप बुद्ध)
28) Gotama Buddha / Sammā Sambuddha / Sakyamuni Buddha (गोतम बुद्ध / सम्मा सम्बुद्ध / सक्यमुनि बुद्ध)

SABM -INDIA

Write a comment ... Send

CamScanner

* मोहम्मद से पहले कोई मुस्लिम था – नहीं
* बुद्ध से पहले कोई बुद्धिस्ट था – नहीं
* मार्क्स से पहले कोई वामपंथी था – नहीं
* जीजस से पहले कोई ईसाई था – नहीं
* श्री राम, श्री कृष्ण से पहले हिन्दू था – हां

धर्म सिर्फ 1 ही है वो है सनातन हिन्दू धर्म
बाकि सब मानवनिर्मित पंथ/समूह/गिरोह है

DainikBharat.Org

CS CamScanner

7:42 pm 50%
hi.quora.com/बौद्ध-धर्म-से-
Quora ऐप में खोलें

सनातन.धर्म

अपवोट करें · 2

John Semson Masih · फॉलो करें
राजस्थान पत्रिका में पत्रकार (2013–मौजूदा) · 3वर्ष

सबसे पहले जवाब दिया गया: बौध्द धर्म से पहले कौन सा धर्म था?

हमने पढा है कि गौतम बुद्ध जो कि बौद्ध धर्म के संस्थापक है उनका असली नाम सिद्धार्थ था।और वो एक ब्राम्हण के घर मे जन्म लिए थे।असल मे बौद्ध धर्म नया धर्म है रिकॉर्ड के अनुसार और हिंदू धर्म ही उससे पहले होना पाया जाता है।इसके अलावा विश्व मे ईसाई और मुस्लिम धर्म भी प्राचीन धर्मो में से है,जैन हिन्दू धर्म के ही हिस्से है,बुद्ध भी और सिक्ख भी।बस तीन मुख्य धर्म मिलते है मुस्लिम, क्रिस्चियन और हिंदु विश्व भर में बाकी तो पंथ है जैसे सतनाम ,सिक्ख,बौद्ध,जैन,ये सब धर्मों में सुधार और गुरु के महत्व पर आधारित है।लेकिन इनका भी मूल धर्म हिन्दू ही होता है।

अपवोट करें · 8 9 1

विकास चंदनशिवे · फॉलो करें
3वर्ष

सबसे पहले जवाब दिया गया: बौध्द धर्म से पहले कौन सा धर्म था?

बौध्द धर्म से पहले कौन सा धर्म था?

बौध्द धर्म से पहले समन (श्रमण) धर्म था!

बौद्ध और जैन धर्म का जन्म समन धर्म से ही हुआ था!

आपकी प्रतिक्रिया निजी है
क्या यह आपके समय के हिसाब से उपयुक्त था?
इससे हमें पेज पर जवाब छांटने में मदद मिलती है

अपवोट करें · 2

CamScanner

7:27 pm 52%
osho.com/hi/osho-hindi-

तुम ऐसा कोई पाप का कृत्य नहीं खोज सकते जिसमें पुण्य न हो।

एक चोर पकड़ा गया, तो मैजिस्ट्रेट बड़ा हैरान था। उसने कहा कि हमने सुना कि तुम नौ दफे रात में इस दुकान में घुसे!

उसने कहा, और क्या करूं हुजूर? अकेला आदमी, पूरी दुकान ढोनी थी!

तो मैजिस्ट्रेट ने कहा कि तो कोई संगी-साथी नहीं? उसने कहा कि जमाना बड़ा खराब है। संगी-साथी किसको बनाओ? जिसको बनाओ वही धोखा दे जाता है।

चोर भी कहता है कि जमाना खराब है और आप तो जानते ही हैं। संगी-साथी किसको बनाओ?

चोरी भी करनी हो तो भी जमाना अच्छा होना चाहिए। किसी को धोखा देना हो तो भी। उस आदमी में इतनी, जिसको तुम्हें धोखा देना है, इतनी भलमनसाहत तो होनी चाहिए कि भरोसा करे।

पाप और पुण्य गुंथे पड़े हैं। साथ-साथ जुड़े हैं। न तो तुम पुण्य कर सकते हो बिना पाप किए, न तुम पाप कर सकते हो बिना पुण्य किए।

*सुख न सहचरी, लुटेरा भी हुआ करता है,*
*खुशी में गम का बसेरा भी हुआ करता है।*
*अपनी किस्मत की स्याही को कोसने वालो,*
*चांद के साथ अंधेरा भी हुआ करता है।*

वे सब जुड़े हैं। इसलिए अगर तुम एक से बचना चाहोगे तो तुम ज्यादा से ज्यादा दूसरे को छिपा सकते हो, लेकिन दूसरे से भाग नहीं सकते।

पाप-पुण्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सिक्का जाएगा तो पूरा जाएगा, आधा नहीं बचाया जा सकता। एक पहलू नहीं बचाया जा सकता।

CamScanner

7:25 pm 52%

दूसरे सहयोगी थे, वे कहने लगे कि यह आप क्या कर रहे हैं? जो आदमी रसायन बना कर ले आया है, उसको नहीं चुन रहे?

नागार्जुन ने कहा, जीवन का मूल्य रसायन से ज्यादा है। यह रसायन-वसायन तो ठीक है मगर जीवन का मूल्य...। इस आदमी के पास पकड़ है। यह जानता है कि कौन-सी चीज ज्यादा मूल्यवान है--बस, यही तो रहस्य है। सार और असार में इसे भेद है।

अब एक आदमी का बच्चा मर रहा है, वह तुम्हारी फिक्र करे कि चोरी नहीं करनी चाहिए? वह चिंता करे इस बात की? व्यक्तिगत संपत्ति को समादर दे? वह फिक्र नहीं करता। वह कहता है, चोरी हो जाए, चाहे मैं जेल चला जाऊं, बच्चे को बचाना है।

तो पाप में भी कहीं तो थोड़ा पुण्य है। दो आदमी अगर साथ-साथ चोरी भी करते हैं तो कम से कम एक-दूसरे को तो दगा नहीं देते। उतनी तो ईमानदारी है। वे भी मानते हैं, आनेस्टी इज द बेस्ट पालिसी। आपस में तो कम से कम। किसी और के साथ न मानते हों, लेकिन ईमानदारी एक-दूसरे के साथ बरतते हैं। उतना तो पुण्य है।

तुम ऐसा कोई पाप का कृत्य नहीं खोज सकते जिसमें पुण्य न हो।

एक चोर पकड़ा गया, तो मैजिस्ट्रेट बड़ा हैरान था। उसने कहा कि हमने सुना कि तुम नौ दफे रात में इस दुकान में घुसे!

उसने कहा, और क्या करूं हुजूर? अकेला आदमी, पूरी दुकान ढोनी थी!

तो मैजिस्ट्रेट ने कहा कि तो कोई संगी-साथी नहीं? उसने कहा कि जमाना बड़ा खराब है। संगी-साथी किसको बनाओ? जिसको बनाओ वही धोखा दे जाता है।

चोर भी कहता है कि जमाना खराब है और आप तो जानते ही हैं। संगी-साथी किसको बनाओ?

चोरी भी करनी हो तो भी जमाना अच्छा होना चाहिए। किसी को धोखा देना हो तो भी। उस आदमी में इतनी, जिसको तुम्हें धोखा देना है, इतनी भलमनसाहत तो होनी चाहिए कि भरोसा करे।

पाप और पुण्य गुंथे पड़े हैं। साथ-साथ जुड़े हैं। न तो तुम पुण्य कर

CamScanner

ध्यान में गति मिल सकती है। लेकिन यह मेरे लिए असाध्य मालूम होता है, मैं चोरी का धंधा छोड़ नहीं सकता। क्या मेरे लिए ध्याननहीं है? नागार्जुन ने उत्तर में कहा कि अगर कोई कहता है कि पहले चोरी छोड़ो और तब ध्यान करो, तो उसे ध्यान के बारे में कुछ भी पता नहीं है। ध्यान और चोरी के बीच संबंध क्या है? कोई संबंध नहीं है। तुम जो भी करते हो किए जाओ। और मैं तुम्हें विधि देता हूं, तुम उसका प्रयोग करो। तो चोर ने कहा कि ऐसा लगता है कि आपके साथ मेरा तालमेल बैठ सकता है। क्या सच ही मैं अपना धंधा जारी रख सकता हूं?
कृपया जल्दी अपनी विधि बताएं। नागार्जुन ने कहा, तुम सिर्फ होश रखो, बोध बढ़ाओ। जब चोरी करने जाओ तो उसके प्रति भी सजग रहो, होशपूर्ण रहो। जब सेंध लगाओ तब जानते रहो कि मैं सेंध लगा रहा हूं, पूरे होश में रहो। जब खजाने से कुछ निकालो तब भी जागरूक रहो, होश के साथ निकालो। तुम क्या करते हो इससे मुझे लेना-देना नहीं है, लेकिन जो भी करो बोधपूर्वक करो। और पंद्रह दिन बाद मेरे पास आना। लेकिन यदिइस विधि का अभ्यास न कर सको तो मत आना। पंद्रह दिन निरंतर अभ्यास करो। जो भी जी में आए करो, लेकिन पूरे सजग होकर करो। चोर तीसरे ही दिन वापिस आया और उसने नागार्जुन से कहा, पंद्रह दिन का समय बहुत है, मैं आज ही आ गया। आप बड़े चालाक आदमी मालूम होते हैं। आपने ऐसी विधि बताई कि मेरा धंधा चलना मुश्किल है। पूरा होश रखकर मैं चोरी नहीं कर सकता हूं। पिछली तीन रातों से मैं राजमहल जा रहा हूं। मैं खजाने तक गया, उसे खोल भी लिया। मेरे सामने बहुमूल्य हीरे-जवाहरात थे, लेकिन मैं तभी पूरी तरह सजग हो गया। और सजग होते ही मैं बुद्ध की मूर्ति की तरह हो गया, मैं कुछ भी नहीं कर सका। मेरे हाथों ने हिलने से इनकार कर दिया और सारा खजाना व्यर्थ मालूम पड़ने लगा। तीन रातों से मैं लौट-लौटकर राजमहल जाता हूं। समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं! आपने तो कहा था कि इस विधि में धंधा छोड़ने की शर्त नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि विधि में ही कोई छिपी प्रक्रिया है।
नागार्जुन ने कहा, दुबारा मेरे पास मत आना। क्षअब चुनाव तुम्हें करना है। अगर चोरी जारी रखना चाहते हो तो ध्यान को भूल जाओ। और अगर ध्यान चाहते हो तो चोरी को भूल जाओ। चुनाव तुम्हें करना है। चोर ने कहा, आपने तो मुझे बड़े धर्म संकट में डाल दिया। इन तीन दिनों में मैंने जाना कि मेरे भी आत्मा है, और जब मैं राजमहल में कुछ चोरी किए बिना वापिस आया तो पहली दफा मुझे लगा कि मैं सम्राट हूं, चोर नहीं। ये तीन दिन इतने आनंदपूर्ण रहे हैं कि मैं अब ध्यान नहीं छोड़ सकता। आपने मेरे साथ चालाकी की। अब आप मुझे दीक्षा दें और अपना शिष्य बना लें। और अधिक प्रयोग की जरूरत नहीं है, तीन दिन काफी हैं। कुछ भी विषय हो, यदि तुम सजग रहो तो सब कुछ ध्यान बन जाता है। तादात्म्य को जागरूक होकर प्रयोग में लाओ, तब वह ध्यान बन जाएगा। बेहोशी में किया गया तादात्म्य पाप है।
ओशो

Aug 5, 2016 ·

Write a comment ... Send

CamScanner

आ सको। मैं अभी अपनी दोपहर की नींद लेने जा रहा हूं। तुम भिक्षापात्र लेने अंदर आते, लेकिन मुझसे तुम्हारी मुलाकात नहीं होती। तुम अंदर आ जाओ। चोर अंदर गया। उसने पूछा कि ऐसी बहुमूल्य वस्तु को आपने फेंक कैसे दिया? मैं चोर हूं। लेकिन आप ऐसे संत हैं कि आपसे मैं झूठ नहीं बोल सकता। मैं चोर हूं। नागार्जुन ने कहा कि चिंता मत करो, हर कोई चोर है। तुम अपनी बात निःसंकोच कहो। फिजूल की बातों में वक्त मत खराब करो। चोर ने कहा कि कभी-कभी आप जैसे व्यक्ति को देखकर मेरे मन में भी कामना उठती है कि काश, इस स्थिति को मैं भी उपलब्ध होता! लेकिन चोर हूं और यह स्थिति मेरे लिए असंभव है। लेकिन मेरी आशा और प्रार्थना रहेगी कि किसी दिन मैं भी ऐसी कीमती चीज फेंक सकूं। बड़ी कृपा होगी यदि आप मुझे उपदेश करें।

मैं अनेक संतों के पास गया हूं। वे मुझे जानते हैं, क्योंकि मैं एक नामी चोर हूं। वे सब यही कहते हैं कि तुम पहले अपने धंधे को छोड़ो, तभी तुम्हें ध्यान में गति मिल सकती है। लेकिन यह मेरे लिए असाध्य मालूम होता है, मैं चोरी का धंधा छोड़ नहीं सकता। क्या मेरे लिए ध्याननहीं है? नागार्जुन ने उत्तर में कहा कि अगर कोई कहता है कि पहले चोरी छोड़ो और तब ध्यान करो, तो उसे ध्यान के बारे में कुछ भी पता नहीं है। ध्यान और चोरी के बीच संबंध क्या है? कोई संबंध नहीं है। तुम जो भी करते हो किए जाओ। और मैं तुम्हें विधि देता हूं, तुम उसका प्रयोग करो। तो चोर ने कहा कि ऐसा लगता है कि आपके साथ मेरा तालमेल बैठ सकता है। क्या सच ही मैं अपना धंधा जारी रख सकता हूं?

कृपया जल्दी अपनी विधि बताएं। नागार्जुन ने कहा, तुम सिर्फ होश रखो, बोध बढ़ाओ। जब चोरी करने जाओ तो उसके प्रति भी सजग रहो, होशपूर्ण रहो। जब सेंध लगाओ तब जानते रहो कि मैं सेंध लगा रहा हूं, पूरे होश में रहो। जब खजाने से कुछ निकालो तब भी जागरूक रहो, होश के साथ निकालो। तुम क्या करते हो इससे मुझे लेना-देना नहीं है, लेकिन जो भी करो बोधपूर्वक करो। और पंद्रह दिन बाद मेरे पास आना। लेकिन यदिइस विधि का अभ्यास न कर सको तो मत आना। पंद्रह दिन निरंतर अभ्यास करो। जो भी जी में आए करो, लेकिन पूरे सजग होकर करो। चोर तीसरे ही दिन वापिस आया और उसने नागार्जुन से कहा, पंद्रह दिन का समय बहुत है, मैं आज ही आ गया। आप बड़े चालाक आदमी मालूम होते हैं। आपने ऐसी विधि बताई कि मेरा धंधा चलना मुश्किल है। पूरा होश रखकर मैं चोरी नहीं कर सकता हूं। पिछली तीन रातों से मैं राजमहल जा रहा हूं। मैं खजाने तक गया, उसे खोल भी लिया। मेरे सामने बहुमूल्य हीरे-जवाहरात थे, लेकिन मैं तभी पूरी तरह सजग हो गया। और सजग होते ही मैं बुद्ध की मूर्ति की तरह हो गया, मैं कुछ भी नहीं कर सका। मेरे हाथों ने हिलने से इनकार कर दिया और सारा खजाना व्यर्थ मालूम पड़ने लगा। तीन रातों से मैं लौट-लौटकर राजमहल जाता हूं। समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं! आपने तो कहा था कि इस विधि में धंधा छोड़ने की शर्त नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि विधि में ही कोई छिपी प्रक्रिया है।

नागार्जुन ने कहा, दुबारा मेरे पास मत आना। अब चुनाव तुम्हें करना है।

Write a comment ... Send
CamScanner

6:45 pm 54%



ओशो प्रवचन

|| नागार्जुन ||

मैं तुम्हें नागार्जुन के जीवन से एक प्रसंग बताता हूं। भारत ने जो महान गुरु पैदा किए हैं, नागर्जुन उनमें से एक थे। वे बुद्ध, महावीर और कृष्ण की क्षमता रखते थे। और नागार्जुन एक दुर्लभ प्रतिभा थी। सच तो यह है कि बौद्धिक तल पर सारी दुनिया में वे अतुलनीयहैं। ऐसी तीक्ष्ण और प्रगाढ़ प्रतिभा कभी-कभी घटित होती है।

नागार्जुन एक नगर से गुजर रहे थे। वह राजधानी है। और नागार्जुन सदा नग्न रहते थे। उस राज्य की रानी को नागार्जुन के प्रति बहुत प्रेम था, बहुत श्रद्धा थी, बहुत भक्ति थी। नागार्जुन भोजन मांगने राजमहल आए। उनके हाथ में लकड़ी का भिक्षापात्र था। रानी ने उनसे कहा कि आप कृपा कर मुझे यह भिक्षापात्र दे दें। मैं इसे आपकी भेंट समझूंगी और इसकी जगह मैंने आपके लिए दूसरा भिक्षापात्र निर्मित कराया है। नागार्जुन ने भेंट स्वीकार कर ली। दूसरा भिक्षापात्र सोने का बना था और उसमें बहुमूल्य रत्न जड़े हुए थे। वह बहुत कीमती था। लेकिन नागार्जुन ने कुछ नहीं कहा। सामान्यत: कोई संन्यासी उसे नहीं लेता, वह कहता कि मैं सोना नहीं छूता हूं। लेकिन नागार्जुन ने उसे ले लिया। अगर सच में सोना मिट्टी है तो भेद क्या करना? नागार्जुन ने उसे ले लिया। रानी को यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने सोचा कि इतने बड़े संत हैं, उन्हें इनकार करना चाहिए था। स्वयं नग्न रहते हैं, पास में कुछ संग्रह नहीं रखते, फिर उन्होंने इतना कीमती भिक्षापात्र कैसे स्वीकार किया!

और अगर नागार्जुन इनकार करते तो रानी उन पर लेने के लिए जोर डालती और तब उसे अच्छा लगता। लेकिन नागार्जुन उसे लेकर चले गए। एक चोर ने नगर से उन्हें गुजरते हुए देखा। उसने सोचा कि यह आदमी ऐसा बहुमूल्य भिक्षापात्र अपने पास नहीं रख सकेगा, कोई न कोई जरूर इसकी चोरी कर लेगा। एक नंगा आदमी कैसे उसकी रक्षा कर सकता है? और वह चोर नागार्जुन के पीछे हो लिया। नागार्जुन नगर के बाहर एक मठ में रहते थे और अकेले रहते थे। वह मठ जीर्ण-शीर्ण था। नागार्जुन उसके भीतर गए। उन्होंने अपने पीछे आते हुए इस आदमी की पदचाप सुनी। वे समझ गए कि वह किस लिए पीछे-पीछे आ रहा है, वह मेरे लिए नहीं इस भिक्षापात्र के लिए आ रहा है। अन्यथा इस जरा-जीर्ण मठ में कौन आता! नागार्जुन मठ के अंदर गए और चोर बाहर दीवार के पीछे खड़ा हो गया। यह देखकर कि चोर बाहर ताक में खड़ा है, नागार्जुन ने भिक्षापात्र को दरवाजे से बाहर फेंक दिया। चोर तो चकित रह गया, उसको कुछ समझ में नहीं आया। यह कैसा आदमी है! नंगा है, इसके पास इतना कीमती पात्र है और यह उसे बाहर फेंक देता है! तो चोर ने नागार्जुन से कहा कि क्या मैं अंदर आ सकता हूं, क्योंकि मुझे एक प्रश्न पूछना है।

नागार्जुन ने कहा कि मैंने पात्र को इसीलिए बाहर फेंक दिया कि तुम अंदर आ सको। मैं अभी अपनी दोपहर की नींद लेने जा रहा हूं। तुम भिक्षापात्र लेने अंदर आते, लेकिन मुझसे तुम्हारी मुलाकात नहीं होती। तुम अंदर आ जाओ। चोर अंदर गया। उसने पूछा कि ऐसी बहुमूल्य वस्तु को आपने

Write a comment ... Send

CamScanner